हिन्दुस्तानी कोष

हिन्दी और उर्दू में आमतौर से प्रचलित संस्कृत, अरबी, फ़ारसी, तुर्की, अँग्रेज़ी और पोर्चुगीज़ आदि भाषाओं तथा युक्तप्रांत के देहातों के शब्दों का संग्रह।

सम्पादक

रामनरेश त्रिपाठी
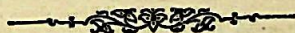
प्रकाशक

हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग

पहला संस्करण २००० } अगस्त, १९३३ { मूल्य दो रुपये

पहला संस्करण २०००, अगस्त, १९३३

प्रारंभ के सवा दो फार्म हिन्दी-मन्दिर प्रेस, इलाहाबाद में और शेष सब कायस्थ पाठशाला प्रेस, इलाहाबाद में मुद्रित हुये।

भूमिका

इस समय तक हिन्दी में जितने कोष, चाहे वे हिन्दुस्तानियों के लिखे हों, चाहे अँग्रेज़ों के, प्रकाशित हो चुके हैं, उनको शुद्ध हिन्दी का न कहकर अवधी, व्रजभाषा और खड़ीबोली का मिश्रित कोष कहना अधिक सार्थक होगा। क्योंकि उनके निर्माताओं ने अवधी और व्रजभाषा के पद्य और वर्तमान हिन्दी (जिसे खड़ीबोली भी कहते हैं) के गद्य-पद्य दोनों में प्रचलित शब्दों को एक ही कोष-द्वारा सर्वसाधारण को दिया है। उन्होंने हिन्दी की स्वतंत्र सत्ता का ध्यान नहीं रक्खा है।

हिन्दी, जो केवल हिन्दुओं की भाषा न कहलाकर सम्पूर्ण हिन्द अर्थात् हिन्दुस्तान की भाषा के अर्थ में व्यवहृत हो रही है और जो राष्ट्रभाषा और हिन्दुस्तानी के नाम से भी प्रसिद्ध है, अपना एक स्वतंत्र रूप रखती है और एक ऐसा कोष चाहती है जो केवल उसी का हो। हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा होने के कारण अब अवध और व्रज का संकुचित क्षेत्र ही नहीं, बल्कि विशाल भारत उसके विकास का क्षेत्र हो गया है। उसका रूप, उसका साहित्य, उसका प्रभाव अब सब कुछ स्वतन्त्र है; अतएव साझे के कोष से उसका काम नहीं चल सकता। मैंने इसी भाव से प्रेरित होकर यह कोष तैयार किया है। इस कोष में जहाँ संस्कृतके वे तमाम तत्सम और तद्भव शब्द आ गये हैं जो हिन्दी की पुस्तकों और पत्रों में चल रहे हैं, वहाँ अरबी, फ़ारसी, तुर्की और अन्य विदेशी भाषाओं के वे शब्द भी साथ-साथ कर दिये गये हैं जो उर्दू की दुनिया में चलते हैं। यहाँ यह बता देना भी आवश्यक है कि मैं हिन्दी और उर्दू को भिन्न भाषायें नहीं मानता।

अँगरेजी राज के प्रभाव से हिन्दी में अँग्रेजी शब्दों की संख्या भी काफ़ी बढ़ गई है। मैंने उनको भी हिन्दुस्तानी मानकर उनको अपनी सेवा का भार सौंपना मुनासिब समझा है।

साथ ही कुछ देहाती शब्दों को भी, जिनके पर्यायवाची शब्द प्रचलित हिन्दी में प्रायः नहीं हैं, पर जिनकी नितान्त आवश्यकता है, मैंने इसमें स्थान दिया है। हमें अपने ग्रामीण शब्दों को अपने ज्ञान-कोष में ख़ास स्थान देना ही चाहिये; क्योंकि वे हमारे अपने हैं और उनके द्वारा हम समाज के अन्तस्तल में अधिक व्यापक होकर, अपने लोकोपकारी विचारों से, अधिक विस्तृत सीमा के अन्दर, अधिक संख्यक लोगों के कल्याण-साधन में सफल प्रयत्न हो सकते हैं। यद्यपि देहातो शब्द अभी विवादग्रस्त हैं, क्योंकि भिन्न-भिन्न स्थानों में उनके रूप और अर्थ में बड़ी भिन्नता मौजूद है, इससे मेरा ही दिया हुआ उनका रूप और अर्थ प्रामाणिक नहीं माना जा सकता; पर मैंने विचार के लिये ही उन्हें विद्वानों के समक्ष रक्खा है कि वे भी हिन्दी की सीमा में क्यों न आने दिये जायँ और उनसे हम काम क्यों न लें ? जैसा आजकल टर्की में मुस्तफ़ा कमाल पाशा कर रहे हैं।

सम्पूर्ण देश में एक राष्ट्रीयता का भाव भरने और उसे स्थायी रखने के लिये एक राष्ट्रभाषा की नितान्त आवश्यकता है और हिन्दी प्रान्तवालों के लिये यह हर्ष की बात है कि उनकी हिन्दी ही भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा स्वीकार की गई है। ऐसी दशा में हिन्दीवालों के लिये यह पहला कर्तव्य होजाता है कि वे अपनी हिन्दी को अधिक से अधिक व्यापक होने की शक्ति प्रदान करें; और वह व्यापकता तभी संभव है जब हम देशभर में प्रचलित शब्दों को हिन्दी का रूप देकर अधिक से अधिक संख्या में उसमें भर लें; जैसा अँग्रेज़ी भाषा में सदा होता रहता है।

मेरा यह विचार नया नहीं है। अब से पन्द्रह वर्ष पहले मेरे पास कुछ मदरासी विद्यार्थी हिन्दी सीखने के लिये रहते थे। उनको जो साहित्यिक हिन्दी सिखाई जाती थी, उसमें अवधी और व्रजभाषा ही का अंश अधिक होता था; जिससे वे राष्ट्रभाषा हिन्दी से पूर्ण परिचित नहीं हो पाते थे; इससे मैंने उनके लिये उर्दू में प्रचलित बहुत-से

विदेशी शब्द संग्रह करके उन्हें याद कराये थे। उसी समय से विदेशी शब्दों का संग्रह मैं कर रहा हूँ; और आज सचमुच मुझे हार्दिक हर्ष है कि मैं उनको एक कोष में बैठाकर विचार-धारा में प्रवाहित कर पाया हूँ।

मैं हृदय से चाहता हूँ कि हिन्दी-उर्दू का अन्तर मिट जाय। हिन्दी-उर्दू में केवल लिपि का अन्तर है। लिपि के सम्बन्ध में इलाहाबाद हाईकोर्ट के चीफ़ जस्टिस सर सुलेमान का यह कथन काफ़ी होगा, जिसे हिन्दी और उर्दू दोनों के हिमायतियों को सदा स्मरण रखना चाहिये—

"नागरी और उर्दू लिपि का विवाद भाषा से उतना सम्बन्ध नहीं रखता जितना कि राजनीति से। किसी विशेष प्रकार की लिपि का व्यवहार विशेषकर भिन्न-भिन्न व्यक्तियों की प्रवृत्ति या इच्छा पर निर्भर है। इसलिये लिपि को अधिक महत्व न देना चाहिये। किसी विशेष लिपि का अपनाना बिल्कुल लोगों की इच्छा पर निर्भर है। कोई विशेष लिपि गढ़ी जा सकती है, कहीं से ली जा सकती है तथा हठात् बदल या त्याग भी दी जा सकती है। इस प्रकार के परिवर्तन संसार में सभी जगह हो चुके हैं। परन्तु टर्की को छोड़कर इस प्रकार के परिवर्तन अधिकतर क्रमशः और धीरे-धीरे इस तरह हुये हैं कि लोग जल्दी ही उन्हें भूल भी गये हैं। किसी भी लिपि की कृत्रिमता हम उस समय तुरन्त जान सकते हैं जब कि हम देखते हैं कि कुछ भाषाएँ भिन्न-भिन्न समयों में भिन्न-भिन्न रीति से लिखी गई हैं। इस बात का अब पता लग गया है कि मेक्सिकन चित्र-लिपि नीचे से ऊपर की ओर लिखी जाती थी। चीनी लिपि ऊपर से नीचे की ओर, सेमिटिक भाषायें दाहिने से बायें ओर को लिखी जाती हैं। संस्कृत तथा इससे उत्पन्न भाषायें बायें से दाहिने को लिखी जाती हैं। यद्यपि संस्कृत भी जब खरोष्ठी लिपि में लिखी जाती थी तब दाहिने से बायें को लिखी जाती थी। ग्रीक भाषा

एक समय बायें से दाहिने को लिखी जाती थी, पर बाद में यह उस ढंग से लिखी जाने लगी, जैसे बैलों से हल जोता जाता है; अर्थात् क्रम से एक बार दाहिने से बायें और फिर बायें से दाहिने। यदि एक पंक्ति दाहिने से बायें लिखी गई तो उसके बाद की पंक्ति वहीं से आरम्भ होगी जहाँ पहली पंक्ति समाप्त हुई थी और यही क्रम बराबर चलता रहेगा। बाद में यह प्रथा छोड़ दी गई और फिर बराबर बायें से दाहिने को लिखने की प्रथा चल गई। उपरोक्त वर्णन से यह स्पष्ट होजाता है कि किसी विशेष लिपि का अपनाना स्वेच्छा पर निर्भर है। जब चाहें तब हम इसमें परिवर्तन या इसका त्याग कर सकते हैं।❖

हिन्दी के सिवा दूसरी कोई भाषा राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती; न अँग्रेज़ी, न बँगला, न मराठी। क्योंकि इन भाषाओं का प्रचार हिन्दी की अपेक्षा कम है और इसमें हिन्दी के समान व्यावहारिक शब्दों को हज़म करने की शक्ति भी नहीं है। अँग्रेज़ी में शक्ति है अवश्य, पर वह भाषा हिन्दुस्तान की स्वाभाविक भाषा नहीं। अतएव उसको राष्ट्रभाषा मानने या बनाने का प्रयत्न समय के अपव्यय के सिवा और कुछ नहीं।

❖ The significance of this aspect of the matter has, however, been considerably obscured by an unfortunate controversy over the characters in which this dialect may be written. But the quarrel over the nature of the script, whether it should be Urdu or Nagari character is sometimes more a political than a linguistic one. The kind of script that is to be used is a matter of lesser importance depending to a large extent on individual feelings and inclinations. The adoption of a particular script is a purely arbitrary act. A particular script can be newly invented, can be freely borrowed, can be suddenly changed or deliberately abandoned. Changes of this type have taken place all over the world. But, except in the case of Turkey, the transformation has often been so gradual as to be almost forgotten. One can easily appreciate the artificialness of a script by recollecting the different ways in which some languages have been written and the

मार्च, सन् १९३२ में हिन्दुस्तानी एकेडेमी (युक्तप्रान्त) के वार्षिकोत्सव में पढ़ने के लिये मैं ने 'हिन्दी या हिन्दुस्तानी' विषयक एक लेख† लिखा था; वह लेख एकेडेमी की तिमाही पत्रिका 'हिन्दुस्तानी' में प्रकाशित हुआ था। उसे लेकर हिन्दी के पत्रों में बड़ा शोर मचा। मेरी जानकारी में बीसियों लेख हिन्दी के मासिक, साप्ताहिक और दैनिक पत्रों में मेरे उस लेख के विरोध में निकले। मैं ने दुःख के साथ यह अनुभव किया कि प्रायः उन सभी लेखों के लेखकों ने मेरे लेख को आदि से अन्त तक पूरा पढ़े बिना ही जो कुछ जी में आया, लिख मारा था। किसी ने लिखा, मैं एकेडेमी के प्रभाव से प्रेरित होकर हिन्दी, उर्दू को एक करना चाहता हूँ। किसी ने लिखा, मैं संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्दों के बहिष्कार करने का पाप कर रहा हूँ। किसी ने लिखा,

---

changes effected in them from time to time. It is now known that the Mexican picture-writing was written from bottom to top, that is going upwards. The chinese characters are arranged in vertical columns to be read from top to bottom. The semitic languages are written from right to left. The Sanskrit language and its descendents are written from left to right. But even Sanskrit when written in kharoshti script was written from right to left. Greek was at one time written from right to left and then it followed a method corresponding to the ploughing of a field by oxen, that is alternately from right to left and then left to right. If one line was written from right to left, the next began close to the end of the first line and was written from left to right, and so on. This system was later on changed to one of writing from left to right all along the page. This furnishes a good illustration how arbitiary is the choice of a particular form of a script and how it can be altered or abandoned.

हिन्दुस्तानी ऐकेडेमी के वार्षिकोत्सव में पठित।

†सर्वसाधारण की जानकारी के लिये यह लेख भी इस कोष में अलग दे दिया जा रहा है।

मैं हिन्दी की संस्कृति को नष्ट करने पर तुला हूँ; विचारणीय विषय को महत्व न देकर कइयों ने मुझपर व्यक्तिगत हमले भी किये; पर यदि वे मेरे लेख को पूरा पढ़कर कुछ लिखने बैठते तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि वे मेरी ही परिधि में होते; मुझे हिन्दी के एक अच्छे सेवक के रूप में स्मरण करते और मेरे विरुद्ध जनता में ग़लतफ़हमी फैलाने की ग़लती स्वयं न करते। सब को अलग-अलग उत्तर देने की अपेक्षा मैं ने यह उचित समझा कि मैं अपने उत्तर को इस कोष के रूप में अधिक स्पष्ट करके शिक्षितवर्ग के सामने रक्खूँ; ताकि मेरे हिन्दी-भाषा-विषयक विचारों के सम्बन्ध में फैला हुआ या फैलाया हुआ भ्रम दूर हो जाय।

यद्यपि यह कोष पूर्ण नहीं कहा जा सकता; और मैं अकेला इसे पूर्ण बना भी नहीं सकता था; पर मैंने अपनी शक्तिभर शब्दों के संग्रह में कोई कसर उठा नहीं रक्खी। लगातार एक वर्ष के परिश्रम से मैं इसे इस रूप में कर पाया हूँ।

इस कोष की तैयारी में मुझे हिन्दी, उर्दू और अँग्रेजी-हिन्दी के सुप्रसिद्ध कोषों से अनेक बार सहायता लेनी पड़ी है, जिनके लिये मैं उनके सम्पादकों का हृदय से कृतज्ञ हूँ।

इस कोष के बाद मेरे मन में यह लालसा है कि इसी तरह मैं व्रजभाषा और अवधी के शब्दों का भी एक कोष तैयार करूँ और उसे प्रकाशित करके उनके सरस और लोकोपयोगी काव्य-साहित्य को जनता के जीवन में पहुँचाकर सुख अनुभव करूँ।

हिन्दी-मन्दिर, प्रयाग
श्रावण शुक्ला ७, १९९०

रामनरेश त्रिपाठी

हिन्दी या हिन्दुस्तानी

वह भाषा जो आजकल युक्तप्रान्त, बिहार, मध्यप्रदेश, देहली और उसके आसपास के दूसरे प्रांतों के वर्नाक्युलर स्कूलों में आमतौर से पढ़ायी जाती है, और जिसमें कितने ही मासिक, साप्ताहिक और दैनिक अख़बार निकल रहे हैं, कोई एक ख़ास सूरत नहीं रखती। कम से कम वह तीन सूरतों में आसानी से तक़सीम की जा सकती है। एक वह जिसका नाम हिन्दी है, और जिसमें संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्द ही ज्यादा हैं; दूसरी वह जो उर्दू कहलाती है, और जिसमें अरबी, फ़ारसी [illegible] तुर्की के अल्फ़ाज़ भरे हुए हैं; तीसरी वह जो इन दोनों के बीच [illegible]पा है, और जिसमें सिर्फ़ बोलचाल के वे ही अल्फ़ाज़ आने पाते हैं जो आमलोगों की ज़बान पर हैं, चाहे वे संस्कृत से आये हों, चाहे अरबी या फ़ारसी या तुर्की से। यह हिन्दी और उर्दू की खिचड़ी है। इसे हिन्दुस्तानी कहते हैं। एडविन ग्रीव्स साहब ने अपने 'हिन्दी ग्रामर' की भूमिका में हिन्दुस्तानी की यह व्याख्या की थी—

"हिन्दुस्तानी नाम कुछ यथार्थता के साथ उस प्रकार के साहित्य का दिया जा सकता है जिसे कुछ ऐसे लेखक अपना रहे हैं जिनका शब्द-कोष अधिकांश उर्दू है; परन्तु जो अपनी रचनाएँ नागरी लिपि में छपाते हैं।"*

---

* "Hindustani might, with some measure of fitness, be used of one class of literature affected by certain writers who employ a vocabulary which is largely Urdu, but have the works printed in the Nagari character."

आजकल इसकी व्याख्या में थोड़ा अन्तर पड़ रहा है। अब केवल देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली उर्दू ज़बान को हिंदुस्तानी नहीं कहते; बल्कि अब तो उसमें अँग्रेज़ी के भी लफ़्ज़ घुल-मिल गये हैं। जैसे—

"मैंने कई दफ़े यह आवश्यकता महसूस की कि मेंबर लोग विवादग्रस्त मामलों में अच्छी तरह विचार करके तब वोट दिया करें।"

इसमें 'दफ़े', 'महसूस', 'मामलों', और 'तरह' शब्द फ़ारसी या उर्दू के, 'मेंबर' और 'वोट' अँग्रेज़ी के, और बाक़ी सब हिन्दी के हैं।

हमें अपनी ज़बान के तीनों रूपों पर अलग-अलग विचार करना है। पहले हिन्दी को लीजिये—

हिन्दी

हिन्दी के सबसे पुराने कवि, जिनकी कविता अबतक सबसे पुरानी मानी जाती है, अमीर ख़ुसरो हैं। अमीर ख़ुसरो का समय संवत् १३१२ से १३८० तक है। यह वह समय है जब हिन्दुस्तान में मुसलमानी हुकूमत का प्रारंभ हो रहा था। उस वक्त उर्दू का कहीं नामोनिशान भी नहीं था। ख़ुसरो ने अपने समय की आमफ़हम ज़बान में बहुत से दोहे, ठुमरियाँ, पहेलियाँ, दो-सख़ुने और ढकोसले कहे हैं। उन्हें देखने से यह साफ़ मालूम होता है कि ख़ुसरो की ज़बान ही हमारी आजकल की हिन्दी है। ख़ुसरो की एक पहेली है—

बीसों का सिर काट लिया।
ना मारा ना ख़ून किया॥

इसमें और आजकल की हिन्दी में क्या अंतर है?

ख़ुसरो ने अरबी, फ़ारसी और तुर्की शब्दों को हिन्दी में भरने

का सबसे पहला उद्योग किया था। उसके नाम से 'ख़ालिक़-बारी' नाम का एक पद्य-कोष भो मिलता है, जिनमें हिन्दी और फ़ारसी के पर्यायवाची शब्द जमा किये गये हैं। वह पुराने ढर्रे के मकतबों (मदरसों) में बहुत दिनों तक पढ़ाई जाती रही है। 'ख़ालिक़-बारी' की बदौलत समझिये या जीवन-संघर्ष के कारण, अब तो हिन्दी में मुसलमानी शब्द इतने अधिक भर गये हैं जितने 'ख़ालिक़-बारी' में भी नहीं हैं।

खुसरो की भाषा पर विचार करने से हिन्दी का आदिकाल विक्रम की छठीं-सातवीं शताब्दी से इधर का नहीं पड़ता। खुसरो ने उस समय की हिन्दुओं की भाषा का नाम 'हिन्दवी' लिखा है। जैसे—

अरबी बोले आईना, फ़ारसी बोले पाईना।
हिंदवी बोले आरसी आये, मुँह देखे जो इसे बताये॥

इस के बाद जायसी ने अपने समय की भाषा का नाम हिन्दवी लिखा है; जैसे—

अरबी तुर्की हिंदवी, भाषा जेती आहि।
जामे मारग प्रेम का, सबै सराहैं ताहि॥

इससे हिन्दी का पुराना नाम 'हिन्दवी' जान पड़ता है, जिसका अर्थ है हिन्दुओं की भाषा। खुसरो और जायसी दोनों मुसलमान थे, इससे उन्होंने हिन्दुओं की भाषा का एक अलग नाम दिया है, जो उचित ही था। पर आजकल हिन्दी इस अर्थ में नहीं ली जाती। आजकल वह एक स्वतन्त्र भाषा है जिसे हिन्दू, मुसलमान और अँग्रेज़ तीनों सीखते और काम में लाते हैं। पहले उसका अर्थ चाहे जो कुछ रहा हो, पर आजकल उसका मतलब सिर्फ़ हिन्दुओं की भाषा से नहीं, पर तमाम हिन्द की ज़बान से है।

हममें से कुछ लोग हिन्दी के कट्टर हिमायती हैं, जो अपनी भाषा में विदेशी शब्दों के आने देने के सख़्त विरोधी हैं। मैं समझता हूँ वे अपनी भाषा-संबन्धी मौजूदा हालत से वाक़िफ़ कम हैं। हमारी रहन-सहन पर मुसलमानी सभ्यता की गहरी छाप पड़ चुकी है, इसे वे नहीं देखते। विदेश से आये हुए कितने ही शब्द हमारे घरों में नौकर की तरह हमारी ख़िदमत बजा रहे हैं। उन्हें हम अलग नहीं कर सकते। पता नहीं, वे कब आये और किनके साथ आये। सबूत के लिये 'रोटी' शब्द को लीजिये। यह न मुसलमानों का शब्द है, न हिन्दुओं का। फिर भी हिन्दू, मुसलमान किसीकी भी हिम्मत नहीं कि इस अहिन्दू गुलाम को घर से बाहर निकाल दे। यह हमारे घरों में बच्चे से लेकर बुड्ढे तक की ज़बान पर है और इसने जिसकी जगह ली, उसे ऐसा नेस्तनाबूद किया कि हमें शक होने लगा है कि हमारे पुरखे रोटी खाते थे या केवल दाल, भात और माँड़ पर गुज़र करते थे। छप्पन प्रकार के व्यंजनों में 'रोटी' भी थी या नहीं, यह कौन कह सकता है? हमारे राम, कृष्ण, युधिष्ठिर, विक्रमादित्य, चन्द्रगुप्त, अशोक, भीम और हनुमान आदि वीरों ने क्या भात खा-खाकर बल के इतने करिश्मे दिखलाये थे? यदि वे भी रोटियाँ खाते थे, तो उसका पुराना नाम क्या था?

'रोटी' ही नहीं, 'तवा' भी विदेशी शब्द है। यह फ़ारसी का 'तावा' है, जो घिस-घिसाकर 'तवा' होगया है। जब रोटियाँ रही होंगी तब तवा भी रहा होगा; पर 'तवे' ने जिस हिन्दू बरतन को निकाल कर चूल्हे पर क़ब्ज़ा किया, उसका नाम क्या था? यह अब शायद कोई हिन्दीदाँ नहीं जानता। क्या हिन्दुई या हिन्दवी के कट्टर हिमायती रोटी और तवे को छोड़ने को तैयार हैं?

'पगड़ी' और 'पेट' भी अनार्य शब्द हैं। पेट तो आजकल दिमाग़ पर चढ़ा हुआ है, और उसने पगड़ी को पैरों पर डाल रक्खा

है। 'पेट' का स्थान यदि 'उदर' को दे दें, तो क्या 'पेट' चल सकता है?

हमारे घरों में कितने ही ऐसे शब्द हैं जो अपने मुल्क का नाम अभी तक अपने साथ रक्खे हुए हैं। जैसे—

'चीनी'—चीन देश की शक्कर को कहते हैं। पहले लोग बाज़ार में जब इसे ख़रीदने जाते रहे होंगे तब कहते रहे होंगे, 'चीनी शक्कर दो'; अब शक्कर उड़ गया, चीनी रह गया।

'मिश्री'—मिश्र देश का निवासी है। मिश्री शक्कर का 'शक्कर' निकल गया, मिश्री बाकी रह गया।

'सुरती'—यह पहले सूरती तम्बाकू था। जिसका अर्थ था सूरत शहर (बंबई प्रांत) से आया हुआ तम्बाकू। तम्बाकू निकल गया, सूरती का 'सुरती' होगया। अब जो तम्बाकू पिया नहीं जाता, बल्कि खाया जाता है, उसे सुरती कहते हैं।

ऊपर मैं कह आया हूँ कि मुसलमानी सभ्यता ने हिन्दू समाज पर अपनी गहरी छाप लगा दी है। ऐसे बहुत-से शब्द दिये जा सकते हैं जिनसे इस बात का सबूत मिलेगा। नमूने के लिये कुछ शब्द आगे दिये जाते हैं—

अन्ना—(तुर्की) माँ।

बाबा—(फ़ारसी) पिता। हिन्दुओं में पितामह को भी बाबा कहते हैं। पर ग्रामगीतों में 'बाबा' पिता के अर्थ में आया है।

हमशीरा—(फ़ारसी) बहन, संस्कृत के समक्षीरा का अपभ्रंश जान पड़ता है।

बालिग़—(अरबी) वयस्क।

बुत—(फ़ारसी) शायद बुद्ध से घिसकर बना है। हिन्दुस्तान में मूर्तिपूजा बुद्ध के बाद से चली है। इसलिये बुद्ध का बुत हो जाना आश्चर्यजनक नहीं।

पाजी—(फ़ारसी)

लाला—(फ़ारसी) गुलाम के अर्थ में आता है। हिन्दी में यह सम्मानसूचक शब्द बन बैठा है।

पायक—(फ़ारसी) सेवक।

जाके हनूमान अस पायक। —तुलसी

तोबरा—(फ़ारसी) घोड़े का तोबड़ा।

तोप—(तुर्की)

दामाद—(फ़ारसी) जामाता।

काका—(फ़ारसी) पितृव्य।

वकील—(फ़ारसी)

आचार—(फ़ारसी) अँचार।

हलवाई—(अरबी) पता नहीं, मुसलमानों से पहले इस मुल्क में हलवाई थे या नहीं, और उनका क्या नाम था? हलवा बनाने से हलवाई नाम पड़ा है। क्या यहाँ के लोग पहले हलवा बनाना नहीं जानते थे?

चमचा—(फ़ारसी)

अमरूद, अमरूत— (फ़ारसी)

अनार—(फ़ारसी)

अंजीर—(फ़ारसी)

बादाम—(फ़ारसी)

बिही—(फ़ारसी)

तूत—(फ़ारसी)

ख़रबूज़ा—(फ़ारसी)

तरबूज़—(फ़ारसी)
ख़स्ता—(फ़ारसी) ख़स्ता कचौड़ी ।
दारचीनी—(फ़ारसी)
ख़ुरमा—(फ़ारसी)
चोग़ा—(फ़ारसी)
चिकन—(फ़ारसी)
चश्मा—(फ़ारसी)
कुरता—(तुरकी)
चपकन—(फ़ारसी)
पाख़ाना—(फ़ारसी)
जाज़रू—(फ़ारसी) जाज़रूर, पाख़ाना ।
अतलस—(अरबी) रेशमी कपड़ा ।
बख़िया—(फ़ारसी)
बज़ाज़—(अरबी)
पोत—(फ़ारसी) लगान ।
तार—(फ़ारसी) सूत, डोरा ।
तोशक, तकिया—(अरबी)
तालाब—(फ़ारसी)
तमाचा—(फ़ारसी)
ज़ेब—(अरबी)
पुर्ज़ा—(फ़ारसी)
जिन्स—(अरबी)

बहु जिनिस भूत पिसाच ।—तुलसी

बेबाक़—(फ़ारसी)
पलक—(फ़ारसी)

पल्ला—(फ़ारसी)
हुक्का—(अरबी)
अख़बार—(फ़ारसी)
बुक़चा—(अरबी) बकुचा
बीमा—(फ़ारसी)
इहाता—(अरबी)
असबाब—(अरबी)
पुल—(फ़ारसी)
जहेज़—(अरबी)
हद—(अरबी)
बुख़ार—(अरबी)
बहस—(अरबी)
बर्राक़—(अरबी) चमकीला।
बलवा—(अरबी)
बोता—(फ़ारसी) ऊँट का बच्चा। हिन्दी का 'बोदा' शब्द सम्भवतः इसीका अपभ्रंश है।
ग़ल्ला—(अरबी)
बुलाक—(अरबी) एक गहना।
हवेल—(अरबी)
बाज़ूबंद—(फ़ारसी)
पाज़ेब—(फ़ारसी)
बाली—(फ़ारसी)
तरकी—शायद तुर्की गहने से मुराद है।
चाकर—(फ़ारसी)
नौकर—(फ़ारसी)
दादनी—(फ़ारसी) क़र्ज़।

दङ्गल—(फ़ारसी)
दवात—(फ़ारसी)
जलेबी—(फ़ारसी)
दहुल—(फ़ारसी) ढोल ।
सा—(फ़ारसी) तुलनात्मक शब्द ।
मानो—(फ़ारसी) उपमावाची ।
ज़ीरा—(फ़ारसी)
सितार—(फ़ारसी)
सारंगी—(फ़ारसी)
तबल—(फ़ारसी) तबला ।
बीन—(फ़ारसी)
दफ़—(फ़ारसी) डफला ।
यकतारा—(फ़ारसी)
दलाल—(अरबी)
दिहात—(फ़ारसी)
रद्दा—(फ़ारसी)
रतल—(अरबी) अँग्रेज़ी का पौंड
रमल—(अरबी)
रन्दा—(फ़ारसी)
ज़बून—(फ़ारसी) बुरा, दुष्ट ।
सीग—(तुरकी) लिंग । गाँव के लोग बोलते हैं—'हमरे सींगे
मैं ग' ।
तरावट—(अरबी) शीतलता ।
क़मीस—(अरबी) कमीज़ ।
पाजामा—(फ़ारसी)
नऊज़—(अरबी) न हो ।

अबीर—(अरबी)

गुलाल—(फ़ारसी)

बहुत-सी चीज़ें इस मुल्क में मुसलमानों के साथ आईं। उनके नाम भी ज्यों के त्यों रह गये और शहरों से लेकर गाँवों तक फैल गये। वे हमारी रोज़ाना ज़रूरियात में ऐसे शामिल होगये हैं कि हम उन्हें अलग नहीं कर सकते। जैसे—

पायजामा, इजारबंद, रूमाल, शाल, दुशाला, चोग़ा, कुर्त्ता, पुलाव, ज़र्दा, क़ुर्मा, अचार, रकाबी, तश्तरी, चमचा, साबुन, शीशा, शीशी, फ़ानूस, हुक़्क़ा, नैचा, चिलम, बन्दूक़ इत्यादि।

मुसलमानों ने यहाँ की बहुत-सी चीज़ों के नाम अपने रख दिये। वे ऐसे प्रचलित हुये कि अब उनके हिन्दू नाम का पता सिर्फ़ कोष ही में मिल सकता है। जैसे

पिस्ता, बादाम, मुनक़्क़ा, शहतूत, बेदाना, ख़ूबानी, अंजीर, सेब, बिही, नाशपाती, अनार, मज़दूर, वकील, जल्लाद, सर्राफ़, मसख़रा, लिहाफ़, चादर, तकिया, तबीअत, बरफ़, बुलबुल, दवात, क़सम, स्याही, गुलाब, ऐनक, संदूक, कुर्सी, तख्त, लगाम, ज़ीन, तंग, कोतल, जहाज़, मस्तूल, बादबान, पर्दा, दालान, तनख़्वाह, मल्लाह, रसोद, रसद, कारीगर, तराज़ू, दस्तावेज़, प्याला, चाक़ू, तारीख़, अदालत, तोप, लाश, कोतल इत्यादि।

मुसलमानों के बाद पोर्चुगीज़ आये। उनके भी कुछ शब्द यहाँ छूटे हुये हैं; जैसे—

अँगरेज़, पिस्तोल, पलटन, कप्तान, कमरा, नीलाम, इञ्जिनियर, चा, काफ़ी, गोदाम, चाबी, इत्यादि।

अँग्रेज़ों के आने पर बहुत से अँग्रेज़ी शब्द शामिल होगये; जैसे—

कोर्ट, अपील, टिकट, कलक्टर, डाक्टर, टेबिल, पेंसिल, पेंशन, बूट,

फ़ार्म, बोर्डिंग, डिग्री, ग्लास, फंड, रेल, ट्रेन, वारंट, रबर, लालटेन, पतलून, मील, इंच, फुट, वास्केट, कोट, म्युनिसिपैलिटी, सेविंगबैंक, होटल, सोडावाटर, हास्पिटल, बोतल, पास, रजिस्ट्री, नोटिस, समन, स्कूल, कमेटी, फ़ीस, स्लेट, टिन, प्रेस, इन्स्पेक्टर, वैरिस्टर, मास्टर, कांस्टेबल, वोटर, मोटर, कौंसिल, एसेंब्ली, मीटिंग, मेंबर, फैमिली, स्पिरिट, बाइसिकल, लाइन, बटन, हैट, निब, पालिश इत्यादि।

ऊपर जितने शब्द दिये गये हैं, वे प्रायः सब विदेशी हैं और हमारे घर में रसोईघर से लेकर बैठक तक खुलेआम काम दे रहे हैं। ये हमारे जीवन के ऐसे साथी होगये हैं कि इनको निकालकर इनके स्थान पर अगर हम संस्कृत के नौकर रक्खें, तो एक दिन भी काम चलना मुश्किल हो जायगा। हम लोग 'काका' को घर से निकाल नहीं सकते, न 'बाबा' को छोड़ सकने हैं, और लाला और चाचा भी निकाले नहीं जा सकते।

जितने सिले हुये कपड़े हमारे घरों में हैं, उन सब के नाम विदेशी हैं। इससे मालूम होता है कि हमारे यहाँ सिले हुये कपड़े विदेश से आये। यहाँ सिर्फ़ ओढ़ने का रिवाज रहा होगा। इन कपड़ों के संस्कृत नाम कहाँ से मिलेंगे?

गहने प्रायः सब विदेशी हैं। 'बाजूबन्द' की जगह 'अंगद' कहिये तो हिन्दू लोग सुग्रीव के भतीजे तक जा पहुँचेंगे। 'नूपुर' की जगह 'पाज़ेब' ने ले ली। जितने गहने आजकल हिन्दू स्त्रियाँ पहनती हैं, उनमें से अधिकांश मुसलमानी हैं। क्या पहले हिन्दुओं में अधिक गहने पहनने का रिवाज नहीं था?

मेवों के नाम बिल्कुल ही विदेशी हैं। उनके संस्कृत नाम चाहे जो हों, अब उनका प्रचार नहीं। कोषों की सहायता से उनके पुराने नाम रखें तो बाज़ार में वे चल नहीं सकेंगे।

मिठाइयों के नाम भी विदेशी हैं। हलवा, जलेबी, बरफ़ी, समोसा, ख़ुरमा, खाजा, कलाकंद, ख़स्ता, सभी तो विदेशी हैं।

कामकाज और लेन-देन के बहुत-से शब्द विदेशी हैं, जो ऐसे स्वतंत्र होगये हैं कि वे हटाये नहीं जा सकते; जैसे—पुर्ज़ा, पोत आदि।

बाजे बिल्कुल ही विदेशी हैं। ढोल अरब से आया है। अब वह हमारे मंदिरों तक में पहुँच चुका है। बहुत-से मन्दिरों में ढोल बजाकर ही ठाकुरजी जगाये जाते हैं।

सबसे अधिक आश्चर्य तो अबीर और गुलाल के लिये है। 'अबीर' अरब का है, और 'गुलाल' फ़ारस का। पर वह हिन्दुस्तान में इतना गयज हुआ कि हमारे एक मुख्य त्योहार होली का वह एक ख़ास अंग होगया और उसे व्रजभाषा के कवियों ने ऐसा महत्त्व दिया कि अगर उसे उनकी कविता में से निकाल दिया जाय तो व्रजभाषा की लालिमा ही कम हो जाय। पता नहीं, अबीर-गुलाल के पहले हिन्दुओं में होली का कौन-सा रंग चलता था।

इतने अधिक विदेशी शब्द हमारे घरों में घुसे हुये हैं और वे ऐसे कुटुम्बी की तरह रहने लगे हैं कि पराये नहीं जान पड़ते। वे निकाले नहीं जा सकते। और जब तक वे निकाले नहीं जाते तब तक हिन्दी के कट्टर हिमायतियों का यह दावा कि हिन्दी में संस्कृत के ही शब्द रहने पायें, पूरा नहीं होता।

मुसलमानों के आने से हज़ारों वर्ष पहले शक, हूण और यूनानी आदि जातियाँ इस देश में आ चुकी हैं। यद्यपि अब उनका अस्तित्व यहाँ नहीं है, पर उनके शब्द किसी न किसी पोशाक में उनकी यादगार की तरह बने ही हुये हैं। मेहरा, शाकद्वीपी, मिश्र (मिश्रदेशी ब्राह्मण) जाट आदि ऐसे ही शब्द तो हैं। अतएव कोई सबब नहीं कि हम कुछ और शब्दों को भी, चाहे वे किसी देश के क्यों न हों और हमारी ख़िदमत के लिये तैयार हैं, अपने घर में जगह न दें। अगर हम ऐसी

उदारता दिखाएँ, तो हिन्दी-उर्दू का झगड़ा बड़ी आसानी से ख़तम हो जा सकता है। कुछ मुसलमानी शब्दों के आ जाने से हिन्दी ही को उर्दू करार देकर उसे हिन्दू-मुसलमानों के बीच वैमनस्य का एक कारण बना रखने में हमें तो कोई बुद्धिमानी नहीं दिखाई पड़ती। उर्दू के साथ प्रतिस्पर्द्धा करने के बजाय उर्दू को हज़म कर लेना ज़्यादा लाभदायक है। अगर हम ब्रजभाषा, अवधी और छत्तीसगढ़ी को हिन्दी मानते हैं तो भाषा की दृष्टि से तो इनकी अपेक्षा उर्दू कहीं अधिक हमारे निकट है। ब्रजभाषा ब्रज की भाषा है, और अवधी अवध में बोली जाती है। इन भाषाओं या बोलियों में पद्य-साहित्य उच्च कोटि का है, इसी लोभ से हिन्दीवाले इन्हें अपनाये हुए हैं। भिन्न प्रांतवालों को जब हिन्दी सीखनी पड़ती है, तब प्रचलित हिन्दी के साथ उन्हें ब्रजभाषा और अवधी के शब्द भी रटने पड़ते हैं; क्योंकि ब्रजभाषा और अवधी ये दोनों बोलियाँ हिन्दी से उतने ही अन्तर पर हैं जितने अन्तर पर गुजराती, मराठी, मारवाड़ी और बँगला हैं। इन सबकी अपेक्षा उर्दू कहीं अधिक हिन्दी के निकट है। हिन्दीवाले अभी साहित्य में ग़रीब हैं, इससे वे ब्रज और अवध से लाया हुआ धन दिखलाकर किसी तरह अपने मान की रक्षा करते हैं। उर्दू को भी हम इसी तरह अपनालें तो हमारे मान-सम्मान की वृद्धि ही होगी। उसमें कोई कमी नहीं आयेगी।

गुजराती के भी दो रूप हैं—एक पारसियों की गुजराती, जिसमें मुसलमानी अल्फ़ाज़ ज़्यादा रहते हैं; दूसरे हिन्दुओं की गुजराती, जिसमें संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्द अधिक रहते हैं। पर पारसी या हिन्दू किसी के लिये कोई रुकावट नहीं कि वह कौन-सा शब्द इस्तेमाल करे, कौन-सा न करे। बँगला में भी ऐसा ही हाल है। बंगाली मुसलमान जो बँगला बोलते या लिखते हैं, उसमें मुसलमानी शब्द ज़्यादा होते हैं, और हिन्दू बंगाली जो भाषा बोलते हैं उसमें

फ़ीसदी ७५ शब्द संस्कृत के होते हैं। फिर हिन्दी में एक झगड़े की जड़ क्यों क़ायम है, समझ में नहीं आता। उर्दू में इस्तेमाल होनेवाले कुछ ऐसे शब्द हैं जिन्हें हिन्दी में स्वतन्त्रता से ले लेना चाहिये। मैं ने ऐसे शब्दों की एक सूची तैयार की है।

इस शब्द-संग्रह में १२०० से अधिक शब्द हैं*। इनमें से तीन-चौथाई से अधिक शब्द आमतौर से शहरों और गाँवों में, कहीं-कहीं असली सूरत में और कहीं-कहीं देहाती बनकर रहते हैं। एक चौथाई से भी कम शब्द ऐसे हैं जिन्हें हिन्दीवालों को ले लेना, उर्दू को हज़म कर लेना और झगड़े को ख़तम कर देना है। इन शब्दों को बिना जाने कोई व्यक्ति हिन्दी का जानकार माना ही नहीं जाना चाहिये।

हिन्दीवालों से मेरा नम्र निवेदन है कि वे अपनी संकीर्णता तर्क कर दें और व्रज और अवध के दायरे से बाहर निकलकर अपनी ज़बान को भारतवर्ष भर में व्यापक बनाने का उद्योग करें; गद्य और पद्य दोनों में ऊँचे दर्जे का साहित्य पैदा करें, और रोज़मर्रा की आम बोलचाल में अपने विचार ज़ाहिर करें, जिससे उनके देशवासी उनके विचारों का पूरा लाभ उठा सकें; जैसा कबीर और तुलसीदास ने अपने समय के समाज के लिये किया था।

उर्दू

उर्दू कोई स्वतंत्र भाषा नहीं; वह हिन्दी ही का एक रूप है। मुसलमान बादशाहों के लश्करी बाज़ार में जहाँ जुदा-जुदा मुल्कों और क़ौमों के सिपाही सौदा लेने के लिये जमा होते और हिन्दू बनियों की समझ में आने लायक़ हिन्दी में अपनी-अपनी मातृ-भाषा के कुछ शब्दों को मिलाकर बोलते थे, उसकी उत्पत्ति हुई

*हिन्दुस्तानी कोष में ये सभी शब्द दे दिये गये हैं।

थी ज़रूर, पर उसके तमाम अंग-प्रत्यंग हिन्दी हैं। उर्दू कहने के बदले उसे 'मुसलमानी हिन्दी' कहा जाता तो अधिक सार्थक होता। ऊपर मैं कह आया हूँ कि गुजराती ज़बान की भीतर ही भीतर दे सूरतें हैं, पर बाहर वह एक है। ठीक यही हाल हिन्दी का है। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है कि यहाँ हिन्दू-मुसलमानों को लड़ने के लिये या लड़ाने के लिये एक झूठा वहम फैला रक्खा गया है कि हिन्दी और उर्दू दो ज़बानें हैं।

कहा जाता है कि शाहजहाँ बादशाह के ज़माने में उर्दू की उत्पत्ति हुई। यह बात ग़लत है। उर्दू बाज़ार तो मुहम्मद ग़ोरी के गुलाम कुतुबुद्दीन के लश्कर में भी रहा होगा और उसमें सौदा बेचने और ख़रीदनेवालों के बीच को कोई बोली भी रही होगी और वह हिन्दी के सिवा दूसरी हो नहीं सकती। क्योंकि इस मुल्क के हिन्दू बनिये लश्कर में साथ रक्खे जाते थे। सिपाहियों को मजबूर होकर बनियों की बोली में सौदा माँगना पड़ता था। उसीमें वे कुछ अपनी ज़बान के शब्द भी मिला देते थे। उस खिचड़ी हिन्दी का एक नया नाम देने की ज़रूरत यदि पड़ी भी हो तो वह 'लश्करी हिन्दी' कहला सकती है। आजकल सौ, डेढ़-सौ वर्षों से इस मुल्क में अँग्रेज़ी राज है। हाईस्कूलों और कालेजों में जाइये तो वहाँ की हिन्दी में आपको सैकड़ों अँग्रेज़ी वर्ड (शब्द) काम करते हुए सुनाई पड़ेंगे; मगर उस हिन्दी का कोई अलग नाम नहीं। इसी तरह अरबी, फ़ारसी या तुर्की के कुछ लफ़्ज़ों के आ जाने से हिन्दी का दूसरा नाम क्यों होना चाहिये?

आर्यावर्त और ईरान का बहुत पुराना संबंध है। दोनों देशों में शादी-ब्याह तक के प्रमाण पाये जाते हैं। ईरान की पुरानी भाषा में तो वेद के मन्त्र तक ज्यों के त्यों मिलते हैं। पर आजकल की फ़ारसी में भी सैकड़ों संस्कृत के शब्द ईरानी पोशाक पहने हुये मैाजूद

हैं, जो इस बात के सबूत हैं कि फ़ारसी और संस्कृत के बोलनेवाले किसी वक्त एक ही घर में भाई-भाई की तरह रह चुके हैं। पेट ने उन्हें जुदा किया और उनकी ज़बानों को ज़माने ने अलग-अलग पोशाकें पहना दीं। यहाँ फ़ारसी में आमतौर से प्रचलित संस्कृत के कुछ शब्द दिये जाते हैं, जिनके अन्दर किसी ज़माने में ईरान और आर्यावर्त के एकजाई होने का सुंदर दृश्य अभी तक मौजूद है--

फ़ारसी	संस्कृत
हूर	सूर, सूर्य
माह	मास
तारा	तारा
शब	क्षपा (रात)
शाम	सायं
बाद	वात (हवा)
गरमी	ग्रीष्म
सरद	सरत्
दूद	धूम
आब	आप (पानी)
आहार	आहार
गरास	ग्रास (कौर)
गन्दुम	गोधूम (गेहूँ)
जौ	यव
माश	माष (उड़द, मूँग)
बिरंज	ब्रीहि (धान)
शाली	शाली (धान)
शीर	क्षीर (दूध)
करपास	कर्पास (कपास)

फ़ारसी	संस्कृत
तार	तार, तन्तु
ख़ुम	कुम्भ (घड़ा)
चरम	चर्म (चमड़ा)
दार	दारु (लकड़ी)
शाख़	शाखा
दूर	दूर
सफ़ेद	श्वेत
स्याह	श्याम
ज़न	जनी (स्त्री)
नर	नर
गाव	गो
अस्प	अश्व
मेश	मेष (भेड़)
ख़र	खर
उश्त्र	उष्ट्र
सग	शुनक (कुत्ता)
शग़ाल	शृगाल
ख़ूक	शूकर
मगिस	मक्षिका
कुलाग़	काक
यक	एक
दो	द्वि
चहार, चार	चतुः
पंज	पंच
शश	षष्ठ

फ़ारसी	संस्कृत
हफ़्त	सप्त
हश्त	अष्ट
नुः	नव
दह	दश
सद, सत	शत (सौ)
कुलाल	कलाल (कुम्हार)
जंगल	जङ्गल
शाल	शाल
मोरी	मोरी (हिन्दी)
नाम	नाम
नील	नील
जाल	जाल
हलाहिल	हलाहल
मिहर	मिहिर (सूर्य)
काम	कर्म
बन	वन
बाल	बाल
रोम	रोम, लोम
सुमन (एक ख़ास फूल)	सुमन (फूल)
दाम	दाम (रस्सी)
अंगारह	अंगार
जन्दाल	चाण्डाल
अफ़ीयून	अहिफेन (अफ़ीम)
आफ़त	आपत्ति
नीलोफ़र	नीलोत्पल

फ़ारसी	संस्कृत
कान	खनि (खान)
कुंज	कुंज़
मूश	मूषक
नाल	नालिका
गर्म	घर्म (घाम)
शगून	शकुन
पालान	प्रयाण, पलायन
दर	द्वार
पुर	पूर्ण
हुक्चः	हिक्का (हिचकी)
क्रोह	क्रोश (कोस)
आमलः	आमलक (आँवला)
मुर्दा	मृतक
रजः (अलगनी)	रज्जु (रस्सी)
यार	जार
वेव	वधू (बहू)
मै	मद्य (शराब)
कार	कार्य
किरम	कृमि (कीड़े)
दहुल	ढोल (हिन्दी)
तिश्ना (प्यासा)	तृषा, तृष्णा (प्यास)
शकर	शर्करा
आक	अर्क (मदार)
अश्क	अश्रु
गाम	ग्राम (गाँव)

फ़ारसी	संस्कृत
ज़लोक	जलौका (जोंक)
कूज़	कुब्ज (कुबड़ा)
जीरा	जीरक
सूज़न	सूची (सुई)
अंकुज़	अंकुश
सरीर	शरीर
साँ	वान्, वत् (तुलनात्मक)
कशफ़्	कच्छप
शना	स्नान
गन्दश	गन्धक
बारिश, बरसात	वर्षा
किश्त	क्षेत्र, खेत
मेग़	मेघ
सरशफ़	सर्षप (सरसों)
मौलसिरी	मौलिश्री, बकुल
पलास	पलाश, (ढाक)
आस्ताँ	स्थान
आराम बन	आराम (उपवन)
इन्तक़ाल	अन्तकाल
इख़्तयार	अधिकार
तरस	त्रास
मह	महा
पार	पर
पारीनः	प्राचीन
नाव	नौ, नौका

फ़ारसी	संस्कृत
आस्त:, हस्तः	अस्थि (हड्डी)
अंगोज़ह	हिंग
ईदर	अत्र (इधर)
आदरक	आर्द्रक (आदी)
आतिश	हुताशन (आग)
बाँग	वाक्
बार	वार
ताब	तप,ताप
बेवः	विधवा
बन्द	बन्ध
मादर, माम	मातृ
पिदर, बाब	पितृ (हिन्दी—बाप)
बिरादर	भ्रातृ
पोर	पुत्र
दुख़्तर	दुहिता
दामाद	जामाता
सर	शिर
तारुक	तालुक
अब्रू	भ्रु
दन्द	दन्त
गरे	ग्रीवा
बाहू	बाहु
दस्त	हस्त
मुश्त	मुष्टि
अंगुश्त	अंगुष्ठ

फ़ारसी	संस्कृत
पुश्त	पृष्ठ
नाफ़	नाभि
सुरीन	श्रेणि
ज़ानू	जानु
पाय	पाद
ख़ून	शोण, शोणित
अब्र	अभ्र (बादल)
बार	भार
बूम	भूमि
कबूतर	कपोत
तबास	तपस्या
वाई	वापी (बावड़ी)
ताक	द्राक्षा (दाख)
जवान	युवा
मगर मच	मकर मत्स्य
ख़ुद	स्वतः
ख़ुश्क	शुष्क
ख़शख़ाश	खसखस
नाख़ुन	नख
दुश्ख़्वार	दुष्कर
अन्दर	अन्तर
ज़ात	जात (पैदा हुआ)
वेद	वेत्र
अज़्दह	अजगर
दाया	धाय

फ़ारसी	संस्कृत
दोल	डोल (हिन्दी)
शक	शङ्क
वदन (शरीर)	वदन (मुँह)
इमय्यर	अमर
वन्द	वन्त
वान	वान्

ये शब्द क्या इस बात के सबूत नहीं हैं कि संस्कृत और फ़ारसी बोलनेवाले एक ही माँ-बाप की सन्तान हैं ?

मुसलमान लोग जब हिन्दुस्तान में आये तब इन शब्दों की बदौलत वे हिन्दुओं के लिये नये नहीं थे। हमारे भेदिये—ये शब्द—तो उनके साथ थे ही। उनके दिलों में यहाँ की ज़बान सीखने की चाह थी, ज़बान की लड़ाई लड़ने की उनकी क़तई इच्छा न थी। इससे उन्होंने अपने लफ़्ज़ों को हिन्दी व्याकरण के साँचे में ढल जाने दिया। जैसे—

वकील का बहुवचन	हिन्दी का		वकीलों हुआ न कि		वकला
निशान	,,	,,	निशानों	,,	निशानात
मेवा	,,	,,	मेवों	,,	मेवाजात

इत्यादि।

फ़ारसी शब्दों से बहुत-सी क्रियाएँ हिन्दी के ढंग पर बन गयी हैं। जैसे—

क़बूल से क़बूलना
गुज़र से गुज़रना
बदल से बदलना; इत्यादि।

बहुत-से फ़ारसी शब्दों के साथ होना, करना, लगाना आदि हिन्दी शब्द जोड़कर क्रियाएँ बना ली गयी हैं। जैसे—

ख़ुश होना, ज़िक्र करना, दिल लगाना; इत्यादि।

बहुत-से ऐसे नये शब्द बन गये, जिनका धड़ हिन्दी है और सिर फ़ारसी। जैसे—

चिट्ठी-रसाँ, समझ-दार, पान-दान, गाड़ी-खाना; इत्यादि।

दोनों भाषाओं के बहुत-से पर्यायवाची शब्द एक साथ होगये। जैसे—

काग़ज़-पत्र, धन-दौलत, शादी-ब्याह; इत्यादि।

जिस भाषा का लिंग, वचन, क्रिया, कारक, सर्वनाम और अव्यय हिन्दी का है उसे थोड़े से विदेशी शब्दों के मिश्रण से एक अलग नाम क्यों देना चाहिये? यदि—

'यह आन्दोलन देश के लिये बहुत ही लाभदायक है;' यह वाक्य हिन्दी का है; और—

'यह तहरीक मुल्क के लिये निहायत मुफ़ीद है,' यह जुमला उर्दू का हुआ; तो—

'यह एजिटेशन कंट्री के लिये मोस्ट बेनेफ़िशल है।' यह सेंटेंस किस भाषा का कहा जायगा? मैं तो पहले को हिन्दुओं की हिन्दी, दूसरे को मुसलमानी हिन्दी, और तीसरे को अँग्रेज़ी हिन्दी कहूँगा। बंगाल, पंजाब, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र और मद्रास में जो हिन्दी बोली जाती है उसमें बहुत से स्थानीय शब्द मिल जाते हैं। केवल उनके कारण से नयी-नयी भाषाएँ नहीं ईजाद की जा सकतीं।

देश के लिये बड़े ही दुर्भाग्य की बात है कि कुछ दिनों से हिन्दू-मुसलमानों की मज़हबी लड़ाई के साथ ज़बान की भी लड़ाई छिड़ रही

है और यू० पी० की आमफ़हम ज़बान में अरबी-फ़ारसी के लुग़ात ठूँसे जाने लगे हैं। जो इस तहरीक के हामी हैं, उनसे मेरा नम्र निवेदन है कि वे अपने नेक पूर्वजों की तरफ़ देखें, जिन्होंने अपने शब्दों को हिन्दुस्तानी पोशाक पहनाने में खुशी हासिल की थी। उर्दू के पुराने शायर अपनी ग़ज़लों में माशूक़ के लिये 'मोहन', 'सजन' और 'पीतम'; आँखों के लिये 'नैन' और 'अँखड़ियाँ'; और 'नाम' के लिये ठेठ हिन्दी 'नाँव' का इस्तेमाल किया करते थे। वे जिस भाषा में अपनी क़लम चलाते थे, उसका नाम भी उर्दू नहीं, बल्कि रेख़ता था। 'मीर' कहते हैं—

खूगर नहीं हम यों ही कुछ रेख़ता-गोई के,
माशूक़ था जो अपना बाशिन्द: दकन का था।

'सौदा' ने कहा है—

शेर बे-मानी से तो बेहतर है कहना रेख़ता।

'ग़ालिब' का एक शेर है—

रेख़ते के तुम्हीं उस्ताद नहीं हो 'ग़ालिब',
कहते हैं अगले जमाने में कोई 'मीर' भी था।

'कबीर' ने रेखता नाम का एक छंद ही लिखा है, जो उनके ज़माने की हिन्दी में है और जो उर्दू के पुराने शायरों की ज़बान से बिल्कुल मिलती-जुलती है। कबीर का भरण-पोषण मुसलमान-घर में हुआ था, इससे वे मुसलमानी भाषा से परिचित थे।

अभी थोड़े ही दिन की बात है, इलाहाबाद के गौरव-स्वरूप, समकालीन शायरों में सर्वश्रेष्ठ शायर स्व० अकबर ने जिस भाषा में अपने मनोभाव प्रकट किये हैं उसे हम आदर्श भाषा कह सकते हैं। उन्होंने पचासों हिन्दी शब्दों को अपनी शायरी में स्थान दिया है। उर्दू वाले स्व० अकबर का अनुकरण क्यों न करें?

हिन्दुस्तानी

पुरानी हिन्दी, उर्दू और अँग्रेज़ी के मिश्रण से जो एक नयी ज़बान आप से आप बन गयी है वह हिन्दुस्तानी के नाम से मशहूर है। बहुत से ऐसे विदेशी शब्द हैं जिनके पर्यायवाची शब्द हिन्दोवालों के पास नहीं हैं। जैसे—'हसरत' शब्द को लीजिये—

दरो दीवार प हसरत से नज़र करते हैं,
खुश रहो अहले-वतन हम तो सफ़र करते हैं।

'हसरत' के लिये 'लालसा' शब्द का प्रयोग लोग करते हैं, पर 'हसरत' में प्रेम, करुणा और आकर्षण का जो भाव है वह 'लालसा' में नहीं है। लालसा में केवल आकर्षण है, करुणा नहीं।

इसीप्रकार 'अरमान' शब्द को लीजिये। हिन्दी में इसके लिये ठीक-ठीक अर्थ देनेवाला कोई पर्यायवाची शब्द नहीं है। इसी तरह अँग्रेज़ी का 'फ़ीलिंग' (Feeling) शब्द है। कुछ लोग 'अनुभव' को इसका पर्यायवाची बतायेंगे, पर 'अनुभव' 'फ़ीलिंग' की गहराई तक नहीं पहुँचता। 'फ़ीलिंग' में जो तड़प छिपी है, वह 'अनुभव' में नाम-मात्र को भी नहीं। हाँ, 'महसूस' में है। अतएव नये भावों को व्यक्त करनेवाले शब्दों को हमें अपने घरों में जगह देनी ही पड़ेगी।

आजकल का समाज अपनी बोलचाल की ज़बान की एक ऐसी सूरत की ज़रूरत महसूस कर रहा था जिसमें अँग्रेज़ी ख़यालात भी फ़िट हो सकें, वह उसे 'हिन्दुस्तानी' के नाम से हासिल हुई। मगर फिर भी अभी बहुत-से लफ़्ज़ों के लिये गुंजाइश निकालनी है। जैसे, पेशावरों के शब्द। किसानों के घरों में, खेतों में और खलियानों में जो शब्द काम देते हैं, हिन्दुस्तानी में वे नहीं आने पाते। कुम्हार, लुहार, सुनार, बढ़ई, धोबी, रँगरेज़, तेली, तमोली, जुलाहा, धुनिया, नाई, राज, मोची, चमार, ठठेरा, भड़भूँजा, आतशबाज़, दफ़्तरी,

नालबन्द और जर्राह जो शब्द काम में लाते हैं, हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी, तीनों भाषाओं के लोग उन्हें नहीं जानते और न उन शब्दों को अपनी भाषा में आने देते हैं। नतीजा यह हुआ है कि अपने मुल्क के पेशावरों को तरफ़ कभी हमारा ध्यान भी नहीं जाता। हम जानते ही नहीं कि किसान और कुम्हार को उनके पेशे में कामयाबी हासिल करने के रास्ते में क्या-क्या कठिनाइयाँ मौजूद हैं, और वे कैसे हटाई जा सकती हैं। शब्द ही नहीं है, तो विचार-धारा कहाँ से पैदा हो? अतएव जहाँ हम अपनी ज़बान में विदेशी शब्दों को जगह देते जा रहे हैं वहाँ अपने देहात के ग्रामीण दोस्तों के लिये भी काफ़ी जगह खाली रखनी चाहिये। हमें पेशावरों के सभी शब्दों की एक सूची बना लेनी चाहिये और स्कूली रीडरों में और क़िस्से-कहानियों या लेखों में उनका उपयोग करना चाहिये। इससे हम अपने ग्रामीण भाइयों के बहुत नज़दीक पहुँच जायँगे। साथ ही हम पेशावरों को दुनिया की नयी रोशनी से भी परिचित करते रहेंगे।

मैं ने ग्राम-गीतों के दौरे में पेशावरों के हज़ारों शब्द जमा किये हैं। उनके इस्तेमाल में सबसे बड़ी दिक़्क़त जो है वह यह है कि एक ही काम या चीज़ के नाम भिन्न-भिन्न ज़िलों में जुदा-जुदा हैं। इससे किसी एक ज़िले के शब्द को दूर के दूसरे ज़िलेवाले प्रायः न समझ सकेंगे। इसके लिये यह बहुत ज़रूरी है कि युक्तप्रान्त की यूनिवर्सिटियाँ या हिन्दुस्तानी-एकेडेमी कुछ विद्वानों की एक ऐसी सभा बना दे, जो सब शब्दों को जमा कर के यह विचार करे कि कौन-सा शब्द अधिक सरल, अधिक सार्थक और अधिक व्यापक है। जिसे वे शिक्षित समाज में आने देने के क़ाबिल समझें उसीकी घोषणा कर दें। इससे हिन्दी भाषा को बहुत लाभ पहुँचेगा और उसकी एक बहुत बड़ी कमी पूरी हो जायगी।

रामनरेश त्रिपाठी

संकेत

अं०	=	अँगरेज़ी भाषा
अ०	=	अरबी भाषा
अनु०	=	अनुकरण
अव्य०	=	अव्यय
क्रि०	=	क्रिया
क्रि० वि० अ०	=	क्रिया विशेषण अव्यय
तु०	=	तुरकी भाषा
पु०	=	पुल्लिंग
पुर्त०	=	पुर्तगाली भाषा
फ़ा०	=	फ़ारसी भाषा
बहु०	=	बहुवचन
वि०	=	विशेषण
सं०	=	संस्कृत
सर्व०	=	सर्वनाम
स्त्री०	=	स्त्रीलिंग
हि०	=	हिन्दी

हिन्दुस्तानी कोष

अ

अ—संस्कृत और हिन्दी-वर्णमाला का पहला अक्षर। नहीं।

अङ्क—(पु० सं०) चिन्ह। भाग्य। दाग़। गोद। नौ तक की गिनती। नाटक का एक खंड। शरीर। मर्तबा। —गणित=वह विद्या जिससे संख्याओं का ज्ञान हो; हिसाब।—न=चिन्ह करना। लिखना। —नीय=चिन्ह करने के योग्य। अंकित=चिन्हित। लिखित।

अङ्कुर—(पु० सं०) अँखुआ। डाभ। —ना=डाभ निकलना। अँखुआ फेंकना। अंकुरित=अँखुवाया हुआ।

अङ्कुश—(पु० सं०) आँकुस, जिससे हाथी के मस्तक में गोदकर उसे चलाया जाता है।

अँकोर—(पु० हि०) रिश्वत। घूस। भेंट।

अंग—(पु० सं०) शरीर। तन। जिस्म। अवयव। भाग। टुकड़ा। भेद। भाँति। यत्न। सहायक। साधन। प्रिय। —चालन=शरीर हिलाना-डुलाना।—ड़ाई=देह टूटना।

अंगीकार—(पु० सं०) स्वीकार।

अंगूर—(पु० फ़ा०) दाख।

अंजन—(पु० सं०) काजल। सुरमा।

अंजर पंजर—(पु० हि०) पसली।

अंजली—(स्त्री० सं०) दोनों हथेलियों के मिलाने से बनती है।

अंजाम—(पु० फ़ा०) अंत। परिणाम।
अंजीर—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का दरख़्त जो अफ़ग़ानिस्तान, बिलोचिस्तान और काश्मीर में अधिक पाया जाता है।
अंजुमन—(पु० फ़ा०) समिति।
अँटिया—(स्त्री० हि०) अंटी। घास का बँधा हुआ छोटा गट्ठा। अँटियाना=हथेली में रखना। हज़म करना।
अंडबंड—(स्त्री०, अनु०) व्यर्थ की बात। बुरी बात।
अंडस—(स्त्री० हि०) संकट।
अंडाकार—(वि० सं०) लम्बाई लिये हुये गोल। अंडाकृति=अंडे की शक्ल।
अंडी—(स्त्री० सं०) एरण्ड। रेड़ी। एक प्रकार का वस्त्र।
अँतड़ी—(स्त्री० हि०) आँत। अंत्र=आँत। अंत्रवृद्धि=आँत उतरने का एक रोग।
अंतरंग—(वि० सं०) निकटवर्ती। भीतरी।
अन्तर—(पु० सं०) भेद। मध्य। दूसरा। अलग। हृदय। भीतर। —आत्मा=जीव। अँतराना=अलग करना। भीतर करना।
अँतरा—(पु० सं०) अन्तर। नाग़ा। ज्वर की एक क़िस्म।
अन्दरसा—(पु० फ़ा०) एक प्रकार की मिठाई।
अन्दरूनी—(वि० फ़ा०) भीतरी।
अन्दाज़—(पु० फ़ा०) अनुमान। ढंग। भाव। —न=अन्दाज़ से। लगभग। अन्दाज़ा=अनुमान।
अन्देशा—(पु० फ़ा०) चिन्ता। संशय। खटका। हानि। दुबिधा।
अन्दोर—(पु० सं०) हलचल।
अंबार—(पु० फ़ा०) समूह।
अकड़—(स्त्री० हि०) तनाव। घमंड। ढिठाई। हठ। —ना=ऐंठना। सुन्न होना। तनना। अभिमान करना। अड़ना। मिज़ाज बदलना। —बाई=ऐंठन। —बाज़=

अभिमानी । अकड़ैत= अकड़बाज़ ।

अंश—(पु० सं०) हिस्सा ।

अकबक—(पु० हि०) निरर्थक वाक्य । चिन्ता । अक्को-बक्को । होश-हवास । भौचक्का । अकबकाना=चकित होना ।

अक्स—(पु०, अ०) शत्रुता ।

अक्सर—(क्रि० वि० अ०) बहुधा । अकेले ।

अंदलीब—(अ०) बुलबुल । हज़ार दास्तान ।

अक्सीर—(स्त्री० अ०) एक रस जो धातुओं को सोना चाँदी बनाता है । अत्यन्त लाभ-कारी ।

अक़दस—(अ०) पवित्र । उच्च ।

अक़रबा—(अ०) निकट के । रिश्तेदार । स्वजन ।

अक़साम—(अ०) क़िस्म का बहुवचन । टुकड़े । विभिन्न । सौगंद खाना ।

अक़वाम—(अ०) क़ौम का बहु-वचन जातियाँ । क़ौमें ।

अकबर—(अ०) महान् । बहुत बड़ा ।

अक़ीदः—(अ०) विश्वास । मत । अक़ीदत=विश्वास लाना ।

अकस्मात—(क्रि० वि० सं०) अचानक । एकबारगी । आप से आप ।

अकाउण्ट—(पु०, अं०) हिसाब-किताब । अकाउटेंट=मुनीब । —बुक=बहीखाता ।

अकाट्य—(वि०) जो न कट सके ।

अकाल—(पु०, सं०) कुसमय । दुर्भिक्ष । —मृत्यु=असाम-यिक मृत्यु ।

अकारण—(वि० सं०) बिना वजह । व्यर्थ ।

अकारथ—(पु० हि०) वृथा ।

अकुलाना—(क्रि० सं०) जल्दी करना । घबड़ाना । मग्न होना ।

अकूत—(वि० हि०) बेअन्दाज़ ।

अकेला—(वि० हि०) तनहा । निराला । अकेले=आपही आप । केवल ।

अक्खड़—(वि० हि०) अड़नेवाला। झगड़ालू। उजड्डु। खरा। —पन=कड़ाई। निःशंकता।

अक्टोबर—(पु० अं०) अँगरेज़ी साल का दसवाँ माह, जो ३१ दिन का होता है।

अक़ल—(स्त्री० अ०) बुद्धि। —मंद=बुद्धिमान। (स्त्री० अक्लमंदी)।

अक्स—(सं० पु० अ०) छाया। अक्सी तसवीर=फ़ोटो।

अखंड—(वि० सं०) पूरा। लगातार। निर्विघ्न।

अखरा—(वि०)। भूसी मिला हुआ जौ का आटा।

अख़लाक़—(अ०) शिष्टाचार। सद्गुण।

अख़रोट—(पु०, सं० अक्षोट) एक दरख़्त का नाम। यह कई प्रकार के प्रयोगों में आता है।

अख़बार—(पु० अ०) समाचार पत्र। ख़बर की जमा।

अखाड़ा—(पु० हि०) कुश्ती लड़ने का स्थान। साधुओं की मंडली। दरबार। मैदान।

अख़्ज—(पु० अ०) लेना।

अगति—(स्त्री० सं०) दुर्गति। मृत्योपरान्त की बुरी दशा।

अगत—(हि०) महावतों की बोली जिसका भाव आगे चलने का है।

अगम—(वि० पु० सं० अगम्य) न जानने योग्य। कठिन। दुर्लभ। बहुत। बुद्धि के परे। बहुत गहरा। अगम्य=मुश्किल। अपार। बुद्धि के बाहर।

अगर—(पु० सं०) एक दरख़्त जिसकी लकड़ी सुगन्धित होती है। यदि।

अगरचे—(अव्य० फ़ा०) यद्यपि।

अगला—(वि० सं० अग्र) सामने का। प्रथम। अगामी। दूसरा। (स्त्री० अगली)।

अगवाई—आगे से जाकर लेना।

अगवाड़ा—घर-द्वार के सामने की भूमि।

अगवानी—पेशवाई।

अग़यार—(अ०) ग़ैर का बहुवचन, दुश्मन। पराया।

अग़राज़—(अ०) ग़रज़ का बहुवचन। उद्देश्य। मतलब।

अगस्त—(पु० अं०) अंगरेज़ी का एक महीना ३१ दिन का, जो जुलाई के बाद पड़ता है।

अगहन—(पु० सं० अग्रहायण) एक महीने का नाम। अगहनियाँ=अगहन में जो फ़सल पैदा हो। अगहनी=अगहन में जो तय्यार हो जाय।

अगाऊ—पेशगी। आगे का।

अगाड़ी—भविष्य में। घोड़े की आगेवाली रस्सी।

अग्निबोट—(स्त्री०, सं० अग्नि अं० बोट) वह बड़ी नाव जो भाप के द्वारा चलती है।

अगुआ—(पु० सं० अग्र) आगे चलने वाला। नेता। रास्ता दिखाने वाला। विवाह ठीक करनेवाला। —ई=सरदारी। —ना=आगे करना। अगेला=हाथों में पहनने का कड़ा।

अग्र—(पु० सं०) सिरा। अग्रगामी=अग्रसर।

अग्राह्य—(पु० सं०) न लेने के योग्य। त्याज्य।

अग्रिम—(पु० सं०) पेशगो।

अगोरना—(क्रि० स० हि०) राह देखना।

अचंभा—(पु० हि०) आश्चर्य। अचरज, विस्मय।

अचकन—(पु० हि०) एक प्रकार का लम्बा अंगा।

अचूक—(वि० हि०) जो ख़ाली न जाय। ठीक। अवश्य।

अचेत—(वि० सं०) बेहोश। व्याकुल। बेपरवाह। अनजान। मूढ़। —न=जिसको चेत न हो।

अच्छा—(वि०) बढ़िया। (स्त्री० अच्छी)।

अछूत—(वि० हि०) जो छुआ न गया हो। जो काम में न लाया गया हो। नया। पवित्र।

अजगर—(पु० सं०) एक बहुत बड़ा और मोटा साँप, जो बड़े

बड़े पशुओं को समूचा निगल जाता है। (फ़ा० अज़दहा)।

अजब—(वि० अ०) अद्भुत।

अज़ब—(عضب अ०) तलवार।

अजल—(स्त्री० अ०) मौत।

अज़हद—(क्रि० वि० फ़ा०) बहुत अधिक।

अज़ाब—(पु० अ०) पीड़ा। पाप।

अज़मत—(स्त्री० अ०) महानता। अज़ीम=महान।

अजायब—(पु० अ०) अजब का बहुवचन। विचित्र वस्तु। —ख़ाना=वह घर जिसमें अद्भुत पदार्थ रक्खे जाते हैं। —घर=अजायब ख़ाना।

अज़ीज़—(वि० अ०) प्यारा।

अजीब—(वि० अ०) विलक्षण। अनूठा।

अजीर्ण—(पु० सं०) अपच।

अटक—(संज्ञा पु०) अड़चन। संकोच। एक शहर। अकाज। —ना=ठहरना। फँसना। प्रीति करना। झगड़ना। अटकाना=ठहराना। फँसाना। अटकाव=ठहराव। फँसाव।

अटकल—(स्त्री० सं०) अनुमान। अन्दाज़। तख़मीना। —ना=अनुमान करना। —पच्चू=कपोलकल्पित। —बाज़=अनुमान करनेवाला।

अटपट—(वि० हि०) टेढ़ा। गूढ़। बेठिकाने। लड़खड़ाता। अटपटाना=घबड़ाना। हिचकना। अटपटी=घबड़ाहट। हिचकिचाहट।

अटरनी—(पु० अं०) एक प्रकार का मुख़्तार।

अटलस—(पु० अं०) नक़्शों की पुस्तक।

अटारी—(स्त्री० हि०) कोठा। अट्टालिका=कोठा। अटा=अट्टालिका।

अटाला—(पु० हि०) ढेर। असबाब। मुहल्ला क़साइयों का।

अठकोसल—(पु० हि०+अं०) पंचायत।

अठखेली—(स्त्री० हि०) कल्लोल। मस्तानी चाल।

अठपहला—(वि० हि०) आठ कोने वाला।

अड़चन—(स्त्री० हि०) रुकावट।

अड़बंग—(त्रि०पु०हि०) अटपट। कठिन। अनोखा। अड़बड़।

अडवोकेट—(पु०अं०) जो वकील वकालतनामा दाख़िल नहीं करता। वकील।

अड़ूसा—(पु० हि०) एक औषधि।

अड़ोस-पड़ोस—(पु० हि०) क़रीब।

अड्डा—(पु० हि०) ठहरने का स्थान। प्रधान स्थान। चौकठा।

अड्रेस—(स्त्री० अं०) अभिनन्दन-पत्र। ठिकाना।

अढ़तिया—(पु० हि०) आढ़त का व्यवसाय करने वाला।

अतः—(क्रि० वि० सं०) इस कारण से। अतएव=इसलिये।

अतर—(पु० हि०) फूलों का सार।—दान=जिसमें इत्र रक्खा जाता है।

अतलस—(स्त्री० अं०) बहुत मुलायम रेशमी वस्त्र।

अताई—(वि० अ०) प्रवीण। धूर्त। बिना पढ़ा लिखा।

अतीक़—(पु० अ०) पुराना। आज़ाद।

अत्तार—(अ०) गन्धी, इत्र बेचने वाला।

अतालीक़—(पु० अ०) उस्ताद।

अतवार—(अ०) तौर का बहु वचन। तरीक़ा। ढंग।

अति—(वि० सं०) ज़्यादा।

अतिकाल—(पु० सं) विलम्ब।

अतिथि—(पु० सं०) मेहमान। सन्यासी।

—पूजा=मेहमानदारी।

—यज्ञ=अतिथि पूजा।

अतीव—(वि० सं०) अत्यन्त।

अतुल—(वि० सं०) जो तोला या कूता न जा सके। अपार। बेजोड़। —नीय=जिसका अन्दाज़ न हो सके। अनुपम।

अता—(अ०) भेंट। देन। बख़शिश।

अत्याचार—(पु० सं०) अन्याय। पाप। पाखंड। अत्याचारी=दुराचारी। ढकोसले बाज़।

अत्युक्ति—(स्त्री०, सं०) बढ़ावा। एक अलंकार।

अथ—(अव्य० सं०) किसी वस्तु का आरम्भ। अनन्तर। —च=और भी।

अथाई—(स्त्री० हि०) बैठने का स्थान। मंडली।

अदाग—(वि० हि०) निष्कलंक। निर्दोष। साफ़।

अदना—(वि० अ०) तुच्छ। मामूली। (स्त्री० अदनी)

अदब—(पु०, अ०) क़ायदा

अदबदाकर—(क्रि० वि० हि०) टेक बाँधकर।

अदमपैरवी—(स्त्री०, फ़ा०) किसी मुक़द्दमें में ज़रूरी कारवाई न करना। अदम सबूत=प्रमाण का न होना। अदम हाज़िरी=अनुपस्थिति।

अदरक—(पु०, हि०) एक पौधा। आदी।

अदहन—(हि०) खौलता हुआ पानी।

अदा—(वि० अ०) दिया हुआ। (संज्ञा, स्त्री०) भाव। ढंग। —ई=चालबाज़।

अदालत—(स्त्री० अ०) न्यायालय। अदालती (वि० अ०) जो अदालत करे।

अदावत—(अ०) दुश्मनी। अदावती=जो दुश्मनी रक्खे।

अदूरदर्शी—(वि० स०) जो दूर तक न सोचे।

अद्भुत—(वि० सं०) आश्चर्यजनक। अद्भुतालय=अजायब घर।

अध—(हि०) आधा। अधकचरा=अधूरा। अधकपारी=आधे सिर का दर्द। अधखिला=आधा खिला हुआ। अधखुला=आधा खुला हुआ। अधन्ना=डबल पैसा। अधपई=एक बाट जो १ पाव का आधा होता है। अधर=बीच। अधमरा=आधा मरा हुआ। अधसेरा=एक बाट, जो दो पौवे का होता है। अधावट=जो आधा औटा हो। अधिया

=आधा हिस्सा। अधेड़=आधी उम्र का। अधेला=आधा पैसा। अधमुआ=आधा मरा हुआ।
अंधाधुन्ध—(क्रि० वि०) अधाधुंध। अंधेर। वेहिसाब।
अधिक—(वि० सं०) विशेष। सिवा। —ता=बहुतायत। —मास=मलमास। —तर=प्रायः।
अधिकार—(पु० सं०) प्रभुत्व। हक़। दावा। शक्ति। जानकारी। प्रकरण। अधिकारी=मालिक। हक़दार। योग्यता रखने वाला। अधिकृत=अधिकार में आया हुआ।
अधीन—(वि० सं०) मातहत। लाचार।
अधीर—(वि० पु० सं०) घबड़ाया हुआ।
अनक़रीब—(क्रि० वि० अ०) लगभग।
अनधिकार—(सं० पु० सं०) इख्तियार का न होना। लाचारी। अयोग्यता। अनधिकारिता=अधिकार का न होना। अनधिकारी=जिसको अधिकार न हो। अयोग्य।
अनन्नास—(पु०) रामबाँस की तरह एक पौधा।
अनन्य—(वि० सं०) (स्त्री० अनन्या) एक ही में लीन। —गति=जिसको दूसरा सहारा न हो। —चित्त=जिसका चित्त दूसरी जगह न हो। —ता=एक ही में लगा रहना।
अनमिल—(वि० हि०) बेजोड़। अनमेल=बेजोड़। बिना मिलावट का।
अनमोल—(वि० हि०) अमूल्य। उत्तम।
अनर्थ—(पु० सं०) उलटा मतलब। बिगाड़। पापमार्ग। बेमतलब। —कारी=उलटा मतलब निकालनेवाला। उत्पाती। —दर्शी=बुराई करनेवाला।
अनसुनी—(वि० हि०) बिना सुनी हुई।

अनहोनी—(वि० स्त्री० हि०) असम्भव ।

अनाचार—(पु० सं०) दुराचार । कुचाल ।

अनाज—(पु० हि०) अन्न ।

अनाड़ी—(वि० पु० हि०) गँवार । जो चतुर न हो ।

अनाथ—(वि० सं०) बे मालिक का । लावारिस । जिसकी सहायता करने वाला कोई न हो । दुखी । अनाथालय= दुखियों का घर । जहाँ असहायों का पालन-पोषण हो ।

अनादर—(पु० सं०) निरादर । अपमान । —णीय=जो आदर के लायक न हो । बुरा । अनादरित=जिसका आदर न हुआ हो ।

अनाप-शनाप—(पु० हि०) अंडबंड । व्यर्थ बकवाद ।

अनायास—(क्रि० वि० सं०) बिना परिश्रम । अचानक ।

अनार—(पु० फ़ा०) दाड़िम ।

अनावश्यक—(वि० सं०) जिसकी ज़रूरत न हो ।—ता= ज़रूरत का न होना ।

अनाहूत—(वि० सं०) बिना बुलाया हुआ ।

अनियमित—(वि० सं०) बे क़ायदा । अनिश्चित ।

अनिर्वचनीय—(वि० सं०) जिसका वर्णन न हो सके ।

अनुकरण—(पु० सं०) नक़ल । पीछे आने वाला । अनुकरणीय=नक़ल करने लायक़ ।

अनुकूल—(वि० सं०) मुआफ़िक़ । हितकर ।—ता=अविरुद्धता । पक्षपात ।

अनुक्रमणिका—(स्त्री० सं०) तरतीब । सूची ।

अनुगृहीत—(वि० सं०) जिस पर कृपा की गयी हो । कृतज्ञ । अनुग्रह=कृपा । अनुग्राहक=कृपा करनेवाला । उपकारी ।

अनुचित—(वि० सं०) बुरा ।

अनंतर—(क्रि० वि० सं०) पीछे । लगातार ।

अनपढ़—(वि० सं०+हि०) बेपढ़ा।

अनभिज्ञ—(वि० सं०) मूर्ख। नावाक़िफ़।—ता=मूर्खता।

अध्ययन—(पु० सं०) पढ़ाई। अध्यापक=पढ़ानेवाला। अध्यापकी=मुदर्रिसी। अध्यापन=पढ़ाने का कार्य्य। अध्याय=पाठ। अनध्याय=छुट्टी का दिन।

अध्यवसाय—(पु० सं०) लगातार परिश्रम। उत्साह।—यी=परिश्रमी। उत्साही।

अनुनय—(पु० सं०) विनती। मनाना।

अनुप्रास—(पु० सं०) शब्द का अलंकार।

अनुभव—(पु० सं०) वह ज्ञान जो प्रत्यक्ष करने से प्राप्त हो। जो ज्ञान परीक्षा करने पर प्राप्त हो। अनुभवी=अनुभव रखनेवाला। अनुभाव—महिमा। अनुभावी=जिसको अनुभव हो। जिसने सब बातें स्वयं देखी सुनी हों। अनुभूत=जिसका अनुभव हुआ हो। तजरबा किया हुआ। अनुभूति=अनुभव।

अनुमति—(स्त्री० सं०) आज्ञा। सम्मति।

अनुमान—(पु० सं०) अन्दाज़ा। अनुमित=अन्दाज़ा हुआ। अनुमिति=अनुमान। अनुमेय=अनुमान करने लायक़।

अनुमोदन—(पु०, सं०) समर्थन।

अनुरक्त—(वि० सं०) प्रेम से मिला हुआ। लीन।

अनुराग—(पु० सं०) प्रेम। अनुरागी=प्रेमी।

अनुरोध—(पु० सं०) रुकावट। दबाव। सिफ़ारिश।

अनुवाद—(पु०, सं०) दोहराना। तर्जुमा।—क=अनुवाद करने वाला। अनुवादित=अनुवाद किया हुआ।

अनुशीलन—(पु० सं०) मनन। बार-बार अभ्यास।

अनुसन्धान—(पु० सं०)

खोज। कोशिश।—ना= खोजना। सोचना। अनुसन्धि =भीतरी बातचीत।

अनुसरण—(पु० सं०) पीछे चलना। नक़ल।

अनुसार—(क्रि० वि० सं०) समान।

अनूठा—(वि० हि०) अनोखा। अच्छा।—पन=विचित्रता! सुन्दरता।

अनेक—(वि० सं०) बहुत।

अन्न—(पु० सं०) अनाज।—कूट=अन्न का ढेर। एक उत्सव जो कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को होता है।—दाता =अन्न दान करनेवाला। परवरिश करनेवाला।—पूर्णा=अन्न की अधिष्ठात्री देवी।—प्राशन=चटावन।—मयकोश=स्थूल शरीर।

अन्य—(वि० सं०) दूसरा।—च=और भी। तः=किसी और से। कहीं और से।—त्र=दूसरी जगह।

अन्यथा—(वि० सं०) उलटा। झूठ।

अन्याय—(पु० सं०) अनीति। अंधेर। अन्यायी= अनुचित काम करनेवाला।

अन्योक्ति—(स्त्री० सं०) वह कथन जिसका मतलब कथित वस्तु के सिवा दूसरी वस्तुओं पर घटाया जाय।

अन्वेषक—(वि० सं०) खोजनेवाला।

अन्वेषण—(पु० सं०) खोज।

अपंग—(वि० हि०) अंगहीन। लूला। असमर्थ।

अपकार—(पु० सं०) बुराई।

अपकीर्ति—(स्त्री० सं०) बदनामी।

अपनाना—(क्रि० हि०) अपने वश में करना।

अपभ्रंश—(पु० सं०) पतन। बिगाड़। बिगड़ा हुआ शब्द।

अपमान—(पु० सं०) अनादर बेइज़्ज़ती।—अपमानित= अनादर किया हुआ।

अपमृत्यु—(पु० सं०) कुसमय मृत्यु ।

अपयश—(पु० सं०) बुराई । कलंक ।

अपरंच—(अव्य० सं०) फिर भी ।

अपरंपार—(वि० हि०) बेहद ।

अपराध—(पु० सं०) दोष । भूल । अपराधी=दोषी ।

अपरिमित—(वि० सं०) बेहद । बहुत । अपरिमेय=बे अन्दाज़ । असंख्य ।

अपरेशन—(पु० अं०) चीर-फाड़ ।

अपर्याप्त—(वि० सं०) जो काफ़ी न हो । अपर्याप्ति=कमी ।

अपवाद—(पु० सं०) निन्दा । बुराई । पाप । अपवादी=बुराई करनेवाला ।

अपाहिज—(वि० हि०) लूला-लँगड़ा । जो काम न कर सके ।

अपील—(स्त्री० अं०) निवेदन । फिर विचार के लिये प्रार्थना । अपीलांट=अपील करनेवाला आदमी ।

अपूर्ण—(वि० सं०) जो पूरा न हो । असमाप्त ।

अपूर्व—(वि० सं०) जो प्रथम न रहा हो । अलौकिक । उत्तम । —ता=अनोखापन । —विधि=उस वस्तु को प्राप्त करने का तरीक़ा जिसका ज्ञान प्रत्यक्ष अनुमान इत्यादि प्रमाणों से न होसके ।

अप्रकाशित—(वि० सं०) अँधेरा । गुप्त । जो छापकर प्रचलित न किया गया हो ।

अप्राप्य—(वि० सं०) जो प्राप्त न होसके ।

अप्रैल—(पु० अं० एप्रिल) अँगरेज़ी माह जो ३० दिन का माना गया है ।

अप्सरा—(स्त्री० सं०) वेश्याओं की एक जाति । स्वर्ग की वेश्या ।

अफ़ग़ान—(पु० अ०) अफ़ग़ानिस्तान का रहनेवाला ।

अफ़ज़ूँ—(पु० फ़ा०) अधिकता ।

अफ़सूँ—(तु०) जादू-टोना । मंत्र-यंत्र ।
अफ़यून—(स्त्री० फ़ा०) अफ़ीम । अफ़ीमची=अफ़ीम का नशा करने वाला ।
अफ़रीदी—(पु० अ०) पठानों की एक जाति ।
अफ़लातून—(अ०) यूनान का एक प्रसिद्ध दार्शनिक जो अरस्तू का गुरु था ।
अफ़वाह—(स्त्री० अ०) उड़ती ख़बर । गप्प ।
अफ़ज़ल—(अ०) कृपा करने-वाला । दान और आशिर्वाद देनेवाला ।
अफ़सर—(पु० अं० आफ़िसर) प्रधान । हाकिम ।
अफ़साना—(पु० फ़ा०) क़िस्सा ।
अफ़सुरदा—(फ़ा०) मुर्भाया हुआ । दुःखित ।
अफ़सोस—(स्त्री० फ़ा०) शोक । खेद ।
अफ़ीडेविट्—(स्त्री० अं० एफ़ीडेविट) शपथ ।
अबज़रवेटरी—(स्त्री० अं० आबज़रवेटरी) वेधशाला ।
अबतर—(वि० फ़ा०) बुरा । गिरा हुआ । अबतरी=घटाव । ख़राबी ।
अबरक—(पु० हि०) एक प्रकार की धातु ।
अबरी—(संज्ञा, स्त्री० फ़ा०) एक प्रकार का चिकना काग़ज़ । पीले रंग का पत्थर ।
अबलक़—(फ़ा०) घोड़े की एक जाति ।
अबलखा—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का पक्षी ।
अबला—(स्त्री० सं०) स्त्री ।
अबवाब—(पु० अ०) वह ज़्यादा कर जो सरकार मालगुज़ारी पर लगाती है ।
अबा—(पु० अ०) अंगे के बराबर का एक पहनावा ।
अबादान—(वि० अ०) बसा हुआ ।
अबाबील—(स्त्री० फ़ा०) काले रंग की एक चिड़िया ।
अबीर—(पुं० अ०) एक बुकनी

जिस को होली पर इस्तेमाल किया जाता है। बुक्का।

अबरू—(स्त्री० फ़ा०) भौं।

अब्बा—(पु० फ़ा) बाप।

अब्बास—(पु० अ०) एक प्रकार का पौधा।

अब्र—(पु० फ़ा०) बादल।

अभिनन्दन—(पु० सं०) आनन्द। प्रशंसा। उत्तेजना। अभिनन्दनीय=प्रशंसा के योग्य। अभिनंदित=प्रशंसित।

अभिनय—(पु० सं०) स्वाँग। नाटक का खेल।

अभिन्न—(वि० सं०) जो पृथक न हो। मिला हुआ।

अभिप्राय—(पु० सं०) मतलब।

अभिभावक—(वि० सं०) सरपरस्त।

अभिमान—(पु० सं०) गर्व। अभिमानी=गर्व करनेवाला। घमंडी।

अभिषेक—(पु० सं०) छिड़काव। मंगल केलिये कुश या दूब से मंत्र पढ़कर जल छिड़कना।

अभीष्ट—(वि० सं०) चाहा हुआ। पसंद का।

अमचूर—(पु० हि०) कच्चे आम का चूर्ण।

अमूज़द—(अ०) बड़े बूढ़े। गुरुजन।

अमन—(पु० अ०) चैन।

अमर—(वि० सं०) जो मरे नहीं। देवता।

अमराई—(स्त्री० हि०) आम का बाग़।

अमरूत(द)—(पु० फ़ा०) एक तरह का फल।

अमलदारी—(स्त्री० अ०) अधिकार। रुहेलखंड में एक प्रकार की काश्तकारी।

अमानत—(स्त्री० अ०) धरोहर। —दार=जिसके पास अमानत रक्खी जाय।

अमल—(पु० अ०) काम। व्यवहार।

अमाल—(पु० अ०) हाकिम। —नामा=एक रजिस्टर, जिस में कर्मचारियों की सभी कार-

रवाइयां दर्ज की जाती हों। कर्म-पत्र।

अम्मारी—(अ०) अम्बारी। हाथी का हौदा।

अमावट—(स्त्री० हि०) आम के सुखाये रस की रोटी।

अमीन—(पु० अ०) अदालत का एक कर्मचारी।

अमीर—(पु० अ०) सरदार। धनाढ्य। उदार। अफ़ग़ान-नरेश की उपाधि।

अमृतवान—(पु० हि०) मिट्टी का क़लईदार बरतन।

अमोनिया—(पु० अ०) एमोनिया, नौसादर।

अमोलक—(वि० हि०) अमूल्य।

अम्मामा—(पु० अ०) मुसलमानों का साफ़ा। अमामः =अम्मामा।

अम्र—(पु० अ०) बात।

अम्हौरी—(स्त्री० हि०) बहुत छोटी छोटी फुंसियाँ जो गर्मी के दिनों में पसीने के कारण होती हैं।

अयाँ—(वि० अ०) ज़ाहिर। स्पष्ट।

अयानत—(स्त्री०अ०)सहायता।

अय्यार—(अ०) चालाक आदमी। चलता पुर्ज़ा।

अय्याश—(अ०) विलासी। विषयी।

अयाल—(पु० स्त्री०) घोड़े तथा सिंहादि के गर्दन के बाल।

अयि—(अा० सं०) हे।

अयोग्य—(वि० सं०) जो योग्य न हो। नालायक़। नामुनासिब।

अरई—(स्त्री० हि०) हाँकने की छड़ी।

अरक नाना—(पु० अ०) एक अरक़ जो पुदीना और सिरका मिलाकर निकाला जाता है। अरक बादियान= सौंफ़ का अर्क़।

अरगन—(पु० अं० आँर्गन) एक अँगरेज़ी बाजा।

अरग़वानी—(पु० फ़ा०) लाल रंग। बैंगनी।

अरगल—(पु० सं० अर्गल) ब्यौंड़ा ।

अरज़—(स्त्री० अ० अर्ज़) निवेदन।

अरथी—(स्त्री० हि०) टिखटी । विमान ।

अरब—(पु० हि०) सौ करोड़ । घोड़ा । एक रेतीला मुल्क ।

अरबी—(वि० फ़ा०) अरब देश का ।

अरमनी—(पु० फ़ा०) आरमेनियाँ देश का निवासी ।

अरमान—(पु० तु०) लालसा ।

अरर—(अव्य० हि०) एक शब्द, जो अचंभे की दशा में निकाला जाता है ।

अरवा—(पु० हि०) बिना उबाले हुये धान का चावल ।

अरवी—(पु० हि०) एक कंद ।

अरबाब—(अ०) रब का बहुवचन । मालिक । ईश्वर ।

अरसा—(पु० अ०) समय । देर ।

अरज़ाँ—(फ़ा०) सस्ता । मंदा ।

अरज़—(फ़ा०) चौड़ाई ।

अरहर—(स्त्री० हि०) एक अनाज । तूअर । दाल ।

अराक़—(पु० अ०) अरब में एक देश ।

अरस्तू—(पु० यू०) यूनान का एक दार्शनिक विद्वान् ।

अराजक—(वि० सं०) जहाँ राजा न हो । —ता=अशांति ।

अरारूट—(पु० अं० एरोरुट) एक पौधा, जो दूसरे देश से भारत में आया है ।

अरी—(अ० स्त्री०) हे । संबोधनार्थक अव्यय ।

अरोचक—(पु० सं०) एक रोग जिस में अन्न आदि का स्वाद नहीं मिलता ।

अरोड़ा—(पु० हि०) पंजाब में एक जाति ।

अर्क—(पु० सं०) सूर्य्य । मदार ।

अर्ज़—(पु० अ०) विनती । —दाश्त=निवेदन-पत्र । अर्ज़ी=निवेदन-पत्र । अर्ज़ीदावा=वह प्रार्थना-पत्र जो दीवानी या माल के मुहकमे में दिया जाय ।

अर्थ—(पु० सं०) शब्द का अभिप्राय। मतलब। काम। निमित्त। संपत्ति। —सचिव =अर्थ-मंत्री।
अर्थ-शास्त्र—(पु० सं०) वह शास्त्र जिसमें धन की प्राप्ति और रक्षा का ढंग बतलाया गया हो।
अर्थात्—(अव्य० सं०) यानी।
अर्थी—(वि० हि०) इच्छा रखनेवाला। ग़र्ज़ी। मुद्दई। दास। धनाढ्य।
अर्द्धाङ्गिनी—(स्त्री० सं०) पत्नी।
अर्ल—(अं०) इंगलैंड की एक उपाधि।
अल्टिमेटम—(अं०) अन्तिम सूचना।
अर्वाचीन—(वि० सं०) आधुनिक। नया।
अलंकार—(पु० सं०) गहना। शब्द तथा अर्थ की वह युक्ति जिससे काव्य की शोभा हो। अलंकृत=गहना पहना हुआ। सजाया हुआ। अलंकारयुक्त।
अलंग—(पु० हि०) ओर।
अलकतरा—(पु० हि०) पत्थर के कोयले को आग पर गलाकर निकाला हुआ एक गाढ़ा पदार्थ।
अलग—(वि० हि०) जुदा।
अलगनी—(स्त्री० हि०) अरगनी।
अलग़रज़ी—(वि० अ०) बेपरवा।
अलग़रज़—(अ०) निदान। अन्तिम कथन। भावार्थ। अलक़िस्सा=अलग़रज़।
अलगाना—(क्रि० स० हि०) अलग करना। दूर करना।
अलग़ोज़ा—(पु० अ०) एक प्रकार की बाँसुरी।
अलपाका—(पु० स्पे०) ऊँट के जैसा एक जानवर। अलपाका का ऊन।
अलफ़—(पु० अ० अलिफ़) घोड़े का आगे के दोनों पाँव उठाकर पिछली टाँगों के बल खड़ा होना।
अलबत्ता—(अव्य० अ०) बेशक। बहुत ठीक। लेकिन।
अलबम—(पु० फ़ा०) तसवीरें रखने की एक किताब।

अलबेला—(वि० हि०) बनाठना। अनोखा। बे परवाह।
अलम—(पु० अ०) दुख। झंडा।
अलमनक—(पु० अं०) अँगरेज़ी ढंग का पत्रा।
अलमस्त—(वि० फ़ा०) मतवाला। बेग़म।
अलमारी—(स्त्री० पुर्त्त०) एक प्रकार का खड़ा सन्दूक।
अललटप्पू—(वि० देश०) बे ठिकाने का।
अलवान—(पु० अ०) ऊनी चादर।
अलताफ़—(अ०) लुत्फ़ का बहुवचन। कृपा। दया।
अला—(अ०) ऊपर।
अलसी—(स्त्री० हि०) तीसी
अलहदा—(वि० अ०) अलग।
अलानियः—(अ०) डंके की चोट। खुल्लमखुल्ला।
अलापना—(क्रि० अ० हि०) गाना। तान लगाना।
अलामत—(पु० अ०) निशानी।
अलाव—(पु० हि०) आग का ढेर।
अलावा—(क्रि०वि०अ०)सिवाय।
अलील—(वि० अ०) बीमार।
अलुमीनम—(पु० अं०) एक प्रकार की धातु।
अलोना—(वि० हि०] बिना नमक का। फ़ीका।
अलौकिक—(वि० सं०) जो इस लोक में न दिखाई दे। अद्भुत।
अल्पवयस्क—(वि० सं०) थोड़ी उम्र का। अल्पायु=थोड़ी आयुवाला।
अल्लमगल्लम—(पु० अनु०) अंडबंड।
अल्हड़—(वि० हि०) मनमौजी। बिना अनुभव का। उजड्ड। गँवार। —पन=बेपरवाही। लड़कपन। अनाड़ीपन।
अवकाश—(पु० सं०) स्थान। आकाश। अंतर।
अवगुण—(पु० सं०) दोष। बुराई।
अवतरण—(पु० सं०) नक़ल।
अवतार—(पु० सं०) जन्म। शरीर रचना। अवतारी=अलौकिक।

अवध—(पु० हि०) एक देश जिसकी राजधानी अयोध्या थी।

अवनत—(वि० सं०) नीचा। पतित। अवनति=हीन दशा। झुकना।

अवयव—(पु० सं०) भाग। अंग। अवयवी=अंगी। समूचा।

अवरोध—(पु० सं०) रुकावट। घेर लेना। बंद करना। —क=रोकने वाला। अवरोधित=रोका हुआ।

अवलंब—(पु० सं०) आधार। —न=सहारा। —ना= अवलंबन करना। अवलंबित=आश्रित। निर्भर।

अवलेह—(पु० सं०) चटनी।

अवशिष्ट—(वि० सं०) बचा हुआ। अवशेष=बचा हुआ।

अवसर—(पु० सं०) समय। फ़ुरसत। —प्राप्त=काम से छुट्टी ले लेनेवाला।

अवस्था—(सं० स्त्री० सं०)दशा। समय। उम्र। स्थिति।

अवस्थिति—(स्त्री० सं०) स्थिति।

अवहेलना—(पु० सं०) आज्ञा न मानना। अवज्ञा। बेपरवाही।

अवाक्—(वि० हि०) चुप। चकित।

अविनय—(पु० सं०) ढिठाई।

अविनीत—(वि० सं०) जो विनीत न हो। सरकश। दुष्ट। अविनीता=कुलटा। बदचलन स्त्री।

अविरत—(वि० सं०) निरंतर। लगा हुआ।

अविराम—(वि० सं०) बिना विश्राम लिये हुये। लगातार।

अविवेक—(पु० सं०) अज्ञान। अन्याय। —ता=अज्ञानता। अविवेकी=अज्ञानी। अविचारी। मूर्ख।

अविश्वास—(पु० सं०) विश्वास का अभाव। अविश्वसनीय=जो विश्वास योग्य न हो।

अवैतनिक—(वि० सं०) जो बिना तनख़्वाह के काम करे। ऑनरेरी।

अव्यय—(वि० सं०) जो खर्च न हो। सदा एकरस रहने वाला। परब्रह्म। व्याकरणानुसार एक शब्द। अव्ययीभाव=समास का एक भेद।

अव्यवसाय—(पु० सं०) उद्यम की कमी। अव्यवसायी=उद्यमहीन। आलसी।

अव्यवस्था—(स्त्री० सं०) नियम का न होना। मर्य्यादा का न होना। गड़बड़। अव्यवस्थित=बे मर्यादा। वे ठिकाने का। चंचल।

अव्वल—(वि० अ०) पहिला। उत्तम।

अशकुन—(पु० सं०) बुरा शकुन।

अशरफ़ी—(स्त्री० फा०) सोने का एक पुराना सिक्का जो प्रायः १६) का होता था।

अशिया—(अ०) चीज़।

अशराफ़—(वि० अ०) शरीफ़। भला मनुष्य। अशरफ़=बहुत भलामानस। बड़ा बुजुर्ग।

अशआर—(अ०) बहुत सी शैरें।

अशख़ास—(अ०) शख़्स का जमा। बहुत से आदमी।

अशांत—(वि० सं०) जो शांत न हो। चंचल। अशांति=चंचलता। हलचल।

अशिक्षित—(वि० सं०) बेपढ़ा लिखा। गँवार।

अशिष्ट—(वि० सं०) असभ्य। बेहूदा। —ता=असभ्यता। ढिठाई।

अश्लील—(वि० सं०) गंदा। —ता=गंदापन।

अश्वमेध—(पु० सं०) एक बड़ा यज्ञ जिसमें दिग्विजय के लिये घोड़ा छोड़ा जाता है।

असंभव—(वि० सं०) जो न हो सके। नामुमकिन।

असास—(अ०) जड़। बुनियाद।

असातीर—(अ०) कहानियाँ। क़िस्से।

अस्प—(पु० फ़ा०) घोड़ा।

अश्क—(फ़ा०) आँसू।

असभ्य—(वि० सं०) गँवार। —ता=गँवारपन।

असमंजस—(पु० सं०) आगा-पीछा। कठिनाई।
असर—(पु० अ०) प्रभाव। दिन का चौथा पहर।
असरार—(क्रि० वि० हि०) लगातार।
असल—(वि० अ०) खरा। शुद्ध। असलियत=बुनियाद। सार। असली =सच्चा। शुद्ध। अस्ल=मूल। बीज।
अस्ला—(अ०) कदापि।
असहयोग—(पु० सं०) सरकार के साथ मिलकर काम न करने का सिद्धांत। तर्कमवालात। नान-कोआपरेशन।
असहनशील—(वि० सं०) जिसमें सहन करने की शक्ति न हो। चिड़चिड़ा। —ता= सहने की शक्ति का अभाव। असहिष्णु=जो न सह सके। असह्य=न सहने योग्य।
असहाय—(वि० सं०) जिसे कोई सहारा न हो। अनाथ।
असा—(पु० अ०) सोंटा।
असाढ़—(पु० हि०) वर्ष का चौथा महीना। असाढ़ी=जो फ़स्ल असाढ़ में बोई जाय।
असामयिक—(वि० सं०) जो समय पर न हो। बेवक्त।
असामान्य—(वि० सं०) असाधारण।
असामी—(पु० अ०) प्राणी। जिससे किसी प्रकार का लेनदेन हो। काश्तकार। देनदार। अपराधी। जिससे किसी प्रकार का मतलब गाँठना हो।
असालतन—(क्रि० वि० अ०) स्वयं।
असीर—(फ़ा) क़ैदी। बन्दी।
असावधान—(वि० सं०) जो सावधान न हो।—ता=बेपरवाही। असावधानी=बेख़बरी।
असिस्टेंट—(वि० अं०) सहायक।
असुर—(पु० सं०) राक्षस। नीच काम करने वाला आदमी।
असेसमेंट—(अं०) ज़मीन के लगान का बन्दोबस्त।
असेसर—(पु० अं०) वह आदमी जो फ़ौजदारी के मामले में जज को राय देने के लिये चुना जाता है।

असोसियेशन—(पु० अं०) समिति।

अस्तबल—(पु० अ०) घुड़साल।

असहाब—(अ०) साहब का बहुवचन।

अस्तर—(पु० फ़ा०) नीचे की तह।

अस्तकारी—(स्त्री० फ़ा०) चूने की लिपाई। पलस्तर।

अस्तु—(अव्य० सं०) जो हो। ख़ैर। अच्छा।

अस्तुरा—(पु० फ़ा०) बाल बनाने का छुरा।

अस्त्र—(पु० सं०) फेंककर चलाया जाने वाला हथियार।

अस्त्रचिकित्सा—(स्त्री० सं०) वैद्यक-शास्त्र का वह हिस्सा जिसमें चीरफाड़ का ढंग बतलाया गया हो। जर्राही।

अस्थि—(स्त्री० सं०) हड्डी। —संचय=भस्मांत के बाद की एक क्रिया, जिसमें जलने से बची हुई हड्डियाँ एकत्र की जाती हैं।

अस्थिर—(वि० सं०) जो स्थिर न हो। जिसका कुछ ठीक न हो।

अस्पताल—(पु० अं०) हौस्पिटल। दवाख़ाना।

अस्वाभाविक—(वि० स०) जो स्वाभाविक न हो, बनावटी।

अस्वीकार—(स०, पु० स०) इन्कार। अस्वीकृत=नामंजूर किया हुआ।

अहक—(पु० हि०) इच्छा।

अहकाम—(पु० अ०) नियम। आज्ञायें।

अहबाब—(पु० अ०) हबीब का बहुवचन। मित्रगण।

अहतमाल—(अ०) ख़तरा।

अहसन—(अ०) बहुत नेक।

अहक़र—(अ०) अति तुच्छ।

अहल—(अ०) घर के लोग। मालिक। योग्य।

अय्याम—(अ०) यौम का बहुवचन। दिन। रोज़।

अहद—(पु० अ०) प्रतिज्ञा। —नामा=प्रतिज्ञापत्र। सुलहनामा।

अहदी—(वि० पु० अ०) आलसी। निठल्ला। अकबर के ज़माने के एक प्रकार के सिपाही जो मालगुज़ारी ठीक समय पर न अदा करने वाले ज़मीदारों के यहाँ धरना दिया करते थे।

अहमक़—(वि० अ०) बेवक़ूफ़।

अहरा—(पु० हि०) कंडे का ढेर। वह आग जो कंडों से बनाई जाय। अहरी=प्याऊ। चरही।

अहर्निश—(क्रि० वि० सं०) रातदिन। नित्य।

अहलकार—(पु० फ़ा०) कर्मचारी।

अहलमद—(पु० फ़ा०) अदालत का एक कर्मचारी जो मुक़दमों की मिसिलों को दर्ज रजिस्टर करता है और बाक़ायदे रखता है।

अहवाल—(पु०अ०) समाचार। दशा।

अहसान—(पु० अ०) भलाई। कृपा।

अहह—(अव्य० सं०) एक प्रत्यय जिसका प्रयोग आश्चर्य्य, खेद, क्लेश और शोक प्रकाशित करने के लिये होता है। अहा=इसका प्रयोग प्रसन्नता और प्रशंसा की सूचना के लिये होता है। अहाहा=हर्षसूचक अव्यय।

अहिंसा—(स्त्री० सं०) किसी को दुःख न देना। अहिंसक =जो हिंसा न करे।

अहिबात—(पु० हि०) सोहाग। अहिबाती=सोहागिन। सधवा।

अहेर—(पु० हि०) शिकार। वह जंतु जिसका शिकार खेला जाय। अहेरी=शिकारी आदमी।

अहो—(अव्य० सं०) एक अव्यय जिसका प्रयोग 'कभी सम्बोधन की तरह और कभी करुणा, खेद, प्रशंसा, हर्ष तथा विस्मय सूचित करने के लिये होता है।

आ

आ—हिन्दी वर्णमाला का दूसरा अक्षर जो 'अ' का दीर्घरूप है।

आँगन—(पु० हि०) घर के भीतर का सहन। चौक।

आँगी—(स्त्री० हि०) अँगिया।

आँच—(स्त्री०हि०) गरमी। आग की लपट। अग्नि। ताव। तेज। चोट। हानि। विपत्ति।

आँचल—(सं०, पु० हि०) छोर। साधुओं का अँचला।

आँजना—(क्रि० सं० हि०) अंजन लगाना।

आँट—(पु० हि०) तर्जनी और अंगूठे का बीच। बैर। गाँठ। गट्ठा।

आँटी—(स्त्री० हि०) पूला। कुश्ती का एक पेंच। सूत का लच्छा। टेंट।

आँत—(स्त्री० हि०) पेट के भीतर की वह लम्बी नली जो गुदा मार्ग तक रहती है।

आन्दोलन—(पु० सं०) बार बार हिलना-डोलना। हल्ला-गुल्ला। धूमधाम।

आँधी—(पु० हि०) बड़े वेग की हवा जिसमें बहुत धूल उड़ती है। अंधड़।

आँध्र—(पु० सं०) ताप्ती नदी के तट का देश।

आयबाँय—(पु० अनु०) व्यर्थ की बात।

आँव—(पु० हि०) एक प्रकार का चिकना सफ़ेद और लस-दार मल।

आँवला—(पु० हि०) एक दरख़्त जिसकी पत्तियाँ इमली की तरह महीन होती हैं। कुश्ती का एक पेंच।

आँवलासार गन्धक—(स्त्री० हि०) खूब साफ़ की हुई गन्धक जो पारदर्शक होती है।

आँवाँ—(पु० हि०) वह गड्ढा जिसमें कुम्हार मिट्टी के बर्तन पकाते हैं।

आँसू—(पु० हि०) आँख के भीतर का पानी।

आइन्दा—(वि० फ़ा०) आनेवाला। आगे। फिर।

आईन—(पु० फ़ा०) नियम। क़ानून।

आईना—(पु० फ़०) दर्पण।

आउंस—(पु० अं०) एक अँगरेज़ी पैमाना। यह दो प्रकार का होता है एक ठोस वस्तुओं के तौलने का, दूसरा द्रव पदार्थों के नापने का।

आउट—(वि० अं०) खेल में हारा हुआ। बाहर।

आक़बत—(स्त्री० अ०) मरने के पीछे की दशा।

आकर—(पु० सं०) खानि। ख़ज़ाना।

आकर्ण—(वि० सं०) कान तक फैला हुआ।

आकर्षक—(वि० सं०) खींचनेवाला। खिचाव। आकर्षण-शक्ति=खींचनेवाली शक्ति। आकर्षित=खींचा हुआ।

आकस्मिक—(वि० सं०) जो बिना किसी कारण के हो। अचानक होनेवाला।

आकांक्षा—(स्त्री० सं०) इच्छा। आकांक्षी=इच्छा करनेवाला।

आक़ा—(पु० अ०) मालिक। धनी।

आकार—(पु० सं०) स्वरूप। सूरत। क़द। बनावट। निशान। चेष्टा। बुलावा।

आकाश—(पु० सं०) आसमान। वह स्थान जहाँ हवा के अतिरिक्त कुछ भी न हो। शून्य स्थान। —कुसुम=आकाश का फूल। अनहोनी बात। —गंगा=बहुत से छोटे-छोटे तारों का एक विस्तृत समूह, जो आकाश में उत्तर दक्षिण फैला है। —वृत्ति=अनिश्चित जीविका।

आक़िल—(वि० अ०) बुद्धिमान। आक़िलः=बुद्धिमती स्त्री।

आकुल—(वि० सं०) घबराया हुआ। कातर। व्याकुल। —ता=घबराहट।

आकृति—(स्त्री० सं०) बनावट।

आकृष्ट—(वि० सं०) खींचा हुआ।

आक्रमण—(पु० सं०) हमला। घेरना। आक्रांत=जिस पर आक्रमण किया गया हो। घिरा हुआ। विवश।

आक्षेप—(पु० सं०) दोष लगाना। निंदा। —क=फेंकनेवाला। निन्दक।

आक्साइड—(पु० अं०) मोरचा।

आक्सिजन—(पु० अं०) एक प्रकार की गैस।

आख़ता—(वि० फ़ा०) बधिया।

आख़िर—(वि० फ़ा०) अंतिम। नतीजा। ख़ैर। —कार=अंत में। आख़िरी=सबसे पिछला।

आख़िरत—(अ०) परिणाम। अंजाम। क़यामत।

आखेट—(पु० सं०) शिकार।

आख़ोर—(पु० फ़ा०) कूड़ा-करकट। सड़ी-गली चीज़।

आख्यान—(पु० सं०) वृत्तान्त। कथा। उपन्यास का एक भेद। —क=बयान। कहानी। पूर्व वृत्तांत। आख्यायिका=क़िस्सा। उपदेशप्रद कल्पित कथा।

आगंतुक—(वि० सं०) जो आवे। आगत=आया हुआ।

आग—(स्त्री० हि०) तेज। जलन। डाह। अग्नि।

आग़ा—(तु०) मालिक। साहब। प्रतिष्ठित। बड़ा भाई।

आग़ाज़—(फ़ा०) प्रारम्भ। शुरू।

आगत-स्वागत—(पु० सं०) आदर-सत्कार।

आगम—(पु० सं०) अवाई। आनेवाला समय। होनहार। —न=अवाई। प्राप्ति। —सोच=आगे का भला बुरा सोचनेवाला। —वक्ता=भविष्यवक्ता। —विद्या=भविष्य की बात बताना।

आगापीछा—(पु० हि०) हिचक। नतीजा।

आगार—(पु० सं०) घर। जगह। ख़ज़ाना।

आगाह—(फ़ा०) परिचित। ख़बरदार।
आघात—(पु० सं०) ठोकर। मार। चोट।
आचमन—(पु० सं०) शुद्धि के लिये मुँह में जल लेना।
आचरण—(पु० सं०) चाल-चलन। व्यवहार।
आचार—(पु० सं०) चलन। चरित्र। शील। सफ़ाई। —वान=सफ़ाई से रहने वाला। आचारी=आचार वान।
आचार्य—(पु० सं०) गुरु। वेद पढ़ानेवाला। पूज्य। अध्यापक। वेद का भाष्यकार। आचार्य्या=आचार्य की स्त्री।
आज—(क्रि० वि० हिं०) जो दिनबीत रहा है। इन दिनों। —कल=इन दिनों।
आजन्म—(क्रि० वि० सं०) जीवन भर।
आज़माइश—(स्त्री० फ़ा०) परख। आज़माना=परखना। आज़मूदा=आज़माया हुआ।
आजा—(पु० हिं०) पितामह। दादा।
आज़ाद—(वि० फ़ा०) स्वतंत्र। बेपरवाह। स्वाधीन। निर्भय। उद्धत। आज़ादी=स्वाधीनता।
आज़ार—(पु० फ़ा०) रोग।
आज़मा—(फ़ा०). आज़मानेवाला। परीक्षा करनेवाला।
आज़मंद—(फ़ा०) लालची। लोभी।
आज़िज़—(वि० अ०) दीन। तंग। आज़िज़ी=दीनता।
आजीवन—(क्रि० वि० सं०) ज़िन्दगी भर।
आजीविका—(स्त्री० सं०) रोज़ी।
आज़ुर्दगी—(स्त्री० फ़ा०) रंज। आज़ुर्दा=दुःखी।
आज्ञा—(स्त्री० सं०) हुक्म। अनुमति। —कारी=हुक्म माननेवाला। दास। —पत्र=हुक्मनामा। —पालन=आज्ञानुसार काम करना।

—भंग=आज्ञा न मानना।
—नुवर्ती=फर्मांबरदार।
आटा—(पु० हि०) पिसान।
आटोक्रैट—(अं०) निरंकुश राजा या स्वेच्छाचारी शासक। आटोक्रैसी=स्वेच्छाचारिता।
आडम्बर—(पु० सं०) तड़क भड़क। ढोंग। आडम्बरी=आडम्बर करनेवाला।
आड़—(स्त्री० हि०) परदा।
आड़ा—(पु० हि०) एक धारीदार कपड़ा। शहतीर। तिर्छा।
आढ़त—(स्त्री० हि०) किसी व्यापारी का माल रख कर कुछ कमीशन लेकर उसको बिकवा देने का कार्य। जहाँ आढ़त का माल रहता हो।
आतंक—(पु० सं०) रोब। भय।
आततायी—(पु० सं०) आग लगानेवाला। विष देनेवाला। जो शस्त्र लेकर मारने को तैयार हो। धन हरनेवाला। स्त्री हरनेवाला।
आतशक—(स्त्री० फ़ा०) गर्मी का रोग।
आतशज़नी—(स्त्री० फ़ा०) आग लगाने का काम। आतशदान=बोरसी। आतशपरस्त=अग्नि की पूजा करने वाला। पारसी। आतशबाज़=आतशबाज़ी बनानेवाला। आतशबाज़ी=बारूद के बने हुये खिलौनों के जलने का दृश्य। आतिश=आग। तेज। गुस्सा।
आत्मज्ञान—(पु० सं०) अपने की जानकारी। आत्मज्ञ=जो अपने को जान गया हो। आत्मजिज्ञासा=अपने को जानने की इच्छा। आत्मजिज्ञासु=अपने को जानने की इच्छा रखने वाला।
आत्मत्याग—(पु० सं०) दूसरों के हितार्थ अपना स्वार्थ छोड़ना। आत्मनिवेदन=अपने आप को अपने इष्ट देव पर चढ़ा देना। आत्मरक्षक=अपनी रक्षा करने वाला।
आत्मविद्या—(स्त्री० सं०) ब्रह्मविद्या।

आत्मश्लाघा—(पु० सं०) अपनी तारीफ़।

आत्महत्या—(स्त्री० सं०) अपने को मार डालना। अपने को अपने ही से दुख देना। आत्मा को दुखी रखना।

आत्मानुभव—(पु० सं०) अपना तजरुबा।

आत्माभिमान—(पु० सं०) मानापमान का ध्यान। आत्माभिमानी=जिसको अपने मानापमान का ध्यान हो।

आत्मावलम्बी—(पु० सं०) जो किसी कार्य्य के लिये दूसरे की सहायता का भरोसा न रक्खे।

आत्मिक—(वि० सं०) आत्मा सम्बन्धी। अपना। मानसिक। आत्मीय=अपना। रिश्तेदार। आत्मीयता=मैत्री।

आत्मोत्सर्ग—(पु० सं०) परोपकार के लिये अपने को दुःख में डालना।

आदत—(स्त्री० अ०) स्वभाव। टेव।

आदम—(पु० अ०) अरबी लेखकों के अनुसार मनुष्यों का आदि पिता। आदम की सन्तान।—ज़ाद=आदम की सन्तान। मनुष्य। आदमी=आदम की सन्तान। मनुष्य। आदमियत=इन्सानियत। मानवता।

आदमी—(फ़ा०) आदम की सन्तान।

आदर—(पु० सं०) सत्कार।—णीय=आदर करने के योग्य।

आदर्श—(पु० सं०) दर्पण। टीका। नमूना।

आदान-प्रदान—(पु० सं०) लेना-देना।

आदि—(वि० सं०) प्रथम। आरम्भ। इत्यादि। वग़ैरह।

आदिम—(वि० सं०) पहले का।

आदिल—(वि० फ़ा०) न्यायी।

आदी—(वि० अ०) अभ्यस्त।

आदेश—(पु० सं०) आज्ञा। उपदेश।

आद्यंत—(सं०) आदि से अंततक।

आद्योपांत=शुरू से आख़िर तक ।

आधा—(वि० हि०) किसी चीज़ के दो बराबर भागों में से एक ।

आधार—(पु० सं०) सहारा । पात्र । मूल ।

आधासीसी—(स्त्री० हि०) आधे सिर की पीड़ा ।

आधिपत्य—(पु० सं०) अधिकार ।

आधिभौतिक—(वि० सं०) जीव या शरीरधारियों द्वारा प्राप्त ।

आधुनिक—(वि० सं०) हाल का । नया ।

आध्यात्मिक—(वि० सं०) आत्मा सम्बन्धी ।

आनंद—(पु० सं०) प्रसन्नता । सुख । आनन्दित=सुखी ।

आनतान—(स्त्री० हि०) बे सिर पैर की बात ।

आनन फानन—(क्रि० वि० अ०) झटपट ।

आनबान—(स्त्री० हि०) ठाटबाट । ठसक ।

आनर—(पु० अं०) प्रतिष्ठा । आनरेबुल=माननीय ।

आनरेरी—(वि० अं०) अवैतनिक ।

आना—(पु० हि०) चार पैसा । प्रारम्भ होना । किसी भाव का उत्पन्न होना ।

आनाकानी—(स्त्री० हि०) हीला हवाला ।

आनुषंगिक—(वि० सं०) बड़े काम के घलुये में हो जाने वाला कार्य्य ।

आन्वीक्षिकी—(स्त्री० सं०) आत्मविद्या । तर्कविद्या ।

आप—(सर्व० हि०) स्वयं ।

आपत्काल—(पु० सं०) विपत्ति । कुसमय । आपत्ति=दुःख । संकट । कष्ट का समय । दोषारोपण । एतराज़ । आपद्=आपत्ति । विघ्न । आपदा=दुःख । संकट । जीविका का कष्ट । आपद्धर्म=वह धर्म

जिसका विधान विपत्ति के समय के लिये हो।

आपस—(स्त्री० हि०) नाता। निजी।

आपाधापी—(स्त्री० हि०) अपनी अपनी चिन्ता।

आपापंथी—(वि० हि०) अपने मन की करने वाला।

आपोज़ीशन—(अं०) विरोध। पार्लमेंट या व्यवस्थापिका सभाओं में सरकार का विरोध।

आफ़त—(स्त्री० अ०) विपत्ति। कष्ट। दुःख का समय।

आफ़रीं—(फ़ा०) शाबाश। प्रशंसाजनक।

आफ़ाक़—(अ०) उफ़ुक़ का जमा। आसमान के किनारे। चितिज में। संसार के चारों ओर।

आफ़ताब—(पु० फ़ा०) सूर्य्य।

आफ़ताबा—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का गडुवा।

आफ़ताबी—(स्त्री० फ़ा०) पान के आकार का बना हुआ एक पंखा। जिस पर सूर्य्य का चिह्न बना रहता है। एक प्रकार की आतशबाज़ी जिसके छूटने से दिन की तरह प्रकाश हो जाता है। किसी दरवाज़े या खिड़की के सामने का छोटा सायबान या ओसारी जो धूप से बचाव के लिये लगाई जाय। गोल। सूर्य्य सम्बन्धी।

आफ़ियत—(स्त्री० अ०) कुशल क्षेम।

आफ़िस—(पु० अं०) कार्य्यालय।

आब—(स्त्री० फ़ा०) चमक। महिमा। शोभा। पानी। —रू=प्रतिष्ठा। —दार= चमकीला।

आबकारी—(स्त्री० फ़ा०) वह स्थान जहाँ शराब चुआई जाती हो। शराबख़ाना। मादक द्रव्यों से सम्बन्ध रखनेवाला सरकारी महकमा।

आबख़ोरा—(पु० फ़ा०) पानी पीने का बर्तन। प्याला।

आबताब—(स्त्री० फ़ा०) तड़क भड़क। शोभा।

आबदस्त—(पु० फ़ा०) पानी छूना। मल त्याग के बाद मल धोने का पानी।

आबदाना—(पु० फ़ा०) अन्न-पानी। जीविका।

आबदार—(वि० फ़ा०) चमकीला। आबदारी=चमक। कांति।

आबनूस—(पु० फ़ा०) एक दरख़्त जिसको तेंदू भी कहते हैं। आबनूसी=आबनूस का सा काला। आबनूस का बना हुआ।

आबपाशी—(स्त्री० फ़ा०) सिँचाई।

आबेरवाँ—(पु० फ़ा०) एक बारीक कपड़ा।

आबरू—(स्त्री० फ़ा०) प्रतिष्ठा।

आबला—(पु० फ़ा०) छाला। फुटका। फफोला।

आबहवा—(स्त्री० फ़ा०) जल-वायु।

आबाद—(वि० फ़ा०) बसा हुआ। आबादी=बस्ती। मर्दुमशुमारी।

आबशार—(फ़ा०) झरना। पहाड़ी सोता।

आबू—(पु० हि०) अरावली पर्वत पर का एक स्थान।

आबेहयात—(फ़ा०) अमृत।

आभरण—(पु० सं०) गहना।

आभा—(स्त्री० सं०) चमक। झलक।

आभार—(पु० सं०) बोझ। गृह-प्रबन्ध के देखभाल की ज़िम्मेदारी। उपकार। आभारी=उपकार मानने-वाला।

आभूषण—(पु० सं०) गहना।

आभ्यंतरिक—(वि० सं०) भीतरी।

आमंत्रण—(पु० सं०) बुलाना। पुकारना। आमंत्रित=बुलाया हुआ। न्योता हुआ।

आम—(पु० हि०) एक पेड़ जो क़रीब-क़रीब सारे भारत में होता है।

आम—(अ०) सर्वसाधारण।

आमद—(स्त्री० फ़ा०) अवाई। आमदनी। आमदनी=आय।

व्यापार की वस्तु जो दूसरे देशों से अपने देश में आवे। —रफ़्त=आना-जाना।

आमना सामना—(पु० हि०) मुक़ाबला।

आमने सामने—(क्रि० वि० हि०) एक दूसरे के समक्ष।

आमरण—(क्रि० वि० सं०) मृत्यु समय तक।

आमवात—(पु० सं०) एक रोग जिसमें आँव गिरता है और जोड़ों में पीड़ा तथा पैर में सूजन हो जाती है।

आमातिसार—(पु० सं०) आँव। मुरेड़े के दस्त।

आमादा—(वि० फ़ा०) तत्पर। तैयार।

आमाल—(पु० अ०) करनी।

आमालनामा—(पु० अ०) वह रजिस्टर जिसमें नौकरों के चालचलन और कार्य करने की योग्यता आदि का विवरण रहता है।

आमाशय—(पु० सं०) पेट के भीतर की वह थैली जिसमें खाये हुये पदार्थ इकट्ठे होते और पचते हैं।

आमास—(फ़ा०) सूजन। वरम।

आमाहल्दी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ रंग में हल्दी की तरह होती है।

आमिल—(पु० अ०) काम करनेवाला। कर्तव्य-परायण। कर्मचारी। हाकिम। सिद्ध

आमीन—(वि० अ०) तथास्तु। भगवान ऐसा ही करें।

आमूदा—(फ़ा०) सजा हुआ। आरास्ता।

आमेज़—(वि० फ़ा०) मिला हुआ। आमेजिश=मिलावट।

आमोख़्ता—(पु० क्रि०) उद्धरणी।

आमोद—(पु० सं०) आनन्द। दिलबहलाव। —प्रमोद=भोग-विलास। आमोदित=प्रसन्न।

आय—(स्त्री० सं०) आमदनी।

आयत—(वि॰ सं॰) विस्तृत। (अ॰) क़ुरान का वाक्य।
आयद—(वि॰ अ॰) लगाया हुआ।
आयव्यय—(पु॰ सं॰) जमाख़र्च। आमदनी और ख़र्च।
आया—(क्रि॰ अ॰ हि॰) आना का भूतकालिक रूप।
आयात—(पु॰ सं॰) वह वस्तु या माल जो व्यापार के लिये विदेश से अपने देश में लाया या मँगाया गया हो।
आयास—(पु॰ सं॰) मेहनत।
आयु—(स्त्री॰ सं॰) उम्र।
आयुध—(पु॰ सं॰) हथियार।
आयुर्वेद—(पु॰ सं॰) चिकित्सा-शास्त्र।
आयुष्मान—(वि॰ सं॰) चिर-जीवी।
आयुष्य—(पु॰ सं॰) उम्र।
आयोजन—(पु॰ सं॰) प्रबन्ध। उद्योग। सामान।
आयोजित—(वि॰ सं॰) ठीक किया हुआ।
आरम्भ—(पु॰ सं॰) उत्थान।
आरचेस्ट्रा—(पु॰ अं॰) थियेटर आदि में बैठकर बाजा बजाने वालों का दल।
आरज़ा—(पु॰ अ॰) बीमारी।
आरज़ू—(स्त्री॰ फ़ा॰) इच्छा। विनय। —मंद=इच्छुक।
आरिज—(अ॰) उन्नति-शील। प्रगतिशील।
आरती—(स्त्री॰ हि॰) किसी मूर्ति के ऊपर दीपक घुमाना।
आरपार—(पु॰ हि॰) यह तट और वह तट।
आरफ़नेज़—(पु॰ अं॰) अना-थालय।
आरव—(पु॰ सं॰) शब्द। आहट।
आरसी—(स्त्री॰ हि॰) दर्पण। एक गहना जिसको स्त्रियाँ दाहिने हाथ के अँगूठे में पहनती हैं।
आरा—(पु॰ सं॰) लोहे की दाँतीदार एक पटरी जिससे रेतकर लकड़ी चीरी जाती है। सुतारी।
आराइश—(स्त्री॰ फ़ा॰) सजा-

वट। फुलवाड़ी। आरास्ता = सँवारा हुआ।

आराज़ी—(स्त्री० अ०) भूमि। खेत।

आरिफ़—(अ०) सन्तोषी। ईश्वर-प्रेमी।

आराधन—(पु० सं०) पूजा।

आराधक—पूजा करनेवाला।
आराधना = पूजा।
आराध्य = पूजनीय।

आराम—(पु० सं०) बाग़। (फ़ा०) चैन। सेहत।

आरामकुर्सी—(स्त्री० फ़ा०) एक प्रकार की लम्बी कुर्सी, जिस पर आदमी बैठा हुआ आराम से लेट भी सकता है।

आरी—(स्त्री० हि०) लकड़ी चीरने का एक औज़ार। लोहे की एक कील जो बैल हाँकने के पैने की नोक में लगी रहती है। सुतारी।

आरूढ़—(वि० सं०) चढ़ा हुआ। स्थिर।

आरोप—(पु० सं०) लगाना। रोपना। झूठी कल्पना।

आर्च—(अं०) मेहराब।

आर्केलाजिकल—(अं०) पुरातत्व सम्बन्धी।

आर्ट—(पु० अं०) दस्तकारी। कलाकौशल।

आर्टिकिल—(स्त्री० अं०) लेख। वस्तु।

आर्टिकिल्स आफ़ एसोसियेशन—(पु० अं०) किसी संस्था या ज्वायंट स्टॉक कम्पनी या सम्मिलित पूँजी से खुलनेवाली कम्पनी की नियमावली।

आह्लाद—(पु० सं०) आनन्द।
आह्लादित = आनंदित।

आह्वान—(पु० सं०) बुलाना। तलबनामा।

आर्टिलरी—(स्त्री० अं०) तोपखाना।

आर्टिस्ट—(पु० अं०) वह जो किसी कला में, विशेषकर ललित-कला में कुशल हो।

आर्डर—(पु० अं०) माँग। शांति। सिलसिला। आज्ञा।

आर्डरी—(वि० अं०) आर्डर सम्बन्धी । आर्डर का ।

आर्डिनरी—(वि० अं०) मामूली।

आर्डिनेंस—(पु० अं०) अस्थायी व्यवस्था या क़ानून ।

आर्थोडाक्स—(वि० अं०) कट्टर । सनातनी ।

आर्म—(पु० अं०) हथियार ।

आर्म पुलिस—(स्त्री० अं०) हथियार-बंद पुलिस ।

आर्मर्डकार—(पु० अं०) बख़्तर-दार गाड़ी ।

आर्मी—(स्त्री० अं०) फ़ौज । सेना ।

आर्त्त—(वि० सं०) पीड़ित। दुखी । अस्वस्थ ।—नाद= दुःख-सूचक शब्द । —स्वर =दुःख-सूचक शब्द । आर्त्ति =पीड़ा। दुःख ।

आर्थिक—(वि० सं०) धन सम्बन्धी ।

आर्य्य—(वि० सं०) श्रेष्ठ । बड़ा। मान्य । —समाज=श्रेष्ठ समाज, जिसके संस्थापक स्वामी दयानंद थे ।

आर्य्या—(स्त्री० सं०) दादी ।

आर्य्यावर्त्त—(पु० सं०) आर्य्यों का देश । उत्तरी भारत जिसके उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्याचल, पूर्व में बंगाल की खाड़ी और पश्चिम में अरब सागर है ।

आलंकारिक—(वि० सं०) अलंकार युक्त । अलंकार जानने वाला ।

आल—(पु० सं०) हरताल । (फ़ा०) लालरंग । ख़ोमा । एक प्रकार की मदिरा । (अ०) सन्तान । विशेषकर बेटी की औलाद ।

आलपीन—(स्त्री० पुर्त्त०) एक घुंडीदार सूई जिसे अँगरेज़ी में पिन कहते हैं ।

आलम—(पु० अ०) दुनिया । अवस्था । बड़ी जमात ।

आलमनक—(पु० पुर्त्त०) पंचांग।

आलमारी—(स्त्री०) आलमारी ।

आलस—(वि० सं०) सुस्ती । आलसी=सुस्त । आलस्य= सुस्ती ।

आलाइश—(स्त्री० फ़ा०) गंदी वस्तु । घाव का गंदा खून पीबादि । पेट के भीतर की श्रंतड़ी आदि ।
आलात—(अ०) औज़ार । हथियार लोहे का ।
आलाप—(पुं० सं०) बातचीत । —क=बातचीत करनेवाला ।
आलिंगन—(पु० सं०) गले से लगाना ।
आलिम—(वि० अ०) पंडित । गुनी ।
आलीजाह—(वि० अ०) ऊँचे दर्जे का । आलाहज़रत= महिमामय । बड़े मर्तबे का आदमी ।
आलीशान—(वि० अ०) भड़कीला । विशाल ।
आलू—(पु० हि०) एक प्रकार का कंद ।
आलूचा—(पु० फ़ा०) एक पेड़ । आलूबुख़ारा=आलूचा नामक वृत्त का सुखाया हुआ फल ।
आलूदा—(फ़ा०) लिथड़ा हुआ । लिपटा हुआ ।
आलूशफ़तालू—(पु० हि०+फ़ा०) लड़कों का एक खेल ।
आलोक—(पु० सं०) प्रकाश । चमक । आलोचना=गुण-दोष-निरूपण । आलोचित= विचार किया हुआ ।
आल्हा—(पु० देश०) ३१ मात्राओं के एक छंद का नाम जिसे वीर छंद भी कहते हैं । महोबे के एक पुरुष का नाम जो पृथ्वीराज के समय में था । बहुत लम्बा चौड़ा वर्णन ।
आवभगत—(पु० हि०) आदर-सत्कार ।
आवरण—(पु० सं०) ढकना । बेठन । परदा । अज्ञान । —पत्र=कवर ।
आवर्दा—(वि० फ़ा०) लाया हुआ । कृपा-पात्र ।
आवश्यक—(वि० सं०) ज़रूरी । काम का । —ता=ज़रूरत । मतलब । आवश्यकीय= ज़रूरी ।
आवागमन—(पु० हि० सं०)

आना जाना । जन्म और मरण ।

आवाज़—(पु० फ़ा) ध्वनि । बोली । फ़क़ीरों या सौदा बेचनेवालों की पुकार । आवाज़ा = ताना ।

आवाजाही—(स्त्री० हि०) आना जाना ।

आवारा—(फ़ा०) चरित्रहीन । निकम्मा ।

आवारगी—(स्त्री० फ़ा०) आवारापन । आवारा = निकम्मा । उठल्लू । आवारा-गर्द = निकम्मा । आवारागर्दी = व्यर्थ इधर-उधर घूमना । बदमाशी ।

आवाहन—(पु० सं०) मंत्र द्वारा किसी देवता को बुलाने का कार्य्य । बुलाना ।

आविर्भाव—(पु० सं०) प्रकाश । उत्पत्ति । आविर्भूत = प्रकटित । उत्पन्न ।

आविष्कर्त्ता—(वि० सं०) आविष्कार करनेवाला । आविष्कार = ईजाद । किसी तत्व का सर्वप्रथम ज्ञान प्राप्त करना । आविष्कारक = आविष्कर्त्ता । आविष्कृत = प्रकटित । पता लगाया हुआ ।

आवृत्त—(वि० सं०) छिपा हुआ । लपेटा हुआ । घिरा हुआ ।

आवृत्ति—(स्त्री० सं०) बार-बार किसी बात का अभ्यास । पाठ करना ।

आवेग—(पु० सं०) झोंक ।

आवेदक—(वि० सं०) निवेदन करनेवाला । आवेदन = निवेदन । आवेदन-पत्र = अर्ज़ी ।

आवेश—(पु० सं०) प्रवेश । झोंक ।

आशंका—(स्त्री० सं०) डर । सन्देह ।

आशकार—(फ़ा०) प्रकट । ज़ाहिर । खुला होना ।

आशना—(फ़ा०) जिससे जान-पहचान हो । प्रेमी । प्रेम-पात्र । —ई = जान पहचान । प्रेम । अनुचित सम्बन्ध ।

आशय—(पु० सं०) मतलब। इच्छा। आधार।

आशा—(स्त्री० सं०) अप्राप्त के पाने की इच्छा और थोड़ा बहुत निश्चय।

आशिक़—(पु० अ०) प्रेम करने वाला मनुष्य। अनुरक्त पुरुष। आशिक़ाना=आशिक़ों की तरह का।

आशियाँ, आशियाना—(पु० फ़ा०) घोंसला। झोपड़ा।

आशुफ़्ता—(फ़ा०) परेशान। —आशुफ़्तगी=परेशानी। हाल बेहाल।

आश्चर्य्य—(पु० सं०) अचंभा। विस्मय। अचरज।

आश्रम—(पु० सं०) तपोवन। कुटी या मठ। ठहरने की जगह। आश्रमी=आश्रम सम्बन्धी। आश्रम में रहने वाला।

आश्वास—(पु० सं०) तसल्ली। आश्वासन=दिलासा। आशा प्रदान। —नीय=दिलासा देने योग्य।

आश्विन—(पु० सं०) क्वार का महीना।

आषाढ़—(पु० सं०) ज्येष्ठ मास के पश्चात् और श्रावण के पूर्व का महीना। आषाढ़ी=आषाढ़ मास की पूर्णिमा।

आस—(स्त्री० हि०) उम्मेद। लालसा। सहारा।

आस—(स्त्री० फ़ा०) आटा पीसने की चक्की।

आसकत—(पु० हि०) सुस्ती।

आसक्त—(वि० सं०) लीन। मोहित। आसक्ति=लीनता। चाह।

आसन—(पु० सं०) बैठक। टिकना। निवास। साधुओं का डेरा वा निवास-स्थान। आसनी=छोटा आसन।

आसन्न—(वि० सं०) निकट आया हुआ। —भूत=वह भूतकाल जो वर्तमान से मिला हुआ हो।

आसपास—(क्रि० वि० हि०) चारोंओर। क़रीब।

आसमान—(पु० फ़ा०) आकाश।

आसमानी—(फा०) नीला रंग। आतशबाजी की एक किस्म।

आसरा—(पु० हि०) सहारा। भरोसा।

आसव—(पु० सं०) मद्य जो भपके से न चुआई जाय। औषध का एक भेद। अर्क़।

आसाइश—(पु० फ़ा०) आराम। सुख। समृद्धि।

आसान—(वि० फ़ा०) सीधा। सहल। आसानी=सरलता।

आसार—(पु० अ०) निशान।

आसी—(अ०) शोकित। वैद्य। तबीब।

आसूदगी—(स्त्री० फ़ा०) सन्तोष। आसूदा=संतुष्ट। भरापूरा। बेफ़िक्र। निश्चिन्त।

आसेब=(फ़ा०) दुःख। धक्का। खतरा।

आस्तिक—(वि० सं०) वेद ईश्वर और परलोकादि पर विश्वास करनेवाला। ईश्वर के अस्तित्व को माननेवाला। —पन=आस्तिकता। आस्तिक्य=वेद ईश्वर और परलोक पर विश्वास।

आस्तीन—(स्त्री० फ़ा०) बाँही।

आह—(अव्य० हि०) पीड़ा, शोक, दुःख, ग्लानि-सूचक अव्यय।

आहट—(स्त्री० हि०) खड़का।

आहत—(वि० सं०) चोट खाया हुआ।

आहन—(पु० फ़ा०) लोहा।

आहार—(पु० सं०) भोजन। —विहार=खाना पीना सोना आदि शारीरिक व्यवहार। रहन-सहन।

आहिस्ता—(क्रि० वि० फ़ा०) धीरे-धीरे।

आहुति—(स्त्री० सं०) हवन। हवन में डालने की सामग्री।

आहू—(पु० फ़ा०) मृग।

आहूत—(वि० सं०) बुलाया हुआ।

इ—वर्णमाला में स्वर का तीसरा वर्ण। इसका स्थान तालू है।

इंक—(स्त्री० अं०) स्याही। —टेबुल=छापेख़ाने में स्याही देने की चौकी। —मैन=छापेख़ाने में स्याही देनेवाला मनुष्य। —रोलर=छापेख़ाने में स्याही देने का बेलन।

इंग्लिश—(वि० अं०) अँगरेज़ी। इङ्गलिस्तान = इंगलैण्ड। इंगलिस्तानी=इंगलैण्ड देश का।

इंगित—(पु० सं०) इशारा।

इंच—(स्त्री० अं०) एक फुट का बारहवाँ हिस्सा। बहुत थोड़ा।

इंजन—(पु० अं०) कल। भाप वा बिजली से चलनेवाला यंत्र। रेलवे ट्रेन में वह गाड़ी जो सबसे आगे होती है और भाप के ज़ोर से सब गाड़ियों को खींचती है।

इंजीनियर—(पु० अं०) यंत्र की विद्या जाननेवाला। विश्वकर्मा। वह अफ़सर जिसकी देखभाल में सरकारी सड़कें, इमारतें और पुल इत्यादि बनते हैं।

इंजील—(स्त्री० यू०) ईसाइयों की धर्म-पुस्तक।

इंट्रेंस—(पु० अं०) दरवाज़ा। अंगरेज़ी स्कूलों का एक दर्जा।

इंडस्ट्रियल—(वि० अं०) उद्योग-धंधा संबंधी।

इंडस्ट्री—(स्त्री० अं०) उद्योग धंधा। शिल्प।

इंडिया—(पु० अं०) भारतवर्ष।

इंडेक्स—(पु० अं०) पुस्तक के विषयों की सूची। विषयानुक्रमणिका।

इंडेएट—(पु० अं०) माल मँगानेवाले के पास भेजी जानेवाली माल की वह सूची, जो किसी व्यापारी के पास माल की माँग के साथ भेजी जाती है।

इंडोर्स—(क्रि० स० अं०) हुंडी या चेक आदि पर रुपये देने या पाने के संबंध में हस्ताक्षर करना।

इंतक़ाल—(पु० अ०) मौत। एक जगह से दूसरी जगह जाना। किसी सम्पत्ति का एक के अधिकार में से दूसरे के अधिकार में जाना।

इंतज़ाम—(पु० अ०) प्रबन्ध।

इंतज़ार—(पु० अ०) रास्ता देखना। प्रतीक्षा।

इंतहा—(पु० अ०) अंत।

इंद्र—(वि० सं०) ऐश्वर्य्यवान। श्रेष्ठ।

इंद्रजाल—(पु० सं०) जादूगरी। इंद्रजाली=जादूगर।

इंद्रधनुष—(पु० सं०) सात रंगों का बना हुआ एक अर्द्ध वृत्त, जो वर्षाकाल में सूर्य्य के विरुद्ध दिशा में आकाश में देख पड़ता है।

इंद्रिय—(स्त्री० सं०) वह शक्ति जिससे बाहरी विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। —निग्रह =इंद्रियों का दबाना।

इंधन—(पु० सं०) जलाने की लकड़ी।

इंसाफ़—(पु० अ०) न्याय।

इंस्टिट्यूट—(स्त्री० अं०) सभा।

इंस्ट्रूमेंट—(पु० अं०) औज़ार। साधन।

इंस्पेक्टर—(पु० अं०) निरीक्षक।

इकट्ठा—(वि० हि०) जमा।

इकतारा—(पु० हि०) एक बाजा, जिसमें एक ही तार होता है।

इकतीस—(वि० हि०) तीस और एक।

इक़दाम—(पु० अ०) किसी अपराध के करने की तैयारी। इरादा।

इक़ामत—(स्त्री० अ०) स्थिर होना। एक स्थान पर रहना। बसना।

इक़बाल—(पु० अ०) भाग्य। ऐश्वर्य्य। भाग्योदय होना। सम्पन्न होना।

इक़तिदा—(स्त्री० अ०) पैरवी करना।

इक़्तिसाम—(पु० अ०) तक़्सीम करना। आपस में बाँट लेना।

इकराम—(पु० अ०) दान। आदर।

इक़रार—(पु० अ०) प्रतिज्ञा। कोई काम करने की स्वीकृति।

इकलौता—(पु० हिं०) वह लड़का जो अपने माँ-बाप का अकेला हो।

इक्का—(वि० सं० एक) अकेला। एक प्रकार की दो पहिये की घोड़ा-गाड़ी जिसमें एक ही घोड़ा जोता जाता है। ताश का वह पत्ता जिसमें किसी रंग की एक ही बूटी हो।

इक्का दुक्का—(वि० हिं०) अकेला दुकेला।

इक्षुप्रमेह—(पु० सं०) एक प्रकार का प्रमेह जिसमें मूत्र के साथ मधु वा शक्कर जाती है।

इख़फ़ाये वारदात—(पु० फ़ा०) क़ानून में किसी पुरुष का किसी ऐसी घटना का छिपाना जिसको प्रकट करना नियमानुसार उसका कर्तव्य हो।

इख़लास—(पु० अ०) मित्रता। प्रेम। सम्बन्ध।

इख़्तताम—(क्रि० स० अ०) पूरा करना।

इख़्तियार—(पु० अ०) अधिकार। अधिकार-क्षेत्र। क़ाबू। प्रभुत्व।

इख़राजात—(पु० फ़ा०) अनेक व्यय।

इख़्तलाफ़—(पु० अ०) विरोध। अन्तर। बिगाड़।

इच्छा—(स्त्री० सं०) लालसा।

इच्छित—(वि० सं०) चाहा हुआ। इच्छुक=चाहनेवाला।

इजराय—(पु० अ०) जारी करना। काम में लाना।

इजलास—(पु० अ०) बैठक। कचहरी।

इज़तिराब—(पु० अ०) घबराहट। बेक़रारी। चिन्ता।

इज़हार—(पु० अ०) ज़ाहिर करना। गवाही।

इजाज़त—(स्त्री० अ०) आज्ञा। मंज़ूरी।

इज़ाफ़ा—(पु० अ०) बढ़ती।

इज़ार—(स्त्री० अ०) पायजामा। सूथना। —बंद=कमरबंद।

इज़ारदार, इजारेदार—(वि० फ़ा०) अधिकारी।

इज़ारा—(पु० अ०) किसी पदार्थ को किराये पर देना। ठेका। अधिकार।

इज़्ज़त—(स्त्री० अ०) मान। आदर। —दार=माननीय।

इटालियन—(पु० अं०) एक प्रकार का कपड़ा जो पहले पहल इटली से आया था।

इटैलिक—(पु० अं०) एक प्रकार का छापा वा टाइप जिसमें अक्षर तिरछे होते हैं।

इठलाना—(क्रि० अ० हि०) इतराना। नख़रा करना।

इतना—(वि० हि०) इस क़दर।

इतमाम—(पु० अ०) इन्तज़ाम।

इतमीनान—(पु० अ०) विश्वास। इतमीनानी=विश्वासपात्र।

इतराना—(क्रि० अ० हि०) घमंड करना। ठसक दिखाना इतराहट=घमंड।

इतवार—(पु० प्रा०) रविवार।

इताअत—(स्त्री० अ०) ताबेदारी।

इत्तिहाद—(पु० अ०) एक होना। मित्रता। संगठन।

इति—(अव्य० सं०) समाप्ति-सूचक अव्यय।

इतिवृत्त—(पु० सं०) पुरानी कथा। कहानी।

इतिहास—(पु० सं०) बीती हुई प्रसिद्ध घटनाओं और उनसे सम्बन्ध रखनेवाले पुरुषों का काल-क्रम से वर्णन। वह पुस्तक जिसमें बीती हुई प्रसिद्ध घटनाओं और भूत पुरुषों का वर्णन हो।

इत्तफ़ाक़—(पु० अ०) मेल। एका।

इत्तफ़ाक़न—(क्रि० वि० अ०) अचानक। इत्तफ़ाक़िया=आकस्मिक।

इत्तला—(स्त्री० अ०) ख़बर।

इत्तिहाम—(पु० अ०) दोष।

इत्यादि—(अव्य० सं०) इसी प्रकार। वग़ैरह।

इत्र—(पु० अ०) अतर। —फरोश=इत्र बेचनेवाला।

इधर—(क्रि० वि० हि०) इस ओर। आसपास। चारोंओर।

इनकम—(स्त्री० अं०) आमदनी। —टैक्स=आमदनी पर महसूल।

इनकार—(पु० अ०) नकारना। नहीं करना।

इनफार्मर—(पु० अं०) गोइन्दा। भेदिया।

इनफ्लुएंज़ा—(पु० अं०) सरदी का बुख़ार।

इन्स्टिट्यूशन—(पु० अं०) संस्था। समाज। मंडल।

इन्टरनैशनल—(वि० अं०) सर्वराष्ट्रीय।।

इन्टरमीडिएट—(वि० अं०) बीच का। मध्यम।

इन्टरव्यू—(पु० अं०) भेंट। मुलाक़ात। वार्त्तालाप।

इन्तक़ाल—(अ०) एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना।

इन्तख़ाब—(पु० अ०) निर्वाचन। चुनाव। पसन्द करना।।

इन्तज़ाम—(अ०) प्रबन्ध। व्यवस्था। बन्दोबस्त।

इन्तज़ार—(अ०) रास्ता जोहना। प्रतीक्षा करना।

इन्तशार—(पु० अ०) फैलना। बखेरना।

इन्तहा—(अ०) अन्त। सीमोल्लंघन। अति। परिणाम।

इन्दराज़—(अ०) दर्ज होना। दाख़िल होना।

इन्वाइस—(पु० अं०) बीजक। चलान का काग़ज़।

इन्श्योरेंस—(पु० अं०) बीमा।

इन्क़िलाब—(अ०) क्रांति। परिवर्तन।

इन्किशार—(अ०) नम्रता। आजिज़ी।

इन्सान—(पु० अ०) आदमी। इन्सानियत=आदमियत। सज्जनता।

इन्साफ़—(अ०) न्याय। उचित निर्णय।

इन्सालवेंट—(वि० अ०) दिवालिया।

इनाम—(पु० अ०) पुरस्कार।

इनायत—(स्त्री० अ०) दया। एहसान।

इनेगिने—(वि० हि०) कुछ। चुने चुनाये।

इफ़रात—(स्त्री० अ०) अधिकता। कसरत।

इफ़लास—(पु० अ०) ग़रीबी।

इबरत—(अ०) शिक्षा लेना।

इब्रायनामा—(पु० फ़ा०) त्यागपत्र।

इबरानी—(वि० अ०) यहूदी।

इब्न—(अ०) पुत्र। बेटा।

इबलीस—(पु० अ०) शैतान।

इबादत—(स्त्री० अ०) पूजा। आराधना।

इबारत—(स्त्री० अ०) लेख। लेखन-शैली।

इब्तिदा—(स्त्री० अ०) आरम्भ। जन्म। निकास।

इमकान—(पु० अ०) शक्ति। काबू।

इमदाद—(स्त्री० अ०) मदद। इमदादी=मदद पानेवाला। वह मदरसा जिसको सरकार से द्रव्य की कुछ सहायता मिलती है।

इमरती—(स्त्री० हि०) एक मिठाई।

इमरोज़—(फ़ा०) आज का दिन। आज।

इमला—(अ०) लिखने का अभ्यास।

इमली—(स्त्री० हि०) एक बड़ा पेड़।

इमसाल—(फ़ा०) अब की साल। इस साल।

इमाम—(पु० अ०)। अगुआ। पुरोहित। मुसलमानों का धार्मिक कृत्य करानेवाला आदमी। अली के बेटों की उपाधि।

इमामदस्ता—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का लोहे वा पीतल का खलबट्टा।

इम्तियाज़—(अ०) विवेचन। भेद-बुद्धि। तमीज़ करना।

इम्तिहान—(अ०) परीक्षा। आज़माइश।

इमामबाड़ा—(पु०अ०+हि०) वह हाता जिसमें शिया लोग

ताजिया रखते और उसे दफ़न करते हैं।
इमारत—(स्त्री० अ०) बड़ा और पक्का मकान।
इम्पीरियल—(वि० अं०) राजकीय। शाही।
इम्पीरियल गवर्नमेंट—(स्त्री० अं०) साम्राज्य सरकार। बड़ी सरकार।
इम्पीरियल प्रेफ़रेन्स—(पु० अं०) साम्राज्य की बनी वस्तुओं को प्रशस्तता देना।
इम्पीरियल सर्विस ट्रूप्स—(स्त्री० अं०) वह सेना जो भारतीय रजवाड़े भारत सरकार की सहायतार्थ अपने यहाँ रखते हैं और जिसकी देख-भाल ब्रिटिश अफ़सर करते हैं।
इम्पोर्ट—(पु० अं०) वह माल जो व्यापार के लिये विदेश से अपने देश में मँगाया गया हो।
इयत्ता—(स्त्री० सं०) सीमा।
इरशाद—(अ०) हिदायत करना। आज्ञा और अनुमति देना। मार्ग बताना।
इराक़ी—(वि० अ०) इराक़ देश का। घोड़े की एक जाति।
इरादा—(पु० अ०) विचार।
इर्तकाव—(पु० अ०) एक करना। कोई अपराध करना।
इर्दगिर्द—(क्रि० वि० फ़ा०) चारोंओर। आसपास।
इरसाल—(क्रि०स०अ०) भेजना। पत्र भेजना।
इलज़ाम—(पु० अ०) दोष। अभियोग।
इलहाक़—(पु० अ०) सम्बन्ध। किसी वस्तु को किसी दूसरी वस्तु के साथ मिला देने का कार्य।
इलहाक़दार—(पु० अ०) वह मनुष्य जिसके साथ बन्दोबस्त के वक्त मालगुज़ारी अदा करने का इक़रार-नामा हो। नम्बरदार।
इलहाम—(पु० अ०) ईश्वर का शब्द। देव-वाणी।
इल्ला—(अ०) नहीं तो। अन्यथा।
इलाक़ा—(पु० अ०) संबन्ध। राज्य।

इलाज़—(पु० अ०) दवा। चिकित्सा। तदबीर।

इलायची—(स्त्री० हि०) एक पौधा जिसमें इलायची दाने का फल लगता है। जो मसालों में पड़ता है।

इलाही—(पु० अ०) ईश्वर। ख़ुदा।

इलाहीगज़—(पु० अ०) अकबर का चलाया हुआ एक प्रकार का गज़ जो ४१ अंगुल (३३$\frac{3}{4}$ इंच) का होता है, और जो अब तक इमारत आदि नापने के काम आता है।

इलेक्ट्रो—(वि० अं०) बिजली द्वारा तैयार किया हुआ।

इल्तजा—(स्त्री० अ०) प्रार्थना।

इल्तिमास—(अ०) निवेदन। खोज। तलाश।

इल्म—(पु० अ०) विद्या।

इल्लत—(स्त्री० अ०) रोग। दोष। कारण।

इल्ली—(स्त्री०) च्यूँटी आदि के बच्चों का वह पहला रूप जो अंडे से निकलने के उपरान्त तुरंत होता है।

इशरत—(स्त्री० अ०) सुख। भोग। विलास।

इशारा—(पु० अ०) संकेत। संक्षिप्त कथन।

इश्क़—(पु० अ०) मुहब्बत। लगन।

इश्क़पेचाँ—(पु० अ०) एक प्रकार की बेल जिसकी पत्तियाँ सूत की तरह बारीक होती हैं।

इशफ़ाक़—(अ०) मिहरबानी करना। डराना।

इश्तिहार—(पु० अ०) विज्ञापन। एलान।

इश्तियालक—(स्त्री० अ०) बढ़ावा।

इष्ट—(वि० सं०) चाहा हुआ।

इष्टदेव—(पु० सं०) पूज्य देवता।

इसपंज—(पु० अं० स्पंज) मुर्दा बादल।

इसपात—(पु० हि०) एक प्रकार का कड़ा लोहा।

इसपिरिट—(स्त्री० अं० स्पिरिट) किसी वस्तु का सत। एक प्रकार की ख़ालिस शराब।

इस्पेशल—(वि० अं० स्पेशल) ख़ास।

इसरार—(पु० अ०) हठ। आग्रह। ताकीद।

इसलाम—(पु० अ०) मुसलमानी धर्म।

इसलाह—(पु० अ०) संशोधन।

इस्तहकाम—(वि० अ०) मज़-बूती। दृढ़ता।

इस्तिख़ारा—(अ०) परमात्मा से मंगल-कामना। भवितव्य-तार्थ ज्ञानेच्छा।

इस्तिक़बाल—(अ०) स्वागत करना। अगवानी करना।

इस्तिक़लाल—(अ०) धैर्य्य। दृढ़ता। किसी वस्तु को कम समझना।

इस्तमरारी—(वि० अ०) सब दिन रहने वाला। नित्य।

इस्तिंजा—(पु० अ०) पेशाब करने के बाद मिट्टी के ढेले से इंद्रिय में लगी हुई पेशाब की बूँदों को सुखाने की क्रिया।

इस्तिरी—(स्त्री० हि०) धोबी का एक औज़ार जिससे वह धोने के पीछे कपड़े की तह को जमा कर उसकी शिकनें मिटाता है।

इस्तीफ़ा—(पु० अ०) त्याग-पत्र।

इस्तेदाद—(स्त्री० अ०) लिया-क़त।

इस्तेमाल—(पु० अ०) उपयोग।

इस्म—(पु० अ०) नाम।

इहाता—(पु० अ०) चहारदीवारी के बीच की भूमि। घेरना।

इहसान—(अ०) कृतज्ञता। —मंद=कृतज्ञ। आभारी।

इहकाम—(अ०) मज़बूत करना।

इहतियात—(स्त्री० अ०) साव-धानी। बचाव।

इहतिमाम—(अ०) प्रबन्ध। कोशिश। परिश्रम।

ई—हिन्दी-वर्णमाला का चौथा अक्षर। इसके उच्चारण का स्थान तालू है।

ईंगुर—(पु० हि०) एक खनिज पदार्थ। हिन्दू सौभाग्यवती स्त्रियाँ शोभा के लिये इसकी बिन्दी माथे पर लगाती हैं।

ईंट—(स्त्री० हि०) साँचे में ढाला हुआ मिट्टी का चौखूँटा लम्बा टुकड़ा जो पजावे में पकाया जाता है।

ईंधन—(पु० हि०) जलावन।

ईख—(स्त्री० हि०) शर जाति की एक घास जिसके डंठल में मीठा रस भरा रहता है। इसी रस से गुड़ और चीनी बनती है।

ईज़ा—(स्त्री० अ०) दुःख। पीड़ा।

ईजाद—(स्त्री० अ०) आविष्कार। नया निर्माण।

ईथर—(पु० अ०) एक प्रकार का अति सूक्ष्म और लचीला पदार्थ जो समस्त शून्य में व्याप्त है। एक रासायनिक द्रव पदार्थ जो अलकोहल और गंधक के तेज़ाब से बनता है।

ईद—(स्त्री० अ०) मुसलमानों का एक त्यौहार।

ईमन—(पु० फ़ा०) एक रागिनी। —कल्यान=एक मिश्रित राग का नाम।

ईमान—(पु० अ०) विश्वास। अच्छी नीयत। —दार=विश्वास-पात्र। सच्चा।

ईरान—(पु० फ़ा०) फ़ारस देश।

ईर्षा—(स्त्री० हि०) डाह। —लु=ईर्षा करने वाला। ईर्ष्या=ईर्षा।

ईशान—(पु० सं०) पूरब और उत्तर के बीच का कोना।

ईश्वर—(पु० सं०) मालिक। भगवान। ईश्वरीय=ईश्वर संबंधी। ईश्वर का।

ईसवी—(वि० फ़ा०) ईसा से संबंध रखने वाला।

ईसा—(पु० अ०) ईसाई धर्म के आचार्य्य। —ई=ईसा को माननेवाला।

ईस्ट—(पु० अं०) पूर्व दिशा।

ईस्टर—(अं०) एक अंग्रेज़ी त्योहार।

उ

उ—हिन्दी-वर्णमाला का पाँचवाँ अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।

उँगली—(स्त्री० हि०) हथेली के छोरों से निकले हुये फलियों के शक्ल के पाँच अवयव जो वस्तुओं को ग्रहण करते हैं।

उँचन—(स्त्री० हि०) अदवान। उँचना=अदवान तानना। उंचन कसना।

ऊँचाई—(स्त्री० हि०) ऊँचापन। बड़प्पन।

उंछ—(स्त्री० हि०) सीला बीनना।

उऋण—(वि० सं०) ऋणरहित।

उकड़ूँ—(पु० हि०) घुटने मोड़कर बैठने की एक मुद्रा जिसमें दोनों तलवे ज़मीन पर पूरे बैठते हैं, और चूतड़ एड़ियों से लगे रहते हैं।

उकताना—(क्रि० हि०) ऊबना। घबराना।

उकसना—(क्रि० हि०) उभरना। निकलना। सीवन का खुलना। उकसाना=ऊपर को उठाना। उत्तेजित करना। हटा देना। खसकना।

उक़ाव—(पु० अ०) गरुड़।

उकेलना—(क्रि० हि०) उचाड़ना। उधेड़ना।

उक़्लैदिस—(यू०) रेखागणित। ज्यूमेटरी।

उखड़ना—(क्रि० हि०) खुदना। जोड़ से हट जाना। ग्राहक का भड़क जाना। उठ जाना। हटना। टूट जाना। सीवन का खुलना।

उखाड़—(पु० हि०) वह युक्ति जिससे कोई पेंच रद्द

किया जाता है। —ना= किसी जमी, गड़ी वा बैठी हुई वस्तु को स्थान से अलग करना। भड़काना। तितर-बितर कर देना। हटाना। नष्ट करना।

उगना—(क्रि० हि०) निकलना। जमना। उपजना।

उगलना—(क्रि० हि०) कै करना। मुँह में गई वस्तु को बाहर थूक देना। पचाया माल विवश होकर वापस करना। किसी बात को पेट में न रखना। विवश होकर कोई भेद खोल देना।

उगाल—(पु० हि०) थूक। —दान=पीकदान।

उगाहना—(क्रि० हि०) वसूल करना। उगाही=रुपया पैसा वसूल करने का काम। ज़मीन का लगान। एक प्रकार का रुपये का लेन-देन।

उचकना—(क्रि० हि०) ऊँचा होने के लिये पैर के पंजों के बल एड़ी उठाकर खड़ा होना। कूदना। उचक्का= उचककर वस्तु ले भागनेवाला आदमी। ठग। बदमाश।

उचटना—(क्रि० हि०) अलग होना। हटना।

उचित—(वि० हि०) योग्य। वाजिब।

उच्छ्वास—(पु० हि०) ऊपर को खींची हुई साँस।

उच्छृङ्खल—(वि० सं०) क्रमविहीन। मनमाना काम करनेवाला। अक्खड़।

उजड्ड—(वि० हि०) असभ्य। गँवार! जिसे बुरा काम करने में कोई आगा-पीछा न हो।

उजबक—(हि०) उजड्ड। तातारियों की एक जाति।

उजरत—(पु० अ०) मज़दूरी। भाड़ा।

उजलत—(स्त्री० अ०) उतावली।

उजागर—(त्रि० हि०) प्रकाशित। प्रसिद्ध।

उजाड़—(पु० हि०) उजड़ा हुआ। शून्य स्थान।

उजाला—(पु० हि०) प्रकाश।

उज्ज्वल—(पु० सं०) प्रकाशमान। स्वच्छ। बेदाग़। —ता= चमक। स्वच्छता। सफ़ेदी।

उज़्र—(पु० अ०) बाधा। —दारी=किसी ऐसे मामले में उज़्र पेश करना जिसके विषय में अदालत से किसी ने कोई आज्ञा प्राप्त की हो या प्राप्त करने की दरख़्वास्त दी हो।

उझकना—(क्रि० हि०) उछलना।

उटंग—(वि० हि०) वह कपड़ा जो पहनने में ऊँचा या छोटा हो।

उठँगन—(पु० हि०) आड़। बैठने में पीठ को सहारा देनेवाली वस्तु। उठँगना=टेक लगाना। लेटना। उठँगाना= भिड़ाना या बन्द करना। भिड़ाना।

उठना—(क्रि० हि०) ऊँचा होना।

उठल्लू—(वि०हि०) आवारा।

उड़ाका—(पु० हि०) उड़नेवाला।

उड़ासना—(क्रि० हि०) बिस्तर उठाना। किसी को स्थान से हटाना।

उड़िया—(वि० हि०) उड़ीसा देश का रहनेवाला।

उडकट—(पु० अं०) छपाई के काम में आनेवाला एक प्रकार का ठप्पा।

उड़ेलना—(क्रि० हि०) ढालना। किसी द्रव पदार्थ को गिराना या फेंकना।

उढ़काना—(क्रि० हि०) भिड़ाना।

उढ़रना—(क्रि० हि०) विवाहिता स्त्री का किसी अन्य पुरुष के साथ निकल जाना। उढ़री=वह स्त्री जिसे कोई निकाल ले गया हो।

उतराई—(स्त्री० हि०) नदी के पार उतरने का महसूल। नाव आदि पर से उतरने का स्थान।

उतराना—(क्रि० हि०) पानी के ऊपर आना। प्रकट होना।

उतान—(वि० हि०) चित।

उतार—(पु० हि०) ढालुवाँ।

उतारना—(क्रि० हि०) ऊँचे स्थान से नीचे स्थान में लाना। खींचना (चित्र)। लेख की प्रतिलिपि लेना।

उतारा—(पु० हि०) डेरा डालने का काम। पड़ाव। नदीपार करने की क्रिया।

उतारू—(वि० हि०) तैयार।

उतावला—(वि० हि०) जल्दबाज़। घबड़ाया हुआ। उतावली = जल्दी। चंचलता।

उत्कंठा—(स्त्री० सं०) लालसा। उत्कंठित = उत्सुक।

उत्कट—(वि० सं०) विकट। प्रबल।

उत्कर्ष—(पु० सं०) बड़ाई उत्तमता। —ता = श्रेष्ठता। बड़ाई। समृद्धि।

उत्कृष्ट—(वि० स०) उत्तम। —ता = बड़प्पन।

उत्कोच—(पु० सं०) रिशवत।

उत्तप्त—(वि० सं०) खूब तपा हुआ। दुखी। क्रोधित।

उत्तम—(वि० सं०) सब से अच्छा।

उत्तमता—(स्त्री० सं०) श्रेष्ठता। भलाई।

उत्तर—(पु० सं०) दक्षिण दिशा के सामने की दिशा। जवाब। बदला।

उत्तर कोशल—(पु० सं०) अयोध्या के आसपास का देश।

उत्तर-दाता—(पु० हि०) ज़िम्मेदार। उत्तरदायित्व = ज़िम्मेदारी। उत्तरदायी = उत्तर देने वाला।

उत्तरा खंड—(पु० सं०) हिमालय के पास का उत्तरी भाग।

उत्तराधिकार—(पु० सं०) विरासत। उत्तराधिकारी = वह जो किसी के मरने के बाद उसकी सम्पत्ति का मालिक हो।

उत्तरायण—(पु० सं०) वह छः मास का समय जिसके बीच सूर्य्य मकर रेखा से चल कर बराबर उत्तर की ओर बढ़ता रहता है।

उत्तरार्द्ध—(पु० सं०) पिछला आधा।

उत्तरीय—(पु० सं०) उत्तर दिशा का।

उत्तरोत्तर—(क्रि० वि० सं०) एक के पीछे एक। दिनोंदिन।

उत्तान—(वि० सं०) चित। सीधा।

उत्ताप—(पु० सं०) गर्मी। कष्ट। दुःख। क्षोभ।

उत्तीर्ण—(वि० सं०) पार गया हुआ। मुक्त। पासशुदः।

उत्तेजक—(वि० सं०) उभाड़ने वाला। वेगों को तीव्र करने वाला। उत्तेजन=बढ़ावा। उत्तेजना=बढ़ावा।

उत्थान—(पु० सं०) उठान। बढ़ती।

उत्पत्ति—(स्त्री० सं०) पैदाइश। सृष्टि। आरम्भ। उत्पन्न=पैदा।

उत्पात—(पु० सं०) उपद्रव। अशांति। दंगा। उत्पाती=उत्पात मचाने वाला।

उत्पादक—(वि० सं०) उत्पन्न करने वाला। उत्पादन=उत्पन्न करना। उत्पादित=उत्पन्न किया हुआ।

उत्पीड़न—(पु० सं०) दबाना। पीड़ा देना।

उत्सर्ग—(पु० सं०) त्याग। न्योछावर।

उत्सव—(पु० सं०) धूम-धाम। जलसा। मंगल समय।

उत्साह—(पु० सं०) उमंग। साहस। उत्साही=उमंग वाला।

उत्सुक—(वि० सं०) अत्यन्त इच्छुक। चाही हुई बात में देर न सहकर उसके उद्योग में तय्यार। —ता=आकुल इच्छा।

उथल-पुथल—(पु० हि०) उलट-पुलट।

उदंत—(वि० सं०) जिसके दांत न जमे हों।

उदू—(पु० अ०) दुश्मन। वैरी। शत्रु।

उदूल—(अ०) अवज्ञा करना। फिर जाना।

उदय—(पु० सं०) ऊपर आना।

उदर—(पु० सं०) पेट । मध्य । भीतर का भाग । —ज्वाला =जठराग्नि । भूख ।

उदरना—(क्रि० हि०) फटना । नष्ट होना ।

उदार—(वि० सं०) दाता । बड़ा । ऊँचे दिल का । सरल । अनुकूल । —चरित=जिसका चरित्र उदार हो । —चेता जिसका चित्त उदार हो । —ता=दानशीलता । उच्च-विचार । उदराशय=जिसका उद्देश्य उच्च हो ।

उदारना—(क्रि० हि०) फाड़ना । गिराना ।

उदास—(वि० सं०) विरक्त । झगड़े से अलग । दुःखी । उदासी=त्यागी पुरुष । नानक पंथी साधुओं का एक भेद । खिन्नता । उदासीन=जिसका चित्त हट गया हो । निष्पक्ष । रूखा । उदासोनता=त्याग । उदासी ।

उदाहरण—(पु० सं०) दृष्टांत । मिसाल ।

उदित—(वि० सं०) जो उदय हुआ हो । प्रकट । उज्ज्वल । प्रसन्न । कथित ।

उदूलहुक्मी—(स्त्री० फ़ा०) आज्ञा न मानना ।

उद्गार—(पु० सं०) उबाल । किसी के विरुद्ध बहुत दिन से मन में रक्खी हुई बात को एकबारगी कहना ।

उद्घाटन—(पु० सं०) खोलना । प्रकट करना ।

उद्दंड—(वि० सं०) अक्खड़ ।

उद्देश्य—(वि० सं०) लक्ष्य ।

उद्देश—(पु० सं०) अभिलाषा । मतलब । कारण । अनुसंधान ।

उद्धत—(वि० सं०) उग्र । प्रगल्भ । —पन=उग्रता ।

उद्धरण—(पु० सं०) किसी पुस्तक वा लेख के किसी अंश को दूसरी पुस्तक वा लेख में ज्यों का त्यों रखना ।

उद्धार—(पु० सं०) मुक्ति । सुधार ।

उद्धत—(वि० सं०) उद्दंड ।

उद्भव—(पु० सं०) उत्पत्ति। बढ़ती। उद्भावना=कल्पना। उत्पत्ति।

उद्यत—(वि० सं०) तैयार। उतारू।

उद्यम—(पु० सं०) मेहनत। काम। उद्यमी=काम करनेवाला। उद्योगी। उद्योग=कोशिश। काम-धंधा। उद्योगी=उद्योग करनेवाला। मेहनती।

उद्यान—(पु० सं०) बगीचा।

उद्विग्न—(वि० सं०) घबराया हुआ। —ता=घबराहट।

उधड़ना—(क्रि० हि०) खुलना। बिखरना।

उधराना—(क्रि० हि०) उधम मचाना।

उधार—(पु० हि०) क़र्ज़।

उधेड़ना—(क्रि० हि०) उचाड़ना। सिलाई खोलना। बिखराना।

उधेड़-बुन—(पु० हि०) सोच-विचार। युक्ति बाँधना।

उन्नत—(वि० सं०) ऊँचा। बढ़ाहुआ। बड़ा। उन्नति=ऊँचाई। बढ़ती।

उन्नावी—(वि० अ०) कालापन लिये हुये लाल।

उन्स—(अ०) मुहब्बत। प्यार। लगन।

उपक्रम—(पु० सं०) प्रथमारंभ। —ण=आरम्भ। तैयारी। उपक्रमणिका = भूमिका। किसी पुस्तक के शुरू में दी हुई विषय-सूची।

उपग्रह—(पु० सं०) छोटा ग्रह।

उपचार—(पु० सं०) प्रयोग। द्रव्य। सेवा। —क=दवा करनेवाला।

उपज—(पु० हि०) उत्पत्ति। पैदावार। उपजाऊ=उर्वर।

उपटना—(क्रि० हि०) निशान पड़ना। उखड़ना।

उपत्यका—(स्त्री० सं०) तराई। घाटी।

उपदंश—(पु० सं०) गरमी। आतशक।

उपद्रव—(पु० सं०) उत्पात। हलचल। दंगा। गड़बड़।

उपद्रवी=उपद्रव मचानेवाला। फ़सादी।

उपनाम—(स्त्री० सं०) दूसरा नाम। तख़ल्लुस।

उपनिषद्—(स्त्री० सं०) ब्रह्म-विद्या सम्बन्धी पुस्तकें।

उपन्यास—(पु० सं०) बात की लपेट। कल्पित आख्या-यिका। कथा।

उपमंत्री—(पु० सं०) वह मंत्री जो प्रधान मंत्री के नीचे हो।

उपमा—(स्त्री० सं०) तुलना। पट-तर। —न=वह वस्तु जिससे उपमा दी जाय। उपमित= जिसकी उपमा दी गई हो। उपमेय=उपमा के योग्य।

उपयुक्त—(वि० सं०) योग्य। मुनासिब। —ता=योग्यता।

उपयोग—(पु० सं०) काम में लाना। उपयोगिता=लाभ-कारिता। उपयोगी=काम देनेवाला। मुवाफ़िक़।

उपरफट्टू—(वि० हि०) ऊपरी। इधर उधर का।

उपर्युक्त—(वि० सं०) ऊपर कहा हुआ।

उपलब्ध—(वि० सं०) पाया हुआ। जाना हुआ। उप-लब्धि=प्राप्ति।

उपला—(पु० हि०) ईंधन के लिये गोबर के सुखाये हुये टुकड़े। गोहरा। (स्त्री० उपली)। गोहरी। कंडी।

उपल्ला—(पु० हि०) ऊपर का पर्त।

उपवन—(पु० सं०) बाग़। छोटे-छोटे जंगल।

उपवास—(पु० सं०) फ़ाक़ा।

उपसंहार—(पु० सं०) किसी पुस्तक का अन्तिम प्रकरण। सारांश। परिशिष्ट।

उपस्थित—(वि० सं०) समीप बैठा हुआ। हाज़िर। उप-स्थिति=मौजूदगी।

उपहार—(पु० सं०) भेंट।

उपहास—(पु० सं०) हँसी। निन्दा। उपहासास्पद=उप-हास के योग्य। निन्दनीय।

उपालंभ—(पु० सं०) शिकायत। निन्दा।

उपेक्षा—(स्त्री० सं०) उदासीनता। तिरस्कार। उपेक्षक= उपेक्षा करनेवाला। घृणा करनेवाला। उपेक्षणीय=घृणा योग्य। त्यागने योग्य। उपेक्षित=जिसकी उपेक्षा की गई हो।

उपोद्घात—(पु० सं०) प्रस्तावना।

उफ़—(अव्य० अ०) आह। अफ़सोस।

उफ़ुक़—(पु० अ०) क्षितिज।

उफ़तादा—(वि० फ़ा०) परती पड़ा हुआ (खेत)।

उफ़तादगी—(फ़ा०) नम्रता। शील। आजिज़ी।

उफनना—(क्रि० अ०) उबलना। उफान=उबाल।

उबकना—(क्रि० हि०) क़ै करना। उबकाई=क़ै।

उबटन—(पु० हि०) बटना। शरीर पर मलने के लिये पिसा हुआ सरसों। उबटना=उबटन मलना।

उबरना—(क्रि० हि०) उद्धार पाना। शेष रहना। उबरा= बचा हुआ। जिसका उद्धार हुआ हो।

उबलना—(क्रि० हि०) ऊपर की ओर जाना। उमड़ना।

उबहन—(स्त्री० हि०) पानी निकालने की डोरी।

उबहना—हथियार खींचना। पानी फेंकना।

उबाल—(पु० हि०) उफान। जोश। —ना=खौलाना। जोश देना।

उभड़ना—(क्रि० हि०) किसी सतह का आसपास की सतह से ऊँचा होना। खुलना। बढ़ना। वृद्धि को प्राप्त होना। उभाड़ना=उकसाना। उत्तेजित करना।

उमंग—(स्त्री० हि०) चित्त का उभाड़। अधिकता। जोश।

उमदा—(वि० अ०) उत्तम।

उमर—(स्त्री० अ०) अवस्था। जीवन का समय। उम्र= उमर।

उमूम—(अ०) साधारण।

उमरा—(पु० अ०) अमीर का बहुवचन। सरदार। —व= सरदार।

उमस—(स्त्री० हि०) गरमी।

उम्मेदवार—(पु० फ़ा०) आशा करने वाला। नौकरी पाने की आशा करने वाला। काम सीखने के लिये और नौकरी पाने की आशा से किसी आफ़िस में बिना वेतन काम करने वाला मनुष्य। प्रार्थी। उम्मेदवारी=आशा। उम्मेद=आशा। भरोसा। उम्मीद=आशा।

उम्दा—(वि० अ०) अच्छा। बढ़िया।

उम्मत—(स्त्री० अ०) जमायत। समाज। फिरक़ा। संतान। पैरोकार।

उरद—(पु० हि०) एक प्रकार का पौधा जिसके बीज की दाल होती है। (स्त्री० उरदी) छोटा उरद।

उरूज—(पु० अ०) बढ़ती।

उर्दू—(स्त्री० पु०) वह हिन्दी जिसमें अरबी फ़ारसी भाषा के शब्द अधिक मिले हों और जो फ़ारसी लिपि में लिखी जाय। (फा०) बादशाही लश्कर के बाज़ार की बोली।

उर्दू बाज़ार—(हि०) लशकर का बाज़ार।

उर्फ़—(पु० अ०) पुकारने का दूसरा नाम।

उर्वरा—(पु० सं०) उपजाऊ भूमि।

उर्स—(पु० अ०) मुसलमानी मतानुसार किसी फ़क़ीर के मरने के दिन का कृत्य। मुसलमान साधुओं की निर्वाण-तिथि।

उलचना—(क्रि०हि०) उलीचना। पानी फेंकना।

उलझन—(पु० हि०) अटकाव। गाँठ। पेंच। चिंता। उल-

झना=फँसना। उलझाव=अटकाव। झगड़ा। चक्कर। उलझेड़ा=अटकाव। बखेड़ा। खींचातानी।

उलटना—(क्रि० हि०) ऊपर नीचे होना। औंधा होना।

उलटना-पलटना—(क्रि० हि०) नीचे ऊपर करना। अंडवंड करना। और का और करना। उलट-पलट=हेर-फेर। गड़बड़ी। उलट-फेर=परिवर्त्तन। अदल-बदल। उलटा=औंधा। उलट-पुलट, उलटा-पलटा=इधर का उधर। बे सिर-पैर का।

उलटी—(स्त्री० हि०) वमन। उलटे=बे ठिकाने।

उलथा—(पु० हि०) उलटा। करवट बदलना।

उल्फ़त—(स्त्री० अ०) प्रेम। प्रीति।

उलरना—(क्रि० हि०) कूदना। नीचे ऊपर होना।

उलहना—(क्रि० हि०) उभड़ना। हुलसना।

उलार—(वि० हि०) जो पीछे की ओर झुका हो। —ना=नीचे-ऊपर फेंकना।

उलारा—(पु० हि०) वह पद जो चौताल के अन्त में गाया जाता है।

उलाहना—(पु० हि०) किसी की भूल को उसे दुःख-पूर्वक जताना। शिकायत।

उल्का—(स्त्री० सं०) तारा टूटना या लूक टूटना। —पात=तारा टूटना। उत्पात।

उल्लंघन—(पु० सं०) लाँघना। न मानना।

उल्लेख—(पु० सं०) लिखना। वर्णन। —नीय=लिखने योग्य।

उश्शाक़—(पु० अ०) आशिक़ का बहुबचन।

उशबा—(पु० अ०) एक पेड़ जिसकी जड़ रक्त-शोधक होती है।

उषा—(स्त्री० सं०) प्रभात। अरुणोदय की लालिमा। —काल=प्रभात।

उष्ण—(वि० सं०) गरम। फुरतीला। —कटिबंध=पृथ्वी का वह भाग जो कर्क और मकर रेखाओं के बीच में पड़ता है। —ता=गरमी। उष्मा=गरमी। धूप।

उसनना—(क्रि० हि०) चावल उबालना। पकाना।

उसूल—(पु० अ०) सिद्धांत।

उस्तरा—(पु० फ़ा०) उस्तुरा। छुरा।

उस्ताद—(पु० फ़ा०) गुरु। मास्टर। उस्तादी=मास्टरी। चतुराई। विज्ञता। चालाकी। उस्तानी =गुरुआनी। चालाक स्त्री।

उहदा—(पु० अ०) पद। रुतबा।

उहार—(पु० फ़ा०) परदा।

ऊ

ऊ—हिन्दी-वर्णमाला का छठाँ स्वर।

ऊँघ—(स्त्री० हि०) झपकी। —ना=झपकी लेना।

ऊँचा—(वि० हि०) उठा हुआ। श्रेष्ठ। ऊँचे=ऊपर की ओर।

ऊँट-कटारा—(पु० हि०) एक कँटीली झाड़ी जिसको ऊँट बड़े चाव से खाते हैं।

ऊँहूँ—(अव्य० देश०) नहीं।

ऊआबाई—(वि० हि०) अंडबंड।

ऊकना—(क्रि० हि०) चूकना। छोड़ देना।

ऊख—(पु० हि०) गन्ना।

ऊखल—(पु० हि०) काठ वा पत्थर का बना हुआ एक गहरा बर्तन जिसमें धानादि रखकर मूसल से कूटा जाता है।

ऊजड़—(वि० हि०) उजड़ा हुआ। बिना बस्ती का।

ऊटपटाँग—(वि० हि०) अटपट। व्यर्थ।

ऊत—(वि० अ०) गँवार।

ऊद—(स्त्री अ०) अगर की लकड़ी जो जलाने पर सुगन्ध देती है। ऊदी=ऊद का रंग।

ऊदबिलाव—(पु० हि०) नेवले के आकार का एक जंतु।

ऊदा—(त्रि०अ०) बैंगनी रंग का।

ऊधम—(पु० हि०) उपद्रव। दंगा-फ़साद। ऊधमी=ऊधम करनेवाला। फ़सादी।

ऊन—(पु० हि०) भेड़ बकरी आदि का रोयाँ।

ऊपर—(क्रि० स्त्री० हि०) ऊँचे स्थान में। आधार पर। उच्च श्रेणी में पहले। अधिक।

ऊब—(स्त्री० हि०) घबराहट। —ना=घबराना।

ऊमी—(स्त्री० हि०) जौ या गेहूँ की हरी बाली।

ऊलजलूल—(वि० हि०) बे सिर पैर का। अनाड़ी। बे अदब।

ऊहापोह=(पु० सं०) सोच-विचार।

ऋ

ऋ—हिन्दी-वर्णमाला का सातवाँ स्वर। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है।

ऋग्वेद—(पु० सं०) चार वेदों में से एक।

ऋण—(पु० सं०) कर्ज़। ऋणी=कर्ज़दार। उपकार मानने वाला। —ग्रस्त=कर्ज़दार। —शोधन=क़र्ज़ चुकाना।

ऋतु—(स्त्री० सं०) मौसम। —काल=रजोदर्शन के उपरान्त के १६ दिन जिनमें स्त्रियाँ गर्भ-धारण के योग्य होती हैं। —चर्या=ऋतुओं के अनुसार आहार-विहार की व्यवस्था। —दान=गर्भाधान। —मती=रजस्वला। जिसका ऋतुकाल हो।

ऋतुराज—(पु०सं०) बसंत ऋतु।

ऋत्विज—(पु० सं०) यज्ञ करने वाला।

ऋद्धि—(स्त्री०सं०) धन। लक्ष्मी।

ऋद्धि-सिद्धि—(स्त्री० सं०) समृद्धि और सफलता।

ऋषि—(पु० सं०) वेद मंत्रों का प्रकाश करनेवाला।

ए

ए—हिन्दी-वर्णमाला का आठवाँ स्वर। इसका उच्चारण कंठ और तालु से होता है।

एंजिन—(पु० अं०) इंजन।

एँड़ावेंड़ा—(वि० हि०) अंड-बंड। सीधे-तिरछे।

एँड़ी—(पु० हि०) पैर का पिछला हिस्सा।

एक—(वि० सं०) इकाइयों में सब से छोटी और पहली संख्या। अकेला। कोई। एकही प्रकार का।

एकछत्र—(वि० सं०) निष्कंटक।

एक्ज़ीक्यूटिव—(वि० अं०) प्रबन्ध विषयक। प्रबन्ध करने वाला। —आफ़िसर=नियमों का पालन करनेवाला राज-कर्मचारी। —कमेटी=प्रबंध-कारिणी समिति।

एकटकी—(स्त्री० हि०) टकटकी।

एकर—(पु० अं०) पृथ्वी की एक माप जो ३२ विस्वे के बराबर होती है। एकड़।

एकतरफ़ा—(वि० फ़ा०) एक ओर का। जिसमें पक्षपात किया गया हो। एक रुखा।

एकता—(स्त्री० सं०) मेल।

एकतारा—(पु० हि०) एक तार का सितार वा बाजा।

एकदेशीय—(वि० सं०) एक देश का।

एकफ़र्दा—(वि० फ़ा०) एक फ़सला।

एकबारगी—(वि० फ़ा०) बिल्कुल। एक ही दफ़े में। अचानक।

एक़बाल—(पु० अ०) प्रताप। भाग्य। स्वीकार।

एकरंग—(वि० हि०) समान।

एकरस—(वि० हि०) एक ढंग का। समान।

एक़रार—(पु० अ०) स्वीकार। वादा।

एकलौता—(वि० हि०) अपने माँ-बाप का एक ही लड़का।

एकसत्तावाद—(पु० सं०) एकाधिपत्य का सिद्धान्त।

एकसाँ—(वि० फ़ा०) बराबर। हमवार।
एकहरा—(वि० हि०) एक परत का।
एकांत—(वि० सं०) अत्यन्त। अलग। —ता=अकेलापन। —वास=अकेले में रहना। सब से न्यारे रहना। —वासी अकेले में रहने वाला। निर्जन स्थान में रहने वाला। —स्वरूप=असंग। एकांतिक =जो एक ही स्थल के लिये हो।
एका—(स्त्री० सं०) मेल। —ई इकाई।
एकाएक—(वि० हि०) अचानक। एकाएकी=अकस्मात्।
एकाकार—(पु० सं०) एकमय होना।
एकाकी—(वि० हि०) अकेला।
एकाग्र—(वि० सं०) चंचलता रहित। —चित्त=जिसका ध्यान बँधा हो। —ता= चित्त का स्थिर होना।
एकात्मता—(स्त्री० सं०) एकता। एकमय होना।
एकादशी—(स्त्री० सं०) ग्यारहवीं तिथि।
एकाधिपत्य—(पु० सं०) एक व्यक्ति के हाथ में पूर्ण अधिकार।
एकीकरण—(पु० सं०) मिला कर एक करना।
एकेडेमी—(स्त्री० अं०) शिक्षालय। वह सभा या समाज जो शिल्पकला या विज्ञान की उन्नति के लिये स्थापित हुआ हो।
एक्का—(वि० हि०) अकेला। ताश का पत्ता जिसमें एक ही बूटी होती है।
एक्सचेंज—(पु० अं०) बदला। वह स्थान जहाँ नगर के व्यापारी और महाजन परस्पर लेन-देन वा क्रय-विक्रय के लिये इकट्ठे होते हैं।
एक्सपर्ट—(पु० अं०) विशेषज्ञ।
एक्सपोर्ट—(अं०) निकला हुआ। बाहर भेजना। निर्यात।
एक्सप्लोसिव—(पु० अं०)

भभक उठनेवाला पदार्थ। गंधक, बारूद आदि।

एक्साइज—(पु० अं०) महसूल। चुंगी।

एग्जामिनेशन—(पु० अं०) परीक्षा। इम्तिहान।

एग्जिबिट—(पु० अं०) प्रदर्शनी आदि में दिखाई जाने वाली वस्तु। वह वस्तु जो अदालत में प्रमाण-स्वरूप दिखाई जाय।

एग्ज़िबिशन—(पु० अं०) प्रदर्शनी। नुमाइश।

एगानगी—(स्त्री० फ़ा०) एका। मित्रता।

एजुकेशन—(पु० अं०) शिक्षा। तालीम।

एजुकेशनल—(वि० अं०) शिक्षा सम्बन्धी।

एजेंट—(पु० अं०) मुख्तार। वह आदमी जो किसी कोठी, कारखाने या व्यापारी की ओर से माल बेचने या ख़रीदने के लिये नियुक्त हो। वह अफ़सर जो अँगरेज़ सरकार की ओर से प्रतिनिधि के रूप से किसी देशी राज्य में रहता हो।

एजेंट-गवर्नर-जनरल—(पु० अं०) वह राजपुरुष या अफ़सर जो बड़े लाट के प्रतिनिधि रूप से कई देशी रियासतों की राजनीतिक दृष्टिसे देखभाल करता हो।

एजेंडा—(पु० अं०) किसी सभा का कार्य-क्रम।

एजेंसी—(स्त्री० अं०) आढ़त। वह स्थान जहाँ एजेंट वा गुमाश्ते किसी कम्पनी वा कारखाने के लिये माल खरीदते हों। वह स्थान जहाँ सरकार या बड़े लाट का प्रतिनिधि रहता हो या उसका कार्य्यालय हो। वह प्रांत जो राजनीतिक दृष्टि से एजेंट के अधिकार में हो।

एडीकांग—(पु० अं०) सेनापति का सहायक कर्मचारी।

एड्रेस—(पु० अं०) पता। चिट्ठी पहुँचने का ठिकाना। अभिनन्दन पत्र।

एतक़ाद—(पु० अ०) विश्वास।
एतदाद—(अ०) गिनना। शुमार करना।
एतराज़—(अ०) आपत्ति।
एतमाद—(अ०) किसी पर भरोसा करना। विश्वास करना।
एतदाल—(पु० अ०) बराबरी।
एतबार—(पु० अ०) विश्वास।
एन्डोर्स—(पु० अं०) हुंडी पर दस्तख़त करना। सकारना।
एनामेल—(पु० अं०) एक प्रकार का लेप जो धातुओं आदि की वस्तुओं पर लगाया जाता है। यह कई रंगों का होता है और सूखने पर बड़ा मज़-बूत और चमकदार होता है।
एतराज़—(पु० अ०) आपत्ति।
एप्रूवर—(पु० अं०) इक़बाली गवाह। सरकारी गवाह।
एफ़िडेविट—(पु० अं०) शपथ। हलफ़। हलफ़नामा।
एमिग्रेशन—(पु० अं०) एक देश से दूसरे देश या राज्य में बसने जाना।
एम्बुलेंस—(पु० अं०) मैदानी अस्पताल। एक प्रकार की गाड़ी जिसमें घायलों या बीमारों को लेटाकर अस्पताल पहुँचाते हैं।
एम्बुलेंस कार—(पु० अं०) अस्पताल में घायलों या बीमारों को ले जाने वाली मोटर।
एरोप्लेन—(पु० अं०) वायुयान। हवाई जहाज़।
एलकोहल—(पु० अं०) एक प्रसिद्ध मादक तरल पदार्थ। फूल-शराब।
एलची—(पु० तु०) राजदूत।
एलार्म—(पु० अं०) विपद् या ख़तरे का सूचक शब्द या संकेत। —वेल=ख़तरे का घंटा। —चेन=खतरे की ज़ंजीर।
एलेक्टर—(पु० अं०) मताधि-कार-प्राप्त मनुष्य। निर्वाचक।
एलेक्टरेट—(पु० अं०) उन लोगों का समूह जिन्हें वोट देने का अधिकार हो।

एलेक्टेड—(वि० अं०) चुना हुआ। निर्वाचित।

एलेक्शन—(पु० अं०) निर्वाचन। चुनाव।

एल्डरमैन—(पु० अं०) म्युनिसिपल कारपोरेशन का सदस्य।

एवं—(वि० सं०) ऐसाही।

एवज़—(पु० अ०) बदला। परिवर्तन। एवज़ी=स्थानापन्न आदमी।

एवेन्यू—(पु०अं०) कुंज। रास्ता।

एशिया—(पु०) एक महाद्वीप, जिसमें भारत, फ़ारस, चीन, ब्रह्म आदि अनेक देश सम्मिलित हैं। —ई=एशिया का। —ई रूम=एशिया का एक देश। —ई रूस=एशिया का एक देश।

एसिड—(पु० अं०) तेज़ाब।

एसेंब्ली—(स्त्री० अं०) सभा। परिषद्। मजलिस। समूह। जमाव।

एसेंस—(पु० अं०) पुष्प-सार। अतर। अरक़। सुगंधि।

एस्परांटो—(स्त्री० अं०) यूरोप में प्रचलित एक नवीन कल्पित भाषा।

एस्टिमेट—(पु० अं०) अंदाज़। अनुमान।

एहतमाम—(पु० अ०) प्रबन्ध। जाँच।

एहतियात—(स्त्री० अ०) सावधानी। बचाव। परहेज़।

एहसान—(पु० अ०) निहोरा। —मंद=निहोरा मानने वाला। कृतज्ञ।

ऐ

ऐ—हिन्दी-वर्णमाला का नवाँ स्वर। इसका उच्चारण-स्थान कंठ और तालु है।

ऐं—(अव्य० हि०) एक अव्यय जिससे आश्चर्य्य सूचित होता है। जैसे क्या कहा ? फिर तो कहो !

ऐंचना—(क्रि० हि०) खींचना। अपने ज़िम्मे लेना।

ऐंचाताना—(वि० हि०) जिसकी पुतली ताकने में दूसरी ओर को खिचती है। ऐंचातानी = खींचा-खींची।

ऐंठ—(पु०हि०) अहंकार की चेष्टा। घमंड। विरोध। —न = घुमाव। पेंच। ऐंठा = रस्सी बटने का एक यंत्र। ऐंठू = अकड़बाज। टर्रा। ऐंड = गर्व। ऐड़दार = ठसकवाला। शानदार। ऐंड़ा = टेढ़ा।

ऐक्ट—(पु० अं०) क़ानून। नाट्यकला। ऐक्टर = नाटक का कोई पात्र।

ऐक्टिंग—(स्त्री० अं०) रूपाभिनय। चरित्राभिनय।

ऐक्ट्रेस—(स्त्री० अं०) अभिनेत्री। रंगमंच पर अभिनय करनेवाली स्त्री।

ऐक्य—(पु० सं०) मेल।

ऐज़न—(अव्य० अ०) तथा।

ऐटेस्टिंग-आफ़िसर—वोट लिखे जाने के समय साक्षी स्वरूप उपस्थित रहनेवाला अफ़सर।

ऐडवोकेट—(पु० अं०) अदालत में किसी का पक्ष लेकर बोलने वाला। —जनरल = सरकारी वकील जो हाईकोर्टों में सरकार का पक्ष लेकर बोलता है।

ऐडमिनिस्ट्रेटर—(पु० अं०) वह जिसके अधीन किसी राज्य या बड़ी ज़मींदारी का प्रबन्ध हो।

ऐडमिनिस्ट्रेशन—(बु० अं०) प्रबन्ध। व्यवस्था। शासन। राज्य।

ऐडमिरल—(पु० अ०) जल-सेनापति ।

ऐडवाइज़र—(पु० अं०) सलाह देनेवाला ।

ऐडवाइज़री—(स्त्री अं०) सलाह देनेवाली ।

ऐडिश्नल—(वि० अं०) अतिरिक्त ।

ऐमेचर—(पु० अं०) शौकीन ।

ऐतिहासिक—(वि० सं०) इतिहास सम्बन्धी । जो इतिहास जानता हो ।

ऐन—(पु०) ठीक । बिल्कुल ।

ऐनक—(स्त्री० अ०) चश्मा ।

ऐब—(पु० अ०) दोष । कलंक । ऐबी=खोटा । दुष्ट । विशेषतः काना ।—जोई=दोष निकालना ।

ऐयाम—(पु० अ०) दिन । वक्त़ । मौसम ।

ऐयार—(पु० अ) चालाक । धोखेबाज़ । ऐयारी=चालाकी । धोखेबाज़ी ।

ऐयाश—(वि० अ०) विषयी । ऐयाशी=भोग-विलास ।

ऐरा-ग़ैरा—(वि० अ०) बेगाना । इधर-उधर का ।

ऐराब—(पु० अ०) शतरंज में बादशाह की किस्त बचाने के लिये किसी मोहरे को बीच में डाल देना ।

ऐरिस्टोक्रैसी—(स्त्री० अं०) एक प्रकार की सरकार । सरदार-तंत्र । कुलीन समाज ।

ऐश—(पु० अ०) आराम । भोग-विलास ।

ऐश्वर्य्य—(पु० सं०) धन-सम्पत्ति। अधिकार । —वान=वैभव-शाली ।

ऐसा—(वि० हि०) इस प्रकार का । ऐसे=इस ढंग से ।

ओ—हिन्दी-वर्णमाला का दसवाँ स्वर। इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ और कंठ है।

ओंकार—(पु० सं०) "ओं" शब्द।

ओंठ—(पु० हि०) लब, होंठ।

ओखली—(स्त्री० हि०) काँड़ी।

ओगरना—(क्रि० हि०)निचुड़ना। ओगारना = कूआँ साफ़ करना।

ओछा—(वि० हि०) बुरा। हलका। छोटा। —पन= नीचता। क्षुद्रता। —ई= छोटापन।

ओज—(पु० सं०) बल। उजाला। कविता का एक सर्वोत्तम गुण जिससे सुनने वाले के चित्त में आवेश उत्पन्न हो। —स्विता=तेज। प्रभाव। —स्वी=तेजवान। प्रतापी।

ओझा—(पु० हि०) ब्राह्मणों की एक जाति। भूतप्रेत झाड़ने-वाला। —ई=झाड़-फूँक। —इन=ओझा की स्त्री।

ओट—(स्त्री० हि०) आड़। शरण। एक प्रकार का वृक्ष।

ओटना—(क्रि० हि०) कपास को चरखी में दबाकर रुई और बिनौलों को अलग करना। बार बार कहना। ओटनी= कपास ओटने की चरखी। बेलनी। ओटा=कपास ओटनेवाला आदमी। परदे की दीवार। जाँत के पास पिसनहरियों के बैठने का चबूतरा। सोनारोंका एक औज़ार।

ओठँगना—(क्रि० हि०) सहारा लेना। टेक लगाना।

ओढ़ना—(क्रि० हि०) कपड़े या किसी वस्तु से देह ढकना। अपने सिर लेना। ओढ़नी= उपरेनी।

ओढ़र—(पु० हि०) बहाना।

ओत—(स्त्री० हि०) कमी। किफ़ायत।
ओतप्रोत—(वि० सं०) गुथा हुआ। भरा हुआ।
ओद—(पु० हि०) नमी। सील।
ओदरना—(क्रि० हि०) फटना। ढहना। ओदारना=फाड़ना। ढाना।
ओनाना—(क्रि० हि०) कान देना। ध्यान से सुनना।
ओफ़—(अव्य० अनु०) पीड़ा। ओह।
ओवरी—(स्त्री० हि०) छोटा घर। स्त्री का घर जिसमें पति के सिवा दूसरा पुरुष नहीं जाता।
ओर—(स्त्री० हि०) तरफ़। दिशा।
ओरिजिनल-साइड—(पु० अं०) प्रेसिडेंसी हाईकोर्ट का एक विभाग।
ओरी—(स्त्री० हि०) ओलती। ओरौती=ओरी।
ओलंदेज़—(पु० अं० हालैण्ड) हालैंड देश का निवासी।
ओला—(पु० हि०) बिनौली। मिस्री का बना हुआ लड्डू।
ओलिगार्की—(स्त्री० अं०) कुछ लोगों का राज्य या शासन।
ओवर—(पु० अं०) क्रीकेट के खेल में पाँच गेंद दिये जाने भर का समय।
ओवर कोट—(पु० अं०) बहुत लम्बा कोट जो जाड़े में सब कपड़ों के ऊपर पहना जाता है।
ओवरसियर—(पु० अं०) इंजिनियरी के महकमे का एक कार्य्यकर्त्ता।
ओषधि (ओषधी)—(स्त्री०सं०) जड़ीबूटी। दवा।
ओष्ठ—(पु० सं०) ओंठ।
ओस—(स्त्री० हि०) शबनम। जाड़े में प्रातःकाल घासों पर पड़े हुये पानी की बूँदें।
ओसर—(स्त्री० हि०) बिना ब्याई भैंस।
ओसरा—(पु० हि०) बारी। दूध दुहने का समय। ओसरी=पारी।
ओसाई—(स्त्री० हि०) ओसाने

के काम की मज़दूरी। ओसाना=दाँये हुये गल्ले को हवा में उड़ाना जिससे दाना और भूसा अलग हो जाय।

ओसारा—(पु० हि०) दालान। सायबान।

ओह—(अव्य० हि०) आश्चर्य्य-सूचक शब्द। दुःख-सूचक शब्द। बेपरवाही का सूचक शब्द।

ओहदा—(पु० अ०) पद। ओहदेदार=पदाधिकारी। हाकिम।

ओहार—(पु० हि०) परदा।

ओहो—(अव्य० सं० अहो) आश्चर्य्य-सूचक शब्द। आनन्द-सूचक शब्द।

औ

औ—हिन्दी-वर्णमाला का ग्यारहवाँ स्वर। इसके उच्चारण का स्थान कंठ और ओष्ठ है।

औंघाई—(स्त्री० हि०) हलकी नींद।

औंड़—(पु० हि०) गड्ढा खोदने वाला।

औंधना—(क्रि० हि०) उलट जाना। औंधा=उलटा। औंधाना=उलट देना।

औंस—(पु० अं०) आउंस। एक अंग्रेज़ी तौल।

औक़ात—(पु० बहु०) समय। हैसियत।

औघड़—(पु० हि०) अघोरी। मनमौजी।

औचक—(क्रि० वि० हि०) अचानक। औचट=अचानक।

औज—(अ०) ऊँचाई।

औज़ार—(पु० अ०) हथियार।

औटना—(क्रि० हि०) दूध वा किसी पतली चीज़ को आग पर रखकर धीरे-धीरे गाढ़ा करना। खौलाना।

औदार्य—(पु० सं०) उदारता।

औद्योगिक—(वि० सं०) उद्योग सम्बन्धी। धंधे-सम्बन्धी।
औपनिवेशिक=(पु० सं०) उपनिवेश सम्बंधी।
औपन्यासिक—(वि० सं०) उपन्यास में वर्णन करने योग्य। विलक्षण।
और—(अव्य० हि०) संयोजक अव्यय। दूसरा। अधिक।
औरत—(स्त्री० अ०) स्त्री। पत्नी।
औरस—(पु० सं०) अपनी ख़ास धर्मपत्नी से उत्पन्न पुत्र।
औरेब—(पु० हि०) तिरछी चाल। कपड़े की तिरछी काट। उलझन। चाल की बात।
औलाद—(स्त्री० अ०) संतान। नस्ल।
औलिया—(पु० अ०) पहुँचे हुये फ़क़ीर।
औषध—(स्त्री० सं०) दवा।
औसत—(पु० अ०) बराबर का पड़ता। साधारण।
औसाफ़—(अ०) वस्फ़ का बहुवचन। सद्गुण।

क

क—हिन्दी-वर्णमाला का पहला व्यंजन। इसका उच्चारण कंठ से होता है।
कंकड़—(पु० हि०) एक खनिज पदार्थ जिसमें चूना और चिकनी मिट्टी का अंश मिला होता है। पत्थर का छोटा टुकड़ा। कंकड़ी=छोटा कंकड़। कण। कंकड़ीला=कंकड़ मिला हुआ।
कंकण—(पु० सं०) कड़ा। कंगन।
कंकरीट—(स्त्री० अं० कांक्रीट) छर्रा।
कंकाल—(पु० सं०) ठठरी।
कँगनी—(स्त्री० हि०) छोटा कँगना। दनदानेदार चक्कर। एक अन्न का नाम।
कँगला—(वि० हि०) कंगाल। दरिद्र। भुक्खड़।

कंगारू—(पु० अं०) एक जन्तु जो आस्ट्रेलिया आदि टापुओं में होता है।

कंगूरा—(पु० फ़ा०) चोटी।

कंघा—(पु० हि०) लकड़ी सींग या धातु की बनी हुई चीज़ जिसमें लम्बे लम्बे पतले दाँत होते हैं। सिर के बाल इससे साफ़ किये जाते हैं। कंघी=छोटा कंघा। जुलाहों का एक औज़ार।

कंचन—(पु० सं०) सोना। धन। कंचनी=वेश्या।

कंचुकी—(स्त्री० सं०) चोली।

कंजई—(वि० हि०) धूयें के रंग का। ख़ाकी। ख़ाकी रंग।

कंजड़—(पु० हि०) एक अनार्य्य जाति।

कंजा—(पु० हि०) एक कँटीली झाड़ी। जिसकी आँख कंजे के रंग की सी हो।

कंजूस—(वि० हि०) कृपण। मक्खीचूस।

कंटक—(पु० सं०) काँटा। बाधा। बाधक।

कँटबाँस—(पु० हि०) एक प्रकार का बाँस जिसमें बहुत से काँटे होते हैं।

कँटिया—(स्त्री० हि०) काँटी। मछली मारने की पतली नोकदार अँकुसी। अँकुसियों का गुच्छा जिससे कुएँ में गिरी हुई चीज़ों को निकालते हैं। एक गहना जो सिर पर पहना जाता है।

कंटूनमेण्ट—(स्त्री० अं०) जिस जगह फ़ौज रहती है।

कंटोप—(पु० हि०) एक प्रकार की टोपी जिसमें सिर और कान ढके रहते हैं।

कंट्रैक्ट—(पु० अं०) ठेका। कंट्रैक्टर=ठेकेदार।

कंट्रोल—(पु० अं०) नियंत्रण। क़ाबू।

कंठ—(पु० सं०) गला।—गत=गले में प्राप्त।—माला=गले का एक रोग। कंठा=हँसली। गले का एक गहना। कंठाग्र=ज़बानी।

कंठी=छोटी छोटी गुरियों का कंठा। —स्थ=याद।

कंडा—(पु० हि०) सूखा गोबर। कंडी=छोटा कंडा। सूखा मल।

कंडील—(स्त्री० अ०) मिट्टी अबरक वा काग़ज़ की बनी हुई लालटेन जिसका मुँह ऊपर होता है। इसमें दीपक जलाकर लटकाते हैं। कंदील=कंडील।

कंडोलिया—(स्त्री० अ०) वह ऊँचा धौरहरा जिसके ऊपर रोशनी की जाती है। लाइट हाउस।

कंद—(पु० सं०) जड़।

कंधार—(पु० हि०)! अफ़गानिस्तान में एक नगर। कंधारी=जो कंधार में पैदा हुआ हो।

कम्पनी—(स्त्री० अं०) व्यापारियों का वह समूह जो अपने संयुक्त धन से नियमानुसार व्यापार करता हो। इंलैण्ड के व्यापारियों का वह समूह जो सन् १६०० ई० में बना था। सेना का एक भाग जिसमें १८० सैनिक होते हैं। मंडली।

कम्पास—(स्त्री० अं०) एक प्रकार का यंत्र जिससे दिशायें मालूम होती हैं। क़ुतुबनुमा।

कम्पोज़—(पु० अं०) टाइप जोड़ना। कम्पोजिंग=कम्पोज़ करने का काम। कम्पोज़ कराई। कम्पोज़िंग स्टिक=कम्पोज़िटर का एक औज़ार जिस पर अक्षर बैठाये जाते हैं। कम्पोज़िटर=कम्पोज़ करनेवाला। कम्पोज़िटरी=कम्पोज़िटर का काम।

कम्पौंडर—(पु० अं०) दवा बनानेवाला। कम्पौंडरी=कम्पौंडर का काम। कम्पौंडर का पद।

कम्बख़्त—(वि० फ़ा०) अभागा। नालायक़।

कम्बल—(पु० सं०) ऊन का बना हुआ मोटा कपड़ा।

कँवरी—(स्त्री० हि०) पचास पान की एक गड्डी।

कंसरवेटिव—(वि० अं०) पुरानी लकीर का फ़क़ीर। इंगलैण्ड देश के पार्लमेंट में वह राजनैतिक दल जो निर्धारित राज्य-प्रणाली में कोई परिवर्तन वा प्रजातंत्र सिद्धान्तों का प्रसार नहीं चाहता।

कंसर्ट—(पु० अं०) कई एक बाजों का एक साथ मिलाकर बजाना। वा कई एक गवैयों का मिलकर गाना-बजाना।

कई—(वि० हि०) अनेक।

ककड़ी—(स्त्री० हि०) ज़मीन पर फैलनेवाली एक बेल जिसमें लम्बे-लम्बे फल लगते हैं।

ककनी—(स्त्री हि०) दंदानेदार चक्कर। एक मिठाई।

कगर—(पु० हि०) किनारा। मेंड़। कगार=ऊँचा किनारा। नदी का करारा। ऊँचा टीला।

कचकच—(पु० हि०) बकवाद।

कचनार—(पु० हि०) एक छोटा पेड़।

कचर कचर—(पु० हि०) कच्चे फल के खाने का शब्द। बकवाद।

कचर कूट—(पु० हि०) खूब पीटना। मारकूट।

कचरना—(क्रि० हि०) पैर से कुचलना। खूब खाना।

कचरा—(पु० हि०) ककड़ी। सेमल का ढोंढ़। रद्दी चीज़। रूई का बिनौला जो धुनने पर अलग कर दिया जाता है। कचरी=ककड़ी की जाति की एक बेल जो खेतों में फैलती है। कचरी वा कच्चे पेंहटे के सुखाये हुये टुकड़े।

कचवाँसी—(स्त्री० हि०) खेत मापने का एक मान।

कचहरी—(स्त्री० हि०) जमावड़ा। दरबार। अदालत। दफ़्तर।

कचारना—(क्रि० अनु०) कपड़ों को पटककर धोना।

कचालू—(पुं० हि०) एक प्रकार की चाट। कमरख, अमरूत खीरे ककड़ी आदि के छोटे

छोटे टुकड़े जिनमें नमक मिर्च मिली रहती है।

कचूमर—(पु० हि०) कठूमर। गूदा।

कचौरी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की पूरी जिसमें उरद आदि की पीठी भरी जाती है।

कच्चा—(वि० हि०) जो पक्का न हो। कमज़ोर। जो क़ायदे के मुताबिक़ न हो। गीली मिट्टी का बना हुआ। जिसे अभ्यास न हो। दूर दूर पड़ा हुआ तागे का डोभ। —असामी=वह असामी जो किसी खेत को दो ही एक फ़सल जोतने के लिये ले। जो अपना वादा पूरा न करता हो। जो अपनी बात पर दृढ़ न रहे। —काग़ज़ =एक प्रकार का काग़ज़ जो घोटा हुआ नहीं होता। जिस दस्तावेज़ की रजिस्टरी न हुई हो। —काम=झूठा काम। —घड़ा=जो आवें में पकाया न गया हो। सेवर घड़ा।—चिट्ठा=पूरा और ठीक ठीक ब्यौरा। —जोड़= कच्चा टाँका। —तागा= कता हुआ तागा जो बटा न हुआ हो। —माल=वह रेशमी कपड़ा जिस पर कलफ़ न किया गया हो। झूठा गोटा-पट्टा। —शोरा=वह शोरा जो उबाली हुई नोनी मिट्टी के खारे पानी में जम जाता है। —हाथ=वह हाथ जो किसी काम में बैठा न हो। (स्त्री० कच्ची) कच्ची कली=मुखबँधी कली। कच्ची बही=वह बही जिसमें किसी दुकान या कारख़ाने का ऐसा हिसाब लिखा हो जो पूर्ण रूप से निश्चित न हो। कच्ची मिती=पक्की मिती के पहले आनेवाली मिती। कच्ची रसोई=केवल पानी में पकाया हुआ अन्न। कच्ची रोकड़=जिसमें प्रतिदिन के आय-व्यय का कच्चा हिसाब दर्ज रहता है। कच्ची सिलाई=दूर दूर पड़ा हुआ

टाँका। किताबों की वह सिलाई जिसमें सब फ़रमे एक साथ हाशिये पर से सी दिये जाते हैं। कच्चे बच्चे=बहुत से लड़के बाले।
कच्ची कुर्की—(स्त्री॰ हि॰) वह कुर्की जो प्रायः महाजन मुकदमें के फैसला होने के पहले कराते हैं।
कच्छप—(पु॰ सं॰) कछुआ। एक अवतार।
कछनी—(स्त्री॰ हि॰) घुटने के ऊपर चढ़ाकर पहनी हुई धोती।
कछार—(पु॰ हि॰) समुद्र वा नदी के किनारे की भूमि जो तर और नीची होती है।
कछुआ—(पु॰ हि॰) एक जल-जंतु जिसके ऊपर बड़ी कड़ी ढाल की तरह की खोपड़ी होती है।
कज—(पु॰ फ़ा॰) टेढ़ापन। दोष।
कजली—(स्त्री॰ हि॰) कालिख। एक प्रकार का गीत।
कज़ा—(स्त्री॰ अ॰) मौत।
कज़ाक़—(पु॰ तु॰) लुटेरा। कज़ाक़ी=लुटेरापन। छल कपट। क़ज़िया=झगड़ा। क़ज़्ज़ाक़=डाकू। चालाक। क़ज़्ज़ाक़ी=डाकूपन।
कटक—(पु॰ सं॰) सेना।
कटकटाना—(क्रि॰ हि॰) दाँत पीसना।
कटघरा—(पु॰ हि॰) काठ का घर। बड़ा भारी पिंजड़ा।
कटती—(स्त्री॰ हि॰) बिक्री। छँटना। समय का बीतना। एक संख्या का दूसरी संख्या के साथ ऐसा भाग खाना कि शेष न बचे। चलती गाड़ी में से माल चोरी होना।
कटनी—(स्त्री॰ हि॰) काटने का का औज़ार। कटपीस=नये कपड़ों का वह टुकड़ा जो थान बड़ा होने के कारण उसमें से काट लिया जाता है। कटाई=काटने का काम। फ़सल काटने की मज़दूरी।
कटरा—(स्त्री॰ हि॰) छोटा

चौकोर बाज़ार। भैंस का नर बच्चा।

कटहल—(पु० हि०) एक सदाबहार घना पेड़, जो भारत में प्राय: सभी स्थानों में जहाँ गरमी पड़ती है, होता है। जिसके फल बहुत बड़े-बड़े होते हैं। फल के अन्दर गुठली होती है। भीतर में रेशे की कथरियों में कोये होते हैं, जो पकने पर बहुत मीठे होते हैं। कच्चे की तरकारी बनती है।

कटाकटी—(स्त्री० हि०) मारकाट।

कटाक्ष—(पु० सं०) तिरछी नज़र।

कटार—(पु० हि०) एक बालिश्त का छोटा सा हथियार। कटारी=छोटा कटार।

कटि—(स्त्री० सं०) कमर। —बंध =कमरबन्द। गरमी सरदी के विचार से किये हुये पृथ्वी के पाँच भागों में से कोई एक। —बद्ध=कमर बाँधे हुये। तैयार। —सूत्र=सूत को करधनी।

कटीला—(वि० हि०) काट करने वाला। गहरा असर करने वाला। मोहित करनेवाला। काँटेदार। नुकीला।

कटोरदान—(पु० हि०) पीतल का एक ढक्कनदार बर्तन। कटोरा=धातु का प्याला। कटोरी=छोटा कटोरा।

कटौती—(स्त्री० हि०) किसी रक़म को देते हुये उसमें से कुछ बँधा हक़ धर्मार्थ निकाल लेना। कमीशन।

कट्टर—(वि० हि०) कटहा। अंधविश्वासी। हठी।

कट्टा—(वि० हि०) मोटा ताज़ा। बलवान।

कट्ठा—(पु० हि०) ज़मीन की एक नाप जो ५ हाथ ४ अंगुल की होती है।

कठिन—(वि० सं०) सख़्त। मुश्किल। संकट। —ता= सख़्ती। कठोरता। दृढ़ता। कठिनाई=सख़्ती। कठोर=

सख़्त। निर्दय। बेरहम। कठोरता=सख़्ती।

कठुला—(पु० हि०) गले की माला जो बच्चों को पहनाई जाती है। हार।

कठौत—(स्त्री० हि०) छोटा कठौता। कठौता=काठ का बना हुआ एक बड़ा बर्तन। कठौती=छोटा कठौता।

कड़क—(स्त्री० हि०) तड़प। —ना=गड़गड़ाना। चिटकने का शब्द होना। फटना। आवाज़ के साथ टूटना।

कड़खा—(पु० हि०) वीरों की तारीफ़ से भरे युद्ध के गीत। आल्हा। कड़खैत=भाट। कड़खा गानेवाला पुरुष।

कड़वी—(वि० हि०) कटु। तीखी।

कड़ा—(पु० हि०) हाथ या पाँव में पहनने का गहना। कठोर। सख़्त। रूखा। उग्र। कसा हुआ। तेज़। दुष्कर। तेज़ असर डालनेवाला। बुरा लगनेवाला। कर्कश। —का किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द। उपवास। बीन=चौड़े मुँह की बन्दूक। छोटी बन्दूक जिसका नाम झोंका भी है। —ई=सख़्ती।

कड़ाहा—(पु० हि०) लोहे का बहुत बड़ा गोल बर्तन। कड़ाही=छोटा कड़ाहा।

कड़ी—(स्त्री० हि०) ज़ंज़ीर वा सिकड़ी की लड़ी का एक छल्ला। कठोर।

कड़ुवा तेल—(पु० हि०) सरसों का तेल। कड़ुआहट=कड़ुआ-हट=कड़ुआपन।

कढ़ी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का सालन।

कण—(पु० सं०) ज़र्रा।

कतई—(वि० अ०) नितांत। बिलकुल।

कतराना—(स्त्री० हि०) किसी वस्तु या व्यक्ति को बचाकर किनारे से निकल जाना।

क़त—(अ०) बस। फ़क़त। समाप्त।

क़तरा—(पु० अ०) बूँद।

कतरी—(स्त्री० हि०) कोल्हू का पाट जिस पर बैठकर तेली बैल को हाँकता है।

क़तल—(पु० अ०) हत्या। क़तलाम=सर्वसाधारण का वध।

कतवार—(पु० हि०) कूड़ा करकट।

क़ता—(स्त्री० अ०) बनावट। ढंग। कपड़े की काट-छाँट।

क़तार—(स्त्री० अ०) पंक्ति। समूह।

कतारा—(पु० हि०) एक प्रकार की लाल रंग की ऊख जो बहुत लम्बी होती है।

कतिपय—(वि० सं०) कई एक। कुछ।

कतौनी—(स्त्री० हि०) कातने की क्रिया या भाव। कातने की मज़दूरी। निरर्थक और तुच्छ काम।

कत्थई—(वि० हि०) खैर के रंग का। कत्था=खैर के पेड़ की लकड़ियों को उबालकर निकाला हुआ रस।

कत्थक—(पु० हि०) नाचने गाने बजानेवाली एक जाति। कथक=कथा कहनेवाला। कथक्कड़=बहुत कथा कहने वाला। कथन=कहना। कथनीय=कहने योग्य। निंदनीय। कथा=बात। चर्चा। समाचार। वाद-विवाद। कथानक=कथा। छोटी कथा। कथा-प्रबन्ध=कथा की गठन या बन्दिश। कथा-प्रसंग=अनेक प्रकार की बातचीत। कथावार्त्ता-अनेक प्रकार की बात चीत। कथित=कहा हुआ। कथोपकथन=बातचीत। वाद-विवाद।

क़त्ल—(अ०) हत्या। मार डालना।

कत्लआम—(पु० अ०) सब लोगों की वह हत्या जो बिना किसी छोटे बड़े अपराधी या निरपराध का विचार किये की जाय।

कदंग—(पु० सं०) कदम का पेड़। —क=समूह।

क़द—(पु० अ०) ऊँचाई।

क़दम—(पु० अ०) पैर। चलने में एक पैर से दूसरे पैर तक का अन्तर। घोड़े की एक चाल।—चा=पैर रखने का स्थान। खुड्डी।

क़द्र—(स्त्री० अ०) मान। प्रतिष्ठा।—दान=क़द्र करने वाला।—दानी=गुण-ग्राहकता।

क़दामत—(स्त्री० अ०) प्राचीनता। सनातन। क़दीम=पुराना।

कदः—(पु० फ़ा०) घर, गाँव।

क़दीम—(पु० अ०) पुराना। प्राचीन।

क़दूरत—(पु० अ०) रंजिश। मैल।

कद्दू—(पु० फ़ा०) लौकी।

कनकटा—(वि० हि०) जिसका कान कटा हो। कनकटी=कान के पीछे का एक रोग।

कनकनाना—(अ० हि०) सूरन आदि वस्तुओं के स्पर्श से मुख हाथादि अंगों में एक प्रकार की चुनचुनाहट मालूम होना। चुनचुनाहट उत्पन्न करना। नागवार मालूम होना। चौकन्ना होना। रोमांचित होना।

कनकूत—(पु० हि०) बँटाई का एक ढंग जिसमें खेत में खड़ी फ़सल का अनुमान किया जाता है।

कनकौवा—(पु० हि०) गुड्डी।

कनखजूरा—(पु० हि०) गोजर।

कनटोप—(पु० हि०) कानों को ढकनेवाली टोपी। कनपटी=कान और आँख के बीच का स्थान। कनफटा=गोरखनाथ के अनुयायी योगी जो कानों को फड़वाकर उनमें बिल्लौर, मिट्टी, लकड़ी आदि की मुद्रायें पहनते हैं। कनफुँका=कान फूँकनेवाला गुरु। कनफुसका=कान में धीरे से बात कहनेवाला। चुग़लख़ोर। कनफुसकी=कानाफूसी। कनरसिया=कान का जो रसिया हो। संगीत-प्रिय।

क़नवास—(पु० अं०) एक मोटा कपड़ा जिससे नावों के पाल और जूते आदि बनते हैं।

क़नवासर, कनवैसर—(पु० अं०) वह जो 'वोट' 'आर्डर माँगता या संग्रह करता हो।

क़नवासिंग, कनवैसिंग—(स्त्री० अं०) वोट पाने के लिये उद्योग करना।

क़नवोकेशन—(स्त्री० अं०) यूनीवर्सिटी का वह सालाना जलसा जिसमें परीक्षा में उत्तीर्ण ग्रैजुएटों को डिपलोमा आदि दिये जाते हैं।

क़नस्तर—(पु० अं० कनिस्टर) टीन का चौखूँटा पीपा जिसमें घी तेल आदि रक्खा जाता है।

कनात—(स्त्री० तु०) मोटे कपड़े की वह दीवार ज़िससे किसी को घेरकर आड़ करते हैं।

क़नाअत—(अ०) सन्तोष। सब्र।

क़न्द—(स्त्री० अ०) सफ़ेद शक्कर।

क़निष्ठ—(वि० सं०) उमर में छोटा। कनिष्ठा=सब से छोटी। कनिष्ठिका=कानी उँगली।

कनी—(स्त्री० हि०) छोटा टुकड़ा। हीरे का बहुत छोटा टुकड़ा। चावल के छोटे-छोटे टुकड़े।

कनीज़—(फ़ा०) बाँदी। चेरी। लौंडी।

क़नीनिका—(स्त्री० सं०) आँख की पुतली का तारा। कन्या।

कनेर—(पु० हि०) एक फूल का नाम।

कनौजिया—(वि० हि०) कन्नौज-निवासी। जिसके पूर्वज कन्नौज के रहनेवाले रहे हों या कन्नौज से आये हों।

कनौती—(स्त्री० हि०) पशुओं के कान या उनके कानों की नोक। कानों के उठाने या उठाये रखने का ढंग।

कन्नौज—(पु० हि०) फ़रुख़ाबाद ज़िले का एक नगर।

कन्या—(स्त्री० सं०) लड़की। पुत्री। बारह राशियों में से छठीं राशि। —दान=विवाह

में वर को कन्या देने की रीति। —धन=स्त्री-धन। —रासी=जिसके जन्म के समय चन्द्रमा कन्या-राशि में हो। चौपट। निकम्मा।

कन्याकुमारी—(स्त्री०) रास-कुमारी।

कन्सरवेंसी—(स्त्री० अं०) सर-कारी निरीक्षण या देख-रेख।

कन्सरवेटर—(पु० अं०) निरी-क्षक। देख-रेख करनेवाला।

कन्सरवेटिव—(पु० अं०) वह जो प्रजा-सत्तात्मक शासन-प्रणाली का विरोधी हो। टोरी।

कपट—(पु० सं०) छल। छिपाव। —ना=धीरे से निकाल लेना। कपटी=धोखे-बाज़। धान की फ़सल को नष्ट करनेवाला एक कीड़ा। तमाखू के पौधों में लगनेवाला एक रोग।—वेश=छद्म वेश।

कपाट—(पु० सं०) किवाड़।

कपाल—(पु० सं०) खोपड़ी। मस्तक। भाग्य। —क्रिया= मृतक-संस्कार के अन्तर्गत एक काम जिसमें जलते हुए शव की खोपड़ी को बाँस से फोड़ देते हैं।

कपास—(स्त्री० हि०) एक पौधा जिसके ढेंढ़ से रुई निकलती है।

कपूत—(पु० हि०) बुरा लड़का।

कपूर—(पु० हि०) एक सफ़ेद रंग का जमा हुआ सुगंधित द्रव्य जो हवा में उड़ जाता है।

कपोल—(पु० सं०) गाल।

कपोल-कल्पना—(स्त्री० सं०) बनावटी बात। कपोल-कल्पित=बनावटी।

कप्तान—(पु० अं० कैप्टेन) जहाज़ वा सेना का अफ़सर। दल का नायक।

कफ़—(पु० अं०) कमीज़ वा कुर्ते की आस्तीन के आगे की वह दोहरी पट्टी जिसमें बटन लगाते हैं। (अ०) लोहे का वह अर्द्ध चन्द्राकार टुकड़ा जिससे ठोंककर चकमक से आग निकालते हैं। (सं०) शरीर के तीन तत्वों में से

एक तत्व। जैसे वात, पित्त, कफ।

कफ़गीर—(पु० फ़ा०) हथेली को तरह की लंबी डाँड़ी की कड़छा जिससे दाल, घी आदि का झाग निकालते हैं।

कफ़न—(पु० अ०) वह कपड़ा जिसमें मुरदा लपेटकर गाड़ा या फूँका जाता है। —खसोट=कंजूस। कफ़न खसोटी=इधर-उधर से भले या बुरे ढंग से धनोपार्जन करने की वृत्ति। कफ़नी=मुरदे या फ़क़ीरों के गले में डालनेवाला कपड़ा।

क़फ़स—(पु० अ०) पिंजरा। दरबा। क़ैदख़ाना। बहुत तंग और संकुचित जगह।

कबंध—(पु० सं०) बिना सिर का धड़।

कब—(वि० हि०) किस समय। कदापि नहीं।

कबड्डी—(स्त्री० हि०) लड़कों के एक खेल का नाम।

क़बज़ा—(अ०) क़ाबू।

क़बर—(स्त्री० अ०) क़ब्र। —स्तान=क़ब्र की जगह। मुर्दा गाड़नेवाला गड्ढा। —गाह=कबरस्तान।

कबरा—(वि० हि०) चितला।

कबल—(क्रि० वि० अ०) पहले। पेश्तर।

क़बस—(अ०) बुज़ुर्गी। पेट का दर्द।

क़बा—(पु० अ०) एक प्रकार का पहनावा जो घुटनों के नीचे तक लम्बा और कुछ ढीला होता है।

कबाड़—(पु० हि०) रद्दी चीज़। कबाड़ा=व्यर्थ की बात। कबाड़िया=टूटी-फूटी सड़ी-गली चीज़ें बेंचनेवाला आदमी। तुच्छ व्यवसाय करनेवाला पुरुष।

कबाब—(पु० अ०) सीख़ों पर भूना हुआ मांस।

कबाब चीनी—(स्त्री० अ०) मिर्च की जाति की एक लिपटनेवाली झाड़ी।

क़वाला—(पु० अ०) वह दस्तावेज़ जिसके द्वारा कोई जायदाद एक के अधिकार से दूसरे के अधिकार में चली जाय।

क़वाहत—(स्त्री० अ०) मुश्किल। झंझट।

कबीर—(पु० अ०) गुरुजन। बड़ा बुज़ुर्ग। एकेश्वरवादी। सन्त का नाम। एक प्रकार का गीत वा पद जो होली में गाया जाता है। —पंथी= कबीर का मतानुयायी।

क़बीला—(स्त्री० अ०) स्त्री।

कबुलवाना—(स० हि०) स्वीकार करवाना। क़बूल= स्वीकार। कबूलना=स्वीकार करना। कबूलियत=वह दस्तावेज़ जो पट्टा लेनेवाला पट्टे की स्वीकृति में ठेका वा पट्टा देनेवाले को लिख दे।

कबूतर—(पु० फ़ा०) एक पक्षी। कबूतरी=कबूतर की मादा। नाचनेवाली। सुन्दर स्त्री (बाज़ारू)।

कबूद—(वि० फ़ा०) आसमानी।

क़ब्र—(अ०) मुर्दा गाड़ने का गढ़ा।

क़ब्ज़—(पु० अ०) पकड़। दस्त का स.फ़ न होना। क़ब्ज़ा= अधिकार। मूँठ। क़ब्ज़ादार =वह अधिकारी जिसका क़ब्ज़ा हो। दख़ीलकार असामी। क़ब्ज़ियत=पायख़ाने का साफ़ न आना। क़ाबिज़=अधिकार करनेवाला। क़ब्ज़ करनेवाली वस्तु। गरिष्ठ। क़ब्ज़ा= क़ाबू। अधिकार।

क़ब्ज़ुलवसूल—(पु० फ़ा०) वह काग़ज़ जिस पर वेतन पानेवालों की भरपाई लिखी हो।

कभी—(वि० हि०) किसी समय। —कभी कभी= बाज़ बाज़ दिन। कभी के= बहुत पहले ही।

कमंगर—(पु० फ़ा०) कमानसाज़। हड्डियों को बैठानेवाला। चितेरा। कमनैत= कमान चलानेवाला।

कमंचा—(पु० फ़ा०) बढ़ई का कमान का तरह का एक टेढ़ा औज़ार।

कमंडल—(पु० सं०) सन्यासियों का जलपात्र। कमंडली= साधु। पाखंडी।

कमंद—(पु० फ़ा०) रेशम, सूत वा चमड़े की फंदेदार रस्सी जिसे फेंककर चोर डाकू आदि ऊँचे मकानों पर चढ़ते हैं।

कम—(वि० फ़ा०) थोड़ा। बुरा। —असल=दोगला। —तर=छोटा। —तरीन= बहुत छोटा।

कमख़ाब—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का मोटा और गफ़ रेशमी कपड़ा जिस पर कला-बत्तू के बेलबूटे बने होते हैं।

कमची—(स्त्री० तु०) तीली। पतली लचदार छड़ी। कोड़ा। चाबुक।

कमज़ोर—(वि० फ़ा०) दुर्बल।

कमतर—(फ़ा०) बहुत कम। अति न्यून।

कमती—(स्त्री० फ़ा०) कमी। थोड़ा। —कमतर (फ़ा०) बहुत कम। अति न्यून।

कमनीय—(वि० सं०) सुन्दर।

कमबख़्त—(वि० फ़ा०) अभागा। कमबख़्ती=अभाग्य।

कमयाब—(वि० फ़ा०) दुर्लभ।

कमर—(स्त्री० फ़ा०) कटि। —तोड़=कुश्ती का एक पेंच। —बंद=पटुका। पेटी। इज़ारबंद। —बस्ता= तैयार। हथियारबंद।

क़मर—(पु० फ़ा०) चाँद।

कमरख—(पु० हि०) एक पेड़ का नाम।

कमरा—(पु० लै० कैमेरा) कोठरी। फ़ोटोग्राफ़ी का एक औज़ार। कंबल। कमरी= कमली। कमरी अँगरखा= छोटा अँगरखा।

कमल—(पु० सं०) एक प्रसिद्ध फूल।

कमसमझी—(स्त्री० फ़ा०) मूर्खता।

कमसरियट—(पुं० अं०) फ़ौज के मोदीखाने का मुहकमा।

कमसिन—(वि० फ़ा०) कम उम्र का।

कमर्शल—(वि० अं०) व्यापार सम्बन्धी। व्यापारिक।

कमांडर—(पु० अं० कमैंडर) कमान अफ़सर। —इन-चीफ़=प्रधान सेनापति।

कमाई—(स्त्री० हि०) कमाया हुआ धन। कमाऊ=कमाने-वाला। कमाना=कामकाज करके रुपया पैदा करना। कमासुत=कमाने वाला। उद्यमी। कमेरा=काम करने-वाला आदमी।

कमान—(स्त्री० फ़ा०) धनुष। मेहराब। —अफ़सर=कमा-नियर। कमानी=लोहे की तीली तार अथवा इसी प्रकार की कोई लचीली वस्तु जो इस प्रकार बैठाई हो कि दाव पड़ने से दब जाय और फिर अपनी जगह पर आ जाय। कमानीदार=जिसमें कमानी लगी हो।

कमाल—(पु० अ०) परिपूर्णता। चतुरता। अनोखा कार्य। कबीर के पुत्र का नाम।

कमिटी—(स्त्री० अं०) सभा। समिति।

कमिश्नर—(पु० अं०) माल का बहुत बड़ा अफ़सर जिसके अधिकार में कई ज़िले हों।

कमिश्नरी—(स्त्री० अं०) वह भूभाग जो किसी कमिश्नर के प्रबन्धाधीन हो। डिवीज़न। कमिश्नर की कचहरी। कमि-श्नर का काम या पद।

कमी—(स्त्री० फ़ा०) न्यूनता। नुक़सान।

कमीज़—(स्त्री० अ०) एक प्रकार का कुर्ता। जिसमें कली और चौबगले नहीं होते। क़मीस=कमीज़।

कमीना—(वि० फ़ा०) नीच। —पन=नीचता।

कमीशन—(पु० अं०) कुछ चुने हुये विद्वानों की वह समिति जो कुछ समय के लिये किसी गूढ़ विषय पर विचार करने के लिये नियत की जाती है।

कोई ऐसी सभा जो किसी कार्य की जाँच के लिये नियत की जाय। किसी दूर रहनेवाले आदमी की गवाही लेने के लिये एक वा अधिक वकीलों का नियत होना। दलाली।

कमेटी—(स्त्री० अं० कमिटी) समिति।

कमोड—(पु० अं०) एक प्रकार का अँगरेज़ी ढंग का पात्र जिसमें पाखाना फिरते हैं। गमला।

कमोरा—(पु० हि०) मिट्टी का एक बर्तन। कछरा। कमोरी=मटका।

कम्युनिक—(पु० फ़ा०) सरकारी विज्ञप्ति या सूचना।

कम्युनिज़्म—(पु० अं०) वह सिद्धान्त जिसमें सम्पत्ति का अधिकार समाज का माना जाता है, व्यक्ति विशेष का नहीं।

कम्युनिस्ट—(पु० अं०) कम्युनिज़्म के सिद्धान्त को माननेवाला।

क़य—(स्त्री० अ०) वमन। उल्टी।

क़यास—(पु० अ०) अनुमान। ध्यान।

कर—(पु० सं०) हाथ। मालगुज़ारी। टैक्स।

करई—(स्त्री० हि०) पानी रखने का एक बर्तन।

करक—(पु० सं०) रुक-रुककर होनेवाली पीड़ा। रुक-रुककर जलन के साथ पेशाब का रोग। —ना=तड़कना। सालना।

करकच—(पु० हि०) एक प्रकार का नमक जो समुद्र के पानी से निकाला जाता है।

करकट—(पु० हि०) कूड़ा।

करगह—(पु० फ़ा०) वह नीची जगह जिसमें जुलाहे पैर लटकाकर बैठते हैं, और कपड़ा बुनते हैं। जुलाहों का कपड़ा बुनने का यंत्र।

जुलाहों का कारखाना। करघा=करगह।

करछुला—(पु० हि०) कलछी। भँड़भूँजों की बड़ी कलछी।

करतल—(पु० सं०) हाथ की गदोरी। करतली=हथेली। ताली। करताल=दोनों हथेलियों के परस्पर आघात का शब्द। लकड़ी काँसे आदि का एक बाजा। मँजीरा।

करद—(वि० सं०) मालगुज़ार। टैक्स देनेवाला।

करदा—(पु० हि०) बिक्री की वस्तु में मिला हुआ कूड़ा। किसी वस्तु के बिकने के समय उसमें मिले हुये कूड़े कर्कट की घटी कुछ दाम कम करके वा माल अधिक देकर पूरी करना। कटौता। बदलाई।

करधनी—(स्त्री० हि०) सोने या चाँदी का कमर में पहनने का एक गहना।

करनफूल—(पु० हि०) स्त्रियों के कान में पहनने का सोने-चाँदी का एक गहना।

करनाटक—(पु० हि०) मद्रास प्रान्त का एक भाग। करनाटकी=करनाटक का निवासी। कलाबाज़। जादूगर।

करनी—(स्त्री० हि०) मृतक-क्रिया। एक औज़ार। करनी।

करनैल—(पु० अं० कर्नल) फ़ौज का बड़ा अफ़सर।

करबला—(स्त्री० अ०) अरब का वह उजाड़ मैदान जहाँ हुसैन मारे गये थे। जहाँ ताज़िये दफ़न किये जायँ। जहाँ पानी न मिले।

करम—(पु० सं० कर्म) काम। भाग्य। (अ०) मिहरबानी। उदारता।

करमकल्ला—(पु० अ०+हि०) पातगोभी।

करवट—(स्त्री० हि०) हाथ के बल लेटने की मुद्रा।

करवा—(पु० हि०) मिट्टी का छोटा बरतन।

करश्मा—(पु० फ़ा०) चमत्कार।

कराइत—(पु० हि०) एक प्रकार का काला साँप।

क़राइन—(पु० हि०) छप्पर के ऊपर का फूस ।

कराई—(स्त्री० हि०) दाल का छिल्का । कालापन ।

क़राबत—(स्त्री० अ०) समीपता । सम्बन्ध ।

क़राबा—(पु० अ०) काँच का छोटे मुंह का बड़ा पात्र ।

करामात—(स्त्री० अ०) चमत्कार ।

क़रार—(पु० अ०) ठहराव । वादा ।

करारा—(पु० हि०) नदी का वह ऊँचा किनारा जो जल के काटने से बने । ऊँचा किनारा । खूब सेंका हुआ । —पन=कड़ाई । कराल= जिसके बड़े दाँत हों । डरावनी शक्ल का । ऊँचा । दाँतों का एक रोग । कराली=डरावनी ।

कराह—(पु० हि०) पीड़ा का शब्द । —ना=पीड़ा का शब्द मुँह से निकालना ।

कराही—(स्त्री० हि०) कड़ाही ।

क़रीना—(पु० अ०) ढंग । तरतीब । रीति । व्यवहार ।

क़रीब—(क्रि० वि० अ०) समीप । लगभग ।

करीम—(अ०) दयालु । क्षमा करनेवाला ।

करुण—(पु० सं०) दयायुक्त । शोक । करुणा=दया । शोक । करुणानिधान = दयालु । करुणानिधि=दयालु । करुणामय=दयालु ।

करेंसी—(वि० अं०) हाथों हाथ चलनेवाला । नोट ।

करेप—(स्त्री० अं० क्रेप) एक झीना रेशमी कपड़ा ।

करेरुआ—(पु० हि०) एक कँटीली बेल ।

करेला—(पु० हि०) एक तरकारी ।

करोड़—(वि० हि०) सौ लाख की संख्या ।

करोदना—(क्रि० हि०) खराचना । करोना=खुरचना । करोनी=पके हुये दूध या दही का वह अंश जो

बर्तन में चिपका रह जाता है और खुरचने से निकलता है। खुरचन नाम की मिठाई।

करौंदा—(पु० हि०) एक छोटी कटीली झाड़ी जो जंगलों में होती है।

कर्क—(पु० सं०) बारह राशियों में से चौथी राशि।

कर्कश—(पु० सं०) कठोर। तेज़। अधिक। क्रूर। —ता=कठोरता। कर्कशा=झगड़ा करने वाली स्त्री।

क़र्ज़—(पु० अ०) कर्ज़ा। उधार।

क़र्ज़ख़ाह—(पु० अ०+फ़ा०) वह जो किसी से कर्ज़ लेना चाहता हो।

कर्ण—(पु० सं०) कान। —कटु=कान को अप्रिय। —वेध=कनछेदन।

कर्णधार—(पु० सं०) मल्लाह। पतवार थामनेवाला। माँझी। पतवार।

कर्त्तव्य—(वि० सं०) करने योग्य। उचित कर्म। —मूढ़, —विमूढ़=जो कर्तव्य स्थिर न कर सके। भौचक्का।

कर्त्ता=करनेवाला। रचने वाला। कर्त्तार=करनेवाला। विधाता।

कर्नल—(पु० अं०) एक फ़ौजी अफ़सर।

क़राबा—(फ़ा०) सुराही। शराब का शीशा।

क़ुर्ब—(अ०) नज़दीकी। आस-पास के।

क़ुर्बान—(अ०) बलिदान होना। क़ुर्बानी=बलिदान।

कर्म—(पु० सं०) कार्य्य। भाग्य। मृतक संस्कार। —कांड=यज्ञादि कर्म। यज्ञादि कर्मों के विधानवाला शास्त्र। —कांडी =यज्ञादि कर्म करानेवाला। —क्षेत्र=कार्य्य करने का स्थान। —चारी=कार्य्य-कर्त्ता। अमला। —ठ=काम में चतुर। कर्मनिष्ठ। —ण्य=कर्म से। —निष्ठ=क्रियावान। —योग=चित्त शुद्ध करनेवाला शास्त्र विहित कर्म। —रेख=कर्म की रेखा।

—वाद=मीमांसा, जिसमें कर्म प्रधान माना गया है। कर्मयोग। —विपाक=पूर्व जन्म के किये हुये शुभ और अशुभ कर्मों का भला और बुरा फल। —शील=कर्म-वान। उद्योगी। —शूर=उद्योगी। —संन्यास=कर्म का त्याग। कर्म के फल का त्याग। —साक्षी=जो कर्मों का देखनेवाला हो। —हीन=जिससे शुभ कर्म न बन पड़े। अभागा। कर्मी=कर्म करनेवाला। फल की इच्छा से यज्ञादि कर्म करनेवाला। कर्मेंद्रिय=काम करनेवाली इंद्रिय।

कर्रा—(पु० हि०) जुलाहों का सून फैलाकर तानने का काम। कड़ा। कठिन। —ना कड़ा होना।

क़र्ला—(फ़ा०) बन्दगोभी। एक शाक।

कलंक—(पु० सं०) दाग़। चन्द्रमा पर काला दाग़। बदनामी। ऐब। कलंकित=जिसे कलंक लगा हो। कलंकी=दोषी।

कलंडर—(पु० अं० कैलेन्डर) वह अँगरेज़ी यंत्री या तिथि-पत्र जिसका प्रारम्भ पहली जनवरी से होता है।

कलंदर—(पु० अ०) एक प्रकार का मुसलमान साधु जो संसार से विरक्त होता है। रीछ और बन्दर नचानेवाला।

कल—(पु० सं०) सुन्दर। आने वाला दिन। बीता हुआ दिन। यंत्र। पेंच। बन्दूक का घोड़ा। आराम।

क़लई—(स्त्री० अ०) राँगा। मुलम्मा। —गर=क़लई करनेवाला। —दार=जिस पर कलई की गई हो। चूना।

क़लक़—(पु० अ० क़लक़) बेचैनी। दुःख। कलकानि=हैरानी। बेक़रारी।

कलकल—(पु० सं०) झरने आदि के जल गिरने का शब्द। शोर। झगड़ा।

कलक्टर—(पु० अं० कलेक्टर) बड़ा हाकिम, जिसके अधिकार में ज़िले का प्रबन्ध होता है। कलक्टरी=ज़िले में माल के मुहक़मे की कचहरी। कलक्टर का पद।

कलछा—(पु० हि०) बड़ी कलछी। कलछी=बड़ी डाँड़ी का वह चम्मच जिससे बटलोई की दाल आदि चलाते या निकालते हैं। कलछुल=कलछी। कलछुला=लोहे का लम्बा छड़ जिसके सिरे पर एक कटोरा सा लगा रहता है। इससे भाड़ में से बालू निकालकर भड़भूँजे दाना भूनते हैं।

कलत्र—(पु० सं०) स्त्री।

कलदार—(वि० हि०) पेंचदार। सरकारी रुपया।

कलप—(पु० फ़ा०) ख़िज़ाब। कलफ़=पके चावल वा अरारोट आदि की पतली लेई जिसे कपड़ों पर उनकी तह कड़ी और बराबर करने के लिये लगाते हैं।

कलपना—(क्रि० सं० कल्पना) विलाप करना। कलपाना=दुखी करना।

कलम—(स्त्री० फ़ा०) लेखनी। किसी पेड़ की टहनी जो दूसरी जगह बैठाने वा दूसरे पेड़ में पैवंद लगाने के लिये काटी जाय। वह पौधा जो कलम लगाकर तैयार किया गया हो। —तराश=कलम बनाने की छुरी। —दान=काठ का एक पतला लम्बा सन्दूक़ जिसमें कलम दवात, पेंसिल, चाक़ू आदि रखने के ख़ाने बने रहते हैं। —बंद=लिखित। लिख लेना।

कलमलाना—(क्रि० अ०) कुलबुलाना।

कलमा—(पु० अ०) वाक्य। "लाइलाह इल्लिल्लाह, मुहम्मद उर् रसूलिल्लाह।"

कलमी—(वि० फ़ा०) लिखा हुआ। जो कलम लगाने से

उत्पन्न हुआ हो। —शोरा= साफ़ किया हुआ शोरा।

कलश—(पु० सं०) घड़ा। कलशी=गगरी।

कलह—(पु० सं०) झगड़ा। —कारी=झगड़ालू। —प्रिय =नारद। —प्रिया=झगड़ालू स्त्री। —कलही= झगड़ालू।

कलाँ—(वि० फ़ा०) बड़ा।

कला—(स्त्री० सं०) अंश। चंद्रमा का सोलहवाँ भाग। सूर्य्य का बारहवाँ भाग। किसी कार्य्य को भली भाँति करने का कौशल। तेज। शोभा। ज्योति। खेल। छल। बहाना। ढंग। यंत्र। —धर= चंद्रमा। —नाथ=चंद्रमा। —निधि=चंद्रमा। —बाज़ =नट-क्रिया करनेवाला। —बाज़ी=सिर नीचे करके उलट जाना। —वंत= संगीत-कला में निपुण व्यक्ति। नट। —वती=जिसमें कला हो। शोभावाली। —कौशल =दस्तकारी। शिल्प।

कलाजंग—(पु० हि०) कुश्ती का एक पेंच।

कलाप—(पु० सं०) मोर की पूँछ। मोर की बोली। कलापी=मोर।

कलाबत्तू—(पु० तु०) सोने चाँदी का तार।

कलाम—(पु० अ०) वाक्य। वचन। एतराज़।

कलि—(पु० सं०) चार युगों में से चौथा युग। —कर्म=युद्ध। —काल=कलियुग। —प्रिय =झगड़ालू। —मल=पाप। —युगी=बुरे युग का।

कलिया—(पु० अ०) पकाया हुआ मांस।

कलियाना—(अ० हि०) कली लेना। कली=बिना खिला फूल।

क़लील—(पु० अ०) थोड़ा।

कलीसा—(फ़ा०) ईसाई और यहूदियों का मन्दिर। गिरजाघर।

कलूटा—(वि० हि०) काला।
कलेऊ—(पु० हि०) जलपान। कलेवा=जलपान।
कलेक्टर—(पु० अं०) ज़िले का बड़ा हाकिम।
कलेजा—(पु० हि०) प्राणियों का एक भीतरी अवयव। छाती। साहस। कलेजी= कलेजे का मांस।
कलेवर—(पु० सं०) शरीर। ढाँचा।
कलोर—(स्त्री० हि०) जो गाय बरदाई या ब्याई न हो।
कलोल—(पु० हि०) क्रीड़ा। —ना=क्रीड़ा करना।
कलौंजी—(पु० हि०) एक पौधा। एक प्रकार की तरकारी।
कल्टीवेशन—(अं०) खेती।
कल्पतरु—(पु० सं०) कल्पवृक्ष। पुराणानुसार देवलोक का एक कल्पवृक्ष जो समुद्र-मथन करने के समय समुद्र से निकला हुआ और चौदह रत्नों में माना जाता है।
कल्पना—(स्त्री० सं०) रचना। अनुमान। भावना। मनगढ़ंत बात। कल्पित=मनमाना।
कल्पवास—(पु० सं०) माघ के महीने भर गगांतट पर संयम के साथ रहना।
कल्पांत—(पु० सं०) प्रलय। नित्य।
कल्मष—(पु० सं०) पाप। मैल। मवाद।
कल्याण—(पु० सं०) मंगल। कल्याणी = कल्याण करनेवाली।
कल्ला—(पु० हि०) अंकुर।
कल्लोल—(पु० सं०) पानी की लहर। मौज। कल्लोलिनी=कल्लोल करनेवाली नदी।
कवच—(पु० सं०) लोहे की कड़ियों के जाल का बना हुआ पहनावा जिसको योद्धा लड़ाई के समय पहनते थे।
कवर—(पु० हि०) ग्रास। (अं०) पुस्तकों के ऊपर का वह काग़ज़ जिस पर नाम

आदि छपा रहता है। लिफ़ाफ़ा।
क़वरी—(स्त्री० सं०) चोटी।
क़व्वाल—(पु० अ०) क़ौवाली गानेवाला।
क़ुव्वत—(पु० अ०) शक्ति। ताक़त। —क़वी=(अ०) क़ूवतवाला।
क़वायद—(स्त्री० अ०) नियम। व्याकरण। सेना के युद्ध करने के नियम। लड़नेवाले सिपाहियों के युद्ध-नियमों के अभ्यास की क्रिया।
क़वानीन—(पु० अ०) क़ानून का जमा।
कवि—(पु० सं०) काव्य करनेवाला। शुक्राचार्य्य। —ता =काव्य। —त्त=कविता। दण्डक के अन्तर्गत ३१ अक्षरों का एक छन्द। —त्व= काव्य-रचना-शक्ति। काव्य का गुण। —पुत्र=शुक्राचार्य्य। —राज=श्रेष्ठ कवि। भाट। बंगाली वैद्यों की एक उपाधि।
कश-मकश—(स्त्री० फ़ा०) खींचातानी। भीड़। आगा-पीछा।
कशिश—(पु० फ़ा०?) खिँचाव।
कशीदा—(पु० फ़ा०) तागे भरकर कपड़े में निकाले हुये बेलबूटे।
कश्ती—(स्त्री० फ़ा०) नौका।
कश्मीर—(पु० सं०) पंजाब के उत्तर हिमालय से घिरा हुआ एक पहाड़ी प्रदेश। कश्मीरी= कश्मीर का। कश्मीर देश की भाषा।
कषाय—(वि० सं०) कसैला। गेरू रंग का रँगा हुआ कपड़ा।
कष्ट—(पु० सं०) तकलीफ़। संकट। —कल्पना=विचारों का घुमाव-फिराव। —साध्य मुश्किल से होनेवाला।
कसक—(स्त्री० हि०) पुराना बैर। हौसला। हमदर्दी। —ना=दर्द करना।
कसकुट—(पु० हि०) एक मिली हुई धातु जो ताँबे और जस्ते के बराबर भाग से मिला कर बनाई जाती है।

क़सब—(क्रि० अ०) काटना। कसाई का काम।

क़सब—(पु० अ०) पेशा। छिनाला। कसबी=वेश्या। व्यभिचारिणी स्त्री।

क़सबा—(पु० अ०) बड़ा गाँव। —ती=क़सबे का। क़सबे का रहनेवाला।

क़सम—(स्त्री० अ०) शपथ।

कसमसाना—(क्रि० अनु०) कुलबुलाना। घबराना। आगा पीछा करना। कसमसाहट=बेचैनी।

कसर—(स्त्री० अ०) कमी। बैर। घाटा।

कसरत—(स्त्री० अ०) व्यायाम। अधिकता। कसरती=कसरत करनेवाला।

कसरवानी—(पु० हि०) बनियों की एक जाति। कसरहट्टा=कसेरों का बाज़ार।

क़साई—(पु० अ०) वधिक। गोघातक। निर्दय।

कसाला—(पु० हि०) कष्ट। कठिन।

कसाव—(पु० हि०) कसैलापन।

कसी—(स्त्री० हि०) पृथ्वी नापने की एक रस्सी जो दो क़दम वा ४१$\frac{1}{4}$ इंच की होती है। एक पौधा।

क़सीदा—(पु० अ०) उर्दू वा फ़ारसी भाषा की एक प्रकार की कविता।

क़सीर—(पु० अ०) भूल करने वाला। कोताही करनेवाला।

कसीस—(पु० हि०) लोहे का एक प्रकार का विकार जो खानों में मिलता है।

क़सूर—(पु० अ०) अपराध। —मन्द=दोषी। —वार =अपराधी।

कसेरु—(पु० हि०) एक प्रकार के मोथे की जड़।

कसैली—(स्त्री० हि०) सुपारी।

कसौटी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का काला पत्थर जिस पर रगड़कर सोने की परख की जाती है। परीक्षा।

कस्टम ड्यूटी=(स्त्री० अं०) कर। महसूल। चुंगी।

कस्टम हाउस—(पु० अं०) वह स्थान जहाँ विदेश से आने जाने वाले माल का महसूल देना पड़ता है।

कस्तूरी—(पु० हि०) एक सुगंधित द्रव्य जो हिरन की नाभि से पैदा होता है। —मृग=वह हिरन जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है।

क़स्द—(पु० अ०) इरादा।

क़स्साव—(पु० अ०) क़साई।

कस्सी—(स्त्री० हि०) मालियों का छोटा फावड़ा। ज़मीन की एक नाप जो दो क़दम के बराबर होती है।

क़हक़हा—(पु० अ०) ज़ोर की हँसी।

क़हक़हादीवार—(पु० फ़ा०) चीन की दीवार।

क़हत—(पु० अ०) दुर्भिक्ष। —साली=दुर्भिक्ष का समय।

क़हर—(पु० अ०) विपत्ति। भयङ्कर।

कहरवा—(पु० हि०) पाँच मात्राओं का एक ताल। दादरा गीत जो कहरवा ताल पर गाया जाता है।

कहलवाना—(स० हि०) सन्देशा भेजना।

क़हवा—(पु० अ०) एक पेड़ का बीज।

काँइयाँ—(वि० अनु०) धूर्त।

काउंसिल—(स्त्री० अं०) व्यव-स्थापिका सभा।

काँख—(स्त्री० हि०) बग़ल।

काँखना—(क्रि० अनु०) किसी श्रम वा पीड़ा से उँह, आँह आदि शब्द मुँह से निका-लना।

काँखासोती—(स्त्री० हि०) जनेऊ की तरह दुपट्टा डालने का ढंग।

काँगड़ी—(स्त्री० हि०) एक छोटी अँगीठी जिसे कश्मीरी लोग गले में लटकाये रहते हैं।

काँगरू—(पु० अं० कंगारू) एक जंतु जो आस्ट्रेलिया महाद्वीप में होता है।

कांग्रेस—(स्त्री० अं०) वह महासभा जिसमें भिन्न-भिन्न स्थानों के प्रतिनिधि एकत्र होकर किसी सार्वजनिक वा विद्या-संबन्धी विषय पर-विचार करते हैं।

कांग्रेसमैन—(पु० अं०) वह जो कांग्रेस का सदस्य हो।

काँच—(स्त्री० हि०) गुदेंद्रिय के भीतर का भाग।

कांची—(स्त्री० सं०) करधनी।

कांजी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का खट्टा रस जो कई प्रकार से बनाया जाता है। मट्ठे और दही का पानी।

काँजीहाउस—(स्त्री० अं० काइन हाउस) वह मकान जहाँ खेती आदि को हानि पहुँचानेवाले चौपाये बन्द किये जाते हैं। मवेशीख़ाना। पौंड।

काँटा—(पु० हि०) कंटक। खाँग। फाँटा जो मैना आदि पत्तियों के गले में निकलता है। लोहे की बड़ी कील चाहे वह झुकी हो या सीधी हो। मछली पकड़ने की झुकी हुई नोकदार अँकुड़ी या कँटिया। लोहे की झुकी हुई अँकुड़ियों का गुच्छा जिसे कुएँ में डालकर गिरे हुये बर्तन निकाले जाते हैं। सूई वा कील की तरह कोई नुकीली वस्तु। एक झुका हुआ लोहे का काँटा जिसमें तागे को फँसाकर पटहार वा पटवा गुहने का काम करते हैं। वह सूई जो लोहे की तराज़ू की पीठ पर होती है और जिससे दोनों पलड़ों के बराबर होने की सूचना मिलती है। वह लोहे की तराज़ू जिसकी डाँड़ी पर काँटा होता है। नाक में पहनने की लौंग। पंजे के आकार का धातु का बना हुआ एक औज़ार जिससे अंग्रेज़ लोग खाना खाते हैं। लकड़ी का एक ढाँचा जिससे किसान घास-भूसा उठाते हैं। सूजा। घड़ी की सूई।

काँड—(पु० सं०) किसी ग्रन्थ

का वह विभाग जिसमें एक पूरा प्रसङ्ग हो।

काँड़ना—(क्रि० हि०) कुचलना। कूटना। लात लगाना। काँड़ी=ओखली का वह गड्ढा जिसमें धानादि डालकर मूसल से कूटते हैं। भूमि में गड़ा हुआ लकड़ी या पत्थर का टुकड़ा जिसमें धान कूटने के लिये गड्ढा बना रहता है। हाथी का एक रोग जिसमें उसके पैर के तलवे में एक गहरा घाव हो जाता है और उसको चलने फिरने में बड़ा कष्ट होता है।

कांति—(स्त्री० सं०) प्रकाश। शोभा। चन्द्रमा की सोलह कलाओं में से एक।

काँदना—(क्रि० हि०) रोना।

काँदा—(पु० हि०) प्याज।

काँय-काँय—(पु० अनु०) कौवे का शब्द। काँव-काँव=कौवे का शब्द।

काँवर—(स्त्री० हि०) बहँगी।

कांसेल—(पु० अं०) सलाहकार।

काँसा—(पु० हि०) एक मिश्रित धातु जो ताँबे और जस्ते के संयोग से बनती है।

कांस्टेबल—(पु० अं०) पुलीस का सिपाही।

कांस्टिट्युएंसी—(स्त्री० अं०) निर्वाचक-संघ।

काई—(स्त्री० हि०) जल वा सीड़ में होनेवाली एक प्रकार की महीन घास।

काकातुआ—(पु० हि०) एक प्रकार का बड़ा तोता जो प्रायः सफ़ेद रंग का होता है।

काकुल—(फ़ा०) अलक। लट।

काग़ज़—(पु० अ०) सन, रूई, पटुए आदि को सड़ाकर बनाया हुआ महीन पत्र जिस पर अक्षर लिखे या छापे जाते हैं। समाचार-पत्र। काग़ज़ात =क़ाग़ज़-पत्र। क़ाग़ज़ी= जिसका क़ाग़ज़ की तरह पतला छिल्का हो। क़ाग़ज़ बेचने-वाला।

काग़ज़ी बादाम—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का बढ़िया बादाम।

कागज़ी सबूत—(पु० फ़ा०) लिखित प्रमाण।

काछ—(पु० हि०) पेड़ू और जाँघ के जोड़ पर का तथा उससे कुछ नीचे तक का स्थान। लाँग। —ना=कमर में लपेटे हुये वस्त्र के लटकते भाग को जंघों पर से लेजाकर पीछे कसकर बाँधना। —नी=कछनी।

काछी—(पु० हि०) तरकारी बोने और बेचनेवाला।

क़ाज़ी—(पु० अ०) मुसलमानी राज का न्यायाध्यक्ष।

काजू—(पु० हि०) एक मेवा।

काट—(स्त्री० हि०) काटने का ढंग। घाव। चालबाज़ी। तेल घी का तलछट। —न—कतरन। —ना=शस्त्रादि की धार धँसाकर किसी चीज़ के खण्ड करना। घाव करना। किसी भाग को अलग करना। वध करना। कतरना। छाँटना। समय बिताना। दूरी तै करना। कलम की लकीर से किसी लिखावट को रद्द करना। एक संख्या का दूसरी संख्या के साथ ऐसा भाग लगाना कि शेष न बचे। ताश की गड्डी को इस प्रकार फेंटना कि उस का पहले का लगा हुआ क्रम न बिगड़े। क़ैद भोगना। डसना। किसी तीक्ष्ण वस्तु का शरीर के किसी भाग से लग कर खुजली लिये हुये जलन और छरछराहट पैदा करना।

काटन—(पु० अं०) कपास। रूई। सूती कपड़ा। रूई का कपड़ा।

काठ—(पु० हि०) लकड़ी। जलाने की लकड़ी। शहतीर।

काठ-कबाड़—(पु० हि०) लकड़ियों आदि के टूटे-फूटे और निकम्मे टुकड़े।

काठमांडू—(पु० हि०) नैपाल की राजधानी।

काठियावाड़—(पु०हि०) भारतवर्ष का प्रान्त जो अब गुजरात देश का पश्चिमी भाग है।

काठी—(स्त्री० हि०) घोड़ों की पीठ पर कसने की एक ज़ीन जिसमें नीचे काठ लगा रहता है। ऊँट की पीठ पर रखने की एक गद्दी जिसके नीचे काठ रहता है। शरीर की गठन।

काढ़ना—(क्रि० हि०) निकालना। चित्रित करना। उधार लेना। काढ़ा=औषधियों को पानी में उबाल वा औटाकर बनाया हुआ अर्क।

कातना—(क्रि० हि०) रूई से सूत कातना।

कातर—(वि० सं०) अधीर। डरा हुआ। डरपोक। दुःखित। कोल्हू में लकड़ी का वह तख़्ता जिस पर हाँकनेवाला बैठता है और जो कोल्हू की कमर से लगा हुआ उसके चारों ओर घूमता है। इसी में बैल जोते जाते हैं। —ता= अधीरता। दुःख की व्याकुलता। डरपोकपन।

कातिब—(पु० अ०) लेखक।

क़ातिल—(वि० अ०) प्राण लेने-वाला। हत्यारा।

कान—(पु० हि०) सुनने की इंद्रिय।

क़ानून—(पु० अ०) राज्य में शांति रखने का नियम। —गो=माल का एक कर्मचारी जो पटवारियों के उन क़ाग़ज़ों की जाँच करता है जिनमें खेतों और उनके लगानादि का हिसाब-किताब रहता है। —दाँ=कानून जाननेवाला। क़ानूनिया=कानून जानने वाला। हुज्जती। क़ानूनी= जो क़ानून जाने। अदालती। नियमानुकूल। तकरार करने वाला।

क़ानूनन्—(वि० अं०) कानून के अनुसार।

कान्यकुब्ज—(पु० सं०) प्राचीन समय का एक प्रान्त जो आजकल के कन्नौज के आस-पास था। कान्यकुब्ज देश का निवासी। कान्यकुब्ज देश का ब्राह्मण।

कान्शंस—(अं०) अक़्ल। बुद्धि।

कान्सल—(पु० अं०) वाणिज्य-दूत। राजदूत।

कान्सोलेट—(पु० अं०) दूतावास।

कान्फ़िडेंस—(अं०) विश्वास।

कान्स्टिट्यूशन—(पु० अं०) किसी देश की सरकार का व्यवस्थित रूप। व्यवस्था।

कान्स्पिरेसी—(स्त्री० अं०) षड्यंत्र। साजिश।

कापर प्लेट—(पु० अं०) छापेख़ाने में काम आनेवाला ताँबे की चद्दर का एक टुकड़ा जिस पर अक्षर खुदे होते हैं।

कापालिक—(पु० सं०) शैव मतानुसार एक तांत्रिक साधु जो मनुष्य की खोपड़ी लिये रहते हैं। एक प्रकार का कोढ़ जिसमें शरीर की त्वचा रूखी, कठोर काली वा लाल होकर फट जाती है। दर्द भी करती है।

कापी—(स्त्री० अं०) नक़ल। लिखने की सादी पुस्तक।

—राइट=क़ानून के अनुसार वह स्वत्व जो ग्रन्थकार वा प्रकाशक को प्राप्त होता है।

कापीनवीस—(पु० अं० फ़ा०) लेखक। कापी लिखनेवाला।

कापुरुष—(पु० सं०) कायर।

क़ाफ़िया—(पु० अ०) तुक।

काफ़िर—(वि० अ०) मुसलमानों के कथनानुसार उनसे भिन्न धर्म को माननेवाला। ईश्वर को न माननेवाला। निर्दय। बुरा। क़ाफिर देश का रहने वाला।

क़ाफ़िला—(पु० अ०) यात्रियों का झुण्ड जो तीर्थ व्यापारादि के लिये एक स्थान से दूसरे स्थान को जाता है।

काफी—(पु० अं०) क़हवा।

क़ाफी—(वि० अ०) मतलब भर के लिये।

काफ़ूर—(पु० फ़ा०) कपूर।

काबा—(पु० अ०) अरब में मक्के शहर का एक स्थान।

क़ाबिज़—(वि० अ०) जिसका किसी वस्तु पर अधिकार हो।

क़ाबिल—(वि॰ अ॰) योग्य। विद्वान्। क़ाबिलीयत = योग्यता। विद्वत्ता।

काबुल—(पु॰ हि॰) एक नदी। अफ़ग़ानिस्तान की राजधानी। काबुली = काबुल का।

क़ाबू—(पु॰ तु॰) अधिकार। बल।

काम—(पु॰ सं॰) इच्छा। मनोरथ। कामदेव। वह जो किया जाय। प्रयोजन। ग़रज़। उपयोग। रोज़गार। कारीगरी। बेलबूटा वा नक्काशी जो कारीगरी से तय्यार हो। —चलाऊ = जिससे किसी प्रकार काम निकल सके।—चोर = काम से जी चुराने वाला।—दानी = वह कपड़ा जिसमें सलमे सितारे के बेल-बूटे बने हों। —दार = कारिंदा। —देव = स्त्री-पुरुष के संयोग की प्रेरणा करनेवाला एक पौराणिक देवता, जिसकी स्त्री रति, साथी वसंत, वाहन कोकिल अस्त्र फूलों का धनुष-बाण है। वीर्य्य। —धाम = कामकाज। —धेनु = एक गाय जो समुद्र के मथने से निकली थी। वशिष्ठ की नन्दिनी नाम की गाय। दान के लिये सोने की बनाई हुई गाय। —ना = मनोरथ। —याब = सफल। —याबी = सफलता। —शास्त्र = वह विद्या वा ग्रन्थ जिसमें स्त्री, पुरुषों के परस्पर समागम आदि के व्यवहारों का वर्णन हो। (अं॰) कामा = एक विराम। कामातुर = काम के वेग से व्याकुल। कामिनी = कामवती स्त्री। एक पेड़। कामी = विषयी। कामुक = इच्छा करनेवाला। विषयी। कामोद्दीपक = काम को उद्दीपन करनेवाला। कामोद्दीपन = सहवास की इच्छा का उत्तेजन।

कामत—(पु॰ अ॰) क़द।

कामनवेल्थ—(पु॰ अं॰) लोक-सत्तात्मक शासन-प्रणाली।

कामन सभा—(स्त्री॰ अं॰ हि॰) ब्रिटिश पार्लमेण्ट की वह शाखा या सभा जिसमें जन-साधारण के निर्वाचित प्रति-निधि होते हैं। हाउस आफ़ कामन्स।

कामर्स—(पु॰ अं॰) व्यापार। कारोबार। लेन-देन।

कॉमेडियन—(पु॰अं॰) आदिरस या हास्य रस का अभिनेता। सुखांत नाटक लिखनेवाला।

कॉमेडी—(स्त्री॰ अं॰) सुखांत। नाटक।

काम्रेड—(पु॰ अं॰) सह-योगी। साथी।

क़ायदा—(पु॰ अ॰) नियम। चाल। विधान। क्रम।

कायफल—(पु॰ हि॰) एक वृक्ष।

क़ायम—(वि॰अ॰) ठहरा हुआ। मुक़र्रर। —मुक़ाम=एवज़ी।

कायर—(वि॰ हि॰) डरपोक। —ता=डरपोकपन।

क़ायल—(वि॰ अ॰) जो दूसरे की बात की यथार्थता को स्वीकार कर ले।

काया—(पु॰ सं॰) शरीर। —पलट=हेर-फेर। परि-वर्तन।

कार—(पु॰ फ़ा॰) काम। —करदा=तजरुबेकार। —कुन=प्रबन्धकर्ता। का-रिन्दा। —ख़ाना=जहाँ व्यापार के लिये कोई वस्तु बनाई जाय। —गर=असर करनेवाला। उपयोगी। —गुज़ार=काम को अच्छी तरह करनेवाला। —गुज़ारी =कर्तव्य-पालन। होशियारी। कर्मण्यता। —नी=करने-वाला। —परदाज़=काम करनेवाला। प्रबन्धकर्ता। —परदाज़ी=दूसरे का काम करने की वृत्ति। कार्य्यपटुता। —बार=कामकाज। —वारी =कामकाजी। —रवाई= काम। कार्य्यतत्परता। चाल। —वाँ=यात्रियों का झुण्ड जो एक देश से दूसरे देश की यात्रा करता है। —साज़ =काम बनानेवाला।

—साज़ी=काम पूरा उतारने की युक्ति। चालबाज़ी। —स्तानी=काररवाई। चालबाज़ी। कारी=करनेवाला। कारीगर=शिल्पकार। कारीगरी=निर्माण-कला। मनोहर रचना। कारागार (सं०)=क़ैदख़ाना। कारागृह=क़ैदख़ाना। कारावास=क़ैद। कारिन्दा=कर्मचारी। कार=(अं०) मोटर गाड़ी।

कारचोबी—(वि० फ़ा०) ज़रदोज़ी का। क़सीदा।

कारटून—(पु० अं०) वह उपहासपूर्ण कल्पित बेढंगे चित्र जिनसे किसी घटना वा व्यक्ति के संबन्ध में किसी गूढ़ रहस्य का ज्ञान होता है।

कारट्रिज—(पु० अं०) कारतूस।

कारण—(पु० सं०) सबब। प्रमाण।

कारतूस—(पु० पुर्त्त०) एक लम्बी नली जिसमें गोली छुरी और बारूद भरी रहती है और जिसके एक सिरे पर टोपी लगी रहती है।

कारनिस—(स्त्री० अं०) दीवार की कँगनी।

कारपेंटर—(पु० अं०) बढ़ई।

कारपोरल—(पु० अं०) पलटन का छोटा अफसर। जमादार।

कारपोरेशन—(पु० अं०) बड़े शहरों की म्युनिसिपैलिटी।

कारेस्पांडेंट—(पु० अं०) संवाददाता।

कारेस्पांडेंस—(पु० अं०) पत्र-व्यवहार।

कारबन—(पु० अं०) रसायन शास्त्रानुसार एक तत्व। कोयला। कारबोनिक=कारबन से मिला हुआ।

कारबोलिक—(वि० अं०) अलकतरा सम्बन्धी। एक सार पदार्थ जो कोयले के तेल वा अलकतरे से निकाला जाता है।

कारीगर—(फ़ा०) काम करनेवाला। हुनर जाननेवाला।

कारुणिक—(वि० सं०) दयालु। कारुण्य=दया।

क़ारूँ—(पु० अ०) हज़रत मूसा का चचेरा भाई। बड़ा मालदार।

कारूरा—(पु० अ०) शीशी जिसमें रोगी का मूत्र वैद्य को दिखाने के लिये रक्खा जाता है।

कारोनर—(पु० अं०) वह अफ़सर जिसका काम जूरी की सहायता से दंगा-फसाद या हत्या-सम्बन्धी मामलों की जाँच करना है। कारोनेशन=राज्यतिलक। राज्याभिषेक।

कार्क—(पु० अं०) एक प्रकार की बहुत ही हलकी लकड़ी की छाल जिसकी डाटें बोतलों में लगाई जाती हैं। काग।

कार्ड—(पु० अं०) मोटा काग़ज़। छोटे तथा मोटे काग़ज़ पर लिखा हुआ खुला पत्र। पते का काग़ज़।

कार्तिक—(पु० सं०) एक चांद्र मास जो क्वार और अगहन के बीच में पड़ता है।

कार्य्य—(पु० सं०) काम। —कर्त्ता=कर्मचारी। कार्य्याधिकारी=अफ़सर। कार्य्याध्यक्ष=अफ़सर। कार्य्यालय=दफ़्तर।

काल—(पु० सं०) समय। नाश का समय। यमराज। नियत समय। अवसर। अकाल। —कूट=एक प्रकार का अत्यन्त भयङ्कर विष। —कोठरी=जेलख़ाने की एक बहुत तंग और अँधेरी कोठरी जिसमें क़ैद तनहाईवाले क़ैदी रक्खे जाते हैं। —क्षेप=समय बिताना। —चक्र=समय का हेर फेर। —ज्ञान=समय की पहचान। मृत्यु का समय जान लेना। —निशा=अँधेरी भयावनी रात।

कालम—(पु० अं०) पुस्तक वा अख़बार के पृष्ठ की चौड़ाई में किये हुये विभागों में से एक।

कालर—(अं०) पट्टा जो गले में लगाया जाता है।

कालरा—(पु० अं०) हैज़ा या विशूचिका नासक रोग।

काला—(वि० सं०) स्याह। बुरा। —कलूटा=बहुत काला। —चोर=बड़ा चोर। बुरे से बुरा आदमी। —जीरा =एक प्रकार का जीरा जो रंग में स्याह होता है। एक प्रकार का धान जिसके चावल बहुत दिनों तक रह सकते हैं। —तिल=काले रंग का तिल। —तीत=जिसका समय बीत गया हो। —पानी=देश निकाले का दंड। एँडमन-और नीकोबार आदि द्वीप। —भुजंग = बहुत काला। काले साँप जैसा।

कालिंजर—(पु० सं०) एक पर्वत जो बाँदे से ३० मील पूरब की ओर है।

कालिंदी—(स्त्री० सं०) यमुना नदी।

कालिक—(अं०) पेट की मरोड़।

क़ालिब—(पु० अ०) साँचा। शरीर। बदन।

क़ालीन—(पु० अ०) गलीचा।

कालेज—(अं०) अंग्रेज़ी विद्यालय।

कालोनियल—(वि० अं०) औपनिवेशिक।

कालोनी—(स्त्री० अं०) उपनिवेश।

काल्पनिक—(पु० सं०) फ़र्ज़ी। ख़याली।

कावा—(पु० फ़ा०) घोड़े को एक वृत्त में चक्कर देने की क्रिया।

काव्य—(पु० सं०) कविता।

कास—(पु० हि०) एक प्रकार की घास।

काश—(फ़ा०) ईश्वर करे। वाञ्छा यह है।

काशाजः—(पु० फ़ा०) झोपड़ा। छोटा घर।

काश्त—(स्त्री० फ़ा०) खेती। —कार=किसान। —कारी =किसानी।

काश्मीर—(पु० सं०) एक देश का नाम। काश्मीरा=एक प्रकार का मोटा ऊनी कपड़ा।

काश्मीरी=कश्मीर देश का। कश्मीर देश-निवासी।

काषाय—(वि० सं०) कसैली वस्तुओं में रँगा हुआ। गेरुआ वस्त्र।

क़ासिद—(पु० अ०) हरकारा। दूत। क़स्द करनेवाला। सीधी राह चलनेवाला।

कास्केट—(पु० अं०) पेटी। सन्दूकड़ी। डिब्बा।

कास्टिक—(वि० अं०) एक प्रकार का तेज़ाब।

कास्टिंग वोट—(पु० अं०) किसी सभा या परिषद् के सभापति का वोट।

काहकशां—(पु० फ़ा०) आकाश-गंगा।

काहिल—(वि० अ०) आलसी। काहिली=सुस्ती।

काही—(वि० हि०) घास के रंग का। एक रंग जो कालापन लिये हुये हरा होता है।

किंकर—(पु० सं०) दास।

किंकर्तव्यविमूढ़—(वि० सं०) घबराया हुआ।

किंकिणी—(स्त्री० सं०) करधनी।

किंगिरी—(स्त्री० हि०) छोटी सारंगी।

किंतु—(अव्य० सं०) लेकिन। बल्कि।

किंवदंती—(स्त्री० सं०) अफ़-वाह।

किंवा—(अव्य० सं०) या। अथवा।

किचकिच—(स्त्री० अनु०) व्यर्थ की बकवाद। झगड़ा। किच-किचाना=दाँत पीसना। दाँत पर दाँत रखकर दबाना।

क़िता—(पु० अ०) काट-छाँट। संख्या। विस्तार का एक भाग। प्रदेश।

किताब—(स्त्री० अ०) पुस्तक। रजिस्टर। —त (अ०) लिखना।

किधर—(क्रि० हि०) किस तरफ़।

किनका—(पु० हि०) छोटा दाना। खुद्दी।

किनारा—(पु० फ़ा०) तट। बग़ल। किनारी=सुनहला या रुपहला पतला गोटा जो

कपड़ों के किनारे पर लगाया जाता है।

किफ़ायत—(स्त्री० अ०) कमख़र्ची। बचत। किफ़ायती= कमख़र्च करनेवाला।

क़िबला—(पु० अ०) मक्का। पूज्य व्यक्ति। पिता। —गाह, गाही=पिता। —नुमा= पश्चिम दिशा को बतानेवाला एक यन्त्र।

क़िमारख़ाना—(पु० अ०) जुआघर। क़िमारबाज़ी=जुवे का खेल। क़िमार=जुआ।

क़िमाश—(पु० अ०) तर्ज़। गंज़ीफे का एक रंग जिसे ताज भी कहते हैं।

कियारी—(स्त्री० हि०) क्यारी।

किरच—(स्त्री० हि०) एक सीधी तलवार जो नोक के बल सीधी भोंकी जाती है।

किरण—(पु० सं०) किरन। रोशनी की लकीर।

किरम—(फ़ा०) कृमि। कीड़ा।

किरमिजी—(वि० हि०) किरमिज के रंग का।

किराँची—(स्त्री० अं०) दो या चार पहियों की गाड़ी जो माल असबाब ढोने के काम में आती है। मालगाड़ी का डब्बा।

किराया—(पु० अ०) भाड़ा। किरायेदार=जो किसी की कोई वस्तु भाड़े पर ले।

किरासिन—(पु० अं० केरोसन) मिट्टी का तेल।

किलनी—(स्त्री० हि०) एक बहुत ही छोटा कीड़ा जो पशुओं के लगता है।

क़िला—(पु० अ०) गढ़। —बन्दी = दुर्ग-निर्माण। व्यूह-रचना। शतरंज में बादशाह को सुरक्षित घर में रखना।

किलोमीटर—(पु० अं०) दूरी की एक माप।

क़िल्लत—(स्त्री० अ०) कमी। संकोच।

किवाड़—(पु० हि०) कपाट।

किशमिश—(पु० फ़ा०) सुखाई हुई छोटी दाख। किश-

मिशी = किशमिश का। किशमिश के रंग का।

किशोर—(वि० सं०) ११ वर्ष से १५ वर्ष तक की अवस्था का। पुत्र। —क = छोटा बालक।

किश्त—(स्त्री० फ़ा०) शतरंज के खेल में बादशाह का किसी मोहरे के घात में पड़ना।

किश्तवार—(पु० फ़ा०) पटवारियों का एक काग़ज़ जिसमें खेतों का नम्बर, रक़बा आदि दर्ज रहता है।

किश्ती—(स्त्री० फ़ा०) नाव। —नुमा = नाव के आकार का।

किस—(सर्व० हि०) 'कौन' का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने के पहले प्राप्त होता है।

क़िसवत—(स्त्री० अ०) एक थैली जिसमें नाई अपने उस्तरे कैंची आदि रखते हैं।

किसमिस—(पु० फ़ा० किशमिश) किशमिश।

किसान—(पु० हि०) खेतिहर। किसानी = कृषि।

किसी—(सर्व० हि०) "कोई" का वह रूप जो उसे विभक्ति लगने से पहले प्राप्त होता है।

क़िस्त—(स्त्री० अ०) ऋण वा देन चुकाने का वह ढंग जिसमें सब रुपया एक बारगी न दे दिया जाय बल्कि उसके कई भाग करके प्रत्येक भाग के चुकाने के लिये अलग-अलग समय निश्चित किया जाय। —बन्दी = थोड़ा-थोड़ा करके रुपया अदा करने का ढंग। —वार = क़िस्त-क़िस्त करके। हर क़िस्त पर।

क़िस्मत—(स्त्री० अ०) भाग्य। कमिश्नरी। —वर = भाग्यवाला।

क़िस्सा—(पु० अ०) कहानी। समाचार। झगड़ा।

की—(अं०) वह पुस्तक जिसमें किसी पुस्तक के कठिन शब्दों के अर्थ या उनकी व्याख्या की गई हो। कुंजी।

कीच—(पु० हि०) कीचड़। —ड़ = गीली मिट्टी।

कीट—(पु० सं०) कीड़ा। जमी हुई मैल।

क़ीमत—(पु० अ०) दाम। क़ीमती=अधिक दामों का।

क़ीमा—(पु० अ०) बहुत छोटे छोटे टुकड़ों में कटा हुआ गोश्त (खाने के लिये)।

कीमिया—(स्त्री० फ़ा०) रसायन। —गर=रसायन बनाने वाला।

कीमुख़्त—(पु० अ०) गधे या घोड़े का चमड़ा जो हरे रंग का और दानेदार होता है।

कीर्त्तन—(पु० सं०) कथन। कृष्ण-लीला-सम्बन्धी भजन और कथा आदि। कीर्त्तनिया =कीर्त्तन करने वाला।

कीर्त्ति—(स्त्री० सं०) बड़ाई।

कीर्ति-स्तंभ—(पु० सं०) वह स्तंभ जो किसी की कीर्ति को स्मरण कराने के लिये बनाया जाय।

कील—(स्त्री० सं०) काँटा। नाक में पहनने का एक छोटा-सा आभूषण जिसका आकार लौंग के समान होता है। मुँहासे को कील। जाँते के बीचोबीच का एक खूँटा जिसके आधार पर वह गड़ा रहता है। वह खूँटी जिस पर कुम्हार का चाक घूमता है। —ना=मेख जड़ना। किसी मंत्र या युक्ति के प्रभाव को नष्ट करना। साँप को ऐसा मोहित कर देना कि वह किसी को काट न सके। वश में करना। कीला=बड़ी कील। कीली= किसी चक्र के ठीक मध्य के छेद में पड़ी हुई वह कील वा डंडा जिस पर वह चक्र घूमता है।

कीसः—(अ०) थैली।

कुँआँ—(पु० हि०) कुँआ। कूप। कुँइयाँ=छोटा कुँआ।

कुँआरा—(वि० हि०) बिन ब्याहा।

कुँई—(स्त्री० हि०) कुमुदिनी।

कुंकुम—(पु० सं०) केसर। लाल रंग की बुकनी जिसे स्त्रियाँ माथे में लगाती हैं।

कुंज—(पु० सं० फ़ा०) वह स्थान जिसके चारोंओर घनी लता छाई हो।

कुंजगली—(स्त्री० हि०) बगीचों में लता से छाया हुआ पथ। पतली तंग गली।

कुंजड़ा—(पु० हि०) एक जाति जो अब तरकारी बेचती है।

कुंजा—(पु० अ०) पुरवा। सुराही।

कुंजी—(स्त्री० हि०) चाभी। टीका।

कुंठित—(वि० सं०) जिसकी धार तेज़ न हो। मंद।

कुंड—(पु० सं०) पानी को रोक रखने के लिये पक्का गढ़ा। खेत में वह गहरी रेखा जो हल जोतने से पड़ जाती है।

कुँडमुँदनी—(स्त्री० हि०) कुल खेत बो चुकने पर अंतिम खेत बोना।

कुंडल—(पु० सं०) मुरकी। पहिये के आकार का एक आभूषण जिसे गोरखनाथ के अनुयायी कनफटे कानों में पहनते हैं। रस्सी आदि का गोल फंदा। कुंडलाकार=गोल। कुंडलिनी=तंत्र और उसके अनुयायी हठ-योग के अनुसार एक कल्पित वस्तु जो मूलाधार में सुषुम्ना नाड़ी की जड़ के नीचे मानी गई है। कुंडलिया=एक मात्रिक छन्द।

कुंडा—(पु० हि०) कछरा। दरवाज़े की चौखट में लगा हुआ कोंढ़ा जिसमें साकल फँसाई जाती है।

कुजा—(अव्य० फ़ा०) कहाँ? किस जगह?

कुतबः—(अ०) एक बार लिखना। लिखी हुई चीज़।

कुंद—(पु० सं०) जूही की तरह का एक पौधा। इसमें सफ़ेद फूल लगते हैं। —न=बहुत अच्छे और साफ़ सोने का पतला पत्तर। बढ़िया सोना। स्वच्छ। नीरोग। (फ़ा०) मन्द।

कुँदरू—(पु० हि०) एक बेल

जिसमें चार-पाँच अंगुल लंबे फल लगते हैं।

कुंदा—(पु० फ़ा०) लक्कड़। लकड़ी का टुकड़ा जिस पर रखकर बढ़ई लकड़ी गढ़ते हैं। बंदूक में वह पिछला लकड़ी का तिकोना भाग जिसमें घोड़ा और नली आदि जड़ी होती है और जो बन्दूक चलाने की ओर होता है। वह लकड़ी जिसमें अपराधी के पैर ठोंके जाते हैं। मूँठ। लकड़ी की बड़ी मोगरी। कुश्ती का एक पेंच। कुश्ती में एक प्रकार का आघात।

कुंदी—(स्त्री० हि०) धुले या रँगे हुये कपड़ों की तह करके उनकी सिकुड़न और रुखाई दूर करने तथा तह जमाने के लिये उसे लकड़ी की मोगरी से कूटने की क्रिया। खूब मारना।

कुँवर—(पु० हि०) पुत्र। राज-पुत्र। कुँवरि=कुमारी। राज-कन्या। कुँवारा=बिन ब्याहा।

कुँहड़ा—(पु० हि०) कुम्हड़ा एक फल है।

कुआर—(पु० हि०) आश्विन का महीना। कुआरा=कुआर का।

कुकड़ी—(स्त्री० हि०) कच्चे सूत का लपेटा हुआ लच्छा। खुखड़ी।

कुकरौंधा—(पु० हि०) छोटा पौधा।

कुकर्म—(पु० सं०) बुरा काम। कुकर्मी=पापी।

कुकुर—(पु० सं०) कुत्ता। —खाँसी=वह खाँसी जिसमें कफ न गिरे। ढाँसी। —दंता=जिसके मुख में कुकुरदंत हो।

कुकुरौंछी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की मक्खी जो पशुओं के बदन पर लगती है।

कुगति—(स्त्री० सं०) दुर्दशा।

कुच—(पु० सं०) छाती। स्तन।

कुचकुचाना—(क्रि० अनु०) थोड़ा कुचलना।

कुचक्र—(पु० सं०) षड्यंत्र।

कुचलना—(क्रि० हि०) पाँव से दबाना।

कुचला—(पु० हि०) एक प्रकार का वृक्ष और उसका बीज।

कुचाल—(स्त्री० हि०) बुरा आचरण। दुष्टता। कुचालिया = कुचाली। दुष्टता करनेवाला।

कुजाति—(स्त्री० सं०) नीच जाति।

कुज्जा—(पु० फ़ा०) मिट्टी का प्याला। मिस्री की बड़ी गोल डली।

कुटना—(पु० हि०) चुग़लख़ोर। स्त्रियों का दलाल। —पन = कुटनी का काम। झगड़ा लगाने का काम। कुटनी = दूती। इधर उधर की लगानेवाली। (सं०) कुट्टनी = कुटनी।

कुटनहारी—(स्त्री हि०) धान कूटने का काम करनेवाली स्त्री। कुटाई = कूटने का काम। कूटने की मज़दूरी। कुटौनी = धान कूटने का काम। धान कूटने की मज़दूरी।

कुटिया—(स्त्री० हि०) छोटी झोंपड़ी। कुटी = कुटिया। कुटीर = कुटी।

कुटिल—(वि० सं०) टेढ़ा। दग़ाबाज़। शठ। —कीट = साँप। —ता = टेढ़ापन। खोटाई। —पन = कुटिलता।

कुटुम्ब—(पु० सं०) परिवार। कुटुम्बी = परिवार वाला। कुटुम्ब के लोग।

कुटेव—(स्त्री० हि०) बुरी आदत।

कुट्टी—(स्त्री० हि०) छोटे गँड़ासे से बारीक कटा हुआ चारा। लड़कों का एक शब्द जिसका प्रयोग वे एक दूसरे से मित्रता तोड़ने के लिये दाँतों पर नाख़ून खुट से बुलाकर करते हैं। मैत्री-भंग।

कुठला—(पु० हि०) अनाज रखने का मिट्टी का एक बड़ा बर्तन। चूने की भट्टी।

कुठाँव—(स्त्री० हि०) बुरी जगह।

कुड़कुड़ाना—(क्रि० अनु०) मन ही मन कुढ़ना।

कुड़कुड़ी—(स्त्री० अनु०) घोड़े का एक रोग।

कुडौल—(वि० हि०) बेढंगा।

कुडंग—(पु० हि०) बुरा ढंग। कुढंगा=बुरी चाल का। बेढंगा।

कुढ़ना—(स्त्री० अ०) भीतर ही भीतर क्रोध करना। जलना। मसोसना।

कुतरना—(क्रि० हि०) दाँत से छोटा-सा टुकड़ा काट लेना।

कुतर्क—(पु० सं०) बकवाद। कुतर्की=बकवाद करनेवाला।

कुतर—(अ०) व्यास, जो परिध के दो भाग करता है।

कुतिया—(स्त्री० हि०) कुत्ती। कुत्ता=कुकुर।

कुतुब—(पु० अ०) ध्रुवतारा। किताब का जमा। —ख़ाना =पुस्तकालय। —फ़रोश= किताब बेचनेवाला। —नुमा =दिग्दर्शन यंत्र। कुतबा =(अ०) एक बार लिखना। लिखी हुई चीज़।

कुतूहल—(पु० सं०) उत्कंठा। कौतुक। खिलवाड़। अचंभा।

कुत्सा—(स्त्री० सं०) निन्दा। कुत्सित=निंदित। अधम।

कुथरू—(पु० हि०) आँख का एक रोग।

कुद्कना—(क्रि० हि०) कूदना। कुदक्का=उछल-कूद।

क़ुदरत—(स्त्री० अ०) शक्ति। प्रकृति। कारीगरी। क़ुदरती=प्राकृतिक। दैवी।

क़ुदूरत—(पु० फ़ा०) मलिनता। हृदय का मैल।

कुदान—(पु० सं०) कुपात्र को दान। कूदने की क्रिया। कूदने का स्थान।

कुदिन—(पु० सं०) आपत्ति का समय।

कुदृष्टि—(स्त्री०सं०) बुरी नज़र।

कुनकुना—(वि० हि०) आधा गर्म पानी।

कुनबा—(पु० हि०) परिवार। ख़ान्दान।

कुनबी—(पु० हि०) हिन्दुओं की एक जाति।

कुनाई—(स्त्री० हि०) बुरादा।
कुनैन—(पु० अं० क्विनिन) एक ओषधि।
कुपंथ—(पु० हि०) बुरा रास्ता। कुचाल। बुरा मत। कुपथ=कुपंथ।
कुपथ्य—(पु०सं०) बद-परहेज़ी।
कुपाठ—(पु० सं०) बुरी सलाह।
कुपात्र—(वि० सं०) अयोग्य।
कुपित—(वि० सं०) क्रोधित। नाराज़।
कुप्पा—(पु० हि०) चमड़े का बना हुआ घड़े के आकार का एक बड़ा बर्तन। (स्त्री०) कुप्पी।
कुफ़्र—(पु० अ०) मुसलमानो मत से भिन्न अन्य मत वा वाक्य।
.कुफ़्ल—(अ०) ताला।
कुबड़ा—(पु० हि०) जिसकी पीठ टेढ़ी हो गई हो। (स्त्री०) कुबड़ी।
कुबुद्धि—(वि० सं०) मूर्खता। बुरी सलाह।
कुबेला—(स्त्री० सं०) बुरा समय।
कुमंत्रणा—(स्त्री० सं०) बुरी सलाह।
कुमक—(स्त्री० तु०) सहायता। पक्षपात। कुमकी=कुमक से सम्बन्ध रखनेवाला।
कुमकुम—(पु० हि०) केशर। कुमकुमा।
.कुमरी—स्त्री० अ०) पंडुक की जाति की एक चिड़िया। पिड़को।
कुमार—(पु० सं०) पाँच वर्ष की आयु का बालक। पुत्र। युवराज। युवावस्था वा उससे प्रथम की अवस्थावाला पुरुष।
कुमारिका—(स्त्री० सं०) कुमारी। कुमारी=१२ वर्ष तक की अवस्था की कन्या।
कुमेरु—(पु० सं०) दक्षिणी ध्रुव।
कुम्मैत—(पु० तु० कुमेत) घोड़े का एक रंग जो स्याही लिये लाल होता है।

क़ुम्हड़ा—(पु० हि०) एक फैलने-वाली बेल। कुम्हड़े का फल।

क़ुम्हलाना—(क्रि० हि०) ताज़गी का जाता रहना।

कुम्हार—(पु० हि०) मिट्टी के बर्तन बनाने वाली जाति। मिट्टी का बर्तन बनानेवाला आदमी।

कुरता—(पु० तु०) एक पहनावा जो सिर डालकर पहना जाता है। कुरती=स्त्रियों का एक पहनावा जो फतुही की तरह का होता है।

.क़ुरबान—(वि० अ०) बलिदान। क़ुरबानी=बलि।

क़ुरसी—(स्त्री० अ०) एक प्रकार की चौकी जिसके पाये कुछ ऊँचे होते हैं, और जिसमें पीछे की ओर सहारे के लिये पटरी वा इसी प्रकार की और कोई चीज़ लगी रहती है।

क़ुरसीनामा—(पु० फ़ा०) वंश-वृक्ष।

.क़ुरान—(पु० अ०) अरबी भाषा की एक पुस्तक जो मुसल-मानों का धर्मग्रन्थ है।

कुराह—(स्त्री० फ़ा०) ख़राब रास्ता। कुराही=बदचलन। दुराचारी।

कुरिया—(स्त्री० हि०) मँड़ई।

कुरीति—(स्त्री० सं०) बुरी रीति। कुचाल।

कुरुई—(स्त्री० हि०) मौनी। मूँज की बनी छोटी डलिया।

कुरुख—(वि० सं० फ़ा०) नाराज़।

कुरूप—(वि० सं०) बदसूरत। बेढंगा। —ता=बदसूरती।

कुरेदना—(क्रि० हि०) खरों-चना।

क़ुर्क—(त्रि० तु०) ज़ब्त। —अमीन=वह सरकारी कर्म-चारी जो जायदाद की कुर्की करता है। —नामा=ज़ब्ती का परवाना। कुर्की=देन चुकाने या भागे हुये अपराधी को अदालत में हाज़िर कराने

के लिये कर्ज़दार या अपराधी की जायदाद का सरकार द्वारा ज़ब्त किया जाना।

कुर्मी—(पु० हि०) कुनबी।

कुलंग—(पु० फ़ा०) एक पक्षी। मुर्ग़ी।

कुलंजन—(पु० सं०) पान की जड़ या डंठल।

कुल—(पु० सं०) वंश। जाति। समूह। —कंटक=अपनी कुचाल से अपने वंश को दुखी करनेवाला आदमी। —कलंक =वंश की कीर्ति में धब्बा लगानेवाला। —तारन=कुल को पवित्र करनेवाला। —देव =कुल का प्राचीन देवता। —पति=घर का मालिक। अध्यापक जो विद्यार्थियों का भरण-पोषण करता हुआ उन्हें शिक्षा दे। वह ऋषि जो दस हज़ार ब्रह्मचारियों को अन्न और शिक्षा दे। महंत। —पूज्य=जो कुल का पूज्य हो। —वधू—कुलवती स्त्री। —वंत=कुलीन। —वान= कुलीन। कुलांगार=कुल-नाशक।

कुलकुलः—(पु० अ०) सुराही में से पानी उँड़लते समय का शब्द।

कुलक्षण—(पु० सं०) बुरा लक्षण। बदचलनी।

कुलटा—(स्त्री० सं०) व्यभि-चारिणी।

कुलफ़ा—(पु० फ़ा० खुर्फ़ा) एक प्रकार का साग।

कुलफ़ी—(स्त्री० हि०) बर्फ़ जमा हुआ दूध, मलाई वा कोई शर्बत।

कुलबुलाना—(क्रि० अनु०) बहुत से छोटे-छोटे जीवों का एक साथ मिलकर हिलना-डोलना। धीरे-धीरे हिलना-डोलना। चंचल होना। कुल बुलाहट=धीरे-धीरे हिलने-डोलने का भाव।

कुलह—(स्त्री० फ़ा०) टोपी। शिकारी चिड़ियों की आँख पर का ढकन। कुलहा= टोपी। शिकारी चिड़ियों की

आँख ढकने की अँधियारी। कुलहो=कनटोप।

कुलाग़—(फ़ा०) जङ्गली कौश्रा।

कुलाबा—(पु० अ०) लोहे का जमुरका जिसके द्वारा किवाड़ बाज़ू से जकड़ा रहता है।

कुलाह—(पु० सं०) भूरे रंग का घोड़ा। (स्त्री० फ़ा०) एक प्रकार की ऊँची टोपी जो फ़ारस और अफ़ग़ानिस्तान आदि में पहनी जाती है।

कुली—(पु० तु०) बोझ ढोने-वाला।

कुलीन—(वि० सं०) अच्छे घराने का। पवित्र।

कुल्ला—(पु० हि०) (स्त्री० कुल्ली) मुख को साफ़ करने के लिये उसमें पानी लेकर इधर-उधर हिलाकर फेंकने की क्रिया। उतना पानी जितना एक बार मुँह में लिया जाय।

कुल्हड़—(स्त्री० हि०) पुरवा। कुल्हिया=छोटा पुरवा।

कुल्हाड़ा—(पु० हि०) एक औज़ार जिससे बढ़ई आदि पेड़ काटते हैं। टाँगा। कुल्हाड़ी=टाँगी।

कु—(सं०) बुरा। —वाक्य=गाली। —बासना=बुरी इच्छा। —विचार=बुरा विचार। —शासन=बुरा प्रबन्ध। —संग=बुरा साथ। —संगति=बुरों का संग। —संस्कार=बुरा संस्कार। —समय=बुरा समय। संकट का समय। —साइत=बुरी साइत।

कुश—(पु० सं०) काँस की तरह की एक घास।

कुशन—(पु० अं०) मोटा गद्दा। तकिया।

कुशल—(त्रि० सं०) चतुर। श्रेष्ठ। पुण्यशील। मंगल। खैरियत। —क्षेम=राज़ी खुशी। —ता=चतुराई। योग्यता। —प्रश्न=किसी का कुशल-मंगल पूछना। कुशलता=कुशल-समाचार।

कुशाग्र—(वि० सं०) तेज़।

कुशादगो—(स्त्री० फ़ा०)

फ़ैज़ाव । कुशादा=खुला हुआ । विस्तृत ।

कुशासन—(पु० सं०) कुश का बना हुआ आसन।

कुश्ता—(पु० फ़ा०) भस्म ।

कुश्ती—(स्त्री० फ़ा०) मल्लयुद्ध । —बाज़=पहलवान ।

कुष्ठ—(पु० सं०) कोढ़ ।

कुसी—(स्त्री०हि०) हलका फाल ।

कुसुंभ—(पु०सं०) कुसुम । केसर । कुसुंभी=कुसुम के रंग का ।

कुसुम—(सं०) फूल । —बाण= कामदेव । —शर=कामदेव । कुसुमांजलि=फूल से भरी हुई अंजली । पुष्पांजलि । न्याय का एक ग्रन्थ । कुसुमाकर=बसंत । वाटिका । कुसुमायुध=कामदेव । कुसुमावलि =फूलों का गुच्छा । कुसुमित=फूला हुआ ।

कुहकना—(क्रि० अ० हि०) पक्षी का मधुर स्वर में बोलना ।

कुहनी—(स्त्री० सं०) हाथ और बाहु के जोड़ की हड्डी ।

कुहर—(पु० सं०) गड्ढा । सूराख़ ।

कुहरा—(पु० हि०) वायु में जल के अत्यन्त सूक्ष्म कणों का समूह जो ठंड पाकर वायु में मिली हुई भाप के जमने से उत्पन्न होता है। कुहासा= कुहरा ।

कुहराम—(पु० अ० क़हर-आम) हाहाकार ।

कुहाना—(क्रि० हि०) नाराज़ होना ।

कूच—(फ़ा०) गली । कूचा ।

कूँड—(स्त्री० हि०) हल जोतने से बनी हुई रेखा । सिर को बचाने के लिये लोहे की एक ऊँची टोपी । कूँडा=पानी रखने का मिट्टी का गहरा बर्तन । गमला । रोशनी करने की एक प्रकार की बड़ी हाँडी जिसको डोल भी कहते हैं । कूँड़ी=पथरी । छोटी नाँद । कोल्हू के बीच का वह गड्ढा जिसमें जाठ रहती है ।

कूईं—(स्त्री० हि०) जल में होने

वाला कमल की तरह का एक फूल।

कूए—(फ़ा०) गली। कूचा।

कूकर—(पु० हि०) कुत्ता।

कूच—(पु० तु०) रवानगी।

कूचा—(पु० फ़ा०) छोटा रास्ता। झाड़ू।

कूज—(स्त्री० हि०) ध्वनि। —ना=कोमल और मधुर शब्द करना। कूजित=ध्वनित।

कूजा—(पु० फ़ा० कूज़ा) कुल्हड़। मिट्टी के पुरवे में जमाई हुई मिसरी।

कूट—(पु० सं०) पहाड़ की ऊँची चोटी। गूढ़ भेद। —नीति=दाँव-पेच की नीति या चाल। —युद्ध=धोखे की लड़ाई। —स्थ=छिपा हुआ। अविनाशी। अचल। आला दर्जे का।

कूटू—(पु० हि०) एक प्रकार का पौधा। फाफर।

कूड़ा—(पु० हि०) ज़मीन पर पड़ी हुई गर्द। बेकाम चीज़। —ख़ाना=जहाँ कूड़ा फेंका जाता है।

कूढ़—(पु० हि०) हल का वह भाग जिसके एक सिरे पर मुठिया और दूसरे पर खोंपी होती है। (वि०) अज्ञानी। —मग़ज़=मंद बुद्धि।

कूच—(फ़ा०) गमन। रवाना होना।

कूचा—(फ़ा०) गली।

कून—(फ़ा०) गुदा। मलद्वार।

कूदना—(क्रि० हि०) फाँदना। जान-बूझकर ऊपर से नीचे की ओर गिरना। किसी काम या बात के बीच में सहसा आ मिलना या दख़ल देना। क्रम-भङ्ग करके एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँच जाना। अत्यन्त प्रसन्न होना। बढ़-बढ़कर बातें करना।

कूप—(पु० सं०) कुआँ।

कूपन—(पु० अं०) मनीआर्डर फ़ार्म का वह भाग जिस पर रुपया भेजने वाला कुछ समाचारादि लिख सकता है।

कूप-मंडूक—(पु० सं०) कुएँ का मेढक। वह आदमी जो अपना स्थान छोड़कर कहीं बाहर न गया हो या बाहरी संसार की जिसको कुछ भी ख़बर न हो।

कूवड़—(पु० हि०) पीठ का टेढ़ापन। किसी चीज़ का टेढ़ापन।

कूल्हा—(पु० हि०) कोख के नीचे कमर में पेड़ू के दोनों ओर निकली हुई हड्डियाँ।

क़ूवत—(स्त्री० अ०) ज़ोर।

कृत—(वि० सं०) किया हुआ। रचित। —कर्मा=कामयाब। —कार्य=कामयाब। —कृत्य =कृतार्थ। —घ्न=नमक हराम। —घ्नी =कृतघ्न। —ज्ञ = एहसान मानने वाला। —ज्ञता=निहोरा मानना। —युग=सतयुग। —विद्य=जिसे विद्या का अभ्यास हो। कृतांजलि=हाथ जोड़े हुये। कृतांत=अंत करने वाला। यम। कृतात्मा =महात्मा। कृतार्थ=सफल-मनोरथ। सन्तुष्ट। कृति= करतूत। कार्य। कृती= पुण्यात्मा। साधु। कुशल। कृत्य=कर्तव्य कर्म। कृत्याकृत्य =भला और बुरा काम। कृत्रिम=बनावटी। कृदंत= वह शब्द जो धातु में कृत प्रत्यय लगाने से बने।

कृत्तिका—(स्त्री०सं०) एक नक्षत्र।

कृपण—(पु० सं०) कंजूस। नीच।

कृपया—(क्रि० वि० सं०) कृपा करके।

कृपा—(स्त्री० सं०) दया। क्षमा। कृपा-पात्र=कृपा का अधिकारी। कृपायतन=कृपा का भवन। कृपालु=दयालु।

कृपाण—(पु० सं०) तलवार। कटार।

कृमि—(पु० सं०) छोटा कीड़ा।

कृश—(वि० सं०) दुबला-पतला। छोटा। —ता=दुबलापन। कमी। —त्व=दुबलापन। कमी। कृशित=दुर्बल।

कृशानु—(पु० सं०) अग्नि।

कृषक—(पु० सं०) किसान। कृषि=खेती। कृषिकार=किसान।

कृष्ण—(वि० सं०) काला। नीला या आसमानी। यदुवंशी वसुदेव के पुत्र जो देवकी के गर्भ से उत्पन्न हुये थे। —पत्त=अँधियारा पत्त। —सखा=अर्जुन। —सार=काला मृग। कृष्णाष्टमी=जिस दिन कृष्णचन्द्र का जन्म हुआ था। कृष्णा=द्रौपदी। कृष्णा-जिन=काले मृग का चमड़ा।

केँचुआ—(पु० हि०) एक बर-साती कीड़ा जो एक बालिश्त या इससे कुछ और लंबा होता है। इसके तन में हड्डी नहीं होती। केँचुए के आकार का सफ़ेद कीड़ा जो पेट से मल द्वारा बाहर निकलता है।

केँचुल—(स्त्री० हि०) साँप के शरीर पर की खोल।

केन्द्र—(पु० सं०) मध्य। नाभि। बीच का स्थान।

केकड़ा—(पु० हि०) पानी का एक कीड़ा जिसके आठ टाँगें और दो पंजे होते हैं।

केका—(स्त्री० सं०) मोर की बोली। केकी=मोर।

केतकी—(स्त्री० सं०) एक प्रकार का छोटा झाड़ या पौधा।

कदली—(पु० सं०) केले का पेड़।

केमरा—(पु० अं०) फोटो खींचने का यंत्र।

केराना—(क्रि० हि०) सूप में अन्न रखकर उसे हिला-हिला-कर बड़े और छोटे दाने अलग करना। नमक मसाला हलदी आदि चीज़ें जो नित्य के व्यवहार में आती और पंसारियों के यहाँ मिलती हैं।

केरानी—(पु० अं० क्रिश्चियन) वह मनुष्य जिसके माता-पिता में से कोई एक युरोपियन और दूसरा हिन्दुस्तानी हो। क्लर्क।

केराव—(पु० हि०) मटर।

केरोसिन—(पु० अं०) मिट्टी का तेल।

केला—(पु० हि०) एक प्रकार का पेड़। केले का फल।

केलि—(स्त्री० सं०) खेल। मैथुन। हँसी।

केवट—(पु० हि०) क्षत्रिय पिता और वैश्या माता से उत्पन्न एक वर्ण-संकर जाति।

केवटी दाल—(स्त्री० हि०) दो या अधिक प्रकार की एक में मिली हुई दाल।

केवड़ा—(पु० हि०) सफ़ेद केतकी का पौधा जो केतकी से कुछ बड़ा होता है। एक पेड़ जो हरद्वार के जङ्गलों और बरमा में होता है।

केवल—(वि० सं०) अकेला। शुद्ध। उत्तम। सिर्फ़।

केशव—(पु० सं०) कृष्ण का एक नाम।

केस—(पु० अं०) मुक़दमा। हालत। घटना।

केसर—(पु० सं०) एक प्रकार के फूल की पंखड़ियाँ जानवरों की गर्दन पर के बाल। केसरिया=केसर के रंग का। केसरी=सिंह।

कैँची—(स्त्री० तु०) कतरनी।

कैँड़ा—(पु० हि०) पैमाना। चाल। चालबाज़ी।

कैंप—(पु० अं०) छावनी। पड़ाव।

कैटलग—(पु० अं०) सूचीपत्र। फेहरिस्त।

कैथ—(पु० हि०) एक कँटीला पेड़ जो बेल के पेड़ के सामान होता है। कैथी=एक पुरानी लिपि जो नागरी से मिलती जुलती है। प्रायः कायस्थ लोग इसमें लिखते हैं।

क़ैद—(स्त्री० अ०) बन्धन। दंड। कारावास। —क=कागज़ की पट्टी जिसमें किसी एक विषय या व्यक्ति से संबंध रखनेवाले काग़ज़ादि रक्खे जाते हैं। —ख़ाना=कारागार। जेलख़ाना। —तनहाई=कालकोठरी। —महज़

=सादी कैद। —सख़्त=कड़ी क़ैद। क़ैदी=बन्दी।

कैंप—(स्त्री० अं०) टोपी।

कैपिटल—(पु० अं०) धन। पूँजी। राजधानी।

कैपिटलिस्ट—(पु० अं०) पूँजीपति।

कैफ़—(पु० अ०) नशा। कैफी=मतवाला। नशेबाज़।

कैफ़ियत—(स्त्री० अ०) समाचार। विवरण।

कैबिनेट—(स्त्री० अं०) मुख्य मंत्रियों की वह विशेष सभा जो किसी एकांत स्थान में बैठ कर राज्य-प्रबन्ध पर विचार करे। मंत्रि-मंडल। लकड़ी का बना हुआ सामान। फोटो का एक आकार जो कार्ड साइज़ का दूना होता है।

कैरट—(पु० अं०) करात। एक प्रकार का मान।

कैलंडर—(पु० अं०) अँगरेजी तिथि-पत्र या पंचांग। सूची। रजिस्टर।

कैलास—(पु० सं०) हिमालय की एक चोटी का नाम।

कैवल्य—(पु० सं०) मुक्ति।

कैश—(पु० अं०) रुपया-पैसा। नगदी। (वि०) जिसका दाम नगद दिया गया हो। —बॉक्स=रुपये रखने का छोटा संदूक।

कैशियर—(पु० अं०) ख़ज़ाञ्ची।

क़ैस—(अ०) लैला के प्रेमी मजनूँ का नाम।

कैसर—(पु० लै० सीज़र) सम्राट्। जर्मनी के सम्राट् की उपाधि।

कैसा—(वि० हि०) किस प्रकार का।

कोंकण—(पु० सं०) दक्षिण भारत का एक प्रदेश।

कोँचना—(क्रि० हि०) चुभाना।

कोँचा—(पु० हि०) बहेलियों की वह लम्बी लग्गी जिसके पतले सिरे पर वे लासा लगाये रहते हैं और जिससे वृक्ष पर बैठे हुए पक्षी को कोँचकर फँसा लेते हैं। मोटी रोटी।

कोँछ—(पु० हि०) स्त्रियों के अंचल का एक कोना।

कोँढ़ा—(पु० हि०) धातु का वह छल्ला वा कड़ा जिसमें जंजीर या और कोई वस्तु अटकाई जाती है।

कोँपर—(पु० हि०) छोटा अध-पका आम।

कोँहड़ा—(पु० हि०) कुम्हड़ा। कोँहड़ौरी=कुम्हड़े की या पेठे की बनाई हुई बरी।

कोश्रा—(पु० हि०) रेशम के कीड़े का घर। टसर नामक रेशम का कीड़ा। महुए का पका फल। कटहल के पके हुये बीज।

कोइरी—(पु० हि०) एक जाति। जो तरकारी बोती है।

कोइली—(स्त्री० हि०) वह कच्चा आम जिसमें किसी प्रकार का आघात लगने से एक काला सा दाग पड़ जाता है।

कोई—(सर्व०) एक भी (मनुष्य)।

कोका—(पु० अं०) दक्षिणी अमेरिका का एक वृक्ष जिससे कोकेन निकलती है। (तु०) धाय की सन्तान। कोकेन= कोका नामक वृक्ष की पत्तियों से तैयार की हुई एक प्रकार की गंधहीन और सफ़ेद रंग की औषधि। कोक-शास्त्र=रति करने की क्रिया बतानेवाला शास्त्र जिसे कोक पण्डित ने बनाया था।

कोकिल—(स्त्री० सं०) कोयल। कोकिला=कोयल।

कोच—(पु० अं०) गद्देदार बढ़िया पलँग, बेंच या आराम कुर्सी। —ना=धँसाना। —क= (फ़ा०) छोटा।

कोचमैन—(पु० अं०) घोड़ागाड़ी हाँकनेवाला।

कोच वक्स—(पु० अं०) घोड़ा-गाड़ी में वह ऊँचा स्थान जिसपर हाँकनेवाला बैठता है। कोचवान=घोड़ागाड़ी हाँकनेवाला।

कोचीन—(पु० हि०) मद्रास प्रान्त की एक देशी रियासत

जो ट्रावनकोर राज्य के उत्तर में है।

कोट—(पु० सं०) क़िला। राज-मन्दिर। (अं०) अँगरेज़ी ढंग का एक पहनावा जो कमीज़ के ऊपर पहना जाता है। —पाल=क़िले की रक्षा करनेवाला। कोतवाल।

कोटर—(पु० सं०) पेड़ का खोखला भाग।

कोटि—(स्त्री० सं०) धनुष का सिरा। कमान का गोशा। श्रेणी। (वि०) करोड़। —शः=करोड़ों।

कोटेशन—(पु० अं०) लेख वा वाक्य का उद्धृत अंश। सीसे का ढला हुआ चौकोर पोला टुकड़ा जो कम्पोज़ करने में खाली स्थान भरने के काम में आता है।

कोठरी—(स्त्री० हिं०) छोटा कमरा। कोठा=बड़ी कोठरी। भंडार। अटारी। पेट। गर्भाशय। घर। कोठार=भंडार। कोठारी=भंडारी। कोठी=हवेली। बँगला। बड़ी दूकान जिसमें थोक की बिक्री होती हो। बखार। कोठीवाल=महाजन। बड़ा। व्यापारी।

कोड—(पु० अं०) संकेत। विधान। किसी विषय के प्रयोग के नियम आदि का संग्रह। क़ानून।

कोड़ा—(पु० हिं०) चाबुक।

कोड़ी—(स्त्री० अं०) बीस का समूह।

कोढ़—(पु० हिं०) एक प्रकार का रक्त और त्वचा संबन्धी रोग। कोढ़ी=कोढ़ रोग से पीड़ित मनुष्य।

कोण—(पु० सं०) कोना।

कोतल—(पु० फ़ा०) जलूसी घोड़ा। (वि०) खाली।

कोतल गारद (पु० अं० क्वार्टर गार्ड) छावनी का वह प्रधान स्थान जहाँ हर समय गारद रहती है।

कोतवाल—(पु० सं० कोट पाल) पुलिस का इन्स्पेक्टर।

कोतह—(वि॰ फ़ा॰) छोटा। —गर्दन = जिसकी गर्दन छोटी हो। कोताह=छोटा। कोताही=कमी।

कोथला—(पु॰ हि॰) बड़ा थैला। पेट। कोथली=रुपये आदि रखने की एक प्रकार की लंबी पतली थैली जिसे लोग कमर में बाँधकर रखते हैं। गँजिया।

कोना—(पु॰ हि॰) गोशा। नुकीला सिरा।

कोप—(पु॰ सं॰) क्रोध।

कोफ़्त—(पु॰ फ़ा॰) रंज। परेशानी।

कोफ़्ता—(पु॰ फ़ा॰) कूटे हुये मांस का बना हुआ एक प्रकार का कबाब।

कोबा—(पु॰ फ़ा॰) मँगरी। दुरमुट।

कोमल—(वि॰ सं॰) मुलायम। सुकुमार। सुन्दर। —ता= नरमी। मधुरता।

कोयर—(पु॰ हि॰) सागपात। वह हरा चारा जो गौ-बैल आदि को दिया जाता है।

कोयल—(स्त्री॰ हि॰) कोकिला।

कोयला—(पु॰ हि॰) वह जला हुआ अंश जो जली हुई लकड़ी के अंगारों को बुझाने से बचता है।

कोया—(पु॰ हि॰) आँख का डेला। आँख का कोना।

कोर—(स्त्री॰ हि॰) किनारा। कोना। (अं॰) पलटन। सैन्य-दल।

कोर-कसर—(स्त्री॰ हि॰+फ़ा॰) ऐब और कमी। अधिकता या न्यूनता।

कोरट—(पु॰ अं॰ कोर्ट आफ़ वार्ड्स) कोर्ट आफ़ वार्ड्स। किसी जायदाद का कोर्ट आफ़ वार्ड्स के प्रबन्ध में आना या लिया जाना।

कोरना—(क्रि॰ हि॰) लकड़ी आदि में कोर निकालना। नक़्क़ाशी करना।

कोरनिश—(तु॰) झुक-झुककर सलामें करना।

कोरम—(पु० अं०) कार्य-निर्वाहक-सदस्य-संख्या । निश्चित संख्या ।

क़ोरमा—(पु० तु०) अधिक घी में भुना हुआ एक प्रकार का मांस जिसमें जल का अंश या शोरवा बिल्कुल नहीं होता ।

कोरस—(अं०) कइयों का मिलकर एक स्वर में गाना-बजाना ।

कोरा—(वि० हि०) जिसका व्यवहार न हुआ हो । कपड़ा वा मिट्टी का बर्तन जिससे जल का स्पर्श न हुआ हो । सादा । खाली । वेदाग़ । मूर्ख । धनहीन । केवल । —पन= नवीनता ।

कोरी—(पु० हि०) हिन्दू जुलाहा । वस्तुओं का समूह । जो काम में न लाई गई हो । सादी ।

कोर्ट—(पु० अं०) अदालत । —आफ़ वार्ड्स=वह सरकारी विभाग जिसके द्वारा किसी अनाथ, विधवा या अयोग्य मनुष्य की भारी जायदाद का प्रबन्ध होता है । —इन्स्पेक्टर=पुलीस का वह कर्मचारी जो पुलीस की ओर से फ़ौजदारी अदालतों में मुकद्दमों की पैरवी करता है । —फ़ीस=अदालती रसूम । —मार्शल=फ़ौजी अदालत जिसमें सेना के नियमों का भंग करनेवाले, सेना छोड़कर भागनेवाले तथा बाग़ी सिपाहियों का विचार होता है । —शिप=एक पाश्चात्य प्रथा जिसके अनुसार पुरुष किसी स्त्री को अपने साथ विवाह करने के लिये उद्यत और अनुकूल करता है ।

कोर्स—(पु० अं०) पाठ्यक्रम । पाठ्य-पुस्तक ।

कोषाध्यक्ष—(पु० सं०) ख़ज़ांची ।

कोला—(अं०) अफ्रिका के गर्म प्रदेशों में होनेवाला एक पेड़ ।

कोलाहल—(पु० सं०) शोर।

कोलिया—(स्त्री० हि०) तंग रास्ता।

कोविद—(वि० सं०) पंडित।

कोश—(पु० सं) अंडा। डिब्बा। डिक्शनरी। —कार=शब्द-कोश बनानेवाला।—वृद्धि=अंड-वृद्धि का रोग। कोशाधिप, कोशाधिपति=ख़ज़ानची—कोशाधीश=भंडारी। कोष=कोश।

कोशल—(पु० सं०) सरयू वा घाघरा नदी के दोनों तटों पर का देश। कोशल।

कोशिश—(पु० फ़ा०) प्रयत्न।

कोष्ठ—(पु० सं०) पेट का भीतरी हिस्सा। कोठा। —क=किसी प्रकार की दीवार। किसी प्रकार का चक्र जिसमें बहुत से घर हों। लिखने में एक प्रकार का चिह्नों का जोड़ा जिसके भीतर कुछ वाक्य या अंक आदि लिखे जाते हैं। (अं०) ब्रैकट। —बद्ध=पेट में मल का रुकना। —शुद्धि=पेट का मल-रहित और बिल्कुल साफ़ हो जाना।

कोस—(पु० हि०) दूर की एक नाप। जो ३५२० गज़ की मानी जाती है।

कोसना—(क्रि० हि०) शाप के रूप में गालियाँ देना।

कोसा—(पु० हि०) एक प्रकार का रेशम जो मध्य भारत में अधिक होता है। मिट्टी का बड़ा दीया। कोसिया=मिट्टी का छोटा कसोरा। चूना रखने की कूँड़ी।

कोह—(फ़ा०) पहाड़।

कोहकन—(फ़ा०) फ़रहाद। पहाड़ खोदनेवाला।

कोहकाफ़—(पु० फ़ा०) योरप और एशिया के बीच का पहाड़। परिस्तान।

कोहनूर—(पु० फ़ा०) एक बहुत बड़ा और प्रसिद्ध हीरा।

कोहबर—(पु० हि०) वह स्थान या घर जहाँ विवाह के समय

कुल-देवता स्थापित किये जाते हैं।

कोहा—(पु० हि०) मिट्टी का बरतन। खोपड़ी के आकार का मिट्टी का वर्तन।

कोहान—(पु० फ़ा०) ऊँट की पीठ पर का कूबड़।

कोहिस्तान—(पु० फ़ा०) पहाड़ी देश।

कौँची—(स्त्री० हि०) बाँस की पतली टहनी।

कौंट—(पु० अं०) युरोप के सामंतों या बड़े-बड़े जमीदारों की उपाधि।

कौंसल—(पु० अं०) बैरिस्टर। एडवोकेट।

कौंसलर—(पु० अं०) परामर्श-दाता।

कौंसिल—(अं०) विचार-सभा।

कौच—(स्त्री० अं०) मोटे गद्दे का अँगरेज़ी पलँग वा बेंच।

कौटुम्बिक—(वि० सं०) कुटुम्ब का। परिवारवाला।

कौड़ी—(स्त्री० हि०) समुद्र का एक कीड़ा जो घोंघे की तरह हड्डी के एक ढाँचे के अन्दर रहता है। कौड़ा=बड़ी कौड़ी। कौड़ियाला=कौड़ी के रंग का।

कौड़िल्ला—(पु० हि०) मछली पकड़कर खानेवाली एक चिड़िया।

कौड़ेना—(पु० हि०) कसेरों का लोहे का एक औज़ार।

कौतुक—(पु० सं०) कुतूहल। दिल्लगी। खेल। तमाशा। कौतुकी=कौतुक करनेवाला। खेल। तमाशा करनेवाला। कौतूहल=कौतुक।

कौथ—(स्त्री० हि०) कौन सी तिथि। कौन सम्बन्ध। कौथा=किस संख्या का।

क़ौम—(स्त्री० अ०) जाति।

क़ौमियत—(स्त्री० अ०) जातीयता।

क़ौमी—(वि० अ०) जातीय।

कौर—(पु० हि०) निवाला।

कौरना—(क्रि० हि०) सेंकना।

कौलंज—(पु० यू० कूलंज) बाय-सूल। कॉलिक पेन।

कौल—(पु० सं०) वाममार्गी ।
क़ौल—(पु० तु० करावल) सेना की छावनी का मध्य भाग । (अ०) कथन । प्रतिज्ञा ।
क़ौवाल—(पु० अ०) मुसलमानों में गवैयों की एक जाति जो क़ौवाली गाती है। क़ौवाली=एक प्रकार का गाना जो पीरों की मज़ार या सफ़ियों की मजलिसों में होता है ।
कौशल—(पु० सं०) कुशलता । चतुराई । कौशल देश का निवासी । कौशल्या=रामचन्द्र की माता ।
कौस—(अ०) कमान । परिधि का टुकड़ा ।
कौसकुज़ा—(अ०) इन्द्र-धनुष ।
क्यों—(क्रि० वि० हि०) किस कारण ? किस भाँति ।
क्रंदन—(पु० सं०) रोना ।
क्रम—(पु० सं०) शैली । सिलसिला । —शः=सिलसिलेवार । धीरे-धीरे । क्रमागत=क्रमशः किसी रूप को प्राप्त । परंपरागत । क्रमानुसार=क्रमशः ।
क्रय—(पु० सं०) मोल लेना । क्रयी=मोल लेनेवाला । क्रय्य=जो बिक्री के लिये रक्खा जाय ।
क्रांति—(स्त्री० सं०) खगोल में वह कल्पित वृत्त जिस पर सूर्य्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता हुआ जान पड़ता है। फेर-फार । —मंडल=वह वृत्त जिस पर सूर्य्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता हुआ जान पड़ता है। —वृत्त=सूर्य्य का मार्ग । इन्क़िलाब ।
क्राइस्ट—(पु० अं०) ईसामसीह ।
क्राउन—(पु० अं०) राजमुकुट। छापे के कागज़ की एक नाप जो १९ इंच चौड़ा और बीस इंच लम्बा होता है । राजा ।
क्राउन कालोनी—(स्त्री० अं०) वह उपनिवेश जो किसी राज्य के अधीन हो ।

क्राउन प्रिंस—(पु० अं०) युवराज।

क्रिकेट—(अं०) गेंद का एक खेल।

क्रिमिनल इन्वेस्टिगेशन डिपार्टमेंट—(पु० अं०) खुफिया महकमा। पुलिस। सी० आई० डी०।

क्रिमिनल पोसीजर कोड—(पु० अं०) दंड-विधान। ज़ाब्ता फौजदारी।

क्रिया—(स्त्री० सं०) चेष्टा। अनुष्ठान। शौचादि कर्म। प्रेत-कर्म। उपाय। —निष्ठ= स्नान, संध्या, तर्पणादि नित्य-कर्म करनेवाला। —वान कर्मनिष्ठ।

क्रिस्टल—(पु० अं०) बिल्लौर। शोरे आदि का जमा हुआ रवादार टुकड़ा।

क्रिस्टान—(पु० अं०) "क्रिस्तान =ईसाई। क्रिस्तानी= ईसाई मतानुसार।

क्रीड़ा—(स्त्री० सं०) कल्लोल।

क्रीत—(वि० सं०) क्रय किया हुआ। —दास=ज़रख़रीद गुलाम।

क्रीम—(अं०) मलाई।

क्रूज़र—(पु० अं०) तेज चलनेवाला हथियारबन्द जहाज़। रक्षक जहाज़।

क्रूर—(वि० सं०) निर्दय। —कर्मा=क्रूर काम करनेवाला। —ता=कठोरता। दुष्टता।

क्रूस—(पु० अं० क्रास) ईसाइयों का एक प्रकार का धर्म-चिह्न।

क्रेडिट—(पु० अं०) बाज़ार में मान मर्यादा, जिसके कारण मनुष्य लेनदेन कर सकता है। साख।

क्रेता—(पु० सं०) मोल लेनेवाला।

क्रेन—(अं०) बोझा उठानेवाली चोंचनुमा मशीन।

क्रोड़पत्र—(पु० सं०) अतिरिक्त पत्र। सप्लीमेंट।

क्रोध—(पु० सं०) गुस्सा।

क्रोधित=क्रुद्ध । क्रोधी=क्रोध करनेवाला ।

क्लच—(अं०) मोटर के रोकने का एक पुरज़ा ।

क्लब—(पु० अं०) साहित्य, विज्ञान, राजनीति आदि सार्वजनिक विषयों पर विचार करने अथवा आमोद प्रमोद के लिये संघटित की हुई कुछ लोगों की समिति । मनोविनोद की जगह ।

क्लर्क—(पु० अं०) मुंशी । लेखक ।

क्लांत—(वि० सं०) थका हुआ । क्लांति=परिश्रम ।

क्लाउन—(पु० अं०) सरकस आदि का मसख़रा ।

क्लाक—(स्त्री० अं०) बड़ी घड़ी जो लकड़ी आदि के चौखटों में जड़ी होती है । दीवार पर की घड़ी ।

क्लाक टावर—(पु० अं०) घंटा-घर ।

क्लाथ—(अं०) कपड़ा ।

क्लारनेट—(पु० अं०) एक प्रकार का अँगरेज़ी बाजा जो मुँह से बजाया जाता है ।

क्लारेट—(पु० अं०) एक प्रकार की विलायती शराब ।

क्लास—(पु० अं०) दरजा ।

क्लिप—(स्त्री० अं०) पंजेनुमा एक कमानी जिसमें चिट्ठियों कागज़ादि को एकत्र करके इसलिए लगाया जाता है कि वे सब इधर-उधर न होने पावें । पकड़ने की चिमटी ।

क्लियर—(क्रि० अं०) साफ़ करना ।

क्लिशित—(वि० सं०) क्लेश पाया हुआ । क्लिष्ट=दुखी । कठिन । —कल्पना=बहुत घुमा-फिरा कर लगाया हुआ अर्थ ।

क्लीव—(पु० सं०) नामर्द । डरपोक ।

क्लेम—(क्रि० अं०) दावा ।

क्लेश—(पु० सं०) दुःख ।

क्लैव्य—(पु० सं०) नपुंसकता ।

क्लोरोफ़ार्म—(पु० अं०) एक प्रसिद्ध तरल औषधि जिसके

सूँघने से आदमी बेहोश हो जाता है।

क्वचित—(क्रि॰ वि॰ सं॰) शायद ही कोई।

कारंटाइन—(पु॰ अं॰) वह स्थान जहाँ प्लेग या दूसरी छूतवाली बीमारी के दिनों में रेल या जहाज़ के यात्री कुछ दिनों के लिये सरकार की ओर से रोक कर रक्खे जाते हैं।

कारापन—(पु॰) कुमारपन। क्वारा =जिसका विवाह न हुआ हो।

क्वार्टर—(पु॰ अं॰) बस्ती। वाड़ा। डेरा। मुक़ाम।

क्वेश्चन—(पु॰ अं॰) प्रश्न। सवाल।

क्वेश्चन पेपर—(पु॰ अं॰) परीक्षा-पत्र। प्रश्न-पत्र।

क्वाड्रेट—(पु॰ अं॰) छापे में सीसे का ढला हुआ चौकोर टुकड़ा जो कंपोज़ करने में खाली लाइन आदि भरने के काम में आता है।

क्वाथ—(पु॰ सं॰) काढ़ा।

क्वार्टर मास्टर—(पु॰ अं॰) एक फ़ौजी अफ़सर जिसका काम सैनिकों के लिये स्थान, भोजन और वस्त्र आदि आवश्यक सामग्रियों का प्रबन्ध करना होता है। जहाज़ का एक अफ़सर जो रंगीन झंडी, लालटेन या अन्य संकेत दिखलाकर मल्लाहों को जहाज़ चलाने में सहायता देता और उन्हें समुद्र की गहराई और दिशा आदि बतलाता है।

क्विनाइन—(पु॰ अं॰) कुनैन।

क्षंतव्य—(वि॰ सं॰) क्षमा करने के योग्य।

क्षण—(सं॰) पल। —प्रभा= बिजली। —भंगुर=अनित्य। क्षणिक=क्षणभंगुर।

क्षत—(वि॰ सं॰) घाव। फोड़ा। आघात पहुँचाना।

क्षति—(स्त्री॰ सं॰) हानि। नाश।

क्षत्र—(पु॰ सं॰) बल। राष्ट्र। धन। क्षत्रिय=हिन्दुओं के चार वर्णों में से दूसरा वर्ण। राजा। बल। क्षात्र=क्षत्रियों का।

क्षय—(पु० सं०) प्रलय । नाश । रोग । अंत ।

क्षार—(पु० सं०) नमक । सज्जी । शोरा ।

क्षीण—(पु० सं०) दुबला । —ता =कमज़ोरी । दुबलापन । सूक्ष्मता ।

क्षीर—(पु० सं०) दूध ।

क्षुद्र—(पु० सं०) नीच । कमीना । —ता=नीचता । ओछापन । क्षुद्राशय=कमीना ।

क्षुद्र घंटिका—(स्त्री० सं०) घुँघुरू दार करधनी ।

क्षुधा—(स्त्री० सं०) भूख । —तुर =भूखा । क्षुधित=भूखा ।

क्षुब्ध—(वि० सं०) चंचल । व्याकुल । भयभीत ।

क्षेत्र—(पु० सं०) खेत । समतल भूमि । उत्पत्ति स्थान । पुण्य-स्थान । —फल=रक़बा ।

क्षेपक—(वि० सं०) मिलाया हुआ ।

क्षेम—(पु० सं०) कल्याण । सुख ।

क्षेमेंद्र—(पु० सं०) काश्मीर का एक प्रसिद्ध संस्कृत-कवि, ग्रन्थ-कार और इतिहासकार ।

क्षोभ—(पु० सं०) घबराहट । रंज । क्रोध ।

ख—हिन्दी वर्ण-माला में कवर्ग का दूसरा अक्षर। इसका उच्चारण कंठ से होता है।

खँखारना—(क्रि० हि०) खाँसना।

खड्ग—(पु० हि०) तलवार।

खँगना—(क्रि० हि०) कम होना।

खँगारना—(क्रि० हि०) धोना।

खँचाना—(क्रि० हि०) अंकित करना।

खंजन—(पु० सं०) एक प्रसिद्ध पक्षी।

खंजर—(पु० फ़ा०) कटार।

खँजरी—(स्त्री० हि०) डफ़ली की तरह का एक छोटा बाजा।

खंड—(पु० सं०) भाग। —काव्य=वह काव्य जिसमें 'काव्य' के सम्पूर्ण अलंकार या लक्षण न हों, बल्कि कुछ ही हों। —प्रलय=वह प्रलय जो एक चतुर्युगी या ब्रह्मा का एक दिन बीत जाने पर होता है। —हर=टूटे या गिरे हुये मकान का अवशिष्ट भाग। खंडित=टूटा हुआ। अपूर्ण।

खंडन—(पु० सं०) टुकड़े-टुकड़े करना। खंडनीय=तोड़ने फोड़ने लायक।

खँडपूरी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की भरी हुई पूरी जिसके अन्दर मेवे और मसाले के साथ चीनी भरी जाती है।

खंता—(पु० हि०) वह औज़ार जिससे ज़मीन आदि खोदी जाती है।

ख़ंदक—(स्त्री० अ०) शहर या क़िले के चारों ओर खोदी हुई खाई। बड़ा गड्ढा।

खन्दः—(फ़ा०) हँसी।

खंभ—(पु० हि०) खंभा। सहारा। खंभा=स्तंभ।

खाँदगी—(फ़ा०) शिक्षा। पढ़ाई।

ख़्वाँदा—(फ़ा०) साक्षर। पठित।

खूँखार—(फ़ा०) खूनी। खूँरेज़=खूनी।

खखार—(सं० पु० अनु०) कफ़। —ना=खाँसना।

खगोल—(पु० सं०) आकाश-मंडल। —विद्या=ज्योतिष। खग्रास=पूरा ग्रहण।

खचाखच—(क्रि० वि० अनु०) बहुत भरा हुआ।

खच्चर—(पु० हि०) गधे और घोड़ी के संयोग से उत्पन्न एक पशु।

खटना—(क्रि० अ०) कमाना। कड़ी मेहनत करना।

खटमल—(पु० हि०) खटकीड़ा।

खटमिठ्ठा—(पु० हि०) कुछ खट्टा और कुछ मीठा।

खटाई—(स्त्री० हि०) खट्टापन। खटास=खट्टापन। खट्टा=कच्चे आम, इमली आदि के स्वाद का तुर्श।

खटिक—(पु० हि०) हिन्दुओं के अन्तर्गत एक जाति जिसका काम फल तरकारी आदि बोना और बेचना है।

खटिया—(स्त्री० हि०) छोटी चारपाई। खटोलना=खटोला =छोटी चारपाई।

खड़ंजा—(पु० हि०) ईंटों की खड़ी चुनाई।

खड़बड़ी—(स्त्री० हि०) उलट-फेर। हलचल।

खड़मंडल—(पु० हि०) गड़बड़।

खड़ा—(वि० हि०) ऊपर को उठा हुआ। ठहरा हुआ। प्रस्तुत। तैयार। आरम्भ। स्थापित। पूरा। ठहरा हुआ।

खड़ाऊँ—(स्त्री० हि०) काठ की पावड़ी।

खड़िया—(स्त्री० हि०) सफ़ेद मिट्टी।

खड़ी बोली—(स्त्री० हि०) हिन्दी भाषा।

खड्ड—(पु० हि०) गड्ढा।

ख़त—(पु० अ०) चिट्ठी। लिखावट। रेखा। दाढ़ी के के बाल।

ख़तना—(हि० अ०) मुसलमानों की एक रस्म जिसमें उनके लिंग के अगले भाग का बढ़ा

हुआ चमड़ा काट दिया जाता है।

ख़तम—(वि० फ़ा०) पूर्ण।

ख़तरा—(फ़ा०) भय। अंदेशा।

खतरानी—(स्त्री० हि०) खत्री जाति की स्त्री।

ख़ता—(स्त्री० अ०) अपराध। धोखा। भूल। —वार= अपराधी।

खतियौनी—(स्त्री० हि०) खाता खतियाने का काम। वह काग़ज़ जिसमें पटवारी असामी का रक़बा और लगान आदि दर्ज करता है।

ख़त्म—(अ०) आख़ीर। अन्त।

खत्ता—(पु० हि०) गड्ढा। अन्न रखने का स्थान।

खत्री—(पु० हि०) हिन्दुओं में क्षत्रियों के अन्तर्गत एक जाति जो अधिकतर पंजाब में बसती है। क्षत्रिय।

ख़दशा—(पु० अ०) डर।

खदान—(स्त्री० हि०) वह गड्ढा जिसे खोदकर उसके अन्दर से कोई पदार्थ निकाला जाय।

ख़दीव—(पु० फ़ा०) मिस्र के बादशाह की उपाधि।

खदेरना—(सं० हि०) दौड़ाना।

खपची—(स्त्री० तु० कमची) कमठी। कबाब भूनने की सीख। बाँस की पतली पटरी।

खपड़ा—(पु० हि०) मिट्टी का पका हुआ टुकड़ा जो मकान की छाजन पर रखने के काम आता है। खपड़ी=मिट्टी की वह हँड़िया जिसमें भँड़भूजे दाना भूनते हैं। खपरैल= खपड़े से छाई हुई छत।

खप्पर—(पु० हि०) तसले के आकार का मिट्टी का पात्र।

ख़फ़क़ान—(अ०) पागलपन। दिल की बीमारी।

ख़फ़गी—(स्त्री० फ़ा०) अप्रसन्नता। क्रोध। ख़फ़ा= नाराज़। क्रुद्ध।

ख़फ़ीफ़—(वि० अ०) थोड़ा। क्षुद्र। लज्जित।

ख़बर—(स्त्री० अ०) समाचार। सूचना। सँदेशा। सुधि।

पता । —गीरी=देख-रेख । सहानुभूति और सहायता । —दार=होशियार ।

ख़बीस—(पु० अ०) शैतान । जो दुष्ट और भयंकर हो ।

ख़ब्त—(पु० अ०) पागलपन । ख़ब्ती=सनकी ।

ख़म—(पु० फ़ा०) टेढ़ापन । —ठोंककर=ताल ठोंककर ।

ख़मीर—(अ०) उबाल । उबलना । आटे का फूलना ।

ख़मीरा—(पु० अ०) ख़मीरा तम्बाकू । चीनी या शीरे में पकाकर बनाई हुई औषधि ।

ख़यानत—(स्त्री० अ०) धरोहर रक्खी हुई वस्तु न देना या कम देना । चोरी या बेईमानी ।

ख़याल—(पु० फ़ा०) ध्यान । ग़ौर ।

खर—(पु० सं०) गधा । खच्चर । घास ।

खरका—(पु० हि०) तिनका जिससे दाँत कुरेदते हैं ।

ख़रख़शा—(पु० फ़ा०) झगड़ा । भय । झंझट ।

खरगोश—(पु० फ़ा०) खरहा ।

खरचना—(क्रि० फ़ा० ख़र्च) व्यय करना । बरतना ।

खरबूजा—(पु० फ़ा० ख़र्बुज़ा) एक फल ।

खरमिटाव—(पु० हि०) जलपान ।

खरहरा—(पु० हि०) घोड़े का बदन साफ़ करने का कंघा ।

खरहा—(पु० हि०) खरगोश ।

खरा—(वि० हि०) तेज़ । अच्छा । सेंककर कड़ा किया हुआ । जो व्यवहार में सच्चा और ईमानदार हो । स्पष्टवक्ता । —पन=सत्यता ।

खराद—(पु० अ० ख़र्रात फ़ा० ख़र्राद) एक औज़ार जिस पर चढ़ाकर लकड़ी, धातु आदि की सतह चिकनी और सुडौल की जाती है । —ना=खराद पर चढ़ाकर किसी वस्तु को साफ़ और सुडौल करना ।

ख़राब—(वि० अ०) बुरा। दुर्दशाग्रस्त। पतित। ख़राबी =दोष। दुर्दशा। गंदगी। खराबा=उजड़ा हुआ मकान। खरा-बात = शराबखाना। जुवाड़ियों का अड्डा।

खरायँध—(स्त्री० हि०) पेशाब की बदबू।

खराश—(स्त्री० फ़ा०) खरोंच।

खरीता—(पु० अ०) थैली। जेब। वह बड़ा लिफ़ाफ़ा जिसमें किसी बड़े अधिकारी आदि की ओर से मातहत के नाम आज्ञापत्र आदि भेजे जाँय।

ख़रीद—(स्त्री० फ़ा०) मोल लेना। ख़रीदी हुई चीज़। —ना=मोल लेना। खरीदार=ग्राहक। इच्छुक।

ख़रीफ़—(स्त्री० अ०) जो फ़सल आषाढ़ से आधे अगहन के बीच में काटी जाय।

ख़र्च—(पु० अ० खर्च) व्यय। ख़र्चा=ख़र्च। ख़र्चीला=ख़ूब ख़र्च करनेवाला। खरीच=खर्चीला।

ख़री—(पु० अनु०) वह लम्बा या बड़ा कागज़ जिसमें कोई भारी हिसाब या विवरण लिखा हो।

खल—(वि० सं०) क्रूर। नीच। दुष्ट। खरल।

ख़लक़—(पु० अ०) दुनिया। —त=सृष्टि। भीड़।

खलना—(अ० हि०) बुरा लगना।

ख़लल—(पु० अ०) रोक। बाधा।

ख़लास—(वि० अ०) मुक्त। ख़तम।

ख़लत—(अ०) मिल जाना। मिलना।

खलियान—(पु० हि०) खेतों के पास वह स्थान जहाँ फ़सल काटकर रक्खी, माँड़ी और ओसाई जाती है।

खलियाना—(क्रि० हि०) खाल उतारना।

खलिश—(पु० फ़ा) चुभना। तड़प।

खली—(स्त्री० सं० खलि) तेल

निकाल लेने पर तेलहन की बची हुई सीठी।

ख़लीक़—(अ०) सज्जन। मुरव्वत वाला।

ख़लीज—(स्त्री० अ०) खाड़ी।

ख़लीफ़ा—(पु० अ०) अधिकारी। कोई बूढ़ा व्यक्ति। खुर्राट।

खलील—(अ०) सच्चा दोस्त।

ख़वास—(पु० अ०) राजाओं और रईसों आदि का ख़िदमतगार।

खस—(पु० सं०) एक घास।

खसकना—(क्रि० अनु०) धीरे-धीरे एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। खसकाना =हटाना। गुप्त रूप से कोई चीज़ हटाना या देना।

खसखस—(स्त्री० सं०) पोस्ते का दाना।

खसखसी—(वि० हि०) खसखस की तरह का। बहुत छोटा।

ख़सम—(पु० अ०) पति।

ख़सरा—(पु० अ०) पटवारी का एक काग़ज़ जिसमें प्रत्येक खेत का नम्बर, रक़बा आदि लिखा रहता है। किसी हिसाब-किताब का कच्चा चिट्ठा।

ख़सलत—(स्त्री० अ०) स्वभाव।

ख़सीस—(वि० अ०) कंजूस।

खसोट—(स्त्री० हि०) बलपूर्वक लेना या छीनना। —ना= नोचना। छीनना।

ख़स्ता—(वि० फ़ा० ख़स्तः) भुरभुरा। ख़राब। घायल।

ख़स्सी—(पु० अ०) बकरा। बधिया। नपुंसक।

खाँग—(पु० हि०) काँटा। वह काँटा जो तीतर मुर्ग़ आदि पक्षियों के पैरों में निकलता है। गैंडे के मुँह पर का सींग। जङ्गली सुअर का वह दाँत जो मुँह के बाहर काँटे की तरह निकला रहता है। खुरवाले पशुओं का एक रोग जिसमें उनके खुरों में घाव हो जाता है।

खाँचना—(क्रि० स० हि०) अंकित करना। जल्दी-जल्दी लिखना। खाँचा=पतली टहनी आदि का बना बड़ा टोकरा। बड़ा पिंजड़ा।

खाँड़—(स्त्री० हि०) कच्ची शक्कर।

खाँमना—(क्रि० स० हि०) लिफ़ाफ़े में बन्द करना।

खाँवाँ—(पु० हि०) अधिक चौड़ी खाई।

खाँसना—(क्रि० हि०) गले और श्वास की नलियों में जमे हुये कफ को बाहर फेंकने के लिये झटके के साथ निकालना। खाँसी।

ख़ाक—(स्त्री० फ़ा०) मिट्टी। तुच्छ। कुछ नहीं। ख़ाकी=मिट्टी के रंग का। एक प्रकार के वैष्णव साधु जो तमाम शरीर में राख लगाया करते हैं। मुसलमान फ़क़ीरों का एक संप्रदाय जो ख़ाकी शाह का अनुयायी है। —सार=अपदार्थ। तुच्छ।

ख़ाका—(पु० फ़ा०) ढाँचा। चिन्ह।

ख़ाज—(स्त्री० हि०) खुजली।

ख़ाजा—(पु० हि०) एक प्रकार की मिठाई।

ख़ातमा—(पु० फ़ा०) अंत। मृत्यु।

खाता—(पु० हि०) बखार। वह बही या किताब जिसमें प्रत्येक असामी या व्यापारी आदि का हिसाब मितीवार ब्योरेवार लिखा हो। विभाग।

ख़ातिम—(अ०) ख़तम करने वाला।

ख़ातिर—(स्त्री० अ०) सम्मान। —ख़ाह = इच्छानुसार। —जमा=सन्तोष। —दारी =सम्मान। ख़ातिरी=सम्मान। तसल्ली।

ख़ातून—(तु० स्त्री०) भद्र महिला।

खाद—(स्त्री० हि०) गोबर। मैला वगैरह।

ख़ादिम—(पु० अ०) नौकर।

खादी—(वि० हि०) हाथ से

कत्ते हुये सूत का हाथ से बुना हुआ कपड़ा ।

ख़ान—(तु०) सरदार । रईस ।

ख़ानक़ाह—(स्त्री० अ०) मुसलमान साधुओं या धर्मशिक्षकों के रहने का स्थान ।

खानखानाँ—(पु० फ़ा० ख़ाने ख़ानान) सरदारों का सरदार । —खान=(फ़ा०) सरदार । रईस । अमीर ।

ख़ानगी—(वि० फ़ा०) आपस का । वेश्या ।

ख़ानज़ादा—(पु० फ़ा०) अमीर का पुत्र ।

खानदान—(पु० फ़ा०) वंश । खानदानी=अच्छे कुल का ।

खानदेश—(पु०) बम्बई प्रान्त का एक देश ।

ान-पान—(पु० सं०) खाना-पीना ।

खानबहादुर—(पु० फ़ा०) एक लक़ब जो भारत सरकार की ओर से मुसलमानों को दिया जाता है ।

खानसामा—(पु० फ़ा०) मुसलमानों और अँगरेज़ों का भोजन बनानेवाला ।

ख़ाना—(फ़ा०) घर । मकान । —खराब=चौपट करनेवाला । आवारा । —जंगी=आपस की लड़ाई । —ज़ाद=घर में पैदा या पाला पोसा हुआ । —तलाशी=किसी खोई छिपी या अनजानी चीज़ के लिये मकान के अन्दर छानबीन करना । —दारी=गृहस्थी । —पूरी=नक़शा भरना । —बदोश=जिसका घर ही कंधे पर हो अर्थात् जिसका घरबार न हो । —शुमारी=किसी गाँव या नगर आदि के मकानों की गिनती का काम ।

खानि—(स्त्री हि०) उपजने की जगह ।

खाम—(वि० फ़ा०) कच्चा । जिसे तजरबा न हो । ख़ामी=कच्चापन । नातजरबेकारी ।

ख़ामोश—(वि० फ़ा०) चुप ।
ख़ामोशी=चुप्पी ।
ख़ाया—(पु० फ़ा०) अंडकोश ।
खार—(पु० हि०) सज्जी। लोनी।
धूल ।
ख़ार—(पु० फ़ा०) काँटा। डाह।
ख़ारिज—(वि० अ०) बाहर किया हुआ। भिन्न। जिसकी सुनाई न हो ।
खारिश—(स्त्री० फ़ा०) खुजली।
खारिस्त=खारिश ।
खारुआँ—(पु० हि०) आल से बना हुआ एक प्रकार का रंग जिसमें मोटे कपड़े रँगे जाते हैं ।
खाल—(स्त्री० हि०) चमड़ा ।
खालसा—(वि० अ०) जिस पर केवल एक का अधिकार हो। सरकारी। ख़ालिस। शुद्ध ।
ख़ाला—(स्त्री अ०) माता की बहिन। मौसी।
ख़ालिक—(पु० अ०) बनाने-वाला ।
ख़ालिस—(अ०) विशुद्ध । जिसमें मेल न हो ।
ख़ाविन्द—(पु० फ़ा०) पति। मालिक ।
ख़ास—(वि० अ०) विशेष। निज का। स्वयं। —कलम=प्राइवेट सेक्रेटरी। निज का मुंशी। —गी=निज का। —तराश=वह नाई जो राजा के बाल बनाया करता हो । —दान=पानदान । —बरदार=वह सिपाही जो राजा की सवारी के साथ साथ सवारी के ठीक आगे-आगे चलता है। —बाज़ार=वह बाज़ार जो राजा के महल के सामने हो और जहाँ से राजा वस्तुयें मोल लेता हो।
खासीयत—(स्त्री० अ०) स्वभाव। गुण। ख़ास्सा=स्वभाव ।
ख़ाहिश—(स्त्री० फ़ा०) इच्छा।
खिँचना—(क्रि० हि०) घसीटना। आकर्षित होना। चित्रित होना। रुकना। उदासीन

होना। खिचवाना= "खींचना" का प्रेरणार्थक रूप। खिंचाई=खींचना। खींचने की मज़दूरी। खिचाव =आकर्षण।

खिचड़ी—(स्त्री० हि०) दाल और चावल एक में मिलाकर पकाया हुआ। विवाह की एक रस्म जिसे 'भात' भी कहते हैं। मिला हुआ। गड़बड़।

खिजलाना—(क्रि० हि०) झुँझ-लाना।

ख़िज़ाँ—(स्त्री० फ़ा०) पतझड़ की ऋतु। अवनति का समय।

ख़िज़ाब—(पु० अ०) सफ़ेद बालों को काला करने की औषधि।

खिझना—(क्रि० अ० हि०) खीजना। खिझाना=चिढ़ाना।

खिड़की—(स्त्री० हि०) झरोखा।

ख़िताब—(पु० अ०) उपाधि।

ख़ित्ता—(पु० अ०) देश।

ख़िद्मत—(स्त्री० फ़ा०) सेवा। —गार=सेवक। —गारी =सेवकाई। ख़िदमती= ख़िदमत करनेवाला।

खिन्न—(वि० सं०) उदासीन। अप्रसन्न। दीन-हीन।

खियाना—(क्रि० हि०) घिस जाना।

ख़िरद्मन्द—(फ़ा०) बुद्धिमान। अक़्लमन्द।

खिरनी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का ऊँचा और छतनार सदाबहार पेड़। इस वृक्ष का फल।

ख़िरमन—(फ़ा०) खलियान।

ख़िराज—(पु० अ०) माल-गुज़ारी।

ख़िलअत—(स्त्री० अ०) वह वस्त्रादि जो किसी बड़े राजा या बादशाह की ओर से सम्मान-सूचनार्थ किसी को दिया जाता है।

ख़िलक़त—(स्त्री० अ०) संसार। भीड़।

खिलना—(क्रि० वि० हि०) विकसित होना। प्रसन्न होना। शोभित होना।

बीच से फट जाना। अलग-अलग हो जाना।
ख़िलवत—(स्त्री० अ०) एकान्त। —ख़ाना=एकान्त स्थान।
खिलाई—(स्त्री० हि०) खिलाने का काम। खिलाना=भोजन कराना। खेल करना।
ख़िलाफ़—(वि० अ०) विरुद्ध। —त=(अ०) तमाम इसलामी राज्यों का सम्राट्। मुसलमानों के धार्मिक अगुवा का पद।
खिलाल—(स्त्री० हि०) पूरी बाज़ी की हार।
खिलौना—(पु० हि०) बालकों के खेलने की चीज़।
खिल्ली—(स्त्री० हि) हँसी।
खिसकना—(क्रि० अ०) चुपके से चल देना।
ख़िसारा—(पु० फ़ा०) घाटा।
खिसिआना—(क्रि० हि०) लजाना। रिसिआना। खिसिआहट=खिसिआना।
खींचतान—(स्त्री० हि०) खींचाखींची। खींचना=घसीटना। आकर्षित करना। अर्क चुआना।
खीज—(स्त्री० हि०) झुँझलाहट। —ना=दुःखी और क्रुद्ध होना।
खीर—(स्त्री० हि०) दूध में पकाया हुआ चावल। —मोहन=छेने की बनी हुई एक प्रकार की बँगला मिठाई।
खीरा—(पु० हि०) बरसात में होनेवाला ककड़ी की जाति का एक फल।
खील—(स्त्री० हि०) लावा। कील। —ना=खील लगाना। खीला=काँटा।
खीली—(स्त्री० हि०) पान का बीड़ा।
खीस—(वि० हि०) नष्ट। दाँत निकालना।
खीसा—(पु० फ़ा०) थैला। जेब।
ख़ुआर—(वि० फ़ा०) ख़राब। बेइज़्ज़त। खुआरी=खराबी। अनादर।

खुगीर—(पु० फ़ा०) नमदा । ज़ीन ।

खुजलाना—(क्रि० हि०) सहलाना । खुजलाहट=खुजली । खुजली=खुजलाहट ।

खुट्टी—(स्त्री० हि०) घाव पर जमी हुई पपड़ी ।

खुड्डी, खुड्ढो—(स्त्री० हि०) पाख़ाने में पैर रखने के पायदान । पाख़ाना फिरने का गड्ढा ।

खुतबा—(अ०) भाषण । स्पीच ।

खुद—(अव्य० फ़ा०) स्वयं । —काश्त=वह ज़मीन जिस का मालिक स्वयं जोते-बोये ; पर सीर न हो । —कुशी=आत्महत्या । —ग़रज़=स्वार्थी ।—मुख़तार=स्वतंत्र । —राय=स्वेच्छाचारी । खुदी=अहंकार । अभिमान । —बखुद (फ़ा०) आप ही आप ।

खुदना—(क्रि० हि०). खोदा जाना । खुदाई=खोदने का काम । खोदने की मज़दूरी ।

खुदरा—(पु० हि०) फुटकर चीज़ ।

खुदा—(पु० फ़ा०) ईश्वर । —ई=ईश्वरता । —बन्द=ईश्वर । मालिक । हुज़ूर ।

खुद्दाम—(अ०) खादिम का बहुवचन । नौकर लोग ।

खुनकी (स्त्री० फ़ा०) सरदी । खुनुक=(फ़ा०) सर्द । ठण्डा । खुश ।

खुफ़िया—(अ०) पोशीदा ।

खुमखाना—(फ़ा०) शराबखाना ।

खुमारी—(स्त्री० अ० खुमार) नशा । वह दशा जो नशा उतरने के समय होती है । वह दशा जो रात भर जागने से होती है ।

खुर—(पु० सं०) सींगवाले चौपायों के पैर की कड़ी टाप जो बीच से फटी होती है ।

खुरखुरा—(वि० हि०) जो चिकना न हो ।

खुरचन—(स्त्री० हि०) जो वस्तु खुरचकर निकाली जाय । खुरचना=करोना । खुरचनी

=खुरचने या करोने का एक औज़ार। कसेरों के बर्तन छीलने का औज़ार।
खुरचाल—(स्त्री० हि०) पाजीपन। खुरचाली=पाजी।
खुरपा—(पु० हि०) घास छीलने का औज़ार।
खुर्रम—(फ़ा०) प्रसन्नचित्त।
खुरमा—(पु० अ०) एक प्रकार का पकवान।
ख़ुरशेद—(फ़ा०) सूर्य्य।
ख़ुराक—(पु० फ़ा०) भोजन। खुराकी=वह नक़द दाम जो खुराक के लिये दिया जाय।
खुराफ़ात—(स्त्री० अ०) वेहूदी बात। गाली-गलौज।
खुरासान—(पु० फ़ा०) फ़ारस देश का एक बड़ा सूबा।
खुरी—(स्त्री० हि०) टाप का चिह्न।
खुर्द—(वि० फ़ा०) छोटा। —बीन=सूक्ष्म-दर्शक यंत्र। खुर्दा-फ़रोश=छोटी मोटी चीज़ फुटकर बेचनेवाला। —बुर्द=नष्ट-भ्रष्ट। समाप्त।
ख़ुर्राट—(वि० हि०) बूढ़ा। अनुभवी। चालाक।
खुलना—(क्रि० हि०) बंधन का छूटना। किसी क्रम का चलना या जारी होना। किसी कारखाने, दूकान, दफ़्तर या और किसी कार्य्यालय का नित्य का कार्य्य आरम्भ होना। किसी ऐसी सवारी का रवाना हो जाना जिस पर बहुत से आदमी एक साथ बैठें। किसी गुप्त या गूढ़ बात का प्रकट हो जाना। भेद बताना। खुला=बन्धन-रहित। खुल्लम-खुल्ला=खुले आम। खुलासा=सारांश। खुला हुआ। बिना रुकावट का। साफ़-साफ़।
खुश—(वि० फ़ा०) प्रसन्न। अच्छा। —किस्मत=भाग्यवान। —किस्मती=सौभाग्य। —ख़त=सुलेखक अर्थात् सुन्दर अक्षर लिखनेवाला। —ख़बरी=

अच्छी ख़बर।—दिल=सदा-प्रसन्न रहनेवाला। हँसोड़। —नवीस=खुशख़त। —नवीसी=सुन्दर अक्षर लिखने की कला।—नसीब=भाग्य-वान। —नसीबी—सौ-भाग्य। —नुमा=सुन्दर। —बू=सुगंधि। —बूदार =सुगंधित। —रंग= जिसका रंग बढ़िया हो। —हाल=सुखी। —हाली =उत्तम दशा। खुशी= प्रसन्नता। —नूद—(फ़ा०) राज़ी। रज़ासंद। —गवार =मीठी चीज़। भली बात जो अच्छी लगे।

खुशामद—(स्त्री० फ़ा०) चाप-लूसी। खुशामदी=चापलूस। सब प्रकार का काम करने-वाला। खुशामदी टट्टू= भारी खुशामदी।

खुश्क—(वि० फ़ा०) सूखा। रूखे स्वभाव का। केवल। खुश्की=रूखापन। —साली =सूखा। कहत। —मिज़ाज =रूखे स्वभाव का।

ख़ूँखार—(वि० फ़ा०) खून पीने वाला। भयंकर। निर्दय।

खूँट—(पु० हि०) कान की मैल।

खूँटा—(पु० हि०) बड़ी मेख़।

खूँदार—(फ़ा०) .खून गिराने-वाला। .खूनी।

खूँरेज़—(फ़ा०) .खून गिराने-वाला। .खूनी।

.खून—(पु० फ़ा०) रक्त। वध। —खराबी=मारकाट। एक प्रकार की वार्निश जो लकड़ी पर की जाती है। .खूनी= हत्यारा। अत्याचारी।

.खूब—(वि० फ़ा०) अच्छा। अच्छी तरह से। .खूबी =भलाई। गुण।—रूई (फ़ा०)=माशूकी। —सूरत=सुन्दर। .खूबसूरती= सुन्दरता।

खूबानी—(स्त्री० फ़ा०) एक प्रकार का मेवा जिसे ज़र-दालू भी कहते हैं।

खूसट—(पु० हि०) उल्लू। मनहूस। बुड्ढा। ख़ब्बीस।

खेड़ा—(पु० हि०) छोटा गाँव।

खेत—(पु० हि०) जोतने बोने की ज़मीन। खेतिहर= किसान। खेती=किसानी। खेत में बोई हुई फ़सल। खेती-बारी=किसानी। लड़ाई की जगह।

खेद—(पु० सं०) दुःख। थकावट।

खेदना—(क्रि० हि०) भागना। पीछा करना। खेदा=किसी बनैले पशु को मारने या पकड़ने के लिये घेरकर एक उपयुक्त स्थान पर लाने का काम। शिकार।

खेना—(क्रि० हि०)नाव चलाना। बिताना।

खेप—(स्त्री० हि०) एक बार का बोझा। गाड़ी नाव आदि की एकबार की यात्रा।

खेमटा—(पु० हि०) एक प्रकार का गीत।

खेमा—(पु० अ०) डेरा।

खेल—(पु० हि०) मनबहलाव। बहुत हलका या तुच्छ काम। किसी प्रकार का अभिनय। तमाशा, स्वाँग या करतब आदि। कोई अद्‌भुत कार्य्य। —वाड़=खेल। खेलवाड़ी। —खेलनेवाला। कौतुक-प्रिय। खेलाड़ी=खेलनेवाला। तमाशा करनेवाला।

खेवट—((पु० हि०) पटवारी का एक काग़ज़ जिसमें हर एक पट्टीदार के हिस्से की तादाद और मालगुज़ारी का विवरण लिखा रहता है।

खेस—(पु० हि०) बहुत मोटे देशी सूत की बनी हुई एक प्रकार की बहुत लम्बी चादर।

खेसारी—(स्त्री० हि०) मटर। लतरी।

खेह—(स्त्री० हि०) राख।

खैबर—(पु० हि०) भारत और अफ़ग़ानिस्तान के बीच की एक घाटी का नाम।

खैयाम—(अ०) फ़ारसी का एक

प्रसिद्ध कवि। खेमा गाड़नेवाला।

खैर—(पु० हि०) कत्था। (फ़ा०) अच्छा। —ख़ाह=भलाई चाहनेवाला। —ख़ाही=भलाई सोचना। खैरा=खैर के रंग का। ख़ैरात—(अ०) दान देना। —मक़दम=(अ०)स्वागत।

खैरियत—(स्त्री० फ़ा०) कुशल-क्षेम। भलाई।

खोँखना—(क्रि० अनु०) खाँसना।

खोँची—(स्त्री० हि०) चुङ्गी।

खोँड़र—(पु० हि०) पेड़ का भीतरी पोला भाग।

खोँता—(पु० हि०) घोंसला।

खोँसना—(क्रि० स० हि०) अटकाना।

खोई—(स्त्री० हि०) ऊख के गंडों के वे डंठल जो रस निकल जाने पर कोल्हू में शेष रह जाते हैं। कम्बल की घोघी।

खोखला—(वि० हि०) पोली जगह। बड़ा छेद।

खोज—(स्त्री० हि०) तलाश। निशान। गाड़ी के पहिये की लीक अथवा पैर आदि का चिह्न। खोजी=खोजनेवाला।

खोजा—(पु० फ़ा० ख़्वाजा) वह नपुंसक व्यक्ति जो मुसलमानी हरमों में द्वार-रक्षक या सेवक की भाँति रहता है। सेवक। सरदार।

खोदना—(क्रि० हि०) गड्ढा करना। छेड़ना। उभाड़ना। खोदनी=खोदने का छोटा औज़ार। खोद-विनोद=छेड़-छाड़। खोदाई =खोदने का काम। खोदने की मज़दूरी। कड़ी वस्तु पर किसी नोकदार वस्तु से अंक, चिह्न, बेल-बूटे आदि बनाने का काम।

खोना—(क्रि० हि०) गँवाना। भूल से किसी वस्तु को कहीं छोड़ आना। ख़राब करना।

खोन्चा—(पु० फ़ा० ख़्वान्चा) वह बड़ी परात या थाल जिसमें मिठाई और खाने-

पीने की वस्तुयें भरी रहती हैं। वह थाल जिसमें रखकर फेरीवाले मिठाई वेचते हैं।
खोपड़ा—(पु० हि०) कपाल। सिर। गरी। नारियल। खोपड़ी=कपाल। सिर।
खोभार—(पु० हि०) गड्ढा जिसमें कूड़ा-कर्कट फेंका जाय।
खोया—(पु० हि०) खोवा। ईंट पाथने का गारा।
खोरा—(पु० हि०) कटोरा। आबख़ोरा। खोरिया=छोटा कटोरा।
खोराक—(स्त्री० फ़ा०) भोजन सामग्री। खाने की मात्रा। खोराकी=अधिक भोजन-करनेवाला।
ख़ोल—(पु० सं०) गिलाफ़।
खोलना—(क्रि० स० हि०) रुका-वट या परदा दूर करना। बंधन तोड़ना। किसी क्रम को चलाना या जारी करना। किसी कारख़ाने, दूकान, दफ़्तर आदि का दैनिक कार्य्य आरम्भ करना। किसी गुप्त या गूढ़ बात को प्रकट कर देना।
खोली—(स्त्री० फ़ा०) गिलाफ। तकिये आदि के ऊपर चढ़ाने की थैली।
ख़ौफ़—(पु० अ०) डर।
खौलना—(क्रि० हि०) उब-लना।
ख्यात—(वि० सं०) प्रसिद्ध। ख्याति=प्रसिद्धि।
ख़्याल—(पु० अ०) ध्यान। अनुमान। विचार। आदर। एक विशेष प्रकार का गान। लावनी गाने का एक ढंग।
ख़्वाजा—(पु० फ़ा०) मालिक। सरदार। कोई प्रसिद्ध पुरुष। ऊँचे दरजे का मुसलमान फ़क़ीर। रनिवास का नपुंसक भृत्य। —सरा=(फ़ा०) मुसलमानी जमाने में घरों में काम करनेवाला वह गुलाम जिसका लिङ्ग काट डाला गया हो।
ख़्वान—(पु० फ़ा०) थाल।
ख़्वाब—(पु० फ़ा०) स्वप्न।

ख़्वार—(वि० फ़ा०) ख़राब। तिरस्कृत। ख़्वारी=ख़राबी। अनादर।

ख़्वास्तगार—(पु० फ़ा०) चाहने वाला। ख़्वाहाँ=चाहनेवाला।

ख़्वाहिश=इच्छा। ख़्वाहिश-मंद=इच्छुक।

ख़्वाह—(अव्य० फ़ा०) या।

ख़्वाहमख़्वाह—(फ़ा०) ज़रूर।

ग

ग—हिन्दी-वर्णमाला में कवर्ग का तीसरा वर्ण। इसका उच्चारण कंठ से होता है।

गंज—(पु० हि०) ख़जाना। ढेर। समूह। वह आबादी जहाँ बनिये बसाये जाते हैं। गंजा=गंज रोग। जिसके सिर के बाल झड़ गये हों। गंजी=शकरकंद।

गँजिया—(हि०) सूत की बनी हुई रुपया रखने की जालीदार थैली।

गंजीफ़ा—(पु० फ़ा०) एक खेल जो आठ रंग के ९६ पत्तों से खेला जाता है।

गँजेड़ी—(वि० हि०) गाँजा पीने वाला।

गँठकटा—(पु० हि०) गिरहकट। गँठजोड़ा=गँठबन्धन। गँठ-बन्धन=विवाह की एक रीति जिसमें वर और वधू के वस्त्र को परस्पर बाँध देते हैं।

गँडरा—(पु० हि०) मूँज की तरह की एक घास।

गँड़ासा—(पु० हि०) चौपायों के खाने के लिये चारे या घास के टुकड़े काटने का औज़ार।

गँड़ेरी—(स्त्री० हि०) ईख या गन्ने का छोटा टुकड़ा जो चूसने या कोल्हू में पेरने के लिये काटा जाता है।

गंदगी—(स्त्री० फ़ा०) मैलापन। अशुद्धता। दुर्गन्ध। गंदा=मैला। नापाक। घृणित।

गंदुम—(पु० फ़ा०) गेहूँ।

गंध—(स्त्री० हि०) महक। सुगंध। —क=एक खनिज पदार्थ गंधक-वटी=एक औषध या गोली। गंधाना=दुर्गन्ध करना।

गंधर्व—(पु० सं०) देवताओं का एक भेद जो गाने का काम करते हैं। —नगर=नगर, ग्राम आदि का वह मिथ्या आभास जो आकाश में या स्थल में दृष्टि-दोष से दिखाई पड़ता है। मिथ्या भ्रम। —विवाह=आठ प्रकार के विवाहों में से एक।

गंधाविरोज़ा—(पु० हि०) चीड़ नामक वृक्ष का गोंद जो फ़ारस से आता है।

गंधी—(पु० हि०) सुगंधित तेल और इत्र बेचनेवाला। गंधिया नामक घास। गंधिया नामक कीड़ा।

गंभीर—(वि० सं०) घोर। शांत।

गँवई—(स्त्री० हि०) छोटा गाँव। गँवर दल=गँवारों का समूह। गँवार=ग्रामीण। मूर्ख। अनाड़ी।

गँसीला—(वि० हि०) बुनावट में खूब कसा हुआ।

गुंजाइस—(फ़ा०) समाई।

गोइन्दा—(फ़ा०) कहनेवाला। जासूस।

गऊ—(स्त्री० हि०) गाय।

गगन—(पु० सं०) आकाश। —भेदी=बहुत ऊँचा।

गगरा—(पु० हि०) कलसा। गगरी=कलसी।

गच—(अं० अनु०) पक्का फ़र्श। पक्की छत। —कारी=चूने सुरखी का काम।

गज—(पु० सं०) हाथी।

गज़—(पु० फ़ा०) लम्बाई नापने की एक माप जो ३ फुट की होती है। —इलाही=अकबरी गज़ जो ४१ अंगुल का होता है।

गज़क—(पु० फ़ा० कज़क) चाट। तिलपपड़ी। नाश्ता। चटपटी चीज़।

गज़ट—(पु० अं० गज़ेट) अख़-बार। वह विशेष सामयिक पत्र जो भारतीय सरकार अथवा प्रान्तीय सरकारों द्वारा प्रकाशित होता है और जिसमें बड़े-बड़े अफ़सरों की नियुक्ति, नये क़ानूनों के मसौदे और भिन्न-भिन्न सरकारी विभागों के सम्बन्ध को विशेष और सर्व-साधारण के जानने योग्य बातें प्रकाशित की जाती हैं।

ग़ज़नवी—(वि० फ़ा०) ग़ज़नी नगर का रहनेवाला। ग़ज़नी =अफ़ग़ानिस्तान के एक नगर का नाम।

गजपुट—(पु० सं०) धातुओं के फूँकने की एक रीति।

ग़ज़ब—(पु० अ०) कोप। आपत्ति। अंधेर।

गजर—(पु० हि०) पहर-पहर पर घंटा बजने का शब्द। घंटे का वह शब्द जो प्रातःकाल ४ बजे होता है।

गजर-बजर—(पु० अनु०) घाल-मेल।

गजरा—(पु० हि०) माला।

ग़ज़ल—(स्त्री० फ़ा०) फ़ारसी और उर्दू में शृंगार-रस की एक कविता।

गज़ी—(पु० फ़ा०) गाढ़ा।

गटकना—(क्रि० हि०) खाना। गटगट=किसी पदार्थ को कई बार करके निगलने या घूँट-घूँट पीने में गले से उत्पन्न होनेवाला शब्द।

गट-पट—(स्त्री० अनु०) मिला-वट। सहवास।

गटापारचा—(पु० मला०) एक प्रकार का गोंद जो कई ऐसे वृक्षों से निकलता है जिनमें सफ़ेद दूध रहता है।

गट्टा—(पु० हि०) हथेली और पहुँचे के बीच का जोड़। पैर की नली और तलुए के बीच की गाँठ। नैचे के नीचे की वह गाँठ जहाँ दोनों नै मिलती

हैं और जो फ़रशी या हुक्के के मुँह पर रहती है। एक प्रकार की मिठाई।

गट्ठर—(पु० हि०) बड़ी गठरी। गट्ठा=गट्ठर। बड़ी गठरी। प्याज या लहसुन की गाँठ। कट्ठा।

गठबंधन—(पु० हि०) विवाह में एक रीति जिसमें वर और बधू के वस्त्रों के छोर को परस्पर मिलाकर गाँठ बाँधते हैं। गठकटा=गिरहकट। गठरी=बड़ी पोटली। संचित धन। गठित=गठा हुआ। गठिया=खुरजी। छोटी गठरी। कोरे कपड़े के थानों की बँधी हुई बड़ी गठरी। एक रोग। गठियाना=गाँठ देना। गाँठ में रखना। गठीला=गाँठवाला। मज़बूत।

गड़गड़ाहट—(स्त्री० हि०) कड़क।

गड़प—(स्त्री० अनु० फ़ा० गर्कीन) पानी, कीचड़ आदि में किसी वस्तु के सहसा समाने का शब्द। —ना=निगलना।

गड़बड़—(वि० हि०) गोलमाल। गड़बड़ा=गड्ढा। गड़बड़ाना=क्रम-भ्रष्ट होना। बिगड़ना। गड़बड़ी=गोलमाल।

गड़रिया—(पु० हि०) भेड़ पालने वाली जाति। (सं०) गड्डुरिक।

गड़हा—(पु० हि०) गड्ढा। छोटा गड़हा।

गड़ाप—(पु० फ़ा० ग़र्क़ आव) पानी आदि में डूबने का शब्द।

गड़ारी—(स्त्री० हि०) जिस पर रस्सी चढ़ाकर पानी खींचते हैं। —दार=जिस पर गंडे या धारियाँ पड़ी हों। घेरदार।

गड्डु—(पु० हि०) एक ही आकार की ऐसी वस्तुओं का समूह जो एक के ऊपर एक जमाकर रक्खी हों। गड्डी =एक ही आकार की ऐसी

वस्तुओं का का ढेर जो तले-ऊपर रक्खी हों। ढेर।

गढंत—(वि० हि०) बनावटी। बनावटी बात। मनगढ़ंत=कपोल-कल्पित।

गढ़—(पु० हि०) क़िला। गढ़ी=छोटा क़िला। क़िले या कोट के ढंग का मज़बूत मकान।

गढ़न—(स्त्री० हि०) बनावट। गढ़ना=पीटना। ठोंक-ठाँक कर सुडौल करना। बात बनाना। पीटना।

गढ़ाई—(स्त्री० हि०) गढ़ने की मज़दूरी। गढ़ाना=बनवाना।

गण—(पु० सं०) समूह। श्रेणी। छन्द-शास्त्र में तीन वर्णों का समूह। —ना=शुमार। हिसाब। संख्या। गण्य=गिने जाने योग्य।

गणिका—(स्त्री० सं०) वेश्या।

गणित—(पु० सं०) हिसाब। —ज्ञ=हिसाबी। ज्योतिषी।

गत—(वि० सं०) गया हुआ। सितार आदि के स्वर का क्रमबद्ध मिलान।

गतका—(पु० हि०) लकड़ी का एक डंडा जिसके ऊपर चमड़े की खोल चढ़ी रहती है।

गतांक—(वि० सं०) पिछला अंक।

गति—(स्त्री० सं०) चाल। हरकत। दशा। सहारा। चाल। ढंग। मृत्यु के उपरांत जीवात्मा की उत्तम दशा। ताल और स्वर के अनुसार अंग-संचालन।

ग़दर—(पु० अ०) हलचल। बग़ावत।

गदराना—(क्रि० अ० अनु०) (फल आदि का) पकने पर होना। जवानी में अंगों का भरना।

गदला—(वि० फ़ा० गंदा) मटमैला।

गदा—(स्त्री० सं०) एक प्राचीन अस्त्र का नाम जो लोहे का होता था। —(फ़ा०)

भिखारी। फ़क़ीर। —ई=भीख माँगना।

गद्गद—(वि० सं०) अत्यधिक प्रसन्न।

गद्दा—(वि० हि०) भारी तोषक आदि। घास, पयाल, रूई आदि मुलायम चीज़ों से भरा हुआ बिछौना। गद्दी=छोटा गद्दा। वह कपड़ा जो घोड़े, ऊँट आदि पर रखने के लिये डाला जाता है। किसी बड़े अधिकारी का पद। किसी राजवंश की पीढ़ी वा आचार्य्य की शिष्य-परंपरा। हाथ या पैर की हथेली।

गद्य—(पु० सं०) वह लेख जिसमें मात्रा और वर्ण की संख्या और स्थानादि का कोई नियम न हो।

ग़नी—(वि० अ०) धनी। (अं०) गनी=पाट या सन की रस्सियों का बुना हुआ मोटा खुरदरा कपड़ा।

ग़नीम—(पु० अ०) डाकू। बैरी। —त=लूट का माल। मुफ़्त का माल। सन्तोष की बात।

गनोरिया—(पु० लै०) सूजाक।

गन्ना—(पु० हि०) ईख।

गपोड़ा—(पु० हि०) मिथ्या बात। गपोड़ेबाजी=झूठ-मूठ की बकवाद। गप। गप्पी=गप्प मारनेवाला। झूठा।

ग़प—(स्त्री० फ़ा०) अफ़वाह। कल्पित बात।

गफ—(वि० हि०) घना।

ग़फ़लत—(स्त्री० अ०) असावधानी। बेख़बरी। भूल।

ग़बन—(पु० अ०) ख़यानत।

गबरू—(वि० फ़ा० खूबरू) उभड़ती जवानी का। भोला-भाला।

गबरून—(पु० फ़ा० गम्बरून) चारख़ाने की तरह का एक मोटा कपड़ा।

गब्बर—(वि० हि०) घमंडी। मट्ठर।

गब्र—(पु० फ़ा०) पारसी।

गमक—(पु० सं०) तबले की गम्भीर आवाज़।

ग़म—(पु० अ०) शोक। चिन्ता। —ख़ोर =सहनशील। —गीन = उदास। —नाक =दुःखभरा। ग़मी=शोक-समय। मृत्यु। —ख़ार= मित्र। दोस्त। —ज़ा= कटाक्ष। —गुसार=दुख दूर करनेवाला। हमदर्द।

गमला—(पु० हि०) मिट्टी या धातु आदि का बना हुआ एक पात्र जिसमें फूलों के पेड़ और पौधे लगाते हैं।

गम्मत—(स्त्री० मराठी) हँसी-दिल्लगी। मौज।

गर—(फ़ा०) अगर।

ग़रक़ाव—(पु० अ०) निमग्न।

गरगज—(पु० हि०) बुर्ज।

ग़रज़—(स्त्री० अ०) आशय। ज़रूरत। इच्छा। निदान। अस्तु। —मन्द=ज़रूरत-वाला। इच्छुक। ग़रज़ी= ग़रज़वाला। चाहनेवाला।

गरजना—(क्रि० हि०) बहुत गम्भीर शब्द करना। चट-कना।

गरदन—(स्त्री० फ़ा०) ग्रीवा। गरदनियाँ=गरदन पकड़कर।

गरदा—(पु० फ़ा० गर्द) धूल।

गरदानना—(क्रि० फ़ा० गरदान) शब्दों का रूप साधना। गिनना।

गरबा—(पु० गु०) एक प्रकार का गीत जो गुजराती स्त्रियाँ गाती हैं।

गरम—(वि० फ़ा०) जलता हुआ। तीक्ष्ण। तेज। जिसका गुण उष्ण हो। जोश से भरा हुआ। गरमाई= गरमी। गरमा-गरमी=जोश। गरमाना=गरम पड़ना। उमंग पर आना। क्रोध करना। कुछ देर लगातार परिश्रम करने पर घोड़े आदि पशुओं का तेज़ी पर आना। गरमाहट=गरमी। गरमी= जलन। तेज़ी। क्रोध। जोश। ग्रीष्म ऋतु। आतशक।

गरारा—(अ० ग़रग़रा) कंठ में

पानी डालकर गर गर शब्द करके कुल्ली करना।
ग़रीब—(वि० अ०) नम्र। दरिद्र। —निवाज़=दीनों पर दया करनेवाला। —परवर=ग़रीबों को पालनेवाला। ग़रीबामऊ=गरीबों के योग्य। मामूली। ग़रीबी =दीनता। दरिद्रता।
गरुड़—(पु० सं०) उक़ाब पक्षी।
ग़रूर—(पु० अ०) घमंड।
गरेबान—(पु० फ़ा०) गला। कालर।
गरोह—(पु० फ़ा०) झुंड।
गर्जन—(पु० सं०) गरजना।
गर्त—(पु० सं०) गड्ढा दरार।
गर्दभ—(पु० सं०) गधा।
गर्दिश—(स्त्री० फ़ा०) घुमाव।
ग़बन—(फ़ा०) छल से धन लेना।
गर्भ—(पु० सं०) हमल। जो गर्भ में हो। गर्भाधान= गृह्यसूत्र के अनुसार मनुष्य के सोलह संस्कारों में से एक। पहला संस्कार गर्भधारण। गर्भाशय=बच्चादान। गर्भिणी =गर्भवती। गर्भित=पूर्ण।
गर्म—(फ़ा०) तेज़। उष्ण।
गर्भांक—(पु० सं०) नाटक का एक अंश जिसमें केवल एक दृश्य होता है।
गर्ल—(स्त्री० अं०) लड़की। युवती।
गर्लस्स्कूल—(पु० अं०) कन्या-विद्यालय।
गर्व—(पु० सं०) अहंकार। गर्वीला=घमंडी।
गलका—(पु० हि०) एक प्रकार का फोड़ा जो हाथ की उँगलियों के अगले भाग में होता है और बहुत कष्ट देता है।
ग़लत—(वि० अ०) अशुद्ध। असत्य। ग़लती=भूल-चूक।
गल तकिया—(स्त्री० हि०) छोटा गोल और मुलायम तकिया जो गालों के नीचे रक्खा जाता है। गल-मुच्छा=गलगुच्छा।
ग़लतफ़हमी—(स्त्री० अ० फ़ा०)

भूल से कुछ का कुछ समझना। भ्रम।

गलता—(पु० अ०) एक प्रकार का बहुत चमकीला और गफ़ कपड़ा जिसका ताना रेशम का और बाना सूत का होता है। मकान की कारनिस।

ग़लतान—(वि० फ़ा०) चक्कर मारता हुआ।

गलना—(क्रि० हि०) पिघलना। बदन सूखना। अत्यधिक सरदी के कारण हाथ पैर का ठिठुरना। बेकाम होना। गलाना=किसी वस्तु को नरम गीला या द्रव करना। नरम करना। खर्च कराना। गलित=गला हुआ। गलित कुष्ठ=आठ प्रकार के कुष्ठों में से एक। गलित यौवना =ढलती जवानी की स्त्री।

गलबा—(अ०) धींगाधींगी। आक्रमण। हल्ला।

ग्लानि—(स्त्री० सं०) पछताव। खेद। दुःख।

गलियारा—(पु० हि०) पतली या छोटी तंग गली।

गलीचा—(पु० फ़ा०) क़ालीन।

ग़लीज़—(वि० अ०) मैला। नापाक।

गल्प—(स्त्री० हि०) छोटी-छोटी कहानियाँ।

ग़ल्ला—(पु० अ०) अन्न। —फ़रोश=अनाज का व्यापारी। गल्ला=(फ़ा०) पशुओं का झुंड।

गवर्नमेंट—(स्त्री० अं०) राज्य। शासक-मंडल। गवर्नर= शासक। गवर्नर जेनरल= बड़े लाट। गवर्नरी=अधिकार।

गवाक्ष—(पु० सं०) झरोखा।

गँवाना—(क्रि० हि०) खोना।

गवारा—(वि० फ़ा०) अंगीकार। मंज़ूर।

गवाह—(पु० फ़ा०) वह मनुष्य जिसने किसी घटना को साक्षात् देखा हो। साखी। गवाही=साक्षी का प्रमाण।

गवेषणा—(स्त्री० सं०) खोज।

गवैया—(वि० हि०) गानेवाला।
ग़श—(पु० अ०) बेहोशी। मूर्च्छा।
गश्त—(पु० फ़ा०) दौरा। गश्ती =घूमनेवाला।
गसना—(क्रि० हि०) जकड़ना। बुनावट में बाने को कसना। गसीला = जकड़ा हुआ। गफ़।
गहन—(वि० सं०) गंभीर। दुर्गम। कठिन। निबिड़। गहना=बंधक। पकड़ना। आभूषण।
गहरा—(वि० हि०) जो जमीन के अन्दर दूर तक चला गया हो। बहुत अधिक। मज़बूत। गाढ़ा।
गह्वर—(पु० सं०) बिल। गुफ़ा। गुप्त स्थान।
गाँछना—(क्रि० स० हि०) गूँधना।
गाँज—(पु० फ़ा० गंज) राशि। डंठल, खर, लकड़ी आदि का वह ढेर जो तले ऊपर रखकर लगाया गया हो। —ना= राशि लगाना। घास-लकड़ी, डंठल आदि को तले ऊपर रखकर ढेर लगाना।
गाँजा—(पु० हि०) भाँग की जाति का एक पौधा।
गाँठ—(स्त्री० हि०) गिरह। गठरी। अंग का जोड़। पोर। गुत्थी। गट्ठा। —कट= गिरहकट। ठग। —गोभी =गोभी का एक भेद। —दार=गँठीला। —ना। =गाँठ लगाना। मरम्मत करना। मिलाना। तरतीब देना। पक्ष में करना। वश में करना।
गाँड़र—(स्त्री० हि०) मूँज की तरह की एक घास।
गांडीव—(पु० सं०) अर्जुन के धनुष का नाम।
गांधार—(पु० सं०) क़ंदहार। सिन्धु नदी के पश्चिम का देश जो पेशावर से लेकर कंधार तक माना जाता था।
गाँधी—(स्त्री० सं०) हरे रंग का एक छोटा कीड़ा जो वर्षाकाल

में धान के खेतों में अधिक होता है।

गांभीर्य्य—(पु० सं०) गंभीरता। स्थिरता। धीरता। जटिलता।

गाँवँ, गाँव—(पु० हि०) छोटी बस्ती।

गाइड—(पु० अं०) पथ-प्रदर्शक।

गाउन—(पु० अं०) एक प्रकार का लम्बा ढीला पहनावा जो प्रायः योरप अमेरिका आदि देशों की स्त्रियाँ पहनती हैं। एक तरह का चोग़ा।

गाऊघप्प—(वि० हि०) जमामार। घाघ।

ग़ाज़ी—(पु० अ०) मुसलमानों में वह वीर पुरुष जो धर्मार्थ विधर्मियों से युद्ध करे। बहादुर। —मियाँ=बाले मियाँ।

ग़ाज़ीमर्द—(पु० अ०+फा०) वह जो बहुत बड़ा वीर हो।

गाड़ा—(पु० हि०) छोटी गाड़ी। (स्त्री०) गाड़ी। —खाना= वह स्थान जहाँ गाड़ियाँ रक्खी जाती हैं। —वान= गाड़ी हाँकनेवाला। कोचवान।

गाती—(स्त्री० हि०) चद्दर या अँगोछा जिसे शरीर के चारों ओर लपेटकर गले में बाँधते हैं।

गाथा—(स्त्री० सं०) स्तुति। एक प्रकार की प्राचीन भाषा जिसमें संस्कृत के साथ कहीं कहीं पाली भाषा के विकृत शब्द भी मिले रहते हैं। श्लोक। गीत। कथा। पारसियों के धर्म-ग्रन्थ का एक भेद।

गाद—(स्त्री० हि०) तलछट। कीट। गाढ़ी चीज़।

गादर—(वि० हि०) सुस्त।

गादा—(पु० हि०) अधपका अन्न। कच्ची फ़सल। हरा महुआ।

गान—(पु० सं०) गीत। गाना। =अलापना। मधुर ध्वनि करना। वर्णन करना। प्रशंसा करना। गाने की चीज़।

ग़ाफ़िल—(वि० अ०) बेख़बर। असावधान।

गाय—(स्त्री० हि०) सींगवाला एक मादा चौपाया जिसके नर को बैल या साँड़ कहते हैं। दीन मनुष्य। —गोठ=गोशाला।

गायक—(पु० सं०) गानेवाला।

गायत्री—(स्त्री० हि०) एक वैदिक छंद का नाम। एक पवित्र मंत्र का नाम।

ग़ायब—(वि० अ०) लुप्त। गायबाना=गुप्त रीति से। पीठ पीछे।

ग़ारत—(वि० अ०) नष्ट।

गारद—(स्त्री० अं० गार्ड) सिपाहियों का झुण्ड जो एक अफ़सर के मातहत हो। पहरा।

गारना—(क्रि० हि०) निचोड़ना।

गार्ड—(पु० अं०) रक्षक। निरीक्षक।

गॉर्डन—(पु० अं०) बाग़। —पार्टी=वह भोज जो नगर के बाहर किसी बाग़-बग़ीचे में दिया जाय।

गाल—(पु० हि०) कपोल।

ग़ालिब—(वि० अ०) जीतने वाला। बलशाली।

गावज़बान—(स्त्री० फ़ा०) एक बूटी जो फ़ारस देश में होती है।

गावतकिया—(पु० फ़ा०) मसनद।

गावदी—(वि० हि०) नासमझ। मूढ़।

गावदुम—(वि० फ़ा०) चढ़ा उतार।

गाही—(स्त्री० हि०) पाँच वस्तु का समूह।

गिच पिच—(वि० हि०) एक में मिला-जुला।

ग़िज़ा—(स्त्री० अ०) भोजन।

गिटपिट—(स्त्री० हि०) निरर्थक शब्द।

गिट्टक—(स्त्री० हि०) चिलम के अन्दर रखने का कंकड़। गिट्टी=गेरू या पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े जो प्रायः सड़क, नींव, छत आदि पर बिछाकर कूटे जाते हैं।

गिड़गिड़ाना—(क्रि० हि०) ज़रूरत से ज़्यादा विनीत और नम्र होकर प्रार्थना करना। गिड़गिड़ाहट=विनती।

गिद्ध—(पु० हि०) एक प्रकार का मांसाहारी पक्षी।

गिनती—(स्त्री० हि०) गणना। संख्या। हाज़िरी। १ से १०० तक अंक। गिनना=गणना करना। हिसाब लगाना। गिनाना=गिनने का काम दूसरे से कराना।

गिनी—(स्त्री० अं०) सोने का एक सिक्का जिसका व्यवहार इङ्गलैण्ड में होता था।

गिरगिट—(पु० हि०) गिर्गिटान। छिपकली की शकल का एक जानवर।

गिरजा—(पु० पुर्त० इग्रिजिया) ईसाइयों का प्रार्थना-मन्दिर।

गिरना—(क्रि० हि०) किसी चीज़ का खड़ा न रह सकना या ज़मीन पर पड़ जाना। अवनति।

गिरनार—(पु० हि०) गुजरात में एक पर्वत। पुराणों में इसको रैवतक पर्वत कहते हैं।

गिरफ़्—(स्त्री० फ़ा०) पकड़। गिरफ़्तार=जो पकड़ा, क़ैद किया या बाँधा गया हो।

गिरमिट—(पु० अं० गिमलेट) बड़ा बरमा।

गरेबान—(फ़ा०) कालर। गर्दन।

गिरिया—(फ़ा०) रोना। शोक।

गिरवी—(वि० फ़ा०) बन्धक। —दार=जिसके यहाँ कोई वस्तु बन्धक रक्खी हो। —नामा=रेहननामा।

गिरह—(फ़ा०) गाँठ।

गराँ—(वि० फ़ा०) महँगा। भारी। अप्रिय। गिरानी=मँहगी। अकाल। अभाव।

गिरा—(स्त्री० सं०) भाषा। —मी=(फ़ा०) बुज़ुर्ग।

गिरि—(पु० सं०) पर्वत। पहाड़।

गिरदाब—(फ़ा०) भँवर।

गिर्द—(फ़ा०) चक्कर, गोल।

गिर्दावर—(पु० फ़ा०) घूमने

वाला। घूम-घूमकर काम की जाँच करनेवाला।

गिरफ़्तार—(फ़ा०) पकड़ा हुआ। कसा हुआ।

गिल—(स्त्री० फ़ा०) मिट्टी। गारा।

गिलट—(पु० अं० गिल्ड) सोना चढ़ाने का काम। एक प्रकार की बहुत हल्की और कम मूल्य की धातु।

गिलटी—(स्त्री० हि०) छोटी गाँठ जो शरीर के अन्दर संधि स्थान में रहती है।

गिलम—(स्त्री० फ़ा०) ऊन का बना हुआ नरम और चिकना क़ालीन।

गिलहरी—(स्त्री० हि०) एक जानवर।

गिला—(पु० फ़ा०) उलहना। शिकायत।

ग़िलाफ़—(पु० अ०) खोल। म्यान।

गिलास—(पु० अं० ग्लास) पानी पीने का एक बरतन।

गिलोय—(स्त्री० फ़ा०) गुरुचि।

गिलौरी—(स्त्री० हि०) एक या कई पानों का बीड़ा।

गीत—(पु० सं०) गाने की चीज़।

गीती—(फ़ा०) संसार। दुनिया।

गीता—(स्त्री० सं०) भगवद्-गीता।

गीदड़—(पु० हि०) सियार।

गीदी—(वि० फ़ा०) डरपोक।

गीधना—(क्रि० अ० हि०) परचना।

गीर—(फ़ा०) वाला।

गीला—(वि० हि०) भीगा हुआ। —पन=नमी।

गुंचा—(पु० अ०) कली।

गुंज—(स्त्री० हि०) गुंजार। आनन्द-ध्वनि। —न= भनभनाहट। —ना=भौंरों का भनभनाना। गुंजा= घुंघची। गुंजायमान=गूँजता हुआ। गुंजार=भौंरों की गूंज।

गुंजाइश—(पु० फ़ा०) अँटने की जगह। समाई।

गुंजान—(वि० फ़ा०) घना।

गुंडा—(वि० हि०) पापी। छैला। —पन=बदमाशी। गुंडई=गुण्डापन।

गुफ़्गू—(फ़ा०) बातचीत। गुफ़्तार।

गुफ़्तार—(फ़ा०) बातचीत। गुफ़्तार।

गुंबज—(पु० फ़ा० गुम्बद) देवालयों की गोल छत। —दार=जिस पर गुम्बज हो।

गुच्ची—(स्त्री० हि०) भूमि में बना हुआ बहुत छोटा गड्ढा। जिसे गोली या गुल्ली-डंडा खेलते समय बनाते हैं :

गुच्छ, गुच्छक—(पु० सं०) गुच्छा।

गुज़र—(पु० फ़ा०) निकास। पहुँच। निर्वाह। —गाह=रास्ता। —ना=बीतना। किसी स्थान से होकर आना या जाना निर्वाह होना। —बसर=निर्वाह। गुज़रान। =गुज़र। गुज़श्ता=बीता हुआ। गुज़ारना=बिताना। गुज़ारा=गुज़रा। वृत्ति जो किसी को जीवन निर्वाह के लिये दी जाय। गुज़ार=अदा करना।

गुजरात—(पु० हि०) भारतवर्ष के पश्चिम प्रान्त का एक देश जो राजपूताने के आगे पड़ता है। गुजराती=गुजरात देश की भाषा। छोटी इलायची।

गुज़ारिश—(स्त्री० फ़ा०) निवेदन।

गुझिया—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का पकवान।

गुटका—(पु० हि०) छोटे आकार की पुस्तक।

गुट्ट—(पु० हि०) समूह।

गुठली—(स्त्री० हि०) किसी फल का बीज।

गुड ईवनिंग—(स्त्री० अं०) शाम के समय का अँगरेज़ी सलाम।

गुड नाइट—(स्त्री० अं०) रात के समय का अँगरेज़ी सलाम।

गुड बाई—(स्त्री० अं०) किसी से विदा होते समय कहा जानेवाला अँगरेज़ी सलाम।

गुड मार्निंग—(पु० अं०) किसी से मिलने या विदा होते समय कहा जानेवाला अँगरेज़ी सलाम।

गुड़ंबा—(पु० हि०) कच्चा आम जो उबालकर शीरे में डाला गया हो।

गुड़—(पु० हि०) कड़ाह में गाढ़ा पकाकर जमाया हुआ ऊख का रस जो कतरे, बट्टी या भेली के रूप में होता है।

गुड़गुड़—(पु० हि०) वह शब्द जो गले में वायु के घुसने और बुलबुला छूटने से होता है। गुड़गुड़ाना=गुड़-गुड़ शब्द होना। हुक्का पीना। गुड़गुड़ाहट=गुड़-गुड़ शब्द। गुड़गुड़ी=फ़रशी।

गुड़हर—(पु० हि०) अड़हल का पेड़ या फूल।

गुड़िया—(स्त्री० हि०) कपड़ों की बनी हुई पुतली जिससे लड़कियाँ खेलती हैं। गुड्डा।

गुण—(पु० सं०) सिफ़त। निपुणता। हुनर। असर। अच्छा स्वभाव। विशेषता। —कर = लाभदायक। —कारक = लाभदायक। —कारी = लाभदायक। —ग्राहक=गुण की क़दर करनेवाला मनुष्य। —ग्राही=गुणियों का आदर करनेवाला।—ज्ञ=गुण का जाननेवाला। गुणी। —ज्ञता=गुण की जानकारी। —वंत =गुणी। —वती=गुणवाली।—वाचक=जो गुण को प्रकट करे। —वान=गुणी।—सागर=गुणों से भरा। गुणाढ्य=बहुत गुणोंवाला। गुणातीत=गुणों से परे। गुणानुवाद=प्रशंसा। गुणी=गुणवाला। निपुण मनुष्य।

गुणा—(पु० हि०) ज़रब। गुणक=जिससे किसी अंक को गुणा करें या ज़रब दें। गुणनफल=गुणा करने या ज़रब देने से जो फल आवे। गुणांक=वह अंक जिसको

गुणा करना हो। गुणित=गुणा किया हुआ। गुण्य=वह अंक जिसमें गुणा करें।

गुत्थम-गुत्था—(पु० हि०) उलझाव। भिड़न्त।

गुदगुदी—(स्त्री० हि०) वह सुरसुराहट या मीठी खुजली जो काँख, पेट आदि माँसल स्थानों पर उँगली आदि छू जाने से होती है। गुदगुदाना=गुदगुदी पैदा करना।

गुदाज़—(वि० फ़ा०) गूदेदार।

गुदुरी—(स्त्री० हि०) मटर की फली।

गुनगुनाना—(क्रि० हि०) गुन-गुन शब्द करना। अस्पष्ट स्वर में गाना।

गुनाह—(पु० फ़ा०) पाप। दोष। गुनाही=पापी। दोषी। गुनाहगार=पापी। दोषी। —गारी=अपराध।

गुना—(पु० हि०) गुण। बार।

गुपचुप—(क्रि० वि० हि०) छिपा कर। एक प्रकार की मिठाई।

गुप्त—(वि० सं०) छिपा हुआ। गूढ़। वैश्यों के नाम के साथ व्यवहार होने की एक पदवी। —चर=भेदिया। —दान=जिस दान को सिर्फ़ दाता ही जाने।

गुफ़ा—(स्त्री० हि०) कंदरा।

गुफ़्तगू—(स्त्री० फ़ा०) बातचीत।

गुबरैला—(पु० हि०) एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो गोबर और मल आदि खाता और इकट्ठा करता है।

गुबार—(पु० अ०) धूल। मन में दबा हुआ क्रोध, दुःख या द्वेष।

गुब्बारा—(पु० हि०) वह थैली या उसके आकार की और कोई चीज़ जिसके अन्दर गर्म हवा या हवा से हलकी किसी प्रकार की भाप आदि भरकर आकाश में उड़ाते हैं।

गुम—(पु० फ़ा०) ग़ायब। अप्रसिद्ध। खोया हुआ। —नाम=अप्रसिद्ध।

गुमटी—(स्त्री० फ़ा०) गुंबद।

गुमर—(पु० फ़ा०) अभिमान। गुबार।

गुमराह—(वि० फ़ा०) भूला हुआ।

गुमान—(फ़ा०) संदेह। शक। घमंड।

गुमाश्ता—(पु० फ़ा०) मुनीम। —गीरी=गुमाश्ते का पद। गुमाश्ते का काम।

गुर—(पु० हि०) मूलमंत्र।युक्ति।

गुरगा—(पु० हि०) नौकर। लड़का।

गुरगाबी—(पु० फ़ा०) मुंडा जूता।

गुरदा—(पु० फ़ा०) रीढ़दार जीवों के अन्दर का एक अंग जो कलेजे के निकट होता है। हिम्मत।

गुरिया—(स्त्री० हि०) माला का दाना।

गुरु—(वि० सं०) आचार्य। शिक्षक। बड़ा। भारी। कठिनता से पकने या पचनेवाला। —आई=गुरु का धर्म। चालाकी। —कुल=गुरु, आचार्य्य या शिक्षक के रहने का वह स्थान जहाँ वह विद्यार्थियों को अपने साथ रखकर शिक्षा देता हो। —जन=बड़े लोग। —ता भारीपन। महत्व। गुरुआई। —त्व=भारीपन। बड़प्पन। —त्वकेन्द्र=किसी पदार्थ में वह विन्दु जिस पर समस्त वस्तु का भार एकत्रित हुआ और कार्य्य करता हुआ मान सकते हैं। —त्वाकर्षण = वह आकर्षण जिसके द्वारा भारी वस्तुयें पृथ्वी पर गिरती हैं। —दक्षिणा = आचार्य्य की भेंट। —द्वारा = गुरु का स्थान। —भाई = दो या दो से अधिक ऐसे पुरुष जिनमें से प्रत्येक का गुरु वही हो जो दूसरे का। —मुख=जिसने गुरु से मंत्र लिया हो। —मुखी=गुरु नानक की चलाई हुई एक प्रकार की लिपि जो पंजाब

में प्रचलित है। —वार=
वृहस्पति का दिन।
गुरेरना—(क्रि० हि०) घूरना।
गुर्रा—(पु० हि०) वह रस्सी
जिससे धनियाँ धनुही का
फरहा कसते हैं।
गुर्राना—(क्रि० हि०) क्रोध
या अभिमान के कारण भारी
और कर्कश स्वर से बोलना।
गुर्री—(स्त्री० हि०) भुने हुये जौ।
गुरूब—(अ०) अस्त होना।
गुरूर=घमंड। दम्भ।
गुल—(पु० फ़ा०) फूल। छाप।
दीपकादि में बत्ती का वह
अंश जो बिल्कुल जल जाता
है। जट्टा। —कंद=मिश्री
या चीनी में मिली हुई अमल
तास या गुलाब के फूलों की
पंखड़ियाँ जो धूप की गरमी
से पकाई जाती हैं। —कारी
=किसी प्रकार के बेल-बूटे या
फूल-पत्ती इत्यादि बनाने, तरा-
शने या काढ़ने का काम। —
खैरू=एक पौधा जिसमें नीले
रंग के फूल लगते हैं। —ज़ार
=वाटिका। —तराश=वह
कैंची जिससे चिराग़ का गुल
काटते हैं। वह कैंची जिससे
माली लोग बाग़ के पौधों
को कतरते या छाँटते हैं।
बाग़ के पौधों को काटने या
छाँटनेवाला माली। संग-
तराशों का वह औज़ार जिससे
वे पत्थरों पर फूल-पत्तियाँ
बनाते हैं। —दस्ता=फूल
का गुच्छा। —दाउदी=एक
प्रकार का छोटा पौधा।
—दान=गुलदस्ता रखने का
पात्र। नार=अनार का फूल।
—बकावली = एक प्रकार
का फूल। —मेंहदी=एक
प्रकार का पौधा। —लाला
=एक प्रकार का पौधा।
—शकरी=चीनी और गुलाब
के फूल से बनी हुई एक
मिठाई। —शन=फुलवारी।
—शब्बो=लहसुन से मिलता
जुलता एक प्रकार का छोटा
पौधा जिसको रजनी गंधा या
सुगंधन कहते हैं। —सम=

सोनारों का नक्काशी करने का एक औज़ार जिससे फूल आदि बनाते हैं। —सौसन=एक प्रकार का फूल जो हलके आसमानी रंग का होता है। —हज़ारा=एक प्रकार का गेंदा। गुलाब=एक झाड़ या कटीला पौधा जिसमें बहुत सुन्दर और सुगंधित फूल लगते हैं। गुलाब-जल। गुलाब-पाश = झारी के आकार का एक प्रकार का लंबा पात्र। गुलाबी=गुलाब के रंग का। हलका। गुले-राना=सुन्दर फूल। —चीन =एक प्रकार का वृक्ष जो कलम से लगाया जाता है और बारहों महीने फूलता है। संभवतः चीन देश से यह आया है। —कन्द (फा०) =गुलाब के फूलों से बनी एक मीठी दवा। —गपाड़ा =शोर।—गुल=मुलायम। —गुला=कोमल। एक प्रकार का पकवान। —गुलाना= किसी गूदेदार चीज़ को दबा कर या मलकर मुलायम करना। —छर्रा=मौज। —दस्ता=फूल रखने का पात्र। —फाम=सुन्दर। खूबसूरत। —बदन=एक प्रकार का बहुमूल्य रेशमी कपड़ा जो प्रायः लहरियेदार या धारीदार होता है। —रू =सुन्दर। खूबसूरत। गुलाब (फ़ा०)=एक पुष्प विशेष। गुलाबी=गुलाब के फूल के रंग की वस्तु। शीशा। असरूद की एक किस्म। गुलाबजामुन=एक प्रकार की मिठाई।

गुलाम—(पु० अ०) ख़रीदा हुआ नौकर। नौकर। ताश का एक पत्ता। गुलामी= दासत्व। सेवा। पराधीनता। —चोर=ताश का एक प्रकार का खेल। —गर्दिश =कोठी या महल आदि के चारोंओर बना हुआ वह बरामदा जहाँ अरदली, चप-

रासी, दर्वान और दूसरे नौकर-चाकर रहते हों।

गुलिस्ताँ—(पु० फ़ा०) बाग। उपवन। फारसी का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।

गुलियाना—(क्रि० हि०) औषध या और कोई तरल पदार्थ बाँस के चोंगे में भरकर पशु को पिलाना।

गुलूबंद—(पु० फ़ा०) वह सूती, ऊनी या रेशमी लम्बी और प्रायः एक बालिश्त चौड़ी पट्टी जो सरदी से बचने के लिये सिर, गले या कानों पर लपेटी जाती है।

गुलेल—(स्त्री० फ़ा० गिलूल) वह कमान या धनुष जिससे चिड़ियों और बन्दरों आदि को मारने के लिये मिट्टी की गोलियाँ चलाई जाती हैं। —ची=गुलेल चलानेवाला।

गुलौरा, गुलौर—(पु० हि०) वह स्थान जहाँ रस पकाने का भट्ठा हो और जहाँ गुड़ बनाया जाता है।

गुल्फ—(पु० सं०) एँड़ी के ऊपर की गाँठ।

गुल्म—(पु० सं०) ऐसा पौधा जो एक जड़ से कई होकर निकले और जिसमें कोई लकड़ी या डंठल न हो।

गुल्ला—(पु० हि०) रसगुल्ला। मिट्टी की बनी गोली जो गुलेल से फेंकी जाती है।

गुस्ताख़—(वि० फ़ा०) बे अदब। गुस्ताख़ी=बे अदबी।

ग़ुस्सा—(अ०) क्रोध। गुस्सैल =गुस्सावर।

ग़ुस्ल—(पु० अ०) स्नान। —ख़ाना=स्नानागार।

गुहना—(क्रि० हि०) गूँथना। सूई-तागों से सी देना।

गूँगा—(वि० फ़ा०) जो बोल न सके।

गूढ़—(वि० सं०) छिपा हुआ।

गूलर—(पु० हि०) एक बड़ा पेड़ जिसकी पेड़ी डालादि से एक प्रकार का दूध निकलता है।

गृह—(पु० सं०) घर। कुटुम्ब।

—पति=घर का मालिक। —पशु=कुत्ता। —मणि =दीपक। —स्थ=घर-बार वाला। खाने-पीने से खुश आदमी। गृहस्थाश्रम=चार आश्रमों में से दूसरा आश्रम। गृहस्थी=घर-बार। कुटुम्ब। घर का सामान। खेती-बारी। गृहिणी=घर की मालकिन। गृही=गृहस्थ।

गृह-सचिव—(पु० सं०) स्वराष्ट्र-सचिव।

गेँड़—(पु० हि०) ऊख के ऊपर का पत्ता।

गेँडुआ—(पु० हि०) तकिया। बड़ा गेंद।

गेंद—(पु० हि०) कंदुक। —बल्ला=गेंद और उसे मारने की लकड़ी।

गेंदा—(पु० हि०) एक पौधा जिसमें पीले रंग के फूल लगते हैं।

गेटिस—(पु० अं० गेटर) मोजा आदि बाँधने के लिये रबर, कपड़े या चमड़े का फ़ीता।

गेरुआ—(वि० हि०) गेरू के रंग का। गेरुई=चैत की फ़सल का रोग।

गेरू—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की लाल कड़ी मिट्टी।

गेली—(स्त्री० अं०) छापेखाने में धातु या लकड़ी की एक छिछली किश्ती जिस पर टाइप रखकर पहले पहल वह काग़ज़ छापा जाता है, जिस पर संशोधन होता रहता है।

गेसू—(फ़ा०) लट। काकुल। जुल्फ़।

गेहुँअन—(पु० हि०) एक प्रकार का अत्यन्त विषधर फनदार साँप।

गेहूँ—(पु० हि०) एक अनाज जिसको फ़सल अगहन में बोई जाती है और चैत में काटी जाती है।

गैंड़ा—(पु० हि०) भैंसे के आकार का एक बड़ा पशु।

गैज़ेट—(अं०) सरकारी समाचार-पत्र।

गैज़ेटियर—(पु० अं०) वह

पुस्तक जिसमें किसी स्थान का भौगोलिक वर्णन हो।

गैजेटेड अफ़सर—(पु० अं०) वह सरकारी कर्मचारी जिसकी नियुक्ति की सूचना सरकारी गैजेट में प्रकाशित होती है।

ग़ैब—(पु० अ०) वह जो सामने न हो। ग़ैबी=छिपा हुआ। अजनबी।

ग़ैर—(वि० अ०) दूसरा। अजनबी। —मनकूला=अचल। —मुनासिब = अनुचित। —मुमकिन=असंभव। —वाजिब=अयोग्य। —हाज़िर =अनुपस्थित।

ग़ैरत—(स्त्री० अ०) लज्जा।

गैलन—(स्त्री० अं०) पानी दूधादि द्रव पदार्थ मापने का एक अँगरेज़ी मान जो तीन सेर का होता है।

गैलरी—(स्त्री० अं०) नीचे ऊपर बैठने का सीढ़ीनुमा स्थान।

गैस—(स्त्री० अं०) एक तत्त्व। हवा।

गोँड़—(पु० हि०) एक असभ्य जङ्गली जाति।

गोँदरा—(पु० हि०) नरम घास या पयाल का बना हुआ एक प्रकार का आसन जिस पर किसान लोग सोते हैं। गोंदरी=घास की बनी हुई चटाई। पयाल की बनी हुई चटाई।

गोकि—(फ़ा०) यद्यपि।

गो—(स्त्री० सं०) गाय। —शाला=जहाँ गायें बाँधी जाती हैं।

गोज़—(पु० फ़ा०) पाद।

गोजई—(स्त्री० हि०) जौ और गेहूँ मिला हुआ।

गोटा—(पु० हि०) सुनहले या रुपहले बादले का बना हुआ पतला फ़ीता। सूखा हुआ मल।

गोटी—(स्त्री० हि०) कंकड़। गेरू पत्थर इत्यादि का छोटा गोल टुकड़ा जिससे लड़के खेल खेलते हैं।

गोड़इत—(पु० हि०) चौकीदार।
गोड़ना—(क्रि० स० हि०) कोड़ना।
गोड़ा—(पु० हि०) पलँगादि का पाया।
गोत—(पु० हि०) कुल। समूह। गोती=अपने गोत्र का। गोत्र=संतान। समूह। एक प्रकार का जाति-विभाग।
ग़ोता—(पु० फ़ा०) डुब्बी। —ख़ोर=डुबकी लगाने वाला।
गोदना—(क्रि० हि०) गड़ाना।
गोदी—(स्त्री० हि०) बड़ी नदी या समुद्र में वह घेरा हुआ स्थान जहाँ जहाज़ मरम्मतार्थ या तूफ़ान आदि के उपद्रव से रक्षित रहने के लिये रक्खे जाते हैं। जेटी।
गोधूली—(स्त्री० सं०) सन्ध्या का समय।
गोपन—(पु० सं०) छिपाना। गोपनीय=छिपाने योग्य।
गोफन, गोफना—(पु० हि०) ढेलवाँस। फन्नी।
गोबर—(पु० हि०) गौ का मल। —गणेश, गनेश=भद्दा। मूर्ख। गोबरी=गोबर का लेपन। गोबरैला=एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो गोबर में या इसी प्रकार की कोई दूसरी गंदी चीज़ में उत्पन्न होता है और उसी में रहता है।
गोभी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की घास जिसके पत्ते लंबे खर-खरे, कटावदार और फूल गोभी के पत्तों के रंग के होते हैं। एक तरकारी।
गोमती—(स्त्री० सं०) एक नदी।
गोमुखी—(स्त्री० सं०) ऊन आदि की बनी हुई एक प्रकार की थैली जिसमें हाथ डाल-कर जप करते समय माला फेरते हैं।
गोयँड़—(स्त्री० हि०) गाँव के आसपास की भूमि।
गोयन्दा—(फ़ा०) कहने वाला। भेदिया।
गोया—(फ़ा०) मानो।

गोर—(स्त्री० फ़ा०) क़ब्र। गोरा। सफ़ेद। —स्तान=(फ़ा०) क़बरिस्तान। ईसाई मुसलमानों के मुरदे गाड़ने की जगह। —कन=(फ़ा०) कब्र खोदने वाला।

गोरखधंधा—(पु० हि०) झगड़ा। उलझन।

गोरखनाथ—(पु० हि०) एक प्रसिद्ध अवधूत जो पन्द्रहवीं शताब्दी में हुए थे। गोरखपंथी=गोरखनाथ का अनुगामी।

गोरख़र—(पु० फ़ा०) गधे की जाति का एक जंगली पशु जो गधे से बड़ा और घोड़े से छोटा होता है।

गोरखा—(पु० हि०) नैपाल के एक प्रदेश का निवासी।

गोनिया—(फ़ा०) बढ़इयों और मेमारों का औज़ार जिससे लकड़ी और इमारत की टेढ़ाई सिधाई देखी जाती है।

गोरस—(पु० सं०) दूध। गोरसी=दूध गर्म करने की अँगीठी।

गोरा—(वि० सं० गौर) सफ़ेद वर्णवाला। फिरंगी। —ई=गोरापन। सुन्दरता। गोरी=रूपवती स्त्री।

गोरिल्ला—(पु० अफ्रिका) चिंपेंजी की जाति का बहुत बड़े आकार का एक प्रकार का बनमानुष।

गोरू—(पु० हि०) मवेशी।

गोल—(फ़ा०) गिरोह। दल। झुंड।

गोलमेज कान्फरेन्स—(स्त्री०) वह सभा जिसमें एक गोल मेज के चारोंओर बैठकर भिन्न-भिन्न दलों या मतों के लोग किसी महत्व के विषय पर विचार करते हैं।

गोलंदाज—(पु० फ़ा०) तोप में बत्ती देने वाला। गोलंदाजी=गोला चलाने का काम।

गोलंबर—(पु० हि०) गुंबद। गोलाई। गोल=वृत्ताकार।

गोला—(पु० सं०) किसी पदार्थ का बड़ा गोल पिंड। लोहे का वह गोल पिंड जिसमें बहुत-सी छोटी छोटी गोलियाँ

मेखें आदि भरकर युद्ध में तोपों की सहायता से शत्रुओं पर फेंकते हैं। गरी का गोला। वह बाज़ार या मंडी जहाँ अनाज या किराने की बहुत बड़ी बड़ी दुकानें हों। गोलाई=गोलापन। गोलाकार। गोलाकृति=गोल शक्लवाला। गोलाध्याय=भास्कराचार्य का एक ग्रंथ जिसमें भूगोल और खगोल का वर्णन है। गोलार्द्ध=पृथ्वी का आधा भाग जो एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक उसे बीचोबीच काटने से बनता है। गोली=वटिया। औषधि की वटिका। मिट्टी काँच आदि का बना हुआ वह छोटा गोल पिंड जिससे बालक खेलते हैं। गोली का खेल। सीसे आदि का ढला हुआ वह गोल पिंड जो बन्दूक में भरकर चलाया जाता है।

गोल्ड—(पु० अं०) सोना। —न=सोने का। सोने के रंग का।

गोवध—(पु० सं०) गौ की हत्या।

गोश—(फ़ा०) कान। गोशा=कोना। —माल=(फ़ा०) कान मलना। —वारा=(फ़ा०) कोष्टक। विवरणपत्र।

गोश्त—(पु० फ़ा०) मांस।

गोसफन्द—(फ़ा०) भेड़। बकरी।

गोसाईं—(पु०हि०) सन्यासियों का एक संप्रदाय। विरक्त साधु।

गोह—(स्त्री० हि०) छिपकली की जाति का एक जंगली जंतु।

गोहरा—(पु० हि०) कंडा।

गोहराना—(क्रि० हि०) पुकारना। गोहार=पुकार।

गौं—(स्त्री० हि०) मौक़ा। मतलब।

गौंटा—(पु० हि०) षड्यन्त्र। मतलब।

गौग़ा—(पु० अ०) शोर। अफ़वाह।

गौण—(वि० सं०) जो प्रधान या मुख्य न हो । सहायक । साधारण ।

गौना—(पु० हि०) मुकलावा । द्विरागमन ।

गौर—(वि० सं०) गोरा । उज्ज्वल ।

गौरव—(पु० सं०) बड़प्पन । सम्मान ।

गौरवा—(पु० हि०) चटक पत्ती ।

गौहर—(पु० फ़ा०) मोती ।

ग्रंथ—(पु० सं०) पुस्तक । —कर्त्ता, कार=ग्रंथ का बनाने वाला । —चुंबक= जो किसी विषय का पूर्ण विद्वान् हो । —साहब= सिक्खों की धर्म-पुस्तक जिसमें सब गुरुओं के उपदेश एकत्र किये हुये हैं ।

ग्रह—(पु० सं०) वे तारे जो सूर्य के चारोंओर घूमते हैं । —वेध=ग्रह की स्थिति आदि का जानना । ग्राहक= ग्रहण करने वाला । खरीदार । चाहने वाला ।

ग्रहण—(पु० सं०) सूर्य्य और चन्द्रमा के मध्य में पृथ्वी के आ जाने से चंद्रमा पृथ्वी की छाया में आ जाता है, उसे चन्द्र-ग्रहण और पृथ्वी और सूर्य के बीच में चन्द्रमा के आ जाने से सूर्य का कुछ अंश ढक जाता है उसे सूर्य-ग्रहण कहते हैं । पकड़ना । लेना या हस्तगत करना । मंजूरी । ग्राह्य =लेने योग्य । मानने लायक । जानने योग्य ।

ग्रांडील—(वि० अं० गैंडियर) ऊँचे कद का ।

ग्राम—(पु० सं०) गाँव । बस्ती । समूह । —कुक्कुट=पालतू मुरगा । —सिंह=कुत्ता । ग्रामीण=देहाती । ग्राम्य= ग्रामीण । मूढ़ ।

ग्रामर—(अं०) व्याकरण ।

ग्रासकट—(पु० अं०) घास काटने की मशीन ।

ग्रीक—(वि० अं०) यूनान देश की भाषा । ग्रीस या यूनान देश का निवासी ।

ग्रीवा—(स्त्री० सं०) गर्दन ।
ग्रीष्म—(स्त्री०सं०)गरमी की ऋतु।
ग्रूप—(पु० अं०) झुंड ।
ग्रेट प्राइमर—(पु० अ०) एक प्रकार का छापे का अक्षर ।
ग्रेट ब्रिटेन—(पु० अं०) इंगलैण्ड, वेल्स और स्काटलैंड देश ।
ग्रेन—(पु० अ०) एक अंगरेज़ी तौल जो प्रायः एक जौ के बराबर होती है ।
ग्रेनाइट—(पु० अ०) एक तरह का आग्नेय पत्थर जो बहुत कड़ा होता है ।
ग्रेजुएट—(पु० अ०) बी० ए० या एम० ए० पास किया हुआ व्यक्ति ।
ग्लास—(पु० अं०) शीशा । पानी पीने का एक प्रकार का बरतन ।
ग्लैशियर—(अं०)बरफ़ की नदी।
ग्रोस—(अ०) बारह दर्जन ।

घ

घ—हिन्दी-वर्णमाला में कवर्ग का चौथा व्यंजन जिसका उच्चारण जिह्वा-मूल या कंठ से होता है ।
घंट—(पु० हि०) घड़ा । मृतक-क्रिया में वह जलपात्र जो पीपल में बाँधा जाता है ।
घँघरी—(स्त्री० हि०) छोटा लहँगा ।
घँघोलना—(क्रि० हि०) घँघोरना । पानी को हिलाकर उसमें कुछ मिलाना ।
घंटा—(पु० सं०) अढ़ाई घड़ी का समय । एक लंगरदार बाजा जो मन्दिरों में लटकता रहता है । —घर=वह ऊँचा धौरहर जिस पर एक ऐसी बड़ी धर्म-घड़ी लगी हो जो चारोंओर से दूर तक दिखाई देती हो और जिसका घंटा दूर तक सुनाई देता हो ।
घंटी—(स्त्री० सं०) छोटा घंटा या उसके बजने का शब्द ।
घट—(पु० सं०) घड़ा । हृदय ।

घटती—(स्त्री० हि०) कमी। अवनति। अप्रतिष्ठा।
घटना—(क्रि० अ०) होना। कम होना। छोटा होना। (सं०) वाक़आ। वारदात।
घटबढ़—(स्त्री० हि०) कमी बेशी।
घटा—(स्त्री० सं०) मेघमाला। झुण्ड।
घटाटोप—(पु० सं०) बादलों का जमाव। ओहार।
घटी—(स्त्री० हि०) कमी। हानि। घाटा।
घटाना—(क्रि० हि०) कम करना। बाक़ी निकालना। अप्रतिष्ठा करना।
घटिया—(वि० हि०) जो अच्छे मोल का न हो। सस्ता।
घड़ा—(पु० घट) मिट्टी का बना हुआ गगरा।
घड़ियाल—(पु०) वह घंटा जो पूजा के समय की सूचना के लिये बजाया जाय। एक जल-जन्तु। मगर।
घड़ी—(स्त्री० हि०) समय-सूचक यंत्र। समय।
घड़ीसाज़—(पु० हि०) घड़ी की मरम्मत करने वाला।
घड़ीसाज़ी—(स्त्री० हि०) घड़ी की मरम्मत का व्यवसाय।
घड़ौंची—(स्त्री० हि०) घड़ा रखने की तिपाई या ऊँची जगह।
घन—(पु० सं०) मेघ। हथौड़ा। समूह।
घनघोर—(पु० सं०) भीषण ध्वनि। भयानक।
घनचक्कर—(पु० सं०) मूर्ख। आवारा गर्द। आतिशबाजी। सूर्य्यमुखी का फूल। चक्कर। जंजाल।
घनत्व—(पु० सं०) सघनता।
घनफल—(पु० सं०) लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई (गहराई या ऊँचाई) तीनों का गुणन-फल।
घनमूल—(पु० सं०) गणित में किसी घन-राशि का मूल अंक।
घना—(पु० सं० घन) गझिन। नज़दीकी। बहुत अधिक।

घनाक्षरी—(पु०) कवित्त ।
घनिष्ठ—(वि० सं०) गाढ़ा । बहुत अधिक । नज़दीकी ।
घने—(वि०) बहुत । अनेक ।
घन्नई—(स्त्री० हि०) मिट्टी के घड़ों और लकड़ी के लट्ठों को जोड़कर बनाया हुआ बेड़ा ।
घपला—(पु० अनु०) गड़बड़ । गोलमाल ।
घबड़ाना, घबराना— (क्रि० हि०) व्याकुल होना । जी न लगना ।
घबराहट—(स्त्री० हि०) व्याकुलता । अधीरता । अशांति ।
घमंड—(पु० हि०) अभिमान । ग़ुरूर । शेख़ी । घमंडी = अभिमानी । मग़रूर । शेख़ीबाज़ ।
घमसान—(पु० अनु०) गहरी लड़ाई । घोर युद्ध ।
घर—(पु० सं० गृह०) निवासस्थान । मकान ।
घरघराहट—(स्त्री० हि०) घर्रघर्र शब्द निकलना ।
घरद्वार—(पु० हि०) ठिकाना । गृहस्थी । निज की सारी सम्पत्ति ।
घरबार—(पु० हि०) ठौर-ठिकाना । घर का जंजाल । निज की सारी सम्पत्ति ।
घरवाली—(स्त्री० हि०) गृहिणी ।
घराती—(पु० हि०) कन्या-पक्ष के लोग ।
घराना—(पु० हि०) खानदान । वंश ।
घरू—(वि० हि०) निजो । घराऊ ।
घरेलू—(वि० हि०) पालतू । ख़ानगी । घर का ।
घरौंदा, घरौंधा—(पु० हि०) कागज, मिट्टी, धूल आदि का बना हुआ छोटा घर, जिसे छोटे बच्चे खेलने के लिये बनाते हैं ।
घर्रा—(पु० हि०) एक प्रकार का अंजन । गले की घरघराहट । खेत सींचने के लिये कुएँ से पानी निकालने का एक प्रकार ।
घर्षण—(पु० सं०) रगड़ ।

घलुआ—(पु० हि०) वह अधिक वस्तु जो खरीदार को उचित तौल के अतिरिक्त दी जाय। घेलौना। घाता।

घसीट—(स्त्री० हि०) जल्दी का लिखा हुआ। —ना=किसी वस्तु को खींचना। जल्दी-जल्दी लिखना।

घहरना—(क्रि० अ०) गरजने का सा शब्द करना। गम्भीर ध्वनि निकालना।

घहराना—(क्रि० अ०) गम्भीर शब्द करना। चिग्घाड़ना।

घाँघरा—(पु० हि०) लहँगा।

घाऊघप—(वि० हि०) चुप्पा। जिसका भेद कोई न पावे।

घाघ—(पु० हि०) अत्यन्त चतुर मनुष्य।

घाघरा—(पु० हि०) लहँगा। सरजू नदी का नाम।

घाट—(पु० सं०) नदी। तालाब या नदी का वह स्थान जहाँ लोग पानी भरते, नहाते धोते या पार उतरते हैं। —वन्दी =किश्ती खोलने या चलाने की मुमानियत। घाट न उतरने देना।

घाटा—(पु० हि०) घटी। नुक़सान।

घाटी—(स्त्री० हि०) पर्वतों के बीच की भूमि। गले का पिछला भाग।

घात—(पु० सं०) प्रहार। चोट। धक्का। बध। —क=हत्यारा। हिंसक। बधिक। शत्रु।

घाता—(पु० हि०) वह थोड़ी सी चीज़ जो सौदा खरीदने के बाद ऊपर से ली जाती है।

घानी—(स्त्री० हि०) उतनी वस्तु जितनी एक बार चक्की में डालकर पीसी या कोल्हू में डालकर पेरी जा सके।

घाम—(पु० हि०) धूप।

घामड़—(वि० हि०) बोदा। नासमझ। अहदी।

घायल—(वि० हि०) जख़्मी। आहत।

घालमेल—(पु० हि०) गड़बड़। मेल-जोल।

घाव—(पु० हि०) ज़ख़्म।

घास—(स्त्री॰ हि॰) तृण। चारा।
घिग्घी—(स्त्री॰ अनु॰) हिचकी।
घिघियाना—(क्रि॰ हिं॰) रो-रोकर प्रार्थना करना। गिड़-गिड़ाना। चिल्लाना।
घिचपिच—(स्त्री॰) स्थान की संकीर्णता। अस्पष्ट।
घिन—(स्त्री॰ हि॰) अरुचि। नफ़रत।
घिया—(पु॰ हि॰) लौकी। नेनुआँ।
घिराव—(स्त्री॰ हि॰) घेरा।
घिसघिस—(स्त्री॰ हि॰) अनुचित विलम्ब। गड़बड़ी। कार्य्य में शिथिलता।
घिसना—(क्रि॰ हि॰) रगड़ना।
घिसाई—(स्त्री॰ हि॰) घिसने की मज़दूरी। घिसना।
घिसाव—(पु॰ हि॰) रगड़।
घिस्सा—(पु॰ हि॰) रगड़ा। धक्का। रद्दा।
घी—(पु॰ हि॰) तपाया हुआ मक्खन।
घुँइयाँ—(स्त्री॰ देश॰) अरुई।
घुँघची—(स्त्री॰ हि॰) एक बीज जिसका सारा अंग लाल होता है, केवल मुख पर छोटा सा काला छींटा रहता है जो बहुत सुन्दर लगता है।
घुँघराले—(पु॰ हि॰) छल्लेदार। कुंचित। टेढ़े और बल खाये हुये बाल।
घुँघरू—(पु॰ हि॰) किसी धातु की बनी हुई गोल और पोली गुरिया जिसके अन्दर 'घन-घन' बजने के लिये कंकड़ भर देते हैं।
घुंडी—(स्त्री॰ हि॰) कपड़े का गोल बटन।
घुन—(पु॰ हि॰) एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो अनाज, पौधे और लकड़ी आदि में लगता है।
घुनघुना—(पु॰ अनु॰) झुनझुना।
घुनना—(क्रि॰ हि॰) घुन द्वारा लकड़ी आदि का खाया जाना।
घुन्ना—(वि॰ अनु॰) चुप्पा

घुमक्कड़—(वि० हि०) बहुत घूमने वाला। सैलानी।

घुमनी—(वि० स्त्री० हि०) जो इधर-उधर घूमती फिरे।

घुमाव—(पु० हि०) चक्कर। —दार=चक्करदार।

घुसपैठ—(स्त्री० हि०) पहुँच। गति। प्रवेश। रसाई।

घूँघट—(पु० हि०) वस्त्र का वह भाग जिससे कुल-वधू का मुँह ढका रहता है।

घूँट—(पु० अनु०) पानी या किसी द्रव पदार्थ का उतना अंश जितना एक बार गले के नीचे उतारा जा सके। चुसकी।

घुंडीदार—(वि० हि०) जिसमें घुन्डी लगी हो।

घुटना—(पु० हि०) पाँव के मध्य-भाग का जोड़। साँस का भीतर ही भीतर दब जाना। रुकना।

घुटन्ना—(पु० हि०) घुटनों तक का पायजामा। पतली मोहरी का पायजामा।

घुट्टी—(स्त्री० हि०) वह दवा जो छोटे बच्चों को पाचन के लिये पिलाई जाती है।

घुड़कना—(क्रि० हि०) डाँटना।

घुड़की—(स्त्री० हि०) डाँट, डपट। फटकार।

घुड़दौड़—(स्त्री० हि०) घोड़ों की दौड़। घोड़ों के दौड़ाने का स्थान।

घुड़साल—(स्त्री० हि०) अस्त-बल।

घूँटी—(स्त्री० हि०) एक औषधि जो छोटे बच्चों को पिलाई जाती है।

घूँसा—(पु० हि०) मुक्का।

घूमना—(क्रि० अ०) चारोंओर फिरना। चक्कर खाना। देशान्तर-भ्रमण। मँडराना। किसी ओर को मुड़ना। वापस आना या जाना। लौटना।

घूर—(पु० हि०) वह जगह जहाँ कूड़ा-करकट फेंका जाय।

घूरना—(क्रि० हि०) बुरी नीयत से एकटक देखना।

घूस—(स्त्री० हि०) चूहे के वर्ग का एक जन्तु । रिशवत । उत्कोच ।

घृत—(पु० हि०) घी ।

घेंटा—(पु० अनु०) सुअर का बच्चा ।

घेघा—(पु० देश०) गले की नली जिससे भोजन या पानी पेट में जाता है। गले का वह रोग जिससे गले में सूजन होकर बतौड़ा सा निकल आता है ।

घेर—(पु० हि०) चारोंओर का फैलाव। घेरा। —घार= चारोंओर का फैलाव । ख़ुशामद करना । घेरा= चारोंओर की सीमा। घिरा हुआ स्थान । हाता । मण्डल ।

घोंघा—(पु० देश०) शंख की तरह का एक कीड़ा। मूर्ख । गावदी ।

घोंची—(स्त्री० हि०) वह बैल जिसके सींग कानों की ओर मुड़े हों ।

घोंटना—(क्रि० हि०) घूँट-घूँट करके पीना ।

घोंसला—(पु० हि०) नीड़ । खोंता ।

घोटना—(क्रि० स० हि०) रगड़ना । अभ्यास करना ।

घोटाई—(स्त्री० हि०) घोटने की मज़दूरी ।

घोटाला—(पु० (देश०) घपला । गड़बड़ ।

घोड़ा—(पु० हि०) एक जानवर। खटका जिसके दबाने से बंदूक में रंजक लगती है और गोली चलती है। शतरंज का एक मोहरा जो ढाई घर चलता है । —गाड़ी=वह गाड़ी जो घोड़े द्वारा चलाई जाती है। (स्त्री०) घोड़ी=टोंटा ।

घोर—(वि० सं०) भयंकर । सघन । कठिन । गहरा । बुरा । बहुत अधिक ।

घोषणा—(स्त्री० सं०) उच्च स्वर से किसी बात की सूचना । राजाज्ञा आदि का प्रचार । गर्जन । ध्वनि । —पत्र=वह

पत्र जिसमें सर्वसाधारण को सूचनार्थ राजाज्ञा आदि लिखी हो। विज्ञप्ति। सूचना-पत्र।

घोसी—(पु० हि०) अहीर। ग्वाला। दूध बेचनेवाला। आजकल जो मुसलमान दूध बेंचते हैं, वे घोसी कहलाते हैं।

घौद—(पु० देश०) फलों का गुच्छा। गौद।

च

च—हिन्दी-वर्णमाला का २२वाँ अक्षर और च वर्ग का पहला व्यंजन जिसका उच्चारण-स्थान तालु है।

चंग—(स्त्री० फ़ा०) लावनी-बाज़ों का बाजा। पतंग। गुड्डी।

चंगा—(वि० हि०) नीरोग। तन्दुरुस्त। अच्छा।

चंगुल—(पु० हि०) चिड़ियों या पशुओं का टेढ़ा पंजा। बकोटा।

चँगेर, चँगेरी—(स्त्री० हि०) टोकरी। डलिया।

चंचल—(वि० सं०) अधीर। उद्विग्न। नटखट। —ता= चपलता। शरारत।

चंट—(वि० हि०) चालाक। धूर्त।

चंडाल—(पु० सं०) चांडाल। डोम।

चंडू—(पु० हि०) अफ़ीम का सत जिसका धुआँ नशे के लिये एक नली के द्वारा पीते हैं। —ख़ाना=वह घर जहाँ लोग इकट्ठे होकर चंडू पीते हैं।

चंडूल—(पु० देश०) ख़ाकी रंग की एक छोटी चिड़िया, जो पेड़ों और झाड़ियों में बहुत सुन्दर घोसला बनाती है और बहुत अच्छा बोलती है। पुराना चंडूल=बेडौल। भद्दा या बेवकूफ़ आदमी।

चंद—(वि० फ़ा०) कुछ ।
चंदन—(पु० सं०) एक पेड़ जिसके हीर की लकड़ी बहुत सुगंधित होती है ।
चंदा—(पु० हिं०) चन्द्रमा । बेहरी । उगाही ।
चन्द्र—(पु० सं०) चन्द्रमा । गले में पहनने का एक गहना । नौलखा हार । चन्द्रोदय=चन्द्रमा का उदय । चँदोवा । वैद्यक में एक रस ।
चंपई—(वि० हिं०) पीले रंग का ।
चंपक—(पु० सं) चम्पा ।
चंपत—(वि० देश०) चलता । अंतर्द्धान ।
चंपा—(पु० हिं०) एक पेड़ जिसमें हलके पीले रंग के फूल लगते हैं ।
चंपू—(पु० सं०) गद्य-पद्य मय काव्य ।
चकई—(स्त्री० हिं०) मादा चकवा ।
चकती—(स्त्री० हिं०) पट्टी । पैबन्द ।
चकत्ता—(पु० हिं०) चमड़े पर पड़ा हुआ धब्बा या दाग़ ।
चकनाचूर—(वि० हिं०) चूर-चूर ।
चकबंदी—(स्त्री० हिं०) ज़मीन की हदबंदी ।
चक़मक़—(पु० तु०) एक प्रकार का कड़ा पत्थर जिस पर चोट पड़ने से बहुत जल्द आग निकलती है ।
चकमा—(पु० हिं०) भुलावा ।
चकराना—(क्रि० हिं०) घूमना। चकित होना । आश्चर्य में डालना ।
चकला—(पु० हिं०) चौका । चक्की । इलाक़ा । कसबी-खाना ।
चकलेदार—(पु० देश०) किसी प्रदेश का शासक या कर संग्रह करनेवाला ।
चकवा—(पु० हिं०) एक पक्षी ।
चकाचौंध—(स्त्री हिं०) दृष्टि की तिलमिलाहट ।

चकित—(वि० सं०) विस्मित। हैरान।
चकोर—(पु० सं०) एक पत्ती।
चक्कर—(पु० हि०) फेरा।
चक्का—(पु० हि०) पहिया।
चक्की—(स्त्री० हि०) आटा पीसने या दाल दलने का यन्त्र।
चक्र—(पु० सं०) पहिया। कुम्हार का चाक। लोहे का एक अस्त्र जो पहिए के आकार का होता था। षड्यन्त्र।
चक्रवर्ती—(वि० हि०) सार्वभौम।
चक्रवाक—(पु० सं०) चकवा पत्ती।
चक्रवृद्धि—(स्त्री० सं०) सूद दर सूद।
चक्रव्यूह—(पु० सं०) एक प्रकार की फ़ौजी मोर्चेबंदी।
चख़—(फ़ा०) झगड़ा। लड़ाई।
चखना—(क्रि० हि०) स्वाद लेना।
चख़ाचख़—(फ़ा०) झगड़ा। लड़ाई के समय तलवार की आवाज़।
चखाचखी—(स्त्री० फ़ा०) लाग-डाँट। विरोध। वैर।
चखाना—(क्रि० हि०) स्वाद दिलाना। खिलाना।
चगड़—(वि० देश०) चतुर।
चग़ताई—(पु० तु०) मध्य एशिया निवासी तुर्कों का एक प्रसिद्ध वंश। अकबर इसी वंश का था।
चचा—(पु० हि०) बाप का भाई। चची=चचा की स्त्री। चचेरा=चचाज़ाद। चचा से उत्पन्न।
चट—(क्रि० वि०) शीघ्र। वह शब्द जो किसी कड़ी वस्तु के टूटने पर होता है।
चटकदार—(वि० हि०) चटकीला।
चटकनी—(स्त्री० हि०) सिटकिनी।
चटकमटक—(स्त्री० हि०) बनाव। शृङ्गार। वेष-विन्यास। चमक-दमक।

चटनी—(स्त्री० हि०) अवलेह।
चटपटी—(स्त्री० हि०) आतुरता। तेज चीज़, जैसे कचालू आदि।
चटाई—(स्त्री० हि०) तृण का बिछौना।
चटाना—(क्रि० हि०) खिलाना। रिशवत देना।
चटोरा—(वि० हि०) स्वाद-लोलुप। लोभी।।
चट्टान—(स्त्री० हि०) शिला-खंड।
चट्टी—(स्त्री० हि०) पड़ाव। स्लिपर।
चढ़ना—(क्रि० हि०) ऊँचाई पर जाना। बढ़ना। आक्रमण करना। मँहगा होना। आवाज़ तेज होना। बहाव के विरुद्ध नदी में चलना। तनना। देवार्पित होना। ढोल सितार आदि की डोरी या तार कस जाना। सवार होना। किसी निर्दिष्ट काल-विभाग जैसे वर्ष, मास, नक्षत्र आदि का आरम्भ होना। कर्ज़ होना। दर्ज होना। पकने या आँच खाने के लिये चूल्हे पर रक्खा जाना। लेप होना। चढ़ाई=चढ़ने की क्रिया। वह स्थान जो आगे की ओर बराबर ऊँचा होता गया हो। धावा। चढ़ा ऊपरी=होड़। चढ़ाना=ऊँचाई पर पहुँचाना। चढ़ने में प्रवृत्त कराना। भाव बढ़ाना। धावा कराना। चढ़ाव=वह गहना जो दूल्हे के घर की ओर से दुलहिन को पहनाया जाता है। वह दिशा जिधर से नदी या पानी की धारा आई हो। चढ़ावा=पुजापा। बढ़ावा।
चतुरंग—(पु० सं०) शतरंज का खेल। चतुरंगिणी=वह सेना जिसमें हाथी, घोड़े, रथ और पैदल हों।
चतुर—(पु० सं०) तेज। चलाक। चतुराई=होशियारी। चालाकी।
चतुर्थ—(वि० सं०) चौथा। चतुर्थांश=एक चौथाई।

चतुर्दशी—(स्त्री० सं०) चौदहवीं तिथि।

चतुर्भुज—(वि० सं०) चार भुजाओं वाला। विष्णु। वह क्षेत्र जिसमें चार भुजाएँ और चार कोण हों।

चतुर्वर्ग—(पु० सं०) अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष।

चतुर्वर्ण—(पु० सं०) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।

चतुर्वेदी—(पु० हि०) चार वेदों का जानने वाला पुरुष। ब्राह्मणों की एक जाति।

चतुष्पद—(पु० सं०) चौपाया।

चतुष्पदी—(स्त्री० सं०) चौपाई। चार पद का गीत।

चना—(पु० हि०) चैती फ़सल का एक प्रधान अन्न जिसे बूट, छोला और रहिला भी कहते हैं।

चनार—(फ़ा०) एक पेड़।

चन्दाँ—(फ़ा०) इस क़दर। इतनी देर। अभी।

चन्दन—(फ़ा०) चन्दन। सन्दल।

चन्दाल—(फ़ा०) चाण्डाल। चूहड़ा। भंगी।

चपकन—(फ़ा०) अँगरखा।

चपक़लश—(तु०) तलवार की लड़ाई। गिरोह। भीड़। कठिन स्थिति।

चपड़ा—(पु० हि०) साफ़ की हुई लाख।

चपत—(पु० हि०) तमाचा। थप्पड़।

चपरासी—(पु० फ़ा०) प्यादा। अरदली।

चपल—(वि० सं०) चंचल। चालाक।

चपलता—(स्त्री० सं०) चंचलता। धृष्टता।

चपला—(स्त्री० सं०) फुरतीली। बिजली।

चपाती—(स्त्री० हि०) रोटी।

चपेटा—(पु० हि०) धक्का।

चप्पल—(पु० हि०) एक प्रकार का जूता।

चबाना—(क्रि० हि०) दाँतों से कुचलना।

चबूतरा—(पु० फ़ा०) चौतरा।

चबेना—(पु० हि०) चर्वण, भूँजा।

चमक—(स्त्री० हि०) रोशनी। कान्ति। कमर आदि का वह दर्द जो चोट लगने या एकबारगी अधिक बल पड़ने के कारण पड़ता है। —दमक= तड़क-भड़क। ठाट-बाट। —दार=भड़कीला। —ना =देदीप्यमान होना। दमकना। प्रसिद्ध होना। बढ़ती पर होना। चौंकना। झट से निकल जाना। एक बारगी द[illegible] हो उठना। मटकना। चमकाना=साफ़ करना। चौंकाना। मटकाना। चमकीला =चमकदार। भड़कीला।

मगादड़—(पु० हि०) एक जन्तु का नाम।

चमचम—(स्त्री०हि०)एक बँगला मिठाई।

चमचा—(पु० फ़ा०) चम्मच। एक प्रकार की छोटी कलछी। चिमटा।

चमड़ा—(पु० हि०) त्वचा। चर्म।

चमत्कार—(पु० सं०)आश्चर्य्य। करामात।

चमत्कारी—(पु० सं०) करामाती।

चमन—(पु० फ़ा०) फुलवाड़ी।

चमर—(पु० सं०) सुरा गाय की पूँछ का बना चँवर।

चमरख—(स्त्री० हि०) चरखे की गुड़ियों में लगाने की चकती।

चमार—(पु० हि०) चमड़े का काम करनेवाली एक जातिविशेष जिसे रैदास भी कहते हैं।

चमेली—(स्त्री० हि०) एक फूल।

चमोटा—(पु० हि०) चमड़े का टुकड़ा जिस पर नाई छूरे को रगड़ते हैं।

चमोटी—(स्त्री० हि०) चाबुक। पतली छड़ी।

चम्मच—(पु० फ़ा०) एक प्रकार की हलकी कलछी।

चयन—(पु० सं०) संग्रह। चुनना।

चर—(पु० सं०) दूत। क़ासिद।

चरकटा—(पु० हि०) हाथी के किये चारा काटनेवाला आदमी।

चर्ख़—(फ़ा०) आकाश।

चरख़ा—(पु० हि०) रहट। गराड़ी। झगड़े-बखेड़े या झंझट का काम।

चरख़ी—(स्त्री० हि०) छोटा चरखा। (फ़ा०) वह वस्तु जो बराबर घूमती रहे।

चरण—(पु० सं०) पैर। किसी छंद, श्लोक या पद्य आदि का एक पद। चरणामृत=पैर का धोया हुआ जल। चरणोदक=चरणामृत।

चरना—(पु० हि०) पशुओं का मैदान में घूम-घूमकर चारा खाना। घूमना-फिरना। चरनी=वह नाद जिसमें पशुओं को खाने के लिये चारा दिया जाता है। चराना=पशुओं को चारा खिलाने के लिये मैदान में ले जाना। चरवाहा=वह जो पशु चरावे। चरवाही=पशु चराने की मज़दूरी। चराऊ=चरागाह। चरागाह=वह मैदान जहाँ पशु चरते हों। चरिंदा=चरनेवाला जीव; जैसे, गाय भैंस आदि। चरी=वह ज़मीन जो किसानों को पशुओं के चारे के लिये ज़मींदार से बिना लगान मिलती है। बाजरे की क़िस्म का एक पौधा, जिसे जानवर खाते हैं।

चरपरा—(वि हि०) स्वाद में तीक्ष्ण।

चरबाँक, चरबाक—(वि० फ़ा० चर्ब) चालाक। शोख़।

चरबी—(स्त्री० फ़ा०) मज्जा।

चरमराना—(क्रि० हि०) जूते आदि से चरमर शब्द होना।

चरस—(पु० हि०) गाँजे के पेड़ से निकला हुआ एक प्रकार का गोंद। मोट। पुर।

चरसा—(पु० हि०) मोट। पुर। भूमि का एक परिमाण।

चराग़—(फ़ा०) दीपक।

चराचर—(त्रि० सं०) जड़ और चेतन।
चरित—(पु० सं०) जीवनी। कृत्य। चरितार्थ = जो पूरा उतरे। कृतकृत्य। चरित्र= स्वभाव। कार्य्य। करनी। —नायक=वह प्रधान पुरुष जिसके चरित्र का आधार लेकर कुछ लिखा जाय। —वान=सदाचारी।
चर्च—(पु० अं०) गिरजा घर।
चर्चा—(स्त्री० सं०) बयान। बातचीत।
चर्चित—(वि० सं०) लेप किया हुआ।
चर्म—(पु० सं०) चमड़ा। —कार=चमार।
चर्य्या—(स्त्री० सं०) आचरण। कामकाज।
चर्राना—(क्रि० हि०) किसी बात की प्रबल इच्छा होना। लकड़ी आदि के टूटने का शब्द। खुश्की और रुखाई के कारण किसी अंग में तनाव और हलकी पीड़ा।
चर्वण—(पु० सं०) चबाना। चबेना।
चर्वित—(वि० सं०) चबाया हुआ।—चर्वण=(पु० सं०) किसी किए हुये काम या कही हुई बात को फिर से करना या कहना।
चलती—(स्त्री० हि०) प्रभाव
चलतू—(वि० हि०) काम चलाऊ। साधारण।
चलन—(पु० हि०) गति। रस्म। रिवाज। प्रचार। जिसका व्यवहार प्रचलित हो। चलना = गमन करना। निभना। चल-विचल = जो अपने स्थान से हट गया हो। अव्यवस्थित। चलाऊ =टिकाऊ। मज़बूत। चलान =भेजा जाना। चलाना= चलने के लिये प्रेरित करना। गति देना। निभाना। चलायमान=चंचल। चलने-वाला।
चवन्नी—(स्त्री० हि०) चार आने

क़ीमत का चाँदी या निकल का सिक्का।
चश्म—(स्त्री० फ़ा०) आँख। —पोशी=आँख चुराना। अपराध क्षमा करना। —दीद जो आँखों से देखा हुआ हो। —नुमाई=घुड़की।
चश्मा—(पु० फ़ा०) वह ऐनक जो आँखों पर उनका दोष दूर करने तथा उनकी रक्षा के लिये लगाया जाता है। (फ़ा०) पानी का सोता।
चसका—(पु० हि०) शौक़। चाट। लत।
चस्पाँ—(वि० फ़ा०) चिपकाया हुआ।
चहल—(स्त्री० हि०) कीचड़। आनन्द की धूम। —क़दमी =धीरे-धीरे टहलना। —पहल=धूमधाम।
चहकना—(क्रि० हि०) चह-चहाना। उमंग या प्रसन्नता से अधिक बोलना।
चहचह—(फ़ा०) चिड़ियों के चह-कने और बोलने की आवाज़।
चहार—(फ़ा) चार। —शंबा= बुधवार। —दीवारी=किसी स्थान के चारों ओर की दीवार। चहारुम=चौथाई।
चाँई—(वि० हि०) ठग। होशि-यार। सिर में होने वाली एक प्रकार की फुन्सियाँ।
चांडाल—(पु० सं०) डोम। पतित मनुष्य।
चाँद—(पु० हि०) चन्द्रमा। खोपड़ी का मध्य भाग। चाँदना=प्रकाश। चाँदनी। चन्द्रिका = चन्द्रमा का प्रकाश। बिछाने की बड़ी सफ़ेद चद्दर। —मारी= बंदूक का निशाना लगाने का अभ्यास।
चाँदी—(स्त्री० हि०) रौप्य। आर्थिक लाभ।
चान्द्रमास—(पु० सं०) वह मास जो चन्द्रमा की गति के अनु-सार हो।
चांद्रायण—(पु० सं०) महीने भर का एक कठिन व्रत।

चांसलर—(पु० अं०) विश्व-विद्यालय का वह प्रधान अधिकारी जो बी० ए०, एम० ए० आदि की उपाधि देता है।

चाक—(फ़ा०) फटा हुआ। चिरा हुआ। गाड़ी या रथ का पहिया। पहिये की तरह का वह मंडलाकार पत्थर जो एक कील पर घूमता है और जिस पर कुम्हार मिट्टी की लोदी रख-कर बरतन बनाते हैं। (तु०) स्वस्थ। चालाक। बलवान। —दिल=(फ़ा०) एक प्रकार का बुलबुल। (अं०) खड़िया मिट्टी।

चाकर—(पु० फ़ा०) नौकर। चाकरानी=दासी।। लौंडी। चाकरी=नौकरी। ख़िदमत।

चाकलेट—(पु० अं०) एक प्रकार की मिठाई।

चाकू—(पु० तु०) छुरी।

चाचा—(पु० हि०) बाप का भाई। (स्त्री०) चाची।

चाट—(स्त्री० हि०) लालसा। आदत। —ना=जीभ लगा-कर खाना। खुंचा।

चाटुकार—(पु० सं०) ख़ुशा-मदी।

चाणक्य—(पु० सं०) एक नीति-कार का नाम। चालाक।

चादर—(स्त्री० फ़ा०) हल्का ओढ़ना और बिछौना।

चापलूस—(वि० फ़ा०) ख़ुशा-मदी। चापलूसी=ख़ुशामद।

चाबी—(स्त्री० पोर्चुगीज) ताले की कुञ्जी।

चाबुक—(पु० फ़ा०) कोड़ा।

चाय—(स्त्री० पोर्चुगीज़) एक पौधा या उसके पत्तों का उबाला हुआ रस।

चार—(वि० हि०) तीन से एक अधिक। —खाना= एक प्रकार का कपड़ा। —जामा=(फ़ा०) ज़ीन। —दीवारी=(फ़ा०) प्राचीर। चहारदीवारी। —पाई = छोटा पलँग। खटिया। —बालिश=(पु० फ़ा०)

एक प्रकार का गोल तकिया। —शंबा=(फ़ा०) बुधवार। —सू=(फ़ा०) चारों तरफ़। इर्द-गिर्द।

चारण—(पु० सं०) भाट। कवि।

चार्टर—(पु० अं०) सनद। अधिकार-पत्र।

चारु—(वि० सं०) सुन्दर।

चार्ज—(पु० अं०) किसी काम का भार। कार्य-भार। संरक्षण। सुपुर्दगी। दाम। मूल्य। इल-ज़ाम। किराया।

चारा—(पु० हि०) जानवरों के खाने की चीज़ें। (फ़ा०) इलाज। तदबीर।

चार्वाक—(पु० सं०) अनीश्वर-वादी। नास्तिक।

चाल—(स्त्री० हि०) आहट। प्रकार। कपट। प्रथा। आच-रण। गति। —चलन= आचरण। —ढाल=आच-रण। तौर-तरीक़ा। —बाज़= धूर्त। —बाज़ी = छल। चालिया=धूर्त।

चालन—(पु० सं०) चलने या चलने की क्रिया। भूसी या चोकर जो आटा चालने के पीछे रह जाता है।

चालाक—(वि० फ़ा०) व्यवहार-कुशल। चालबाज़। चालाकी=चतुराई। धूर्तता।

चालान—(पु० हि०) बीजक। रवन्ना।

चालीस—(वि० हि०) तीस से दस अधिक। —वाँ=पूरी राशि का $\frac{1}{40}$। चहल्लुम।

चाव—(पु० हि०) उमंग। अनुराग। अभिलाषा।

चावल—(पु० हि०) धान। भात। एक रत्ती के आठवें भाग के बराबर तौल।

चासनी—(फ़ा०) खाँड का बना हुआ शरबत।

चाह—(स्त्री० हि०) अभिलाषा। अनुराग। पूछ। माँग। (फ़ा०) कुवाँ।

चाहिये—(अव्य० हि०) उचित है।

चाहे—(अव्य० हि०) इच्छा हो। या।

चिउँटा—(पु० हि०) एक कीड़ा जिसे चींटा भी कहते हैं। (स्त्री०) चिउँटी=एक बहुत छोटा कीड़ा जिसे पिपीलिका या चींटी भी कहते हैं।

चिंघाड़—(स्त्री० हि०) चीख मारने का शब्द। चीत्कार। हाथी की बोली।

चिंतन—(पु० सं०) ध्यान। विवेचना। चिन्तनीय=चिंता करने के योग्य।

चिन्ता—(स्त्री० सं०) फ़िक्र। चिन्तातुर=चिन्ता से घबराया हुआ। चिन्त्य=विचारणीय। चिन्ता करने योग्य।

चिंपांजी—(पु०) अफ़्रिका का एक बनमानुस।

चिउड़ा—(पु० हि०) एक प्रकार का चर्वण।

चिक—(स्त्री० तु० चिक़) बाँस या सरकंडे की तीलियों का बना हुआ झँझरीदार परदा। —वा=बकर-कसाई।

चिकट—(वि० हि०) मैला-कुचैला।

चिकन—(पु० फ़ा०) क़सीदा काढ़ा हुआ कपड़ा।

चिकना—(वि० हि०) साफ़-सुथरा। स्निग्ध। जिस पर पैर आदि फ़िसले। —पन=चिकनाहट। —हट=चिकनापन।

चिकित्सालय—(पु० सं०) अस्पताल।

चिक्कण—(वि० सं०) चिकना।

चिट—(स्त्री० हि०) काग़ज़ का टुकड़ा।

चिटनवीस—(पु० हि०) मुहर्रिर।

चिट्टा—(वि० हि०) सफ़ेद। झूठा बढ़ावा।

चिट्ठा—(पु० हि०) किसी रकम की सिलसिलेवार फ़िहरिस्त। ब्यौरा।

चिट्ठी—(स्त्री० हि०) ख़त-पत्र। —पत्री=पत्र-व्यवहार। —रसा=चिट्ठी बाँटनेवाला। पोस्टमैन।

चिड़चिड़ा—(वि० हि०) थोड़ी सी बात पर अप्रसन्न हो जाने-वाला । तुनकमिज़ाज ।

चिड़िया—(स्त्री० हि०) पक्षी । —ख़ाना = पक्षीशाला । चिड़ीमार=बहेलिया ।

चिढ़—(स्त्री० हि०) अप्रसन्नता । कुढ़न । —ना = अप्रसन्न होना । कुढ़ना । चिढ़ाना= खिझाना ।

चित—(वि० हि०) उत्तान ।

चितकबरा—(वि० हि०) रंग-बिरंगा ।

चितवन—(स्त्री० हि०) निगाह ।

चिताना—(क्रि० हि०) सचेत करना । चितावनी=सूचना । सावधान करना ।

चित्त—(पु० सं०) दिल । मन । —विभ्रम=उन्माद । भ्रम । —वृत्ति=चित्त की गति ।

चित्ती—(स्त्री० हि०) छोटा धब्बा । छोटी कौड़ी ।

चित्र—(पु० सं०) तसबीर । —कला=चित्र बनाने की विद्या । —कार=चित्र बनाने का व्यवसायी । —काव्य= एक प्रकार का काव्य । —कूट =एक रमणीय पर्वत का नाम । —गुप्त=चौदह यम-राजों में से एक जो प्राणियों के पाप और पुण्य का लेखा रखते हैं ।—पट=वह काग़ज़, कपड़ा या पटरी जिस पर चित्र बनाया जाय या बना हो ।

चिथड़ा—(पु० हि०) फटा-पुराना कपड़ा । गुदड़ी ।

चिनगारी—(स्त्री० हि०) जलती हुई आग का छोटा कण या टुकड़ा ।

चिपकना—(क्रि० हि०) सटना । चिमिटना । चिपकाना = चिपटाना । चस्पाँ करना ।

चिपचिपा—(वि० हि०) लसीला । लसदार । —हट= लसीलापन ।

चिपटना—(क्रि० हि०) इस प्रकार जुटना कि जल्दी अलग न हो सके । चिपटाना= चिपकाना । आलिङ्गन करना ।

चिपटा—(वि० हि०) बैठा या धँसा हुआ। चिपटी=बैठी या धँसी हुई।

चिप्पी—(स्त्री० हि०) उपली। काग़ज़ का छोटा टुकड़ा जो किसी चीज़ पर चिपकाया जाय।

चिबिल्ला—(वि० हि०) शरारती। नटखट।

चिबुक—(पु० सं०) ठुड्डी।

चिमटना—(क्रि० हि०) प्रगाढ़ आलिङ्गन करना। लिपटना।

चिमटा—(पु० हि०) लोहे का एक औज़ार जिससे रोटी सेंकी जाती है। (स्त्री०) चिमटी।

चिमनी—(स्त्री० अं०) शीशे की नली अथवा मकान के ऊपर का वह छेद जिस से धुआँ निकलता है।

चिरंजीव—(वि० सं०) बहुत दिन जीनेवाला।

चिरंतन—(वि० सं०) पुराना।

चिर—(वि० सं०) बहुत दिनों का। —परिचित=पुरानी जान-पहचान। —काल=बहुत पहले से। —जीवी=(वि० सं०) बहुत दिनों तक जीनेवाला। —स्थायी=बहुत दिनों तक रहनेवाला। —स्मरणीय=बहुत दिनों तक याद करने योग्य। चिरवाना=फड़वाना। चिराई=चिरवाई।

चिरकीन—(वि० फ़ा०) मैला। गंदा।

चिरकुट—(पु० हि०) चिथड़ा।

चिराग़—(पु० फ़ा०) दीपक।

चिरायँध—(स्त्री० हि०) चरबी, चमड़े, बाल, मांस आदि के जलने की दुर्गन्ध।

चिरायता—(पु० हि०) एक मशहूर पौधा, जो दवा का काम देता है।

चिरौंजी—(स्त्री० हि०) एक फल का नाम।

चिलकना—(क्रि० हि०) दर्द का रह-रह कर उठना।

चिलगोज़ा—(पु० फ़ा०) एक मेवा।

चिलम—(पु० फ़ा०) मिट्टी का एक छोटा बरतन, जो तमाकू पीने में काम देता है। —पोश=चिलम का ढक्कन।

चिलमन—(पु० फ़ा०) बाँस की फट्टियों का परदा।

चिल्लपों—(स्त्री० हि०) शोर-गुल।

चिल्ला—(पु० फ़ा०) चालीस दिन का किसी पुण्य कार्य्य का नियम। धनुष की डोरी।

चिल्लाना—(क्रि० हि०) ज़ोर से बोलना। शोर मचाना।

चिल्लाहट—(स्त्री० हि०) हल्ला। शोर।

चिन्ह—(पु० सं०) लक्षण। निशान। चिन्हित=चिन्ह किया हुआ।

चीकट—(पु० हि०) तेल का मैल।

चीख़—(स्त्री० फ़ा०) चिल्लाहट।

चीज़—(स्त्री० फ़ा०) वस्तु। पदार्थ। द्रव्य।

चीड़—(पु० हि०) एक प्रकार का पेड़।

चीत्कार—(पु० सं०) चिल्लाहट।

चीथड़ा—(पु० सं०) गुदड़ी।

चीदा—(वि० फ़ा०) चुना हुआ।

चीनाबादाम—(पु० हि०) मूँगफली।

चीफ़—(पु० अँ०) बड़ा सरदार। प्रधान। —कमिश्नर=किसी सूबे या कई कमिश्नरियों का प्रधान अधिकारी।— कोर्ट=किसी प्रान्त का प्रधान न्यायालय।— जज=चीफ़ कोर्ट का प्रधान जज।— जस्टिस=हाई कोर्ट का प्रधान जज।

चीमड़—(वि० हि०) जो खींचने, मोड़ने या झुकाने आदि से न फटे या टूटे।

चीर—(पु० सं०) कपड़ा। चिथड़ा। दरार। —ना=फाड़ना। —फाड़=चीरने-फाड़ने का काम।

चील—(स्त्री० हि०) एक बड़ी चिड़िया।

चीलर—(पु० हि०) एक छोटा कीड़ा जो मैले कपड़ों में पड़ जाता है।

चुँगना—(क्रि० हि०) चुगना।

चुंबक—(पु० सं०) एक प्रकार का पत्थर या धातु जिसमें लोहे को अपनी ओर खींचने की शक्ति होती है।

चुंबन—(पु० सं०) चुम्मा। बोसा।

चुक़न्दर—(फ़ा०) एक प्रकार की तरकारी।

चुकता—(वि० हि०) बेबाक।

चुकना—(क्रि० हि०) ख़तम होना।

चुकाना—(क्रि० हि०) बेबाक करना। तै करना।

चुग़द—(पु० फ़ा०) उल्लू। बेवक़ूफ़।

चुगना—(क्रि० हि०) चिड़ियों का चोंच से दाना उठाकर खाना। चुगाना=चिड़ियों को दाना खिलाना।

चुग़ल—(पु० फ़ा०) इधर की उधर लगाने वाला। —ख़ोर =चुग़ली खाने वाला। —खोरी = चुगली खाने का काम। चुग़ली=चुगलख़ोरी।

चुचकारना—(क्रि० हि०) दुलारना।

चुटकुला—(पु० हि०) मज़ेदार या चमत्कार-पूर्ण बात।

चुटिया—(स्त्री० हि०) शिखा।

चुड़ैल—(स्त्री० सं०) भूत की स्त्री। कुरूपा और दुष्टा स्त्री।

चुनचुनाना—(क्रि० हि०) कुछ जलन लिये हुये चुभने की सी पीड़ा करना। चुनचुनाहट =कुछ जलन लिये हुये चुभने की सी पीड़ा।

चुनट—(स्त्री० हि०) शिकन। बल।

चुनना—(क्रि० हि०) बीनना। छाँटना। सजाना। शिकन डालना।

चुनरी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का रंगीन व बूटीदार कपड़ा।

चुनाँचे—(फ़ा०) जैसा कि। इस लिये।

चुनाँ चुनी—(स्त्री० फ़ा०) ऐसा-वैसा।

चुनाव—(पु० हि०) चुनने का काम। एलेक्शन।

चुनिंदा—(वि॰ हि॰) चुना हुआ। बढ़िया।
चुनौटी—(स्त्री॰ हि॰) चूना रखने की डिबिया।
चुनौती—(स्त्री॰ हि॰) ललकार। प्रचार। चैलेंज।
चुन्नी—(स्त्री॰ हि॰) बहुत छोटा नग।
चुप—(वि॰ हि॰) ख़ामोश।
चुपकी—(स्त्री॰ हि॰) ख़ामोशी।
चुपड़ना—(क्रि॰ हि॰) खुशामद करना। दोष छिपाना। किसी गीली वस्तु को फैलाकर लगाना।
चुप्पा—(वि॰ हि॰) बहुत कम बोलने वाला।
चुप्पी—(स्त्री॰ हि॰) ख़ामोशी।
चुभकी—(स्त्री॰ हि॰) ग़ोता।
चुभना—(क्रि॰ हि॰) गड़ना। चित्त पर चोट पहुँचाना। हृदय पर प्रभाव करना।
चुभोना—(क्रि॰ हि॰) गड़ाना।
चुमकारना—(क्रि॰ हि॰) दुलारना।
चुरमुरा—(वि॰) जो खरेपन के कारण दबाने पर चुर-चुर शब्द करके टूट जाय।
चुराना—(क्रि॰ स॰ हि॰) गुप्त रूप से पराई वस्तु हरण करना। छिपाना। किसी वस्तु के देने या काम करने में कसर करना। पकाना।
चुरुट—(पु॰ पोर्चुगीज़) सिगार।
चुलबुला—(वि॰ हि॰) चंचल। चुलबुलाना=चपलता करना। —पन=शोख़ी। —हट=शोख़ी।
चुल्लू—(पु॰ हि॰) गहरी की हुई हथेली जिसमें भरकर पानी आदि पी सकें।
चुस्त—(वि॰ फ़ा॰) मज़बूत। फुरतीला। संकुचित।
चुस्ती—(स्त्री॰ फ़ा॰) फुरती। तंगी।
चुहचुहाता—(वि॰ हि॰) सरस।
चुहचुहाना—(क्रि॰ हि॰) चुटकीला लगना। चिड़ियों का बोलना।
चुहल—(स्त्री॰ हि॰) ठठोली।

चुहलबाज़ी—(स्त्री० हि०) मसखरापन ।

चुहिया—(स्त्री० हि०) चूहा का स्त्रीलिंग ।

चूँ—(पु० हि०) छोटी चिड़ियों के बोलने का शब्द । चूँ करना =प्रतिवाद करना । चूँकि= (फ़ा०) क्योंकि । —चरा = (फ़ा०) विरोध । आपत्ति । बहाना ।

चूँचूँ—(पु० हि०) चिड़ियों के बोलने का शब्द ।

चूँदरी—(स्त्री० हि०) चुनरी ।

चूक—(स्त्री० हि०) भूल ।

चूकना—(क्रि० हि०) गलती करना । लक्ष्य-भ्रष्ट होना । सुअवसर खो देना ।

चूची—(स्त्री० हि०) स्तन । कुच ।

चूड़ांत—(वि० सं०) पराकाष्ठा । बहुत अधिक ।

चूड़ामणि—(पु० सं०) सिर में पहनने का एक गहना जिसे शीशफूल भी कहते हैं । मुखिया ।

चूड़ी—(स्त्री० हि०) हाथ में पहनने का एक गहना । —दार = जिसमें चूड़ी या छल्ले अथवा इसी प्रकार के घेरे पड़े हों ।

चूज़ा—(फ़ा०) चिड़ियों का बच्चा ।

चून—(पु० हि०) आटा । चूना ।

चूना—(पु० हि०) एक प्रकार का तीक्ष्ण क्षार भस्म, जो पत्थर, कंकड़, मिट्टी, सीप, संख या मोती आदि पदार्थों को भट्टियों में फूँककर बनाया जाता है । टपकना ।

चूमना—(क्रि० हि०) चुम्मा लेना । बोसा लेना ।

चूरा—(पु० हि०) चूर्ण ।

चूर्ण—(पु० सं०) बुकनी । नष्ट-भ्रष्ट ।

चूल—(पु० सं०) चोटी । किसी लकड़ी का वह पतला सिरा जो किसी दूसरी लकड़ी के छेद में उसके साथ जोड़ने के लिये ठोंका जाय ।

चूल्हा—(पु० हि०) मिट्टी या लोहे का बना एक पात्र जिस

पर नीचे आग जलाकर भोजन पकाया जाता है।

चूसना—(हि०) किसी पदार्थ का रस खींच-खींचकर पीना।

चूहा—(पु० हि०) मूस।

चें—(स्त्री०) चिड़ियों के बोलने का शब्द।

चेंज—(पु० अं०) हवा बदलना। परिवर्तन। विनिमय।

चेंबर—(पु० अं०) सभा-गृह। —आफ़ कामर्स=व्यापारियों की सभा।'

चेअर—(स्त्री० अं०) बैठने की कुरसी।—मैन=किसी सभा या बैठक का प्रधान।

चेक—(पु० अं०) वह रुक्का या आज्ञापत्र जो किसी बैंक के नाम लिखा गया हो और जिसके देने पर वहाँ से उस पर लिखी हुई रक़म मिल जाय।

चेचक—(स्त्री० फ़ा०) शीतला या माता नामक रोग। —रू= वह जिसके मुँह पर शीतला के दाग हों।

चेत—(पु० हि०) ज्ञान। स्मरण। चेतन=आत्मा। जीवधारी। चेतना=बुद्धि। स्मृति। विचारना।

चेतावनी—(स्त्री० हि०) सतर्क होने की सूचना।

चेन—(स्त्री० अं०) ज़ंजीर।

चेना—(पु० हि०) साँवाँ की जाति का एक अन्न।

चेप—(पु० हि०) लसदार रस।

चेपना—(क्रि० हि०) चिपकाना।

चेला—(पु० हि०) शिष्य।

चेष्टा—(स्त्री० सं०) कोशिश। परिश्रम। ख़्वाहिश।

चेहरा—(पु० फ़ा०) मुखड़ा।

चेहलुम—(पु० फ़ा०) मुहर्रम के चालीसवें दिन की रसम।

चैंसलर—(पु० अं०) विश्व-विद्यालय का प्रधान अधि-कारी।

चैत—(पु० हि०) वह चन्द्रमास जिसकी पूर्णिमा को चित्रा नक्षत्र पड़े।

चैतन्य—(पु० सं०) होशियार।

एक प्रसिद्ध बंगाली वैष्णव-धर्म-प्रचारक।

चैती—(स्त्री० हि०) रब्बी। एक प्रकार का चलता गाना जो चैत में गाया जाता है।

चैन—(पु० हि०) आराम।

चैला—(पु० हि०) कुल्हाड़ी से चीरा हुआ लकड़ी का टुकड़ा। चैली=(स्त्री०) लकड़ी का छोटा टुकड़ा जो छीलने या काटने से निकलता है।

चैलेंज—(पु० अं०) ललकार।

चोंगा—(पु०) बाँस की खोखली नली। बेवकूफ़।

चोंगी—(स्त्री० हि०) भाथी में की वह नली जिसके द्वारा होकर हवा निकलती है।

चोंच—(स्त्री० हि०) पक्षियों के मुख का अगला भाग। बुद्धू।

चोंथना—(क्रि० हि०) फाड़ना या नोचना।

चोआ—(पु०) एक प्रकार का सुगंधित द्रव पदार्थ।

चोकर—(पु० हि०) आटे का वह अंश जो छानने के बाद छलनी में बच जाता है।

चोखा—(वि० हि०) श्रेष्ठ। शुद्ध। ईमानदार। तेज। भुरता।

चोग़ा—(फ़ा०) लम्बा अँगरखा।

चोचला—(पु० हि०) हाव-भाव। नख़रा।

चोट—(स्त्री० हि०) आघात। आक्रमण।

चोटा—(पु० हि०) राब का वह पसेव जो कपड़े में रखकर दबाने या छानने से निकलता है। झोंटा।

चोटी—(स्त्री० हि०) शिखा। एक में गुँधे हुये स्त्रियों के सिर के बाल। शिखर।

चोट्टा—(पु० हि०) चोर।

चोब—(स्त्री० फ़ा०) शामियाना खड़ा करने का बड़ा खम्भा। नगाड़ा या ताशा बजाने की लकड़ी। छड़ी। लकड़ी। —दार वह नौकर जो हाथ में लकड़ी लेकर आगे-आगे चले।

चोर—(पु० सं०) जो छिपकर पराई वस्तु का अपहरण करे। —दरवाज़ा = किसी मकान में पीछे की ओर या अलग कोने में बना हुआ गुप्त द्वार। चोरी = छिपकर किसी दूसरे की वस्तु लेने का काम।

चोला—(पु० हि०) लम्बा और ढीला-ढाला कुरता। शरीर।

चोली—(स्त्री० सं०) अँगिया। कंचुकी।

चौंकना—(क्रि० हि०) भड़कना। भौचक्का होना। सतर्क होना।

चौंधियाना—(क्रि० हि०) चका-चौंध होना। दृष्टि मंद होना।

चौंरी—(स्त्री० हि०) चोटी या वेणी बाँधने की डोरी। सफ़ेद पूँछ वाली गाय।

चौक—(पु० हि०) चौखूँटी खुली ज़मीन। शहर का बड़ा बाज़ार। मंगल के अवसरों पर आँगन में अबीर आदि की रेखाओं से बना हुआ चौखूँटा क्षेत्र। चार का समूह।

चौकड़ी—(स्त्री० हि०) छलांग।

चौकन्ना—(वि० हि०) साव-धान।

चौकस—(वि० हि०) चौकन्ना। ठीक।

चौका—(पु० हि०) काठ या पत्थर का पाटा जिस पर रोटी बेलते हैं। वह लिपा-पुता स्थान जहाँ हिन्दू लोग खाना बनाते और खाते हैं।

चौकी—(स्त्री० हि०) अड्डा। छोटा तख़्ता। रखवाली। रोटी बेलने का एक छोटा चकला। —दार = पहरा देनेवाला।

चौकोर—(वि० हि०) चौखूँटा।

चौखट—(स्त्री० हि०) दहलीज़।

चौगिर्द—(क्रि० वि० हि०) चारों तरफ़।

चौड़ा—(वि० हि०) लंबाई की ओर के दोनों किनारों के बीच फैला हुआ। —ई = लम्बाई के दोनों किनारों का फैलाव।

चौतरा—(फ़ा०) चबूतरा।

चौताल = (पु० हि०) मृदंग

का एक ताल। एक प्रकार का गीत।
चौथा—(वि० हि०) क्रम में तीसरे के बाद पड़नेवाला अंक। —ई=चौथा भाग। —चौथिया=वह ज्वर जो प्रति चौथे दिन आवे।
चौधराना—(पु० हि०) चौधरी का पद। वह धन जो चौधरी को उसके कामों के बदले में मिले।
चौधरी—(पु० हि०) किसी जाति, समाज या मंडली का मुखिया।
चौपट—(वि० हि०) नष्ट-भ्रष्ट। बरबाद।
चौपड़—(स्त्री० हि०) चौसर नामक खेल।
चौपाई—(स्त्री हि०) एक प्रकार का छन्द।
चौपाल—(पु० दि०) खुली हुई बैठक।
चौबंदी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का छोटा चुस्त अंगा। राजस्व।
चौबे—(पु० हि०) ब्राह्मणों की एक जाति।
चौबोला—(पु० हि०) एक मात्रिक छंद।
चौभड़—(स्त्री० वि०) वह चौड़ा, चिपटा और गड्ढे दार दाँत जिससे आहार कूँचते या चबाते हैं।
चौमंज़िला—(वि० हि०) चार मरातिब या खंडोंवाला मकान।
चौमासा—(पु० हि०) वर्षा-काल के चार महीने।
चौमुहानी—(स्त्री० हि०) चौराहा।
चौरस—(वि० हि०) समथल।
चौरा—(पु० हि०) चबूतरा। वह बैल जिसकी पूँछ सफ़ेद हो।
चौराई—(स्त्री० हि०) चौलाई नाम का साग।
चौसर—(पु० हि०) चौपड़।
चौहद्दी—(स्त्री० हि०) चारों ओर की सीमा।
चौहान—(पु० हि०) अग्निकुल

के अंतर्गत क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा।

च्युत—(वि० सं०) पतित। गिरा हुआ।

छ

छ—हिन्दी-वर्णमाला में चवर्ग का दूसरा व्यंजन। इसके उच्चारण का स्थान तालु है।

छँटना—(क्रि० हि०) अलग होना। छितराना। साथ छोड़ना।

छँटा—(वि० हि०) चुना हुआ। मशहूर।

छंद—(पु० सं०) वह वाक्य जिसमें वर्ण या मात्रा की गणना के अनुसार विराम आदि का नियम हो। छंदोबद्ध=जो पद्य के रूप में हो। छंदोभंग=छंद-रचना का एक दोष।

छकड़ा—(पु० सं०) बैलगाड़ी। बोझ लादने की दुपहिया गाड़ी जिसे बैल खींचते हैं।

छकना—(क्रि० सं०) तृप्त होना। खा-पीकर अघाना। मूर्ख बनना।

छकाछक—(वि० हि०) अघाया हुआ। भरा हुआ।

छक्का—(पु० सं०) छः का समूह या वह वस्तु जो छः अवययों से बनी हो। जूए का एक दाँव जिसमें कौड़ी या चित्ती फेंकने से छः कौड़ियाँ चित पड़ें।

छछूँदर—(पु० सं०) चूहे की जाति का एक जंतु। एक आतशबाज़ी।

छज्जा—(पु० हि०) ओलती। छाजन या छत्त का वह भाग जो दीवार के बाहर निकला रहता है।

छटकना—(क्रि० हि०) सट-कना। दाँव से निकल जाना। वेग से अलग हो जाना।

छटपटाना—(क्रि० अनु०) तड़पना। बेचैन होना। बंधन

या पीड़ा के कारण हाथ-पैर फटकारना।

छटाँक—(स्त्री० हि०) पाव भर का चैाथाई। एक तौल जो सेर का सोलहवाँ भाग है।

छटा—(स्त्री० हि०) प्रकाश। झलक। शोभा। छवि।

छठा—(वि० हि०) गिनती के क्रम से जिसका स्थान छः पर हो।

छड़—(स्त्री० हि०) धातु या लकड़ी आदि का लंबा पतला बड़ा टुकड़ा।

छड़ा—(पु० हि०) लच्छा। पैर में पहनने का चूड़ी के आकार का एक गहना।

छड़ी—(स्त्री० हि०) पतली लाठी। सीधी पतली लकड़ी।—दार =छड़ीवाला। चोपदार।

छत—(स्त्री० हि०) पाटन। घर की दीवारों के ऊपर की पटिया।

छतरी—(स्त्री० हि०) छाता। राजाओं की चिता या साधु महात्माओं की समाधि के स्थान पर स्मारक रूप से बना हुआ छज्जेदार मंडप।

छतियाना—(क्रि० हि०) छाती के पास ले जाना। बंदूक तानना।

छत्ता—(पु० हि०) मधुमक्खी, भिड़ आदि के रहने का घर।

छत्र—(पु० सं०) राजाओं का छाता जो राजचिह्नों में से है। —पति=राजा। छत्र का अधिपति। —भंग=राजा का नाश।

छद्म—(पु० सं०) छिपाव। बहाना। छल। कपट। —वेश=बदला हुआ वेश।

छनछनाना—(क्रि० अनु०) किसी तपी धातु पर पानी आदि पड़ने पर छन-छन शब्द होना।

छप—(स्त्री० अनु०) पानी में किसी वस्तु के गिरने का शब्द।

छपटना—(क्रि० हि०) चिपकना। सटना।

छपटाना—(क्रि॰ हि॰) चिमटाना। आलिङ्गन करना।
छपना—(क्रि॰ अ॰ हि॰) छापा जाना। मुद्रित होना। शीतला का टीका लगाना।
छपाना—(क्रि॰ हि॰) छापने का काम कराना। मुद्रित कराना। शीतला का टीका लगवाना।
छप्पय—(पु॰ हि॰) एक छंद जिसमें छः चरण होते हैं।
छप्पर—(पु॰ हि॰) छाजन। छान।
छबीला—(वि॰ हि॰) सुहावना। सुन्दर।
छब्बीस—(वि॰ हि॰) जो गिनती में बीस और छः हो।
छमछम—(स्त्री॰ अनु॰) नूपुर या घुँघरू आदि का शब्द। पानी बरसने का शब्द।
छमाछम—(स्त्री॰ अनु॰) गहनों के बजने का शब्द। पानी बरसने का शब्द।
छरछराना—(क्रि॰ हि॰) नमक या क्षार लगने से शरीर का घाव या छिले हुए स्थान में पीड़ा होना। छरछराहट= घाव में नमक आदि लगाने से उत्पन्न पीड़ा।
छल—(पु॰ सं॰) ठगपन। बहाना। कपट। —छंद= चालबाज़ी। कपट का व्यवहार।—ना=किसी को धोखा देना। धोखा। छल। छली=कपटी। धोखेबाज़।
छलकना—(क्रि॰ अ॰) उमड़ना। बाहर प्रकट होना। छलकाना=किसी बर्तन में रखे जल को हिला-डुलाकर बाहर उछालना।
छलाँग—(स्त्री॰ हि॰) कुदान। फलाँग। चौकड़ी।
छलावा—(पु॰ हि॰) भूत-प्रेत आदि की छाया जो एक बार दिखाई पड़कर फिर झट से अदृश्य हो जाती है।
छल्ला—(पु॰ हि॰) मुँदरी। छल्लेदार=जिसमें छल्ले लगे हों।

छवाई—(स्त्री० हि०) छाने का काम। छाने की मज़दूरी।

छवि—(स्त्री० सं०) शोभा। कांति। चमक।

छाँट—(स्त्री० हि०) छाँटने की क्रिया। काटने या कतरने की क्रिया। क़ै। छाँटना=काट-कर अलग करना। छिन्न-भिन्न करना।

छाँदना—(क्रि० हि०) जकड़ना। कसना। बाँधना।

छाजन—(पु० हि०) छप्पर का ढाँचा।

छाता—(पु० हि०) बड़ी छतरी।

छाती—(स्त्री० हि०) सीना। वक्षस्थल।

छात्र—(पु० सं०) विद्यार्थी।

छात्रवृत्ति—(स्त्री०सं०) वज़ीफ़ा। स्कालरशिप।

छान—(स्त्री० हि०) छप्पर।

छानना—(क्रि० हि०) किसी चूर्ण या तरल पदार्थ को महीन कपड़े के पार निका-लना।

छानबीन—(स्त्री० हि०) जाँच-पड़ताल। गहरी खोज।

छाना—(क्रि० हि०) तानना। फैलाना।

छाप—(स्त्री० हि०) निशान। मुहर। —ना=मुद्रित करना।

छापा—(पु० हि०) मुहर। —खाना=प्रेस। मुद्रणा-लय।

छाया—(स्त्री० सं०) साया। —दान=एक प्रकार का दान। —पथ=आकाश-गंगा।

छाला—(पु० हि०) चमड़ा। फफोला।

छावनी—(स्त्री० हि०) छप्पर। डेरा। पड़ाव। सेना के ठहरने का स्थान।

छिउँकी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की छोटी चींटी।

छिछोरा—(पु० हि०) ओछा। नीच प्रकृति का। —पन=नीचता।

छिटकना—(क्रि० हि०) बखेरना

छिड़कना—(क्रि० हि०) पानी आदि के छींटे डालना । छिड़काई=छिड़काव । छिड़काव=पानी छिड़कने की क्रिया ।

छिड़ना—(क्रि० अ० हि०) शुरू होना ।

छितर-बितर—(वि० दे०) तितर-बितर ।

छितराना—(क्रि० हि०) इधर-उधर पड़ना । तितर-बितर होना । बिखरना ।

छिदना—(क्रि० हि०) भिदना । सूराख़दार होना ।

छिदरा—(वि० हि०) छितराया हुआ । जर्जर ।

छिद्र—(पु० सं०) छेद । सूराख़ । दोष । छिद्रान्वेषी=छिद्र ढूँढ़नेवाला । दोष ढूँढ़नेवाला ।

छिनाना—(क्रि० हि०) छीनने का काम कराना ।

छिनाल—(स्त्री० हि०) व्यभिचारिणी । कुलटा ।

छिनाला—(पु० हि०) व्यभिचार ।

छिन्न-भिन्न—(वि० सं०) खंडित । टूटा-फूटा ।

छिपकली—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का जन्तु ।

छिपाना—(क्रि० हि०) ढाँकना । आड़ में करना ।

छिपाव—पु० हि०) दुराव । किसी बात या भेद को छिपाने का भाव ।

छिलका—(पु० हि०) फलों के ऊपर का आवरण ।

छिलना—(क्रि० हि०) उधड़ना । खरोंच जाना ।

छींकना—(क्रि० हि०) नाक और मुँह से वेग के साथ वायु निकालना जिससे शब्द होता है ।

छींट—(स्त्री० हि०) वह कपड़ा जिस पर रंग-बिरंगे बेल-बूटे छापकर बनाये गये हों ।

छींटना—(क्रि० हि०) छितराना । बिखराना ।

छींटा—(पु० हि०) जल-कण । सीकर ।

छी—(अव्य० सं०) घृणा-सूचक शब्द ।

छीका—(पु० हि०) सीका । सिकहर ।

छीछड़ा—(पु० हि०) मांस का बेकार टुकड़ा । मल की थैली ।

छीछालेदर—(स्त्री० हि०) दुर्दशा ।

छीजना—(क्रि० हि०) चीण होना । कम होना ।

छीदा—(वि० हि०) छिदरा ।

छीनना—(क्रि० हि०) काट कर अलग करना । दूसरे की चीज़ को ज़बरदस्ती ले लेना । छीना-झपटी=ज़बरदस्ती किसी की चीज़ ले लेना ।

छीपी—(सं० हि०) छींट छापने वाला ।

छीमी—(स्त्री० हि०) फली ।

छीलना—(क्रि० हि०) छिलका उतारना ।

छुआछूत—(स्त्री० हि०) छूत का विचार ।

छुईमुई—(स्त्री० हि०) लज्जा-वंती ।

छुटकारा—(पु० हि०) मुक्ति । रिहाई ।

छुटपन—(पु० हि०) छोटाई । बचपन ।

छुट्टा—(वि० हि०) जो बँधा न हो । अकेला ।

छुट्टी—(स्त्री० हि०) छुटकारा ।

छुड़ाई—(स्त्री० हि०) छोड़ने की क्रिया ।

छुड़ाना—(क्रि० हि०) दूसरे की पकड़ से अलग करना । मह-सूल देकर पार्सल लेना ।

छुरा—(पु० हि०) उस्तरा । छुरी=(हि०) काटने या चीरने-फाड़ने का एक छोटा हथियार ।

छुहारा—(पु० हि०) खजूर । एक मेवा ।

छूँछा—(वि० हि०) रीता । खाली ।

छूट—(स्त्री० हि०) छुटकारा ।

—ना = लगाव में न रहना। दूर होना।

छूत—(स्त्री० हि०) स्पर्श।

छूना—(क्रि० हि०) स्पर्श करना।

छेकना—(क्रि० हि०) स्थान लेना। जगह लेना।

छेड़—(स्त्री० हि०) किसी को चिढ़ाने या तंग करने की क्रिया।

छेद—(पु० सं०) सूराख़। —ना = बेधना।

छेना—(पु० हि०) पनीर। फटे दूध का खोया।

छेनी—(स्त्री० हि०) टाँकी।

छैल छिकनियाँ—(पु० देश०) शौक़ीन।

छैल छबीला—(पु० देश०) बाँका।

छैला—(पु० हि०) शौक़ीन। सजीला।

छोकड़ा—(पु० हि०) लड़का। —पन = लड़कपन। छिछोरापन। छोकड़ी = लड़की।

छोटा—(वि० हि०) लघु। —पन = छोटाई। लड़कपन।

छोटी इलाइची—(स्त्री० हि०) सफ़ेद या गुजराती इलायची।

छोड़ना—(क्रि० हि०) पकड़ से अलग करना।

छोप—(पु० हि०) मोटा लेप। —ना = गाढ़ा लेप करना।

छोर—(पु० हि०) किसी वस्तु का किनारा।

छोलदारी—(स्त्री० हि०) छोटा तंबू।

ज—चवर्ग का तीसरा अक्षर। इसका उच्चारण तालु से होता है।

जंक्शन—(पु० अं०) वह स्थान जहाँ दो या अधिक रेलवे लाइनें मिली हों। वह स्थान जहाँ दो रास्ते मिले हों। संगम।

जंग—(स्त्री० फ़ा०) लड़ाई। युद्ध। लोहे का मुरचा।

जंगम—(वि० सं०) चलने-फिरनेवाला। चलता-फिरता।

जंगल—(पु० सं०) वन। रेगिस्तान।

जँगला—(पु० पुर्त०) कटहरा। बाड़ा। चौखट या खिड़की जिसमें जाली या छड़ लगी हों।

जंगली—(वि० हि०) जंगल में मिलने या होनेवाला। जंगल सम्बन्धी। जंगल में रहनेवाला।

जंगी—(वि० फ़ा०) बड़ा।

जंघा—(स्त्री सं०) जाँघ।

जँचा—(वि० हि०) सुपरीक्षित।

जंजाल—(पु० हि०) झंझट। उलझन। —जंजाली = झगड़ालू।

जंजीर—(फ़ा०) शृङ्खला, साँकल। जंजीरा = एक प्रकार की सिलाई जो जञ्जीर की तरह मालूम पड़ती है। लहरिया।

जंटिलमैन—(पु० अं०) सभ्य पुरुष। भलामानुस।

जंतरमंतर—(पु० हि०) जादू टोना।

जँतसार—(स्त्री० हि०) जाँता गाड़ने का स्थान।

जंता—(पु० हि०) तार खींचने का औज़ार।

जंत्री—(पु० हि०) पत्रा। पंचांग।

ज़ंद—(पु० फ़ा०) पारसियों का धर्म-ग्रंथ।

जंबीरी नीबू—(पु० हि०) एक प्रकार का खट्टा नीबू।

जंबुक—(पु० हि०) गीदड़।

जंबूरक—(स्त्री० फ़ा०) छोटी तोप जो प्रायः ऊँटों पर लादी जाती है।

जंबूरची—(पु० फ़ा०) तोपची।

जंबूरा—(पु० हि०) चर्ख जिस-पर तोप चढ़ाई जाती है।

जँभाई—(स्त्री० हि०) उबासी।

जँभाना—(क्रि० हि०) जँभाई लेना।

जंभीरी—(हि०) एक प्रकार का खट्टा नीबू।

जई—(स्त्री० हि०) जौ की जाति का एक अन्न।

ज़ईफ़—(वि० अ०) बुड्ढा। —ज़ईफ़ी=(फ़ा०) बुढ़ापा।

ज़क—(फ़ा०) हरा देना। दोषारोपण करना।

जकड़—(स्त्री० हि०) कसकर बाँधना। —ना=कड़ा बाँधना।

ज़कात—(स्त्री अ०) दान। ख़ैरात। चुंगी।

ज़ख़ीरा—(पु० अ०) संग्रह। ढेर।

ज़ख़्म—(अ०) घाव।

जग—(पु० हि०) दुनिया।

जगजगाना—(क्रि० अनु०) चमकना।

जगत्—(पु० सं०) संसार। कूएँ के ऊपर चारों तरफ़ बना हुआ चबूतरा। —सेठ=बहुत बड़ा धनी महाजन जिसकी साख संसार में हो। जगदाधार=परमेश्वर। जगदीश्वर =परमेश्वर। जगद्गुरु= अत्यन्त पूज्य या प्रतिष्ठित पुरुष। शंकराचार्य की गद्दी पर के महन्तों की उपाधि। जगद्धात्री=दुर्गा की एक मूर्ति। जगन्नाथ=ईश्वर। विष्णु की एक प्रसिद्ध मूर्त्ति जो उड़ीसा के अंतर्गत पुरी नामक स्थान में स्थापित है। जगन्नियंता=परमात्मा।

जगना—(क्रि० हि०) नींद से उठना।

जगमग, जगमगा—(वि० अनु०) प्रकाशित। चमकीला। जगमगाना=दमकना। जगमगाहट=चमक।
जगवाना—(क्रि० हि०) सोते से उठवाना।
जगह—(स्त्री० हि०) स्थान।
जगात—(पु० हि०) महसूल।
जगाती—(पु० हि०) वह जो कर वसूल करे।
जगाना—(क्रि० स० हि०) चैतन्य करना। सुलगाना।
जघन्य—(वि० सं०) नीच। निकृष्ट।
ज़च्चा—(स्त्री० फ़ा०) प्रसूता स्त्री।
जज—(पु० अं०) न्यायाधीश।
जजमेंट—(पु० अं०) फ़ैसला। निर्णय।
जज़ा—(अ०) प्रतिफल। बदला।
जज़िया—(पु० अ०) एक प्रकार का कर।
जजी—(स्त्री० हि०) जज की अदालत।
जज़ीरा—(पु० फ़ा०) टापू। द्वीप।
जटना—(क्रि० स० हि०) ठगना।
जटल—(स्त्री० हि०) बकवास।
जटा—(स्त्री० सं०) उलझे हुए बड़े-बड़े बाल।
जटित—(वि० सं०) जड़ा हुआ। जटिल=अत्यन्त कठिन। जटाधारी।
जठर—(पु० सं०) पेट। जठराग्नि=पेट की वह गरमी या अग्नि जिससे अन्न पचता है।
जड़—(वि० सं०) अचेतन। मूर्ख। —ता=अचेतता। —त्व=अचैतन्य।
जड़हन—(पु० हि०) एक प्रकार का धान।
जड़ाऊ—(वि० हि०) पच्चीकारी किया हुआ।
जड़ित—(वि० हि०) जो किसी चीज़ में जड़ा हुआ हो।
जड़ी—(स्त्री० हि०) बूटी।
जताना—(क्रि० स० हि०) बतलाना।
जत्था—(पु० हि०) झुंड।
ज़द—(फ़ा०) चोट मारना। मारना।

जदल—(अ०) युद्ध । जङ्ग ।
ज़दा—(फ़ा०) मारा हुआ । चोट खाया हुआ ।
जदीद—(वि० अ०) नया ।
जन—(पु० सं०) लोग । ज़न=(फ़ा०) स्त्री । धर्म-पत्नी ।
जन-संख्या—(स्त्री० सं०) आबादी ।
जनक—(पु० सं०) जन्मदाता ।
ज़नख़दाँ—(फ़ा०) ठुड्डी ।
ज़नख़ा—(वि० फ़ा०) हीजड़ा । नपुंसक ।
जनता—(स्त्री० सं०) सर्व-साधारण । पबलिक ।
जनना—(क्रि० स० हि०) प्रसव करना । जननी=माता ।
जननेन्द्रिय—(स्त्री० सं०) योनि ।
जनपद—(पु० सं०) देश । देशवासी ।
जनप्रिय—(वि० सं०) सर्वप्रिय ।
जनयिता—(पु० हि०) जन्मदाता । पिता । जनयित्री=जन्म देने वाली । माता ।
जनरल—(पु० अ०) अंग्रेज़ी सेना का सेनापति ।
जनरव—(पु० सं०) किंवदंती । बदनामी । शोर ।
जनवरी—(स्त्री० अं०) अँगरेज़ी साल का पहला महीना ।
जनवास—(पु० हि०) वह जगह जहाँ कन्या-पक्ष की ओर से बरातियों के ठहरने का प्रबन्ध हो ।
जनश्रुति—(स्त्री० सं०) अफ़वाह ।
जनस्थान—(पु० सं०) दंडकवन ।
जना—(स्त्री० सं०) पैदाइश ।
जनाज़ा—(पु० अ०) अर्थी । तावूत ।
ज़नानख़ाना—(पु० फ़ा०) स्त्रियों के रहने का घर । अंतःपुर ।
ज़नाना—(क्रि० हि०) मालूम कराना ।
ज़नाना—(वि० फ़ा०) स्त्रियों का । नामर्द । निर्बल । अन्तःपुर ।
ज़नानापन—(पु० फ़ा०) मेहरापन । स्त्रीत्व ।
जनाव—(पु० अ०) महाशय । —आली=मान्यवर ।
जनार्दन—(पु० सं०) विष्णु ।

जनाश्रय—(पु० सं०) मकान।
जनित—(वि० सं०) जन्मा हुआ।
जनी—(स्त्री० हि०) दासी। स्त्री। जन्माई हुई।
जनूब—(अ०) दक्षिण दिशा।
जनेऊ—(पु० हि०) यज्ञोपवीत।
जनेत—(स्त्री० हि०) बरात।
जनेवा—(पु० हि०) लकड़ी आदि में बनी हुई लकीर।
ज़न्द—(फ़ा०) पारसियों की धर्म-पुस्तक।
जन्नत—(अ०) स्वर्ग। बिहिश्त।
जन्म—(पु० सं०) उत्पत्ति। —कुंडली=ज्योतिष के अनुसार वह चक्र जिससे किसी के जन्म के समय में ग्रहों की स्थिति का पता चले। —तिथि =जन्म-दिन। वर्ष-गाँठ। —दिन=वर्ष-गाँठ। —पत्र =जन्म-पत्री। जीवन-चरित्र। —भूमि=जन्म-स्थान। —राशि=वह लग्न जिसमें किसी के उत्पन्न होने के समय चन्द्रमा उदय हो। —स्थान =जन्म-भूमि। माता का गर्भ। जन्मांध=जन्म का अंधा। जन्माष्टमी=भादों की कृष्णाष्टमी।
जप—(पु० सं०) किसी मंत्र या वाक्य का धीरे-धीरे पाठ करना। —तप=संध्या। पूजा। —ना=किसी वाक्य या वाक्यांश को बराबर लगातार धीरे-धीरे देर तक कहना या दोहराना। —माला=वह माला जिसे लेकर लोग जप करते हैं। —यज्ञ=जप।
ज़फ़र—(अ०) विजय। फ़तेह।
जफ़ा—(स्त्री० फ़ा०) सख्ती। ज़ुल्म। —कश=सहनशील। मेहनती।
ज़फ़ील—(स्त्री० हि०) सीटी।
जब—(क्रि० वि० हि०) जिस समय।
जबड़ा—(पु० हि०) मुँह में दोनों ओर ऊपर-नीचे की वे हड्डियाँ जिनमें डाढ़ें जड़ी रहती हैं।
जब्र—(वि० हि०) बलवान। मज़बूत।

ज़बरदस्त—(वि० फ़ा०) बली। दृढ़। ज़बरदस्ती=अत्याचार। बल-पूर्वक। ज़बरन्=बलात्। ज़बरदस्ती।

जबरील—(अ०) ईसाई और इसलाम मज़हब में एक फ़िरिश्ते का नाम।

ज़च्चा—(अ०) प्रसूता। जिस स्त्री के बच्चा पैदा हुआ हो।

ज़बह—(पु० अ०) हिंसा। वध।

ज़बाँ—(स्त्री० फ़ा०) जीभ। —दराज़ = बढ़-बढ़कर बातें करने वाला। —दराज़ी= धृष्टता। ज़बान=जीभ। भाषा। बोली। —बंदी= मौन। ज़बानी=मौखिक। कथित। कहना।

ज़बून—(वि० तु०) बुरा। बेवक़ूफ़।

ज़ब्त—(अ०) कोई वस्तु किसी के अधिकार से ले लेना। ज़ब्ती=ज़ब्त होने की क्रिया।

जब्बार—अत्याचारी। ग़ुरूर करनेवाला।

ज़ब्र—(पु० अ०) ज़्यादती। सख़्ती।

जमघट—(पु० हि०) बहुत से मनुष्यों की भीड़। ठट्ठ।

जमशेद—(फ़ा०) फारस के एक बादशाह का नाम जो हकीम था।

जमहूर—(अ०) प्रजातंत्र शासन।

जमाअत—(अ०) गिरोह। दल। संग्रह।

जमाई—(पु० हि०) दामाद।

ज़मज़म—(अ०) काबे के पास एक कुआँ है।

जमा—(फ़ा०) एकत्र। —ख़र्च =आय और व्यय। —जथा =धन-संपत्ति।

जमात—(स्त्री० फ़ा०) बहुत से मनुष्यों का समूह। दरजा।

जमाल—(अ०) शरीर और मन दोनों की सुन्दरता।

जमादात—(अ०) प्राणहीन पदार्थ पत्थर, मिट्टी आदि।

जमादार—(पु० फ़ा०) कई सिपाहियों या पहरेदारों आदि

का प्रधान। —दारी=जमा-दार का पद।

ज़मानत—(स्त्री० अ०) वह ज़िम्मेदारी जो ज़बानी कोई काग़ज़ लिखकर अथवा कुछ रुपया जमा करके ली जाती है। —नामा=वह काग़ज़ जो जमानत करनेवाला जमानत के प्रमाण-स्वरूप लिख देता है।

जमाना—(क्रि० हि०) किसी तरल पदार्थ को ठोस बनाना।

ज़माना—(पु० फ़ा०) समय। युग। वक्त़। —साज़=अपना मतलब साधने के लिये दूसरों को प्रसन्न रखने वाला। व्यवहार-कुशल। —साज़ी=अपना मतलब साधने के लिये दूसरों को प्रसन्न रखना।

जमाबंदी—(स्त्री० फ़ा०) पटवारी का एक काग़ज़ जिसमें असामियों के नाम और उनसे मिलने वाले लगान की रक़में लिखी जाती हैं।

जमामार—(वि० हि०) अनुचित रूप से दूसरों का धन दबा रखने या ले लेने वाला।

जमाव—(पु० हि०) इकट्ठा होना। भीड़। —ड़ा=भीड़।

जमीकंद—(पु० फ़ा०) सूरन।

ज़मींदार—(पु० फ़ा०) भूमि का स्वामी। —दारी=जमींदार का हक़ या स्वत्व।

ज़मींदोज़—(वि० फ़ा०) जो गिरा, तोड़ या उखाड़कर जमीन के बराबर कर दिया गया हो। एक प्रकार का ख़ेमा।

ज़मीन—(स्त्री० फ़ा०) पृथ्वी।

ज़मीमा—(पु० अ०) क्रोड़पत्र। परिशिष्ट।

जमीयत—(अ०) आदमियों का गिरोह। सभा।

ज़मुर्रद—(पु० फ़ा०) पन्ना नामक रत्न।

ज़मुर्रदी—वि० फ़ा०) नीलापन लिये हुए हरा रंग।

जमोग—(पु० हि०) तसदीक़।

जमोगना—(क्रि० हि०) हिसाब-किताब की जाँच करना।

जयंती—(स्त्री० सं०) विजयिनी। पताका।

जय—(स्त्री० सं०) जीत। —पत्र =विजय-पत्र। —माल=वह माला जिसे स्वयंवर के समय कन्या अपने वरे हुए पुरुष के गले में डालती है। वह माला जो विजयी के विजय पाने पर पहनाई जाय। —श्री= विजय। एक प्रकार की रागिनी। —स्तंभ=वह स्तंभ जो विजयी राजा किसी देश को विजय करने के उपरान्त, विजय के स्मारक-स्वरूप बनवाता है।

ज़र—(पु० फ़ा०) धन। स्वर्ण। —गर=(फ़ा०) सोनार। —कस, जरकसी=जिस पर सोने के तार आदि लगे हों।

जरई—(स्त्री० हि०) धान आदि के वे बीज जिनमें अंकुर निकले हों।

जरगः—(तु०) आदमियों का गिरोह। सम्मेलन।

ज़रख़ेज़—(वि० फ़ा०) उपजाऊ।

जरठ—(वि० सं०) वृद्ध।

ज़रतुश्त—(फ़ा०) पारसियों के धर्म-प्रवर्त्तक। ज़रदुश्त।

ज़रदोज़—(पु० फ़ा०) जरदोज़ी का काम करनेवाला। —ज़रदोज़ी=एक प्रकार की दस्तकारी जो कपड़ों पर सलमें सितारे आदि से की जाती है।

जरनल—(पु० अं०) सामयिक पत्र। जरनलिस्ट=पत्रकार। जरनलिज़्म = पत्र-सम्पादन-कला।

ज़रब—(स्त्री० अ०) आघात। गुणा।

ज़रबफ़्त—(पु० फ़ा०) बेल-बूटेदार एक रेशमी कपड़ा।

ज़रमन—(पु० अं०) जरमनी का देश का निवासी। जरमनी देश की भाषा। —सिलवर=एक प्रकार की चाँदी।

जरमनी=मध्य यूरोप का एक प्रसिद्ध देश।

ज़रर—(पु० अ०) हानि। चोट।

जरा—(स्त्री० सं०) बुढ़ापा। —ग्रस्त=वृद्ध।

ज़रा—(वि० अ०) थोड़ा।

ज़राफ़त—(अ०) बुद्धिमानी। सज्जनता।

ज़र्रा—(अ०) कण।

जरायु—(पु० सं०) गर्भाशय।

ज़रिया—(पु० अ०) सहारा। वसीला।

ज़री—(स्त्री० फ़ा०) सोने के तारों आदि से बना हुआ काम।

ज़रीफ़—(पु० अ०) मसखरा। परिहास करनेवाला।

जरीब—(स्त्री० फ़ा०) एक माप जिससे भूमि नापी जाती है।

ज़रूर—(क्रि० वि० अ०) अवश्य। ज़रूरत = आवश्यकता। ज़रूरी=आवश्यक।

ज़र्क़बर्क़—(वि० फ़ा०) चमकीला।

जर्जर—(वि० सं०) जीर्ण। जर्जरित=जीर्ण। पुराना।

ज़र्द—(वि० फ़ा०) पीला। —आलू=एक मेवा जिसे सुखा लेने पर ख़ुबानी कहते हैं। ज़र्दा=(फ़ा०) एक प्रकार का व्यंजन। तम्बाकू। ज़र्दी=पीलापन।

ज़र्रा—(पु० अ०) अणु।

जर्राह—(पु० अ०) शस्त्र-चिकित्सक। सर्जन। —जर्राही= शस्त्र-चिकित्सा।

जल—(पु० सं०) पानी। —खवा=कलेवा। —चर= जल-जन्तु। —जन्तु=जलचर। —तरंग=एक प्रकार का बाजा। —पान= कलेवा। —प्रदान=तर्पण। —प्रपात=झरना। —प्लावन =बाढ़। —यान=नाव। —सेना=नौ-सेना। समुद्री सेना। —सेनापति=जल या नौ-सेना का प्रधान। नौ-सेनापति। जलांजलि=पानी भरी अँजुली। तर्पण।

ज़लज़ला—(पु० फ़ा०)भूकंप।
जलन—(स्त्री० हि०) दाह।
जलना—(क्रि० अ० हि०) बलना।
जलवा—(अ०) वैभव।
जलसा—(पु० अ०) उत्सव। सभा।
जलादत—(अ०) चुस्ती। चालाकी। जवांमर्दी।
जलाना—(क्रि० हि०) प्रज्वलित करना। किसी के मन में ईर्ष्या या द्वेष आदि उत्पन्न करना।
ज़लालत—(अ०) बुज़ुर्गी। महत्त्व।
जलावतन—(वि० अ०) निर्वासित।
जलावतनी—(स्त्री० अ०) देश-निकाला।
जलाशय—(पु० सं०) वह स्थान जहाँ पानी जमा हो।
ज़लील—(वि० अ०) अपमानित।
जलूस—(पु० अ०) समारोह।
जलेबी—(स्त्री० फ़ा०) एक प्रकार की मिठाई। एक प्रकार की आतिशबाज़ी।
जलोदर—(पु० सं०) एक रोग।
जल्द—(क्रि० वि० अ०) शीघ्र। —बाज़=बहुत जल्दी करने वाला। जल्दी=शीघ्रता।
जल्पना—(क्रि० सं०) व्यर्थ बकवाद करना।
जल्लाद—(पु० अ०) घातक।
जवाँमर्द—(वि० फ़ा०) शूरवीर। जवाँमर्दी=वीरता।
जवाखार—(पु० हि०) एक प्रकार का नमक।
जवान—(वि० फ़ा०) युवा। युवक। जवानी=युवावस्था।
जवाब—(पु० अ०) उत्तर। —तलब=जिसके संबंध में समाधान-कारक उत्तर माँगा गया हो। —दावा=वह उत्तर जो वादी के निवेदन-पत्र के उत्तर में प्रतिवादी लिखकर अदालत में देता है। —देह =उत्तर-दाता। —देही= उत्तरदायित्व। —सवाल= प्रश्नोत्तर। —जवाबी=जवाब सम्बन्धी।
जवाल—(पु० हि०) अवनति।

जौहर—(फ़ा०) गुण। हुनर।
जवाहर—(पु० अ०) रत्न। जवाहिरात=रत्न।
जशन—(पु० फ़ा०) उत्सव। हर्ष मनाना।
जसामत—(अ०) मोटा। ताज़ा। लम्बे-चौड़े शरीरवाला।
जसारत—(अ०) मर्दानगी। दिलेरी।
जस्ता—(पु० हि०) एक प्रकार की धातु।
जस्टिफाई—(पु० अं०) कम्पोज किये हुए मैटर को इस तरह बैठाना या कसना कि कोई लाइन या पंक्ति ऊँची-नीची या कोई अक्षर इधर-उधर न होने पावे।
जस्टिस—(पु० अं०) न्याय। न्यायाधीश। विचारपति।
जस्टिस आफ़ दि पीस—(पु० अं०) स्थानीय छोटे मैजिस्ट्रेट जो शांति-रक्षा तथा छोटे-मोटे मामलों आदि का विचार करने के लिये नियुक्त किए जाते हैं। जे० पी०।
जहँड़ाना—(क्रि० हि०) हानि उठाना। ठगा जाना।
ज़द—(फ़ा०) चोट मारना। मारा। ज़दा=(फ़ा०) मारा हुआ। चोट खाया हुआ।
ज़ख़्म—(अ०) घाव।
जहन्नुम—(पु० अ०) नरक। —रशीद = नरक में गया हुआ।
ज़हमत—(स्त्री० अ०) आपत्ति। कष्ट। दुःख। रंज।
ज़हर—(स्त्री० फ़ा०) विष। —बाद=एक प्रकार का फोड़ा। —मोहरा=साँप का विष खींचने वाला एक प्रकार का काला पत्थर। ज़हरीला= विषैला।
जहाँ—(क्रि० वि० हि०) जिस जगह। (फ़ा०) संसार। —दीद, जहाँदीदा = अनुभवी। —पनाह=संसार का रक्षक।
जहाज़—(पु०अ०) पोत। जहाजी =जहाज संबंधी।
जहाद—(अ०) धर्मयुद्ध।

जहान—(पु० फ़ा०) संसार।

जहालत—(स्त्री० अ०) अज्ञान। मूर्खता।

ज़हीन—(वि० अ०) बुद्धिमान्।

ज़हूर—(पु० अ०) प्रकाश।

जहेज़—(पु० अ०) दहेज।

जाँघ—(स्त्री० हिं०) उरु। जाँघिया=हाफ़ पैंट।

जाँच—(स्त्री० हिं०) परीक्षा। —ना=सत्यासत्य का निर्णय करना।

जाँत, जाँता—(पु० हिं०) आटा पीसने की बड़ी चक्की।

जाँफिशानी—(फ़ा०) मेहनत। परिश्रम।

जाँबाज़—(फ़ा०) जान पर खेलने-वाला।

जाँनिवाज़—(फ़०) प्राणदान करनेवाला।

जा—(फ़ा०) जगह।—बजा=हर जगह।

ज्वाइन्ट—(पु० अं०) जोड़।

जाए—(फ़ा०) स्थान। जगह।

जाकट—(पु० अं०) फतुही। कुर्ती। सदरी।

जाकड़—(पु० हिं०) शर्त पर लाया हुआ माल। —बही=वह बही जिसमें दूकानदार जाकड़ दिये हुए माल का नाम और दाम आदि टाँक लेते हैं।

जागना—(क्रि० हिं०) सोकर उठना।

जागरण—(पु० सं०) जागना। जागरित = जागा हुआ। जागरूक=चैतन्य।

जागीर—(स्त्री० फ़ा०) सेवा के पुरस्कार में मिली हुई भूमि। —दार=वह जिसे जागीर मिली हो।

जाग्रत—(सं०) जो जागता हो।

जाज़रूर—(पु० फ़ा०) पाखाना।

जाजिम—(स्त्री० तु०) गलीचा।

जाज्वल्यमान—(वि० सं०) प्रज्वलित।

जाट—(पु० हि०) भारतवर्ष की एक प्रसिद्ध जाति।

जाठ—(पु० हि०) लकड़ी का वह

मोटा और ऊँचा लट्ठा जो कोल्हू की कूँड़ो के बीच में लगा रहता है।

जाड़ा—(पु० हि०) शीतकाल।

जातक—(पु० सं०) बौद्ध-कथायें।

जात-कर्म्म—(पु० सं०) हिन्दुओं के सोलह संस्कारों में से चौथा संस्कार जो बालक के जन्म के समय होता है।

जात-पाँत—(स्त्री० हि०) बिरादरी।

जाति—(स्त्री० सं०) वर्ण। —बैर=स्वाभाविक शत्रुता। जातीय=जाति सम्बन्धी। जातीयता=जाति का भाव।

ज़ाती—(वि० अ०) व्यक्तिगत।

जादू—(पु० फ़ा०) इन्द्रजाल। —गर=वह जो जादू करता हो। जादूगरी=जादू करने की क्रिया।

जान—(स्त्री० हि०) ज्ञान। (फ़ा०) प्राण। शक्ति। —कार=अभिज्ञ। —कारी =अभिज्ञता। —दार= सजीव। —बलब=मरणासन्न।

जानना—(क्रि० हि०) अनुभव करना।

जानशीन—(पु० फ़ा०) उत्तराधिकारी।

जानाँ—(फ़ा०) माशूक़।

जाना—(क्रि० हि०) गमन करना।

जानिब—(स्त्री० अ०) तरफ़।

ज़ानूँ—(फ़ा०) घुटना।

ज़ाफ़त—(स्त्री० अ०) भोज।

ज़ाफ़रान—(पु० अ०) केसर। ज़ाफ़रानी=केसरिया रंग का।

जाब प्रेस—(पु० अं०) कार्ड, नोटिस आदि छोटी-छोटी चीज़ों के छापने का प्रेस।

जाबजा—(क्रि० वि० फ़ा०) जगह-जगह।

जाबिर—(वि० फ़ा०) अत्याचारी।

ज़ाब्ता—(पु० अ०) क़ायदा।

जाम—(फ़ा०) शराब पीने का प्याला।

जामेजम—(फ़ा०) जमशेद का प्याला।

जामा—(पु० फ़ा०) पहनावा। कपड़े।

जामाता—(पु० हि०) दामाद।

ज़ामिन—(पु० अ०) ज़िम्मेदार। —दार = ज़मानत करनेवाला।

जामुन—(पु० हि०) एक प्रकार का वृक्ष और फल।

जामुनी—(वि० हि०) जामुन के रंग का।

जामेसेहर—(फ़ा०) सूर्य।

जायंट—(वि० अं०) साथ में काम करनेवाला। सहयोगी।

जायंट मैजिस्ट्रेट—(पु० अं०) फ़ौजदारी का वह मैजिस्ट्रेट जिसका दर्जा ज़िला मैजिस्ट्रेट के नीचे होता है।

ज़ायक़ा—(पु० अ०) स्वाद। ज़ायकेदार=स्वादिष्ट।

जाय—(फ़ा०) जगह। स्थान।

जायज़—(वि० अ०) उचित।

जायज़रूर—(पु० फ़ा०) पाख़ाना।

ज़ायद—(वि० फ़ा०) अधिक।

जायदाद—(स्त्री० फ़ा०) संपत्ति। —ग़ैरमनक़ूला= अचल संपत्ति। —ज़ौजियत=स्त्री-धन। —मक़फ़ूला =वह संपत्ति जो रेहन या बन्धक हो। —मनक़ूला= चल संपत्ति। —मुतनाज़िआ =विवाद-ग्रस्त संपत्ति। —शौहरी=वह संपत्ति जो स्त्री को उसके पति से मिले। स्त्री-धन।

जायनमाज़—(स्त्री० फ़ा०) वह छोटी दरी जिस पर बैठकर मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं।

जायफल—(पु० हि०) एक सुगंधित फल।

ज़ायल—(वि० फ़ा०) विनष्ट।

ज़ाया—(वि० फ़ा०) ख़राब। बरबाद।

जार—(पु० सं०) पराई स्त्री से प्रेम करनेवाला। (फ़ा० ज़ार) आर्त्त। शोकित। वृद्ध। रोता हुआ।

जारी—(वि० अ०) चालू । बहता हुआ ।
जाल—(पु० सं०) एक में बुने या गुथे हुए बहुत से तारों अथवा रेशों का समूह । (फ़ा०) धोखा । —दार = जिसमें जाल की तरह पास-पास बहुत से छेद हों । —साज़ = (फ़ा०) दग़ाबाज । —साज़ी = दग़ाबाजी । जालिया = दग़ाबाज़ ।
जाला—(पु० हि०) मकड़ी का बुना हुआ जाल ।
ज़ालिम—(वि० अ०) अत्याचारी ।
जाली—(स्त्री० हि०) किसी लकड़ी, पत्थर या धातु की चादर आदि में बना हुआ बहुत से छोटे-छोटे छेदों का समूह । —दार = जिसमें जाली बनी या पड़ी हो ।
जावित्री—(स्त्री० हि०) जायफल के ऊपर का छिलका ।
जावेद—(फ़ा०) दीर्घजीवी ।
जासूस—(पु० अ०) भेदिया ।
जाह—(अ०) मान । वैभव । रुतबा ।
ज़ाहिद—(फ़ा० अ०) संसारत्यागी । परहेज़गार ।
ज़ाहिर—(वि० अ०) प्रकट । —दारी = दिखावा । ज़ाहिरा = प्रत्यक्ष में ।
जाहिल—(वि० अ०) मूर्ख ।
ज़िंक—(स्त्री० अं०) जस्ते का खार ।
ज़िंदगी—(स्त्री० फ़ा०) जीवन । ज़िन्दगानी = (फ़ा०) ज़िंदगी । ज़िंदा = (फ़ा०) जीवित । —दिल = (फ़ा०) विनोदप्रिय ।
ज़ियादा—(अ०) अधिक । विशेष ।
जिंस—(स्त्री० फ़ा०) क़िस्म । वस्तु । सामग्री । अनाज ।
जिंसवार—(पु० फ़ा०) पटवारियों का एक काग़ज़ जिसमें वे परताल करते समय अपने हलके के प्रत्येक खेत में बोए हुए अन्न का नाम लिखते हैं ।

ज़िक्र—(पु० अ०) चर्चा ।
जिगर—(पु० फ़ा०) कलेजा । मन ।
ज़िच, ज़िच्च—(स्त्री० फ़ा०) बेबसी ।
जिज्ञासा—(स्त्री० सं०) जानने की इच्छा । जिज्ञासु=जानने की इच्छा रखनेवाला ।
जितना—(वि० हि०) जिस मात्रा का ।
जितेन्द्रिय—(वि० सं०) जिसकी इन्द्रियाँ वश में हों ।
ज़िद—(स्त्री० अ०) हठ । ज़िद्दी=(फ़ा०) हठी ।
जिधर—(क्रि० हि०) जहाँ ।
जिन—(पु० सं०) जैनों के तीर्थंकर । (अ०) भूत ।
ज़िना—(पु० अ०) व्यभिचार । —कारी=(फ़ा०) पर-स्त्री-गमन । —बिल्जब्र=(अ०) बलात्कार ।
जिनिस—(स्त्री० फ़ा०) प्रकार । वस्तु । सामग्री ।
ज़िबह—(अ०) बलिदान । गला काटना ।
जिमनास्टिक—(पु० अं०) अँगरेज़ी कसरत ।
जिमाअ—(अ०) मैथुन ।
ज़िम्मा—(पु० अ०) उत्तरदायित्व । ज़िम्मादार=उत्तरदायी । —दारी=उत्तरदायित्व । —वार=उत्तरदाता ।
ज़ियाफ़त—(स्त्री०अ०) आतिथ्य। भोज ।
ज़ियारत—(स्त्री० अ०) दर्शन। तीर्थ-यात्रा। ज़ियारती=दर्शक । तीर्थ-यात्री ।
जिरह—(पु० अ०) हुज्जत । तर्क ।
ज़िराअत—(स्त्री० अ०) खेती। किसानी ।
जिला—(स्त्री० अ०) चमक-दमक । पानी ।
ज़िला—(पु० अ०) प्रदेश । किसी इलाक़े का छोटा विभाग वा अंश । —बोर्ड=किसी ज़िले के कर-दाताओं के प्रतिनिधियों की सभा। —मैजिस्ट्रेट=ज़िले का बड़ा

हाकिम। —दार=माल-गुज़ारी वसूल करनेवाला एक अफ़सर।

जिलासाज़—(पु० फ़ा०) सिकलीगर।

जिल्द—(स्त्री० अ०) खाल। —गर=जिल्दबंद। —बंद=जिल्द बाँधनेवाला। —बंदी=जिल्द बँधाई। —साज़=जिल्दबंद। —साज़ी=जिल्दबंदी।

ज़िल्लत—(स्त्री० अ०) अपमान।

जिस्म—(पु० फ़ा०) शरीर। बदन। जिस्मानी=शरीर सम्बन्धी।

ज़िहन—(पु० अ०) समझ।

जिहाद—(पु० अ०) मज़हबी लड़ाई।

जीजा—(पु० हि०) बड़ी बहिन का पति। जीजी=बड़ी बहिन।

जीत—(वि० हि०) विजय।

जीता—(वि० हि०) जीवित।

ज़ीन—(पु० फ़ा०) काठी।

ज़ीनहार—(फ़ा०) हरगिज़। कदापि।

ज़ीनत—(स्त्री० फ़ा०) शोभा। सजावट।

ज़ीनपोश—(पु० फ़ा०) काठी का ढँकना। —सवारी=घोड़े पर ज़ीन रखकर चढ़ने का कार्य।

ज़ीना—(फ़ा०) सीढ़ी।

जीभ—(स्त्री० हि०) जिह्वा।

जीभी—(स्त्री० हि०) धातु की बनी एक पतली लचीली वस्तु जिससे छीलकर जीभ साफ़ की जाती है।

जीरा—(पु० हि०) एक मसाले का नाम।

जीर्ण—(वि० सं०) बुढ़ापे से जर्जर। पुराना। —ज्वर=पुराना बुखार। —ता=बुढ़ापा। पुरानापन।

जीव—(पु० सं०) जान। प्राण। —दान=प्राणदान। —धारी=प्राणी। —हिंसा=प्राणियों की हत्या। जीवात्मा=जीव।

जीवन—(पु० सं०) ज़िन्दगी। लाइफ़। —चरित=जीवन-वृत्तान्त। —धन=जीवन का सर्वस्व। प्राण-प्रिय। —वृत्तान्त = जीवन-चरित। —वृत्ति=जीविका। रोज़ी। जीवनी=जीवनचरित। जीवन्मुक्त=जो जीवित दशा में ही आत्मज्ञान-द्वारा सांसारिक माया-बंधन से छूट गया हो। जीवन्मृत=जो जीते ही मरे के तुल्य हो।

जीविका—(स्त्री० सं०) भरण पोषण का साधन।

ज़ीस्त—(फ़ा०) ज़िन्दगी। जीवन।

जीवित—(वि० सं०) ज़िन्दा।

जुआँ—(पु० हि०) जूँ।

जुआ—(पु० हि०) द्यूत। हल का एक भाग जो बैल की गर्दन में रहता है। —चोर=वह जुआरी जो अपना दाँव जीतकर खिसक जाय। जुआरी=जुआ खेलनेवाला।

ज़ुकाम—(पु० फ़ा०) सरदी।

जुगनू—(पु० हि०) खद्योत।

जुग़राफ़िया—(फ़ा०) भूगोल।

जुगाली—(स्त्री० हि०) पागुर।

जुगुप्सा—(स्त्री० सं०) निंदा।

जुज़—(पु० फ़ा०) एक फारम। सिवाय। हिस्सा। —बंदी=किताब की एक प्रकार की सिलाई।

जुज़बी—(वि० फ़ा०) बहुत कम।

जुज़—(अ०) हिस्सा। टुकड़ा।

जुझाऊ—(वि० हि०) युद्ध संबन्धी।

जुटाना—(क्रि हि०) जोड़ना। इकट्ठा करना।

जुट्टी—(स्त्री० हि०) अँटिया।

जुड़ना—(क्रि० हि०) संबद्ध होना।

जुड़वाँ—(वि० हि०) जुड़े हुए।

जुड़ाना—(क्रि० हि०) ठंढा होना। संतुष्ट होना।

जुडीशल—(वि० अं०) न्याय-संबन्धी।

जुतना—(क्रि० हि०) नधना।

जुताई—(स्त्री० हि०) जोतने का काम।

ज़ुतियाना—(क्रि० हि०) जूता मारना।
ज़ुतियौअल—(स्त्री० हि०) परस्पर जूतों की मार।
ज़ुदा—(वि० फ़ा०) अलग। —ज़ुदाई=वियोग। ज़ुदा होना।
ज़ुनून—(पु० फ़ा०) पागलपन।
ज़ुन्नार—(अ०) जनेऊ। यज्ञोपवीत।
ज़ुबिली—(स्त्री० अं०) किसी महत्त्वपूर्ण घटना का स्मारक महोत्सव।
ज़ुबान—(स्त्री० फ़ा०) जीभ। भाषा। —ज़ुबानी=मौखिक।
ज़ुमरा—(अ०) जमाअ़त। गिरोह। भीड़
ज़ुमला—(वि० फ़ा) सब (अ०) वाक्य। फ़िकरा।
ज़ुमर्रद—(फ़ा०) हरे रंग का रत्न।
ज़ुमा—(पु० अ०) शुक्रवार।
ज़ुमामसजिद—(स्त्री० अ०) वह मसजिद जिसमें जमा होकर मुसलमान लोग शुक्रवार के दिन दोपहर की नमाज़ पढ़ते हैं।
ज़ुमेरात—(स्त्री० अ०) गुरुवार।
ज़ुर्म—(अ०) अपराध। गुनाह।
ज़ुरअत—(स्त्री० फ़ा०) साहस।
ज़ुरमाना—(पु० फ़ा०) अर्थदण्ड। फ़ाइन।
ज़ुराफ़ा—(पु० अ०) अफरीका का एक जंगली पशु।
ज़ुर्रा—(अ०) दिलेर। बहादुर।
ज़ुर्राब—(स्त्री० तु०) मोज़ा।
ज़ुरूर—(अ०) अवश्य। निस्सन्देह।
ज़ुल—(पु० हि०) धोखा।
ज़ुलाई—(स्त्री० अं०) एक अँग्रेज़ी महीना।
ज़ुलाहा—(पु० फ़ा०) कपड़ा बुननेवाला।
ज़ुल्फ़—(स्त्री० फ़ा०) बाल। लट। केश। पाश।
ज़ुल्म—(पु० अ०) अत्याचार। ज़ुल्मी=अत्याचारी।

जुलूस—(पु० अ०) उत्सव। समारोह।
जुल्लाब—(पु० अ०) दस्त। रेचन।
जुस्तजू—(स्त्री० फ़ा०) तलाश। खोज।
जुही—(स्त्री० हि०) एक फूल।
जूजू—(पु० अनु०) एक कल्पित भयंकर जीव। हाऊ।
जूट—(पु० सं०) जटा की गाँठ। जटा। (अं०) सन।
जूठा—(वि० हि०) किसी के खाने से बचा हुआ।
जूड़ा—(पु० हि०) सिर के बालों की गाँठ।
जूड़ी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का ज्वर।
जूता—(पु० हि०) पनही। उपानह। —ख़ोर=जो जूता खाया करे। निर्लज्ज। जूती=स्त्रियों का जूता।
जूनियर—(वि० अं०) काल-क्रम से पिछला। छोटा।
जूरर—(पु० अं०) जूरी का काम करनेवाला। पंच।
जूरिस्ट—(पु० अं०) वह व्यक्ति जो कानून में, विशेषकर दीवानी क़ानून में, पारंगत हो।
जूरिस्डिक्शन—(पु० अं०) अधिकार-सीमा।
जूरी—(स्त्री० हि०) जुट्टी। (अं०) एक प्रकार के पंच जो अदालत में जज के साथ बैठकर मुकदमों के फ़ैसले में सहायता देते हैं।
जूष—(पु० सं०) झोल।
जूस—(पु० हि०) रसा। झोला। (अं०) रस।
जूस ताक—(पु० हि०) एक प्रकार का जूआ।
जूही—(स्त्री० हि०) एक फूल।
जेंगरा—(पु० देश०) अन्नों और तरकारियों के डंठल।
जेंवनार—(स्त्री० हि०) भोज। रसोई।
जेटी—(स्त्री० अं०) नदी या समुद्र के किनारे पर वह बना हुआ चबूतरा जिसपर से

जहाजों का माल उतारा और चढ़ाा जाता है।
जेठ—(पु० हि०) हिन्दुओं का एक महोना। पति का बड़ा भाई। जेठा=बड़ा। जेठानी=पति के बड़े भाई की स्त्री।
जेनरल स्टाफ—(पु० अं०) जेनरलों या सेनाध्यक्षों का वर्ग या समूह।
ज़ेप्लिन—(पु० जर्मन) जर्मनी का एक प्रकार का वायुयान।
जेब—(अ०) पाकेट। खीसा। सजाव। —कट=गिरहकट। —ख़र्च=(फ़ा०) भोजन, वस्त्र आदि के व्यय से भिन्न, निज का और ऊपरी ख़र्च। —घड़ी=जेबी घड़ी। (अं०) वाच। जेबी=जेब में रखने योग्य।
ज़ेब—(फ़ा०) सुन्दरता।
ज़ेवरा—(पु० अं०) एक जंगली जानवर।
ज़ेर—(फ़ा०) नीचे। दुर्बल। गिरा हुआ। —बन्द=वह तस्मा जो घोड़े के नीचे बाँधा जाता है। —दस्त=दुर्बल। पशेदा। —बार=क्षति ग्रस्त। कष्ट-पीड़ित। दुःखित।
जेल—(पु० अं०) कारागार। जेलर=जेल का अफ़सर।
जेलोटीन—(स्त्री० अं०) एक प्रकार की सरेस।
ज़ेवर—(पु० फ़ा०) गहना। आभूषण।
जेष्ठ—(पु० हि०) जेठ मास। जेठ।
ज़ेहन—(पु० अ०) बुद्धि।
जैतून—(पु० अ०) एक प्रकार का वृक्ष।
जैन—(पु० सं०) भारत का एक धर्म्म-संप्रदाय। जैनी=जैन मतावलंबी।
ज़ैल—(पु० अ०) दामन। नीचे।
जोंक—(स्त्री० हिं०) पानी में रहने-वाला एक कीड़ा।
जोकर—(अं०) मसखरा।
जोखिम—(स्त्री० हि०) आशंका। ख़तरा। (अं०) रिस्क।
जोगवना—(क्रि० हि०) रक्षित रखना। बटोरना।

जोगिन—(स्त्री० हि०) विरक्त स्त्री। जोगी की स्त्री।

जोगिनिया—(स्त्री० देश०) एक प्रकार का धान।

जोगिया—(वि० हि०) जोगी सम्बन्धी। गेरू के रंग में रँगा हुआ।

जोगी—(पु० हि०) योगी। एक जाति।

जोगीड़ा—(पु० हि०) एक प्रकार का गाना।

जोट—(पु० हि०) जोड़ा। साथी।

जोड़—(पु० हि०) जोड़ने की क्रिया। जोड़ना = संबद्ध करना। जोड़ा=दो समान पदार्थ। जोड़ी=एक ही सी दो चीज़ें।

जोतना—(हि०) हल से ज़मीन कोड़ना। जोताई = जोतने का काम। जोतने की मज़-दूरी।

जोतो—(स्त्री० हि०) लगाम।

ज़ोफ़—(पु० अ०) बुढ़ापा। सुस्ती।

ज़ोम—(पु० अ०) उत्साह। अहंकार।

ज़ोर—(पु० फ़ा०) शक्ति। —मंद=(फ़ा०) ताक़त-वाला। —शोर=(फ़ा०) बहुत अधिक ज़ोर। —दार =ज़ोरवाला। ज़ोरावर= बलवान। ज़ोरावरी=ज़बर-दस्ती।

जोया—(फ़ा०) ढूँढ़नेवाला।

जोरू—(स्त्री० हि०) पत्नी।

जोलाहा—(फ़ा०)जुलाहा। कपड़ा बुननेवाला।

जोश—(पु० फ़ा०) उफान। जोशीला = आवेगपूर्ण।

जोशन—(पु० फ़ा०) कवच।

जौ—(पु० हि०) एक अनाज।

ज़ौजा—(अ०)पत्नी। स्त्री।

ज़ौर—(अ०) अत्याचार। ज़ुल्म।

जौहर—(पु० फ़ा०) रत्न। उत्कर्ष। जौहरी=रत्न-विक्रेता। पारखी।

ज्ञात—(वि० सं०) विदित। —व्य=जानने योग्य। ज्ञाता =जानकार।

ज्ञाति—(पु० सं०) गोती। बांधव।

ज्ञान—(पु० सं०) बोध। जानकारी। —गम्य = जो जाना जा सके। —गोचर = ज्ञानगम्य। ज्ञानी = जानकार। ज्ञानेंद्रिय = वे इन्द्रियाँ जिनसे जीवों को विषयों का बोध होता है। ज्ञेय = जानने योग्य।

ज्या—(स्त्री० सं०) धनुष की डोरी।

ज़्यादती—(स्त्री० फ़ा०) अधिकता।

ज़्यादा—(क्रि० वि० फ़ा०) अधिक।

ज़्याफत—(स्त्री० अ०) भोज।

ज्यामिति—(स्त्री० सं०) रेखागणित।

ज्यों—(क्रि० वि० हि०) जैसे।

ज्योति—(स्त्री० हि०) प्रकाश। लौ। —र्मय = प्रकाशमय। —र्विद्या = ज्योतिष-विद्या।

ज्योतिष—(पु० सं०) वह विद्या जिससे अंतरिक्ष में स्थित ग्रहों, नक्षत्रों आदि की परस्पर दूरी, गति, परिमाण आदि का निश्चय किया जाता है। ज्योतिषी = ज्योतिर्विद्। ज्योतिष्मान् = प्रकाशयुक्त।

ज्योत्स्ना—(स्त्री० सं०) चाँदनी।

ज्योनार—(स्त्री० हि०) रसोई।

ज्वलंत—(वि० सं०) जलता हुआ। दीप्त। प्रकट।

ज्वार—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का अनाज। लहर की उठान। —भाटा = (हि०) समुद्र के जल का चढ़ाव और उतार।

ज्वालामुखी पर्वत—(पु० सं०) वह पर्वत जिसकी चोटी से धुआँ, राख तथा पिघले हुए पदार्थ निकला करते हैं।

झ—हिन्दी-वर्णमाला का नवाँ और चवर्ग का चौथा वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान तालू है।

झंकार—(स्त्री० सं०) झनझन शब्द।

झँकोरना—(क्रि० अ० अनु०) हवा का झोंका मारना।

झंखना—(पु० हिं०) बहुत अधिक दुखी होकर पछताना और कुढ़ना।

झंखाड़—(पु० हिं०) घनी और काँटेदार झाड़ी या पौधा।

झंझट—(स्त्री० अनु०) व्यर्थ का झगड़ा।

झंझा—(पु० सं०) वह तेज आँधी जिसके साथ वर्षा भी हो। —निल=आँधी। —वात आँधी। प्रचण्ड वायु।

झंझी—(स्त्री० देश०) फूटी कौड़ी।

झंडा—(पु० हिं०) पताका। (स्त्री०) झंडी।

झँपना—(क्रि० हिं०) ढँकना। छिपना।

झँपान—(पु० हिं०) डोली।

झँवाँ—(पु० हिं०) जली हुई ईंट।

झउआ, झउवा—(पु० हिं०) टोकरा।

झक—(स्त्री० अनु०) धुन। मौज।

झकझक—(स्त्री० अनु०) व्यर्थ की हुज्जत।

झकझोर—(पु० अनु०) झटका।

झकना—(क्रि० अनु०) व्यर्थ की बातें करना। झक्की=हुज्जती।

झकाझक—(वि० अनु०) चमकीला।

झख—(स्त्री० हिं०) झीखना।

झगड़ना—(क्रि० हिं०) झगड़ा करना। झगड़ा=तकरार। झगड़ालू=लड़ाई करनेवाला।

झज्जर—(पु० हिं०) एक बर्तन।

झमक—(स्त्री० हिं०) चौंक। चमक। —ना=(अनु०) ठिठकना।

झट—क्रि० हि०) तुरंत। —पट =फ़ौरन्।

झटकना—(क्रि० हि०) हलका धक्का देना।

झटका—(पु० हि०) धक्का देना।

झड़प—(स्त्री० हि०) दो जीवों की परस्पर मुठभेड़। झड़पा-झड़पी=(अनु०) हाथापाई।

झड़ाका—(पु० अनु०) झड़प।

झड़ी—(स्त्री० हि०) लगातार वर्षा।

झनकार—(स्त्री० सं०) झनझन शब्द। झन्नाहट=झनझना-हट।

झपक—(स्त्री० हि०) बहुत थोड़ा समय। झपकी=(स्त्री० अनु०) हलकी नींद।

झपट—(स्त्री० हि०) धावा। —ना=धावा करना।

झमकना—क्रि० हि०) दमकना।

झरना—(क्रि० हि०) चश्मा। सोता।

झरोखा—(पु० हि०) गवाक्ष।

झलक—(स्त्री० हि०) चमक। —ना=(क्रि० हि०) चमकना।

झलका—(पु० हि०) चमका। फफोला।

झलझलाहट—(स्त्री० अनु०) चमक।

झल्लाना—(क्रि० हि०) बहुत चिढ़ना।

झाँई—(स्त्री० हि०) प्रतिबिम्ब। चेहरे पर का काला धब्बा।

झाँकना—(क्रि० हि०) लुक-छिपकर देखना।

झाँकी—(स्त्री० हि०) दर्शन।

झाँझ—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का बाजा। पैर का एक गहना।

झाँवाँ—(पु० हि०) जली हुई ईंट।

झाँसा—(पु० हि०) धोखाधड़ी।

झाँसी—(पु० देश०) एक कीड़ा।

झाऊ—(पु० हि०) एक छोटा झाड़।

झाग—(पु० हि०) फेन।

झाड़—(पु० हि०) वह छोटा पेड़ या कुछ बड़ा पौधा जिसमें

पेड़ी न हो। —खंड=जंगल। —झंखाड़=(हि०) काँटेदार झाड़ियों का समूह।

झाड़न—(स्त्री० हि०) वह जो कुछ झाड़ने पर निकले। झाड़ने का कपड़ा।

झाड़ना—(क्रि० स० हि०) झटकारना।

झाड़-फूँक—(स्त्री० हि०) मंत्र आदि पढ़कर झाड़ना या फूँकना।

झाड़ा—(पु० हि०) झाड़-फूँक। मल।

झाड़ी—(स्त्री० हि०) छोटा झाड़। —दार=झाड़ी की तरह का।

झाड़ू—(स्त्री० हि०) बोहारी। बढ़नी।

झापड़—(पु० हि०) तमाचा।

झावँ झावँ—(स्त्री० अनु०) बकवाद।

झालर—(स्त्री० हि०) हाशिया।

झिड़क—(स्त्री० हि०) डाँट।

झिड़की—(स्त्री० हि०) फटकार।

झिलँगा—(पु० हि०) टूटी हुई खाट।

झिलमिल—(स्त्री० हि०) काँपती हुई रोशनी।

झिलमिलाना—(अ० हि०) रह-रहकर चमकना।

झिलमिली—(स्त्री० हि०) खड़-खड़िया।

झींकना—(अ० हि०) खीजना।

झींगा—(पु० हि०) एक मछली।

झींगुर—(पु० हि०) एक कीड़ा। झिल्ली।

झील—(स्त्री० हि०) प्राकृतिक तालाब।

झुंड—(पु० हि०) वृन्द। समूह। गिरोह।

झुकना—(अ० हि०) निहुरना। झुकाव=झुकना। आकर्षण।

झुमका—(पु० हि०) एक गहना।

झुरना—(क्रि० हि०) सूखना।

झुरमुट—(पु० हि०) कई झाड़ों पत्तों आदि से ढका हुआ स्थान।

झुलनी—(स्त्री० हि०) एक गहना।

झुलसना—(क्रि० हि०) झौंसना। जलाना।

झुलाना—(क्रि० हि०) झूले में बिठाकर हिलाना।

झूठमूठ—(क्रि० हि०) व्यर्थ।

झूठा—(वि० हि०) मिथ्या। झूठ बोलनेवाला।

झूमना—(क्रि० हि०) बार-बार झोंके खाना।

झूरा—(वि० हि०) सूखा।

झूला—(पु० हि०) हिंडोला।

झेलना—(क्रि० हि०) सहना।

झोंक—(स्त्री० हि०) झुकाव। धक्का। पिनक। —ना = फेंक-कर छोड़ना। झोंका = हवा का झटका या धक्का।

झोंकी—(स्त्री० हि०) बोझ। जोखिम।

झोंझ—(पु० हि०) घोंसला।

झोंटा—(पु० हि०) बड़े-बड़े बालों का समूह।

झोंपड़ा—(पु० हि०) कुटी। (स्त्री०) झोंपड़ी = कुटिया।

झोंपा—(पु० हि०) गुच्छा।

झोल—(पु० हि०) शोरबा।

झोला—(पु० हि०) थैला। झोली = थैली।

झौंसना—(क्रि० हि०) झुलसना।

झौवा—(पु० हि०) बड़ा टोकरा जो अरहर के डंठलों से बनता है।

ञ

ञ—हिन्दी-वर्णमाला का दसवाँ व्यंजन जो चवर्ग का पाँचवाँ वर्ण है। इससे हिन्दी में कोई शब्द नहीं बनता।

ट—हिन्दी-वर्णमाला में ग्यारहवाँ व्यञ्जन और टवर्ग का पहला अक्षर।

टँकाई—(स्त्री० हि०) सुई से टाँकने की मज़दूरी या काम।

टंकार—(स्त्री० सं०) झनकार।

टंकी—(स्त्री० अं०) पानी का बड़ा बरतन।

टंकोर—(पु० सं०) झनकार।

टँगना—(क्रि० हि०) लटकना।

टँगारी—(स्त्री० हि०) कुल्हाड़ी।

टंच—(वि० हि०) तैयार। पूरा। विशुद्ध।

टंट घंट—(पु० हि०) मिथ्या आडंबर।

टंटा—(पु० हि०) झगड़ा।

टंडर—(पु० हि०) अदालत का वह आज्ञापत्र जिसके द्वारा कोई मनुष्य किसी के प्रति अपना देना अदालत में दाखिल करे।

टँड़िया—(स्त्री० हि०) एक गहना।

टकटका—(पु० हि०) स्थिर दृष्टि। टकटकी = गड़ी हुई नज़र।

टकराना—(क्रि० हि०) ज़ोर से भिड़ना।

टकसाल—(स्त्री० हि०) रुपये, पैसे आदि बनने का कार्यालय। मिन्ट। टकसाली= खरा।

टका—(पु० हि०) रुपया। सिक्का।

टकुआ—(पु० हि०) तकला।

टक्कर—(स्त्री० हि०) ठोकर।

टटका—(वि० हि०) तत्काल का। ताज़ा।

टटोलना—(क्रि० हि०) ढूँढ़ना। छूना।

टट्टर—(पु० हि०) बाँस की फट्टियों आदि का बना हुआ पल्ला जो परदे, किवाड़, छाजन आदि का काम दे।

टट्टी—(स्त्री० हि०) बाँस की फट्टियों आदि से बनाया हुआ ढाँचा जो आड़, रोक या रक्षा

के लिये दरवाजे, बरामदे अथवा और किसी खुले स्थान में लगाया जाता है। पाखाना।

टन—(स्त्री० हि०) घंटा बजने का शब्द। (अं०) एक अंग्रेज़ी तौल।

टनमन—(पु० हि०) स्वस्थ। चुस्त।

टनेल—(स्त्री० अं०) सुरंग।

टपकना—(क्रि० हि०) बूँद-बूँद गिरना। चूना।

टपका—(पु० हि०) बूँद। चुआ।

टब—(पु० अं०) पानी रखने के लिये नाँद के आकार का एक खुला बरतन।

टमेटो—(पु० अं०) विलायती भंटा।

टरकाना—(क्रि० हि०) टाल देना।

टरकी—(पु० तुरकी) रूम देश।

टर्रा—(हि०) बदमिज़ाज।

टर्राना—(क्रि० हि०) ऐंठकर बातें करना। टर्रापन=कटुवादिता।

टलना—(क्रि० हि०) हटना।

टसक—(स्त्री० हि०) कसक।

टसकना—(क्रि० हि०) खिसकना।

टसर—(पु० हि०) एक प्रकार का कड़ा और मोटा रेशम।

टहनी—(स्त्री० हि०) वृक्ष की बहुत पतली शाखा।

टहल—(स्त्री० हि०) सेवा। टहलनी=दासी। टहलुआ=सेवक। टहलुई=दासी।

टहलना—(क्रि० हि०) धीरे-धीरे चलना।

टाँकना—(क्रि० हि०) सीना। जोड़ना।

टाँका—(पु० हि०) जोड़ मिलानेवाली कील या काँटा।

टाँकी—(स्त्री० हि०) पत्थर गढ़ने का औज़ार।

टाँग—(क्रि० हि०) पैर।

टाँगना—(क्रि० हि०) लटकाना।

टाँट—(पु० हि०) कपाल।

टाँय टाँय—(स्त्री० हि०) व्यर्थ बकवाद।

टाइट—(अं०) खूब कसकर बाँधा हुआ।

टाइटिल—(अं०) पदवी। ख़िताब। —पेज=किसी पुस्तक के सबसे ऊपर का पृष्ठ जिस पर पुस्तक और ग्रंथकार का नाम आदि रहता है।

टाइप—(पु० अं०) सीसे के ढले हुए अक्षर जिनको मिलाकर पुस्तकें छापी जाती हैं। —कटिङ्ग मशीन=अक्षर ढालने की मशीन। —मोल्ड =अक्षर ढालने की कल। —राइटर=एक कल जिसमें काग़ज़ रखकर टाइप के से अक्षर छाप सकते हैं। टाइपिस्ट=टाइपराइटर का काम जाननेवाला व्यक्ति।

टायफ़ायड ज्वर—(पु० अं०) एक ज्वर।

टाइफोन—(पु० अं०) एक प्रकार का तूफान।

टाईम—(पु० अं०) समय। —टेबुल=समय-सूचक विवरण-पत्र। समय-विभाग। —पीस=एक प्रकार की घड़ी। —कीपर=समय की सूचना देनेवाला व्यक्ति।

टाई—(स्त्री० अं०) कपड़े की एक पट्टी जो अँग्रेज़ी पहनावे में कालर के ऊपर बाँधी जाती है।

टाउन—(पु० अं०) शहर। —एरिया=कस्बों की म्युनिसिपैलिटी। —ड्यूटी=चुंगी। —हाल=किसी नगर में वह सार्वजनिक भवन जिसमें सर्वसाधारण संबंधी सभायें होती हैं।

टाक—(अं०) बात-चीत। टाकी=बोलता हुआ सिनेमा।

टाट—(पु० हि०) सन या पटुए की रस्सियों का बुना हुआ कपड़ा।

टार्टरिकएसिड—(पु० अं०) इमली का सत।

टाटी—(स्त्री० हि०) टट्टी।

टान—(स्त्री० हि०) तनाव। दबाव।

टानिक—(पु० अं०) पुष्टिकारक औषध। ताकत की दवा।

टाप—(स्त्री० हि०) घोड़े का सुम।
टापिक—(अं०) विषय। प्रसंग।
टापू—(पु० हि०) द्वीप।
टार्च—(अं०) एक तरह का जेब। लैम्प जो मसाले से जलता है।
टारपीडो—(पु० अं०) एक प्रकार का जंगी जहाज़ जो पानी के भीतर भीतर चलकर शत्रु के जहाजों का नाश करता है। —कैचर=तेज चलने-वाला वह शक्तिशाली जंगी जहाज जो टारपीडो बोट को नष्ट करने के काम में लाया जाता है।
टाल—(स्त्री० हि०) ऊँचा ढेर।
टालटूल—(स्त्री० हि०) बहाना।
टावर—(पु० अं०) लाट। मीनार।
टालना—(क्रि० हि०) हटाना।
टिंचर—(पु० अं०) एक अँग्रेज़ी दवा। —आयोडीन= सूजन पर लगाने के लिये लोहे के सार का अर्क। —ओपियाई=अफीम का अर्क। —कार्डिमम=इला-यची का अर्क। —स्टील= फौलाद के सार का अर्क।
टिंड—(पु० हि०) ढेड़सी।
टिकट—(पु० अं०) कहीं आने-जाने या कोई काम करने के लिये अधिकार-पत्र।
टिकटिक—(स्त्री० अनु०) घोड़ों को हाँकने के लिये मुँह से किया हुआ शब्द। घड़ी के बोलने का शब्द।
टिकटिकी—(स्त्री० हि०) टिकठी।
टिकड़ी—(स्त्री० हि०) छोटी रोटी।
टिकना—(क्रि० हि०) ठहरना। टिकाना=ठहराना।
टिकरी—(स्त्री० हि०) टिकिया। टिक्कड़=बड़ी टिकिया।
टिकली—(स्त्री० हि०) छोटी टिकिया। बेंदी।
टिकाऊ—(वि० हि०) मजबूत।
टिकोरा—(पु० हि०) आम का छोटा और कच्चा फल।
टिक्का—(पु० देश०) तिलक।
टिटहरी—(स्त्री० हि०) एक पक्षी।

टिड्डा—(पु० हि०) एक परदार कीड़ा। टिड्डी=एक जाति का टिड्डा या उड़नेवाला कीड़ा जो बड़ा भारी दल या समूह बाँधकर चलता है और मार्ग के पेड़-पौधों और फ़सल को बड़ी हानि पहुँचाता है।

टिन—(अं०) जस्ता। जस्ते का बक्स।

टिपटिप—(स्त्री० अनु०) बूँद बूँद गिरने का शब्द।

टिप्पणी—(स्त्री० सं०) व्याख्या।

टिप्पन—(पु० सं०) टीका।

टिमटिमाना—(क्रि० हि०) क्षीण प्रकाश देना।

टिली लिलो—(स्त्री० अनु०) बीच की अँगुली हिलाकर चिढ़ाने का शब्द।

टी—(स्त्री० अं०) चाय। —गार्डन=(पु० अं०) वह ज़मीन जहाँ चाय की खेती होती है। —पार्टी=(स्त्री० अं०) मित्रों को चाय पिलाने का न्यौता।

टीका—(पु० हि०) तिलक। धब्बा। अर्थ का विवरण। —कार=व्याख्याकार।

टीचर—(अं०) शिक्षक।

टीन—(पु० अं०) राँगे की कलई की हुई पतली चद्दर।

टीप—(स्त्री० हि०) दबाव। दस्तावेज़।

टीपटाप—(स्त्री० देश०) ठाट-बाट।

टीवा—(पु० हि०) टीला।

टीमटाम—(स्त्री० देश०) बनाव। सिंगार।

टीज़ा—(पु० हि०) छोटी पहाड़ी।

टीस—(स्त्री० देश०) चुभती हुई पीड़ा। —ना=चुभती पीड़ा होना।

टुइल—(स्त्री० अं०) एक प्रकार का मोटा मुलायम सूती कपड़ा।

टुक—(वि० हि०) ज़रा।

टुकड़गदा—(पु० हि०) भिखारी।

टुकड़ा—(पु० हि०) खंड। रोटी। टुकड़ी=छोटा टुकड़ा।

टुच्चा—(वि० हि०) तुच्छ।

टुटका—(पु० हि०) टोना।

टुटपुँजिया—(वि० हि०) थोड़ी पूँजी का।
टुटरूँ—(पु० अनु०) छोटी पंडुकी।
टुटरूँटूँ—(स्त्री० अनु०) पंडुकी के बोलने का शब्द। मामूली।
टूँड़—(पु० हि०) जौ गेहूँ की बाली का काँटा। नोक।
टूटना—(क्रि० हि०) खंडित होना।
टूथ पेस्ट—(अं०) दाँत में लगाने और धोने की दवा।
टूथ ब्रश—(अं०) दाँत का ब्रुश।
टूरनामेंट—(पु० अं०) लखे जिनमें जीतनेवालों को इनाम मिलता है।
टूल—(पु० अं०) औज़ार, जिसकी सहायता से कोई काम किया जाय।
टें—(स्त्री० अनु०) तोते की बोली।
टेंगरा—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की मछली।
टेंट—(स्त्री० हि०) मुर्री।
टेंटी—(स्त्री० हि०) करील।
टेंटें—(स्त्री० अनु०) तोते की बोली। व्यर्थ की बकवाद।
टेंपरेचर—(पु० अं०) तापमान।
टेक—(स्त्री० हि०) हठ।
टेक्निकल—(अं०) पारिभाषिक।
टेढ़ा—(वि० हि०) जो सीधा न हो। बाँका। —पन=(पु० हि०) बाँकपन।
टेना—(क्रि० हि०) तेज करने के लिये रगड़ना। उत्तेजन।
टेनिस—(पु० अं०) गेंद का एक अँगरेज़ी खेल।
टेनेंट—(पु० अं०) किरायेदार। असामी। पट्टेदार। रैयत।
टेबुल—(पु० अं०) मेज़। नक़्शा।
टेम—(स्त्री० हि०) दीपशिखा।
टेरना—(क्रि० हि०) ऊँचे स्वर से गाना। बुलाना।
टेरिटोरियल फोर्स—(स्त्री० अं०) नागरिक सेना।
टेलिग्राफ़—(पु० अं०) तार, जिसके द्वारा खबरें भेजी जाती हैं।
टेलिग्राम—(पु० अं०) तार से भेजी हुई खबर।
टेलिफोन—(पु० अं०) वह तार

जिसके द्वारा एक स्थान पर कहा हुआ शब्द कितने ही कोस दूर के दूसरे स्थान पर सुनाई पड़ता है।

टेलिस्कोप—(अं०) दूरबीन।

टेव—(स्त्री० हि०) आदत।

टेवा—(पु० हि०) जन्मपत्री।

टेसू—(पु० हि०) पलाश का फूल। लड़कों का एक उत्सव।

टैंया—(स्त्री० देश०) छोटी कौड़ी।

टैक्स—(पु० अं०) महसूल।

टैक्सी—(स्त्री० अं०) किराये पर चलनेवाली मोटर गाड़ी।

टैबलेट—(पु० अं०) छोटी टिकिया।

टोंटा—(पु० हि०) नली।

टोंटी—(स्त्री० हि०) नली।

टोक—(पु० हि०) पूछ-ताछ। —ना=बीच में बोल उठना।

टोकनी—(स्त्री० हि०) डलिया।

टोकरा—(पु० हि०) डला। टोकरी=छोटा टोकरा।

टोटका—(पु० हि०) टोना।

टोटल—(पु० अं०) जोड़।

टोटा—(पु० हि०) कारतूस। घाटा।

टोड़ी—(स्त्री० हि०) एक रागिनी।

टोनहाई—(स्त्री० हि०) टोना करानेवाली।

टोना—(पु० हि०) जादू।

टोप—(पु० सि०) बड़ी टोपी।

टोपी—(स्त्री० हि०) सिर पर का पहरावा। —दार=जिस पर टोपी लगी हो। —वाला=वह आदमी जो टोपी पहने हो।

टोरी—(पु० अं०) वह जो प्रजा-सत्तात्मक शासन-प्रणाली का विरोधी हो।

टोल—(स्त्री० हि०) डली। चुंगी।

टोला—(पु० हि०) महल्ला। टोली=छोटा महल्ला। पार्टी।

टोह—(स्त्री० हि०) खोज।

ट्यूटर—(अं०) गृह-शिक्षक। ट्यूशन=घर पर आकर पढ़ाने का काम।

ट्रंक—(पु० अं०) लोहे का सफ़री सन्दूक।

ट्रंप—(पु० अं०) ताश का एक खेल।

ट्रस्ट—(पु० अं०) संपत्ति या दान-संपत्ति को इस विचार से दूसरे व्यक्तियों को सौंपना कि वे संपत्ति काप्रबन्ध या उपयोग उसके स्वामी के दान-पत्र के अनुसार करेंगे।

ट्रस्टी—(पु० अं०) अभिभावक।

ट्राम—(स्त्री० अं०) एक प्रकार की लंबी गाड़ी जो लोहे की बिछी हुई पटरी पर चलती है।

ट्रान्ज़ेक्शन—(अं०) काम।

ट्रान्सपोर्ट—(पु० अं०) माल असबाब एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना। बारबरदारी। वह जहाज जिस पर सैनिक या युद्ध का सामान आदि एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजा जाता है। सवारी गाड़ी।

ट्रान्सफ़र—(अं०) तबादला।

ट्रान्सलेटर—(पु० अं०) भाषांतरकार। अनुवादक।

ट्रान्सलेशन—(पु० अं०) अनुवाद। भाषांतर।

ट्रूप—(स्त्री० अं०) पलटन। सैन्य। दल। घुड़सवारों का एक दल।

ट्रूस—(स्त्री० अं०) क्षणिक संधि।

ट्रेज़रर—(पु० अं०) खजाञ्ची। कोषाध्यक्ष।

ट्रेड—(अं०) व्यापार।

ट्रेडमार्क—(अं०) छाप।

ट्रेडिल मशीन—(स्त्री० अं०) एक प्रकार की छापने की छोटी कल।

ट्रेन—(स्त्री० अं०) रेलगाड़ी।

ट्रेनिंग—(अं०) शिक्षा देना।

ट्रेजेडियन—(पु० अं०) वह अभिनेता जो विषाद शोक और गम्भीर भावव्यंजक अभिनय करता हो। वियोगांत नाटक लेखक।

ट्रैजेडी—(स्त्री० अं०) दुःखांत नाटक। वियोगांत नाटक।

ठ—व्यंजनों में ग्यारहवाँ और टवर्ग का दूसरा व्यंजन जिसके उच्चारण का स्थान मूर्धा है।

ठंठ—(वि० हि०) ठूँठा।

ठंडक, ठंढक—(स्त्री० हि०) शीत। ठंडा। ठंडा = शीतल। ठंढ = सरदी। ठंढाई—शीतलता। वह दवा, जिसके पीने से शरीर की गरमी कम होती है। ठंढो = शीतल।

ठंढा मुलम्मा—(पु० हि०) बिना आँच के सोना चाँदी चढ़ाने की रीति।

ठक ठक—(स्त्री० अनु०) झगड़ा।

ठकठकाना—(क्रि० अनु०) खटखटाना।

ठकुरसुहाती—(स्त्री० हि०) खुशामद।

ठकुराइन—(स्त्री० हि०) ठाकुर की स्त्री। मालकिन।

ठकुराई—(स्त्री० हि०) आधिपत्य।

ठकुरानी—(स्त्री० हि०) जमींदार की स्त्री। क्षत्राणी।

ठग—(पु० हि०) धोखा देकर धन हरण करनेवाला। —ई = ठगपना। धोखा। —पना = छल। —विद्या = धोखेबाजी। ठगाई = ठगपना। ठगाना = ठगा जाना। ठगिनी = लुटेरिन।

ठगी = ठग का काम।

ठट, ठट्ट—(पु० हि०) समूह।

ठटना—(क्रि० हि०) निश्चित करना। सजना।

ठटरी—(स्त्री० हि०) ढाँचा।

ठट्ठा—(पु० हि०) उपहास। मजाक।

ठठेरा—(पु० हि०) कसेरा। ठठेरी = ठठेरा जाति की स्त्री। ठठेरे का काम।

ठठोली—(स्त्री० हि०) दिल्लगी।

ठनक—(स्त्री० हि०) मृदंगादि की ध्वनि। ठनकना = ठन ठन शब्द करना।

ठनगन—(पु० हि०) विवाह आदि अवसरों पर नेगियों या पुरस्कार पानेवालों का अधिक पाने के लिये हठ करना।

ठनठन गोपाल—(पु० अनु०) छूँछी और निःसार वस्तु। निर्धन आदमी।

ठनाका—(पु० अनु०) ठन-ठन शब्द।

ठनाठन—(क्रि० वि० अनु०) झन-कार के साथ।

ठमकना—(क्रि० हि०) ठिठकना।

ठर्रा—(पु० हि०) मोटा सूत। एक प्रकार की शराब।

ठस—(वि० हि०) ठोस (रुपया) जिसकी झनकार ठीक न हो।

ठसक—(स्त्री० हि०) नखरा।

ठसाठस—(क्रि० हि०) ठूँस-कर भरा हुआ।

ठस्सा—(पु० देश०) नक्काशी बनाने की एक छोटी रुखानी। ठसक। घमंड। शान।

ठहर—(पु० हि०) स्थान। —ना=रुकना। ठहराना; स्थान देना। रोकना। ठह-रौनी=विवाह में लेन-देन का क़रार।

ठहाका—(पु० अनु०) अट्टहास।

ठाँठ—(वि० हि०) नीरस।

ठाँसना—(क्रि० हि०) ज़ोर से घुसाना।

ठाकुर—(पु० हि०) देव-मूर्त्ति। जमींदार। क्षत्रिय। —द्वारा =देवालय। —बाड़ी= मंदिर।

ठाट—(पु० हि०) लकड़ी या बाँस की फट्टियों का बना हुआ परदा। —बंदी= टट्टर। —बाट=सजावट।

ठानना—(क्रि० हि०) दृढ़ संकल्प करना।

ठिठकना—(क्रि० हि०) रुक जाना।

ठीक—(वि० हि०) यथार्थ। —ठाक=बंदोबस्त।

ठीकरा—(स्त्री० हि०) मिट्टी के बरतन का छोटा फूटा टुकड़ा। (स्त्री०) ठीकरी।

ठीका—(पु० हि०) ज़िम्मा।
—दार=ठीका देनेवाला।

ठीहा—(पु० हि०) ज़मीन में गड़ा हुआ लकड़ी का कुंदा जिसका थोड़ा-सा भाग ज़मीन के ऊपर रहता है।

ठुकराना—(क्रि० हि०) ठोकर मारना। अस्वीकार करना।

ठुड्डी—(स्त्री० हि०) चिबुक।

ठुमकना—(क्रि० अनु०) कूदते या फुदकते हुए चलना।
ठुमकी=थपका।

ठुमरी—(स्त्री० हि०) एक गीत।

ठूँठ—(पु० हि०) सूखा पेड़। ठूँठा।

ठेंगा—(पु० हि०) अँगूठा। चिढ़ाना।

ठेंठी—(स्त्री० देश०) कान की मैल। कान का छेद मूँदने की वस्तु। काग।

ठेका—(पु० हि०) सहारे की वस्तु। बैठक।

ठेठ—(वि० देश०) निपट। ख़ालिस। शुद्ध।

ठेलना—(क्रि० हि०) ढकेलना।

ठेला—(पु० हि०) एक प्रकार की गाड़ी जिसे आदमी ठेल या ढकेलकर चलाते हैं।

ठेहरी—(स्त्री० देश०) वह छोटी सी लकड़ी जो दरवाज़ों के पल्लों की चूल के नीचे गड़ी रहती है और जिस पर चूल घूमती है।

ठोंक—(स्त्री० हि०) प्रहार।
—ना=आघात पहुँचाना।

ठोंकवा—(पु० हि०) गूना।

ठोकर—(स्त्री० हि०) ठेस।

ठोड़ी—(स्त्री० हि०) ठुड्डी।

ठोस—(हि० हि०) जिसके भीतर खाली स्थान न हो।

ठौर—(पु० हि०) जगह।

ड—हिन्दी-वर्णमाला का तेरहवाँ व्यंजन और टवर्ग का तीसरा वर्ण।

डंक—(पु० हि०) भिड़, बिच्छू, मधु-मक्खी आदि कीड़ों के पीछे का ज़हरीला काँटा।

डंका—(पु० हि०) नगाड़ा।

डंगू—(पु० अं०) एक ज्वर।

डंठल—(पु० हि०) छोटे पौधों की पेड़ी और शाखा।

डंड, डँड—(पु० हि०) एक प्रकार का व्यायाम। —पेल कसरती।

डंडा—(पु० हि०) सोंटा। —डंडी =छोटी लम्बी पतली छड़ी।

डंबेल—(पु० अं०) कसरत करने का लोहे का एक पदार्थ।

डवाँडोल—(वि० हि०) विचलित।

डक—(पु० अं०) वह स्थान जहाँ जहाज़ आकर ठहरते हैं।

डकार—(स्त्री० अनु०) मुँह से निकला हुआ वायु का उद्गार। —ना=डकार लेना।

डकैत—(पु० हि०) डाका डालनेवाला। —डकैती=डकैत का काम।

डग—(पु० हि०) क़दम।

डगडगाना—(क्रि० अनु०) हिलना।

डगना—(क्रि० हि०) खसकना।

डगमगाना—(क्रि० हि०) इधर उधर हिलना-डालना।

डगर—(स्त्री० हि०) रास्ता।

डगना—(क्रि० हि०) अड़ना।

डगाना—(क्रि० हि०) हटाना।

डपटना—(क्रि० हि०) डाँटना।

डपोरसंख—(पु० अनु०) डींग मारनेवाला। मूर्ख।

डफ—(पु० हि०) डफला। (स्त्री०) डफली=खँजड़ी।

डफाली—(पु० हि०) डफला बजानेवाला।

डबडबाना—(क्रि० अनु०) अश्रुपूर्ण होना।

डबल—(वि० अं०) दोहरा। —रोटी=पावरोटी।

डभका—(पु० हि०) कुएँ से ताज़ा निकाला हुआ पानी।

डमरू—(पु० हि०) एक बाजा। —मध्य=धरती का वह तंग पतला भाग जो दो बड़े-बड़े खंडों को मिलाता है। —यंत्र =वैद्यों का एक प्रकार का यंत्र।

डर—(पु० हि०) भय। —ना=भयभीत होना। —पोक=भीरु। कायर। डराना=भय दिखाना। डरावना=भयंकर।

डलिया—(स्त्री० हि०) छोटा टोकरा।

डली—(स्त्री० हि०) छोटा टुकड़ा। सुपारी।

डहकना—(क्रि० हि०) छल करना। डहकाना=गँवाना।

डहडहा—(वि० अनु०) हरा-भरा। —ना=हरा-भरा होना।

डहर—(स्त्री० हि०) पशुओं का रास्ता।

डाँक—(स्त्री० हि०) ताँबे या चाँदी का बहुत पतला कागज़ की तरह का पत्तर।

डाँगर—(वि० हि०) चौपाया।

डाँट—(स्त्री० हि०) शासन। वश। दबाव।

डाँटना—(क्रि० हि०) डपटना।

डाँड़—(पु० हि०) डंडा। जुर्माना। सरहद।

डाँड़ा—(पु० हि०) छड़ा।

डाँवाडोल—(वि० हि०) विचलित।

डाँस—(पु० हि०) बड़ा मच्छर।

डाइन—(स्त्री० हि०) चुड़ैल।

डाइबिटीज़—(पु० अं०) बहुमूत्र रोग। मधुमेह।

डाइरेक्टर—(पु० अं०) कार्य-संचालक। डाइरेक्टरी=वह पुस्तक जिसमें किसी नगर वा देश के मुख्य निवासियों या व्यापारियों आदि की सूची अक्षर-क्रम से हो।

डाई—(पु० अं०) साँचा। ठप्पा। —प्रेस=ठप्पा उठाने की कल।

डाक—(पु० हि०) पोस्ट आफ़िस। —खाना=वह सरकारी दफ़्तर जहाँ से चिट्ठियाँ जाती हैं और बाहर से आई हुई चिट्ठियाँ लोगों को बाँटी जाती हैं। —गाड़ी =डाक ले जानेवाली रेल-गाड़ी जो और गाड़ियों से तेज चलती है। —घर=डाक-खाना। —बंगला=वह बँगला या मकान जो सरकार की ओर से ठहरने के लिये बना हो। —महसूल=वह खर्च जो चीज को डाक-द्वारा भेजने या मँगाने में लगे। —मुंशी=डाकघर का अफ़-सर। —व्यय=डाक-मह-सूल।

डाका—(पु० हि०) वह आक्रमण जो धन हरण करने के लिये सहसा किया जाता है।—ज़नी =डाका मारने का काम। डाकू=डाका डालनेवाला।

डाकिनी—(स्त्री०) डाइन। चुड़ैल।

डाकेट—(पु० अं०) चिट्ठी का खुलासा।

डाक्टर—(पु० अं०) वैद्य। डाक्टरी=पाश्चात्य आयुर्वेद। डाक्टर का पेशा या काम। वह परीक्षा जिसे पास करने पर आदमी डाक्टर होता है।

डाटना—(क्रि० हि०) भिड़ाकर ठेलना।

डाढ़ा—(स्त्री० हि०) दावानल।

डाढ़ी—(स्त्री० हि०) ठोड़ी। दाढ़ी।

डाबर—(पु० हि०) नीची जमीन। तलैया।

डामल—(स्त्री० हि०) जनमक़ैद।

डायट—(स्त्री० अं०) व्यवस्था-पिका सभा। राज्यसभा। पथ्य। भोजन।

डायन—(स्त्री० हि०) डाकिनी।

डायनमो—(पु० अं०) एक छोटा एंजिन जिससे बिजली पैदा की जाती है।

डायरिया—(पु० अं०) दस्त की बीमारी। अतिसार।

डायरी—(स्त्री० अं०) रोज़-नामचा।

डायल—(पु० अं०) घड़ी का चेहरा।

डायस—(अं०) वह ऊँचा स्थान वा चबूतरा जिस पर किसी सभा के सभापति का आसन रक्खा जाता है।

डायमंड—(अं०) हीरा।

डायमंड-कट—(पु० अं०) हीरे की सी काट।

डायर्की—(स्त्री० अं०)वह शासन-प्रणाली या सरकार जिसमें शासन-अधिकार दो व्यक्तियों के हाथों में हो। द्वैध शासन।

डाल—(स्त्री० हि०) शाखा।

डालना—(क्रि० हि०) छोड़ना। अन्दर करना।

डालफिन—(स्त्री० अं०) ह्वेल मछली का एक भेद।

डालर—(पु० अं०) अमेरिका का सिक्का।

डाली—(स्त्री० हि०) डलिया। फल, फूल, मेवे तथा और खाने-पीने की वस्तुएँ जो डलिया में सजाकर किसी के पास सम्मानार्थ भेजी जाती हैं। शाखा।

डाह—(स्त्री० हि०) ईर्ष्या।

डिंगल—(वि० हि०) राजपूताने की वह भाषा जिसमें भाट और चारण काव्य और वंशावली आदि लिखते चले आते हैं।

डिक्टेटर—(पु० अं०) प्रधान नेता। पथ-प्रदर्शक। निरंकुश शासक।

डिक्टेशन—(पु० अं०) वह वाक्य जो लिखने के लिये बोला जाय। इमला।

डिक्लरेशन—(पु० अं०) वह लिखा हुआ काग़ज़ जिसमें किसी मैजिस्ट्रेट के सामने कोई प्रेस खोलने या कोई समाचार पत्र छापने और निकालने की जिम्मेवारी ली या घोषित की जाती है।

डिक्री—(स्त्री० अं०) आज्ञा। न्यायालय की वह आज्ञा जिसके द्वारा लड़नेवाले पक्षों

में से किसी पक्ष को किसी संपत्ति का अधिकार दिया जाय।

डिक्शनरी—(स्त्री० अं०) शब्द-कोष। लुग़त।

डिगना—(क्रि० हि०) टलना। विचलना।

डिगरी—(स्त्री० अं०) विश्व-विद्यालय की परीक्षा में उत्तीर्ण होने की पदवी। —दार=वह जिसके पक्ष में अदालत की डिगरी हुई हो।

डिगाना—(क्रि० हि०) हटाना।

डिटेक्टिव—(पु० अं०) जासूस।

डिपटी—(पु० अं०) नायब।

डिपाज़िट—(पु० अं०) धरोहर। जमा।

डिपार्टमेंट—(पु० अं०) विभाग।

डिपो—(स्त्री० अं०) गुदाम।

डिप्लोमा—(पु० अं०) सनद।

डिप्लोमैट—(पु० अं०) कूट-नीतिज्ञ।

डिफेमेशन—(पु० अं०) मान-हानि। बेइज़्ज़ती।

डिबिया—(स्त्री० हि०) छोटा डिब्बा। डिब्बा=संपुट।

डिबेंचर—(पु० अं०) ऋण-स्वीकार-पत्र।

डिमरेज—(पु० अं०) बन्दरगाह में जहाज के ज्यादा ठहरने का हर्जा। स्टेशन पर आये हुए माल के अधिक दिन पड़े रहने का हर्जा जो पानेवाले को देना पड़ता है।

डिमाई—(स्त्री० अं०) काग़ज़ वा छापने की कल की एक नाप जो १८×२२ इंच होती है।

डिलेवरी—(स्त्री० अं०) डाक खानों में आई हुई चिट्ठियों, पारसलों, मनीआर्डरों की बँटाई जो नियत समय पर होती है। किसी चीज़ का बाँटा जाना या दिया जाना। प्रसव होना।

डिविज़नल—(वि० अं०) डिवी-जन का। उस भूभाग का जिसमें कई ज़िले हों।

डिविडेंड—(पु० अं०) वह मुनाफ़ा जो कम्पनी या सम्मिलित पूँजी से चलने वाली कम्पनी को होता है और जो हिस्सेदारों में, उनके हिस्से के मुताबिक बाँटा जाता है।

डिवीज़न—(पु० अं०) कमिश्नरी विभाग।

डिस्ट्रिब्यूट—(क्रि० अं०) छापेखाने में कम्पोज़ किए हुए टाइपों (अक्षरों) को केसों (खानों) में अपने-अपने स्थान पर रखना। बाँटना।

डिसकाउंट—(पु० अं०) बट्टा। दस्तूरी। कमीशन।

डिसमिस—(वि० अं०) बरख़ास्त।

डिसिप्लिन—(पु० अं०) कायदे के अनुसार चलने की शिक्षा या भाव। अनुशासन। फरमाँबरदारी। व्यवस्था। शिक्षा। दंड।

डिस्ट्रायर—(पु० अं०) नाशक जहाज़। टारपीडो बोट।

डिस्ट्रिक्ट—(पु० अं०) ज़िला। —बोर्ड=ज़िला बोर्ड। किसी ज़िले के कर-दाताओं के प्रतिनिधियों की सभा। —मैजिस्ट्रेट=ज़िला हाकिम।

डिस्पेप्सिया—(पु० अं०) मंदाग्नि। पाचन-शक्ति की कमी।

डींग—(स्त्री० हि०) शेखी।

डील—(पु० हि०) क़द।

डीह—(पु० हि०) गाँव। ग्राम-देवता।

डुबाना—(क्रि० हि०) बोरना।

डुबाव—(पु० हि०) डूबने भर की गहराई।

डूँगर—(पु० हि०) टीला। (स्त्री०) डूंगरी=छोटी पहाड़ी।

डूबना—(क्रि० हि०) बूड़ना।

डेक—(पु० अं०) जहाज पर लकड़ी से पटा हुआ फ़र्श या छत।

डेपूटेशन—(पु० अं०) चुने हुए प्रधान-प्रधान लोगों की वह मंडली जो जन-साधारण या किसी सभा, या संस्था की

ओर से सरकार, राजा महाराजा अथवा किसी अधिकारी या शासक के पास किसी विषय में प्रार्थना करने के लिये भेजी जाय।

डेमोक्रेसी—(स्त्री० अं०) सर्व साधारण द्वारा परिचालित सरकार। प्रजा-सत्तात्मक राज्य। प्रजातंत्र। राजनीतिक और सामाजिक समानता।

डेमोक्रैट—(पु० अं०) वह जो डेमोक्रेसी या प्रजासत्ता या लोकसत्ता के सिद्धांत का पक्षपाती हो।

डेरा—(पु० हि०) ठहराव। पड़ाव।

डेरी—(स्त्री० अं०) वह स्थान जहाँ गौएँ, भैंसें रखी जाती है, और दूध, मक्खन आदि बेचा जाता हो।

डेलटा—(पु० यु० अं०) नदियों के मुहाने वा संगम स्थान पर बनी हुई भूमि।

डेल आयरियन—(स्त्री० आयरिश) आयलैंड की पार्लमेंट या व्यवस्थापिका सभा।

डेलिगेट—(पु० अं०) प्रतिनिधि।

डेली—(स्त्री० अं०) दैनिक।

डेवढ़ा—(वि० हि०) डेढ़गुना।

डेवलप करना—(क्रि० अं०) फ़ोटोग्राफ़ी में प्लेट को मसाले मिले हुए जल से धोना जिसमें अंकित चित्र का आकार स्पष्ट हो जाय।

डेस्क—(पु० अं०) लिखने के लिये छोटा ढालुआँ मेज़।

डेहरी—(स्त्री० हि०) दरवाज़े के नीचे की उठी हुई जमीन जिस पर चौखट के नीचे की लकड़ी रहती है।

डैना—(पु० हि०) पंख।

डैम—(पु० अं०) एक अँगरेज़ी गाली।

डैश—(पु० अं०) विराम-चिह्न।

डोंगा—(पु० हि०) बिना पाल की नाव। डोंगी=बिना पाल की छोटी नाव।

डोकरा—(पु० हि०) बूढ़ा आदमी।

डोम—(पु० हि०) एक अस्पृश्य नीच जाति। —कौआ = बड़ी जाति का कौआ। डोमिन = डोम जाति की स्त्री।

डोमिनियन—(स्त्री० अं०) स्वतंत्र शासन या सरकार।

डोर—(स्त्री० सं०) धागा। डोरा = सूत। डोरिया = एक प्रकार का सूती कपड़ा। डोरी = रस्सी।

डोल—(पु० हि०) लोहे का एक गोल बरतन जिससे कुएँ से पानी खींचते हैं। झूला। —ची = छोटा डोल। —डाल = चलना-फिरना। डोलना = (क्रि० हि०) गति में होना। पाखाने जाना।

डोला—(पु० हि०) पालकी। डोली = स्त्रियों के बैठने की एक सवारी जिसे कहार कंधों पर उठाकर ले चलते हैं।

डौंड़ी—(स्त्री० हि०) ढिंढोरा।

डौल—(पु० हि०) ढाँचा। ढंग। —डाल = उपाय।

ड्यूक—(पु० अं०) इंगलैंड के सामन्तों और भूम्यधिकारियों को दी जाने वाली एक सर्वोच्च उपाधि।

ड्यूटी—(स्त्री० अं०) कर्त्तव्य। धर्म। फ़र्ज़। सेवा। पहरा। चुंगी। महसूल।

ड्योढ़ा—(वि० हि०) डेढ़गुना।

ड्योढ़ी—(स्त्री० हि०) दरवाज़ा। —दार = द्वारपाल। सिपाही। —वान = दरवान।

ड्राइंग—(स्त्री० अं०) लकीरों से चित्र या आकृति बनाने की विद्या।

ड्राइवर—(पु० अं०) गाड़ी हाँकने या चलाने वाला।

ड्राई-प्रिंटिंग—(स्त्री० अं०) सूखी छपाई।

ड्राप—(पु० अं०) बूँद। बिन्दु। यवनिका। —सीन = नाट्यशाला या थियेटर के रंगमंच के आगे का परदा जो नाटक का एक अंक पूरा होने पर गिराया जाता है। यवनिका।

ड्राफ़्ट्समैन—(पु० अं०) नकशा बनानेवाला।

ड्राफ़्ट—(पु० अं०) मसविदा। मसौदा।

ड्राम—(पु० अं०) पानी आदि द्रव पदार्थों को नापने का एक अँग्रेज़ी मान जो तीन माशे के बराबर होता है।

ड्रामा—(पु० अं०) अभिनय। नाटक।

ड्रिल—(स्त्री० अं०) क़वायद।

ड्रेडनाट—(पु० अ०) जंगी जहाज का एक भेद।

ड्रेन—(पु० अं०) परनाला। मोरी।

ड्रेस करना—(क्रि० अं०) मरहम-पट्टी करना।

ढ

ढ—हिन्दी-वर्णमाला का चौदहवाँ व्यंजन और टवर्ग का चौथा अक्षर।

ढंग—(पु० हि०) शैली।

ढंगी—(वि० हि०) चतुर। पाखंडी।

ढँढोरा—(पु० हि०) डुगडुगी।

ढकना—(पु० हि०) ढक्कन। छिपाना।

ढकेलना—(क्रि० हि०) धक्के से गिराना।

ढकोसला—(पु० हि०) पाखंड।

ढक्कन—(पु० सं०) ढाकने की वस्तु।

ढचर—(पु० हि०) आयोजन और सामान।

ढब—(पु० हि०) तरीक़ा।

ढमढम—(पु० अनु०) ढोल का वा नगारे का शब्द।

ढरकना—(क्रि० हि०) ढलना।

ढरका—(पु० हि०) आँख का एक रोग।

ढरकी—(स्त्री० हि०) जुलाहों का एक औज़ार। पशुओं को दवा पिलाने की बाँस की चोंगी।

ढर्रा—(पु० हि०) मार्ग। ढंग।

ढलका—(पु० हि०) आँख का एक रोग।

ढलाई—(स्त्री० हि०) ढालने का काम। ढालने की मजदूरी।

ढहाना—(क्रि० हि०) ध्वस्त करना।

ढाँचा—(पु० हि०) डौल।

ढाँसना—(क्रि० हि०) सूखी खाँसी खाँसना।

ढाक—(पु० हि०) पलाश का पेड़।

ढाढ़स—(पु० हि०) धीरज।

ढाल—(स्त्री० सं०) नीचे को उतरती हुई ऊँचाई। तलवार की चोट सँभालने वाला एक हथियार।

ढालना—(क्रि० हि०) उँडेलना।

ढिँढोरा—(पु० हि०) घोषणा करने की भेरी।

ढिठाई—(स्त्री० हि०) धृष्टता।

ढिलाई—(स्त्री० हि०) सुस्ती।

ढीठ—(वि० हि०) बेअदब।

ढील—(स्त्री० हि०) शिथिलता। जूँ। ढीला=शिथिल। —पन =शिथिलता।

ढुँढ़वाना—(क्रि० हि०) खोजवाना।

ढुर्री—(स्त्री० हि०) पगडंडी।

ढुलकना—(क्रि० हि०) लुढ़कना।

ढुलना—(क्रि० हि०) ढरकना।

ढुलवाई—(स्त्री० हि०) ढोने की मज़दूरी। ढुलवाना=ढोने का काम कराना।

ढूँढ़—(स्त्री० हि०) खोज। —ना =खोजना।

ढेंकली—(स्त्री० हि०) सिंचाई के लिये कुएँ से पानी निकालने का एक यंत्र।

ढेंका—(पु० हि०) बड़ी ढेंकी।

ढेंकी—(स्त्री० हि०) अनाज कूटने का लकड़ी का एक यंत्र। ढेंकली।

ढेंढ़र—(पु० हि०) टेंटर।

ढेंपी—(स्त्री० हि०) फल का मुँह।

ढेर—(पु० हि०) राशि। समूह।

ढेरा—(पु० देश०) सुतली बटने की फ़िरकी।

ढेलवाँस—(स्त्री० हि०) गोफन।

ढेला—(पु० हि०) ईंट, मिट्टी, कंकड़, पत्थर आदि का टुकड़ा ।

ढोंग—(पु० हि०) पाखंड । ढोंगी=पाखंडी ।

ढोंढ़—(पु० हि०) कपास, पोस्ते आदि की कली ।

ढोटा—(पु० हि०) पुत्र ।

ढोना—(क्रि० हि०) भार ले चलना ।

ढोल—(पु० अ० दुहल) एक बाजा ।

ढोलक—(स्त्री० हि०) ढोर,

ढोलना—(पु० हि०) ढोलक के आकार का छोटा जन्तर जो तागे में पिरोकर गले में पहना जाता है ।

ढोली—(स्त्री० हि०) २०० पानों की गड्डी ।

ण

ण—हिन्दी-वर्णमाला का पन्द्रहवाँ व्यञ्जन ।

त

त—हिन्दी-वर्णमाला का सोलहवाँ व्यंजन और तवर्ग का पहला अक्षर जिसका उच्चारण-स्थान दंत है ।

तँई—(प्रत्य० हि०) से ।

तंग—(पु० फ़ा०) घोड़ों की ज़ीन कसने का तस्मा । सिकुड़ा हुआ । छोटा ।—दस्त =निर्धन । ग़रीब । —दिल =कंजूस । —दस्ती = कंजूसी । —हाल = ग़रीब । बीमार । तंगी = संकीर्णता । तकलीफ़ । ग़रीबी ।

तंज़—(अ०) उपालम्भ । ताना ।

तंज़ेब—(स्त्री० फ़ा०) महीन और बढ़िया मलमल।

तंतु—(पु० हि०) तागा। ताँत।

तंत्र—(पु० सं०) तंतु। शैवों और शाक्तों का धर्म-ग्रन्थ। शासन।

तंदुरुस्त—(वि० फ़ा०) स्वस्थ। तंदुरुस्ती=स्वास्थ्य।

तंदूर—(पु० हि०) अँगीठी।

तंद्रा—(स्त्री० सं०) उँघाई। आलस्य।

तंबाकू—(पु० हि०) एक पौधा।

तंबोह—(स्त्री० अ०) नसीहत।

तंबू—(पु० हि०) खेमा।

तंबूर—(पु० फ़ा०) छोटा ढोल। (अ०) रोटी पकाने का ज़रफ़।

तंबूरा—(पु० हि०) बीन या सितार की तरह का एक बाजा।

तँबोलिन—(स्त्री० हि०) पान बेचनेवाली स्त्री। तँबोली= पान बेचनेवाला।

तवङ्गर—(फ़ा०) मालदार।

तअज्जुब—(पु० अ०) आश्चर्य।

तअम्मुल—(पु० अ०) फ़िक्र।

तअल्लुक़—(पु० अ०) संबंध।

तअल्लुक़ा—(पु० अ०) बड़ा इलाक़ा।

तअल्लुक़ेदार—(पु० अ०) इलाक़ेदार।

तअस्सुब—(पु० अ०) धर्म या जाति संबंधी पक्षपात।

तइनात—(पु० हि०) नियुक्त।

तक़दिमा—(अ०) मुकद्दमा पेश करना। पेशगी दिया गया रुपया।

तक़दीर—(स्त्री० अ०) भाग्य।

तकरार—(स्त्री० अ०) विवाद। झगड़ा।

तकरीर—(स्त्री० अ०) बातचीत। भाषण।

तक़रीब—(स्त्री० अ०) उत्सव।

तक़रीबन्—(अ०) लगभग। अनुमानतः।

तक़र्रुब—(अ०) समीपता। नज़दीकी।

तक़र्रुरी—(स्त्री० अ०) नियुक्ति।

तकला—(पु० हि०) टेकुआ।

तक़ली=छोटा तकला या टेकुरी।
तक़लीअ़—(अ०) टुकड़े करना।
तक़लीद—(अ०) अनुकरण।
तक़विअ़त—(अ०) बल देना।
तक़य्युद—(अ०) बंदी। क़ैद होना।
तकब्बुर—(अ०) अहंकार। घमंड।
तकरार—(अ०) झगड़ा। लड़ाई।
तकलीफ़—(स्त्री० अ०) कष्ट।
तक़लील—(अ०) कम करना। थोड़ा करना।
तकल्लुफ़—(पु० अ०) शिष्टाचार।
तक़सीम—(स्त्री० अ०) बाँटना।
तक़सीर—(स्त्री० अ०) अपराध। भूल। —वार=अपराधी। गुनहगार।
तक़ाज़ा—(पु० अ०) तगादा। माँग।
तकान—(स्त्री० हि०) थकावट।
तक़ावी—(स्त्री० अ०) वह धन जो ज़मींदार या राजा की ओर से ग़रीब किसानों को खेती के औज़ार बनवाने और बीज खरीदने को दिया जाय।
तकिया—(पु० फ़ा०) सिर के नीचे रखने का रूईदार थैला। —कलाम=बोलते समय एक ही वाक्य या शब्द जो आदत पड़ जाने के कारण बार बार आवे। —दार=मज़ार पर रहनेवाला मुसलमान फ़क़ीर।
तख़फ़ीफ़—(स्त्री० अ०) कमी। संक्षिप्त करना। हलका करना।
तख़मीनन—(क्रि० अ०) अंदाज़ से। तख़मीना=अंदाज़।
तख़लिया—(पु० अ०) एकांत स्थान।
तख़ल्लुस—(अ०) छाप। उपनाम।
तख़सीस—(अ०) विशेषता। ख़ास बात।
तख़्त—(पु० फ़ा०) सिंहासन।

—ताऊस=(अ०) एक प्रसिद्ध राज-सिंहासन, जिसे शाहजहाँ ने छः करोड़ रुपये लगाकर बनवाया था । —नशीन=सिंहासनारूढ़ । —पोश=तख़्त या चौकी पर बिछाने की चादर । तख़्ता=बड़ा पटरा । चिरी हुई लकड़ी । तख़्ती=छोटा तख़्ता । पटिया ।

तगड़ा—(वि० हि०) बलवान् ।

तजरबा—(पु० अ०) अनुभव । —कार=अनुभवी ।

तजरुबा—(पु० अ०) अनुभव । —कार=अनुभवी ।

तज़किरा—(पु० अ०) चर्चा । ज़िक्र करना ।

तजवीज़—(स्त्री० अ०) सम्मति । योजना । —सानी=(अ०) एक ही हाकिम के सामने होनेवाला पुनर्विचार ।

तजल्ली—(अ०) प्रकाश । रोशनी ।

तजम्मुल—(अ०) वैभव । शान । सुन्दरता ।

तट—(पुं० सं०) किनारा । क्षेत्र । प्रदेश । —स्थ=किनारे पर रहनेवाला । निरपेक्ष ।

तड़का—(पु० हि०) सबेरा । बघार ।

तड़प—(स्त्री० हि०) छटपटाना । चमक । झलक । —ना=छटपटाना ।

तड़ाका—(पु० अनु०) "तड़" शब्द । जल्दी से ।

तड़ातड़—(क्रि० अनु०) तड़तड़ शब्द के साथ ।

तत्काल—(क्रि० सं०) फ़ौरन् । तत्कालीन=उसी समय का ।

तत्क्षण—क्रि० सं०) तत्काल ।

तत्ता—(वि० हि०) गरम ।

तत्व—(पु० सं०) वास्तविकता । सार । —ज्ञ=तत्त्वज्ञानी । दार्शनिक । —ज्ञान=ब्रह्मज्ञान । —ज्ञानी=तत्त्वज्ञ । दार्शनिक । —दर्शी=तत्त्वज्ञानी । —वेत्ता=तत्त्वज्ञ । दार्शनिक । —शास्त्र=दर्शनशास्त्र । तत्वावधान=निरीक्षण ।

तत्पर—(वि० सं०) उद्यत । मुस्तैद । —ता=मुस्तैदी ।

तत्पुरुष—(सं०) एक समास ।

तत्सम—(पु० सं०) हिन्दी में व्यवहृत होनेवाला संस्कृत का वह शब्द जो अपने शुद्ध रूप में हो ।

तथा—(अव्य० सं०) और । इसी तरह ।

तथापि—(अव्य० सं०) तौभी ।

तथ्य—(वि० सं०) सत्य ।

तदनंतर—(क्रि० सं०) उसके बाद ।

तदनुरूप—(वि० सं०) उसी के समान ।

तदनुसार—(वि० सं०) उसके अनुकूल ।

तदबीर—(स्त्री० अं०) उपाय ।

तदारुक—(पु० अ०) बंदोबस्त । दंड ।

तदुपरान्त—(क्रि० सं०) उसके बाद ।

तद्भव—(पु० सं०) संस्कृत के शब्द का अपभ्रंश रूप ।

तन—(पु० हि०) शरीर । बदन ।

तनक़ीह—(स्त्री अ०) जाँच करना ।

तनख़्वाह—(स्त्री० फ़ा०) वेतन । मज़दूरी । —दार=वेतन-भोगी ।

तन्ज़—(अ०) ताना ।

तनज़्ज़ुल—(पु० अ०) अवनत । तनज़्ज़ुली=(स्त्री० फ़ा०) अवनति ।

तनय—(पु० सं०) पुत्र ।

तनसीख—(स्त्री० अ०) रद्द करना ।

तनहा—(वि० फ़ा०) अकेला । —ई=एकांत ।

तना—(पु० फ़ा०) पेड़ का धड़ ।

तनाज़ा—(पु० अ०) झगड़ा ।

तनाव—(पु० हि०) खिंचाव ।

तनावर—(फ़ा०) मोटा । बड़ा । ताकतदार ।

तनासुल—(अ०) प्रसव । सन्तानोत्पति ।

तनी—(स्त्री० हि०) बंधन ।

तन्मय—(वि० सं०) लवलीन । —ता=एकता ।

तप—(पु० हि०) तपस्या। (फ़ा०) ज्वर। ताप।

तपन—(पु० सं०) जलन। ग्रीष्म। तपना=तप्त होना। तपाना =तप्त करना।

तपस्या—(स्त्री० सं०) तप। तपस्विनी=तपस्या करने वाली स्त्री। तपस्वी=तपस्या करने वाला।

तपाक—(पु० फ़ा०) आवेश। जल्दी।

तपिश—(फ़ा०) गरमी। सोज़िश।

तपेदिक़—(पु० फ़ा०) राजयक्ष्मा।

तपोधन—(पु० सं०) तपस्वी।

तपोभूमि—(स्त्री० सं०) तपोवन।

तपोबल—(पु० सं०) तप का प्रभाव या शक्ति।

तप्तकुंड—(पु० सं०) गरम पानी का सोता या कुंड।

तफ़्ता—(फ़ा०) जला हुआ। आशिक़।

तफ़रीक़—(स्त्री० अ०) जुदाई। विभिन्नता।

तफ़ारिक़ा—(अ०) फ़र्क़। फ़ासिला।

तफ़ज़ील—(अ०) बड़प्पन। प्रतिष्ठा करना।

तफ़ज़्ज़ुल—(अ०) बुज़ुर्गी। बड़ाई।

तफ़तीश—(अ०) खोज। तलाश।

तफ़रीह—(स्त्री० अ०) प्रसन्नता। ताज़गी।

तफ़सील—(स्त्री० अ०) विस्तृत वर्णन। टीका। सूची।

तफ़ावत—(पु० अ०) अन्तर। दूरी।

तब—(अव्य० हि०) उस समय।

तबक़—(पु० अ०) लोक। चाँदी, सोने आदि धातुओं का पतला बरक़।

तबक़ा—(पु० फ़ा०) खंड। लोक। पद। दर्जा

तबदील—(वि० अ०) परिवर्तित। तबदीली=(स्त्री० अ०) बदली। तबद्दल=(पु० अ०) बदली।

तबर्रा—(अ०) नफ़रत करना।

तबल—(पु० फ़ा०) नगारा। ढोल। —ची=(हि०) वह जो तबला बजाता हो।

तबला=एक प्रसिद्ध बाजा।
तबस्सुम—(अ०) मुसकुराना। कली का खिलना।
तबाक़—(पु० अ०) परात।
तबाबत—(स्त्री० अ०) चिकित्सा।
तबाह—(वि०) फ़ा०) बरबाद। तबाही=बरबादी। उजड़ जाना।
तबीअत—(स्त्री० अ०) चित्त। स्वास्थ्य। —दार=(वि० अ०) समझदार। भावुक। —दारी=समझदारी। भावुकता।
तबीब—(पु० अ०) चिकित्सक। हकीम। वैद्य।
तबेला—(पु० अ०) अस्तबल। घुड़साल।
तभी—(अव्य० हि०) उसी समय।
तमंचा—(पु० फ़ा०) पिस्तौल।
तम—(हि०) अंधकार।
तमक—(पु० हि) जोश। क्रोध।
तमग़ा—(पु० तु०) पदक।
तम्बूर—(अ०) तमूरा।
तमतमाना—(क्रि० हि०) धूप या क्रोध के कारण चेहरा लाल हो जाना।
तमक्कनत—(अ०) गर्व। टीमटाम।
तमतमाहट—(हि०) चेहरा लाल हो जाना। लाली।
तमसील—(अ०) उदाहरण।
तमस्सुक—(अ०) दस्तावेज़।
तमन्ना—(अ०) वांछा। अभिलाषा। इच्छा।
तमहीद—(अ०) भूमिका।
तमा—(अ०) लालच। लोभ।
तमाअत—(अ०) लोभ करना। लालच करना।
तमाचा—(पु० हि०) थप्पड़।
तमाम—(वि० अ०) सम्पूर्ण। पूरा।
तमाशा—(पु० फ़ा०) चित्त को प्रसन्न करनेवाला दृश्य। —ई=तमाशा देखनेवाला। तमाशबीन=ऐयाश। तमाशा देखनेवाला। तमाशबीनी=ऐयाशी।
तमीज़—(स्त्री० अ०) विवेक। ज्ञान। अदब।

तमोलिन—(स्त्री० हि०) पान बेचने वाली स्त्री ।
तम्बोल—(फ़ा०) ताम्बूल । पान ।
तय्यार—(अ०) प्रस्तुत ।
तरंगिणी—(स्त्री० सं०) नदी ।
तय—(अ०) निर्णय करना । आमादा । मुस्तैद ।
र—(वि० फ़ा०) भीगा हुआ । शीतल । —बतर=भीगा हुआ ।
तर्क—(अ०) छोड़ना । परिग्रह ।
तरकश—(पु० फ़ा०) तूणीर ।
तरकारी—(स्त्री० फ़ा०) शाक । भाजी ।
तरकी—(स्त्री० हि०) कान में पहनने का एक गहना ।
तरकीब—(स्त्री० अ०) उपाय । युक्ति ।
तरक्क़ी—(स्त्री० अ०) उन्नति ।
तरक़ीक—(अ०) बारीक करना ।
तरग़ीब—(अ०) लालच देना । आकर्षित करना ।
तर्ज़—(अ०) प्रकार । ढँग । तरह ।
तरजुमा—(पु० अ०) अनुवाद ।
तरतीब—(स्त्री० अ०) सिलसिला । क्रम ।
तरदीद—(स्त्री० अ०) मंसूख़ी ।
तरद्दुद—(पु० अ०) फ़िकर । चिन्ता ।
तरना—(क्रि० हि०) पार करना ।
तरफ़—(स्त्री० अ०) ओर । —दार=पक्षपाती । —दारी=पक्षपात । तरफ़ैन = दोनों ओर ।
तरबियत—(अ०) तालीम । परवरिश ।
तरबूज—(पु० हि०) मतीरा ।
तरमीम—(स्त्री० अ०) संशोधन ।
तरल—(वि० सं०) चंचल ।
तरस—(पु० हि०) दया ।
तरसना—(क्रि० हि०) अभाव का दुःख सहना । तरसाना= अभाव का दुःख देना ।
तरह—(स्त्री० अ०) प्रकार । भाँति । समस्या । —दार= सुन्दर बनावट का ।—दारी= सजधज का ढँग ।
तराई—(स्त्री० हि०) पहाड़ के नीचे की भूमि ।

तराक़—(फ़ा०) कोड़े मारने की आवाज़। तड़ाक।

तराना—(फ़ा०) राग। गीत।

तराज़ू—(स्त्री० फ़ा०) तुला।

तराबोर—(वि० हि०) सराबोर।

तरावट—(स्त्री० हि०) गीलापन। ठंढक।

तराश—(स्त्री० फ़ा०) काटछाँट। —खराश = काट-छाँट। तराशा = छिलका तराशा हुआ। तराशना = कतरना।

तरीक़ा—(पु० अ०) ढँग। प्रणाली।

तरु—(पु० सं०) पेड़।

तरोई—(स्त्री० हि०) एक तरकारी।

तर्क—(पु० सं०) विवेचना। (अ०) छोड़ना। परिग्रह। तर्कणा = (सं) विचार। दलील। तर्कना = विचार। युक्ति। —वितर्क = विवेचना। बहस। —शास्त्र = सिद्धांतों के खंडन-मंडन की शैली बतलानेवाली विद्या।

तर्ज़—(पु० अ०) प्रकार। शैली। तरह। ढँग।

तर्जुमा—(पु० अ०) भाषान्तर।

तर्पण—(पु० सं०) पितरों को जल देना।

तल—(पु० सं०) नीचे का भाग। तला।

तलख़—(फ़ा०) कड़ुवा। असह्य।

तलछट—(स्त्री० हि०) तलौंछ।

तलतुफ़—(अ०) मेहरबानी करना।

तलफना—(क्रि० अनु०) छटपटाना।

तलफ्फुज़—(अ०) उच्चारण।

तलब—(स्त्री० अ०) खोज। तलाश। चाह। माँगना। इच्छा। तलबाना = वह ख़र्चा जो गवाहों को तलब करने के लिये टिकट के रूप में अदालत में दाख़िल किया जाता है।

तलबी—(स्त्री० अ०) बुलाहट।

तलवार—(स्त्री० हि०) एक हथियार।

तलहटी—(स्त्री॰ हि॰) पहाड़ की तराई।

तला—(पु॰ हि॰) पेंदा।

तलाक़—(पु॰ अ॰) पति पत्नी का विधान-पूर्वक संबन्ध-त्याग।

तलाज—(अ॰) शोर-गुल।

तलातुम—(अ॰) झगड़ा। लड़ाई। नदी में लहरों की तपेड़ें।

तलाफ़ी—(अ॰) निवारण। दिलजोई।

तलाश—(स्त्री॰ तु॰) खोज। ढूँढ़ना। तलाशी=गुम की हुई या छिपाई हुई वस्तु को पाने के लिये घर-बार, चीज-वस्तु आदि की देख-भाल।

तली—(स्त्री॰ हि॰) पेंदी।

तले—(क्रि॰ हि॰) नीचे।

तलेटी—(स्त्री॰ हि॰) पेंदी। तलहटी।

तल्प—(पु॰ सं॰) पलँग। अटारी।

तल्ली—(स्त्री॰ सं॰) जूते का तला।

तवक्कुल—(अ॰) ईश्वर पर भरोसा करना।

तवज्जह—(स्त्री॰ अ॰) ध्यान।

तवा—(पु॰ हि॰) लोहे का एक बर्तन जिस पर रोटी सेंकते हैं। (फ़ा॰) ताबा।

तवङ्गर—(फ़ा॰) ताक़तवर। मालदारी।

तवाज़ा—(स्त्री॰ अ॰) आदर। दावत। नम्रता।

तवायफ़—(स्त्री॰ अ॰) वेश्या।

तवारीख़—(स्त्री॰ अ॰) इतिहास।

तवालत—(स्त्री॰ अ॰) लंबाई। अधिकता। आपत्ति। कष्ट।

तवील—(अ॰) लम्बा।

तशख़ीस—(स्त्री॰ अ॰) ठहरात्र। रोग का निदान।

तशबीह—(अ॰) उदाहरण। मिसाल।

तशरीफ़—(स्त्री॰ अ॰) इज़्ज़त। बड़प्पन।

तशदीद—(अ॰) किसी पर सख्ती करना।

तशद्दुद—(अ०) अनाचार। किसी पर सख्ती करना।

तश्तरी—(स्त्री० फ़ा०) रिकाबी।

तसदीक़—(स्त्री० अ०) सचाई। समर्थन। गवाही।

तसद्दुक़—(पु० अ०) निछावर। बलि-प्रदान।

तसदीद—(अ०) दुरुस्त करना।

तसनीफ़—(स्त्री० अ०) ग्रंथ की रचना। लेख।

तसबीह—(स्त्री० अ०) जप-माला।

तसमई—(हि०) एक प्रकार का पकवान।

तसरीह—(अ०) प्रकट करना।

तसला—(पु० हि०) कटोरे के आकार का एक बड़ा बरतन। (स्त्री०) तसली।

तसलीम—(स्त्री० अ०) प्रणाम। स्वीकृति।

तसल्ली—(स्त्री० अ०) आश्वासन। धैर्य।

तसवीर—(स्त्री० अ०) चित्र।

तसहीह—(अ०) शुद्ध करना। दुरुस्त करना।

तसहहुब—(अ०) माशूक का अपने आशिक़ से नाज़ करना।

तस्कर—(पु० सं०) चोर।

तसरूफ़—(अ०) दख़ल देना। कुछ का कुछ कर देना।

तस्फ़िया—(अ०) निपटारा करना।

तह—(स्त्री० फ़ा०) परत।

तहक़ीक़—(स्त्री० अ०) सत्य। खोज। जाँच। तहक़ीकात = अनुसन्धान।

तहख़ाना—(पु० फ़ा०) तल-गृह।

तहज़ीब—(स्त्री० अ०) शिष्ट व्यवहार।

तहबन्द—(फ़ा०) लुङ्गी। लँगोट।

तहबाज़ारी—(स्त्री० फ़ा०) वह महसूल जो सट्टी में सौदा बेचनेवालों से ज़मींदार लेता है।

तहत—(अ०) अधीन। नीचे।

तहमत—(पु० फ़ा०) लुंगी।

तहरीक—(अ०) आन्दोलन। ध्यान दिलाना।

तहरीर—(स्त्री० अ०) लेख। तहरीरी=(वि० फ़ा०) लिखित।

तहलका—(पु० अ०) मृत्यु। हलचल। बरबादी।

तहय्युर—(अ०) विस्मय। आश्चर्य।

तहम्मुल—(अ०) धैर्य। संतोष। उठाना। बरदाश्त करना।

तहवील—(स्त्री० अ०) सुपुर्दगी। धरोहर। जमा। कोष। ख़ज़ाना। रोकड़। —दार=ख़जानची।

तहव्वुर—(अ०) मर्दानगी।

तहसनहस—(वि० देश०) बरबाद।

तहसील—(स्त्री० अ०) वसूली। तहसीलदार की कचहरी। इकट्ठा करना। —दार=कर वसूल करनेवाला अफ़सर। —दारी=तहसीलदार का काम।

तहाँ—(हि०) वहाँ।

तहेदस्त—(फ़ा) खाली हाथ। ग़रीब।

तहोबाला—(वि० फ़ा०) नीचे ऊपर।

ताँता—(पु० हि०) चलनेवालों का पंक्ति-बद्ध समूह।

ताँतिया—(वि० हि०) ताँत की तरह दुबला-पतला।

ताँबा—(पु० हि०) धातु।

ताबाँ—(फ़ा०) चमत्कार।

तांबूल—(पु० सं०) पान।

ता—(फ़ा०) तक।

ताईं—(अव्य० हि०) प्रति।

ताअत—(अ०) प्रार्थना। पूजा। आदर। सत्कार।

ताई—(स्त्री० हि०) हरारत। जूड़ी।

ताईद—(स्त्री० अ०) पक्षपात। अनुमोदन।

ताऊ—(पु० हि०) बाप का बड़ा भाई।

ताऊन—(पु० अ०) प्लेग।

ताऊस—(पु० अ०) मोर।

ताक—(स्त्री० हि०) घात।

ताक़—(पु० अ०) आला।

ताकजुफ़्त—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का जूआ।

ताक झाँक—(स्त्री० हि०) घात।

ताक़त—(स्त्री० अ०) शक्ति। सामर्थ्य। —वर=बलवान।

ताकना—(क्रि० हि०) देखना।

ताकीद—(स्त्री० अ०) सावधान करना। बार-बार कहना।

ताक्कुल—(अ०) समझना। जानना। फिक्र करना।

तागा—(पु० हि०) सूत।

ताज—(पु० अ०) राजमुकुट।

ताज़गी—(स्त्री० फ़ा०) हरापन। ताज़ापन। स्वस्थता। नयापन।

ताजपोशी—(स्त्री० फ़ा०) राजमुकुट धारण करने या राजसिंहासन पर बैठने की रीति या उत्सव।

ताजमहल—(पु० अ०) आगरे का प्रसिद्ध मक़बरा।

ताज़ा—(वि० फ़ा०) हरा भरा।

ताज़िया—(पु० अ०) बाँस की कमचियों पर रंग-बिरंगे काग़ज़, पन्नी आदि चिपका कर बनाया हुआ मक़बरे के आकार का मंडप।

ताजिर—(अ०) व्यापारी। सौदागर।

ताज़ी—(वि० फ़ा०) अरब का घोड़ा।

ताज़ीम—(स्त्री० अ०) सम्मान-प्रदर्शन। प्रतिष्ठा करना।

ताज़ीमी सरदार—(पु० फ़ा०) ऐसा सरदार जिसकी दरबार में विशेष प्रतिष्ठा हो।

ताज़ीरात—(पु० अ०) अपराध और दंड सम्बन्धी व्यवस्थाओं या कानूनों का संग्रह। दंड-विधि।

ताड़—(पु० सं०) पेड़।

ताड़ना—(स्त्री०) सं०) प्रहार। धमकी।

ताड़पत्र—(पु०सं०) ताड़ का। पत्ता।

ताड़बाज़—(वि० हि०) ताड़ने वाला।

ताड़ी—(स्त्री० सं०) खजूर का रस।

ताता—(वि० हि०) गरम।

तातायेई—(स्त्री० अनु०) नृत्य का शब्द।

तातील—(स्त्री० अ०) छुट्टी।
तात्कालिक—(वि० सं०) तत्काल का।
तात्पर्य्य—(पु० सं०) अभिप्राय।
तादाद—(स्त्री० अ०) संख्या।
तान—(स्त्री० सं०) खींच। आलाप।
तानपूरा—(पु० हि०) सितार के आकार का एक बाजा।
तानसेन—(पु० हि०) अकबर बादशाह के समय का एक प्रसिद्ध गवैया।
ताना—(पु० हि०) कपड़े की बुनावट में वह सूत जो लंबाई के बल होता है। दरी, कालीन बुनने का करघा। (अ०) उपालंभ। उलाहना।
ताना-बाना—(पु० हि०) कपड़ा बुनने में लम्बाई और चौड़ाई के बल फैलाए हुए सूत।
तानारीरी—(स्त्री० हि०) साधारण गाना।
तानाशाह—(पु० फ़ा०) मग़रूर। किसी की न सुनने वाला शासक।
ताप—(पु० सं०) उष्णता।
तापतिल्ली—(स्त्री० हि०) ज्वर-युक्त प्लीहा रोग।
तापना—(क्रि० हि०) आग की आँच से अपने को गरम करना।
तापमान यंत्र—(पु० सं०) थर्मामीटर।
ताफ़्ता—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का चमकदार रेशमी कपड़ा।
तफ़ावत—(अ०) अन्तर।
ताब—(स्त्री० फ़ा०) ताप। चमक। सामर्थ्य। ताक़त।
ताबड़तोड़—(क्रि० वि० अनु०) लगातार।
ताबाँ—(फ़ा०) चमकदार।
तावा—(फ़ा०) तवा।
ताबूत—(पु० अ०) मुरदा रखने का सन्दूक।
ताबे—(वि० अ०) अधीन। मातहत। —दार=आज्ञाकारी। —दारी=नौकरी। सेवा।
तामीर—(अ०) इमारत बनाना। आबाद करना।

तामील—(स्त्री० अ०) आज्ञा का पालन। अमल करना।

तामुल—(अ०) व्यवहार में लाना। काम करना।

तायदाद—(पु० अ०) संख्या।

तायफ़ा—(फ़ा०) वेश्या।

तार—(पु० सं०, फ़ा०) डोरा। सूत। ताना। वह यंत्र जिससे समाचार भेजा जाता है।

तारतम्य—(पु० सं०) न्यूनाधिक्य।

तार-तार—(वि० हि०) कटा=फटा।

तारना—(क्रि० हि०) पार लगाना। उद्धार करना।

तारपीन—(पु० हि०) चीड़ के पेड़ से निकला हुआ तेल।

तारबर्क़ी—(पु० उ०) बिजली की शक्ति द्वारा समाचार पहुँचाने वाला तार।

तारा—(पु० सं०) सितारा।

ताराज—(पु० फ़ा०) लूट-पाट। बरबादी।

तारानाथ—(पु० सं०) चंद्रमा।

तारी—(अ०) आविर्भाव। अकस्मात् प्रकट होना।

तारीक—(वि० फ़ा०) धुँधला। अँधेरा। तारीकी=स्याही। अंधकार।

तारीख़—(स्त्री० अ०) तिथि। महीने का कोई दिन।

तारीफ़—(स्त्री० अ०) परिभाषा। प्रशंसा।

तार्किक—(पु० सं०) तर्कशास्त्र का जानने वाला। दार्शनिक।

ताल—(पु० सं०) हथेली। करतल-ध्वनि। गान-वाद्य में विराम।

ताला—(पु० हि०) केवाड़े बन्द रखने का यंत्र।

तालाब—(पु० हि०) सरोवर। पोखर।

तालिका—(स्त्री०) सं०) ताली। सूची।

तालिब—(पु०अ०) ढूँढ़ने वाला। —इल्म=विद्यार्थी।

ताली—(स्त्री० सं०) कुंजी। हथेलियों का परस्पर आघात।

तालीम—(स्त्री० अ०) शिक्षा।

तालू—मुँह के भीतर की ऊपरी छत।
ताल्लुक़—(पु० अ०) सम्बन्ध।
ताल्लुक़ा—(अ०) इलाक़ा।
ताव—(पु० हि०) वह गरमी जो किसी वस्तु को तपाने या पकाने के लिये पहुँचाई जाय।
तावान—(फ़ा०) जुर्माना।
ताश—(पु० अ०) खेलने का पत्ता। ताश का खेल।
ताशा—(पु० अ०) एक बाजा।
तासीर—(स्त्री० अ०) प्रभाव। गुण।
तास्सुफ़—(अ०) कुमार्ग पर चलना।
तास्सुब—(अ०) पक्षपात। तरफ़दारी।
तिकड़ी—(स्त्री० हि०) जिसमें तीन कड़ियाँ हों।
तिकोना—(वि० हि०) जिसमें तीन कोने हों।
तिक्की—(स्त्री० हि०) ताश का वह पत्ता जिस पर तीन बूटियाँ हों।
तिक्त—(वि० सं०) कड़ुवा।
तिगुना—(वि०हि०) तीन गुना।
तिजारत—(स्त्री०अ०) व्यापार। सौदागरी।
तिजारी—(स्त्री० हि०) तीसरे दिन आने वाला ज्वर।
तिड़ी बिड़ी—(वि० देश०) तितर-बितर।
तितर-बितर—(वि० हि०) छितराया हुआ।
तितली—(स्त्री० हि०) एक उड़ने वाला सुन्दर कीड़ा या फतिंगा।
तितम्मा—(अ०) परिशिष्ट। शेष भाग।
तिधारा—(पु० हि०) एक प्रकार का थूहर (सेहुँड़)।
तिनका—(पु० हि०) तृण।
तिनपहला—(वि० हि०) जिसमें तीन पहल हों।
तिपाई—(स्त्री० हि०) तीन पायों की बैठने की छोटी ऊँची चौकी।
तिब—(अ०) चिकित्सा। वैद्यक। हकीमी। तिब्बी=(अ०) हकीमी चिकित्सा-सम्बन्धी।

तिफ़्ल—(अ०) शिशु। बच्चा। बालक।

तिमंज़िला—(वि० हि०) तीन खंडों का।

तिमिर—(पु० सं०) अंधकार।

तिरछा—(वि० हि०) जो अपने आधार पर समकोण बनाता हुआ न गया हो।—पन=टेढ़ापन। तिरछी बैठक=माल खंभ की एक कसरत।

तिरना—(क्रि० हि०) पानी के ऊपर आना या ठहरना। तैरना।

तिरपाल—(पु० हि०) मुट्ठा। राल चढ़ाया हुआ टाट।

तिरस्कार—(पु० सं०) अनादर। भर्त्सना।

तिराना—(क्रि० हि०) पानी के ऊपर ठहराना। तैराना।

तिलंगा—(पु० हि०) अँगरेज़ी फ़ौज का देशी सिपाही। तैलंग देश का।

तिल—(पु० सं०) एक पौधा, जिसके बीज से तेल निकलता है।

तिला—(अ०) सोना। दवा का तेल।

तिलक—(पु० सं०) का। राज्याभिषेक।

तिलक कामोद—(पु० सं०) एक रागिनी।

तिलक मुद्रा—(पु० सं०) चंदन आदि का टीका।

तिलकुट—(पु० हि०) कूटे हुए तिल जो खाँड़ की चाशनी में पगे हों।

तिलमिलाना—(क्रि० हि०) चौंधियाना।

तिलहन—(पु० हि०) फ़सल के रूप में बोए जानेवाले पौधे जिनके बीजों से तेल निकलता है।

तिलांजली—(स्त्री० सं०) मृतक संस्कार का एक अंग।

तिलाक़—(स्त्री० अ०) स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध-विच्छेद।

तिलिस्म—(अ०) जादू।

तिल्ली—(स्त्री० हि०) पेट के भीतर का एक छोटा अवयव।

तिही—(फ़ा०) ख़ाली।

तिश्ना—(फ़ा०) प्यास ।
तिहरा—(वि० हि०) तीन परत किया हुआ ।
तिहराना—(क्रि० हि०) दो बार करके एक बार फिर और करना ।
तिहाई—(पु० हि०) तीसरा हिस्सा ।
तीक्ष्ण—(वि० सं०) तेज नोक या धारवाला ।
तीखुर—(पु० हि०) हलदी की जाति का एक पौधा ।
तीज—(स्त्री० हि०) तीसरी तिथि ।
तीतर—(पु० हि०) एक पक्षी ।
तीता—(वि० हि०) चरपरा ।
तीन—(वि० हि०) जो दो और एक हो ।
तीमारदारी—(स्त्री० फ़ा०) रोगियों की सम्हाल का काम ।
तीर—(पु० सं०) नदी का किनारा । पास । (फ़ा०) वाण । —गर=(फ़ा०) तीर बनाने वाला कारीगर । —वर्त्ती=(सं०) किनारे पर रहनेवाला । पड़ोसी । —स्थ =किनारे लगा हुआ । मरणासन्न व्यक्ति ।
तीरंदाज—(पु० फ़ा०) तीर चलानेवाला । तीरं-दाज़ी= तीर चलाने की विद्या या क्रिया ।
तीरगी—(फ़ा०) अंधेरा । कालापन । धुन्ध ।
तीर्थंकर—(पु० सं०) जैनियों के उपास्यदेव ।
तीर्थ—(पु० सं०) वह पवित्र या पुण्य स्थान जहाँ धर्मभाव से लोग पूजा या स्नानादि के लिये जाते हों।
तीव्र—(वि० सं०) तेज़ । न सहने योग्य ।
तीसरा—(वि० हि०) जिसके पहले दो और हों ।
तीसी—(स्त्री० हि०) अलसी नामक तेलहन ।
तुंग—(वि० सं०) ऊँचा । मुख्य ।
तुंद—(फ़ा०) तमोगुण । सख़्त मिज़ाज ।

तुंडिल—(वि० सं०) तोंदवाला ।

तुँबड़ी—(स्त्री० हि०) छोटा तूँबा ।

तुफ़ङ्ग—(फ़ा०) बन्दूक । —ची=बन्दूकची । बन्दूक-वाला ।

तुक—(पु० हि०) काफ़िया । —बन्दी=तुक जोड़ने का काम । तुक्कड़=भद्दी कविता बनानेवाला ।

तुख़्म—(पु० अ०) बीज ।

तुच्छ—(वि० सं०) हीन । खोटा । थोड़ा । शून्य । तुच्छातितुच्छ=(वि० सं०) छोटे से छोटा ।

तुड़वाना—(क्रि० हि०) तोड़ने का काम कराना ।

तुतलाना—(क्रि० हि०) साफ़ न बोलना ।

तुन—(पु० हि०) एक बहुत बड़ा पेड़ ।

तुनतुना—(अ०) तमूरे की आवाज़ ।

तुनुक—(फ़ा०) नाज़ुक ।

तुमुल—(पु० सं०) सेना का कोलाहल । गहरी मुठभेड़ ।

तुरंग—(वि० सं०) घोड़ा ।

तुरंत—(क्रि० हि०) फ़ौरन् ।

तुरई—(स्त्री० हि०) एक तरकारी ।

तुरकी—(वि० फ़ा०) तुर्क देश का ।

तुरबत—(अ०) कब्र ।

तुरपना—(क्रि० हि०) तुरपन की सिलाई करना ।

तुर्क—(पु० हि०) तुर्किस्तान का निवासी । तुर्किन=(फ़ा०) तुर्क जाति की स्त्री । मुसलमान स्त्री । तुर्की=तुर्किस्तान का ।

तुर्रा—(पु० अ०) घुँघराले बालों की लट जो माथे पर हो । (फ़ा०) पगड़ी का फुँदना ।

तुर्श—(फ़ा०) खट्टा । अप्रसन्न ।

तुलना—(क्रि० हि०) तौला जाना । तुल्य होना । समता ।

तुलबा—(अ०) तालिब का बहुवचन । विद्यार्थी-गण ।

तुलसी—(स्त्री० सं०) एक छोटा पौधा।

तुलसीदास—(पु०) एक प्रसिद्ध भक्त कवि जिन्होंने राम-चरितमानस बनाया।

तुला—(स्त्री० सं०) तराजू।

तुलादान—(पु० सं०) एक प्रकार का दान।

तुलूअ—(अ०) उदय होना।

तुषार—(पु० सं०) पाला। बरफ़।

तुहफ़ा—(अ०) भेंट। अनोखी वस्तु।

तुहमत—(स्त्री० अ०) झूठा कलंक।

तुहिन—(पु० सं०) कुहरा। बरफ़। ठंढक।

तूँबा—(पु० हि०) कडुआ गोल कद्दू।

तूँबी—(स्त्री० हि०) कडुआ गोल कद्दू।

तूत—(फ़ा०) शहतूत। एक फल।

तूती—(स्त्री० फ़ा०) तोते की जाति की चिड़िया।

तूदा—(पु० फ़ा०) ढेर। हदबंदी।

तूफ़ान—(पु० अ०) आँधी। तूफ़ानी=ऊधमी।

तूमड़ी—(स्त्री० हि०) तूँबी।

तूमार—(पु० अ०) बात का बतंगड़।

तूल—(अ०) लम्बाई।

तूलिका—(स्त्री० सं०) तसवीर बनानेवालों की कूँची।

तृण—(पु० सं०) घास।

तृतीय—(वि० सं०) तीसरा। तृतीया=तीज।

तृप्त—(वि० सं०) अघाया हुआ। खुश। तृप्ति=(सं०) संतोष।

तृषा—(स्त्री० सं०) प्यास। इच्छा। लालच। तृषित=प्यासा। तृष्णा=लालच। प्यास।

तेंदुआ—(पु० देश०) बिल्ली या चीते की जाति का एक बड़ा हिंसक पशु।

तेग़—(स्त्री० अ०) तलवार।

तेज—(पु० हि०) चमक। कांति। —स्वी=जिसमें तेज हो। प्रतापी। —स्विता=

प्रताप । तेजोमय=जिसमें खूब तेज हो ।

तेज़—(वि॰ फ़ा॰) जिसकी धार पैनी हो । महँगा ।

तेजपत्ता—(पु॰ हि॰) दारचीनी की जाति का एक पेड़ ।

तेजबल—(पु॰ हि॰) एक काँटे-दार जंगली पेड़ ।

तेज़ाब—(पु॰ फ़ा॰) किसी क्षार पदार्थ का अम्ल-सार ।

तेज़ी—(स्त्री॰ फ़ा॰) उग्रता । शीघ्रता ।

तेलगू—(स्त्री॰ हि॰) तैलंग देश की भाषा ।

तेल—(पु॰ हि॰) वह चिकना तरल पदार्थ जो बीजों, वन-स्पतियों आदि से निकलता या निकाला जाता है । (सं॰) तैल । —हन=वे बीज जिनसे तेल निकलता है । तेलिन=तेली की स्त्री । तेलिया=तेल के से रंगवाला। —कंद=एक प्रकार का कंदा। —सुहागा=एक प्रकार का सुहागा जो देखने में बहुत चिकना होता है । तेली= हिन्दुओं की एक जाति ।

तैनात—(वि॰ हि॰) नियत । तैनाती=नियुक्ति । मुकर्रंरी।

तैयार—(वि॰ अ॰) सब तरह से दुरुस्त या ठीक । तैयारी= प्रबन्ध की पूर्णता ।

तैरना—(क्रि॰ हि॰) उतरना । पैरना । तैराई=तैरने की क्रिया । तैराक=तैरनेवाला ।

तैलंग—(पु॰ हि॰) दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश ।

तैलाभ्यंग—(पु॰ सं॰) तेल की मालिश ।

तैश—(पु॰ अ॰) गुस्सा ।

तोंद—(स्त्री॰ हि॰) पेट का फुलाव ।

तोटक—(पु॰ सं॰) एक छंद ।

तोड़—(पु॰ हि॰) तोड़ने की क्रिया । दही का पानी । तेज़ धारा । —जोड़=दाँव-पेंच । —ना=टुकड़े करना ।

तोड़ा—(पु॰ हि॰) ख़ज़ाना । रुपये की थैली ।

तोतला—(वि० हि०) वह जो तुतलाकर बोलता हो। —ना साफ़ न बोलना।

तोता—(पु० फ़ा०) सूआ। शुक। —चश्म=(फ़ा०) तोते की तरह आँखें फेरनेवाला।

तोद—(अ०) तोंद। बड़ा पहाड़।

तोप—(स्त्री० तु०) गोला मारने का एक बहुत बड़ा हथियार। —ख़ाना=तोपघर। —ची =(अ०) तोप चलाने वाला।

तोवड़ा—(पु० हि०) घोड़ों को दाना खिलाने का थैला।

तोबा—(स्त्री० अ०) किसी अनुचित कार्य को भविष्य में न करने की प्रतिज्ञा।

तोमर—(पु० सं०) भाले की तरह का एक प्राचीन हथियार।

तोरण—(पु० सं०) किसी घर या नगर का बाहरी फाटक। बंदनवार।

तोला—(पु० हि०) एक तौल जो बारह माशे या छानबे रत्ती की होती है।

तोशक—(स्त्री० तु०) गुदगुदा बिछौना। हलका गद्दा।

तोशा—(पु० फ़ा०) साधारण खाने-पीने की चीज़ें।—खाना (फ़ा०) वह बड़ा कमरा जहाँ राजाओं और अमीरों के पहनने के बढ़िया कपड़े और गहने आदि रहते हों।

तोहफ़ा—(पु० अ०) सौगात। उपहार। बढ़िया। उत्तम।

तोहमत—(स्त्री० अ०) झूठा कलंक। तोहमती=झूठा अभियोग लगाने वाला।

तौक़—(पु० अ०) हँसुली के आकार का गले में पहनने का एक गहना।

तौक़ीर—(अ०) दूसरे की प्रतिष्ठा का ध्यान रखना।

तौफ़ीक़—(अ०) इच्छा। मुवाफ़िक करना।

तौर—(अ०) प्रकार। भाँति।

तौल—(पु० सं०) तराज़ू। वज़न। भार का मान। —ना=(क्रि० हि०) वज़न करना। तौलाई= तौलने की मजदूरी।

तौलिया—(स्त्री० हि०) मोटा अँगोछा जिससे स्नान आदि करने के बाद शरीर पोंछते हैं।
तौसीअ—(अ०) विस्तृत करना।
तौसीफ़—(अ०) प्रशंसा करना।
तौहीन—(अ०) नीचा दिखाना।
त्याग—(पु० सं०) किसी चीज़ पर से अपना हक़ हटा लेने अथवा उसे अपने पास से अलग करने का काम। —पत्र=इस्तीफा। त्यागी= जिसने सब कुछ त्याग दिया हो।
त्याज्य—(वि० सं०) त्यागने योग्य।
त्यों—(क्रि० हि०) उस प्रकार।
त्योरी—(स्त्री० हि०) भौं।
त्योहार—(पु० हि०) वह दिन जिसमें कोई बड़ा धार्मिक या जातीय उत्सव मनाया जाय। त्योहारी=वह धन जो किसी त्योहार के उपलक्ष में छोटों, लड़कों या नौकरों आदि को दिया जाता है।
त्राता—(पु० सं०) बचानेवाला।
त्रिकाल—(पु० सं०) तीनों काल—भूत, वर्तमान और भविष्य। तीनों समय—प्रातः, मध्याह्न और सायं।
त्रिताप—(पु० सं०) गरमी। तेज। दैहिक, दैविक और भौतिक कष्ट।
त्रिदोष—(पु० सं०) वात, पित्त और कफ ये तीनों दोष।
त्रिफला—(पु० सं०) आँवले, हड़ और बहेड़े का समूह।
त्रिवली—(स्त्री० सं०) तीन बल जो पेट पर पड़ते हैं।
त्रिलोक—(पु० सं०) स्वर्ग, मर्त्य और पाताल।
त्रिवेणी—(स्त्री० सं०) गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम-स्थान जो प्रयाग में है।
त्रिशूल—(पु० सं०) एक प्रकार का हथियार जिसके सिरेपर तीन फल होते हैं।

थ—हिन्दी-वर्णमाला का सत्रहवाँ और तवर्ग का दूसरा अक्षर।

थकना—(क्रि० हि०) मिहनत करते-करते हार जाना। थकान=थकावट। थकावट =शिथिलता। थकित= थका हुआ।

थन—(पु० हि०) गाय, भैंस, बकरी इत्यादि चौपायों का स्तन।

थपकी—(स्त्री० हि०) हाथ से धीरे-धीरे ठोंकना।

थपुआ—(पु० हि०) खपड़ा।

थमना—(क्रि० हि०) रुकना। ठहरना।

थरथराना—(क्रि० हि०) डर के मारे काँपना।

थरथराहट—(स्त्री० हि०) कँप-कँपी।

थर्मामीटर—(पु० अं०) सरदी गरमी नापने का यंत्र।

थर्राना—(क्रि० हि०) डर के मारे काँपना।

थल—(पु० हि०) जगह।

थहाना—(क्रि० हि०) गहराई का पता लगाना।

था—(क्रि० हि०) 'है' शब्द का भूतकाल। रहा।

थॉट—(अं०) विचार।

थाती—(स्त्री० हि०) धरोहर।

थान—(पु० हि०) जगह। डेरा। पशुओं के बाँधे जाने की जगह।

थाना—(पु० हि०) टिकने या बैठने का स्थान। पुलिस की बड़ी चौकी।—दार=थाने का अफ़सर। —दारी= थानेदार का पद या कार्य।

थाप—(स्त्री० हि०) थपकी। प्रतिष्ठा। —ना=स्थापित करना। जमाना। किसी गीली सामग्री (मिट्टी गोबर आदि) को हाथ या साँचे से पीट अथवा दबाकर कुछ बनाना।

थामना—(क्रि० हि०) रोकना।

थाला—(पु० हि०) वह घेरा या गड्ढा जिसके भीतर पौधा लगाया जाता है।

थाली—(स्त्री० हि०) बड़ी तश्तरी।

थिएटर—(पु० अं०) रंगभूमि। नाटक का तमाशा।

थियरी (थ्योरी)—(अं०) सिद्धान्त।

थियोसोफिस्ट—(पु० अं०) थियोसोफी के सिद्धान्तों को माननेवाला।

थियोसोफी—(स्त्री० अं०) ब्रह्मविद्या।

थिरकना—(क्रि० हि०) ठुमुक ठुमुक कर नाचना।

थुक्का फज़ीहत—(स्त्री० हि०) निन्दा और तिरस्कार।

थू—(अव्य० अनु०) थूकने का शब्द। घृणा और तिरस्कार-सूचक शब्द।

थूक—(पु० हि०) लार। थूकना =मुँह से थूक निकालना।

थूनी—(स्त्री० हि०) थम। सहारे का खंभा।

थूवा—(पु० हि०) मिट्टी आदि के ढेर का बना हुआ टीला।

थूहर—(हि०) सेंहुड़।

थेई थेई—(वि० अनु०) ताल-सूचक नाच का शब्द और मुद्रा।

थोक—(पु० हि०) ढेर। झुंड। —दार =इकट्ठा माल बेचने-वाला व्यापारी।

थोड़ा—(वि० हि०) कम। ज़रा-सा।

थोथा—(वि० देश०) खोखला। (स्त्री०) थोथी =निस्सार।

थोपना—(क्रि० हि०) छोपना। मिथ्या अपराध लगाना।

थैला—(पु० हि०) बड़ा बटुआ। (स्त्री०) थैली। —दार = रोकड़िया। खज़ान्ची।

थ्रू—(अं०) द्वारा। मारफ़त।

द—हिन्दी-वर्णमाला में अठारहवाँ व्यंजन और तवर्ग का तीसरा वर्ण।
दंग—(वि० फ़ा०) चकित। विस्मित।
दंगल—(पु० फ़ा०) पहलवानों की कुश्ती। अखाड़ा।
दंगा—(पु० हि०) झगड़ा। उपद्रव।
दंड—(पु० सं०) सज़ा। डंडा। —नीति=(स्त्री० सं०) दंड देकर अर्थात् पीड़ित करके शासन में रखने की नीति। —नीय=(वि० सं०) दंड देने योग्य। —प्रणाम=(सं०) भूमि में डंडे के समान पड़कर प्रणाम करने की मुद्रा। सादर अभिवादन। —वत्=(पु० सं०) पृथ्वी पर लेटकर किया हुआ नमस्कार। साष्टांग प्रणाम। —विधि=(सं०) जुर्म और सजा का कानून। दंडी=दंड धारण करनेवाला व्यक्ति। वह संन्यासी जो दंड और कमंडलु धारण करे।
दंत—(पु० सं०) दाँत। —कथा=जनश्रुति।
दंदान—(फ़ा०) दाँत। दंदानेदार=जिसमें दाँत क तरह निकले हुए कंगूरों की पंक्ति हो। —दंदानेसाज़=दाँत बनानेवाला।
दंभ—(पु० सं०) पाखंड। अभिमान। दंभी=पाखंडी।
दंश—(पु० सं०) वह घाव जो दाँत काटने से हुआ हो। डाँस।
दक़ियानूस—(अ०) पुरातन पन्थी। अन्ध-विश्वासी।
दक़ीक़—(अ०) कठिन। मुश्किल।
दक़ीक़ा—(पु० अ०) कोई बारीक बात। उपाय।
दक़्क़ाक़—(अ०) आटा पीसनेवाला। बहुत चतुर।
दक्खिन—(पु० हि०) उत्तर के सामने की दिशा। दक्खिनी =दक्खिन का।

दक्ष—(वि० सं०) चतुर।
दक्षिण—(वि० सं०) दाहना। दक्षिण दिशा।
दक्षिणा—(स्त्री० सं०) वह दान जो किसी शुभ कार्य आदि के समय ब्राह्मणों को दिया जाय।
दक्षिणी—(स्त्री० हिं०) दक्षिण देश की भाषा या निवासी।
दख़ल—(पु० अ०) अधिकार। —दिहानी=क़बज़ा दिलवाना। —नामा=वह सरकारी आज्ञा-पत्र जिसमें किसी व्यक्ति के लिये किसी पदार्थ पर अधिकार कर लेने की आज्ञा हो। दख़ीलकार=वह असामी जिसने किसी ज़मींदार के खेत या ज़मीन पर कम से कम बारह वर्ष तक अपना दख़ल रक्खा हो। दख़ीलकारी=वह ज़मीन जिस पर दख़ीलकार का अधिकार हो।
दगदग—(पु० अ०) डर। संदेह।
दग़लफ़सल—(पु० अ०) धोखा। फरेब।
दग़ा—(स्त्री० अ०) कपट। धोखा। —दार=(वि० फ़ा०) धोखेबाज़। —बाज़=(वि० फ़ा०) छली। धोखा देनेवाला। —बाज़ी=(फ़ा०) छल। धोखा।
दग्ध—(वि० सं०) जला या जलाया हुआ। दुःखित।
दज्जाल—(पु० अ०) झूठा। बेईमान।
दतुवन—(स्त्री० हिं०) दातुन।
दत्तक—(पु० सं०) गोद लिया हुआ लड़का।
दत्तचित्त=(वि० सं०) लवलीन।
ददोरा—(पु० हिं०) चकत्ता।
दधि—(पु० सं०) दही।
दपट—(स्त्री० हिं०) घुड़की। —ना=डाँटना। घुड़कना।
दफ़—(फ़ा०) ढप। एक बाजा।
दफ़्ती—(स्त्री० अ०) गत्ता।
दफ़न—(पु० अ०) मुरदे को ज़मीन में गाड़ने की क्रिया।

दफ़ा—(स्त्री० अ०) वार। किसी कानूनी किताब का वह एक अंश जिसमें किसी एक अपराध के सम्बन्ध में व्यवस्था हो। ऐक्ट। धारा। —दार=(अ०+फ़ा०) फ़ौज का वह कर्मचारी जिसकी अधीनता में कुछ सिपाही हों।

दफ़ीना—(पु० अ०) गड़ा हुआ धन या ख़ज़ाना।

दफ़्तर—(पु०फ़ा०) कार्यालय। आफ़िस। दफ़्तरी=जिल्द-साज़।

दबंग—(वि० हि०) प्रभाव-शाली।

दबक—(स्त्री० हि०) छिपना। —ना=(हि०) डर के मारे छिपना। दबकाना=(हि०) छिपाना। डाँटना। दबकी =(स्त्री० देश०) सुराही की तरह का मिट्टी का एक बर्तन जिसमें पानी रखकर चरवाहे और खेतिहर खेतपर ले जाया करते हैं।

दबदबा—(पु० अ०) रोबदाब। आतंक।

दबना—(क्रि० हि०) बोझ के नीचे पड़ना। दाब में आना। दबवाना=दबाने का काम दूसरे से करवाना। दबाना =(हि०) ऊपर से भार रखना। मजबूर करना। दबाव=(हि०) प्रभाव। ज़ोर।

दबिला—(पु० देश०) हलवाइयों का एक औज़ार।

दबिस्तां—(फ़ा०) शिक्षालय। मदर्सा।

दबीज़—(वि० अ०) मोटा। गाढ़ा।

दबीर—(पु० फ़ा०) लिखने-वाला। मुंशी।

दबोचना—(क्रि० हि०) किसी को सहसा पकड़कर दबा लेना।

दम—(फ़ा०) जान। प्राण। —कल=यंत्र। —खम=(फ़ा०) मज़बूती। प्राण। —चूल्हा=एक प्रकार का

लोहे का चूल्हा। —दार=(फ़ा०) मज़बूत। —बाज़=फुसलानेवाला। दग़ाबाज़। फ़रेबी।

दमक—(स्त्री० हिं०) चमक। आभा। दमकना=चमकना।

दमड़ी—(स्त्री० हिं०) पैसे का आठवाँ भाग।

दमदमा—(पु० फ़ा०) मोरचा। नक्क़ारा। ढोल। शोहरत। फ़रेब। चापलूसी।

दमन—(पु० सं०) दबाना। रोकना। —शील=दमन करनेवाला। दमनीय=दमन होने के योग्य। जो दबाया जा सके।

दमा—(पु० फ़ा०) साँस का एक रोग।

दमाद—(पु० हिं०) कन्या का पति। जामाता।

दमामा—(पु० फ़ा०) नगारा।

दया—(स्त्री० सं०) करुणा। रहम। —निधान=दया का ख़ज़ाना। बहुत दयालु पुरुष। —पात्र=(सं०) वह जो दया के योग्य हो। —मय=(सं०) दयालु। दयार्द्र=दया से भीगा हुआ। दयापूर्ण। —लु=(वि० सं०) बहुत दया करनेवाला। दयावान्। दयालुता=रहमदिली। दयावंत=दयालु। —वती=दया करनेवाली। —वान्=दयालु। —वीर=वह जो दया करने में वीर हो। —शील=दयालु। कृपालु। —सागर=अत्यंत दयालु पुरुष।

दयानत—(स्त्री० अ०) ईमान। —दार=(अ०) ईमानदार। —दारी=(अ०) ईमानदारी।

दयार—(अ०) प्रांत। प्रदेश।

दर—(पु० सं०) शंख। दरार। गुफ़ा। (फ़ा०) अन्दर। बीच।

दरकना—(क्रि० हिं०) चिरना। विदीर्ण होना।

दरकार—(वि० फ़ा०) आवश्यक। ज़रूरी।

दरख़ास्त—(स्त्री० फ़ा०) निवेदन।

दरख़्त—(पु० फ़ा०) पेड़।

दरगाह—(स्त्री० फ़ा०) चौखट। कचहरी। मक़बरा। समाधि।

दर्ज—(अ०) किसी चीज़ का किसी चीज़ में दाखिल करना। रजिस्टर में लिखना।

दर्जा—(अ०) कक्षा। रुतबा। श्रेणी।

दरगुज़र—(वि० फ़ा०) अलग। वंचित।

दरद—(पु० हि०) पीड़ा। कष्ट। दया।

दरदर—(फ़ा०) द्वार-द्वार। जगह-जगह।

दरपेश—(वि० फ़ा०) आगे। सामने।

दरबा—(पु० हि०) काठ का खानेदार संदूक जिसके एक खाने में एक-एक पक्षी रक्खा जाता है।

दरबान—(पु० हि०) द्वारपाल। दरबानी=दरबान का काम।

दरबार—(पु० फ़ा०) राजसभा। कचहरी। —दारी=दरबार में हाजिरी। दरबारी=राजसभा का सभासद।

दरमन—(पु० फ़ा०) इलाज। औषध।

दरमाहा—(पु० फ़ा०) मासिक वेतन।

दरमियान—(पु० फ़ा०) मध्य। बीच। दरमियानी=बीच का। मध्य का।

दरयाफ़्त—(फ़ा०) पूछ-ताछ। खोज।

दरवाज़ा—(पु० फ़ा०) द्वार। मुहाना। किवाड़।

दरवेश—(पु० फ़ा०) फ़क़ीर। साधू।

दर्स—(अ०) पढ़ना। शिक्षा।

दरसनी हुंडी—(स्त्री० हि०) वह हुंडी जिसे दिखाने पर तत्काल रुपया मिल जाय।

दरसाना—(क्रि० हि०) दिखलाना।

दरहम—(फ़ा०) रंजीदा । ख़फ़ा ।
दराई—(स्त्री० हि०) दलने की मज़दूरी ।
दराज़—(वि० फ़ा०) बड़ा । भारी । लम्बा । ख़ाना । वर ।
दरार—(स्त्री० हि०) चीर ।
दरिंदा—(पु० फ़ा०) मांस-भक्षक वन-जन्तु ।
दरिद्र—(वि० सं०) निर्धन । कंगाल । —ता=कंगाली । निर्धनता । दरिद्री=कंगाल । निर्धन ।
दरिया—(फ़ा०) नदी । दरियाई=नदी सम्बन्धी । नदी में रहनेवाला । दरियाई घोड़ा =गैंडे की तरह का एक जानवर । दरियाई नारियल= एक प्रकार का नारियल । —दिल=(फ़ा०) उदार । दानी । —दिली=(फ़ा०) उदारता । —बुर्द=(फ़ा०) वह भूमि जिसे कोई नदी काटकर खराब कर दे ।
दरियाफ़्—(वि० फ़ा०) मालूम ।
दरी—(स्त्री० सं०) गुफा । खोह । मोटे सूतों का बुना हुआ मोटे दल का बिछौना ।
दरीचा—(पु० फ़ा०) खिड़की । झरोखा । छोटा द्वार । दरीची=(स्त्री० हि०) खिड़की । खिड़की के पास बैठने की जगह ।
दरीबा—(पु० फ़ा०) पान का बाज़ार । बाज़ार ।
दरून—(फ़ा०) अन्दर । दरमियान ।
दरेग़—(पु० अ०) कमी । कसर । (फ़ा०) अफ़सोस ।
दरोग़—(पु० अ०) झूठ । असत्य । —हलफ़ी=(स्त्री० अ०) सच बोलने की क़सम खाकर भी झूठ बोलनेवाला ।
दर्ज—(स्त्री० हि०) नोंधना । इन्ट्री । लिख लेना ।
दर्जन—(पु० हि०) बारह का समूह ।
दर्जा—(पु० अ०) श्रेणी । वर्ग ।

दर्जिन—(स्त्री० हि०) दर्जी की स्त्री।
दर्जी—(पु० फ़ा०) कपड़ा सीनेवाला।
दर्द--(पु० फ़ा०) पीड़ा। व्यथा। —मंद=(फ़ा०) पीड़ित।
दर्प—(पु० सं०) घमंड। अभिमान।
दर्पण—(पु० सं०) आईना।
दर्मियान—(पु० फ़ा०) मध्य। बीच। दर्मियानी=(पु०) बीच का। मध्य का।
दर्रा—(पु० फ़ा०) पहाड़ी रास्ता।
दर्शक—(पु० सं०) देखनेवाला।
दर्हम—(फ़ा०) मिला-जुला। रंजीदा।
दर्शन—(पु० सं०) देखना।
दल—(पु० सं०) सेना। मंडली। गुट्ट। तह। परत।—दार= जिसका दल मोटा हो। —बल=(पु० सं०) फ़ौज। —बादल= (हि०) बादलों का समूह। भारी सेना। बड़ा भारी खेमा।

दलदल—(स्त्री० हि०) कीचड़।
दलना—(क्रि० हि०) रौंदना। कुचलना।
दलाल—(पु० अ०) वह व्यक्ति जो सौदा मोल लेने या बेचने में सहायता दे। (अं०) ब्रोकर। दलाली=(फ़ा०) दलाल का कमीशन तथा काम।
दलित—(वि० सं०) मसला हुआ। दबाया हुआ।
दलील—(स्त्री० अ०) बहस। तर्क।
दलेल—(स्त्री० हि०) वह क़वायद जो सज़ा की तरह पर ली जाय।
दवात—(स्त्री० हि०) लिखने की स्याही रखने का बरतन। मसिपात्र।
दवाम—(अ०) हमेशगी। सदैवता। दवामी=स्थायी। दवामी बन्दोबस्त=(फ़ा०) ज़मीन का वह बन्दोबस्त जिसमें सरकारी मालगुज़ारी

सब दिन के लिये मुक़र्रर कर दी जाय।
दश्त—(अ०) जङ्गल। बन। बियाबान।
दशम—(वि० सं०) दसवाँ।
दशमलव—(पु० सं०) वह भिन्न जिसके हर में दस या उसका कोई घात हो।
दशमांश—(पु० सं०) दसवाँ हिस्सा।
दशमी—(स्त्री० सं०) दसवीं तिथि।
दशहरा—(पु० सं०) ज्येष्ठ शुक्ला दशमी तिथि जिसे गंगा दशहरा भी कहते हैं। विजया-दशमी।
दशा—(स्त्री० सं०) अवस्था। हालत।
दस—(वि० हि०) पाँच का दूना।
दसौंधी—(पु० हि०) भट्ट।
दस्त—(पु० फ़ा०) हाथ। पतला पाख़ाना। दस्तक=(स्त्री० फ़ा०) बुलाने के लिये दरवाजा खटखटाना। दस्तंदाजी—(स्त्री०फ़ा०) दख़ल। हस्तक्षेप। —कार=हाथ का कारीगर। —कारी=शिल्प। —ख़त=हस्ताक्षर। —गीर =सहारा देनेवाला। सहायक। —पनाह=(फ़ा०) चिमटा। —बरदार=(वि० फ़ा०) जो किसी काम से हाथ हटा ले।—बरदारी=(फ़ा०) त्याग। त्यागपत्र। —बस्ता =(फ़ा०) हाथ जोड़े हुये। प्रस्तुत। मुस्तैद। —बाला =(फ़ा०)ग़ालिब। मुअज़्ज़िज़। —याब=(वि० फ़ा०) प्राप्त। हस्तगत।
दस्तरस—(फ़ा०) तवङ्गरी। कुदरत। पहुँच।
दस्ता—(पु० हि०) मूठ। बेंट। सिपाहियों का छोटा दल। कागज के चौबीस तावों की गड्डी। फूलों का गुच्छा।
दस्ताना—(पु० फ़ा०) हाथ का मोज़ा।
दस्तापा—(फ़ा०) कोशिश। तलाश।
दस्तार—(फ़ा०) पगड़ी।

दस्तारख़्वान—(फ़ा॰) वह चादर जिस पर खाना रखकर खाते हैं।

दस्तावर—(वि॰ फ़ा) जिससे दस्त आवे। विरेचक।

दस्तावेज़—(स्त्री॰ फ़ा॰) वह काग़ज़ जिसमें दो या कई आदमियों के बीच के व्यवहार की बातें लिखी हों और जिस पर व्यवहार करनेवालों के दस्तख़त हों। —दस्तावेज़ी =दस्तावेज़ सम्बन्धी।

दस्ती—(वि॰ फ़ा॰) हाथ का। छोटी मूठ।

दस्तूर—(पु॰ फ़ा॰) रीति। रस्म। नियम। दस्तूरी= हक़। कमीशन। (अ॰) रुख़-सत। इजाज़त।

दह—(पु॰ हि॰) नदी के भीतर का गड्ढा।

दहक—(स्त्री॰ हि॰) धधक। ज्वाला।

दहक़ान—(अ॰) गँवार।

दहन—(अ॰) मुँह।

दहल—(स्त्री॰ हि॰) डर से एक बारगी काँप उठना। —ना=डर से चौंकना।

दहला—(पु॰ हि॰) ताश का वह पत्ता जिसमें दस बूटियाँ हों।

दहलीज़—(स्त्री॰ फ़ा॰) देहली। द्वार के चौखट की नीचेवाली लकड़ी जो ज़मीन पर रहती है।

दहशत—(स्त्री॰ फ़ा॰) डर। ख़ौफ़।

दहाई—(स्त्री॰ हि॰) दस का मान या भाव।

दहाड़—(स्त्री॰ अनु॰) गरज। —ना=(अनु॰) गरजना। गुर्राना।

दहाना—(पु॰ फा॰) चौड़ा मुँह। द्वार। नदी आदि का मुहाना।

दही—(पु॰ हि॰) खटाई के द्वारा जमाया हुआ दूध।

दहेंड़ी—(स्त्री॰ हि॰) दही रखने का मिट्टी का बरतन।

दहेज—(पु॰ हि॰) वह धन और सामान जो विवाह के समय कन्या-पक्ष की ओर से वर-

पत्त को दिया जाता है।
दायजा।

दाँ—(फ़ा०) वाला।

दाँगी—(स्त्री० हि०) वह लकड़ी जो जुलाहों की कंघी में लगी रहती है।

दाँत—(पु० हि०) दंत। —ना =(क्रि० हि०) दाँतवाला होना। दाँता=(हि०) दाँत के आकार का कँगूरा।

दांपत्य—(वि० सं०) स्त्री-पुरुष संबंधी।

दांभिक—(वि० सं०) पाखंडी। धोखेबाज़।

दाइमी—(अ०) हमेशा। सदैव का।

दाऊदी—(पु० हि०) एक प्रकार का गेहूँ।

दाक्षिण्य—(पु० सं०) अनुकूलता। प्रसन्नता। उदारता।

दाख—(स्त्री० हि०) अंगूर। मुनक्का। किशमिश।

दाख़िल—(वि० फ़ा०) घुसा हुआ। प्रविष्ट। —ख़ारिज =(पु० फ़ा०) किसी सरकारी काग़ज़ पर से किसी जायदाद के हक़दार का नाम काटकर उसपर उसके वारिस या किसी दूसरे हक़दार का नाम लिखने का काम। —दफ़्तर=(वि० फ़ा०) दफ़्तर में इस प्रकार डाल रक्खा हुआ (काग़ज़) जिस पर कुछ विचार न किया जाय। दाख़िला=(पु०फ़ा०)प्रवेश। पैठ।

दाग—(पु० हि०) मुर्दा जलाने की क्रिया। —ना=जलाना।

दाग़—(पु० फ़ा०) धब्बा। निशान। —दार=(वि० फ़ा०)जिस पर दाग लगा हो। धब्बेदार। —बेल=(हि०) भूमि पर फावड़े वा कुदाल से बनाए हुए चिह्न। —दागी= जिस पर दाग लगा हो।

दाड़िम—(पु० सं०) अनार।

दाढ़—(स्त्री० हि०) जबड़े के भीतर के मोटे चौड़े दाँत॥

दाढ़ी—(स्त्री० हि०) ठोढ़ी। ठुड्डी और दाढ़ पर के बाल। —

जार = वह जिसकी दाढ़ी जली हो। गाली।

दाता—(पु० सं०) देने वाला। दातार=दाता। देनेवाला।

दातुन—(स्त्री० हि०) दतुवन। दातून। दातौन।

दाद—(स्त्री० हि०) एक चर्मरोग।

दादनी—(स्त्री० फा०) ऋण। क़र्ज़।

दादा—(पु० हि०) पितामह। आजा। बड़ा भाई।

दादी—(स्त्री० हि०) पिता की माता। दादा की स्त्री। (फ़ा०) फरियादी।

दादूपंथी—(पु० हि०) दादू नामक साधु का अनुयायी।

दानव—(पु० सं०) असुर। राक्षस। दानवी=राक्षसी।

दानवीर—(पु० सं०) दान देने में साहसी पुरुष।

दाना—(पु० हि०) अनाज का एक बीज। अन्न का एक कण। (फ़ा०) बुद्धिमान। —ई=(फ़ा०) अक़्लमंदी। बुद्धि। अक़्ल।

दानाचारा—(पु० हि०) खाना-पीना। आहार। दाना-पानी =खान-पान।

दानाध्यक्ष—(पु० सं०) राजाओं के यहाँ दान का प्रबंध करने-वाला कर्मचारी।

दानिश—(स्त्री० फ़ा०) समझ। बुद्धि। राय। सम्मति। दानिस्ता=(फ़ा०) जानकर। जाना हुआ।

दानेदार—(वि० फ़ा०) जिसमें दाने हों। रवादार।

दाम—(फ़ा०) जाल। फंदा। मूल्य। क़ीमत।

दामन—(पु० फ़ा०) कोट, कुर्ते इत्यादि का निचला भाग। पल्ला। —गीर=(फ़ा०) पल्ले पड़नेवाला। पीछे पड़ने वाला।

दामाद—(पु० हि०) पुत्री का पति। जमाई।

दामिनी—(स्त्री० सं०) बिजली।

दायक—(पु० सं०) देनेवाला। दाता।

दायमुलहब्स—(पु० अ०) जीवन भर के लिये क़ैद। कालेपानी की सज़ा।
दायर—(वि० फ़ा०) फिरता हुआ। चलता। जारी।
दायरा—(पु० अ०) गोल घेरा। मंडल।
दायाँ—(वि० हि०) दाहिना।
दायित्व—(पु० सं०) ज़िम्मेदारी। जवाबदेही।
दायिनी—(स्त्री० सं०) देनेवाली।
दायी—(वि० हि०) देनेवाला।
दायें—(क्रि० वि० हि०) दाहिनी ओर को।
दार—(अ०) सूली। फाँसी का तख्ता। (फ़ा०) रखनेवाला। वाला।
दारचीनी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का तज जो दक्षिण भारत, सिंहल और टेनासरिम में होता है।
दारमदार—(पु० फ़ा०) आश्रय। ठहराव। कार्य का भार।
दारा—(स्त्री० हि०) स्त्री। पत्नी।
—ई=(फ़ा०) हुकूमत। खुदाई।
दारुण—(वि० सं०) भयंकर। भीषण। कठिन।
दारुस्सलाम—(अ०) स्वर्ग।
दारुस्सल्तनत—(अ०) राजधानी।
दारुल्ख़िलाफ़त—(अ०) राजधानी।
दारुलफ़ना—(अ०) दुनिया। जगत।
दारुल्मुल्क—(अ०) राजधानी।
दारुहल्दी—(स्त्री० हि०) एक झाड़।
दारू—(स्त्री० फ़ा०) दवा। औषध।
दारोग़ा—(पु० फ़ा०) निगरानी रखने वाला अफ़सर।
दार्शनिक—(वि० सं०) दर्शन जानने वाला। दर्शन-शास्त्र सम्बन्धी।
दाल—(स्त्री० हि०) दली हुई अरहर, मूँग आदि। —मोठ =घी, तेल आदि में नमक, मिर्च के साथ तली हुई दाल

जो नमकीन की तरह खाई जाती है।

दालान—(पु० फ़ा०) बरामदा। ओसारा।

दाँव—(पु० हि०) बार। दफ़ा। पारी। बारी।

दावत—(स्त्री० फ़ा०) ज्योनार। भोज। न्योता।

दावा—(स्त्री० हि०) किसी वस्तु पर अधिकार प्रकट करने का कार्य। —गीर=दावा करने वाला। —दार=(फ़ा) दावा करनेवाला।

दावाग्नि—(स्त्री० सं०) वन में लगनेवाली आग।

दावात—(स्त्री० हि०) स्याही रखने का बरतन।

दावानल—(पु० सं०) वनाग्नि। वन की आग।

दाश्त—(स्त्री० फ़ा०) परवरिश। पालन-पोषण।

दास—(पु० सं०) सेवक। नौकर। —ता=नौकरी। —त्व=दास का काम। दासानुदास=सेवक का सेवक। अत्यन्त तुच्छ सेवक। दासी=(सं०) सेवा करनेवाली स्त्री। टहलनी।

दास्तान—(स्त्री० फ़ा०) हाल। कथा। बयान।

दाह—(पु० सं०) मुर्दा फूँकने का कर्म। —क=(सं०) जलाने वाला।

दाहिना—(वि० हि०) बायाँ का उलटा। दाहिने हाथ की ओर।

दिअली—(स्त्री० हि०) मिट्टी का बना हुआ बहुत छोटा दिया।

दिक़—(वि० अ०) जिसे बहुत कष्ट पहुँचाया गया हो। हैरान। तंग करना। क्षय रोग।

दिक़्क़त—(स्त्री० अ०) परेशानी। तकलीफ़। —तलब=मुश्किल।

दिखलवाना—(क्रि० हि०) दिखलाने का काम दूसरे से कराना।

दिखलाना—(क्रि० हि०) दिखाना। दृष्टिगोचर कराना।

दिखाऊ—(वि० हि०) बनावटी।
दिखाव—(पु० हि०) दृश्य। —टी=बनावटी। दिखावा =आडंबर। ऊपरी तड़क-भड़क।
दिगर—(फ़ा०) अन्य। दूसरा।
दिग्दर्शक यंत्र—(पु० सं०) कुतुबनुमा। कंपास।
दिग्दर्शन—(पु० सं०) नमूना। जानकारी।
दिग्विजय—(स्त्री० सं०) अपनी वीरता और गुणों द्वारा देश-देशान्तरों में अपनी प्रधानता अथवा महत्त्व स्थापित करना। दिग्विजयी=जिसने दिग्विजय किया हो।
दिन—(पु० सं०) सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक का समय। दिवस। —चर्या=दिन भर का काम-धंधा।
दिनाई—(स्त्री० हि०) एक रोग।
दिमाग़—(पु० अ०) मस्तिष्क। भेजा। बुद्धि। —दार= (अ०+फ़ा०) बहुत बड़ा समझदार। घमंडी।
दिया—(पु० हि०) चिराग़। —बत्ती=सन्ध्या के समय दिया जलाने का काम। —सलाई=लकड़ी की वह तीली या सलाई जो रगड़ने से जल उठती है। दियारा (पु० फ़ा०) नदी के किनारे की वह ज़मीन जो नदी के हट जाने पर निकल आती है। कछार।
दिरम—(पु० हि०) मिश्र देश का चाँदी का एक सिक्का। साढ़े तीन माशे की एक तौल।
दिल—(पु० फ़ा०) कलेजा। हृदय। —आरा=(फ़ा०) माशूक़। प्रेमिका। —आराम (फ़ा०) माशूक़। प्रेमिका। —गीर=(फ़ा०) उदास। दुखी। —गीरी=(फ़ा०) उदासी। रंज। दुख। —चला=साहसी। दिलेर। वीर। दानी। पागल। —चस्प =(फ़ा०) जिसमें जी लगे। मनोहर। —चस्पी=(फ़ा०) दिल का लगना। मनोरंजन।

—जमई=(फ़ा०) इतमीनान। तसल्ली। —जला=(वि० फ़ा०) अत्यन्त दुखी। —दार=(फ़ा०) उदार। रसिक। प्रेमी। —पसन्द=(फ़ा०) मनोहर। जो भला मालूम हो। —पिज़ीर=(फ़ा०) दिल-पसंद। —फ़िगार=(फ़ा०) ज़ख़मी दिल। आशिक़। —वर=प्यारा। —बस्ता=(फ़ा०) दिल लगा हुआ। —बस्तगी (फ़ा०) दिल का लगना। —बहार=(फ़ा०) खशख़ाशी रंग का एक भेद। —रुबा=प्यारा। —वाला=उदार। दाता। साहसी। —बाज़ =(फ़ा०) चालाक। निडर। दिलावर=शूर। बहादुर। साहसी। दिलावरी=(फ़ा०) बहादुरी। साहस। दिलासा =(फ़ा०) तसल्ली। ढाढ़स। दिली=(फ़ा०) हार्दिक। हृदय या दिल-सम्बन्धी। जिगरी। दिलेर=(फ़ा०) बहादुर। साहसी। दिलेराना =(फ़ा०) दिलेर के मानिन्द। वीरतापूर्वक। दिलेरी=(फ़ा०) बहादुरी। साहस। दिल्लगी=मज़ाक। परिहास। हँसी-ठट्ठा। दिल्लगीबाज़=हँसी या दिल्लगी करनेवाला। मसख़रा। दिल्लगीबाज़ी=(हि०) दिल्लगी करने का काम।

दिवस—(पु० सं०) दिन। रोज़।

दिवाला—(पु० हि०) क़र्ज़ न चुका सकना। दिवालिया=जिसने दिवाला निकाला हो।

दिव्य—(वि० सं०) स्वर्गीय। अलौकिक। चमकीला। बहुत अच्छा। खूब सुन्दर।

दिशा—(स्त्री० सं०) ओर। तरफ़। —भ्रम=दिशा भूल जाना। —शूल=किस दिन किस तरफ़ नहीं जाना चाहिये, इसका नियम।

दिसंबर—(पु० अं०) अँगरेज़ी साल का बारहवाँ या अख़ीरी महीना।

दिसावर—(पु० हि०) दूसरा

देश। परदेश। दिसावरी= बाहरी।

दिहंदा—(वि० फ़ा०) दाता। देनेवाला।

दिहात—(फ़ा०) ग्राम-समूह।

दिड्डुला—(पु० देश०) एक प्रकार का धान।

दीगर—(फ़ा०) और। दूसरा।

दीक्षा—(स्त्री० सं०) मंत्र की शिक्षा, जिसे गुरु दे और शिष्य ग्रहण करे। दीक्षित=जिसने गुरु से दीक्षा ली हो।

दीठबंद—(पु० हि०) नजरबंद। जादू।

दीदार—(पु० फा०) दर्शन।

दीदी—(स्त्री० हि०) बड़ी बहिन।

दीन—(वि० सं०) गरीब। दरिद्र। (अ०) पंथ। मज़हब। दीनता=(सं०) गरीबी। कातरता। —दयालु=दीनों पर दया करने वाला। —दार=(अ०) अपने धर्म पर विश्वास रखने वाला। —बंधु=दुखियों का सहायक।

दीनार—(पु० अ०) मोहर।

दीप—(पु० सं०) चिराग़। दीया। —क=(सं०) दीया। चिराग़। एक रागिनी। —शिखा=चिराग़ की लौ। दीपावलि=दीपों की कतार। दीवाली।

दीप्ति—(स्त्री० सं०) उजाला। चमक। शोभा।

दीबाचा—(फ़ा०) भूमिका।

दीमक—(स्त्री० फ़ा०) चींटी की तरह का एक छोटा कीड़ा।

दीर्घ—(वि० सं०) लंबा। बड़ा। दीर्घायु=(सं०) बहुत दिनों तक जीने वाला।

दीवट—(स्त्री० हि०) चिराग़दान।

दीवान—(पु० अ०) राजमंत्री। दरबार। —गी=(फ़ा०) पागलपन। —आम=(अ०) आम दरबार। —खाना=(फ़ा०) बैठक। —खालसा=(अ०) वह अधिकारी जिसके पास राजा या बादशाह की मुहर रहती है। —खास

दरबार। वह जगह या मकान जहाँ खास दरबार होता हो।

दीवाना—(वि० फ़ा०) पागल। —पन=पागलपन। दीवानी =(फ़ा०) दीवान का ओहदा। पगली।

दीवार—(स्त्री० फ़ा०) भीत। —गीर=(फ़ा०) दिया आदि रखने का आधार जो दीवार में लगाया जाता है।

दीवाली—(स्त्री० हि०) कार्तिक की अमावस्या को होनेवाला उत्सव।

दुःख—(पु० सं०) कष्ट। तकलीफ़। —दायक=(सं०) दुःख या कष्ट पहुँचानेवाला। दुःखांत=(सं०) जिसके अंत में दुःख हो।

दुआ—(स्त्री० अ०) प्रार्थना। दरखास्त। आशीर्वाद।

दुआवा—(पु० फ़ा०) दो नदियों के बीच का प्रदेश।

दुकड़ा—(पु० हि०) जोड़ा। दुकड़ी=जिसमें कोई वस्तु दो दो हो। दो बूटियोंवाला ताश का पत्ता।

दुकान—(स्त्री० फ़ा०) सौदा बिकने का स्थान। —दार=(पु० फ़ा०) दुकान का मालिक। —दारी=(फ़ा०) दुकान का माल बेचने का काम।

दुकाल—(पु० हि०) अकाल।

दुक्का—(वि० हि०) जो एक साथ दो हों।

दुक्की—(स्त्री० हि०) ताश का वह पत्ता, जिसपर दो बूटियाँ बनी हों।

दुखाना—(क्रि० हि) कष्ट पहुँचाना।

दुखिया—(वि० हि०) दुखी। पीड़ित। दुखी=(वि० हि०) जिसे दुःख हो।

दुख़्तर—(फ़ा०) लड़की। पुत्री।

दुगना—(वि० हि०) दूना।

दुचन्द—(फ़ा०) दुगुना। दूना।

दुग्ध—(वि० सं०) दूध।

दुज़्द—(फ़ा०) चोर। चोरी करनेवाला।

दुतर्फ़ा—(वि० फ़ा०) दोनों ओर का।

दुधार—(वि० हि०) दूध देनेवाली।

दुनाली—(स्त्री० हि०) दो नलवाली।

दुनिया—(स्त्री० अ०) संसार। जगत्। दुनियावी=(अ०) सांसारिक।—दार=(फ़ा०) संसारी। गृहस्थ। —दारी=(फ़ा०) दुनिया का कारबार। —साज़—(फ़ा०) चापलूस। —साजी=(फ़ा०) अपना मतलब निकालने का ढंग।

दुपट्टा—(पु० हि०) चादर।

दुपहरिया—(स्त्री० हि०) दोपहर।

दुबधा—(स्त्री० हि०) चित्त की अस्थिरता। अनिश्चय।

दुबला—(वि० हि०) क्षीण शरीर का। कृश। ऊँचे खेतों में पानी पहुँचाने का एक प्रकार। —पन=(हि०) क्षीणता। कृशता।

दुबारा—(फ़ा०) दूसरी दफ़ा।

दुबाला—(फ़ा०) दुगना।

दुभाषिया—(पु० हि०) दो भिन्न-भिन्न भाषायें बोलनेवालों के बीच का मध्यस्थ।

दुमंज़िला—(वि० फ़ा०) दो खंडा।

दुम—(स्त्री० फ़ा०) पूँछ। —ची=(फ़ा०) घोड़े के साज में वह तसमा जो पूँछ के नीचे दबा रहता है। पुट्ठों के बीच की हड्डी। —दार=(वि० फ़ा०) पूँछवाला।

दुम्बा—(फ़ा०) चौड़ी और भारी पूँछवाला मेढा।

दुरंगी—(स्त्री० हि०) दो रंगों की। दोतरफ़ी। छल-युक्त।

दुरंगा—(वि० हि०) दो रंगों का।

दुर—(अ०) मोती। दाँत।

दुरभिसंधि—(स्त्री० सं०) मिलजुलकर की हुई कुमंत्रणा।

दुरमुस—(पु० हि०) कंकड़ या मिट्टी पीटकर बैठाने का औज़ार।

दुरुस्त—(फ़ा०) उचित। ठीक। वाजिब।

दुरवस्था—(स्त्री० सं०) ख़राब हालत। हीन दशा।

दुराग्रह—(पु० सं०) हठ। ज़िद।

दुराचरण—(पु० सं०) बुरी चाल-चलन।

दुराचार—(पु० सं०) खोटी चाल। दुराचारी=बुरे चाल-चलन का।

दुरात्मा—(वि० हि०) दुष्टात्मा। खोटा।

दुराशा—(स्त्री० सं०) ऐसी आशा जो पूरी होनेवाली न हो।

दुरुपयोग—(पु० सं०) बुरा उपयोग।

दुरुस्त—(वि० फ़ा०) ठीक।

दुर्गंध—(स्त्री० सं०) बदबू। बुरी गंध।

दुर्ग—(वि० सं०) जिसमें पहुँचना कठिन हो। दुर्गम। क़िला। दुर्गाधिकारी=क़िलेदार।

दुर्गति—(स्त्री० सं०) बुरा हाल। दुर्दशा।

दुर्गम—(वि० सं०) जहाँ जाना कठिन हो।

दुर्गा—(पु० सं०) आदि शक्ति। देवी।

दुर्गाष्टमी—(स्त्री० सं०) आश्विन और चैत्र के शुक्ल पक्ष की अष्टमी।

दुर्गुण—(पु० सं०) दोष। ऐब।

दुर्जन—(पु० सं०) दुष्ट आदमी। —ता=(सं०) दुष्टता।

दुर्जय—(वि० सं०) जिसे जीतना बहुत कठिन हो।

दुर्ज्ञेय—(वि० सं०) कठिनाई से जानने योग्य।

दुर्दमनीय—(वि० सं०) जिसका दमन करना बहुत कठिन हो। प्रबल।

दुर्दशा—(स्त्री० सं०) बुरी दशा। ख़राब हालत।

दुर्दिन—(पु० सं०) बुरा दिन। दुर्दशा का समय।

दुर्द्धर्ष—(वि० सं०) जिसका दमन करना कठिन हो। प्रबल।

दुर्नीति--(स्त्री० सं०) कुनीति। अन्याय।

दुर्बल—(वि० सं०) कमज़ोर। —ता=(सं०) कमज़ोरी। दुबलापन।

दुर्बोध—(वि० सं०) जो जल्दी समझ में न आवे।

दुर्भाग्य—(पु० सं०) मंद भाग्य। खोटी किस्मत।

दुर्भिक्ष—(पु० सं०) अकाल।

दुर्मति—(स्त्री० सं०) बुरी बुद्धि। नासमझी।

दुर्रा—(पु० फ़ा०) कोड़ा। चाबुक।

दुर्लभ—(वि० सं०) जो कठिनता से मिल सके।

दुर्विदग्ध—(वि० सं०) अधजला। घमंडी।

दुर्विनीत—(वि० सं०) अशिष्ट। अक्खड़।

दुर्व्यसन—(पु० सं०) ख़राब आदत।

दुलकी—(स्त्री० हि०) घोड़े की एक चाल।

दुलत्ती—(स्त्री० हि०) घोड़े आदि चौपायों का पिछले दोनों पैरों को उठाकर मारना।

दुलदुल—(पु० अ०) वह खच्चरी जिसे इसकंदरिया (मिश्र) के हाकिम ने मुहम्मद साहब को नज़र में दिया था।

दुलहन—(स्त्री० हि०) नई बहू।

दुलाई—(स्त्री० हि०) रुई भरा हुआ पतला ओढ़ना।

दुलार—(पु० हि०) प्यार। दुलारा=लाड़ला। दुलारी=प्यारी।

दुशाला—(पु० हि०) पशमीने की चद्दरों का जोड़ा। —पोश=(वि० फ़ा०) जो दुशाला ओढ़े हो। —फ़रोश=(फ़ा०) दुशाला बेंचनेवाला।

दुश्ख़्वार—(फ़ा०) कठिन। मुश्किल।

दुश्चरित—(वि० सं०) बदचलन। कठिन। दुश्चरित्र=(सं०) बदचलन।

दुश्मन—(पु० फ़ा०) शत्रु। बैरी।

दुश्नाम—(फ़ा०) बुरा नाम । गाली ।

दुश्वार—(फ़ा०) मुश्किल । कठिन ।

दुश्मनी—(स्त्री० फ़ा०) बैर । शत्रुता ।

दुष्कर—(वि० सं०) जिसे करना कठिन हो ।

दुष्कर्म—(पु० हि०) बुरा काम ।

दुष्काल—(पु० सं०) बुरा वक़्त । कुसमय ।

दुष्ट—(वि० सं०) जिसमें दोष हो । दुराचारी । —ता= (सं०) दोष। ऐब । बुराई । बदमाशी ।

दुष्टात्मा—(वि० सं०) खोटी प्रकृति का ।

दुष्प्राप्य—(वि० सं०) जिसका मिलना कठिन हो ।

दुस्तर—(वि० सं०) जिसे पार करना कठिन हो । कठिन ।

दुहत्था—(वि० हि०) दोनों हाथों से किया हुआ ।

दुहना—(क्रि० हि०) दूध निकालना । दुहिनी=(ह०) बरतन, जिसमें दूध दुहा जाता है ।

दुहाई—(स्त्री० हि०) घोषणा। पुकार ।

दुहुल—(फ़ा०) ढोल।

दूकान—(पु० फ़ा०) सौदा बेचने की जगह । —दार=(फ़ा०) दूकान का मालिक । —दारी =(फ़ा०) सौदा बेचने का काम

दूज—(स्त्री० हि०) द्वितीया।

दूत—(पु० सं०)सँदेशा ले जाने वाला मनुष्य। चर। —कर्म=(पु० सं०) दूत का काम । दूतावास=(पु० सं०) राजदूत या वाणिज्य-दूत का कार्यालय। राजदूत या वाणिज्यदूत का निवास-स्थान । दूती=(स्त्री० सं०) एक का सँदेसा दूसरे तक पहुँचानेवाली स्त्री ।

दूध—(पु० हि०) दुग्ध। क्षीर। —पूत=(हि०) धन और संतति । —भाई = (पु० हि०) दो माताओं के ऐसे दो

बालकों में से एक, जो एक ही स्त्री का दूध पीकर पले हों। दुधमुँहा=(वि० हि०) जो अभी तक माता का दूध पीता हो। बालक। —वाला =ग्वाला।

दूना—(वि० हि०) दुगुना।

दूब—(स्त्री० हि०) एक घास।

दूबदू—(वि० फ़ा०) मुक़ाबले में।

दूभर—(वि० हि०) कठिन। मुश्किल।

दूरंदेश—(वि० फ़ा०) आगा-पीछा सोचनेवाला। होशियार। दूरंदेशी=(फ़ा०) दूर की बात को पहले ही से समझ लेना।

दूर—(वि० हि०) बहुत फ़ासले पर। —दर्शक=(वि० सं०) दूर तक देखनेवाला। —दर्शक यंत्र=(सं०) दूरबीन। —दर्शिता=(स्त्री० सं०) दूर की बात सोचने का गुण। —दर्शी=(पु० सं०) पंडित। बहुत दूर तक की बात सोचने या समझनेवाला। —बन=(फ़ा०) एक प्रकार का यंत्र जिससे दूर की चीज़ें बहुत पास और स्पष्ट या बड़ी दिखाई देती हैं। —वर्ती=(वि० सं०) दूर का। —वीक्षण=(पु० सं०) दूरबीन। दूरी=(हि०) फ़ासला। अंतर।

दूषण—(पु० सं०) ऐब। बुराई। दूषित=(सं०) जिसमें दोष हो। ख़राब।

दूसरा—(वि० हि०) पहले के बाद का। द्वितीय।

दृढ़निश्चय—(वि० सं०) जो अपनी बात पर जमा रहे।

दृश्य—(वि० सं०) जिसे देख सकें। सुंदर। सीन। —मान =(वि० सं०) प्रत्यक्ष।

दृष्ट—(वि० सं०) देखा हुआ। जाना हुआ। —कूट=(सं०) पहेली। दृष्टांत=(सं०) उदाहरण। मिसाल। दृष्टि =(सं०) आँख की ज्योति। नज़र। निगाह। दृष्टिगोचर=

=(वि० सं०) जो देखने में आ सके। दृष्टिपात=(पु० सं०) ताकना या देखना। अवलोकन।

देखना—(क्रि० हि०) अवलोकन करना।

देखाऊ—(वि० हि०) बनावटी।

देखा देखी—(स्त्री० हि०) आँखों से मुलाक़ात।

देग—(पु० फ़ा०) एक बरतन। —चा=(फ़ा०) छोटा देग। —ची = (फ़ा०) छोटा देगचा।

देदीप्यमान—(फ़ा०) चमकता हुआ।

देनदार—(हि०) क़र्ज़दार।

देन लेन—(पु० हि० ब्याज पर रुपया उधार देने का व्यापार।

देना—(सं० हि०) प्रदान करना। क़र्ज़।

देर—(स्त्री० फ़ा०) विलंब।

देव—(फ़ा०) भूत। जिन।

देवता—(पु० सं०) स्वर्ग में रहने वाला अमर प्राणी।

देवदार—(पु० हि०) एक पेड़।

देवर—(पु० सं०) पति का छोटा भाई। देवरानी=(हि०) देवर की स्त्री।

देवर्षि—(पु० सं०) देवताओं में ऋषि।

देववाणी—(स्त्री० सं०) संस्कृत भाषा। आकाशवाणी।

देवी—(स्त्री० सं०) देवता की स्त्री।

देश—(पु० सं०) राष्ट्र। पृथ्वी का वह विभाग जिसका कोई अलग नाम हो, जिसमें कई प्रांत, नगर, ग्राम आदि हों और एक ही जाति के लोग बसते हों।—ज=(वि० सं०) देश में उत्पन्न। —निकाला =(हि०) देश से निकाल दिये जाने का दंड। —भाषा =(स्त्री० सं०) वह भाषा जो किसी देश या प्रांत विशेष में ही बोली जाती हो। —देशांतर=(पु० सं०) विदेश। परदेश। देशाटन=(सं०) भिन्न-भिन्न देशों की यात्रा।

देशी=(वि० हि०) देश संबन्धी।
देसावर—(पु० हि०) विदेश। परदेश। देशावरी=(हि०) दूसरे देश से आया हुआ।
देह—(स्त्री० सं०) शरीर। बदन।
देहक़ान—(पु० फ़ा०) किसान। गँवार। देहकानी=(वि० फ़ा०) गँवारू। ग्रामीण।
देहली—(स्त्री० सं०) चौकठ।
दैत्य—(पु० सं०) असुर। राक्षस।
दैर—(फ़ा०) मन्दिर। गुम्बद।
दैनिक—(वि० सं०) प्रतिदिन का।
दैवज्ञ—(पु० सं०) ज्योतिषी।
दो—(वि० हि०) तीन से एक कम।
दोआब—(पु० फ़ा०) दो नदियों के बीच का प्रदेश।
दोखंभा—(पु० हि०) एक प्रकार का नैचा जिसमें कुल्फ़ी नहीं होती।
दोगला—(पु० हि०) कमअसल।
दोचार—(फ़ा०) मुलाक़ात। मुक़ाबिला।
दोज़ख—(पु० फ़ा०) जहन्नुम। नरक।
दोजबाँ—(स्त्री० फ़ा०) दोनली बंदूक।
दोजहाँ—(फ़ा०) दो दुनिया।
दोज़ानू—(वि० फ़ा०) घुटनों के बल बैठना।
दोतरफ़ा—(वि० फ़ा०) दोनों तरफ़ का।
दोतल्ला—(वि० हि०) दो खंड का। दोमंज़िला।
दोद—(फ़ा०) धुवाँ। ग़म। रंज।
दोना—(पु० हि०) पत्तों का बना हुआ कटोरा। दोनिया=(स्त्री०) छोटा दोना।
दोनों—(वि० हि०) एक और दूसरा।
दोपल्ली—(वि० हि०) दो पल्लेवाला।
दोपहर—(स्त्री० हि०) मध्याह्न-काल।
दोफसली—(वि० हि०) दोनों फसलों के सम्बन्ध का।

दोबारा—(वि० फ़ा०) दूसरी बार।

दोबाला—(वि० फ़ा०) दूना। दुगना।

दोमंज़िला—(वि० फ़ा०) दो खंड का।

दोमट—(स्त्री० हि०) वह ज़मीन जिसकी मिट्टी में कुछ बालू भी मिली हो।

दोमुहाँ—(वि० हि०) दो मुँह वाला। कपटी।

दोयम—(वि० फ़ा०) दूसरा।

दोशंबा—(फ़ा०) सोमवार।

दोष—(पु० सं०) ऐब। अपराध। दोषी=अपराधी। पापी। मुजरिम।

दोसूती—(स्त्री हि०) दोतही या दुसूती नाम की मोटी चादर जो बिछाने के काम में आती है।

दोस्त—(पु० फ़ा०) मित्र। —दार=(पु० फ़ा०) मित्र। —दारी=(स्त्री० फ़ा०) मित्रता। दोस्ताना=(पु० फ़ा०) दोस्ती। मित्रता। दोस्ती=(फ़ा०) मित्रता।

दोहत्था—(क्रि० हि०) दोनों हाथों से।

दोहर—दो परतों की चादर।

दोहरा—(वि० हि०) दो परत वा तह का। दुगना।

दोहराना—(क्रि० हि०) किसी बात को दूसरी बार कहना या करना।

दोहा—(पु० हि०) एक छंद।

दौंगरा—(पु० हि०) वह हलकी वर्षा जो गरमी के दिनों में तपी हुई धरती पर होती है।

दौर—(फ़ा०) ज़माना। चक्र। समय। गर्दिश। दौरान=(अ०) समय। ज़माना।

दौंरी—(स्त्री० हि०) बैलों को चलाकर अन्न और भूसे को अलग करना।

दौड़—(स्त्री० हि०) दौड़ने की क्रिया या भाव। —धूप=(हि०) किसी काम के लिये बार-बार चारोंओर आना-जाना। —ना=(हि०) तेज़

चलना। दौड़ादौड़=बिना कहीं रुके हुए चलना। दौड़ाना=(हि०) जल्द-जल्द चलाना।
दौना—(पु० हि०) एक पौधा।
दौर—(पु० अ०) चक्कर। फेरा। दिनों का फेर। बढ़ती का समय।
दौरा—(पु० अ०) चारों ओर घूमने की क्रिया। गश्त। फेरा। बाँस का बना बड़ा टोकरा।
दौरान—(अ०) समय-चक्र। ज़माना।
दौलत—(पु० अ०) धन। संपत्ति। —खाना=(पु० फा०) निवासस्थान। घर। —मंद=(वि० फ़ा०) धनी। संपन्न।
द्युति—(स्त्री० सं०) कांति। चमक। शोभा। किरण।
द्यूत—(पु० सं०) जुआ।
द्योतक—(वि० सं०) प्रकाशक। बतलानेवाला।
द्रव—(पु० सं०) बहाव। रस।
द्रवीभूत=(वि० सं०) जो पानी की तरह पतला हो गया हो। पिघला हुआ।
द्रव्य—(पु० सं०) पदार्थ। चीज़। सामग्री। धन।
द्रष्टव्य—(वि० सं०) देखने योग्य।
द्रष्टा—(वि० सं०) देखनेवाला। दर्शक।
द्रावक—(वि० सं०) ठोस चीज़ को पानी की तरह पतला करनेवाला। पिघलानेवाला। हृदय पर प्रभाव डालनेवाला।
द्रुत—(वि० सं०) तेज़। जल्द। —गति=(सं०) शीघ्रगामी। —गामी=(वि० सं०) तेज चलनेवाला। —विलंबित=(सं०) एक छन्द।
द्रुम—(पु० सं०) वृक्ष। पेड़।
द्वंद—(पु० सं०) जोड़ा। दो आदमियों की परस्पर लड़ाई। झगड़ा। द्वंद्व=(पु० सं०) जोड़ा। दो आदमियों की लड़ाई।
द्वादश—(वि० सं०) बारह।

बारहवाँ। द्वादशी=(सं०) बारहवीं तिथि।

द्वारा—(पु० हि०) ज़रिये से।

द्वितीय—(वि० सं०) दूसरा।

द्विदल शासन-प्रणाली—(स्त्री० सं०) द्वैध शासन-प्रणाली। एक प्रकार की शासन-प्रणाली या सरकार जिसमें शासन-अधिकार दो भिन्न व्यक्तियों के हाथ में रहता है।

द्वितीया—(स्त्री० सं०) दूज।

द्वीप—(पु० सं०) स्थल का वह भाग जो चारों ओर जल से घिरा हो।

द्वेष—(पु० सं०) वैर। शत्रुता।

द्वेषी—(वि० हि०) विरोधी। चिढ़ रखनेवाला।

द्वैध शासन-प्रणाली—(स्त्री० सं०) एक प्रकार की शासन प्रणाली या सरकार, जिसमें शासन-अधिकार दो भिन्न व्यक्तियों के हाथ में रहता है। द्विदल शासन-प्रणाली।

द्वैधीभाव—(पु० सं०) एक से लड़ना तथा दूसरे से संधि करना। दोनों ओर मिलकर रहना।

ध

ध—हिंदी वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यंजन और तवर्ग का चौथा वर्ण।

धंधा—(पु० हि०) काम-काज।

धँसना—(हि०) गड़ना। चुभना। धँसान= दलदल। धँसाव =धँसान। ढाल। उतार।

धक—(स्त्री० अनु०) दिल के धड़कने का शब्द। चकित। धकधकाना=हृदय का धड़कना। धकधकाहट=धड़कन। आशंका। धकधकी=जी की धड़कन।

धक्का—(पु०हि०) टक्कर। रेल।

धक्कमधक्का = रगड़ा। भीड़।
धक्कामुक्की = मुठभेड़। मार-पीट।

धज—(स्त्री० हि०) सजावट।

धड़—(पु० हि०) शरीर का मध्य भाग, जिसमें छाती पीठ और पेट होते हैं।

धड़कन—स्त्री०(हि०) हृदय का स्पंदन। धड़कना = छाती का धकधक करना। धड़का = खटका। भय। गिरने-पड़ने का शब्द। धड़ल्ला = धड़ाका। धड़ाका = धमाके या गड़गड़ाहट का शब्द।

धड़ाधड़—(वि०अनु०)बार बार। धड़ाके के साथ।

धड़ाम—(हि०) गिरने का शब्द।

धड़ी—(स्त्री० हि०) चार या पाँच सेर की एक तोल।

धत्—(अव्य० अनु०) तिरस्कार के साथ हटाने का शब्द।

धता—(वि० अनु०) हटा हुआ। टाल देना।

धतूरा—(पु० हि०) एक पौधा।

धधक—(स्त्री० अनु०) आग की भड़क। धधकना = लपट के साथ जलना। दहकना।

धन—(पु० सं०) संपत्ति। दौलत। —हीन = दरिद्र। कंगाल। धनाढ्य = धनवान्। मालदार। धनी = धनवान्। मालदार।

धनुष—(पु० सं०) कमान। धनुर्धर = तीरंदाज़। धनुर्वात = एक वायु रोग जिसमें शरीर धनुष की तरह झुक जाता है। धनुर्विद्या = धनुष चलाने की विद्या। धनुर्वेद = वह शास्त्र जिसमें धनुष चलाने की विद्या का निरूपण हो। धन्वी = धनुर्धर। चतुर।

धन्य—(वि० सं०) पुण्यवान्। बड़ाई के योग्य। —वाद = साधुवाद। शाबाशी। शुक्रिया।

धब्बा—(पु० देश०) निशान।

धमक—(स्त्री० अनु०) भारी चीज़ के गिरने का शब्द। पैर रखने की आवाज़। धमकना = धमाका करना। पहुँचना।

धमकाना=डराना। डाँटना।
धमकी=डाँट-डपट।
धमनी—(स्त्री० सं०) नस।
धमाचौकड़ी—(स्त्री० अनु०) उछल-कूद
धमार—(स्त्री० अनु०) उपद्रव।
धरणी—(स्त्री० सं०) पृथ्वी। नाड़ी।
धरती—(स्त्री० हि०) पृथ्वी। ज़मीन।
धरहर—(स्त्री० हि०) धर-पकड़। गिरफ़्तारी।
धराऊ—(वि० हि०) मामूली से अच्छा। बहुमूल्य। रक्खा हुआ।
धरातल—(पु० सं०) पृथ्वी। रक़बा।
धरोहर—(स्त्री० हि०) अमानत। थाती।
धर्म—(पु० सं०) स्वभाव। नित्य नियम। प्रकृति। मज़हब। —निष्ठ=धार्मिक। धर्म-परायण। —भीरु=जिसे धर्म का भय हो। —शाला=वह मकान जो यात्रियों के ठहरने के लिये बना हो और जिसका कुछ भाड़ा आदि न लगता हो। —शास्त्र=वह ग्रंथ जिसमें समाज के शासन के निमित्त नीति और सदाचार सम्बन्धी नियम हों।
धाक—(पु० सं०) रोब। दबदबा। —बँधना=आतंक छाना।
धातु—(स्त्री० सं०) खनिज पदार्थ। वीर्य।
धाम—(पु० सं०) शरीर। देवस्थान या पुण्य-स्थान। परलोक। स्वर्ग।
धाय—(स्त्री० हि०) दाई। धात्री।
धार—(पु० सं०) ज़ोर से पानी बरसना।
धारणा—(स्त्री० सं०) अक़्ल। याद।
धारा—(स्त्री० सं०) पानी का बहाव या गिराव।
धारी—(वि० हि०) धारण करने वाला। लकीर। —दार=लकीरोंवाला।

धारोष्ण—(पु० सं०) थन से निकला हुआ ताजा दूध।

धावा—(पु० हि०) हमला। चढ़ाई।

धिक्—(अव्य० सं०) लानत। निंदा। धिक्कार=लानत। फटकार। धिक्कारना=फटकारना। बुरा-भला कहना।

धींगाधींगी—(स्त्री० हि०) शरारत। ज़बरदस्ती।

धींगामुस्ती—(स्त्री० हि०) शरारत। उपद्रव। बदमाशी।

धीमा—(वि० हि०) मंद।

धीर—(वि० सं०) धैर्यवाला। नम्र।

धीरज—(पु० हि०) धीरता। धैर्य।

धीरे—(क्रि० हि०) आहिस्ते से। मंद-मंद।

धीवर—(पु० सं०) मछुवा मल्लाह।

धुंध—(स्त्री० हि०) अँधेरा।

धुआँ—(पु० हि०) धूम। —कश=स्टीमर।

धुकड़-पुकड़—(पु० अनु०) घबराहट। आगा-पीछा।

धुकधुकी—(स्त्री० अनु०) पेट और छाती के बीच का भाग जो कुछ गहरा-सा होता है।

धुन—(पु० हि०) लगन।

धुनकना—(क्रि० हि०) रुई से बिनौले अलग करना। धुनकी=रुई धुनने का धनुष। धुनियाँ=रुई धुननेवाला।

धुरंधर—(वि० सं०) भार उठानेवाला। श्रेष्ठ। प्रधान।

धुरई—(स्त्री० हि०) कुएँ से पुर द्वारा पानी निकालने में सहायक बाँस।

धुरा—(पु० हि०) वह डंडा जिसमें पहिया पहनाया रहता है और जिस पर वह घूमता है। धुरी=छोटा धुरा। धुरीण=बोझ सँभालनेवाला। मुख्य। प्रधान।

धुर्रा—(पु० हि०) किसी चीज़ का अत्यंत छोटा भाग। कण। ज़र्रा।

धुलना—(क्रि० हि०) धोया

जाना। धुलवाना=धोने का काम दूसरे से करवाना। धुलाई=धोने का काम। धोने की मज़दूरी। धुलाना=धुलवाना।

धुवाँ—(पु० हि०) धूम।

धुस्स—(पु० हि०) टीला। मिट्टी आदि का ऊँचा ढेर।

धुस्सा—(पु० हि०) मोटे ऊन की लोई।

धुआँधार—(पु० हि०) धुएँ से भरा हुआ।

धूना—(पु० हि०) गुग्गुल की जाति का एक बड़ा पेड़।

धूनी—(स्त्री० हि०) धूप। गुग्गुल, लोबान आदि गंध द्रव्यों या और किसी वस्तु को जलाकर उठाया हुआ धुआँ। अलाव।

धूप—(पु० सं०) सुगंधित धूम। घाम। —घड़ी=एक यंत्र जिससे धूप में समय का ज्ञान होता है। —छाँह=एक रंगीन कपड़ा जिसमें एक ही स्थान पर कभी एक रंग दिखाई पड़ता है, कभी दूसरा। —बत्ती=मसाला लगी हुई सींक या बत्ती जिसे जलाने से सुगंधित धुआँ उठकर फैलता है।

धूम्र—(पु० सं०) धुआँ। —केतु=पुच्छल तारा। आग। —धाम=भीड़-भाड़ और तैयारी। समारोह। —पान=सिगरेट या तम्बाकू पीना।

धूर्त्त—(वि० सं०) छली। दग़ाबाज। —ता=चालबाजी। छल।

धूल—(स्त्री० हि०) गर्द। रज। (सं०) धूलि।

धूसर—(वि० सं०) धूल के रंग का। मटमैला। धूल से भरा।

धृष्टता—(स्त्री० सं०) ढिठाई। गुस्ताख़ी। निर्लज्जता।

धेनु—(स्त्री० सं०) गाय।

ध्येय—(वि० सं०) धारण करने योग्य।

धेली—(स्त्री० हि०) अठन्नी।

धैर्य्य—(पु० सं०) धीरता । सब्र ।

धौंधा—(पु० हि०) लोंदा । बेडौल पिंड ।

धोखा—(पु० हि०) छल । दग़ा । धोखेबाज़=धोखा देनेवाला । छली । धोखेबाजी =छल-कपट ।

धोती—(स्त्री० हि०) कमर से नीचे पहनने का कपड़ा ।

धोना—(क्रि० हि०) पानी से साफ़ करना ।

धौंकना—(क्रि० हि०) आग पर, उसे दहकाने के लिये भाथी दबाकर हवा का झोंका पहुँचाना ।

धौंकनी—(स्त्री० हि०) भाथी ।

धौंस—(स्त्री० हि०) धमकी । डाँट । —पट्टी=भुलावा । दम-दिलासा ।

धौराहर—(पु० हि०) ऊँची अटारी ।

धौल-धक्का—(पु० हि०) आघात । चपेट ।

ध्यान—(पु० सं०) भावना । विचार । याद ।

ध्रुपद—(पु० हि०) एक गीत ।

ध्रुव—(वि० सं०) अचल । इधर-उधर न हटनेवाला । ध्रुवतारा । —दर्शक= सप्तर्षिमंडल । कुतुबनुमा ।

ध्वंसक—(वि० सं०) नाश करनेवाला ।

ध्वज—(पु० सं०) चिह्न । निशान । झंडा । ध्वजा= पताका । झंडा ।

ध्वनि—(स्त्री०सं०) शब्द । नाद । आवाज़ । —त=प्रकट किया हुआ । बजाया हुआ ।

———

न—हिन्दी-वर्णमाला का बीसवाँ और तवर्ग का पाँचवाँ वर्ण।

नंग-धड़ंग—(वि०हि०) बिलकुल नंगा। वेवस्त्र।

नंगा—(वि० हि०) जो कोई कपड़ा न पहने हो। —लुच्चा =नीच और दुष्ट।

नंबर—(वि० अं०) संख्या। अंक। गिनती। —दार= गाँव का वह ज़मींदार जो अपनी पट्टी के और हिस्सेदारों से मालगुज़ारी आदि वसूल करने में सहायता दे। —वार =सिलसिलेवार। क्रमशः। नंबरिंग मशीन=(अं०) एक प्रकार का यंत्र जिससे रसीदों, टिकटों आदि पर क्रम-संख्या छापते हैं। नंबरी=नम्बर-वाला। जिस पर नंबर लगा हो। मशहूर। नम्बरी गज= कपड़े आदि नापने का लोहे का वह गज जो ३ फुट या ३६ इंच लंबा होता है।

न, नः—(फ़ा०) नहीं।

नकचढ़ा—(पु०हि०) चिड़चिड़ा। बदमिज़ाज।

नकटा—(पु० हि०) वह जिसकी नाक कट गई हो। निर्लज्ज। बेशर्म।

नकतोड़—(पु० हि०) कुश्ती का एक पेंच।

नक़द—(पु० अ०) तैयार रुपया। (अं०) कैश। नकदी=रोकड़। धन। रुपया-पैसा।

नक़ब—(स्त्री० अ०) सेंध। —ज़न=(अ०+फ़ा०) सेंध लगाने वाला। —ज़नी=सेंध लगाना।

नकबेसर—(स्त्री० हि०) नाक में पहनने की छोटी नथ।

नक़ल—(स्त्री० अ०) अनुकरण। कापी। —नवीस=(अ०+फ़ा०) अदालत या दफ़्तर आदि का मुहर्रिर जिसका काम केवल दूसरे के लेखों की नक़ल करना होता है। —बही=(हि०) दफ़्तरों

या दूकानों आदि की वह कापी जिसमें भेजी जानेवाली चिट्ठियों की नक़ल रहती है। नक़ली (अ०)=जो असली न हो। बनावटी।

नकसीर—(स्त्री० हिं०) नाक से खून बहना।

नक़ाब—(स्त्री० अ०) मुँह छिपाने का परदा।

नक़ाशी—(स्त्री० अ०) धातु या पत्थर आदि पर खोदकर बेल बूटे आदि बनाने का काम या विद्या। —दार=(अ०×फ़ा०) जिस पर नक़्क़ाशी हो।

नक़ाहत—(अ०) रोग के बाद की दुर्बलता। कमज़ोरी।

नक़ीब—(पु० अ०) भाट। चारण।

नकेल—(स्त्री० हिं०) ऊँट की नाक में बँधी हुई रस्सी।

नक्क़ारा—(पु० फ़ा०) नगाड़ा। नक़्क़ारखाना=नौबतखाना। नक़्क़ारची= नगाड़ा बजानेवाला।

नक्क़ाल—(पु० अ०) नकल करनेवाला। नक़्क़ाली=(स्त्री० अ०) नकल करने का काम।

नक्काश—(पु० अ०) वह जो खोदकर बेल-बूटे आदि बनाता हो। नक्काशी=धातु या पत्थर आदि पर खोदकर बेल-बूटे आदि बनाने की विद्या।—दार=जिस पर खोदकर बेल-बूटे बनाये गये हों।

नक्कू—(वि० हिं०) बड़ी नाकवाला।

नक्श—(वि० अ०) खींचा, बनाया या लिखा हुआ। —निगार=(फ़ा०) बनाये हुए बेल-बूटे आदि। नक्काशी। नक्शा=चित्र। स्केच। मैप। —नवीस=नक्शा बनानेवाला। —नवीसी=नक्शा बनाना। नक्शी=जिस पर बेल-बूटे बने हों।

नक्षत्र—(पु० सं०) तारे।

नख—(पु० सं०) हाथ या पैर का नाखून।

नखरा—(पु० फ़ा०) हाव-भाव। चोचला। नाज़। —तिल्ला

=नख़रा। नाज़। नखरेबाज़ =(वि० फ़ा०) नख़रा करनेवाला। नखरेबाज़ी= (फ़ा०) चोचलापन।

नखशिख—(पु० सं०) नख से लेकर शिखा तक के सब अंग।

नखास—(पु० अ०) वह बाजार जिसमें पशु विशेषतः घोड़े बिकते हैं।

नग—(फ़ा०) नगीना।

नगण्य—(वि० सं०) तुच्छ।

नगर—(पु० सं०) शहर। —कीर्त्तन=(पु० सं०) वह गाना, बजाना या कीर्त्तन जिसे नगर की गलियों और सड़कों में घूम-घूमकर कुछ लोग करें। नगरी= (सं०) शहर। नगर।

नगीना—(पु० हि०) रत्न। मणि। —साज़=(फ़ा०) वह जो नगीना बनाता या जड़ता हो।

नचाना—(क्रि० हि०) नाच कराना।

नद्दाफ़—(अ०) धुनिया। रुई धुननेवाला।

नज़दीक—(वि० फ़ा०) पास। समीप। नज़दीकी=निकटस्थ।

नज़्म—(स्त्री० अ०) कविता। पद्य।

नज़र—(स्त्री० अ०) निगाह। चितवन। कृपादृष्टि। निगरानी। ध्यान। भेंट। —बंद=जिसे नज़रबन्दी की सजा दी जाय। —बन्दी=वह सज़ा जिसमें दंडित पुरुष किसी नियत स्थान पर रखा जाता है और उस पर कड़ी निगरानी रहती है। जादूगरी। —बाग=वह बाग जो महलों या बड़े-बड़े मकानों आदि के सामने या चारों ओर उनके अहाते के अंदर ही रहता है। —सानी= किसी किये हुए कार्य या लिखे हुए लेख आदि को, उसमें सुधार या परिवर्त्तन करने के लिये फिर से देखना। नज़राना=नज़र लग जाना। भेंट। उपहार।

नज़रत—(।अ०) तरोताज़गी ।
नज़ला—(पु० अ०) एक प्रकार का रोग । —बन्द=अफ़ीम और चूने आदि का वह फाहा जो नजले को गिरने से रोकने के लिये दोनों कनपटियों पर लगाया जाता है ।
नज़ाकत—(स्त्री० फ़ा०) सुकुमारता । कोमलता ।
नजात—(स्त्री० अ०) मोक्ष । मुक्ति । छुटकारा ।
नज़ामत—(स्त्री० अ०) नाज़िम का पद । नाज़िम का महकमा या विभाग ।
नज़ारत—(स्त्री० अ०) नाज़िर का पद । नाज़िर का महकमा ।
नज़ारा—(पु० अ०) दृश्य । नज़र । —बाजी=स्त्री या पुरुष का दूसरे पुरुष या स्त्री को प्रेम या लालसा की दृष्टि से देखना ।
नजिस—(अ०) अपवित्र ।
नज़ीर—(स्त्री० अ०) उदाहरण । मिसाल । उपमा ।
नजूम—(पु० अ०) ज्योतिष विद्या । नजूमी=ज्योतिषी ।
नजूल—(पु० अ०) सरकारी ज़मीन ।
नट—(पु० सं०) नाटक का पात्र । एक जाति के पुरुष जो गा-बजाकर और तरह-तरह के खेल दिखाकर अपना निर्वाह करते हैं । नटी=(सं०) नट जाति की स्त्री । नाचनेवाली स्त्री । अभिनेत्री । वेश्या । नट की स्त्री ।
नटखट—(वि० हि०) ऊधमी । नटखटी=बदमाशी ।
नताइज—(अ०) नतीजे का बहुवचन । परिणाम । ग़रज़ ।
नथ—(स्त्री० हि०) एक गहना जिसे स्त्रियाँ नाक में पहनती हैं ।
नथना—(पु० हि०) नाक का अगला भाग ।
नथनी—(स्त्री० हि०) नाक में पहनने की छोटी नथ । नथुनी ।
नद—(पु० सं०) बड़ी नदी ।

नदामत—(अ०) लज्जा । शरमिन्दगी ।
नदारद—(वि० फ़ा०) ग़ायब ।
नदी—(स्त्री० सं०) दरिया ।
नधना—(क्रि० हि०) जुतना ।
ननंद, ननद—(स्त्री० हि०) पति की बहन ।
ननसार—(स्त्री० हि०) नाना का घर ।
ननिहाल—(पु० हि०) नाना का घर ।
नन्हा—(वि० हि०) छोटा ।
नपुंसक—(पु० सं०) नामर्द ।
नफ़र—(पु० फ़ा०) दास । सेवक । (अ०) व्यक्ति । एक आदमी ।
नफ़रत—(स्त्री० अं०) घिन । घृणा ।
नफ़री—(स्त्री० फ़ा०) एक मजदूर की एक दिन की मजदूरी या एक दिन का काम ।
नफ़स—(अ०) दम । श्वास ।
नफ़सानी—(अ०) कामेच्छा संबंधी ।
नफ़ा—(पु० अ०) फ़ायदा । लाभ ।
नफ़ासत—(स्त्री० अ०) उम्दापन । अच्छाई ।
नफ़ीरी—(स्त्री० फ़ा०) तुरही । शहनाई ।
नफ़ीस—(अ०) सुन्दर । सुघर । बहुमूल्य ।
नफ़स—(वि० अ०) उमदा । बढ़िया । साफ़ । सुंदर ।
नफ़्से अम्मारा—(अ०) विषयवासना । प्रवृत्ति ।
नबात—(अ०) हरी घास । तरकारी । सब्ज़ी ।
नब्ज़—(स्त्री० अ०) नाड़ी ।
नभ—(पु० हि०) आकाश । आसमान ।
नम—(वि० फ़ा०) गीला । तर ।
नमक—(पु० फ़ा०) लवण । नोन । —ख़्वार=(वि० फ़ा०) नमक खानेवाला । पालित होनेवाला ।—दान=(पु० हि०) पिसा हुआ नमक रखने का पात्र । —सार=(पु० फ़ा०) वह स्थान

जहाँ नमक निकलता या बनता हो।—हराम=कृतघ्न। —हरामी=कृतघ्नता। —हलाल=स्वामि-भक्त। —हलाली=स्वामि-भक्ति। नमकीन=(वि० फ़ा०) जिसमें नमक का सा स्वाद हो। ख़ूबसूरत।

नमदा—(पु० फ़ा०) जमाया हुआ ऊनी कंबल या कपड़ा।

नमस्कार—(पु० सं०) प्रणाम। झुककर अभिवादन करना।

नमस्ते—(सं०) नमस्कार।

नमाज़—(स्त्री० फ़ा०) मुसलमानों की ईश्वर-प्रार्थना। —गाह=(स्त्री० फ़ा०) मसजिद में वह जगह जहाँ नमाज़ पढ़ी जाती है। —बंद=(फ़ा०) कुश्ती का एक प्रकार का पेंच। नमाज़ी=(पु० फ़ा०) नमाज़ पढ़नेवाला।

नमी—(स्त्री० फ़ा०) गीलापन। तरी।

नमूदार—(वि० फ़ा०) प्रकट। ज़ाहिर।

नमूना—(पु० फ़ा०) बानगी आदर्श।

नम्र—(वि० सं०) जिसमें नम्रता हो। विनीत। झुका हुआ।

नय—(फ़ा०) बाँसुरी।

नयन—(पु० सं०) नेत्र। आँख।

नया—(वि० हि०) नवीन। ताजा। नूतन।

नर—(पु० सं०) पुरुष। आदमी।

नरई—(स्त्री० देश०) गेहूँ की बाल का डंठल।

नरक—(पु० सं०) दोज़ख़।

नरकट—(पु० हि०) बेंत की तरह का एक पौधा।

नरगिस—(पु० फ़ा०) एक फूल।

नरद—(स्त्री० हि०) चौसर खेलने की गोटी।

नरमा—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की कपास।

नर मेश—(फ़ा०) मेंढा।

नरसिंहा—(पु० हि०), एक बाजा।

नरी—(स्त्री० फ़ा०) बकरी या बकरे का रँगा हुआ चमड़ा। मुलायम चमड़ा।

नरेंद्र—(पु० सं०) राजा।

नरेश—(पु० सं०) राजा।

नरोत्तम—(पु० सं०) ईश्वर। भगवान।

नरोह—(स्त्री० देश०) पिंडली की हड्डी।

नर्म—(फ़ा०) मुलायम। गुदगुदा।

नर्मी—(स्त्री० हि०) कोमलता। नम्रता।

नल—(पु० हि०) पनाला। लोहे या सीसे का पोला लम्बा छड़।

नला—(पु० हि०) पेडू के अंदर की वह नाली जिसमें से होकर पेशाब नीचे उतरता है।

नली—(स्त्री० सं०) छोटा या पतला नल। नल के आकार की पोली हड्डी।

नवम्बर—(पु० अं०) अँग्रेज़ी का ग्यारहवाँ महीना।

नव—(पु० सं०) नवीन। नौ। —ग्रह=(पु० सं०) सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु ये ग्रह। नवमी=(सं०) नवीं तिथि। —युवक=(सं०) नौजवान। तरुण। —यौवना=(सं०) नौजवान औरत। —रत्न=(सं०) मोती, पन्ना, मानिक, गोमेद, हीरा, मूँगा, लहसुनिया, पद्मराग और नीलम या जवाहर ये नौ रत्न। —रस=(सं०) काव्य के नौ रस—शृङ्गार, करुण, हास्य, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शांत। नवला=(स्त्री० सं०) नई स्त्री। तरुणी। —शिक्षित=(सं०) वह जिसने अभी हाल में कुछ पढ़ा या सीखा हो।

नवाज़िश—(स्त्री० फ़ा०) मेहरबानी। कृपा। इनायत।

नवाब—(पु० अ०) बादशाह का प्रतिनिधि, जो किसी बड़े प्रदेश के शासन के लिये नियुक्त हो । —ज़ादा=(पु० फ़ा०) नवाब का पुत्र । नवाबी=(हि०) नवाब का पद । नवाब का काम ।

नवार—(फ़ा०) निवाड़, जिससे पलंग बुने जाते हैं ।

नवासा—(फ़ा०) दौहित्र । बेटी का बेटा ।

नवाह—(अ०) दिशा में । आस पास ।

नवीन—(वि० सं०) नया । ताजा । —ता=(हि०) नयापन ।

नवीस—(पु० फ़ा०) लिखने वाला । लेखक । नवीसी=लिखाई ।

नशा—(पु० फ़ा०) मतवाला-पन । —खोर=नशेबाज़ ।

नशोनुमा—(अ०) पैदा होना । बढ़ना ।

नशीन—(वि० फ़ा०) बैठनेवाला ।

नशीला—(वि० फ़ा०) नशा लाने वाला । मादक । नशेबाज़=(पु० फ़ा०) नशा वाला ।

नश्तर—(पु० फ़ा०) फोड़ा चीरने का तेज़ चाक़ू ।

नष्ट—(वि० सं०) बरबाद ।

नस—(स्त्री० हि०) रक्त-वाहिनी पतली नली । रग ।

नस्तालीक़—(पु० अ०) वह जिसका रंग-ढंग बहुत अच्छा और सुन्दर हो ।

नसर—(स्त्री० अ०) गद्य ।

नसल—(स्त्री० अ०) वंश । खानदान ।

नसीब—(पु० अ०) भाग्य । तक़दीर ।

नसीम—(पु० अ०) ठंढी । धीमी और बढ़िया ।

नसीहत—(स्त्री० अ०) उपदेश । सीख ।

तस्तालीक़ गो—(अ०) शुद्ध और स्वच्छ लिखने वाला ।

नहछू—(पु० हि०) विवाह की एक रस्म ।

नहर—(स्त्री० फ़ा०) जल बहाने

के लिये खोदकर बनाया हुआ रास्ता।

नहाना—(क्रि० हि०) स्नान करना।

नहीं—(अ० हि०) इन्कार करना।

नहूसत—(पु० अ०) उदासीनता। मनहूसी। अशुभता। दुर्भाग्य। दुर्दैव।

नाँघना—(क्रि० हि०) लाँघना।

नाइक—(अ०) नायक।

नाइचा—(फ़ा०) हुक्के का नैचा।

नाइत्तिफाकी—(स्त्री० फ़ा०) विरोध। मतभेद।

नाइन—(स्त्री० हि०) नाई की स्त्री।

नाईं—(स्त्री० हि०) समान दशा। समान।

नाई—(पु० हि०) नाऊ। हज्जाम।

नाउम्मेद—(वि० फ़ा०) निराश।

नाक—(स्त्री० हि०) नासिका। नासा। नाकड़ा=नाक का एक रोग।

ना-क़द्र—(वि० फ़ा०) जिसकी कोई कदर न हो। ना-क़द्री =अपमान।

नाका—(पु० हि०) प्रवेश-द्वार। मुहाना। नाकाबंदी=घुसने की रुकावट। नाकेदार= नाके या फाटक पर के सिपाही।

नाक़ाबिल—(फ़ा०) अयोग्य।

नकाम, नाकारा—(फा०) निरर्थक। बेकार। निकम्मा।

नाक़िस—(अ०) हानिकारक। नुक़सान करने वाला।

नाख़ुदा—(फा०) नाविक। मल्लाह।

नाख़ुश—(वि० फ़ा०) नाराज़। अप्रसन्न।

नाख़्वाँदा—(फा०) निरक्षर। अपढ़। मूर्ख।

नागाह—(फ़ा०) अचानक। अकस्मात्।

नाख़ुशी—(स्त्री० फा०) नाराज़ी। अप्रसन्नता।

नागवार—(फा०) असह्य। अरुचिकर।

नागहाँ—(फ़ा०) यकायक । अचानक ।
नाज़नीन—(फा०) कोमलाङ्गी । सुन्दरी ।
नाचीज़—(फा०) अप्रतिष्ठित । ज़लील ।
नाज़—(फा०) हाव-भाव । लाड़-प्यार ।
नाख़ून—(पु० फा०) नख । नहँ ।
नागरिकता—(स्त्री० सं०) नागरिक जीवन ।
नाचाक़ी—(स्त्री० फ़ा०) बिगाड़ । अनबन । वैमनस्य ।
नाचार—(फ़ा०) असमर्थ । लाइलाज़ ।
नाचीज़—(फा०) अप्रतिष्ठित । तुच्छ ।
नाज़िर—(पु० अ०) वह दलाल जो वेश्याओं को गाने बजाने के लिये ठीक करता और लाता हो ।
नाड़ी—(स्त्री० सं०) नली । धमनी ।
नाजिरात—(स्त्री० हि०) वह दलाली जो नाजिर को नाचने गानेवाली वेश्या आदि से मिलती है ।
नाज़िल—(अ०) उतरनेवाला । आविर्भूत ।
नाज़ुक—(फ़ा०) सुन्दर । कोमल । पतला ।
नातवाँ—(वि० फ़ा०) दुर्बल । अशक्त । नातवानी=(फ़ा०) दुर्बलता । कमज़ोरी ।
नातराश—(फा०) अशिष्ट । नीच ।
नाता—(पु० हि०) रिश्ता ।
नाताक़त—(वि० फ़ा०) निर्बल । कमज़ोर । नाताकती=दुर्बलता । कमज़ोरी ।
नाती—(पु० हि०) लड़की या लड़के का लड़का ।
नाते—(हि०) सम्बन्ध से । वास्ते । लिये । —दार=(वि० हि०) रिश्तेदार । संबंधी ।
नाथ—(पु० सं०) स्वामी मालिक । (स्त्री० हि०)

जानवरों की नाक की नकेल या रस्सी।

नाद—(पु० सं०) शब्द । आवाज़। ध्वनि।

नादान—(वि० फा०) अनजान। मूर्ख। नादानी= नासमझी। अज्ञान।

नादार—(वि० फा०) निर्धन। कंगाल।

नादारी—(स्त्री० फा०) ग़रीबी। निर्धनता।

नादिम—(वि० अ०) लज्जित। शरमिन्दा।

नादिर—(फा०) तुहफा।

नादिरशाही—(स्त्री० फ़ा०) ऐसा अंधेर जैसा नादिरशाह ने दिल्ली में मचाया था।

नादिहंद—(वि० फा०) न देनेवाला।

नादिहंदी—(स्त्री० फा०) किसी को कुछ न देने की प्रवृत्ति।

नादुरुस्त—(फा०) अशुद्ध। ग़लत।

नाधना—(क्रि० हि०) जोतना।

नाधा—(पु० हि०) वह रस्सी वा चमड़े की पट्टी जिससे हल वा कोल्हू की हरिस जुए में बाँधी जाती है।

नान—(फा०) रोटी।—वाई= रोटी शाक बेचनेवाला। —खताई=मीठी ख़स्ता टिकिया।

नानकोआपरेशन—(पु० अं०) असहयोग।

नाना—(वि० सं०) बहुत तरह के। बहुत। मामा का बाप। ननिहाल=(हि०) नानी का घर। नानी=माता की माता।

नाप—(स्त्री० हि०) माप। परिमाण। नापने का काम। —तौल=(हि०) नापने और तौलने की क्रिया। नापना=मापना। लम्बाई, चौड़ाई, गहराई या ऊँचाई निश्चित करना।

नापसंद—(वि० फ़ा०) जो पसन्द न हो। अस्वीकृत।

नापाक—(वि० फ़ा०) अशुद्ध

अपवित्र। नापाकी=अपवित्रता। अशुद्धता।
नापायदार—(वि० फ़ा०) जो टिकाऊ न हो। क्षणभंगुर। नापायदारी=(फा०) क्षणभंगुरता। अदृढ़ता।
नाफ़रमाँ—(पु० फ़ा०) अवज्ञा करनेवाला। हुक्म न माननेवाला।
नाफ़हम—(फ़ा०) नासमझ।
नाफ़ा—(पु० फ़ा०) कस्तूरी की थैली जो कस्तूरी मृगों की नाभि में होती है।
नाफ़ी—(अ०) नष्ट करने वाला।
नाबदान—(पु० हि०) पनाला। नरदा।
नाबालिग़—(वि० अ०) जिसका लड़कपन अभी दूर न हुआ हो। नाबालिग़ी=नाबालिग़ रहने की अवस्था।
नाबीना—(फ़ा०) अन्धा।
नाबूद—(वि० फ़ा०) नष्ट।
नाभि—(स्त्री० सं०) पहिये का मध्य भाग। ढोंढ़ी।
नामंज़ूर—(वि० फा०) अस्वीकृत।
नाम—(पु० हि०) वह शब्द जिससे किसी चीज़ या व्यक्ति का बोध हो। संज्ञा। नामक=नाम से प्रसिद्ध।—करण=हिन्दुओं के सोलह संस्कारों में से एक जिसमें बच्चे का नाम रक्खा जाता है। —ज़द=प्रसिद्ध। मशहूर। —दार=नामी। प्रसिद्ध प्रतिष्ठित। —धाम = नाम और पता। पता-ठिकाना।—धारी=नाम वाला। नामी। —वर=नामी। प्रसिद्ध। —वरी=कीर्त्ति। प्रसिद्धि। नामावली=नामों की सूची। नामी=मशहूर। नामी गिरामी= विख्यात।
नामर्द—(वि० फ़ा०) नपुंसक। डरपोक। नामर्दी = नपुंसकता। कायरपन।
नामहदूद—(फ़ा०) असीम। बेहद।
नामा—(फ़ा०) पत्र। ख़त। चिट्ठी।
नामाक़ूल—(वि० अ०) अयोग्य। नालायक़। उल्लू।

नामालूम—(वि० अ०) अज्ञात।
नामिनेटेड—(वि० अं०) मनोनीत। नामज़द।
नामुनासिब—(वि० अ०) अनुचित। अयोग्य।
नामुमकिन—(वि०अ०)असंभव।
नामुराद—(वि० फ़ा०) विफल मनोरथ।
नामुवाफ़िक़—(वि० फ़ा०) विरुद्ध।
नामेहरबान—(वि० फ़ा०) अकृपालु।
नामुबारक—(फ़ा०) अशुभ। मनहूस।
नायक—(पु० सं०) नेता। अगुआ। सरदार। स्वामी। श्रेष्ठ पुरुष।
नायब—(पु० अ०) किसी की ओर से काम करने वाला। मातहत।
नायाब—(वि० फ़ा०) अप्राप्य।
नायिका—(स्त्री० सं०) रूप-गुण सम्पन्न स्त्री।
नारंगी—(स्त्री० हि०) नीबू की जाति का एक पेड़ और फल।
नार—(अ०) आग। आतिश।
नारफ़ि़क—(पु० अं०) विलायती घोड़ों की एक जाति।
नारमन—(पु० अं०) फ्रांस के नारमंडी प्रदेश का निवासी।
नारसाई—(फ़ा०) पहुँच न होना।
नाराज़—(वि० फ़ा०) अप्रसन्न। नाखुश। नाराज़गी=अप्रसन्नता। नाराज़ी=अप्रसन्नता। कोप।
नारायण—(पु० सं०) भगवान्। ईश्वर।
नारियल—(पु० हि०) खजूर की जाति का एक पेड़। नारिकेल।
नारी—(स्त्री० सं०) स्त्री। औरत।
नार्थ—(पु० अं०) उत्तर दिशा।
नाल—(स्त्री० सं०) डाँडी। पौधे का डंठल। (अ०) घोड़े की सुम या जूते की एँड़ी में जड़ा जाने वाला लोहे का टुकड़ा। —बंद=नाल जड़ने वाला आदमी।
नालाँ—(फ़ा०) रोता हुआ। बिलखता हुआ।
नाला—(पु० हि०) छोटी नदी।

(फ़ा०) फ़रियाद । दुहाई देना । पुकार ।

नालायक़—(वि० फ़ा०) अयोग्य । निकम्मा । नालायकी = अयोग्यता ।

नालिश—(स्त्री० फ़ा०) फ़रियाद ।

नाली—(स्त्री० हि०) मोरी ।

नाव—(स्त्री० हि०) नौका । किश्ती ।

नावदान—(फ़ा०) पनाला । मोरी ।

नावाक़िफ़—(वि० फ़ा०) अनजान । अनभिज्ञ ।

नावाजिब—(वि० फ़ा) जो वाजिब या ठीक न हो ।

नाश—(पु० सं०) बरबादी ।

नाशपाती—(स्त्री० तु०) एक फल ।

नाशाइस्ता—(फ़ा०) असभ्य । अनुचित । नालायक़ । अयोग्य ।

नाशाद—(फ़ा०) अप्रसन्न । जो ख़ुश न हो ।

नाश्ता—(पु० फ़ा०) कलेवा । जलपान ।

नास—(स्त्री० हि०) सुँघनी । —दान = सुँघनी की डिबिया ।

नासमझ—(वि० हि०) जिसे समझ न हो । निर्बुद्धि । नासमझी = मूर्खता । बेवक़ूफ़ी ।

नासाज़—(फ़ा०) अस्वस्थ । नामुवाफ़िक़ ।

नासापुट—(पु० सं०) नथना ।

नासेह—(अ०) शिक्षा देनेवाला । उपदेशक ।

नासूर—(पु० अ०) नाड़ीव्रण । वह ज़ख़्म जो हमेशा बहा करे ।

नास्तिक—(पु० सं०) वह जो ईश्वर, परलोक आदि को न माने ।

नाहक़—(क्रि० वि०) व्यर्थ । बेफ़ायदा ।

ना-हमवार—(वि० फ़ा०) ऊँचा-नीचा । ऊबड़-खाबड़ ।

निंदा—(स्त्री० सं०) बुराई का वर्णन । अपवाद । बदनामी ।

निंदित=बुरा। निंद्य=निंदा करने योग्य।

निःशेष—(वि॰ सं॰) समाप्त। ख़तम।

निःश्वास—(पु॰ सं॰) साँस।

निःसंकोच—(सं॰) बेधड़क।

निःसंतान—(वि॰ सं॰) जिसके संतान न हो।

निःसंदेह—(वि॰ सं॰) बेशक।

निःसंशय—(व॰ सं॰) शंका-रहित।

निःसार—(वि॰ सं॰) जिसमें कुछ सार नहीं हो। फ़ज़ूल।

निःस्वार्थ—(वि॰ सं॰) बेगरज़।

निकट—(वि॰ सं॰) पास का। पास। —ता=समीपता। —वर्ती = पास वाला। —स्थ=जो निकट हो।

निकम्मा—(वि॰ हि॰) जो किसी काम का न हो।

निकर—(पु॰ अं॰) हाफ़ पैन्ट।

निकल—(स्त्री॰ अं॰) एक धातु।

निकलवाना—(क्रि॰ हि॰) निकालने का काम दूसरे से कराना।

निकाल—(पु॰ हि॰) निकास। कुश्ती का एक पेंच। —ना= बाहर करना। निकाला= निकालने का काम।

निकास—(पु॰ हि॰) निकलने के लिये खुला स्थान या छेद। दरवाज़ा। मैदान। रवानगी।

निकाह—(पु॰ अ॰) मुसल-मानी पद्धति के अनुसार किया हुआ विवाह।

निकियाना—(क्रि॰ देश॰) नोचकर धज्जी-धज्जी अलग करना।

निकुंज—(पु॰ सं॰) लताओं से छाया हुआ मंडप।

निखट्टू—(वि॰ हि॰) इधर-उधर मारा-मारा फिरनेवाला।

निखरना—(क्रि॰ हि॰) मैल छँटकर साफ़ होना। निखार=सफ़ाई। श्रृंगार। निखारना=साफ़ करना। पवित्र करना।

निखरी—(स्त्री० हि०) घी की पकी हुई रसोई।

निखालिस—(वि० हि०) विशुद्ध।

निखोरना—(क्रि० हि०) नाखून से नोचना।

निगमागम—(पु० सं०) वेद-शास्त्र।

निगराँ—(पु० फ़ा०) रक्षक। निगरानी = देखरेख। निरीक्षण।

निगलना—(क्रि० हि०) लील जाना। गले के नीचे उतार जाना।

निगह—(स्त्री० फ़ा०) निगाह। दृष्टि। —बान = रक्षक। —बानी = रखवाली। रक्षा।

निगार—(फ़ा०) चित्र। बेल-बूटा। नक्काशी।

निगाली—(स्त्री० हि०) हुक्के की नली।

निगाह—(स्त्री० फ़ा०) दृष्टि। नज़र।

निगुरा—(वि० हि०) जिसने गुरु से मंत्र न लिया हो।

निगूढ़—(वि० सं०) अत्यंत गुप्त।

निगेटिव—(पु० अं०) वह प्लेट जिस पर फोटो लिया जाता है।

निघंटु—(पु० सं०) वैदिक शब्दों का कोश।

निचला—(वि० हि०) नीचे का।

निचुड़ना—(क्रि० हि०) दबकर पानी या रस छोड़ना। निचोड़ = सार। सत। निचोड़ना = दबाकर पानी या रस निकालना।

निछावर—(स्त्री० हि०) उतारा। वारा। फेरा। उत्सर्ग।

निज—(वि० सं०) अपना।

निज़ा—(पु० अ०) झगड़ा। विवाद।

निज़ाम—(पु० अ०) इन्तज़ाम। हैदराबाद के नवाबों का पदवीसूचक नाम।

निज़ामत—(अ०) नाज़िम का पद या काम। वह कार्य्यालय जिसमें नाज़िम और उसके सहायक कर्म्मचारी रहते हों।

निठल्ला—(वि० हि०) बेकार।

निठुर—(वि० हि०) निर्दय।

निडर—(वि० हि०) निर्भय।

निढाल—(वि० हि०) गिरा हुआ। शिथिल।

नितांत—(वि० सं०) बिलकुल।

नित्य—(वि० सं०) हमेशा। —कर्म=रोज़ का काम। नैमित्तिक कर्म=पर्व। श्राद्ध, प्रायश्चित्त आदि कर्म।—प्रति =प्रतिदिन। हर रोज़।

निथरना—(क्रि० हि०) पानी छनकर साफ़ होना। निथारना=थिरा कर साफ़ करना।

निदर्शन—(पु० सं०) उदाहरण।

निदान—(पु० सं०) आदि कारण। रोग की पहचान।

निद्रा—(स्त्री० सं०) नींद। निद्रित=सोया हुआ।

निधड़क—(क्रि० हि०) बेरोक। बेखटके। निःशंक।

निधि—(स्त्री० सं०) ख़ज़ाना। गड़ा हुआ धन।

निनाद—(पु० सं०) शब्द। आवाज़।

निपट—(अव्य० हि०) निरा। केवल। बिल्कुल।

निपटारा—(पु० हि०) झगड़े का फ़ैसला।

निपात—(पु० सं०) पतन। विनाश। मृत्यु।

निपीड़ित—(वि० सं०) दबाया हुआ। जिसे पीड़ा पहुँचाई गई हो।

निपुण—(वि० सं०) कुशल। चतुर।

निफ़ाक़—(पु० अ०) विरोध। बैर। अनबन। बिगाड़।

निबन्ध—(पु० सं०) लेख।

निब—(स्त्री० अं०) लोहे की बनी हुई चोंच, जो अँगरेज़ी क़लमों की नोक का काम देती है।

निबकौरी—(स्त्री० हि०) नीम का फल। निबौली।

निबटना—(क्रि० हि०) फुरसत पाना। छुट्टी पाना। ख़तम होना।

निबटेरा—(पु० हि०) निर्णय

निबल—(वि० हि०) निर्बल। दुर्बल।

निबाह—(पु० हि०) निर्वाह। निबहना=पार पाना। छुटकारा पाना। निर्वाह होना। पूरा होना। निबाहना=निर्वाह करना। जारी रखना।

निबेड़ना—(क्रि० हि०) उन्मुक्त करना। छाँटना। निबटाना। अलग करना। पूरा करना। निबेड़ा=छुटकारा।

निबौली—(स्त्री० हि०) नीम का फल।

निभना—(क्रि० हि०) पार पाना। निर्वाह होना। लगातार बना रहना। निभाना=निर्वाह करना। बनाए और जारी रखना।

निमंत्रण—(पु० सं०) बुलावा। आह्वान।—पत्र=न्योते की चिट्ठी। निमंत्रित=जो निमंत्रित किया गया हो।

निमीलित—(वि० सं०) बंद। ढँका हुआ।

निमोना—(पु० हि०) चने या मटर के पिसे हुए हरे दानों को हल्दी मसाले के साथ घी में भूनकर बनाया हुआ रसेदार व्यंजन।

नियंता—(पु० हि०) नियम बाँधनेवाला। कार्य्य चलानेवाला।

नियंत्रित—(वि० सं०) क़ायदे का पाबंद।

नियत—(वि० सं०) पाबंद। मुकर्रर। निश्चित।

नियति—(स्त्री० सं०) निश्चय। ठहराव।

नियम—(पु० सं०) पाबंदी। क़ायदा। —पत्र=(सं०) प्रतिज्ञापत्र। शर्तनामा। —बद्ध=बाक़ायदा।

नियाज़मन्द—(फ़ा०) कृपापात्र। कृपाकांक्षी।

नियामत—(स्त्री० अ०) दुर्लभ पदार्थ। मज़ेदार खाना।

नियारिया—(पु० हि०) मिली हुई चीज़ों को अलग-अलग करनेवाला।

नियुक्त—(वि० सं०) नियोजित।

तैनात । नियुक्ति=तैनाती । मुक़र्ररी ।

नियोग—(पु० सं०) मुक़र्ररी । तैनाती । आर्यों की एक प्रथा ।

नियोजक—(पु० सं०) काम में लगानेवाला ।

निरंकुश—(वि० सं०) जिस पर कोई दबाव न हो ।

निरंतर—(वि० सं०) अंतर-रहित । हमेशा ।

निरक्षर—(वि० सं०) अनपढ़ । मूर्ख ।

निरपराध—(वि० सं०) बेक़सूर ।

निरपेक्ष—(वि० सं०) बेपरवा । अलग ।

निरभिमान—(वि० सं०) जिसे घमंड न हो ।

निरर्थक—(वि० सं०) बेफ़ायदा । निष्फल ।

निरवधि—(वि० सं०) अपार । लगातार । हमेशा ।

निरवलंब—(वि० सं०) बिना-सहारे । निराश्रय ।

निराकरण—(पु० सं०) छाँटना । हटाना । मिटाना ।

निराकार—(वि० सं०) जिसका कोई आकार न हो ।

निरादर—(पु० सं०) अपमान । बेइज़्ज़ती ।

निराधार—(वि० सं०) जिसे कोई सहारा न हो । बे-जड़-बुनियाद का ।

निराना—(क्रि० हि०) निकाना । खेत में से घास चुन-चुनकर निकालना ।

निरापद—(वि० सं०) सुरक्षित ।

निरामिष—(वि० सं०) जिसमें मांस न मिला हो ।

निराला—(पु० हि०) एकांत स्थान । अजीब । अनोखा ।

निराश—(वि० हि०) जिसे आशा न हो । नाउम्मेदी । निराशा=नाउम्मेदी ।

निराश्रय—(वि० सं०) बिना सहारे का ।

निराहार—(वि० सं०) भूखा ।

निरीक्षण—(पु० सं०) देख-रेख

निगरानी। निरीक्षक=देख-रेख करनेवाला।

निरीश्वरवाद—(पु० सं०) यह सिद्धांत कि कोई ईश्वर नहीं है। निरीश्वरवादी=जो ईश्वर का अस्तित्व न माने।

निरीह—(वि० सं०) जो किसी बात के लिये प्रयत्न न करे।

निरुत्तर—(वि० सं०) जिसका कुछ जवाब न हो। जो उत्तर न दे सके।

निरुत्साह—(वि० सं०) उत्साह-हीन।

निरुद्यम—(वि० सं०) बेकाम। निरुद्यमी=बेकार। निकम्मा।

निरुद्योगी—(पु० हि०) निकम्मा। बेकार।

निरुपद्रव—(वि० सं०) जिसमें कोई उपद्रव न हो। जो उपद्रव न करता हो। शांत।

निरुपम—(वि० सं०) जिसकी उपमा न हो। बेजोड़।

निरुपाधि—(वि० सं०) बाधा-रहित। मायारहित।

निरुपाय—(वि० सं०) जो कुछ उपाय न कर सके।

निरूपण—(वि० सं०) प्रकाश। विचार। निदर्शन।

निरोध—(पु० सं०) रोक। रुकावट।

निर्ख़—(पु० फ़ा०) भाव। दर। —नामा=बाज़ार दर। —बंदी=किसी चीज़ का भाव या दर निश्चित करना।

निर्गत—(वि० सं०) निकला हुआ।

निर्गुण—(पु० सं०) सत्व, रज और तम इन तीनों गुणों से परे। परमेश्वर। गुण-रहित।

निर्घोष—(पु० सं०) शब्द। आवाज़।

निर्जन—(वि० सं०) सुनसान।

निर्जर—(वि० सं०) कभी बुड्ढा न होनेवाला।

निर्जल—(वि० सं०) बिना जल का।

निर्जला एकादशी—(स्त्री० सं०) जेठ सुदी एकादशी।

निर्जीव—(वि० सं०) जीव-रहित । प्राण-हीन । अशक्त ।

निर्णय—(पु० सं०) निश्चय । फ़ैसला । निबटारा ।

निर्णीत—(वि० सं०) निर्णय किया हुआ ।

निर्दय—(वि० सं०) बेरहम । निर्दयता = बेरहमी ।

निर्दिष्ट—(वि० सं०) ठहराया हुआ । निश्चित ।

निर्देश—(पु० सं०) किसी पदार्थ को बतलाना । ठहराना या निश्चित करना । आज्ञा । ज़िक्र । नाम ।

निर्दोष—(वि० सं०) बेक़सूर । निर्दोषी = बेक़सूर ।

निर्द्वंद्व, निर्द्वंद—(वि० सं०) जिसका कोई विरोध करने वाला न हो ।

निर्धन—(वि० सं०) ग़रीब । कंगाल ।

निर्धारित—(वि० सं०) निश्चित किया हुआ ।

निर्बल—(वि० सं०) कमज़ोर । —ता = कमज़ोरी ।

निर्बुद्धि—(वि० सं०) मूर्ख । बेवक़ूफ़ ।

निर्बोध—(वि० सं०) अज्ञान । अनजान ।

निर्भय—(वि० सं०) निडर । —ता = निडरपन ।

निर्भर—(वि० सं०) आश्रित । अवलंबित ।

निर्भीक—(वि० सं०) बेडर । निडर । —ता = निर्भयता ।

निर्भ्रम—(वि० सं०) शंका-रहित ।

निर्मल—(वि० सं०) साफ़ । पवित्र । निर्दोष । निर्मलता = सफ़ाई । पवित्रता ।

निर्माण—(पु० सं०) रचना । निर्मित = बनाया हुआ ।

निर्मूल—(वि० सं०) बेजड़ । बेबुनियाद ।

निर्मोह—(वि० सं०) जिनके मन में मोह या ममता न हो । निर्मोही = निर्दय । निष्ठुर ।

निर्यात—(पु० सं०) वह माल

या वस्तु जो बेचने के लिये विदेश भेजा गया हो।

निर्लज्जता—(स्त्री० सं०) बेशर्मी। बेहयाई।

निर्लोभी—(वि० सं०) जिसे लोभ न हो।

निर्वाक्—(त्रि० सं०) जिसके मुँह से बात न निकले।

निर्वाचन—(पु० सं०) चुनाव। निर्वाचक=निर्वाचन करने वाला। मताधिकार प्राप्त मनुष्य। निर्वाचक-संघ=उन लोगों का समूह या समाज जिन्हें मताधिकार या वोट देने का अधिकार प्राप्त हो। निर्वाचित=चुना हुआ।

निर्वाण—(वि० सं०) अस्त। शांत। मृत। बुझना। मोक्ष। शान्ति।

निर्वात—(त्रि० सं०) जहाँ हवा न हो। स्थिर।

निर्वासन—(पु० सं०) निकालना। देश-निकाला।

निर्वाह—(पु० सं०) पालन। किसी बात का जारी रहना। पूरा होना।

निर्विकार—(वि० सं०) विकार-रहित।

निर्विघ्न—(वि० सं०) जिसमें कोई विघ्न न हो।

निर्विवाद—(वि० सं०) बिना झगड़े का।

निवाज़िश—(स्त्री० फ़ा०) कृपा। मेहरबानी। दया।

निवार—(स्त्री० हि०) लकड़ी का वह गोल चक्कर जो कुएँ की नींव में दिया जाता है और जिसके ऊपर कोठी की जोड़ाई होती है। नेवार।

निवारण—(पु० सं०) रोकना। हटाना। दूर करना। छुटकारा। निवारक=रोकने-वाला।

निवारी—(स्त्री० हि०) एक फूल।

निवाला—(पु० फ़ा०) कौर। ग्रास।

निवास—(पु० सं०) रहने का

स्थान। घर। होटल। निवासी=रहनेवाला।

निवृत्त—(वि० सं०) जो छुट्टी पा गया हो। छूटा हुआ। विरक्त। निवृत्ति=मुक्ति। छुटकारा।

निवेदन—(पु० सं०) विनय। प्रार्थना। समर्पण। निवेदक=निवेदन करनेवाला। निवेदित=निवेदन किया हुआ।

निशान—(पु० फ़ा०) चिह्न। पता। ठिकाना। झंडा। —ची=झंडा लेकर चलनेवाला। निशान-बरदार=निशानची।

निशाना—(पु० फ़ा०) लक्ष्य।

निशानी—(स्त्री० फ़ा०) यादगार। स्मृति-चिह्न।

निशास्ता—(पु० फ़ा) गेहूँ का सत या गूदा। माँड़ी।

निश्चय—(पु० सं०) विश्वास। निर्णय। पूरा इरादा। दृढ़ संकल्प।

निश्चल—(वि० सं०) अटल। स्थिर। —ता=स्थिरता।

निश्चित—(वि० सं०) तै किया हुआ। निर्णीत।

निषेध—(पु० सं०) मनाही। रुकावट।

निष्कपट—(वि० सं०) छल-रहित। सरल।

निष्क्रिय—(वि० सं०) जिसमें कोई क्रिया या व्यापार न हो।

निष्ठा—(स्त्री० सं०) ठहराव। अवस्था। चित्त का जमना। विश्वास। श्रद्धा। भक्ति।

निष्ठुर—(वि० सं०) कठिन। क्रूर। बेरहम।

निष्फल—(वि० सं०) व्यर्थ। बेफ़ायदा।

निसवाँ—(अ०) स्त्री सम्बन्धी। ज़नानी।

निसार—(अ०) निछावर करना। बलिदान करना।

निस्तब्ध—(वि० सं०) निश्चेष्ट।

निस्तार—(पु० सं०) छुटकारा। मुक्ति। बचाव। उद्धार।

निस्तेज—(वि० हि०) तेजरहित। मलिन।

निस्फ़—(वि० अ०) आधा।

निस्बत—(स्त्री० अ०) ताल्लुक़। सम्बन्ध।

निस्संकोच—(वि०सं०) संकोच-रहित। बेधड़क।

निस्संतान—(वि० सं०) जिसे कोई संतान न हो।

निस्संदेह—(क्रि० वि० सं०) अवश्य। सचमुच।

निस्सार—(वि० सं०) सार-रहित।

निहत्था—(वि० हि०) शस्त्रहीन। ख़ाली हाथ।

निहलिस्ट—(पु० अं०) रूस देश का एक दल।

निहाई—(स्त्री० हि०) सोनारों और लोहारों का एक औज़ार जिस पर वे धातुओं को रख-कर हथौड़े से कूटते या पीटते हैं।

निहायत—(वि० अ०) बहुत अधिक। अत्यंत।

निहार—(फ़ा०) रोज़। दिन।

निहाल—(फ़ा०) कामयाब। सफल।

निहाँ—(फ़ा०) अप्रकट। छिपा हुआ।

नीच—(वि० सं०) तुच्छ। अधम। —ता=तुच्छता।

नीचा—(वि० हि०) गहरा। झुका हुआ। नत। क्षुद्र। छोटा या ओछा।

नीज़—(फ़ा०) भी।

नीति—(स्त्री० सं०) व्यवहार की रीति। राजा का कर्त्तव्य। युक्ति। उपाय। —शास्त्र= वह शास्त्र जिसमें देश, काल और पात्र के अनुसार बरतने के नियम हों अथवा प्रबंध और शासन का विधान हो।

नीबू—(पु० हि०) एक फल।

नीम—(पु० हि०) एक पेड़। (फ़ा०) आधा। —जान= प्रेमी। आशिक़। अधमरा। —बिस्मिल=अधमरा। आधा घायल।

नीमास्तीन—(स्त्री० फ़ा०) एक

आधी बाँह की फतुई या कुरती ।

नीयत—(स्त्री० अ०) भावना । आशय । मंशा । इरादा ।

नीरस—(वि सं०) रसहीन । शुष्क । फीका ।

नील—(वि० सं०) नीले रङ्ग का । नीला रङ्ग । एक पौधा जिसमें नीला रङ्ग निकलता है । —कंठ=जिसका कंठ नीला हो । एक चिड़िया । —गाय =एक जंगली जानवर ।

नीलम—(पु० फ़ा०) नील-मणि । नीले रङ्ग का रत्न ।

नीला—(वि० हि०) आकाश के रङ्ग का ।

नीलाम—(पु० हि०) बोली बोल कर बेंचना । —घर=वह घर या स्थान जहाँ चीज़ें नीलाम की जाती हैं ।

नीलोफ़र—(पु० फ़ा०) नील-कमल । कुमुद ।

नींव—(स्त्री० हि०) दीवार उठाने के लिये गहरा किया हुआ स्थान ।

नुक़ता—(पु० अ०) बिंदी। चुटकुला ।—चीन=ऐब ढूंढ़ने वाला या निकालने वाला। —चीनी=ऐबजाई । दोष निकालने का काम ।

नुक़सान—(पु० अ०) हानि। घाटा । कमी । —देह= हानिकारक ।

नुकीला—(वि० हि०) नोक-दार ।

नुक्कड़—(पु० हि०) नोक । छोर । अंत । कोना ।

नुक़्ता—(अ०) बिन्दु । विचार-णीय विषय ।

नुक़्स—(पु० अ०) दोष । ऐब। कमी । न्यूनता ।

नुत्फ़ा—(पु० अ०) वीर्य । शुक्र। —हराम=जिसकी उत्पत्ति व्यभिचार से हो ।

नुमाइन्दा—(पु० फ़ा०) प्रति-निधि ।

नुमाइश—(स्त्री० फ़ा०) प्रदर्शन । दिखावा । —गाह =प्रदर्शिनी । नुमाइशी= दिखाऊ।

नुमायाँ—(फ़ा०) प्रत्यक्ष । प्रकट ।

नुसख़ा—(पु०) दवा का पुरजा । उपाय ।

नूर—(पु० अ०) ज्योति । प्रकाश । —बख़्श=(फ़ा०) प्रकाश-दाता । रोशनी देने वाला । —चश्म=आँख की ज्योति । बेटा । पुत्र ।

नूरानी—(अ०) प्रकाशवान । रौशन । प्रभावान ।

नूह—(पु० अ०) यहूदी, ईसाई और मुसलमान मतों के अनुसार एक पैगंबर का नाम जिनके समय में बड़ा भारी तूफ़ान आया था ।

नेक—(वि० फ़ा०) अच्छा । भला । शिष्ट । सज्जन । —चलन=सदाचारी । —चलनी= सदाचार । भलमनसाहत । —नाम= यशस्वी । —नामी=(फ़ा०) कीर्ति । सुयश । —नीयत = अच्छे संकल्प वाला । विश्वासी । —नीयती= ईमानदारी । —बख़्त = भाग्यवान् । सुशील । नेकी=भलाई । सज्जनता ।

नेगेटिव—(पु० अं०) फोटोग्राफी में वह शीशा जिस पर चित्र लिया जाता है ।

नेचर—(पु० सं०) प्रकृति । कुदरत ।

नेज़ा—(पु० फ़ा०) बरछा । भाला । निशान ।

नेटिव—(वि० अं०) देशी । देश का ।

नेता—(पु० हि०) नायक । सरदार । स्वामी ।

नेत्री—(स्त्री० सं०) अग्रगामिनी । शिक्षयित्री ।

नेनुआ, नेनुवा—(पु० हि०) एक भाजी या तरकारी ।

नेपचून—(पु० फ़रासीसी) सूर्य की परिक्रमा करनेवाला एक ग्रह ।

नेपथ्य—(पु० सं०) सजावट । नाटक में परदे के पीछे का स्थान । रंगशाला ।

नेफ़ा—(पु० फ़ा०) पायजामे

या लहँगे के घेर में इज़ारबंद या नाड़ा पिरोने का स्थान।

नेबुला--(पु० अं०) आकाश में धुएँ या कुहरे की तरह फैला हुआ क्षीण प्रकाश-पुञ्ज। नीहारिका।

नेवला—(पु० हि०) गिलहरी के आकार का एक जन्तु।

नेवी—(स्त्री० अं०) नौ-सेना। जलसेना।

नेसुहा—(पु० हि०) ज़मीन में गड़ा हुआ लकड़ी का कुन्दा जिस पर गन्ना या चारा काटते हैं।

नेस्त—(वि० फ़ा०) जो न हो। नहीं। नष्ट। नेस्तो=न होना। बर्बादी।

नैचा—(पु० फ़ा०) हुक्के की नली, जिसे मुँह में रखकर धुँआँ खींचते हैं। —बंद=नैचा बनानेवाला।

नैनसुख—(पु० हि०) एक प्रकार का चिकना सूती कपड़ा।

नैशनल—(वि० अं०) राष्ट्र का। राष्ट्रीय। सार्वजनिक।

नैशनालस्ट—(पु० अं०) वह जो राष्ट्र-पक्ष का पक्षपाती हो। राष्ट्रवादी।

नैहर—(पु० हि०) स्त्री के पिता का घर। मायका। पीहर।

नोक—(स्त्री० फ़ा०) अनी। सूक्ष्म। अग्रभाग।

नोकझोंक—(स्त्री० हि०) लाग-डाँट।

नौ—(फ़ा०) नया।

नौकर—(फ़ा०) सेवक। ख़िदमतगार। —शाही=वह सरकार या शासन-प्रणाली जिसमें राजसत्ता या शासन-सूत्र उच्च राजकर्मचारियों या बड़े-बड़े सरकारी अफसरों के हाथों में रहे। नौकरानी=दासी। नौकरी=नौकर का काम। सेवा। नौकरी पेशा=वह जिसका काम नौकरी करना हो।

नौका—(स्त्री० सं०) नाव।

नौज—(अव्य० अ०) ऐसा न हो।

नौजवान—(वि० फ़ा०) नवयुवक।

नौज़ा—(पु० हि०) एक मेवा।

नौतोड़—(वि० हिं०) नया तोड़ा हुआ।
नौनिहाल—(फ़ा०) नया पौधा।
नौबत—(स्त्री० फ़ा०) बारी। दशा। हालत। समय-समय पर बजनेवाला बाजा। समय। —खाना=नक्कारखाना।
नौरोज़—(पु० फ़ा०) पारसियों में नए वर्ष का पहला दिन। त्योहार का दिन।
नौशा—(पु० फ़ा०) दूल्हा। वर। नौजवान। बादशाह।
नौसादर—(पु० हिं०) एक तीक्ष्ण झालदार नमक।
नौसिख—(वि० हिं०) जिसने कोई काम हाल में सीखा हो।
नौहँड़—(पु० हिं०) कोरी हँड़िया।
नौह—(अ०) विलाप करना। रोना।
न्यहार—(फ़ा०) निराहार। जिसने कुछ न खाया हो।
न्याय—(पु० सं०) इन्साफ़। नियम के अनुकूल बात। —कर्त्ता=न्याय करनेवाला। न्यायतः=न्याय से। न्यायाधीश=जज। न्यायालय=अदालत। न्यायी=न्याय करनेवाला।
न्यारा—(वि० हिं०) दूर। अलग।
न्यारिया—(पु० हिं०) सुनारों के नियार (राख इत्यादि) को धोकर सोना-चाँदी-एकत्र करनेवाला।
न्यू—(अं०) नया।
न्यूज़—(स्त्री० अं०) समाचार। संवाद। खबर। —पेपर=समाचारपत्र। अखबार।
न्यून—(वि० सं०) कम। थोड़ा।
न्योछावर—(स्त्री० हिं०) उतारा। उत्सर्ग।
न्योता—(पु० हिं०) बुलावा। निमन्त्रण।
न्योला—(पु० हिं०) गिलहरी के आकार का एक जन्तु।
न्योली—(स्त्री० हिं०) हठयोग की क्रिया जिसमें पेट के नलों को पानी से साफ़ करते हैं।

प—हिन्दी-वर्णमाला में पवर्ग का पहला वर्ण।

पंक्ति—(सं०) क़तार। —बद्ध =कतार में बँधा हुआ।

पंखा—(पु० हि०) बिजना। बेना। (स्त्री०) पंखी।

पखुड़ा—(पु० हि०) कंधे और बाँह का जोड़।

पंच—(वि० सं०) पाँच। समाज। जनता। पंचक=पाँच का समूह। —गव्य=(पु० सं०) गाय के दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र का मिश्रण। —तत्त्व=पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश। पंचभूत। पँचमेल=जिसमें पाँच या कई प्रकार की चीज़ें मिली हों। पंचांग=पत्रा। पंचायत= पंचों की बैठक या सभा। कमेटी। पंचायती=पंचों का।

पंज—(फ़ा०) पाँच। पंजुम= (फ़ा०) पाँचवाँ।

पंजर—(पु० सं०) कंकाल। ठटरी।

पंजा—(पु० फ़ा०) पाँच का समूह। हथेली के सहित हाथ या पैर की पाँच उँगलियाँ।

पंजाबी—(वि० फ़ा०) पंजाब का।

पंजीरी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का चूर्ण जो आटे को घी में भूनकर उसमें चीनी और धनिया इत्यादि डालकर बनाते हैं।

पँड़वा—(पु०) भैंस का बच्चा।

पंडा—(पु० हि०) पुजारी।

पंडाल—(पु० अं०) किसी भारी समारोह के लिये बनाया हुआ विस्तृत मंडप।

पंडित—(वि० सं०) विद्वान्। ज्ञानी। —म्मन्य=अपने को विद्वान् समझनेवाला। मूर्ख। पंडिता = विदुषी। पंडिताई=पांडित्य। विद्वत्ता। पंडिताइन=पंडित की स्त्री।

पंडिताऊ=(वि० हि०) पंडितों के ढँग का।

पंडुक—(पु० हि०) एक पक्षी।

पंथ—(पु० हि०) रास्ता। राह। पंथी=राही। पथिक।

पंद—(स्त्री० फ़ा०) शिक्षा। उपदेश।

पउला—(पु० हि०) एक प्रकार का खड़ाऊँ।

पकड़—(स्त्री० हि०) चंगुल। धरना।—धकड़=धर-पकड़। —ना=थामना। धरना। पकड़ाई=धरना।

पकना—(क्रि० हि०) कच्चा न रहना। पक्का=(वि० हि०) पका हुआ।

पकवान—(पु० हि०) घी में तलकर बनाई हुई खाने की वस्तु।

पक्काशय—(पु० सं०) पेट में अन्न पकने की जगह।

पक्ष—(पु० सं०) पंद्रह दिन का पाख। तरफ़। ओर। —पात=तरफ़दारी। पक्षाघात=आधे अंग का लकवा।

पखवारा—(पु० हि०) पन्द्रह दिन का समय।

पखारना—(क्रि० हि०) धोना।

पखाल—(स्त्री० हि०) बड़ी मशक।

पखावज—(स्त्री० हि०) एक बाजा।

पखेरू—(पु० हि०) पक्षी। चिड़िया।

पगड़ी—(स्त्री० हि०) पाग। साफा।

पगुराना—(क्रि० हि०) जुगाली करना।

पचगुना—(वि० हि०) पाँच बार अधिक। पाँच गुना।

पचड़ा—(पु० हि०) झंझट। बखेड़ा।

पचरंग—(पु० हि०) चौक पूरने की सामग्री।

पचाना—(क्रि० हि०) हज़म करना।

पचासा—(पु० हि०) एक ही प्रकार की पचास वस्तुओं का समूह।

पच्चर—(स्त्री० हि०) काठ का

पैंद]। लकड़ी की बड़ी मेख या खूँटा।

पच्ची—(स्त्री० हि०) किसी धातु-निर्मित पदार्थ पर किसी अन्य धातु के पत्तर का जड़ाव।

पच्छिम—(पु० सं०) वह दिशा जिसमें सूर्य अस्त होता है। मग़रिब।

पछताना—(क्रि० हि०) पछ-तावा करना।

पछाड़—(स्त्री० हि०) मूर्छित होकर गिरना। कुश्ती का एक पेंच। —ना=गिराना।

पजावा—(पु० हि०) आवाँ। ईंट पकाने का भट्ठा।

पज़ीर—(फ़ा०) क़ुबूल करना। माननेवाला।

पटकन—(स्त्री० हि०) ज़मीन पर गिरा देना। पटकना=गिरा देना।

पटका—(पु० हि०) कमरबंद। कमरपेच।

पटतर—(पु० हि०) बराबरी। समानता। उपमा।

पटना—(क्रि० हि०) निभना। भरना।

पटपर—(वि० हि०) बराबर। चौरस।

पटबंधक—(पु० हि०) एक प्रकार का रेहन।

पटरानी—(स्त्री० हि०) राजा की सब से बड़ी रानी।

पटल—(पु० सं०) पर्दा। आँख के पर्दे। तख़्ता।

पटवारी—(पु० हि०) गाँव की ज़मीन और उसके लगान का हिसाब-किताब रखनेवाला एक सरकारी कर्मचारी।

पटसन—(पु० हि०) एक पौधा जिसके रेशे से रस्सी, बोरे, टाट और वस्त्र बनाये जाते हैं।

पटहार—(वि० हि०) रेशम के डोरों से गहना गूँथनेवाला।

पटा—(पु० हि०) प्रायः दो हाथ लम्बी किर्च के आकार की लोहे की फट्टी जिससे तलवार को काट और बचाव सीखे जाते हैं। पीढ़ा। पटरा।

पटाव—(पु० हि०) पाटने की क्रिया। भराव।
पटु—(व० सं०) निपुण। कुशल। होशियार। चतुर।
पटुवा—(पु० हि०) पटसन। जूट। पटहार।
पटेल—(पु० हि०) गाँव का मुखिया या चौधरी।
पटेला—(पु० हि०) हेंगा। खेत समतल करने की लकड़ी।
पटैत—(पु० हि०) पटा खेलने या लड़ने वाला।
पट्टा—(पु० सं०) अधिकार-पत्र।
पट्टी—(स्त्री० हि०) तख़्ती। पाटी। —दार=हिस्सेदार। बराबर का अधिकारी। —दारी=हिस्सेदारी।
पट्ठा—(पु० हि०) जवान। तरुण।
पठान—(पु० पश्तो) एक मुसलमान जाति।
पठित—(वि० सं०) जिसे पढ़ चुके हों। शिक्षित।
पड़ता—(पु० हि०) लागत।
पड़ताल—(स्त्री० हि०) जाँच। अनुसंधान।
पड़ती—(स्त्री० हि०) बिना जुती हुई भूमि।
पड़ाव—(पु० हि०) वह स्थान जहाँ सेना या यात्री ठहरते हों।
पड़ोस—(पु० हि०) किसी के घर के समीप के घर। मोहल्ला। पड़ोसी=पड़ोस में रहनेवाला।
पढ़ना—(क्रि० हि०) किसी लिखावट के अक्षरों का अभिप्राय समझना या उच्चारण करना। पढ़ाई=अध्ययन। पढ़ाना=शिक्षा देना। अध्यापन करना।
पण—(पु० सं०) प्रतिज्ञा।
पतङ्ग—(पु० सं०) फतिङ्गा। कनकौवा। —बाज=(हि०) पतंग उड़ाने का शौकीन। —बाज़ी=पतङ्ग उड़ाना। पतङ्गा=फतिंगा। उड़ने वाला कीड़ा।

पतझड़—(स्त्री० हिं०) शिशिर ऋतु ।

पतन—(पु० सं०) गिरना । तबाही । अवनति ।

पतला—(वि० हिं०) जो मोटा न हो । कृश ।

पतलून—(अं०) अङ्गरेज़ी पाजामा ।

पतवार—(स्त्री० हिं०) एक लकड़ी जिसके द्वारा नाव मोड़ी या घुमाई जाती है ।

पता—(पुं० हिं०) व्यक्ति या स्थान का नाम तथा परिचय । ठिकाना ।

पताका—(स्त्री० सं०) झंडा । झण्डी ।

पति—(पुं० सं०) स्वामी । मालिक ।

पतित—(वि० सं०) गिरा हुआ । महापापी ।

पतिव्रता—(वि० सं०) सती ।

पतीज़ी—(स्त्री० हिं०) देगची ।

पतोहू—(स्त्री० हिं०) बेटे की स्त्री । पुत्र-बधू ।

पत्तल—(स्त्री० हि०) पत्तों का सींकों से जोड़कर बना हुआ हुआ पात्र, जिससे थाली का काम लिया जाता है ।

पत्ती—(स्त्री० हि०) छोटा पत्ता । हिस्सा । भाग ।

पत्थर—(पुं० हि०) पृथ्वी के के कड़े स्तर का खंड । स्टोन ।

पत्नी—(स्त्री० सं०) विधि-पूर्वक विवाहित स्त्री । —व्रत= अपनी विवाहिता स्त्री के अतिरिक्त और किसी स्त्री से गमन न करने का संकल्प या नियम वाला पुरुष ।

पत्र—(पु० सं०) पत्ता । पर्ण । पत्ती । लिखा हुआ काग़ज़ । चिट्ठी । पृष्ठ । सफ़ा । पत्तर । वरक । —कार=पत्र-संचालक । संपादक । —व्यवहार =चिट्ठी-पत्री । पत्रिका— चिट्ठी । खत । समाचार-पत्र । अखबार । पत्री= चिट्ठी । खत । पत्रा= —तिथि-पत्र । पञ्चांग ।

पथ—(पु० सं०) मार्ग । रास्ता । —दर्शक, पथ-प्रदर्शक=राह

दिखलाने वाला। पथिक = यात्री। मुसाफिर।

पथरी—(स्त्री० हिं०) पत्थर का कटोरा। एक प्रकार का रोग। चकमक पत्थर। सिल्ली।

पद—(पु० सं०) व्यवसाय। काम। दर्जा। वर्ग। गीत। भजन। पैर के चिन्ह। मोक्ष। पदक = मेडल। तमगा। —च्युत = बर्खास्त। दलित। पैरों से रौंदा हुआ। —योजना = कविता के लिए पदों का जोड़ना। पदवी = उपाधि। ओहदा। खिताब। पदाधिकारी = ओहदेदार। पदार्थ = पद का अर्थ। चीज़। वस्तु। पदार्थ-विज्ञान = वह विद्या जिसके द्वारा भौतिक पदार्थों और व्यापारों का ज्ञान हो। पदार्थ-विद्या = वह विद्या जिसमें पदार्थों का तत्त्व बतलाया गया हो। पदार्पण = पैर रखना। पदावली = वाक्यों की श्रेणी। भजनों का संग्रह। पद्य।

पद्म—(पु० सं०) कमल। पद्मासन = योग का एक आसन। पद्मिनी-कमलिनी। छोटा कमल। सर्वोत्तम स्त्री।

पदच्छेद—(पु० सं०) किसी वाक्य के क्रमक शब्द को व्याकरण के नियमों के अनुसार अलग-अलग करने की क्रिया।

पद्य—(वि० सं०) कविता। छन्द। पद्यात्मक = छन्दोबद्ध।

पधारना—(क्रि० हि०) जाना। गमन करना। आ पहुँचना।

पनकपड़ा—(पु० हि०) चोट लगने या कटने या छिलने पर बाँधा जाने वाला गीला कपड़ा।

पनघट—(पु० हि०) पानी भरने का घाट।

पनचक्की—(स्त्री० हि०) पानी के ज़ोर से चलने वाली चक्की या और कोई कल।

पनडब्बा—(पु० हि०) पानदान।

पनडुब्बा—(स्त्री० हि०) गोताखोर।

पनडुब्बी—(स्त्री० हि०) मुरग़ाबी । एक जल पक्षी । सबमेरीन ।

पना—(पु० हि०) आम, इमली आदि के रस से बनाया हुआ शरबत । पन्ना ।

पनाह—(स्त्री० फ़ा०) त्राण । बचाव । शरण ।

पनीर—(पु० फा०) फाड़ कर जमाया हुआ दूध । छेना ।

पन्ना—(पु० हि०) एक रत्न । मरकत । ज़मुर्रद ।

पन्नी—(स्त्री० हि०) सुनहला या रुपहला कागज ।

पपड़ा—(पु० हि०) लकड़ी का रूखा छिलका ।

पपड़ी—(स्त्री० हि०) ऊपर की सूखी और सिकुड़ी हुई परत ।

पपीहा—(पु० देश०) चातक ।

पपीता—(पु० देश०) अंड खरबूजा । एरंड ककड़ी ।

पबलिक—(स्त्री० अं०) जनता । सर्वसाधारण । —ली=खुले आम । —मैन=नेता । लीडर । —वर्क्स=इञ्जीनियरी का महकमा । —प्रासिक्यूटर=पुलिस का एक अफसर । पब्लिशर=पुस्तक-प्रकाशक ।

पयाम—(फा०) सन्देश । पैग़ाम ।

पयाल—(पु० हि०) धान, कोदों आदि के सूखे डंठल ।

परन्तु—(अव्य० सं०) किन्तु । लेकिन ।

परंपरा—(स्त्री० सं०) चला आता हुआ सिलसिला । अनुक्रम । —गत=परम्परा से चला आता हुआ ।

परकना—(क्रि० हि०) हिलना-मिलना । अभ्यास पड़ना ।

परकार—(पु० फ़ा०) वृत्त या गोलाई खींचने का औज़ार ।

परकाला—(पु० फा०) टुकड़ा । हिस्सा ।

परख—(स्त्री० हि०) जाँच । परीक्षा । परखना=परीक्षा करना । जाँच करना । परखाई=परखने का काम । परखने की मजदूरी । परखाना=परीक्षा करवाना । जँचवाना ।

परचना—(क्रि० हि०) हिलना-मिलना । घनिष्ठता प्राप्त करना ।

परचा—(पु० फा०) कागज़ । चिट्ठी । पत्र । परीक्षा में आने वाला प्रश्न-पत्र ।

परचाना—(क्रि० हि०) हिलाना मिलाना । आकर्षित करना ।

परछाईं—(स्त्री० हि०) प्रतिबिम्ब । साया ।

परतंत्र—(वि० सं०) पराधीन । परवश ।—ता=पराधीनता ।

परत—(स्त्री० हि०) तह । स्तर ।

परतला—(पु० हि०) चमड़े या मोटे कपड़े की चौड़ी पट्टी जिसमें तलवार लटकाई जाती है ।

परदा—(पु० फा०) आड़ । —फाश=भेद खुलना । —नशीन=परदे में रहने वाली ।

परदादा—(पु० हि०) दादा का बाप । प्रपितामह ।

परदेश—(पु० सं०) विदेश । दूसरे देश का ।

परनाना—(पु० हि०) नाना का बाप ।

परनाला—(पु० हि०) पनाला । नाबदान । मोरी ।

परब्रह्म—(पु० सं०) ब्रह्म जो जगत से परे है ।

परम—(वि० सं०) अत्यन्त । हद से ज़्यादा । —पिता= परमेश्वर । —हंस=वह संन्यासी जो ज्ञान की परमावस्था को पहुँच गया हो । परमाणु = अत्यन्त सूक्ष्म अणु । परमानन्द =बहुत बड़ा सुख । ब्रह्म के अनुभव का सुख । आनन्द-स्वरूप ब्रह्म । परमार्थ=सब से बढ़कर वस्तु । परमेश्वर=संसार का कर्त्ता ।

परमट—(पु० अं०) कर । महसूल । चुङ्गी ।

परमट—(पु० अं०) कस्टम हाउस । चुङ्गी घर ।

परमनेंट—(वि० अं०) स्थायी । क़ायम ।

परलोक—(पु० सं०) दूसरा लोक।

परवर—(फा०) पालनेवाला। —दिगार=(फा०) पालन करनेवाला। ईश्वर। परवरिश=(फा०) पालन-पोषण। रक्षा।

परवल—(पु० हि०) एक तरकारी।

परवश—(वि० सं०) पराधीन।

परवानगी—(फ़ा०) इजाज़त। आज्ञा। अनुमति।

परवाना—(पु० फा०) आज्ञापत्र। तितली।

परसना—(क्रि० हि०) छूना। भोज्य पदार्थ किसी के सामने रखना। परोसना।

परसों—(अव्य हि०) गत दिन से पहले का दिन। आगामी दिन से आगे का दिन।

परस्पर—(क्रि० वि० सं०) आपस में।

परस्तिश—(फ़ा०) पूजा। इबादत।

परहेज़—(पु० फ़ा०) संयम। —गार=संयमी।

पराँठा—(पु० हि०) घी लगाकर तवे पर सेंकी हुई रोटी।

पराकाष्ठा—(स्त्री० सं०) अन्त। हद।

पराक्रम—(पु० सं०) बल। शक्ति। सामर्थ्य। पुरुषार्थ। पराक्रमी=बलवान। वीर। पुरुषार्थी।

पराग—(पु० सं०) पुष्प-रज।

परागन्दा—(फा०) परेशान। बिखरा हुआ।

पराङ्मुख—(वि० सं०) विमुख। उदासीन। विरुद्ध।

पराजय—(स्त्री० सं०) हार। शिकस्त। पराजित=हारा हुआ। परास्त।

परात—(स्त्री० हि०) थाली के आकार का एक बड़ा बर्तन।

पराधीन—(वि० सं०) परवश।

पराभव—(पु० सं०) पराजय। हार।

पराभूत—(वि० सं०) पराजित। हारा हुआ।

परामर्श—(पु० सं०) विचार। विवेचन। निर्णय। युक्ति। सलाह।

परायण—(त्रि० सं०) तत्पर। निरत।

पराया—(पु० हि०) दूसरे का।

परावर्तन—(पु० सं०) पलटना। लौटना।

पराश्रय—(पु० सं०) पराया भरोसा। पराधीनता। पराश्रित=जिसे दूसरे ही का सहारा हो।

परास्त—(त्रि० सं०) पराजित। हारा हुआ। दबा हुआ।

परिक्रमा—(स्त्री० हि०) चारों ओर घूमना। फेरी।

परिघ—(पु० सं०) गँड़ासा।

परिचय—(पु० सं०) अभिज्ञता। जानकारी। ज्ञान। प्रमाण। पहचान। परिचित=जाना-बूझा।

परिचर्या—(स्त्री० सं०) सेवा। टहल।

परिचालक—(पु० सं०) चलाने वाला। संचालक।

परिच्छद—(पु० सं०) ढाकने वाली वस्तु। पट।

परिच्छन्न—(त्रि० सं०) छिपा हुआ।

परिच्छेद—(पु० सं०) विभाजन। खंड या टुकड़े करना। ग्रंथ का कोई स्वतन्त्र विभाग। अध्याय। प्रकरण।

परिजन—(पु० सं०) परिवार। कुटुम्ब।

परिज्ञान—(पु० सं०) पूर्ण ज्ञान। सूक्ष्म ज्ञान।

परिणत—(त्रि० सं०) रूपान्तरित। बदलना।

परिणय—(पु० सं०) विवाह। शादी।

परिताप—(पु० सं०) आँच। दुःख। रंज। पश्चात्ताप। भय।

परिभाषा—(स्त्री० सं०) स्पष्ट कथन।

परिमल—(पु० सं०) उत्तम गंध। सुवास।

परिमाण—(पु० सं०) तौल। वज़न।

परिमार्जन—(पु० सं०) माँजना।

परिमित—(वि० सं०) नपा-तुला हुआ। महदूद।

परिशिष्ट—(वि० सं०) बचा हुआ। पुस्तक या लेख का वह अंश जिसमें ऐसी बातें लिखी गई हों जो यथा स्थान देने से छूट गई हों।

परिशोध—(पु० सं०) पूरी सफाई। चुकता।

परिश्रम—(पु० सं०) मेहनत। परिश्रमी=मेहनती।

परिषद्—(स्त्री० सं०) सभा। मजलिस।

परिष्कार—(पु० सं०) शुद्धि। स्वच्छता। गहना। सिङ्गार।

परिहास—(पु० सं०) मज़ाक। हँसी।

परी—(स्त्री० फा०) देव बाला। —पैकर=सुन्दर। माशूक। —जाद=अत्यन्त सुन्दर। परिस्तान=परियों का लोक। सौंदर्य का अखाड़ा।

परीक्षक—(पु० सं०) परीक्षा करने या लेने वाला।

परीक्षा—(स्त्री० सं०) इम्तहान। समालोचना।

परेशान—(फ़ा०) क्षुब्ध। व्यथित।

परुष—(वि० सं०) कठोर। कड़ा।

परेता—(पु० हि०) जुलाहों का एक औज़ार।

पर्यंत—(अव्य० सं०) तक। लों।

पर्यटन—(पु० सं०) भ्रमण। घूमना फिरना।

पर्यवसान—(पु० सं०) अंत। समाप्ति।

पर्याप्त—(वि० सं०) यथेष्ट। काफी। मिला हुआ।

पर्याय—(पु० सं०) समानार्थवाची शब्द। सिलसिला।

पर्वत—(पु० सं०) पहाड़।

पलंग—(पु० हि०) अच्छी चारपाई। पर्यंक। —पोश=पलंग पर बिछाने की चादर।

पल—(पु० सं०) क्षण। २४ सेकंड के बराबर का समय।

पलक—(स्त्री० हि०) क्षण। पपोटा

तथा बरौनी। (फ़ा०) आँख के चारों ओर का चमड़ा।

पलक़ान—(फ़ा०) सीढ़ी। ज़ीना।

पलटन—(स्त्री० हि०) अंगरेजी पैदल सेना।

पलटना—(क्रि० हि०) उलटना। उलट जाना। अवस्था या दशा बदलना।

पलटनिया—(पु० हि०) सेना का सिपाही। सैनिक।

पलटा—(पु० हि०) पलटने की क्रिया या भाव।

पलथी—(स्त्री० हि०) पालती। एक आसन।

पलना—(क्रि० हि०) पाला या पोसा जाना। हिंडोला।

पलस्तर—(पु० हि०) लेप।

पलान—(पु० हि०) चारजामा।

पलायन—(पु० सं०) भागना।

पलाश, पलास—(पु० सं०) ढाक। टेसू। पत्ता।

पलीता—(पु० हि०) वह बत्ती जिससे बन्दूक या तोप दागी जाती है।

पलीद—(वि० फ़ा०) अपवित्र। गंदा। नापाक।

पलोटना—(क्रि० हि०) पैर दबाना या दाबना।

पल्लव—(पु० सं०) कोंपल।

पल्ला—(वि० हि०) आँचल। किसी कपड़े का छोर। (फ़ा०) तराजू का पलड़ा।

पल्लेदार—(पु० हि०) अनाज ढोने वाला। मज़दूर। पल्लेदारी=पल्लेदार का काम।

पवन—(पु० हि०) वायु। हवा।

पवित्र—(वि० सं०) शुद्ध। साफ़।

पशम—(स्त्री० फ़ा०) बहुत बढ़िया मुलायम ऊन। पशमीना=पशम का बना हुआ कपड़ा या चादर आदि।

पशु—(पु० सं०) जानवर।

पशेमाँ—(फ़ा०) शरमिन्दा। पश्चात्ताप करने वाला।

पश्चात्—(अव्य० सं०) पीछे। बाद। पश्चात्ताप=पछतावा। अफ़सोस।

पश्चिम—(पु० सं०) वह दिशा

जिसमें सूर्य अस्त होता है। मग़रिब। वेस्ट।

पसंगा—(पु० हि०) पासंग।

पसंद—(वि० फ़ा०) रुचि के अनुकूल। पसंदीदा=(फ़ा०) अच्छा।

पस—(अव्य० फ़ा०) इस कारण। इसलिये। बस। तब। तो। अन्त में। —अन्देश=दूर-दर्शी।

पसर—(पु० हि०) आधी अंजुली। रात के समय पशुओं के चराने का काम।

पसली—(स्त्री० हि०) पंजर।

पसाना—(क्रि० हि०) भात में से माँड़ निकालना।

पसावन—(पु० हि०) माँड़।

पसिंजर—(पु० अं०) वह रेलगाड़ी जो प्रत्येक स्टेशन पर ठहरती चलती है।

पसीजना—(क्रि० हि०) रसना। चित्त में दया उत्पन्न होना।

पसीना—(पु० हि०) स्वेद।

पसूजना—(क्रि० देश०) सीना। सिलाई करना।

पसेरी—(स्त्री० हि०) पाँच सेर का बाट। पंसेरी।

पसोपेश—(पु० फ़ा०) दुविधा। सोच-विचार।

पस्त—(वि० फ़ा०) हारा हुआ। थका हुआ।

पस्तक़द—(वि० फ़ा०) नाटा। बौना।

पस्तहिम्मत—(वि० फ़ा०) डरपोक। हिम्मत हारा हुआ।

पस्ती—(स्त्री० फ़ा०) निचाई। कमी। अभाव।

पहचान—(स्त्री० हि०) परिचय।

पहनना—(क्रि० हि०) कपड़े अथवा गहने को शरीर पर धारण करना। पहनावा=पोशाक।

पहर—(पु० हि०) तीन घंटे का समय।

पहरा—(पु० हि०) निगहबानी।

पहल—(पु० हि०) बग़ल। पहलू। तरफ़। —दार=पहलूदार जिसमें पहल हों। —वान=कुश्ती लड़ने वाला। बली पुरुष। मल्ल।

पहलवी—(फ़ा०) एक भाषा ।
पहला—(वि० हि०) एक की संख्या का पूरक । पहले पहल=पहली बार । सर्व-प्रथम ।
पहलू—(पु० फ़ा०) पाँजर । पार्श्व ।
पहाड़—(पु० हि०) पर्वत । पहाड़ी=पहाड़ पर रहने या होने वाला ।
पहाड़ा—(पु० हि०) गुणन सूची ।
पहिया—(पु० हि०) चक्का । चक्र ।
पहुँच—(स्त्री० हि०) किसी स्थान तक गति ।
पहुँचा—(पु० हि०) कलाई ।
पहुँची—(स्त्री० हि०) हाथ की कलाई पर पहनने का एक आभूषण ।
पाँचा—(पु० हि०) किसानों का एक औज़ार ।
पाँजर—(पु० हि०) पसली ।
पाँड़े—(पु० हि०) ब्राह्मणों की एक शाखा । कायस्थों की एक शाखा ।
पाँति—(स्त्री० हि०) कतार । पंगत । एक साथ भोजन करने वाले बिरादरी के लोग ।
पाँयचा—(पु० फ़ा०) पाखाने में बैठने की सीट ।
पाँसा—(पु० हि०) चौसर ।
पाअन्दाज़—(फ़ा०) पगपोंछना, जो दरवाज़े के बीच में पड़ा रहता है ।
पाइंट—(पु० अं०) डेढ़ पाव का पैमाना । आधी या छोटी बोतल । अद्धा ।
पाइका—(पु० अं०) एक प्रकार का टाइप ।
पाइप—(पु० अं०) नल या नली । पानी की कल । हुक्के का नल । एक अँगरेज़ी बाजा ।
पायमाल—(फ़ा०) पामाल । पददलित । ख़राब ।
पाउंड—(पु० अं०) एक अंग-रेज़ी सिक्का । एक अंगरेज़ी तौल ।
पाउडर—(पु० अं०) चूर्ण । बुकनी ।
पाक—(पु० सं०) पकाने की

क्रिया। पका हुआ अन्न। पकवान। (फ़ा०) पवित्र निर्दोष। बड़ा नेक आदमी। पाकदामन=(फ़ा०) पतिव्रता। सती। पाकशाला=(सं०) रसोई का घर। बावरचीखाना। पाकस्थली=(सं०) पेट का वह स्थान जहाँ आहार पचता है।

पाकर—(पु० हि०) एक वृक्ष।

पाकीज़ा—(वि० फ़ा०) पाक। पवित्र। निर्दोष। शुद्ध।

पाकेट—(पु० अं०) जेब। खीसा।

पाखंड—(पु० हि०) ढोंग। आडम्बर। पाखंडी=ढोंगी।

पाख—(पु० हि०) महीने का आधा। पखवाड़ा।

पाखाना—(पु० फ़ा०) वह स्थान जहाँ मल त्याग किया जाय। गू। गलीज़। पुरीष।

पाग—(स्त्री० हि०) पगड़ी।

पागल—(वि० हि०) बावला। सिड़ी। —खाना=पागलों के रखने का स्थान।

पागुर—(पु० हि०) जुगाली। रौंथ।

पाजामा—(पु० फा०) पैरों में पहनने का कपड़ा।

पाजी—(पु० फा०) दुष्ट। खोटा। कमीना। —पन=(हि०) दुष्टता। नीचता। कमीनापन।

पाजेब—(स्त्री० फ़ा०) स्त्रियों का एक गहना जो पैरों में पहना जाता है। मंजीर। नूपुर।

पाटना—(क्रि० हि०) किसी नीचे स्थान को धरातल के बराबर कर देना।

पाटा—(पु० हि०) वह हाथ डेढ़ हाथ ऊँची दीवार जो रसोई घर में चौके के सामने और बगल में इसलिये बनाई जाती है कि बाहर बैठकर खानेवाली स्त्री से सामना न हो।

पाठ—(पु० सं०) पढ़ाई। सबक़। अध्याय। परिच्छेद। —क=(सं०) पढ़ने वाला। अध्यापक। पढ़ाने वाला। गौड़,

सारस्वत, सरयूपारीण, गुजराती आदि ब्राह्मणों का एक वर्ग। —प्रणाली=(सं०) पढ़ने की रीति वा ढंग। —शाला=(सं०) मदरसा। स्कूल। पाठान्तर = पाठ भिन्नता। पाठ्य=(सं०) पठनीय। कोर्स।

पाणिग्रहण—(पु० सं०) विवाह की एक रीति।

पातक—(पु० सं०) गुनाह। पाप।

पाताल—(पु० सं०) पृथ्वी के नीचे के लोक।

पात्र—(पु० सं०) बरतन। नाटक का ऐक्टर।

पात्री—(वि० सं०) नाटक का स्त्री पात्र।

पाथना—(क्रि० हि०) गढ़ना। बनाना।

पादना—(क्रि० हि०) गोज़ करना।

पादरी—(पु० हि०) ईसाई-धर्म का पुरोहित।

पादशाह—(पु० फ़ा०) बादशाह।

पान—(पु० सं०) पीना। पत्ता। ताम्बूल।

पानी—(पु० हि०) जल।

पाप—(पु० सं०) बुरा काम।

पापड़—(पु० हि०) उर्द अथवा मूँग की धोई के आटे से बनाई हुई मसालेदार पतली चपाती।

पापोश—(फ़ा०) जूता।

पाबंद—(वि० फ़ा०) क़ैद। बँधा हुआ। नियमित। पाबन्दी =मजबूरी।

पाबोसी—(फ़ा०) चरण-चुम्बन। पैर चूमना।

पामर—(वि० सं०) दुष्ट। पापी। मूर्ख।

पामाल—(वि० फ़ा०) रौंदा हुआ। पद-दलित। पामाली =(फ़ा०) तबाही। बरबादी।

पायंटमैन—(पु० अं०) वह आदमी जिसके जिम्मे रेलवे लाइन इधर से उधर करने या बदलने की कल रहती है।

पायताबा—(पु॰ फ़ा॰) मोज़ा। जुर्राब।

पायक—(फ़ा॰) सेवक। पियादा।

पायतख्त—(पु॰ फ़ा॰) राजधानी। राज-नगर।

पायदार—(वि॰ फ़ा॰) टिकाऊ।

पायबन्द—(फ़ा॰) किसी काम में फँसा हुआ। बेड़ी।

पायमाल—(वि॰ फ़ा॰) पैरों से रौंदा हुआ। बरबाद।

पाया—(पु॰ हि॰) आधार। पैर।

पार—(पु॰ सं॰) दूसरी ओर का किनारा।

पारखी—(पु॰ हि॰) परखने वाला।

पारचा—(पु॰ फ़ा॰) टुकड़ा। कपड़ा।

पारस—(पु॰ हि॰) स्पर्श-मणि।

पारसा—(फ़ा॰) पवित्र जीवन बिताने वाला। परहेज़गार।

पारा—(फ़ा॰) एक द्रव धातु। टुकड़ा। हिस्सा।

पार्क—(पु॰ अं॰) बगीचा। उपवन।

पार्ट—(पु॰ अं॰) नाटक में अभिनय का एक खण्ड। हिस्सा। भाग। खंड।

पार्टी—(स्त्री॰ अं॰) मण्डली। दावत। भोज।

पार्टिशन—(पु॰ अं॰) विभाग। बँटवारा।

पार्सल—(पु॰ अं॰) पुलिन्दा। पैकेट। डाक से रवाना करने के लिए बँधा हुआ पुलिन्दा या गठरी।

पालन—(पु॰ सं॰) भरण-पोषण। परवरिश।

पालक—(पु॰ सं॰) पालने वाला। दत्तक पुत्र। एक प्रकार का साग।

पालकी—(स्त्री॰ हि॰) एक प्रकार की सवारी। अच्छी डोली। —गाड़ी = वह गाड़ी जिस पर पालकी के समान छत हो।

पालतू—(वि॰ हि॰) पाला हुआ।

पालिटिक्स—(पु० अं०) राज-नीति शास्त्र।
पालिश—(स्त्री० अं०) चिकनाई और चमक। लेप।
पालिसो—(स्त्री० अं०) वह प्रमाण या प्रतिज्ञापत्र जो बीमा करने वाली कम्पनी की ओर से बीमा कराने वाले को मिलता है। नीति।—होल्डर=बीमा कराने वाला।
पाँव चप्पी—(स्त्री० हि०) पैर दबाना।
पावना—(क्रि० हि०) पाना। प्राप्त करना।
पाश—(फ़ा०) टुकड़े-टुकड़े होना।
पाश्चात्य—(वि० सं०) पिछला। पश्चिम दिशा का।
पासंग—(पु० फ़ा०) तराज़ू की डंडी बराबर न होने पर उसे बराबर करने के लिए उठे हुए पलड़े पर रखा हुआ पत्थर या और कोई बोझ।
पास—(फ़ा०) पहरा। एक पहर। (अं०) परवाना। अधिकार-पत्र। —पोर्ट=एक प्रकार का अधिकार-पत्र या पर-वाना जो एक देश से दूसरे देश को जाते समय सरकार से प्राप्त करना पड़ता है। अधिकार-पत्र।—वंद=(पु० हि०) दरी बुनने के करघे की वह लकड़ी जिससे वे बँधी रहती है। —बुक=(स्त्री० अं०) वह पुस्तक जिसमें किसी प्रकार का लेन-देन का हिसाब-किताब हो।
पासी—(पु० हि०) हिन्दुओं की एक जाति।
पाहुना—(पु० हि०) मेहमान। अतिथि।
पिँजड़ा—(पु० हि०) लोहे, बाँस आदि की तीलियों का बना हुआ झाबा जिसमें पक्षी पाले जाते हैं।
पिंडी—(स्त्री० सं०) लुगदी। ठोस या गीली चीज़ का गोल टुकड़ा।
पिकेट—(पु० अं०) धरना। पलटनियों का पहरा। पिके-टिंग=(स्त्री० अं०) किसी

बात को रोकने के लिए पहरा देना। धरना।

पिघलना—(क्रि० हि०) गलना।

पिचकना—(स्त्री० हि०) दब जाना।

पिक्चर—(स्त्री० अं०) चित्र। तस्वीर।

पिचकारी—(स्त्री० हि०) एक यन्त्र जिसका व्यवहार जल आदि खींचकर जोर से किसी ओर फेंकने में होता है।

पिछड़ना—(क्रि० हि०) पीछे रह जाना।

पिछलगा—(पु०हि०) अनुगामी। हमराह। पिछलग्गू=(हि०) वह मनुष्य जो किसी के पीछे-पीछे चले। अनुगामी।

पिछला—(वि० हि०) पीछे की ओर का।

पिछवाड़ा—(पु० हि०) किसी मकान के पीछे का भाग।

पिछाड़ी—(स्त्री० हि०) पिछला भाग। वह रस्सी जिससे घोड़े के पिछले पैर बाँधते हैं।

पिछौरी—(स्त्री० हि०) स्त्रियों की चादर। ओढ़ने का वस्त्र।

पिट—(पु० अं०) थियेटर में गैलरी के आगे की सीटें या आसन।

पिटना—(क्रि० हि०) मार खाना। आघात सहना। पिटाई= मार।

पिटारा—(पु० हि०) बाँस, बेंत, मूँज आदि के छिलकों से बना हुआ ढकनेदार पात्र। (स्त्री०) पिटारी।

पिट्ठू—(पु० हि०) सहायक।

पिढ़ई—(स्त्री० हि०) छोटा पीढ़ा या पाटा।

पितर—(पु० हि०) जिनके नाम पर श्राद्ध वा जल-दान किया जाता है।

पिता—(पु० हि०) बाप। पितामह=पिता का पिता। दादा।

पित्त—(पु० सं०) एक तरल पदार्थ जो शरीर के अन्तर्गत यकृत में बनता है। —ज्वर

=वह ज्वर जो पित्त के दोष या प्रकोप से उत्पन्न हो ।

पित्ता—(स्त्री० हि०) जिगर में वह थैली जिसमें पित्त रहता है । पित्ती=एक रोग जो पित्त की अधिकता से होता है ।

पिदर—(फ़ा०) पिता ।

पिद्दी—(स्त्री० हि०) एक सुन्दर चिड़िया ।

पिन—(स्त्री० अं०) आलपीन ।

पिनकी—(पु० हि०) पिनकने वाला । अफीमची ।

पिनपिन—(स्त्री० अनु०) बच्चों का अस्पष्ट स्वर में रोने का शब्द ।

पिनपिनाना—(क्रि० हि०) रोते समय नाक से स्वर निकालना ।

पिनहाँ—(फ़ा०) छिपा हुआ । पोशीदा ।

पिपरमिंट—(पु० अं०) पुदीने की जाति का एक पौधा जो युरोप और अमरीका में होता है ।

पियानो—(पु० अं०) एक अङ्गरेज़ी बाजा ।

पिलना—(क्रि० हि०) झुक पड़ना । धंस पड़ना ।

पिलपिला—(वि० अनु०) भीतर से गीला ।

पिलाना—(क्रि० हि०) पान कराना । पीने को देना ।

पिल्ला—(पु० हि०) कुत्ते का बच्चा । (स्त्री०) पिल्ली ।

पिल्लू—(पु० हि०) एक कीड़ा ।

पिशाच—(पु० सं०) भूत ।

पिष्टपेषण—(पु० सं०) कही बात को फिर कहना ।

पिसर—(फ़ा०) लड़का । बेटा ।

पिसाई—(स्त्री० हि०) पीसने का काम तथा मज़दूरी ।

पिस्ता—(पु० हि०) एक मेवा ।

पिस्ताँ—(फ़ा०) छाती । स्तन ।

पिस्तौल—(स्त्री० अं०) तमञ्चा । छोटी बन्दूक ।

पिस्सू—(पु० हि०) डाँस ।

पीक—(स्त्री० हि०) पान का थूक ।—दान=पान खाकर थूकने का बरतन ।

पींछा—(पु० हि०) पश्चात् भाग। पुश्त।

पीछे—(अव्य० हि०) पीठ की ओर।

पीटना—(क्रि० हि०) मारना।

पीठ—(पु० सं०) पीढ़ा। स्थान। मूर्ति का आधार। पेट की दूसरी ओर का भाग।

पीठी—(स्त्री० हि०) पिसी हुई दाल।

पीड़ा—(स्त्री० सं०) दर्द। व्यथा। व्याधि। पीड़ित=दुःखित।

पीढ़ा—(पु० हि०) चौकी के आकार का आसन। पाट।

पीढ़ी—(स्त्री० हि०) पुश्त। छोटा पीढ़ा। वंश-परम्परा।

पीतल—(पु० हि०) एक धातु।

पीतांबर—(पु० सं०) पीला रेशमी कपड़ा।

पीनक—(स्त्री० हि०) अफीम के नशे में ऊँघना।

पीनल कोर्ट—(पु० अं०) अपराध और दण्ड सम्बन्धी व्यवस्थाओं या कानूनों का संग्रह। ताज़ीरात।

पीनस—(पु० हि०) नाक का एक रोग।

पीना—(क्रि० हि०) पान करना। घूँटना।

पीप—(स्त्री० हि०) मवाद।

पीपल—(पु० हि०) एक पेड़।

पीर—(स्त्री० हि०) पीड़ा। दुःख। बच्चा जनने के समय की पीड़ा। (फ़ा०) मुसलमानों के धर्म-गुरु। सोमवार। वृद्ध। बूढ़ा आदमी। —ज़ादा =(फ़ा०) किसी पीर या धर्म-गुरु की संतान। पीरे नाबालिग़=ऐसा वृद्ध जो बच्चों के-से काम और बातें करे। —मुरशिद=महात्मा, पूजनीय अथवा अपने से दरजे में बहुत बड़ा। पीरी=बुढ़ापा। पीरेमुग़ाँ=माशूक।

पीरोज़ा—(फ़ा०) फीरोज़ा। एक प्रकार का नीले रङ्ग का पत्थर।

पील—(पु० फ़ा०) हाथी। —वान=महावत। हाथीवान।

पीला—(वि० हि०) पीत वर्ण। ज़र्द। कान्तिहीन। निस्तेज।

पीस गुड्स—(पु० अं०) कपड़े का थान। रेज़ा।

पीसना—(क्रि० हि०) रगड़ना।

पुआल—(पु० देश०) धान का डंठल।

पुकारना—(क्रि० हि०) नाम लेकर बुलाना। टेरना।

पुख़्ता—(फ़ा०) पका हुआ। मज़बूत।

पुचकारना—(क्रि० हि०) चुमकारना। प्यार जताना।

पुट—(पु० हि०) ढाकने वाली वस्तु। कटोरे के तरह की चीज़।

पुटकी—(स्त्री० हि०) पोटली। गठरी।

पुटीन—(पु० अं०) किवाड़ों में शीशे बैठाने या लकड़ी के जोड़, छेद, दरार आदि भरने में काम आने वाला मसाला।

पुट्ठा—(पु० हि०) चूतड़ का ऊपरी भाग।

पुड़िया—(स्त्री० हि०) लपेटकर संपुट के आकार का किया हुआ कागज़ या पत्ता।

पुण्य—(वि० सं०) भला काम। धर्म का कार्य। —भूमि=आर्यावर्त्त देश। पुण्यात्मा=धर्मात्मा। पवित्र चरित्रों वाला।

पुतला—(पु० हि०) मूर्ति। पुतली=(हि०) गुड़िया। आँखों का काला भाग। —घर=मिल।

पुत्र—(पु० सं०) लड़का। बेटा।

पुदीना—(पु० हि०) एक पौधा।

पुन: पुन:—(वि० सं०) बार-बार।

पुनरागमन—(पु० सं०) फिर से आना। फिर जन्म लेना।

पुनरावृत्ति—(स्त्री० सं०) फिर से घूमकर आना। दोहराना।

पुनरुक्त—(वि० सं०) फिर से कहा हुआ।

पुनर्जन्म—(पु० सं०) मरने के बाद फिर दूसरे शरीर में उत्पत्ति।

पुरःसर—(वि० सं०) अगुआ। साथी।

पुर—(पु० सं०) नगर। शहर। (फ़ा०) भरा हुआ। बहुत।

पुरइन—(स्त्री० हि०) कमल का पत्ता।

पुरज़ा—(पु० फ़ा०) टुकड़ा। कतरन। अवयव। अंग। भाग।

पुरश्चरण—(पु० सं०) अनुष्ठान करना।

पुरसा—(पु० हि०) एक आदमी की उँचाई।

पुरसाँ—(फ़ा०) पूछने वाला।

पुरस्कार—(पु० सं०) पारितोषिक। उपहार। इनाम।

पुरस्कृत—(वि० सं०) इनाम पाया हुआ।

पुराण—(वि० सं०) प्राचीन। पुरानी कथा।

पुरातत्त्व—(पु० सं०) प्राचीन-काल सम्बन्धी विद्या।

पुराना—(वि० हि०) प्राचीन। पुरातन।

पुरावृत्त—(पु० सं०) पुराना वृत्तान्त। इतिहास।

पुरुष—(पु० सं०) मनुष्य। आदमी। पुरुषार्थ=पौरुष। उद्यम। सामर्थ्य।

पुर्ज़ा—(फ़ा०) टुकड़ा। चिथड़ा।

पुल—(फ़ा०) नदियों को पार करने के लिये उनके ऊपर बनाया हुआ मार्ग।

पुलकित—(वि०सं०) रोमांचित। गद्गद।

पुलाव—(पु० हि०) एक खाना।

पुलिंदा—(पु० हि०) बंडल। गड्डी।

पुलिन—(पु० सं०) किनारा।

पुलिस—(स्त्री० अं०) प्रजा की जान और माल की हिफ़ाज़त के लिए मुकर्रर सिपाहियों और अफ़सरों का दल। —मैन=कांस्टेबल्।

पुश्त—(स्त्री०फ़ा०) पीठ। पीछा। पीढ़ी।—पनाह=हिमायती। —नामा=वंशावली। पीढ़ीनामा। पुश्तैन=(फ़ा०) वंश-परम्परा। पीढ़ी दर पीढ़ी।

पुश्ताबन्दी=मेंड बाँधना।
पुश्तैनी=जो कई पुश्तों से चला आता हो।
पुश्तक—(स्त्री० हि०) दोलत्ती।
पुश्ता—(पु० फ़ा०) बाँध। ऊँची मेंड़।
पुश्कल—(पु० सं०) काफी।
पुष्प—(पु० सं०) फूल।
पुस्तक—(स्त्री० सं०) किताब। ग्रंथ।
पूँछ—(स्त्री० हि०) दुम।
पूँजी—(स्त्री० हि०) सम्पत्ति। संचित धन। पति=धनवान।
पूआ—(पु० हि०) एक मिष्टान्न। मालपूआ।
पूछताछ—(स्त्री० हि०) जाँच-पड़ताल।
पूजना—(क्रि० हि०) आराधना करना। पूजनीय=आदरणीय। पूजा=आराधन। अर्चना।
पूती—(स्त्री० हि०) जड़। गाँठ। लहसुन की गाँठ।
पूनी—(स्त्री० हि०) चरखे पर सूत कातने के लिये धुनी हुई रुई की बत्ती।
पूरा—(पु० हि०) भरा। परिपूर्ण। समस्त। सकल। भरपूर। काफी। पूर्ण।
पूरी—(स्त्री० हि०) एक पकवान।
पूर्ण—(वि० सं०) पूरा। परितृप्त। भरपूर। सारा। सफल।—विराम=वाचक के लिये सब से बड़ा विराम या ठहराव। चिह्न या संकेत।
पूर्ति—(स्त्री० सं०) समाप्ति। पूर्णता।
पूर्व—(पु० सं०) पश्चिम के सामने की दिशा। पहले।
पूर्वक—(पु० सं०) साथ। सहित।
पूर्वज—(पु० सं०) पुरखा। बड़ा भाई।
पूर्ववत्—(क्रि० वि०) पहले की तरह।
पूर्ववर्ती—(वि० हि०) पहले का।
पृथक्करण—(पु० सं०) अलग करना।
पृथ्वी—(स्त्री० सं०) ज़मीन।

पृष्ठभाग—(पु० सं०) पीठ। पिछला भाग।

पेंटर—(पु० अं०) चित्रकार। रंगसाज़। पेंटिंग=चित्रकारी। रंगसाज़ी।

पेंडुलम—(पु० अं०) घड़ी का लटकन। लंगर।

पेंदा—(पु० हि०) तला। बिल्कुल निचला भाग।

पेंदी—(स्त्री० हि०) किसी वस्तु का निचला भाग।

पे—(स्त्री०अं०) तनख़्वाह। वेतन।

पेग—(पु० अं०) शराब का गिलास। शराब का प्याला।

पेच—(पु० फ़ा०) घुमाव-फिराव। उलझन। चालाकी। मशीन। युक्ति। पगड़ी की लपेट। मशीन का पुर्ज़ा। स्क्रू। पतंग उड़ने के समय दो पतंगों का एक दूसरे में फँस जाना। कुश्ती में दूसरे को पछाड़ने की युक्ति।—कश=एक औज़ार। —ताब=वह गुस्सा जो मन ही मन में रह जाय, और निकाला न जा सके।—दार=पेच वाला। कठिन। —वान=बड़ा हुक्का। पेचीदगी=(फ़ा०) उलझाव। पेचीदा=(फ़ा०) घुमाव-फिराव वाला। उलझन वाला। कठिन। पेचीला=कठिन।

पेचिश—(स्त्री० फ़ा०) आँव का मरोड़ा।

पेज—(पु०अं०) पुस्तक का पृष्ठ। वरक़। सेवक। अनुचर। वह बालक या युवा व्यक्ति जो किसी कुटुम्ब या व्यवस्थापिका परिषद् के अधिवेशन में सदस्यों और अधिकारियों की सेवा में रहता है।

पेट—(पु० हि०) उदर। पेटा=बीच का हिस्सा। ब्योरा। पूरा विवरण। पेटी=छोटा संदूक। संदूकची। कमरबंद। पेटू=जो बहुत खाता हो।

पेटेंट—(वि० अं०) वह आविष्कार या पदार्थ जिसकी सरकार द्वारा रजिस्ट्री करवाई गई हो।

पेट्रन—(पु० अं०) संरक्षक। सरपरस्त।

पेड—(वि० अं०) जिसका महसूल या भाड़ा चुका दिया गया हो।

पेड़—(पु० हि०) वृक्ष। दरख़्त।

पेड़ा—(पु० हि०) एक मिठाई।

पेड़ी—(स्त्री० हि०) पेड़ का तना।

पेड़ू—(पु० हि०) नाभि के नीचे का भाग।

पेन—(स्त्री० अं०) क़लम। दर्द।

पेनशनिया—(पु० अं०) पेन्शन पाने वाला। पेन्शनर।

पेनी—(स्त्री० अं०) इंगलैण्ड का एक ताँबे का सिक्का।

पेनीवेट—(पु० अं०) एक अँगरेज़ी तौल।

पेन्शन—(स्त्री० अं०) मासिक या वार्षिक वृत्ति। पेन्शनर =वह जिसे पेन्शन मिलती हो।

पेन्स—(पु० अं०) एक अंगरेज़ी सिक्का।

पेन्सिल—(स्त्री० अं०) सीसे की सलाई की क़लम।

पेपर—(पु० अं०) काग़ज़। प्रश्न-पत्र। लेख। निबंध। अख़बार।

पेपरमिंट—(पु० अं०) पुदीने की जाति का एक पौधा।

पेमेंट—(पु० अं०) मूल्य या देना चुकाना। भुगतान।

पेरना—(क्रि० हि०) दो पदार्थों के बीच में डालकर रस निकालना।

पेश—(फ़ा०) आगे। सामने। —आमद =(फ़ा०) सुलूक। रिआयत। —क़ब्ज़ =(स्त्री० फ़ा०) कटारी। —कश =(पु० फ़ा०) नज़र। भेंट। सौगात। —कार =हाकिम के सामने काग़ज़-पत्र पेश करने वाला कर्मचारी। —कारी =पेशकार का पद। पेशकार का काम। —खेमा =फ़ौज का वह सामान जो पहले ही से आगे भेज दिया जाय। फ़ौज का वह हिस्सा जो आगे-आगे चलता है। —गी =मज़दूरी का वह अंश जो काम करने के

लिये दिया जाता है।—तर=पहले। पूर्व।—दस्त=उद्यमी। व्यवसायी। —दस्ती=ज़्यादती। ज़बरदस्ती। —बंद=चारजामें में लगा हुआ बंधन जो घोड़े के गर्दन पर से लाकर दूसरी ओर बाँध दिया जाता है। —बंदी=पहले से किया हुआ प्रबन्ध या बचाव की युक्ति। छल। धोखा। ।—वा=नेता। सरदार। महाराष्ट्र साम्राज्य के प्रधान मन्त्रियों की उपाधि। —वाई=(फ़ा०) अगवानी। —वाज़=वेश्याओं का घाँघरा। पेशाब=(पु०फ़ा०) मूत्र। पेशाबख़ाना=पेशाब करने की जगह।

पेशा—(पु० फ़ा०) कार्य। व्यवसाय। पेशावर=(फ़ा०) व्यवसायी।

पेशानी—(स्त्री० फ़ा०) ललाट। माथा। क़िस्मत।

पेशी—(स्त्री० फ़ा०) मुक़द्दमे की सुनवाई। चमड़े की वह थैली जिसमें गर्भ रहता है।

पेशीनगो—(फ़ा०) भविष्यद्वक्ता। पेशीनगोई=(फ़ा०) भविष्य-कथन।

पेश्तर—(क्रि० वि०) पहले। पूर्व।

पैंफ़्लेट—(पु० अं०) पुस्तिका।

पैंजनी—(स्त्री० हि०) एक गहना।

पैंठ—(स्त्री० हि०) हाट। बाज़ार।

पैंती—(स्त्री० हि०) कुश वा छल्ला।

पैकर—(पु० फ़ा०) कपास से रूई इकट्ठी करने वाला। शकल। ज़िस्म। (अं०) बक्स में भरकर ठीक करनेवाला।

पैकेट—(पु० अं०) पुलिन्दा। छोटी गठरी।

पैक्ट—(पु० अं०) क़ौल-क़रार। सुलहनामा।

पैग़ंबर—(पु० फ़ा०) ईश्वरीय दूत। पैग़ंबरी=(फ़ा०) पैग़ंबर संबंधी।

पैग़ाम—(पु० फ़ा०) संदेश।

पैगोडा—(पु० बरमी) बौद्ध मन्दिर।

पैज़ार—(पु० फ़ा०) जूता। पनही।
पैड—(पु० अं०) सोख़्ता या स्याही-सोख़ कागज की गद्दी। छोटी मुलायम गद्दी।
पैदल—(वि० हि०) पैरों से चलने वाला।
पैदा—(वि० फ़ा०) उत्पन्न। जन्मा हुआ। पैदाइश=उत्पत्ति। जन्म। पैदाइशी=जन्म का। स्वाभाविक। पैदावार=(फ़ा०) उपज। फ़सल। उत्पत्ति।
पैना—(वि० हि०) धारदार।
पैमाइश—(स्त्री० फ़ा०) माप।
पैमान—(फ़ा०) प्रतिज्ञा। वादा। शर्त।
पैमाना—(पु० फ़ा०) मापने का औज़ार। नाप।
पैर—(पु० हि०) पाँच। चरण। —गाड़ी=बाइसिकिल।
पैरवी—(स्त्री० फ़ा०) अनुसरण। आज्ञापालन। पक्ष लेना। किसी बात के अनुकूल प्रयत्न।
पैरा—(पु० अं०) लेख का उतना अंश जितने में कोई एक बात पूरी हो जाय। पैराग्राफ़।
पैराशूट—(पु० अं०) एक बहुत बड़ा छाता जिसके सहारे बैलून (गुब्बारा) धीरे-धीरे ज़मीन पर उतरता है और गिरकर टूटता-फूटता नहीं।
पैरी—(स्त्री० हि०) पैर में पहनने का एक गहना। दवाँई। दायँने का काम।
पैरो—(फ़ा०) अनुयायी। भक्त। शिष्य। —कार=सहायक। पैरवी करनेवाला।
पैबंद—(पु० फ़ा०) जोड़। थिगली। टुकड़ा।
पैवस्त—(वि० फ़ा०) सोखा हुआ। समाया हुआ।—पैवस्त=मिला हुआ। बैठा हुआ।
पैसा—(पु० हि०) पाव आना। तीन पाई का सिक्का। रुपया-पैसा। धन-दौलत।
पैसिंजर गाड़ी—(स्त्री० हि०) मुसाफिरों को ले जाने वाली गाड़ी।

पैहारी—(वि० हि०) केवल दूध पीकर रहनेवाला।

पोंकना—(क्रि० अनु०) पतला पाख़ाना फिरना। बहुत डरना।

पोंगा—(पु० हि०) बाँस की नली। मूर्ख।

पोँगी—(स्त्री० हि०) छोटी पोली नली।

पोँछना—(क्रि० हि०) काछना। लगी हुई वस्तु कपड़े आदि से ज़ोर से रगड़कर हटाना।

पोआ—(पु० हि०) साँप का बच्चा

पोइयाँ—(स्त्री० हि०) सरपट चाल। घोड़े की चाल।

पोई—(स्त्री० हि०) एक लता।

पोखरा—(पु० हि०) तालाब।

पोखरी—(स्त्री० हि०) तलैया। छोटा पोखरा।

पोच—(वि० हि०) तुच्छ। बुरा। क्षीण। अशक्त।

पोट—(स्त्री० हि०) गठरी।

पोटला—(पु० हि०) बड़ी गठरी।

पोटली—(स्त्री० हि०) छोटी गठरी।

पोटास—(पु० अं०) एक क्षार।

पोतना—(क्रि० हि०) चुपड़ना। गीली तह चढ़ाना।

पोता—(पु० हि०) पुत्र का पुत्र। बेटे का बेटा।

पोती—(स्त्री० हि०) पुत्र की पुत्री। बेटे की बेटी।

पोथा—(पु० हि०) बड़ी पुस्तक। कागज़ों की गड्डी।

पोथी—(स्त्री० हि०) पुस्तक।

पोना—(क्रि० हि०) गीले आटे की चपाती गढ़ना। पिरोना। गूथना।

पोप—(पु० अं०) ईसाइयों के कैथलिक संप्रदाय का प्रधान धर्मगुरु।

पोर—(स्त्री० हि०) उँगली की गाँठ या जोड़ जहाँ से वह झुक सकती है।

पोर्ट—(पु० अं०)। अंगूर से बनी एक प्रकार की शराब। बन्दरगाह।

पोर्टर—(पु० अं०) रेलवे कुली। डाक-कुली।

पोल—(पु० हिं०) खाली जगह। खोखलापन। (पु० अं०) लकड़ी या लोहे आदि का बड़ा लट्ठा या खंभा। ज़मीन की एक नाप। ध्रुव।

पोला—(वि० हि०) खोखला। निःसार। तत्त्वहीन।

पोलाद—(फ़ा०) इस्पात। फ़ौलाद।

पोलाव—(पु० फ़ा०) एक खाना जो मांस और चावल को एक साथ पकाकर बनता है।

पोलिंग बूथ—(पु० अं०) वह स्थान जहाँ कौन्सिल आदि के निर्वाचन या चुनाव के अवसर पर वोट लिये जाते हैं।

पोलिंग स्टेशन—(पु० अं०) वह स्थान जहाँ कौन्सिल या म्युनिसिपल-निर्वाचन के अवसर पर लोगों के वोट लिये और दर्ज किये जाते हैं।

पोलिटिक्स—(अं०) राजनीति।

पोलिटिकल—(वि० अं०) राजनीतिक। शासन-संबंधी।

पोलिटिकल एजेंट—(पु० अं०) राजप्रतिनिधि।

पोलो—(पु० अ०) एक अँगरेज़ी खेल जो घोड़े पर चढ़कर खेला जाता है। —ग्राउंड=वह स्थान जहाँ पोलो खेला जाता है।

पोशाक—(स्त्री० फ़ा०) पहनावा। पहनने के कपड़े।

पोशीदा—(वि० फ़ा०) गुप्त। छिपा हुआ। पोशीदगी=छिपाव।

पोषक—(वि० सं०) पालक। पालनेवाला। बढ़ानेवाला। सहायक।

पोष्य—(वि०सं०) पालने योग्य। —पुत्र=दत्तक।

पोस्ट—(स्त्री० अं०) जगह। स्थान। नौकरी। डाकखाना। पद। —आफिस=(अं०) डाकघर। डाकखाना। —कार्ड=एक मोटे काग़ज़ का टुकड़ा जिस पर पत्र लिखकर

खुला भेजते हैं। —मार्टम = (पु० अं०) वह परीक्षा जो किसी प्राणी की लाश को चीर-फाड़कर की जाय।—मास्टर = डाकघर का सब से बड़ा कर्मचारी। —मैन = डाकिया। चिट्ठी बाँटनेवाला। —र = छपी हुई बड़ी नोटिस या विज्ञापन जो दीवारों पर चिपकाया जाता है। पोस्टर-इन्क = एक प्रकार की छापे की स्याही जो लकड़ी के अक्षर छापने में काम आती है। पास्टल-गाइड = (अं०) वह पुस्तक जिसमें डाक-द्वारा चिट्ठी, पारसल आदि भेजने के नियम और डाकघरों के नाम आदि रहते हैं। पोस्टिंग = डाक से भेजना। पोस्टेज = डाक-द्वारा चिट्ठी पारसल आदि भेजने का महसूल।

पोस्त—(पु० फ़ा०) छिलका। बक्कल। चमड़ा। अफीम का पौधा।

पोस्ता—(पु० फ़ा०) एक पौधा जिसमें से अफीम निकलती है।

पोस्तीन—(पु० फ़ा०) खाल का बना हुआ कोट। जिल्द के भीतर दफ़्ती से चिपका हुआ काग़ज़।

पौंडा—(पु० हि०) बड़ी और मोटी ईख।

पौ—(स्त्री० हि०) सबेरे की सफ़ेदी। चौसर के खेल में जीत का शब्द। पौ-बारह = सफलता।

पौडर—(पु० अं०) बुकनी। चूर्ण।

पौढ़ना—(क्रि० हि०) लेटना। सोना।

पौद—(स्त्री० हि०) छोटा पौधा।

पौदर—(स्त्री० हि०) पुर से पानी निकालने में बैलों के चलने का स्थान।

पौदा—(पु० हि०) नया निकलता हुआ पेड़। छोटा पेड़।

पौधा—(पु० हि०) नया निकलता हुआ पेड़।

पौन—(स्त्री० हि०) वायु। हवा। तीन चौथाई।

पौना—(पु० हि०) पौन का पहाड़ा। बड़ी करछी।

पौने—(वि० हि०) किसी संख्या में से चौथाई भाग कम।

पौराणिक—(वि० सं०) पुराण सम्बन्धी। पूर्वकालीन। पुराण-पाठी।

पौला—(पु० हि०) एक प्रकार का खड़ाऊँ।

पौवा—(पु० हि०) एक सेर का चौथाई भाग।

पौष—(पु० सं०) माघ के पहले का महीना।

पौष्टिक—(वि० सं०) पुष्टिकारक।

पौसला—(स्त्री० हि०) वह स्थान जहाँ पर पानी पिलाया जाता है।

प्याऊ—(पु० हि०) पौसरा। सबील।

प्याज—(पु० फ़ा०) एक कन्द।

प्यादा—(पु० फ़ा०) पैदल। दूत। शतरंज के खेल में एक गोटी।

प्युनिटिव पुलिस—(स्त्री० अं०) किसी नगर या गाँव की अतिरिक्त पुलिस।

प्यार—(पु० हि०) प्रेम। मुहब्बत।

प्यारा—(वि० हि०) प्रेमपात्र।

प्याला—(पु० फ़ा०) छोटा कटोरा। जाम।

प्यास—(स्त्री० हि०) जल पीने की इच्छा। तृषा। पिपासा।

प्यासा—(वि० हि०) जिसे प्यास लगी हो।

प्यून—(पु० अं०) सिपाही। चपरासी। हलकारा।

प्योरी—(स्त्री० देश०) रुई की मोटी बत्ती।

प्रकट—(वि० सं०) ज़ाहिर। उत्पन्न। स्पष्ट। व्यक्त।

प्रकरण—(पु० सं०) प्रसंग। विषय। अध्याय। परिच्छेद।

प्रकांड—(पु० सं०) वृक्ष का तना। बहुत बड़ा।

प्रकार—(पु० सं०) भेद। क़िस्म। तरह। भाँति।

प्रकाश—(पु० सं०) आलोक। उजाला। चमक। विस्तार।

प्रकट होना। प्रसिद्ध। स्पष्ट होना। धूप। —क=वह जो प्रकाश करे। वह जो प्रकट करे। पुस्तक छपानेवाला। —न=किसी पुस्तक को छपाकर सर्वसाधारण में प्रचलित करने का काम। प्रकाशित=चमकता हुआ। प्रकट। छपी हुई। —मान=चमकीला। प्रसिद्ध। मशहूर।

प्रकीर्णक—(पु० सं०) अध्याय। विस्तार। फुटकर।

प्रकृत—(वि० सं०) असली। वास्तविक। स्वभाववाला।

प्रकृति—(स्त्री० सं०) स्वभाव। कुदरत। —सिद्ध=स्वाभाविक।

प्रकोप—(पु० सं०) बहुत अधिक कोप। किसी रोग की प्रबलता।

प्रक्रिया—(स्त्री० सं०) तरीक़ा।

प्रक्षिप्त—(पु० सं०) पीछे से मिलाया हुआ।

प्रखर—(वि० सं०) तीक्ष्ण। प्रचण्ड। धारदार। पैना।

प्रख्यात—(वि० सं०) प्रसिद्ध। मशहूर।

प्रगल्भ—(वि० सं०) चतुर। प्रतिभाशाली। साहसी। निडर। निर्लज्ज।

प्रचंड—(वि० सं०) तेज। प्रखर। प्रबल। भयङ्कर। कठोर। असह्य। बड़ा। बलवान्। बहुत गरम। प्रतापी।

प्रचलित—(वि० सं०) जारी। चलता हुआ।

प्रचार—(पु० सं०) चलन। रवाज। प्रसिद्ध। —कार्य=प्रचार करने का ढंग या काम। प्रौपैगंडा। —क=फैलानेवाला। प्रचार करनेवाला।

प्रचुर—(वि० सं०) बहुत। अधिक।

प्रच्छन्न—(वि० सं०) ढका हुआ। छिपा हुआ।

प्रजा—(स्त्री० सं०) संतान। रैयत। राज्य के निवासी। —पति=सृष्टि का उत्पन्न करने वाला। ब्रह्मा।

राजा। —सत्ता=प्रजा-द्वारा संचालित राज्यप्र-बन्ध।

प्रणय—(सं०) प्रेम। स्त्री-पुरुष सम्बन्धी प्रेम। प्रणयिनी=प्रेमिका। पत्नी। प्रणयी=प्रेमी। प्रेम करनेवाला। पति।

प्रणाली—(स्त्री० सं०) नाली। प्रथा। रीति। परिपाटी। क़ायदा। ढंग।

प्रणीत—(पु० सं०) बनाया हुआ। रचित। प्रणेता=रचयिता। बनानेवाला। कर्त्ता।

प्रताप—(पु० सं०) पौरुष। वीरता। तेज। इक़बाल। ताप।

प्रति—(अव्य० हि०) लिये। हर-एक। ओर। तरफ़।—कूल=(सं०) ख़िलाफ़। विरुद्ध। —दान=वापस करना। परिवर्तन। विनिमय। —ध्वनि=प्रतिनाद। गूँज। —निधि=दूसरों का स्थाना पन्न होकर काम करने वाला। —फल=बदला। —बिंब=परछाईं। छाया। —लिपि=लेख की नक़ल। —वाद=विरोध। विवाद। बहस। उत्तर। जवाब। —वादी=वह जो प्रतिवाद करे। —षेध=मनाही। निषेध। खंडन।। —हिंसा=वैर निकालना। बदला लेना।

प्रतिज्ञा—(स्त्री० सं०) प्रण। दृढ़ निश्चय। शपथ। —पत्र=इक़रारनामा।

प्रतिभा—(स्त्री० सं०) बुद्धि। —शाली=विशेष बुद्धि-सम्पन्न।

प्रतिमा—(स्त्री० सं०) मूर्ति। छाया। प्रतिबिंब।

प्रतिष्ठा—(स्त्री० सं०) स्थापना। रखा जाना। ठहराव। देवता की प्रतिमा की स्थापना। मान-मर्यादा। गौरव। प्रसिद्धि। यश। —पत्र=सम्मानपत्र। —प्रतिष्ठित=(सं०) आदर-प्राप्त। इज़्ज़तदार।

प्रतीकार—(पु० सं०) बदला। प्रतिकार। इलाज।

प्रतीक्षा—(स्त्री० सं०) आसरा। इन्तज़ार। —तीक्षक= इन्तज़ार करने वाला।

प्रतीत—(वि० सं०) जाना हुआ। विदित।

प्रतीति—(स्त्री० सं०) जानकारी ज्ञान। विश्वास।

प्रत्यंचा—(स्त्री० हि०) धनुष की डोरी।

प्रत्यक्ष—(वि० सं०) जो देखा जा सके।

प्रत्यागमन—(पु० सं०) लौट आना। वापसी। दोबारा आना।

प्रत्याघात—(पु० सं०) चोट के बदले की चोट। टक्कर।

प्रत्युपकार—(पु० सं०) उपकार के बदले में उपकार। प्रत्युपकारी=उपकार का बदला देने वाला।

प्रत्येक—(वि० सं०) हरएक। अलग-अलग।

प्रथम—(वि० सं०) पहला। आदि का।

प्रथा—(स्त्री० सं०) रीति। रिवाज़। नियम।

प्रदक्षिणा—(स्त्री० सं०) परिक्रमा। चारों ओर घूमना।

प्रदेश—(पु० सं०) प्रांत। सूबा। स्थान। जगह।

प्रधान—(वि० सं०) मुख्य। खास। श्रेष्ठ। मुखिया। नेता। मन्त्री। वज़ीर।

प्रबंध—(पु० सं०) इन्तज़ाम। निबन्ध।

प्रबल—(वि० सं०) बलवान्। प्रचंड। तेज। उग्र।

प्रबोध—(पु०सं०) जानना। पूर्ण ज्ञान। आश्वासन।

प्रभा—(स्त्री० सं०) प्रकाश। चमक।

प्रभात—(पु० सं०) सबेरा।

प्रभाव—(पु० सं०) सामर्थ्य। असर।

प्रभु—(पु० सं०) नायक। अधिपति। स्वामी। मालिक।

ईश्वर । —ता=बड़ाई । महत्त्व । हुकूमत ।

प्रमाण—(पु० सं०) सबूत । प्रमाणित = साबित । प्रामाणिक=विश्वास योग्य ।

प्रमाद—(पु० सं०) भूल । भ्रम ।

प्रमेह—(पु० सं०) धातु गिरने का रोग ।

प्रमोद—(पु० सं०) आनन्द । हर्ष । सुख ।

प्रयत्न—(पु० सं०) चेष्टा । कोशिश । प्रयास ।

प्रयास—(पु० सं०) प्रयत्न । उद्योग । कोशिश ।

प्रयुक्त—(वि० सं०) अच्छी तरह मिला हुआ । सम्मिलित । व्यवहार में आया हुआ ।

प्रयोग—(पुं० सं०) साधन । व्यवहार ।

प्रयोजन—(पु० सं०) कार्य । काम । मतलब । गरज ।

प्रलय—(पु० सं०) विलीन होना । न रह जाना । संसार का तिरोभाव ।

प्रलाप—(पु० सं०) बकना । व्यर्थ की बकवाद ।

प्रलोभन—(पु० सं०) लालच दिखाना ।

प्रवर्त्तक—(पु० सं०) सञ्चालक ।

प्रवाद—(पु० सं०) जनश्रुति । अपवाद ।

प्रवास—(पु० सं०) विदेश रहना । परदेश का निवास । परदेश । प्रवासी=परदेश में रहने वाला ।

प्रवाह—(पु० सं०) स्रोत । बहाव । धारा । व्यवहार । सिलसिला ।

प्रवाहिका—(स्त्री० सं०) बहानेवाली ।

प्रविष्ट—(वि० सं०) भीतर पहुँचा हुआ । घुसा हुआ ।

प्रवृत्त—(वि० सं०) तत्पर । लगा हुआ । तैयार । प्रवृत्ति= लगन ।

प्रवेश—(पु० सं०) भीतर जाना । घुसना । गति । पहुँच ।

प्रशंसक—(वि० सं०) प्रशंसा करनेवाला । खुशामदी ।

प्रशंसा—(स्त्री० सं०) स्तुति। बड़ाई। तारीफ़।

प्रशस्त—(वि० सं०) प्रशंसनीय। श्रेष्ठ। उत्तम। प्रशस्ति=प्रशंसा। सरनामा।

प्रश्न—(पु० सं०) पूछताछ। जिज्ञासा। सवाल।

प्रश्वास—(पु० सं०) बाहर आती साँस।

प्रसंग—(पु० सं०) मेल। संबंध। लगाव। विषय का लगाव। अर्थ की संगति।

प्रसन्न—(वि० सं०) सन्तुष्ट। खुश।

प्रसव—(पु० सं०) बच्चा जनने की क्रिया।

प्रसाद—(पु० सं०) प्रसन्नता। कृपा। सफाई। वह वस्तु जो देवता को चढ़ाई जाय। देवता या बड़े की देन।

प्रसिद्ध—(वि० सं०) विख्यात। मशहूर।

प्रसूता—(स्त्री० सं०) बच्चा जननेवाली स्त्री।

प्रसून—(पु० सं०) फूल। पुष्प। फल।

प्रस्तर—(पु० सं०) पत्थर।

प्रस्ताव—(पु० सं०) अवसर। विषय। ज़िक्र। चर्चा। सभा समाज में उठाई हुई बात। —क=प्रस्ताव उपस्थित करनेवाला। प्रस्तावित=जिसके लिये प्रस्ताव हुआ हो।

प्रस्तुत—(वि० सं०) प्रासंगिक। जो सामने हो। तैयार।

प्रस्थान—(पु० सं०) रवानगी। गमन। कूच।

प्रहरी—(वि० सं०) पहर-पहर पर घंटा बजानेवाला। पहरेवाला।

प्रहसन—(पु० सं०) हँसी। दिल्लगी। नाटक का एक अंग।

प्रहार—(पु० सं०) आघात। वार। चोट।

प्रांत—(पु० सं०) सीमा। छोर। सिरा। प्रदेश। खंड।

प्राइम मिनिस्टर—(पु० अं०) किसी राज्य या देश का प्रधान मंत्री। वज़ीर आज़म।

प्राइमर—(पु० सं०) किसी भाषा

की वह प्रारम्भिक पुस्तक जिसमें उस भाषा की वर्णमाला आदि दी गई हो।

प्राइमर—(वि॰ अं॰) प्रारंभिक। प्राथमिक।

प्राइवेट—(वि॰ अं॰) व्यक्तिगत। निजका। गुप्त। —सेक्रेटरी = किसी बड़े आदमी का निज का मन्त्री या सहायक।

प्राकार—(पु॰ सं॰) कोट। चहार दिवारी।

प्राकृत—(वि॰ सं॰) प्रकृति-संबंधी। स्वाभाविक। सहज। साधारण। नीच। बोलचाल की भाषा। एक प्राचीन भाषा। प्राकृतिक = जो प्रकृति से उत्पन्न हुआ हो। कुदरती।

प्राक्सी—(स्त्री॰ अं॰) प्रतिनिधि पत्र। प्रतिनिधि।

प्राचीन—(वि॰ सं॰) पूरब का। पुराना। पुरातन।

प्राण—(पु॰ सं॰) वायु। जान। —दंड = मौत की सज़ा। —प्रतिष्ठा = प्राण धारण कराना। —प्राणांतक = घातक प्राणायाम = योग शास्त्रानुसारयोग के आठ अंगों में चौथा। साँस रोकने की क्रिया। प्राणी = प्राण-धारी। जीव।

प्रातःकाल—(पु॰ सं॰) सबेरे का समय। प्रातःकालीन = प्रातः काल सम्बन्धी। प्रतःकाल का। प्रातःस्मरणीय = जो प्रातःकाल स्मरण करने के योग्य हो। श्रेष्ठ। पूज्य।

प्राथमिक—(वि॰ सं॰) पहले का। प्रारंभिक। आदिम।

प्रादुर्भाव—(पु॰ सं॰) प्रकट होना। विकाश।

प्रादुर्भूत—(वि॰ सं॰) प्रकटित। विकसित। निकला हुआ। उत्पन्न।

प्रादेशिक—(वि॰ सं॰) प्रदेश सम्बन्धी। प्रांतिक।

प्राधान्य—(पु॰ सं॰) प्रधानता। श्रेष्ठता। मुख्यता।

प्राप्त—(वि॰ सं॰) पाया हुआ। जो मिला हो। प्राप्ति =

मिलना। उपलब्धि। पहुँच। आय। फ़ायदा।

प्रामीसरी नोट—(पु० अं०) हुंडी।

प्रायः—(वि० सं०) बहुधा। अकसर। लगभग। क़रीब-क़रीब।

प्रायद्वीप—(पु० हिं०) स्थल का वह भाग जो तीन ओर से पानी से घिरा हो और केवल एक ओर स्थल से मिला हो।

प्रायश्चित्त—(पु० सं०) शास्त्रानुसार वह कृत्य जिसके करने से मनुष्य के पाप छूट जाते हैं।

प्रारंभ—(पु० सं०) आरंभ। शुरू। आदि। प्रारंभिक=प्रारंभ का। आदिम। प्राथमिक।

प्रारब्ध—(वि० सं०) भाग्य। क़िस्मत।

प्रार्थना—(स्त्री० सं०) निवेदन। विनय। प्रार्थी=माँगने वाला। निवेदक। इच्छुक।

प्रासाद—(पु० सं०) महल।

प्रास्पेक्टस—(पु० अं०) विवरण पत्र।

प्रिंटर—(पु० अं०) छापने वाला।

प्रिंटिंग—(स्त्री० अं०) छापने का काम। छपाई। —इंक=टाइप के छापने की स्याही। —प्रेस=छापाख़ाना।

प्रिंस—(पु० अं०) राजकुमार। शाहज़ादा। सरदार।

प्रिंस आफ़ वेल्स—(पु० अं०) इङ्गलैंड का युवराज।

प्रिंसिपल—(पु० अं०) किसी बड़े विद्यालय या कालिज आदि का प्रधान अधिकारी। सिद्धान्त।

प्रिय—(सं०) प्यारा। प्रियतम=प्राणों से भी बढ़कर प्रिय। स्वामी। पति। —वर=अतिप्रिय। सब से प्यारा। प्रिया=स्त्री। प्रेमिका स्त्री।

प्रिविलेज लीव—वह छुट्टी जिसे सरकारी तथा किसी ग़ैर सरकारी संस्था या कम्पनी के नौकर कुछ निर्दिष्ट अवधि तक

काम करने के बाद पाने के अधिकारी होते हैं।

प्रिवी कौंसिल—(पु० अं०) किसी बड़े शासक को शासन के काम में सहायता देनेवाले कुछ चुने हुए लोगों का वर्ग।

प्रीति—(स्त्री० सं०) आनन्द। प्रसन्नता। प्रेम। मुहब्बत।

प्रीमियम—(पु० अं०) वह रक़म जो जीवन या दुर्घटना आदि का बीमा कराने पर उस कम्पनी का, जिसके यहाँ बीमा कराया गया हो, निश्चित समयों पर दी जाती है।

प्रीमियर—(पु० अं०) प्रधान-मंत्री। वज़ीर आज़म।

प्रूफ़—(पु० अं०) सबूत। प्रमाण। किसी छपने वाली चीज़ का वह नमूना जो उसके छपने से पहले अशुद्धियाँ आदि दूर करने के लिये तैयार किया जाता है। —रीडर=प्रूफ पढ़नेवाला।

प्रूम—(पु० अं०) सीसे का बना हुआ एक यंत्र जिससे समुद्र की गहराई नापते हैं।

प्रेत—(पु० सं०) मरा हुआ मनुष्य।

प्रेम—(पु० सं०) स्नेह। अनुराग। प्रीति। —पात्र=प्रेमी। माशूक़। प्रेमालाप=प्रेम की बातचीत। प्रेमालिंगन=प्रेमपूर्वक गले लगाना। प्रेमी=अनुरागी। आसक्त।

प्रेरणा—(स्त्री० सं०) कार्य में प्रवृत्त या नियुक्त करना। उत्तेजना देना। दबाव। ज़ोर। प्रेरित=भेजा हुआ। प्रवृत्त किया हुआ।

प्रेषक—(पु० सं०) भेजने वाला। प्रेरक। प्रेषित=भेजा हुआ।

प्रेस—(पु० अं०) छापने की कल। छापाखाना। —कम्युनिक किसी विषय के सम्बन्ध में वह सरकारी विज्ञप्ति वा वक्तव्य जो अखबारों को छापने के लिए दिया जाता है। —ऐक्ट=वह कानून जिसके द्वारा छापेखाने वालों के अधिकारों और

स्वतन्त्रता आदि का नियन्त्रण होता है।—मैन=छापे की कल चलाने वाला मनुष्य। —रिपोर्टर=किसी समाचार-पत्र के सम्पादकीय-विभाग का वह कार्यकर्ता जिसका काम सब प्रकार के समाचारों का संग्रह कर उन्हें लिखकर सम्पादक को देना होता है।

प्रेसिडेंट—(पु० अं०) सभापति। किसी सभा आदि का प्रधान।

प्रेसीडेंसी—(स्त्री० अं०) सभापति का ओहदा या काम। ब्रिटिश भारत में शासन के सुभीते के लिए कुछ निश्चित प्रदेशों या प्रान्तों का किया हुआ विभाग जो एक गवर्नर या लाट की अधीनता में होता है।

प्रेस्क्रिप्शन—(पु० अं०) दवा का पुरजा। नुसखा।

प्रोक्लेमेशन—(पु० अं०) घोषणा। एलान। ढिंढोरा। डुग्गी।

प्रोग्राम—(पु० अं०) कार्यक्रम।

प्रोटेस्टेंट—(पु० अं०) ईसाइयों का एक संप्रदाय।

प्रोपैगैंडा—(पु० अं०) प्रचार-कार्य।

प्रोपोज़—(क्रि० अं०) तजवीज़ करना। प्रस्ताव करना। प्रोपोज़ल=प्रस्ताव।

प्रोप्राइटर—(पु० अं०) मालिक। स्वामी।

प्रोफेशन—(पु० अं०) पेशा।

प्रोफेसर—(पु० अं०) कालिज का शिक्षक

प्रोबेशन—(पु० अं०) वह परीक्षा जो किसी व्यक्ति के कार्य के सम्बन्ध में की जाय। प्रोबेशनरी=योग्यता की जाँच। जो इस शर्त पर रखा जाय कि यदि सन्तोषजनक कार्य करेगा तो स्थायी रूप से रख लिया जायगा।

प्रोमिसरी नोट—(पु० अं०) हुन्डी।

प्रोमोशन—(पु० अं०) तरक्की। दर्जा चढ़ना।

प्रोसीडिंग—(स्त्री० अं०) किसी सभा या समिति के अधिवेशन के कार्यों का विवरण। कार्य-विवरण। प्रोसीडिंग बुक=कार्य-विवरण-पुस्तक।

प्रोसेशन—(पु० अं०) धूम-धाम की सवारी। जुलूस।

प्रौढ़—(वि० सं०) अच्छी तरह बढ़ा हुआ। जिसकी युवावस्था समाप्ति पर हो। पुष्ट। मज़बूत। गम्भीर।

प्लांचेट—(पु० अं०) मेस्मेरेज़्म पर विश्वास रखने वालों के काम की पान के आकार की लकड़ी की एक छोटी तख्ती।

प्लाट—(पु० अं०) इमारत बनाने या खेती आदि करने के लिए ज़मीन का टुकड़ा। ऐसी ज़मीन का बना हुआ नकशा। मनसूबा। उपन्यास, नाटक या काव्य आदि की वस्तु या मुख्य कथा-भाग। षड्यन्त्र। साजिश।

प्लास्टर—(पु० अं०) औषध-लेप। पलस्तर।

प्लास्टर आफ पेरिस—(पु० अं०) एक प्रकार का अङ्गरेजी मसाला।

प्लीडर—(पु० अं०) वकील।

प्लेग—(पु० अं०) एक संक्रामक रोग।

प्लैंट—(पु० अं०) अर्जी दावा।

प्लेट—(पु० अं०) किसी धातु का पतला टुकड़ा। चादर। तश्तरी।

प्लेटफार्म—(पु० अं०) चबूतरा जिस पर खड़े होकर लोग किसी सभा आदि में भाषण दें। रेलवे-स्टेशनों पर बना वह चबूतरा जिसके किनारे रेल खड़ी होती है और जिस पर होकर यात्री आदि चढ़ते-उतरते हैं।

प्लैंटर—(पु० अं०) बड़े पैमाने में खेती करने वाला।

प्लैकर्ड—(पु० अं०) छपा हुआ बड़ा नोटिस या विज्ञापन जो

प्रायः दीवारों आदि पर चिपकाया जाता है। पोस्टर।

सैटिनम—(पु० अं०) चाँदी के रङ्ग की एक बहुमूल्य धातु।

प्लैन—(पु० अं०) किसी बनने वाली इमारत का रेखा-चित्र। नक्शा। ढाँचा। मनसूबा। तजवीज। योजना।

फ—हिन्दी-वर्णमाला में बाईसवाँ व्यञ्जन और पवर्ग का दूसरा वर्ण।

फंकी—(स्त्री० हिं०) फाँकने की दवा।

फंड—(पु० अं०) कोश।

फंदा—(पु० हिं०) बन्धन। जाल।

फँसना—(क्रि० स० हिं०) बन्धन में पड़ना। पकड़ा जाना। उलझना।

फक—(वि० हि०)। सफेद। बदरङ्ग।

फ़क़त—(वि० अ०) बस। पर्याप्त। केवल। सिर्फ।

फ़क़ीर—(पु० अ०) भिखमङ्गा। भिक्षुक। साधु। संसार-त्यागी।

फ़ख़र—(पु० फ़ा०) गौरव। गर्व।

फ़जर—(स्त्री० अ०) प्रातःकाल। सबेरा।

फ़ज़ल—(पु० अ०) कृपा। महरबानी।

फ़ज़ीलत—(स्त्री० अ०) श्रेष्ठता। उत्कृष्टता। बड़ाई।

फ़ज़ीहत—(स्त्री० अ०) दुर्दशा। दुर्गति।

फ़ज़ूल—(वि० फ़ा०) व्यर्थ। —खर्च = अपव्ययी। फजूल खर्ची = व्यर्थ व्यय करना।

फटकना—(क्रि० हिं०) फट् फट् शब्द करना। फटफटाना। आने देना।

फटका—(पु० अनु०) धुनिए की

धुनकी जिससे वह रुई आदि धुनता है।

फटकार—(स्त्री० हि०) झिड़की। —ना = झिड़कना। उड़ा लेना। मारना।

फट्टा—(पु० हि०) चीरी हुई बाँस की छड़। मुँहफट आदमी। (स्त्री०) फट्टी।

फड़—(स्त्री० हि०) दाँव। जूए का अड्डा। —बाज़ = अपने यहाँ लोगों को जूआ खेलानेवाला व्यक्ति।

फड़कन—(स्त्री० हि०) धड़कन। उत्सुकता। फड़कना = (अनु०) फड़फड़ाना। उछलना।

फड़नवीस—(पु० हि०) मराठोंके राजत्वकाल का एक राजपद।

फड़फड़ाना—(क्रि० अनु०) फड़फड़ शब्द उत्पन्न करना। हिलाना।

फडुआ, फडुहा—(पु० हि०) मिट्टी खोदने और टालने का औज़ार। (स्त्री०) फडुही। फडुई।

फण—(पु० सं०) फन।

फ़तवा—(पु० अ०) मुसलमानों के धर्मशास्त्रानुसार व्यवस्था जो मौलवी देते हैं।

फ़तह—(स्त्री० अ०) विजय। जीत। सफलता। —मन्द = विजयी।

फतिंगा—(पु० हि०) पतिङ्गा। पतङ्ग।

फ़तीलसोज़—(पु० फ़ा०) चिराग़दान। दीवट।

फ़तूर—(पु० अ०) विकार। दोष। नुकसान।

फ़तूह—(स्त्री० अ०) जीत। विजय।

फ़तूही—(स्त्री० अ०) सदरी। सलूका। विजय या लूट का धन।

फ़तेह—(स्त्री० अ०) विजय। जीत

फन—(पु० हि०) फण।

फ़न—(पु० फ़ा०) गुण। खूबी। विद्या। दस्तकारी। छलने का ढङ्ग।

फ़ना—(स्त्री० अ०) विनाश। बरबादी।

फफोला—(पु० हि०) छाला। झलका।

फ़बती—(स्त्री० हि०) वह बात जो समय के अनुकूल हो। व्यंग्य।

फ़बना—(क्रि० हि०) शोभा देना। सोहना।

फ़य्याज़—(अ०) दानी। उदार। दाता।

फ़रक़—(पु० अ०) पार्थक्य। अलगाव। दूरी। अन्तर। भेद।

फ़रज़ंद—(पु० फ़ा०) पुत्र। लड़का।

फ़रज़ी—(पु० फ़ा०) शतरञ्ज का एक मोहरा। कल्पित।

फ़रद—(स्त्री० अ०) लेखा वा वस्तुओं की सूची।

फ़रमाइश—(स्त्री० फ़ा०) आज्ञा। आर्डर। माँग। फरमाइशी = जो फरमाइश करके बनवाया या मँगाया गया हो।

फ़रमान—(पु० फ़ा०) राजकीय आज्ञापत्र। अनुशासन पत्र। फरमाना = आज्ञा देना। कहना।

फ़रयाद—(स्त्री० फ़ा०) शिकायत। नालिश।

फ़रलांग—(पु० अं०) दो सौ बीस गज़ की दूरी।

फ़रलो—(स्त्री० अं०) छुट्टी जो सरकारी नौकरों को आधे वेतन पर मिलती है।

फ़रवरी—(पु० अं०) अङ्गरेजी सन् का दूसरा महीना।

फ़रश—(पु० अ०) बिछावन। धरातल। समतल भूमि। —बन्द = वह ऊँचा और समतल स्थान जहाँ फरश बना हो।

फ़रशी—(स्त्री० फ़ा०) गुड़गुड़ी। हुक्का।

फ़रहंग—(फ़ा०) बुद्धि। अक्ल। कोष। कुञ्जी।

फ़रहत—(स्त्री० अ०) आनंद। प्रसन्नता। मनःशुद्धि।

फ़रहाद—(फ़ा०) एक प्रसिद्ध प्रेमी का नाम।

फ़राख़—(वि० फ़ा०) विस्तृत। लम्बा। चौड़ा। फराखी = चौड़ाई। विस्तार। फैलाव।

फ़राग़त—(स्त्री० अ०) छुटकारा। छुट्टी। निबटना। निश्चिंत होना। पाख़ाना जाना।

फ़राज़—(वि॰ फ़ा॰) ऊँचा।
फ़रामोश—(वि॰ फ़ा॰) भूला हुआ। विस्मृत।
फ़रार—(वि॰ अ॰) भागा हुआ। फ़रारी=भागा हुआ। भगोड़ा।
फ़रासीस—(पु॰ फ़ा॰) फ्रांस का रहने वाला। फ़रासीसी=फ्रांस का रहने वाला। फ्रांस का।
फ़राहम—(फ़ा॰) इकट्ठा। जमा।
फ़रियाद—(स्त्री॰ फ़ा) शिकायत। नालिश। फरियादी=फरियाद करने वाला।
फरिश्ता—(पु॰ फ़ा॰) ईश्वरी दूत।
फ़रीक़—(पु॰ अ॰) मुक़ाबला करने वाला। विरोधी। दूसरा पक्ष। प्रतिपक्षी। फ़रीक़ैन=फ़रीक़ का बहुवचन।
फरुहो—(स्त्री॰ हिं॰) छोटा फावड़ा। मथानी।
फ़रेफ़्ता—(वि॰ फ़ा॰) लुभाया हुआ। आशिक़। आसक्त।
फ़रेब—(पु॰ फ़ा॰) छल। धोखा। कपट। फरेबी=धोखेबाज़। कपटी।
फ़रो—(वि॰ फ़ा॰) दबा हुआ। तिरोहित।
फ़रोख़्त—(स्त्री॰ फ़ा॰) विक्रय। बिक्री। बेचना।
फ़रोश—(फ़ा॰)। बेचनेवाला।
फ़र्क़—(पु॰ अ॰) भेद। अन्तर।
फ़र्ज़—(पु॰ अ॰) धार्मिक कृत्य। कर्त्तव्य कर्म। उत्तर-दायित्व। कल्पना। मान लेना। फ़र्ज़ी=कल्पित। सत्ताहीन।
फ़र्द—(स्त्री॰ फ़ा॰) काग़ज व कपड़े आदि का टुकड़ा जो किसी के साथ जुड़ा वा लगा न हो। कागज का टुकड़ा जिस पर किसी वस्तु का विवरण, लेखा, सूची वा सूचना आदि लिखी गई हो या लिखी जायँ।
फ़र्म—(पु॰ अं॰) व्यापारी व महाजनी कोठी। साझे का कारबार।
फर्राटा—(पु॰ अनु॰) वेग। तेजी।
फर्राश—(पु॰ अ॰) नौकर।

खिदमतगार। फ़र्राशी=(वि०फ़ा०) फ़र्श या फ़र्राश के कामों से सम्बन्ध रखनेवाला।

फ़र्श—(स्त्री० अ०) बिछावन। या बिछाने का कपड़ा।

फ़र्शी—(स्त्री० फ़ा०) एक प्रकार का बड़ा हुक्का। फ़र्श का।

फ़र्स्ट—(वि० अं०) पहला। —क्लास=सर्वश्रेष्ठ।

फल—(पु० सं०) वनस्पति का बीजकोश। परिणाम। नतीजा। कर्मभोग। गुण। प्रभाव। बदला। हलकी नोक। चाकू की धार।

फलक—(पु० सं०) तख़्ता। पट्टी। वरक। पृष्ठ। (अ०) आकाश। स्वर्ग। आसमान।

फलदान—(पु० हि०) हिंदुओं की एक रीति जो विवाह होने के पहले होती है।

फलाँ—(वि० फ़ा०) अमुक। कोई अनिश्चित।

फलाँग—(स्त्री० हि०) कुदान। चौकड़ी।

फलालीन, फलालेन, फलालैन—(पु० हि०) एक प्रकार का ऊनी वस्त्र। (अ०) फ़्लैनल।

फलाहारी—(पु० हि०) फल खानेवाला। जो फल खाकर निर्वाह करता हो।

फलित—(वि० सं०) फला हुआ। संपन्न। चूर्ण।

फली—(पु० हि०) छीमी।

फलीभूत—(वि० सं०) लाभदायक। फलदायक।

फ़वाइद—(अ०) फ़ायदे का बहुवचन। फलदायक।

फ़व्वारा—(अ०) निर्झर, जिसमें से पानी निकलता हो।

फ़सल—(स्त्री० अ०) ऋतु। मौसम। समय। काल। खेत की उपज। अन्न। फसली=ऋतु संबंधी। ऋतु का। एक प्रकार का संवत्। —बुख़ार=जाड़ा देकर आनेवाला बुखार।

फ़साद—(पु० अ०) बिगाड़। विकार। विद्रोह। उपद्रव। झगड़ा लड़ाई। विवाद।

फसादी = उपद्रवी। झगड़ालू। नटखट।
फ़साना—(फ़ा०) क़िस्सा-कहानी।
फ़सील—(अ०) परकोटा। शहर-पनाह। क़िले की दीवार।
फ़सीह—(अ०) सुन्दर वक्ता। अच्छा बोलनेवाला।
फ़स्द—(स्त्री० अ०) नस को छेद-कर शरीर का दूषित रक्त निकालने की क्रिया।
फ़स्ल—(अ०) ऋतु। खेती। पुस्तक का एक भाग।
फ़हम—(स्त्री० अ०) ज्ञान। समझ। बुद्धि।
फहरना—(क्रि० हि०) वायु में उड़ाना। फड़फड़ाना। फहराना = (क्रि० हि०) उड़ाना।
फहश—(वि० अ०) फूहड़। अश्लील।
फाँक—(स्त्री० हि०) छुरी आदि से काटा हुआ टुकड़ा।
फाँकना—(क्रि० हि०) कण या चूर्ण को मुँह में फेंककर खाना। फाँका = (पु० हि०) चूर्ण या कण जो एक बार में मुँह में आ सके।
फाँड़ा—(पु० हि०) दुपट्टे या धोती का कमर में बँधा हुआ हिस्सा।
फाँद—(स्त्री० हि०) उछाल। फाँदना = कूदना। उछलना।
फाँफी—(स्त्री० हि०) बहुत बारीक तह। दूध के ऊपर पड़ी हुई मलाई की बहुत पतली तह। जाला। माड़ा।
फाँस—(स्त्री० हि०) बंधन। पाश। फंदा। फाँसना = बाँधना। पकड़ना। जाल में फँसाना। फाँसी = प्राणदंड देने का फंदा।
फ़ाइनानशल—(वि० अं०) मालगुज़ारी के मुतअल्लिक़। माली।
फ़ाइनानशल कमिश्नर—(पु० अं०) वह सरकारी अफसर जिसके अधीन किसी प्रदेश का राजस्व विभाग या माल का महकमा हो।

फ़ाइन—(पु० अं०) जुर्माना। अर्थदंड।

फ़ाइनल—(वि० अं०) आखिरी। अंतिम।

फ़ाइनांस—(पु० अं०) राजस्व और उसके आय-व्यय की पद्धति। अर्थ-व्यवस्था।

फ़ाइल—(स्त्री० अं०) मिसिल। नत्थी। सामयिक पत्रों आदि के कुछ पूरे अंकों का समूह।

फाउंटेनपेन—(अं०) वह कलम जिसमें अंदर स्याही भरी रहती है।

फाउंड्री—(स्त्री० अं०) ढालने का कारखाना।

फाउंडेशन—(अं०) नींव।

फ़ाक़ा—(पु० अ०) उपवास।

फ़ाक़ामस्त, फ़ाक़ेमस्त—(वि० फ़ा०) जो पैसा पास न रख-कर भी बेपरवा रहता हो।

फ़ाख़तई—(वि० हि०) भूरापन लिये हुए लाल रंग।

फाख़ता—(अ०) पंडुक।

फाग—(पु० हि०) फागुन के महीने में होनेवाला उत्सव।

फागुन—(पु० सं०) माघ के बाद का महीना। फाल्गुन।

फ़ाज़िल—(वि० अ०) ज़रूरत से ज़्यादा। खर्च या काम से बचा हुआ। निरर्थक। व्यर्थ।

फ़ाज़िल बाक़ी—(स्त्री० अ०) हिसाब की कमी या बेशी। हिसाब में का लेना या देना।

फाटक—(पु० हि०) बड़ा दर-वाज़ा। तोरण।

फाटना—(क्रि० हि०) टूटना। खंडित होना। दरार पड़ना।

फाड़ना—(क्रि० हि०) चीरना। विदीर्ण करना।

फातिहा—(पु० अ०) प्रार्थना। वह चढ़ावा जो मरे हुए लोगों के नाम पर दिया जाय।

फ़ादर—(पु० अं०) पादरियों की सम्मान-सूचक उपाधि। पिता। बाप।

फ़ानी—(अ०) नाशवान।

फ़ानूस—(पु० फ़ा०) एक प्रकार की बड़ी कंदील। (अ०) झाड़ का वह हिस्सा जिसमें बत्तियाँ जलाते हैं।

फ़ायदा—(पु० अ०) लाभ। नफ़ा। आय। फ़ायदेमंद= लाभदायक। उपकारक।

फ़ायर—(पु० अं०) आग। बंदूक, तोप आदि हथियारों का दगना। —एंजिन=आग बुझाने की दमकल। —ब्रिगेड =आग बुझानेवाले कर्मचारियों का दल। —मैन= इंजन में कोयला झोंकने का काम करनेवाला।

फारख़ती—(स्त्री० हि०) चुकती। बेबाक़ी।

फ़ारम (फ़ार्म)—(पु० अं०) दरख़ास्त, बही-खाते, रसीद आदि के नमूने। छपाई में एक पूरा तख़्ता जो एक बार एक साथ छापा जाता हो।

फ़ारमूला—(पु० अं०) संकेत। सिद्धांत। कायदा। नुसख़ा।

फ़ारसी—(स्त्री० फ़ा०) फारस देश की भाषा।

फ़ारिग़—(वि० अ०) काम से छुट्टी पाया हुआ। निश्चिन्त। बेफ़िक्र। छूटा हुआ। मुक्त। —उल्-बाल=संपन्न। निश्चिन्त। —उल्-बाली= अमीरी। बेफ़िक्री।

फ़ारेन—(वि० अं०) दूसरे राष्ट्र या देश का। वैदेशिक। पर-राष्ट्रीय। —मिनिस्टर= वैदेशिक मंत्री।

फ़ार्म—(अं०) खेत।

फ़ाल—(अं०) पतन।

फ़ालतू—(वि० हि०) ज़रूरत से ज्यादा। बढ़ती। निकम्मा।

फालसा—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का छोटा पेड़।

फ़ालिज—(पु० अ०) पक्षाघात। लक़वा मार जाना।

फालूदा—(पु० फ़ा०) पीने के लिये बनाई हुई एक चीज़ जिसका व्यवहार प्रायः मुसलमान करते हैं।

फाल्गुन—(पु० सं०) माघ के बाद का महीना।

फावड़ा—(पु० हि०) मिट्टी खोदने का एक औज़ार।

फ़ाश—(वि० फ़ा०) खुला। प्रकट। ज्ञात।

फ़ासफ़रस—(पु० अं०) एक जलनेवाला द्रव्य।

फ़ासला—(पु० अ०) दूरी। अंतर।

फास्ट—(वि० अं०) तेज। शीघ्र-गामी।

फाहा—(पु० हिं०) फाया।

फ़िक्र—(अ०) चिन्ता। सोच।

फाहिशा—(वि० अ०) छिनाल।

फ़िकरा—(पु० अ०) वाक्य। जुमला। झाँसापट्टी। दम-बुत्ता। फ़िकरेबाज=झाँसा-पट्टी देनेवाला। फ़िकरेबाजी =झाँसापट्टी देना।

फ़िक्र—(स्त्री० अ०) चिन्ता। —मन्द=(फ़ा०) चिन्ताग्रस्त।

फिट—(अव्य० अनु०) छी। धिक्कारने का शब्द। (अं०) उपयुक्त। ठीक। जिसके कल पुरजे आदि ठीक हों। मूर्च्छा।

फिटकार—(पु० हि०) धिक्कार। लानत।

फिटकिरी—(स्त्री० हि०) एक खनिज पदार्थ।

फिटन—(स्त्री० अं०) चार पहिये की खुली घोड़ा गाड़ी।

फ़ितना—(पु० अं०) झगड़ा। दङ्गा-फसाद।

फ़ितरत—(अ०) स्वभाव। बुद्धि। कमज़ोरी। फ़ितरती= चालाक। चतुर। मायावी। धोखेबाज़।

फितूर—(पु० अ०) कमी। झगड़ा। फितूरी=झगड़ालू। उपद्रवी।

फिदवी—(वि० अ०) आज्ञा-कारी।

फ़िदा—(अ०) आसक्त।

फिरंग—(पु० अ०) गरमी। आतशक।

फिरंगिस्तान—(पु० अ० फा०) फिरङ्गियों के रहने का देश। युरोप। गोरों का देश।

फिरंगी—(वि० हि०) गोरा। युरोपियन।

फिरंट, फ्रंट—(वि०अं०) वरुद्ध। खिलाफ। बिगड़ा हुआ।

फिर—(क्रि० वि० हि०) एक बार और। दोबारा।

फ़िरक़ा—(अ०) जाति। सम्प्रदाय।

फिरकी—(स्त्री० हि०) लड़कों का एक खिलौना।

फ़िरदौस—(अ०) स्वर्ग।

फ़िरदौसी—(फ़ा०) फारसी के एक कवि का नाम।

फिरना—(क्रि० हि०) इधर-उधर चलना। वापस आना।

फ़िरनी—(स्त्री० फ़ा०) एक प्रकार का खाद्य पदार्थ।

फ़िराक़—(पु० अ०) वियोग। चिन्ता। सोच। टोह। खोज।

फ़िरार—(पु० अ०) भागना। भाग जाना। फिरारी=भागने वाला। भगोड़ा।

फ़िरिश्ता—(पु० फ़ा०) देवदूत।

फ़िलसफ़ा—(अ०) दर्शनशास्त्र। फिलासफी।

फ़िलहाल—(अ०) तत्काल। फ़ौरन्। अभी।

फिलासफी—(स्त्री० अं०) दर्शनशास्त्र। सिद्धान्त या तत्व की बात।

फिल्ली—(स्त्री० देश०) करघे का एक पुर्ज़ा।

फ़िशाँ—(फ़ा०) झाड़ता हुआ। झाड़ने वाला।

फिस—(वि० अनु०) कुछ नहीं।

फिसड्डी—(वि० अनु०) जिससे कुछ करते-धरते न बने।

फिसलन—(स्त्री० हि०) रपटन। फिसलना=रपटना। खिसलना।

फिहरिश्त—(स्त्री० फ़ा०) सूची। सूचीपत्र। बीजक।

फ़ी—(अव्य० अं०) हरएक। प्रति एक। भेद। अन्तर। (अं०) शुल्क। फ़ीस।

फीका—(वि० हि०) स्वादहीन। नीरस।

फीता—(पु० पुर्त०) नेवार की पतली धज्जी।

फ़ीरोज़ा—(पु० फ़ा०) एक बहुमूल्य पत्थर। फ़ीरोज़ी=(फ़ा०) फीरोजे के रंग का। हरापन लिए नीला।

फ़ील—(पु० फ़ा०) हाथी। —खाना=वह घर जहाँ हाथी

बाँधा जाता हो। —पाया= ईंटे का बना हुआ मोटा खंभा जिस पर छत ठहराई जाती है।

फील्ड—(पु० अं०) खेत। मैदान। गेंद खेलने का मैदान।

फील्ड एम्बुलेंस—(पु० अं०) मैदानी अस्पताल।

फीवर—(पु० अं०) ज्वर। बुख़ार।

फीस—(स्त्री० अं०) कर। मेहनताना। उजरत।

फुँकनी—(स्त्री० हि०) नली जिसमें मुँह की हवा भरकर आग दहकाते हैं।

फुँकवाना—(क्रि० हि०) फूँकने का काम करना।

फुंसी—(स्त्री० हि०) छोटी फोड़िया।

फुचड़ा—(पु० देश०) कपड़े, दरी, कालीन, चटाई आदि बुनी हुई वस्तुओं में बाहर निकला हुआ सूत या रेशा।

फुट—(वि० हि०) अकेला। अलग। (अं०) एक नाप जो १२ इंच का होता है। पैर। —नोट=वह टिप्पणी जो किसी लेख वा पुस्तक के पृष्ठ में नीचे की ओर दी जाती है। —पाथ=(अं०) शहरों में सड़क की पटरी पर का वह मार्ग जिस पर मनुष्य पैदल चलते हैं। —बाल=(अं०) बड़ा गेंद जिसे पैर की ठोकर से उछालकर खेलते हैं।

फुटकर—(वि० हि०) जिसका जोड़ा न हो। अकेला। अलग। पृथक्। थोड़ा-थोड़ा।

फुटका—(पु० हि०) फफोला। छाला। फुटकी=बहुत छोटी अंठी।

फुटेहरा—(पु० हि०) चने का भुना हुआ चबेन।

फुदकना—(क्रि० अनु०) उछल-उछलकर कूदना। उछलना।

फुदकी—(स्त्री० हि०) एक छोटी चिड़िया।

फुनगी—(स्त्री० हि०) अंकुर।

फुफकार—(पु० अनु०) फूँक जो साँप मुँह से निकालता है।

फुफेरा—(वि० हि०) फूफा से उत्पन्न।

फुरक़त—(स्त्री० अ०) वियोग।

फुरती—(स्त्री० हि०) शीघ्रता। तेज़ी। —ला=जो सुस्त न हो। तेज़।

फुरफुराना—(क्रि० हि०) उड़कर परों का शब्द करना।

फुरफुराहट—(स्त्री० अनु०) पंख फड़फड़ाना।

फुरसत—(स्त्री० अ०) अवसर। समय। अवकाश। छुट्टी।

फुलचुही—(स्त्री० हि०) एक चिड़िया।

फुलझड़ी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की आतिशबाज़ी।

फुलवारी—(स्त्री० हि०) बगीचा। पुष्प-वाटिका।

फुलाना—(क्रि० हि०) भीतर के दबाव से बाहर की ओर फैलाना। फुलाव=उभार या सूजन।

फुलिसकेप—(पु० अं०) एक प्रकार का काग़ज़।

फुलेल—(पु० हि०) सुगंधयुक्त तेल।

फुलौरी—(स्त्री० हि०) बेसन की पकौड़ी।

फुसफुसा—(वि० हि०) नरम। ढीला।

फुसलाना—(क्रि० हि०) बहलाना। बहकाना।

फुहारा—(पु० हि०) जल का महीन छींटा।

फूँक—(स्त्री० हि०) मुँह की हवा। साँस। फूँकना=मुँह से वेग के साथ हवा निकालना।

फूल—(पु० हि०) पुष्प। सुमन। कुसुम। —गोभी=गोभी की एक जाति। —दान=गुलदस्ता रखने का बर्तन। —दार=जिस पर फूल, पत्ते और बेल-बूटे काढ़कर, बुनकर, छापकर वा खोदकर बनाए गये हों। फूलना=पुष्पित होना। फूलों से युक्त होना।

फूला—(पु० हि०) लावा। आँख का एक रोग।
फूली—(स्त्री० हि०) सफ़ेद दाग जो आँख की पुतली पर पड़ जाती है।
फूहड़—(वि० हि०) बेशऊर।
फेंकना—(क्रि० हि०) अपने से दूर गिराना।
फेंट—(स्त्री० हि०) कमर का घेरा। पटुका। कमरबंद।
फेंटना—(क्रि० हि०) लेप या लेई की तरह चीज़ को हाथ या उँगली से मथना।
फेंटा—(पु० हि०) कमर का घेरा। पटुका। कमरबंद।
फेन—(पु० सं०) झाग।
फेनिल—(वि० सं०) फेनयुक्त।
फेफड़ा—(पु० हि०) साँस की थैली जो छाती के नीचे होती है। फुप्फुस।
फेर—(पु० हि०) चक्कर। घुमाव। परिवर्तन। अंतर। फ़र्क। असमञ्जस। भ्रम। धोखा। झंझट। एवज़। —फार=परिवर्त्तन। उलट-पलट। फेरा=चक्कर। परिक्रमण। इधर से उधर घूमना।
फेरी—(स्त्री० हि०) परिक्रमा। प्रदक्षिणा। योगी या फ़क़ीर का किसी बस्ती में भिक्षा के लिये बराबर आना। घूम-फिरकर सौदा बेचना।
फ़ेल—(पु० अ०) काम। कार्य। (अं०) अकृतकार्य।
फ़ेलो—(पु० अं०) सभासद। सभ्य।
फेल्ट—(पु० अं०) जमाया हुआ ऊन।
फ़ेस—(पु० अं०) चेहरा। मुँह। सामना। टाइप का वह ऊपरी भाग जो छपने पर उभरता है। —वेल्यु=वह दाम जो चीज़ के ऊपर छपा रहता है।
फ़ेहरिस्त—(स्त्री० फ़ा०) सूचीपत्र।
फेंसिंग—(अं०) तार लगाना। बाड़ बाँधना।
फैंसी—(वि० अं०) देखने में सुन्दर।
फैकल्टी—(स्त्री० अं०) विश्व-

विद्यालय के अन्तर्गत विद्वत्स-मिति।

फ़ैक्टरी—(स्त्री० अं०) कारख़ाना।

फ़ैज़—(पु० अ०) लाभ। वृद्धि। फल। परिणाम। दान। दैन।

फ़ैदम—(पु० अं०) गहराई की एक नाप जो छः फुट की होती है।

फ़ैन—(पु० अं०) पंखा।

फ़ैयाज़—(वि० अ०) खुले दिल का। उदार।

फ़ैयाज़ी—(स्त्री० अ०) उदारता।

फ़ैर—(स्त्री० अं०) बन्दूक, तोप आदि हथियारों का दगना।

फैलना—(क्रि० हि०) स्थान घेरना। व्यापक होना। छाना। बिखरना। छितराना।

फ़ैलसूफ़—(वि० यू०) फ़ज़ूल खर्च।

फैलाना—(क्रि० हि०) स्थान घिरवाना। फैलाव=विस्तार। प्रसार। लम्बाई-चौड़ाई।

फ़ैशन—(पु० अं०) ढंग। तर्ज़। चाल।

फ़ैसल—(अ०) न्याय करना। झगड़ा निबटाना।

फ़ैसला—(पु० अ०) निर्णय।

फोकट—(वि० हि०) तुच्छ। व्यर्थ। मुफ़्त।

फ़ोकस—(पु० अं०) फोटोग्राफ़ी में केमरे के लेंस के सामने के दृश्य को स्पष्ट करना।

फोटो—(पु० अं०) फोटोग्राफी के यंत्र द्वारा उतारा हुआ चित्र। फोटोग्राफ=छाया-चित्र।—ग्राफर=फोटोग्राफी का काम करने वाला।—ग्राफी=प्रकाश की किरनों द्वारा आकृति वा प्रतिकृति उतारने की क्रिया।

फोड़ा—(पु० हि०) व्रण। फोड़िया=छोटा फोड़ा। फुनसी।

फ़ोता—(पु० फ़ा०) अंडकोष।

फ़ोनोग्राफ़—(पु० अं०) एक यंत्र जिसमें गाए हुए राग, कही हुई बातें और बजाए हुए बाजों का स्वर आदि चूड़ियों

में भरे रहते हैं और ज्यों के त्यों सुनाई पड़ते हैं।

फोरमैन—(पु० अं०) कारखानों में कारीगरों और काम करने वालों का सरदार वा जमादार।

फोर्ट—(पु० अं०) किला। दुर्ग।

फ़ौलाद—(पु०) इसपात।

फोलियो—(पु० अं०) कागज के तख्ते का आधा भाग।

फ़ौज—(स्त्री० अ०) सेना। लश्कर। —दार=सेना का प्रधान। सेनापति। —दारी=लड़ाई-झगड़ा। मार-पीट।

फ़ौजी—(वि० फ़ा०) फ़ौज संबधी। सैनिक।

फ़ौत—(वि० अ०) नष्ट। मृत। गत।

फ़ौती—(वि०अ०) मृत्यु संबंधी। मृत्यु का। —नामा=मृत व्यक्तियों के नाम, पते की सूची।

फ़ौरन—(क्रि० वि० अ०) तुरन्त। तत्काल।

फ़ौलाद—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का लोहा। फ़ौलादी=फ़ौलाद का बना हुआ।

फ़ौवारा—(पु० हि०) जल का महीन छींटा। जल के छींटे देनेवाला यंत्र।

फ्रांक—(पु० अं०) फ्रांस का चाँदी का सिक्का।

फ्रांटियर—(पु० अं०) सरहद। सीमांत।

फ्रांसीसी—(वि० फ्रांस) फ्रांस देश का।

फ्राक—(पु० अं०) लम्बी आस्तीन का ढीला-ढाला कुरता।

फ्रिस्केट—(स्त्री० अं०) लोहे की चद्दर का बना हुआ चौखटा जो हाथ से चलाए जानेवाले प्रेस के डाले में जड़ा रहता है।

फ्री—(वि० अं०) स्वतन्त्र। मुक्त। मुफ़्त। फ्रीट्रेड=वह वाणिज्य जिसमें माल के आने-जाने पर किसी प्रकार का कर या महसूल न लिया जाय।

फ़्रीमेसन—(पु० अं०) फ़्रीमेसनरी नाम के गुप्त संघों का सभ्य।

फ़्रीमेसनरी—(स्त्री० अं०) एक प्रकार का गुप्त संघ या सभा जिसकी शाखा प्रशाखाएँ यूरप, अमेरिका तथा उन सब स्थानों में हैं, जहाँ यूरोपियन हैं।

फ़्रैंच—(वि० अं०) फ़्रांस देश का। —पेपर=एक प्रकार का हलका, पतला और चिकना काग़ज़।

फ़्रेम—(पु० अं०) चौकठा।

फ़्युडेटरी चीफ़—(पु० अं०) सामन्त राजा। करद राजा। मांडलिक।

फ़्युडेटरी स्टेट—(पु० अं०) वह छोटा राज्य जो किसी बड़े राज्य के अधीन हो और उसे कर देता हो।

फ़्लाईब्वाय—(पु० अं०) प्रेस में वह लड़का जो प्रेस पर से छपे हुए काग़ज़ जल्दी से झपटकर उतारता है और उन पर आँख दौड़ाकर छपाई की त्रुटि की सूचना प्रेसमैन को देता है।

फ़्लूट—(पु० अं०) वंसी की तरह का एक अँगरेज़ी बाजा।

फ़्लैग—(पु० अं०) झंडा। पताका।

ब

व—हिन्दी का तेईसवाँ व्यंजन और पवर्ग का तीसरा वर्ण।

वँगला—(वि० हि०) वंगाल देश का। वंगाल देश की भाषा। एक खास ढंग से बना हुआ मकान।

वंगाल—(पु० हि०) वंग देश जो भारत का पूरबी भाग है। वंगाली=वंगाल देश का निवासी।

वंचना—(सं०) ठगी।

वंचक—(पु० हि०) पाखंडी।

ठग। बंचित=धोखे में आया हुआ। अलग किया हुआ। विमुख। हीन। रहित।

वंजर—(पु० हि०) ऊसर।

वँटना—(क्रि० हि०) विभाग होना। अलग-अलग हिस्सा होना।

वंडल—(पु० अं०) छोटी गठरी।

वंडा—(पु० हि०) एक कंद।

वंडी—(स्त्री० हि०) कुरती। फतुही।

वँड़ेरी—(स्त्री० हि०) वह लकड़ी जो खपरैल की छाजन में मँगरे पर लगती है।

वंद—(पु० फ़ा०) बाँधने की चीज़। रोक। मेंड़। बांध। शरीर के अँगों का कोई जोड़। तनी। उर्दू कविता का पद। वंधन। क़ैद। जो किसी ओर से खुला न हो। रुका हुआ।

वंदगी—(स्त्री० फ़ा०) ईश्वराराधन। प्रणाम।

वंदगोभी—(स्त्री० हि०) करमकल्ला। पातगोभी।

वंदनवार—(पु० सं०) तोरण। फूल पत्तों की झालर।

वंदर—(पु० हि०) बानर। (फ़ा०) समुद्र के किनारे का वह स्थान जहाँ जहाज़ ठहरते हैं। वंदरगाह।

वंदा—(पु० फ़ा०) सेवक। दास।

वंदिश—(स्त्री० फ़ा०) बाँधना। प्रबन्ध। रचना।

वंदी—(पु० सं०) भाट। चारण। क़ैदी (हि०) स्त्रियों का एक आभूषण। (फ़ा०) दासी। —खाना=(पु० फ़ा०) जेलखाना। —घर=क़ैदखाना।

वंदूक—(पु० अ०) एक अस्त्र। —ची=बंदूक चलानेवाला सिपाही।

वंदोवस्त—(पु० फ़ा०) प्रवंध। इंतज़ाम। खेती के लिये भूमि को नापकर उसका राज्यकर निर्धारित करने का काम।

वंधक—(पु० सं०) रेहन।

वंधन—(पु० सं०) जाल। रस्सी जोड़।

वंधु—(पु० सं०) भाई। भ्राता। मित्र। दोस्त।

वंधेज—(पु० हि०) नियम।

वंध्या—(वि० सं०) बाँझ।

वंपुलिस——(स्त्री० हि०) म्युनिसिपैलिटी आदि का बनाया हुआ वह स्थान जहाँ सर्वसाधारण बिना रोक-टोक पाखाने जा सकें।

वंबा—(पु० हि०) पानी की कल। नल।

वंबू—(पु० हि०) चंडू पीने की बाँस की छोटी पतली नली।

वंसलोचन—(पु० हि०) बाँस का सार भाग। वंसकपूर।

वंसी—(स्त्री० हि०) बाँसुरी। मुरली।

वँहगी—(स्त्री० हि०) भार ढोने का एक साधन।

वकध्यानी—(वि० हि०) कपटी। धूर्त्त।

वकना—(क्रि० हि०) व्यर्थ बहुत बोलना।

वकर-कसाव—(पु० हि०) बकरों का माँस बेचनेवाला।

वकरना—(क्रि० हि०) आपसे आप बकना।

वकरा—(पु० हि०) एक पशु।

वकराना—(क्रि० हि०) क़बूल कराना।

बकवाद—(स्त्री० हि०) व्यर्थ की बात। बकवादी=बकवाद करनेवाला।

वकवृत्ति—(पु० हि०) बगुले की तरह ध्यान लगाना।

वकायन—(पु० हि०) नीम की जाति का एक पेड़।

वक़ाया—(पु० अ०) बचत।

वक़िया—(अ०) बचत। शेष।

वक़ुचा—(पु० फ़ा०) छोटी गठरी।

वकेन, वकेना—(स्त्री० हि०) वह गाय या भैंस जिसे बच्चा दिये साल भर से अधिक हो गया हो।

वकैयाँ—(पु० हि०) घुटनों के बल चलना।

वकोट—(स्त्री० हि०) हाथ की उँगलियों की पकड़।

बक़्क़ाल—(पु० अ०) बनिया। वणिक।

बक्की—(वि० हि०) बकवाद करनेवाला।

बक्स—(पु० अं०) थियेटर, सिनेमा आदि में सबसे आगे अलग घिरा हुआ स्थान जिसमें तीन-चार आदमियों के बैठने की व्यवस्था रहती है। संदूक। टिन का संदूक।

बखरी—(स्त्री० हि०) एक कुटुम्ब के रहने योग्य अच्छा मकान।

बखान—(पु० हि०) वर्णन।

बखार—(पु० हि०) दीवार या टट्टी आदि से घेरकर बनाया हुआ गोल और विस्तृत घेरा।

बखिया—(पु० फ़ा०) एक प्रकार की महीन और मज़बूत सिलाई।

बखीर—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की खीर।

बख़ील—(वि० अ०) कंजूस। सूम।

बख़ूबी—(क्रि० फ़ा०) भली भाँति। पूरी तरह से।

बखेड़ा—(पु० हि०) झंझट। उलझन।

बखेरना—(क्रि० हि०) फैलाना। छितराना।

बख़्त—(पु० फ़ा०) तकदीर। भाग्य। —दार=क़िस्मत-वाला।

बख़्तर—(पु० फ़ा०) लोहे के जाल का बना हुआ कवच।

बख़्श—(फ़ा०) देना। बख़्शी= वेतन बाँटनेवाला नौकर।

बख़्शना—(क्रि० फ़ा०) देना। प्रदान करना। छोड़ना।

बख़्शीश—(स्त्री० फ़ा०) ईनाम। ख़ैरात।

बग़ल—(स्त्री० फ़ा०) काँख। पास। —बंदी=एक प्रकार की मिरज़ई।

बगला—(पु० हि०) एक पक्षी।

बग़ावत—(स्त्री० अ०) विद्रोह। राजद्रोह।

बगूला—(पु० हि०) बवंडर।

बग़ैर—(अव्य० अ०) बिना।

बग्गी, बग्घी—(स्त्री० हि०) चार पहिये की घोड़ागाड़ी।

बघार—(पु० हि०) छौंक। तड़का। बघारना=छौंकना। तड़का देना।
बचत—(स्त्री० हि०) बचाव। मुनाफ़ा।
बचपन—(पु० हि०) लड़कपन।
बचाव—(पु० हि०) रक्षा।
बच्चा—(पु० फ़ा०) शिशु। लड़का। बालक। बच्ची=बालिका। लड़की।
बछड़ा—(पु० हि०) गाय का बच्चा।
बछेड़ा—(पु० हि०) घोड़े का बच्चा।
बजबजाना—(क्रि० अनु०) किसी तरल पदार्थ का सड़ने या गंदा होने के कारण बुलबुले छोड़ना।
बजरबट्टू—(पु० हि०) एक वृक्ष के फल का दाना।
बजरबोंग—(पु० हि०) एक प्रकार का धान। बाँस का मोटा और भारी डंडा।
बजर-हड्डी—(स्त्री० हि०) घोड़े का एक रोग।
बजरा—(पु० देश०) पटी हुई बड़ी नाव। एक अन्न।
बजरी—(स्त्री० हि०) कंकड़ के छोटे छोटे टुकड़े। एक अन्न।
बजा—(वि० फ़ा०) उचित। ठीक। वाजिब।
बजाज—(पु० फ़ा०) कपड़े का व्यापारी।
बजाजी—(पु० फ़ा०) बजाजों का बाज़ार। कपड़े बेचने का स्थान।
बजाजी—(स्त्री० फ़ा०) बजाज का काम। कपड़ा बेचने का व्यापार।
बजाय—(अव्य० फ़ा०) बदले में। स्थान पर।
बजुज़—(अव्य० फ़ा०) सिवा। अतिरिक्त।
बज़्म—(फ़ा०) सभा। मजलिस।
बझाव—(पु० हि०) फँसने की क्रिया या भाव।
बटन—(स्त्री० हि०) ऐंठन। बल (पु० अं०) बुताम।
बटना—(क्रि० हि०) ऐंठना।

बटलोई—(स्त्री० हि०) देगची। पतीली।
वटा—(पु० हि०) गोला। गेंद।
वटालियन—(स्त्री० अं०) पैदल सेना का एक दल जिसमें १००० जवान होते हैं।
वटिया—(स्त्री० हि०) छोटा बट्टा। लोढ़िया।
वटी—(स्त्री० हि०) गोली।
वटुरना—(क्रि० हि०) सिमटना इकट्ठा होना।
वटुला—(पु० हि०) बड़ी बटलोई।
वटुवा—(पु० हि०) गोल थैली। बड़ी बटलोई।
वटेर—(स्त्री० हि०) एक छोटी चिड़िया। —बाजी=बटेर पालने या लड़ाने का काम।
वटोर—(पु० हि०) जमावड़ा। —ना=समेटना।
वट्टा—(पु० हि०) दस्तूर। दलाली। —खाता=डूबी हुई रकम का लेखा या वही।
वट्टी—(स्त्री० हि०) छोटा बट्टा। कूटने-पीसने का पत्थर। लोढ़िया। टिकिया।
वड़प्पन—(पु० हि०) बड़ाई। गौरव। महत्त्व।
वड़बड़—(स्त्री० अनु०) बकवाद। व्यर्थ का बोलना। बड़बड़ाना=व्यर्थ बोलना। बकवाद करना।
वड़वाग्नि—(पु० सं०) समुद्र के भीतर की आग।
वड़हल—(पु० हि०) एक पेड़।
वड़ा—(वि० हि०) अधिक विस्तार का। विशाल। दीर्घ। जिसकी उम्र ज़्यादा हो। श्रेष्ठ। बुजुर्ग। महत्त्व का। भारी। बढ़कर। ज़्यादा। एक पकवान। —दिन=२५ दिसंबर का दिन जो ईसाइयों के त्योहार का दिन है।
वड़ाई—(स्त्री० हि०) बड़प्पन। श्रेष्ठता।
वड़े लाट—(पु० हि० अं०) हिन्दुस्तान में अंगरेज़ी साम्राज्य का प्रधान शासक।

बढ़ई—(पु० हि०) सेमार। लकड़ी का काम करनेवाला।

बढ़ती—(स्त्री० हि०) वृद्धि। आधिक्य। उन्नति।

बढ़ना—(क्रि० हि०) वृद्धि को प्राप्त होना। गिनती या नाप तौल में ज्यादा होना। असर या ख़ासियत वग़ैरह में ज़्यादा होना। चलना। चलने में किसी से आगे निकल जाना। भाव का बढ़ना। किसी से किसी बात में अधिक हो जाना। चिराग़ का बुझना।

बढ़नी—(स्त्री० हि०) झाड़ू। बुहारी।

बढ़ाव—(पु० हि०) फैलाव। विस्तार। अधिकता। उन्नति। वृद्धि।

बढ़ावा—(पु० हि०) प्रोत्साहन। उत्तेजना।

वणिक्—(पु० सं०) बनिया। सौदागर। बेचनेवाला।

बतकहा—(स्त्री० हि०) बात-चीत। वार्त्तालाप।

बतख़—(स्त्री० हि०) हंस की जाति की एक चिड़िया।

बतबढ़ाव—(पु० हि०) विवाद।

बतासा—(पु० हि०) एक प्रकार की मिठाई।

बतौर—(क्रि० अ०) तरीके पर। रीति से।

बत्ती—(स्त्री० हि०) सूत, रूई, कपड़े आदि की पतली छड़। दीपक। मोमबत्ती।

बत्तीसी—(स्त्री० हि०) दाँतों की पंक्ति।

बथुआ—(पु० हि०) एक साग।

बद—(फ़ा०) बुरा। —अमली = राज्य का कुप्रबन्ध। अशांति। —अन्देश = दुश्मन। —इन्तज़ामी = कुप्रबन्ध। अव्यवस्था। —कार = कुकर्मी। व्यभिचारी। —कारी = कुकर्म। व्यभिचार। —किस्मत = अभागा। बुरी क़िस्मत का। —ख़त = बुरा लेख। बुरे अक्षर। —ख़्वाह = बुरा चाहनेवाला। —गुमान = बुरा

संदेह करनेवाला। —गुमानी =झूठा शक। —गोई= निन्दा। चुगली। —चलन =बुरे चाल-चलन का। —चलनी = व्यभिचार। —ज़बान = कटुभाषी। —ज़ात=खोटा। नीच। —तमीज़=अशिष्ट। गँवार। —तर = और भी बुरा। —दियानती=बेईमानी। विश्वासघात। —दुआ= शाप। —नसीबी=दुर्भाग्य। —नाम=कलंकित।—नामी =अपकीर्ति। कलंक। —नीयत=जिसकी नियत बुरी हो। —नीयती=बेई-मानी। दग़ाबाज़ी। —नुमा =कुरूप। भद्दा। —परहेज़ =कुपथ्य करनेवाला। —परहेज़ी=कुपथ्य।—बख़्त =अभागा। बदक़िस्मत। —बू=दुर्गंध। —बूदार= दुर्गंधयुक्त। —मज़ा=बुरे स्वाद का। —मस्त=नशे में चूर। लंपट। —मस्ती =मतवालापन। कामुकता। —माश=दुर्वृत्त। खोटा। दुष्ट। दुराचारी। —माशी =दुष्कर्म। नीचता। दुष्टता। व्यभिचार। —मिज़ाज=बुरे स्वभाव का। —रंग=भद्दे रंग का। राह=बुरी राह चलनेवाला। —शकल= कुरूप। बेडौल। —सलूकी =बुरा व्यवहार। बुराई। —सूरत=कुरूप। बेडौल। —हज़मी=अपच। अजीर्ण। —हवास=बेहोश। अचेत। व्याकुल।

बदन—(फ़ा०) शरीर।

बदरनवीसी—(फ़ा०) हिसाब-किताब की जाँच। हिसाब में गड़बड़ रकम अलग करना।

बदल—(पु० अ०) हेरफेर। परि-वर्तन। —ना=परिवर्त्तित होना या करना। विनिमय करना।

बदला—(पु० अ०) विनिमय। प्रतिफल। नतीजा।

वदली—(स्त्री० हि०) फैलकर छाया हुआ बादल। तबादला।
वदस्तूर—(फ़ा०) ज्यों का त्यों।
वदा—(पु० हि०) नियत।
वदावदी—(स्त्री० हि०) होड़। लागडाट।
वदौलत—(फ़ा०) द्वारा। कृपा से।
वद्दू—(पु० देश०) वदनाम।
वद्ध—(वि० सं०) बँधा हुआ। निर्धारित।
बध—(पु० सं०) हत्या।
बधाई—(स्त्री० हि०) मुबारकबादी।
बधिक—(पु० हि०) बध करने वाला। हत्यारा। जल्लाद। व्याध। बहेलिया।
बधिया—(पु० हि०) नंपुसक किया हुआ चौपाया। ख़स्सी।
बधिर—(पु० सं०) बहरा।
बध्य—(वि० सं०) मारने के योग्य।
वन—(पु० हि०) जंगल।
बनना—(क्रि० हि०) तैयार होना। रचा जाना। हो सकना। आपस में निभना। सजना। —पथ=जंगल का रास्ता। —वास=बन में बसना।—बिलाव=बिल्ली की जाति का एक जंगली जंतु।—मानुस=जंगली आदमी। —वनस्पति=पौधा। पेड़।
बनफ़शा—(पु० फ़ा०) एक प्रकार की वनस्पति।
बनात—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का बढ़िया ऊनी कपड़ा।
बनाफर—(पु० हि०) क्षत्रियों की एक जाति।
बनाम—(अव्य० फ़ा०) नाम पर। नाम से। किसी के प्रति।
बनारसी—(वि० हि०) काशी संबंधी।
बनाव—(पु० हि०) बनावट। रचना। शृंगार। बनावट=रचना। गढ़न। —बनावटी =नकली। कृत्रिम।
बनिया—(पु० हि०) वैश्य। व्यापार करनेवाला व्यक्ति।
बनियाइन—(स्त्री० हि०) गंजी।

बनिस्बत—(अव्य० फ़ा०) अपेक्षा। मुकाबले में।

बनेठी—(स्त्री० हि०) पटे बाजी के अभ्यास के लिये लम्बी लाठी जिसके दनों सिरों पर लट्टू लगे रहते हैं।

बपतिस्मा—(पु० अं०) ईसाई संप्रदाय का एक मुख्य संस्कार।

बपौती—(स्त्री हि०) बाप से पाई हुई जायदाद।

बफर स्टेट—(पु० अं०) वह मध्यवर्त्ती छोटा राज्य जो दो बड़े राज्यों को एक दूसरे पर आक्रमण करने से रोकने का काम करे।

बफारा—(पु० हि०) औषध मिश्रित जल की भाप।

बबर—(पु० फ़ा०) सिंह।

बबूल—(पु० हि०) एक काँटेदार पेड़।

बबूला—(पु० हि०) बुलबुला। बुद्बुद। फेन।

बम—(पु० अं०) विस्फोटक पदार्थों से भरा हुआ लोहे का बना एक प्रकार का गोला। —पुलिस=राह-चलतों और मुसाफिरों के लिये बस्ती से दूर बना हुआ पायख़ाना। —चख=शोर। झगड़ा। विवाद।

बमुक़ाबला—(वि० फ़ा०) मुकाबले में। सामने। विरुद्ध।

बमूजिब—(वि० फ़ा०) अनुसार। मुताबिक़।

बया—(पु० हि०) एक पक्षी।

बयान—(पु० फ़ा०) बखान। वर्णन। ज़िक्र। हाल। विवरण।

बयाना—(पु० फ़ा०) पेशगी। अगाऊ।

बयाबान—(पु० फ़ा०) जंगल। उजाड़।

बरअक्स—(फ़ा०) उलटा।

बरई—(पु० हि०) तमोली।

बरकंदाज—(पु० अ०—फ़ा०) चौकीदार। रक्षक।

बरकत—(स्त्री० अ०) बढ़ती।

बरकरार—(वि० फ़ा०) कायम। स्थिर।

बरख़ास्त—(वि० फ़ा०) जिसकी बैठक समाप्त हो गई हो।

बरख़िलाफ़—(वि० फ़ा०अ०) प्रतिकूल। उलटा। विरुद्ध।

बर.ख़ुरदार—(फ़ा०) बेटा।

बरगद—(पु० हि०) बड़ का पेड़।

बरछा—(पु० हि०) भाला नामक हथियार।

बरज़स्त—(फ़ा०) ठीक। चुस्त।

बरतन—(पु० हि०) पात्र। भाँड़ा।

बरतना—(क्रि० हि०) बरताव करना।

बरतरफ़—(फ़ा०अ०) बरखास्त।

बरताव—(पु० हि०) व्यवहार।

बरदाना—(क्रि० हि०) गाय को साँड़ से जोड़ा खिलाना।

बरदाफरोश—(पु० फ़ा०) दासों को खरीदने और बेचनेवाला। बरदाफरोशी = (फ़ा०) गुलाम बेचने का काम।

बरदार—(वि० फ़ा०) ढोनेवाला। ले जानेवाला।

बरदाश्त—(स्त्री० फ़ा०) सहन।

बरनर—(पु० अं०) लंप का वह ऊपरी भाग जिसमें बत्ती लगाई जाती है।

बरपा—(वि० फ़ा०) खड़ा हुआ।

बरफी—(स्त्री० फ़ा०) एक मिठाई।

बरबस—(वि० हि०) बलपूर्वक। ज़बरदस्ती। व्यर्थ।

बरबाद—(वि० फ़ा०) नष्ट। चौपट। तबाह। बरबादी = नाश। खराबी। तबाही।

बरमला—(फ़ा०) सामने।

बरमा—(पु० देश०) छेद करने का लोहे का एक औज़ार।

बरस—(पु० हि०) वर्ष। साल। —गाँठ = जन्मदिन। सालगिरह।

बरसात—(स्त्री० हि०) वर्षाकाल। वर्षाऋतु। बरसाती = बरसात का।

बरसाना—(क्रि० हि०) वर्षा करना। वृष्टि करना।

बरहम—(वि० फ़ा०) जिसे गुस्सा आ गया हो। उत्तेजित।

बरहा—(पु० हि०) खेतों में

सिंचाई के लिये बनी हुई नाली।

बरही—(पु० हि०) पुत्र-जन्म के बारहवें दिन का उत्सव।

बरा—(पु० हि०) उड़द की पीसी हुई दाल का बना हुआ, एक पक्वान। बड़ा।

बरात—(स्त्री० हि०) जनेत। बराती=(पु० हि०) विवाह में वर-पक्ष की ओर से सम्मिलित होने वाला।

बरानकोट—(पु० अं०) बड़ा कोट।

बराना—(क्रि० हि०) बचाना।

बराबर—(वि० हि०) तुल्य। एक सा। समान पद या मर्यादावाला। समतल। ठीक। लगातार। साथ। हमेशा। बराबरी=समानता। सामना।

बरामद—(वि० फ़ा०) खोई हुई, चोरी गई हुई या न मिलती हुई वस्तु जो कहीं से निकाली जाय।

बरामदा—(पु० फ़ा०) छज्जा। दालान। ओसारा। (अं०) बरांडा।

बराय—(अव्य० फ़ा०) वास्ते। लिये। निमित्त।

बराव—(पु० हि०) परहेज़।

बरी—(स्त्री० हि०) उर्द या मूँग की गोल टिकिया। (वि० फ़ा०) मुक्त। छूटा हुआ।

बरेखी—(स्त्री हि०) स्त्रियों का एक गहना।

बरौंछी—(स्त्री० हि०) सूअर के बालों की बनी हुई कूँची।

बर्क़—(फ़ा०) बिजली। बिजली की चमक।

बर्ग—(फ़ा०) पत्ता।

बर्फ़—(स्त्री० फ़ा०) हिम। पाला। तुषार। बर्फ़िस्तान=बर्फ़ का मैदान या पहाड़।

बर्फ़ी—(स्त्री० फ़ा०) एक मिठाई।

बर्बर—(वि० सं०) अनार्य्य। जंगली आदमी। अशिष्ट।

बर्राक—(अ०) चमकीला।

बलंद—(वि० फ़ा०) ऊँचा।

बल—(पु० सं०) शक्ति

सामर्थ्य। सहारा। भरोसा। लपेट। मरोड़। टेढ़ापन। सिकुड़न। —वान्=ताकतवर। शक्तिमान्। मजबूत। —शाली=बलवान्। —बलिष्ठ=अधिक बलवान। —बली=ताक़तवर।

बलबलाना—(क्रि० अनु०) ऊँट का बोलना। व्यर्थ बकना।

बलवा—(फ़ा०) दंगा। हुल्लड़। विप्लव। विद्रोह।

बला—(अ०) विपत्ति। कष्ट। रोग। व्याधि।

बलिदान—(पु० सं०) कुरबानी।

बलिहारो—(स्त्री० हि०) निछावर। कुरबान।

बलूत—(पु० अ०) माजूफल की जाति का एक पेड़।

बल्कि—(अव्य फ़ा०) अन्यथा। इसके विरुद्ध। बेहतर है।

बल्ब—(पु० अं०) शीशे का वह खोखला लट्टू जिसके अन्दर बिजली की रोशनी के तार लगे रहते हैं।

बल्ला—(पु० हि०) शहतीर या डंडा। बल्ली=छोटा बल्ला। खंभा। डाँड़।

बवासीर—(स्त्री० अ०) अर्श रोग।

बशारत—(अ०) खुशख़बरी। शुभ समाचार।

बशीर—(अ०) शुभ समाचार देनेवाला।

बसंत—(पु० सं०) चैत और बैसाख के महीने। बसंती=वसंतऋतु संबंधी। सरसों के फूल के रंग का। एक रंग का नाम। पीला कपड़ा।

बस—(वि० फा०) भरपूर। काफ़ी।

बसना—(क्रि० हि०) आबाद होना। ठहरना। वह कपड़ा जिसमें कोई वस्तु लपेटकर रखी जाय। थैली।

बसाना—(क्रि० हि०) आबाद करना। ठहराना। महकना।

बसारत—(अ०) दृष्टि।

बसूला—(पु० हि०) एक हथियार जिससे बढ़ई लकड़ी छीलते

और गढ़ते हैं। बसूली = छोटा बसूला।

बसेरा—(वि० हि०) टिकने की जगह। घोसले में बैठना।

बस्ट—(पु० अं०) मुख अथवा छाती के ऊपर का चित्र।

बस्ता—(पु० फा०) बेठन। कपड़े का चौकोर टुकड़ा जिसमें पुस्तक और वहीखाते इत्यादि बाँधकर रखे जाते हैं।

बस्तार—(पु० फ़ा०) पुलिंदा। एक में बँधी हुई बहुत सी वस्तुओं का समूह।

बस्ती—(स्त्री० हि०) आबादी। निवास।

बहँगा—(पु० हि०) बड़ी बहँगी। बहँगी = काँवर। बोझा ले चलने के लिये तराजू के आकार का ढाँचा।

बहकना—(क्रि० हि०) भटकना। मार्गभ्रष्ट होना। चूकना। बहकाना = रास्ता भुलवाना। भटकाना। लक्ष्य-भ्रष्ट करना।

बहना—(क्रि० हि०) प्रवाहित होना। पानी की धारा में पड़ जाना। हवा का चलना। मारा-मारा फिरना। आवारा होना।

बहनोई—(पु० हि०) बहन का पति। बहनोरा = बहन की ससुराल।

बहबूदी—(स्त्री० फ़ा०) लाभ। भलाई। फायदा।

बहर—(अ०) समुद्र। गीत की लय। बहरी = समुद्री।

बहरा—(वि० हि०) न सुनने वाला।

बहल—(स्त्री० हि०) रथ के आकार की बैलगाड़ी।

बहलना—(क्रि० हि०) झंझट या दुःख की बात भूलना और चित्त का दूसरी ओर लगना। भुलावा देना। बहकाना। बहलाना = मनोरंजन करना। भुलावा देना। बहकाना। बहलाव = मनोरंजन। प्रसन्नता।

बहली—(स्त्री० हि०) रथ के आकार की बैलगाड़ी।

बहस—(स्त्री० अ०) दलील।

तर्क। विवाद । झगड़ा ।
होड़ । बाज़ी ।

वहादुर—(वि० फ़ा०) साहसी । शूरवीर। पराक्रमी । बहादुरी। वीरता । शूरता ।

वहाना—(क्रि० हि०) प्रवाहित करना । व्यर्थ व्यय करना । गँवाना । फेंकना । (फ़ा०) मिस । हीला । निमित्त । प्रसंग ।

बहार—(स्त्री० फ़ा०) बसंत ऋतु । मौज । आनंद । यौवन का विकास। शोभा । रमणीयता । तमाशा ।

बहाल—(वि० फ़ा०) ज्यों का त्यों। भला चंगा। स्वस्थ । प्रसन्न ।

वहाली—(स्त्री० फ़ा०) फिर उसी ज़गह पर मुकर्ररी ।

वहाव—(पु० हि०) प्रवाह ।

वहन—(स्त्री० हि०) माता की कन्या । बाप की बेटी । भगिनी ।

वहिर्गत—(वि० सं०) अलग। जुदा ।

वहिर्मुख—(वि० स०) विमुख। विरुद्ध ।

वहिला—(वि० हि०) बंध्या। बाँझ ।

वहिष्कार—(पु० स०) बाहर करना । त्याग । बहिष्कृत =बाहर किया हुआ । त्यागा हुआ ।

वही—(स्त्री० हि०)हिसाब= किताब लिखने की पुस्तक । —खाता =हिसाब किताब की पुस्तक।

वहुज्ञ—(वि० सं०) जानकार।

वहुत—(वि० हि०) अनेक । यथेष्ट । काफी । बहुतायत= अधिकता । ज़्यादती । बहुतेरा =बहुत सा । अधिक। बहुत प्रकार मे । बहुतेरे =संख्या में अधिक। अनेक ।

वहुदर्शी—(पु० हि०) जानकार ।

वहुल—(वि० स०) अधिक। ज़्यादा ।

वहेड़ा—(पु० हि०) एक पेड़ ।

बाँका—(वि० हि०) टेढ़ा । तिरछा । बहादुर । वीर ।

सुंदर और बनाठना। बाँकी =लोहे का बना हुआ एक औज़ार। छैल छबीली।

वाँकपन—(हिं०) टेढ़ापन। छैलापन। बनावट। सजावट। शोभा।

वाँग—(स्त्री० फ़ा०) आवाज़। अजान। प्रातःकाल के समय मुरग़े के बोलने का शब्द।

वाँगड़ू—(वि० हिं०) मूर्ख। बेवकूफ़।

वाँचना—(क्रि० हिं०) पढ़ना।

वाँझ—(स्त्री० हिं०) वंध्या।

वाँट—(पु० हिं०) भाग। हिस्सा।

बाँटना = विभाग करना। वितरण करना।

वाँड़ा—(पु० देश०) वह पशु जिसकी पूँछ कट गई हो। परिवारहीन पुरुष।

वाँदी—(स्त्री० फ़ा०) लौंडी। दासी।

वाँध—(पु० हिं०) बंद। धुस्स।

वाँधना—(क्रि० हिं०) गाँठ देना। कैद करना। पाबंद करना। नियत करना।

बाँधनू=मंसूबा। उपक्रम।

वाँस—(पु० हिं०) एक वनस्पति।

वाँसुरी—(स्त्री०/हिं०) मुरली। बंशी।

वाँह—(स्त्री० हिं०) भुजा। बाहु। हाथ।

वाइप्लेन—(पु० अं०) एरोप्लेन या वायुयान का एक भेद।

वाइबिल—(स्त्री० यू०) ईसाइयों की धर्म-पुस्तक। इंजील।

वाइस—(अं०) कारण। सबब।

वाइसिकिल—(स्त्री० अं०) पैरगाड़ी।

वाई—(स्त्री० हिं०) वायु का प्रकोप। स्त्रियों के लिये एक आदर-सूचक शब्द।

वाउंटी—(स्त्री० अं०) सहायता। मदद।

वाक़ी—(वि० अ०) शेष।

वाख़बर—(फ़ा०) जाननेवाला। वाक़िफ़।

बाग़—(पु० अ०) उपवन । बाटिका । —बान=(फ़ा०) माली । —बानी=(फ़ा०) माली की जगह ।
बागडोर—लगाम ।
बागर—(पु० देश०) नदी के किनारे की वह ऊँची भूमि जहाँ नदी का पानी कभी पहुँचता ही नहीं ।
बाग़ी—(पु० अ०) विद्रोही । राजद्रोही ।
बाग़ीचा—(पु० फ़ा०) छोटा बाग । उपवन ।
बाघ—(पु० हि०) शेर ।
बाघंबर—(पु० हि०) बाघ की खाल । एक प्रकार का रोएँदार कंबल ।
बाज़—(पु० अ०) एक शिकारी पत्ती । कुछ । थोड़े । बग़ैर । बिना (फ़ा०) महसूल । लगान ।—गुज़ार=महसूल अदा करनेवाला । —दावा= (फ़ा०) अपने अधिकारों का त्याग ।
बाजरा—(पु० हि०) एक अन्न ।
बाजा—(पु० हि०) बजाने का यंत्र । बाद्य ।
बाज़ाब्ता—(क्रि० फ़ा०) नियमानुसार ।
बाज़ार—(पु० फ़ा०) हाट । बाजारी=बाजार-संबंधो । मामूली । बाज़ारू=(फ़ा०) मर्यादा रहित । अशिष्ट ।
बाज़ी—(स्त्री० फ़ा०) शर्त । दाँव । बदान ।
बाजीगर—(पु० फ़ा०) जादूगर ।
बाज़ू—(पु० फ़ा०) भुजा । बाँह पर पहनने का बाज़ूबंद नाम का गहना । तरफ । ओर । पत्ती का डैना ।
बाट—(पु० हि०) मार्ग । रास्ता । पत्थर का वह टुकड़ा जिससे सिल पर कोई चीज़ पीसी जाय । पत्थर आदि का वह टुकड़ा जो तौलने के काम आता है ।
बाटिका—(स्त्री० सं०) बाग़ । फुलवाड़ी ।
बाटी—(स्त्री० हि०) गोली । पिंड । अंगारों या उपलों

आदि पर सेंकी हुई एक प्रकार की रोटी।

बाडक्किन—(पु० अं०) छापेखाने में और दफ़्तरीखाने में काम आनेवाला एक प्रकार का सूआ।

बाढ़—(स्त्री० हि०) वृद्धि। तेज़ी। ज़ोर।

बाडी—(स्त्री० अं०) अँगरेज़ी ढंग की एक प्रकार की अँगिया या कुरती।

बाड़ा—(पु० हि०) चारों ओर से घिरा हुआ विस्तृत। खाली स्थान पशुशाला। बाड़ी = वाटिका।

बाडिस—(स्त्री० अं०) स्त्रियों के पहनने को अँगरेज़ी ढंग की कुरती। बंडा। बाडी-गार्ड—(अं०) शरीर-रक्षक।

बाढ़—(स्त्री० हि०) अधिकता। जल-प्लावन।

बाण—(पु० सं०) तीर।

बाणिज्य—(पु० सं०) व्यापार। रोज़गार।

बात—(स्त्री० हि०) वचन। वाणी। कथन। चर्चा। बहाना। वादा। मान-मर्यादा। इज़्ज़त। प्रतिज्ञा। रहस्य। भेद।

बातिन—(अ०) अन्तःकरण। अन्दरूनी।

बाती—(स्त्री० हि०) बत्ती।

बाद—(पु० सं०) बहस। तर्क। विवाद। झगड़ा। (अ०) पश्चात्। पीछे। दस्तूरी या कमीशन। अतिरिक्त। सिवाय। (फ़ा०) बात। हवा। —सबा = प्रातःकाल की वायु। —फिरङ्ग = आतशक का रोग। —कश = लुहार की धौंकनी। —नुमा = (फ़ा०) वायु की दिशा सूचित करनेवाला यंत्र। —बान = (फ़ा०) पाल।

बादल—(पु० हि०) मेघ। घन। एक प्रकार का पत्थर जो दूधिया रंग का होता है।

बादशाह—(पु० फ़ा०) राजा। शासक। सरदार। स्वतंत्र। शतरंज का एक मुहरा। ताश

का एक पत्ता। —ज़ादा=(फ़ा०) राजकुमार ! —त=राज्य। शासन। हुकूमत। बादशाही=राज्य। राज्याधिकार। शासन। हुकूमत। मनमाना व्यवहार। बादशाह का। राजाओं के योग्य।

वादहवाई—(क्रि० फ़ा०) यों ही। व्यर्थ। फ़ज़ूल।

वादाम—(पु० फा०) एक मेवा। बादामी=बादाम के छिलके के रंग का। बादाम के आकार का एक प्रकार का धान।

वादियान—(फ़ा) सौंफ़।

वादी—(वि० फ़ा०) बात का विकार करनेवाला। किसी के विरुद्ध अभियोग लानेवाला। मुद्दई। वैरी। शत्रु। राग में प्रधान रूप से लगनेवाला स्वर।

वाध—(पु० सं०) मूँज की रस्सी। बाधक=रुकावट डालनेवाला। विघ्नकर्ता। दुःखदायी।

वाधा—(स्त्री० सं०) रुकावट। अड़चन। विघ्न। बाधित=जो रोका गया हो। बाध्य=विवश किया जानेवाला। मजबूर होनेवाला।

वानगी—(स्त्री० हि०) नमूना।

वानर—(पु० सं०) बंदर।

वाना—(पु० हि०) पहनावा। पोशाक। एक हथियार। कपड़े की बुनावट।

वानी—(फ़ा०) पेड़ों पर उगनेवाला एक पौधा। जड़ जमानेवाला।

वानू—(फ़ा०) बेगम।

वाप—(पु० हि०) पिता। जनक।

वाव—(पु० अ०) परिच्छेद। पुस्तक का कोई विभाग।

वावत—(स्त्री० अ०) संबंध। विषय।

वावरची—(पु० फ़ा०) भोजन बनानेवाला। रसोइया।

बाबा—(पु० तु०) पिता। साधु संन्यासियों के लिये आदर-सूचक शब्द। बूढ़ा पुरुष। पितामह। दादा।
बाबू—(पु० हि०) एक आदर-सूचक शब्द। भलामास।
बॉयकाट—(पु० अं०) बहिष्कार।
बॉय स्काउट—(पु० अं०) बालचर।
बॉयस्कोप—(पु० अं०) सिनेमा।
बायाँ—(वि० हि०) दहने का उलटा।
बायें—(क्रि० हि०) बाईं ओर।
बारंबार—(क्रि० हि०) बार-बार। लगातार। पुनः पुनः।
बार—(पु० हि०) द्वार। दर-वाज़ा। देर। विलंब। दफ़ा। मरतबा। बोझा। भार।
बारक—(स्त्री० अं०) छावनी आदि में सैनिकों के रहने के लिए बना हुआ पक्का मकान।
बारदाना—(पु० फ़ा०) व्यापार की चीज़ों के रखने का बर-तन। रसद। वह अस्तर जो बँधी हुई पगड़ी के नीचे लगा रहता है।
बारनिश—(स्त्री० अं०) फेरा हुआ रोगन या चमकीला रग।
बारबरदार—(फ़ा०) बोझ ढोने-वाला। बारबरदारी=(फ़ा०) सामान ढोने का काम। सामान ढोने की मज़दूरी।
बारहदरी—(स्त्री० हि०) वह हवादार बैठक जिसमें बारह द्वार हों।
बारहमासा—(पु० हि०) वह पद्य या गीत जिसमें बारह महीनों की प्राकृतिक विशेष-ताओं का वर्णन किसी विरही या विरहिनी के मुँह से कराया गया हो।
बारहमासी—(वि० हि०) सदा-बहार। सदाफल। सब ऋतुओं में फलने फूलनेवाला।
बारहवफ़ात—(पु० अ०) एक अरबी महीना।
बारहसिंगा—(पु० हि०) हिरन की जाति का एक पशु।

बारिक—(पु० अं०) छावनी। —मास्टर=(अं०) वह प्रधान कर्मचारी जो बारिक की देख-भाल और प्रबंध करता हो।

बारिश—(स्त्री० फ़ा०) वर्षा। वृष्टि। वर्षाऋतु।

बारिस्टर—(पु० अं०) वह वकील जिसने विलायत में रहकर क़ानून की परीक्षा पास की हो।

बारीक़—(वि० फ़ा०) महीन। पतला। सूक्ष्म। बारीक़ी=(फ़ा०) महीनपन। पतला-पन। खूबी।

बारूद—(स्त्री० तु०) दारू। अग्निचूर्ण। —खाना=वह स्थान जहाँ गोला-बारूद आदि लड़ाई का सामान रहता है।

बारे में—(अव्य० फ़ा० हिं०) विषय में। संबंध में। प्रसंग में।

बारोमीटर—(पु०) एक यंत्र जिससे हवा का दबाव मालूम होता है।

बार्डर—(पु० अं०) किसी चीज़ के किनारों पर बना हुआ बेलबूटा। हाशिया।

बाल—(पु० सं०) बालक। लड़का। केश। कुछ अनाजों के पौधों के डंठल का वह अग्रभाग जिसके चारों ओर दाने गुच्छे रहते हैं। —चर= बायस्काउट। —काल= बचपन। बाल्यावस्था। —बच्चे =लड़केबाले। संतान। औलाद। —विधवा=वह स्त्री जो बाल्यावस्था ही में विधवा हो गई हो। —ब्रह्मचारी= बहुत ही छोटी उम्र से ब्रह्म-चर्य-व्रत रखनेवाला।

बालक—(पु० सं०) लड़का। पुत्र। शिशु। अनजान आदमी।

बालटी—(स्त्री० अं०) एक प्रकार की डोलची।

बालना—(क्रि० हि०) जलना। रोशन करना।

बाला—(सं०) नवयुवती।

बाला—(फ़ा०) ऊँचा। —ई= ऊँचाई। ऊपरी।

बालावर—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का अँगरखा।

बालिका—(स्त्री० सं०) कन्या।

बालिग़—(पु० अ०) जवान।

बालिश—(स्त्री० फ़ा०) तकिया।

बालिश्त—(पु० फ़ा०) बित्ता। बीता।

बालिस-ट्रेन—(स्त्री० अं०) वह रेलगाड़ी जिस पर सड़क बनाने के सामान (कंकड़ आदि) लादकर भेजे जाते हैं।

बाली—(स्त्री० हि०) कान में पहनने का एक आभूषण। जौ, गेहूँ, ज्वार आदि के पौधों का वह ऊपरी भाग या सींका जिसमें अन्न के दाने लगते हैं।

बालू—(पु० हि०) रेत। रेणुका। —दानी=बालू रखने की डिबिया।

बालूसाही—(स्त्री० हि०) एक मिठाई।

बाल्यावस्था—(स्त्री० सं०) प्रायः सोलह-सत्रह वर्ष तक की अवस्था। लड़कपन।

बावजूद—(फ़ा०) तिस पर भी। तो भी।

बावर्ची—(पु० फ़ा०) भोजन पकानेवाला। रसोइया। —खाना=भोजन पकाने का स्थान। पाकशाला। रसोईघर।

बावला—(वि० हि०) पागल। —पन=पागलपन।

बावली—(स्त्री० हि०) चौड़े मुँह का कुआँ, जिसमें पानी तक पहुँचने के लिये सीढ़ियाँ बनी हों। पगली।

बाशिंदा—(पु० फ़ा०) रहने-वाला। निवासी।

बास—(पु० हि०) निवास। रहने का स्थान। बू। गंध।

बासमती—(पु० हि०) एक प्रकार का धान।

बासा—(पु० हि०) भोजनालय।

बासी—(वि० हि०) देर का बना हुआ।

बाहम—(क्रि० फ़ा०) आपस में। परस्पर।

बाहर—(क्रि॰ हि॰) भीतर या अंदर का उलटा। किसी दूसरे स्थान पर।

बाहरी—(वि॰ हि॰) बाहर का। पराया। ग़ैर। अजनबी। ऊपरी।

बाहुबल—(पु॰ सं॰) बहादुरी। पराक्रम।

बाहुल्य—(पु॰ सं॰) बहुतायत। अधिकता। ज़्यादती।

बिंदी—(स्त्री॰ हि॰) शून्य। बिंदु। माथे पर लगाने का गोल छोटा टीका। बिंदुली।

बिकना—(क्रि॰ हि॰) बेंचा जाना। बिक्री होना।

बिकवाना—(क्रि॰ हि॰) बेचने का काम दूसरे से कराना।

बिकाऊ—(वि॰ हि॰) बिकने-वाला। जो बिकने के लिये हो।

बिकारी—(वि॰ हि॰) बुरा। हानिकारक। एक प्रकार की टेढ़ी पाई।

बिक्री—(स्त्री॰ हि॰) विक्रय। बेचना।

बिखरना—(क्रि॰ हि॰) छितराना। तितर-बितर होना।

बिगड़ना—(क्रि॰ हि॰) खराब हो जाना। अच्छा न रह जाना। खराब दशा में आना। चाल-चलन का खराब होना। क्रुद्ध होना। लड़ाई-झगड़ा होना। विरोधी होना। बे-फ़ायदा खर्च होना।

बिगड़ेदिल—(पु॰ हि॰) हर बात में लड़ने-झगड़ने वाला।

बिगड़ैल—(वि॰ हि॰) हर बात में क्रोध करनेवाला। हठी। ज़िद्दी। बुरे रास्ते पर चलने-वाला।

बिगाड—(पु॰ हि॰) बुराई। दोष। झगड़ा।—ना = किसी वस्तु के स्वाभाविक गुण या रूप को नष्ट कर देना। बुरी दशा में लाना। कुमार्ग में लगाना। पातिव्रत्य भंग करना। स्वभाव खराब करना।

बिगुल—(पु॰ अं॰) अँगरेज़ी ढंग की एक प्रकार की तुरही।

बिगुलर=(अं०) फौज में बिगुल बजानेवाला।

बिग्रह—(पु० हि०) झगड़ा-लड़ाई। कलह।

बिचकना—(क्रि० हि०) चिढ़ना। हाथ से निकल जाना।

बिचकाना—(क्रि० अनु०) चिढ़ाना। किसी को चिढ़ाने के लिये मुँह टेढ़ा करना।

बिछना—(क्रि० हि०) फैलाया जाना। बिछाया जाना। छितराया जाना।

बिछाना—(क्रि० हि०) फैला देना। बिखराना।

बिछिआ—(स्त्री० हि०) पैर की उँगलियों में पहनने का एक प्रकार का छल्ला।

बिछुआ—(पु० हि०) पैर में पहनने का एक गहना। एक छोटा सा शस्त्र। चुना हुआ।

बिछुड़ना—(क्रि० हि०) जुदा होना। अलग होना। वियोग होना।

बिछोह—(पु० हि०) जुदाई। वियोग।

बिछौना—(पु० हि०) बिस्तर।

बिजन—(पु० सं०) निर्जन स्थान सुनसान जगह। अकेला।

बिजली—(स्त्री० हि०) विद्युत। बादलों की रगड़ से आकाश में चमकनेवाला प्रकाश।

बिजायठ—(पु० हि०) बाँह पर पहनने का बाजूबंद।

बिजौरा—(पु० हि०) नीबू की जाति का एक वृत्त।

बिज्जू—(पु० देश०) बिल्ली के आकार प्रकार का एक जंगली जानवर।

बिडंबना—(क्रि० हि०) नकल। उपहास। बदनामी।

बित्ता—(पु० हि०) बालिश्त।

बित्ती—(स्त्री० हि०) वह धन जो दूकानदार लोग गोशाला या और किसी धर्म-कार्य के लिये, माल का दाम चुकाने के समय, काटकर अलग रखते हैं।

बिदकना—(क्रि० हि०) भड़कना। बिदकाना=भड़काना।

बिदहना—(पु० हि०) धान या

ककुनी आदि की फ़सल पर आरंभ में पाटा या हेंगा चलाना ।

विदा—(स्त्री० फ़ा०) प्रस्थान । गमन । रवानगी । रुख़सत । गौना । द्विरागमन । बिदाई= विदा होने की आज्ञा । वह धन जो किसी को विदा होने के समय, उसका सत्कार करने के लिये दिया जाता है ।

विद्दत—(स्त्री० अ०) खराबी । दोष । तकलीफ़ । आफ़त । अत्याचार । दुर्दशा ।

विधवा—(वि० सं०) राँड़ ।

विनती—(स्त्री हि०) प्रार्थना । निवेदन ।

विना—(अव्य० हि०) छोड़कर । बग़ैर । (फ़ा०) आधार । जड़ ।

विनौला—(पु०) कपास का बीज ।

विपदा—(स्त्री० हिं०) आफ़त । संकट ।

विवाई—(स्त्री० हिं०) एक रोग जिसमें पैरों के तलुए का चमड़ा फट जाता है और वहाँ ज़ख़्म हो जाता है ।

ब्रिगेड—(स्त्री० अं०) सेना का एक विभाग ।

बिरला—(वि० हि०) कोई कोई ।

बिरहा—(पु० हि०) अहीरों का गीत ।

बिरादर—(पु० फ़ा०) भाई । भ्राता । बिरादरी=भाई-चारा । बंधुत्व । जातीय-समाज ।

बिराना—(क्रि० हि०) मुँह चिढ़ाना । चुनना । छाँटना ।

बिल—(पु० हि०) छेद । दराज़ । (अं०) बीजक । हिसाब ।

बिलाना—(क्रि० हि०) अलग होना । नष्ट होना ।

बिलटी—(स्त्री० अं०) रेल के द्वारा भेजे जाने वाले माल की वह रसीद जो रेलवे कम्पनी से मिलती है ।

बिलनी—(स्त्री० हि०) काली भौंरी । भ्रमरी ।

बिलफेल—(क्रि० अ०) इस समय । अभी ।

बिलबिलाना—(क्रि० अनु०) छोटे-छोटे कीड़ों का इधर उधर रेंगना। व्याकुल होकर बकना।

बिलहरा—(पु० हि०) बाँस की तीलियों या खस आदि का बना हुआ संपुट, जिसमें पान के बीड़े रखे जाते हैं।

बिलल्ला—(वि० देश०) गावदी। मूर्ख। आवारा।

बिला—(अव्य० अ०) बिना। बग़ैर।

बिलियर्ड—(पु० अं०) एक अँगरेज़ी खेल।

बिलोना—(क्रि० हि०) मथना।

बिल्मुक्ता—(वि० अ०) जो घट-बढ़ न सके।

बिल्ला—(पु० हि०) बिड़ाल। चपरास।

बिल्ली—(स्त्री० हि०) एक जानवर।

बिल्लौर—(पु० हि०) एक प्रकार का स्वच्छ सफ़ेद पत्थर। बहुत स्वच्छ शीशा।

बिशप—(पु० अं०) ईसाई मत का बड़ा पादरी।

बिसखपरा—(पु० हि०) गोह की जाति का एक विषैला जंतु।

बिसमिल—(वि० फ़ा०) घायल। जख्मी।

बिसमिल्लाह—(पु० अ०) श्री गणेश। आरंभ। आदि।

बिसाँयँध—(वि० हि०) सड़ी मछली या सड़े मांस की सी गंधवाला। दुर्गंध। बदबू।

बिसात—(स्त्री० अ०) हैसियत। समाई। जमा। पूँजी। सामर्थ्य। शतरंज। चौपड़ आदि खेलने का कपड़ा। बिसाती = छोटी चीज़ों का दूकानदार।

बिसारना—(क्रि० हि०) भुला देना। स्मरण न रखना।

बिस्कुट—(पु० अं०) खमीरी आटे की तंदूर पर पकी हुई टिकिया।

बिस्तर—(पु० हि०) बिछौना।

बिस्तुइया—(स्त्री० हि०) छिपकली।

विहतर—(वि० फ़ा०) बहुत अच्छा। विहतरी=भलाई। कुशल।

विहाग—(पु०) एक राग।

विहिश्त—(स्त्री० फ़ा०) स्वर्ग। बैकुंठ।

विही—(स्त्री० फ़ा०) अमरूद की तरह का एक पेड़। —दाना=बिही नामक फल का बीज

बींड़ी—(स्त्री० हि०) बैलगाड़ी में तीसरा बैल जो आगे रहता है।

बीघा—(पु० हि०) बीस बिस्वा ज़मीन।

बीच—(पु० हि०) मध्य।

बीचोबीच—(क्रि० हि०) बिलकुल बीच में। ठीक मध्य में।

बीछना—(क्रि० हि०) चुनना। छाँटना।

बीज—(पु० सं०) दाना। तुख्म। जड़। मूल। हेतु। कारण। शुक्र। वीर्य।

बीजक—(पु० सं०) सूची। फ़िहरिस्त।

बीट—(स्त्री० हि०) पक्षियों की विष्ठा। गुह। मल।

बीड़ी—(स्त्री० हि०) पत्ते में लपेटा हुआ सुरती का चूर जिसे लोग चुरुट या सिगरेट आदि के स्थान में सुलगाकर पीते हैं।

बीतना—(क्रि० हि०) वक्त कटना। समय गुज़रना।

बीन—(स्त्री० हि०) एक बाजा।

बीबी—(स्त्री० फ़ा०) कुलवधू। पत्नी।

बीभत्स—(वि० सं०) घृणित।

बीम—(पु० अं०) जहाज का मस्तूल।

बीमा—(पु० फ़ा०) हानि पूरी करने की ज़िम्मेदारी।

बीमार—(वि० फ़ा०) रोगी। —दारी=रोगियों की शुश्रूषा। बीमारी=रोग। व्याधि। झंझट। बुरी आदत।

बीर—(पु० हि०) शूर। पराक्रमी। बलवान्।

बीरबहूटी—(स्त्री० हि०) एक छोटा रेंगनेवाला कीड़ा।

बीसी—(स्त्री० हि०) बीस चीज़ों का समूह। कोड़ी।

बीहड़—(वि० हि०) ऊँचा-नीचा। विषम। विकट।

बुँदेला—(पु० हि०) क्षत्रियों का एक वंश।

बुक—(स्त्री० हि०) कलफ किया हुआ महीन, पर बहुत करारा कपड़ा। महीन पन्नी। (अं०) किताब। —सेलर =पुस्तकें बेचनेवाला।

बुकचा—(पु० फ़ा०) गठरी।

बुक्का—(स्त्री० सं०) हृदय। कलेजा। गुरदे का मांस। प्राचीनकाल का एक प्रकार का बाजा।

बुख़ार—(पु० अ०) भाप। ज्वर। ताप।

बुगदा—(पु० फ़ा०) कसाइयों का छुरा।

बुज़दिल—(वि० फ़ा०) कायर। डरपोक।

बुज़ुर्ग—(वि० फ़ा०) बुड्ढा। बड़ा। बुज़ुर्गी=बड़ापन।

बुझना—(क्रि० हि०) जलने का अंत हो जाना। ठंडा होना।

बुझाना—(क्रि० हि०) अग्नि शांत करना। पानी डालकर ठंडा करना।

बुढ़ाई—(स्त्री० हि०) बुढ़ापा।

बुढ़ापा—(पु० हि०) वृद्धावस्था।

बुत—(पु० फ़ा०) मूर्ति। प्रतिमा। प्रियतम। मूर्त्ति की तरह चुपचाप बैठा रहनेवाला। —परस्त= मूर्तिपूजक। रसिक। सौन्दर्योपासक। —परस्ती=मूर्त्तिपूजा। —शिकन=मूर्त्तिपूजा का घोर विरोधी।

बुताम—(पु० अ०) बटन। घुंडी।

बुत्ता—(पु० देश०) धोखा। झाँसा। बहाना। हीला।

बुदबुदा—(पु० हि०) पानी का बुलबुला। बुल्ला।

बुद्ध—(वि० सं०) जो जागा हुआ हो। ज्ञानवान।

बुद्धि—(स्त्री० सं०) विवेक। अक्ल। समझ। —मत्ता= समझदारी। अक्लमंदी। —मान्=समझदार। अक्लमंद। —मानी=समझदारी। अक्लमंदी।

बुध—(पु० सं०) एक ग्रह।

बुनना—(क्रि० हि०) जुलाहों का काम।

बुनावट—(स्त्री० हि०) सूतों की मिलावट।

बुनियाद—(स्त्री० फ़ा०) जड़। नींव। असलियत। वास्तविकता।

बुरकना—(क्रि० अनु०) भुरभुराना। छिड़कना।

बुरा—(वि० हि०) खराब। निकृष्ट। बुराई=खराबी। नीचता। दोष। अवगुण। ऐब।

बुरादा—(पु० फ़ा०) लकड़ी का चूरा।

बुरुश—(पु० अं०) कूँची।

बुर्क़ा—(अ०) स्त्रियों के पहनने का परदे का कपड़ा।

बुर्ज—(पु० अ०) गरगज। किले आदि की दीवारों में, आगे की ओर निकला हुआ गोल या पहलदार भाग। मीनार का ऊपरी भाग। गुंबद। राशिचक्र।

बुर्द—(स्त्री० फ़ा०) ऊपरी आमदनी। ऊपरी लाभ। नफा। शर्त। बाज़ी। —बार= सहनशील।

बुलंद—(वि० फ़ा०) भारी। बहुत ऊँचा। बुलंदी=ऊँचाई।

बुलडाग—(पु० अं०) विलायती कुत्ता।

बुलबुल—(स्त्री० फ़ा०) एक चिड़िया।

बुलबुला—(पु० हि०) बुदबुदा। पानी का बुल्ला।

बुलाक—(पु० तु०) नाक का गहना।

बुलाकी—(पु० तु०) घोड़े की एक जाति।

बुलाना—(क्रि० हि०) पुकारना। आवाज़ देना। अपने पास आने के लिये कहना।

बुलावा—(पु० हि०) निमंत्रण।

बुलेटिन—(पु० अं०) किसी सार्वजनिक विषय पर किसी अधिकारी का वक्तव्य।

बुहारना—(क्रि० हिं०) झाड़ू देना। झाड़ना।

बुहतान—(फ़ा०) उन्माद।

बूँद—(स्त्री० हिं०) कतरा।

बूँदाबाँदी—(स्त्री० हिं०) हलकी या थोड़ी वर्षा।

बूँदी—(स्त्री० हिं०) एक प्रकार की मिठाई।

बू—(स्त्री० फ़ा०) बास। गंध। बदबू। दुर्गंध।

बूआ—(स्त्री० देश०) पिता की बहन। फूफी। बड़ी बहन।

बूकना—(क्रि० हिं०) पीसकर चूर्ण करना।

बूचड़—(पु० अं०) कसाई। —खाना=कसाई-बाड़ा।

बूचा—(वि० हिं०) कनकटा।

बूची—(वि० हिं०) वह भेड़ जिसके कान बाहर निकले हुए न हों।

बूज़ना—(पु० फ़ा०) बंदर।

बूझ—(स्त्रि० हिं०) समझ। बुद्धि। पहेली।

बूझना—(क्रि० हिं०) समझना। जानना। पूछना। प्रश्न करना।

बूट—(पु० हिं०) चने का हरा दाना। (अं०) अँगरेज़ी जूता।

बूटा—(पु० हिं०) छोटा वृक्ष। पौधा। फूलों या वृक्षों आदि के आकार के चिह्न जो कपड़ों या दीवारों आदि पर बनाए जाते हैं।

बूटी—(स्त्री० हिं०) वनस्पति। बनौषधि। जड़ी। भाँग। कपड़ों पर बने हुये फूल-पत्तियों के चिह्न।

बूता—(पु० हिं०) बल। पराक्रम। शक्ति। सामर्थ्य।

बूम—(पु० देश०) जहाज़ का लट्ठा। नदी के छिछले पानी में गाड़ा हुआ लट्ठा जो नाव को उधर आने से रोकता है।

बूरा—(पु० हिं०) शक्कर। साफ़ की हुई चीनी। महीन चूर्ण।

बृहत्—(त्रि० सं०) बहुत बड़ा। विशाल।
बृहस्पति—(पु० सं०) एक ग्रह।
बेंत—(पु० हि०) एक बनस्पति।
बेंदी—(स्त्री० हि०) टिकली। बिंदी। शून्य। सुन्ना।
बेंवड़ा—(पु० हि०) अरगल। ब्योंड़ा।
बे—(अव्य० फ़ा०) बिना। बग़ैर। (हि०) छोटों के लिये एक सम्बोधन शब्द।
बेअक़्ल—(वि० अ०) मूर्ख। नासमझ। बेवकूफ। बेअक़्ली = मूर्खता। बेवकूफी।
बेअदब—(वि० अ०) गुस्ताख़। बेअदबी = गुस्ताख़ी।
बेआब—(वि० अ०) जिसमें चमक न हो। अप्रतिष्ठित।
बेआबरू—(वि० फ़ा०) बेइज़्ज़त।
बेआरा—(पु० देश०) एक में मिला हुआ जौ और चना।
बेओनी—(स्त्री० दे०) जुलाहों का एक औज़ार।
बेइंसाफी—(स्त्री० फ़ा०) अन्याय।
बेइज़्ज़त—(वि० अ०) अपमानित। बेइज़्ज़ती = अपमान।
बेईमान—(वि० फ़ा०) अविश्वसनीय। बेईमानी = छल-कपट।
बेउज़्र—(वि० अ०) जो आज्ञापालन में किसी प्रकार की आपत्ति न करे।
बेक़द्र—(वि० फ़ा०) बेइज़्ज़त। बेक़द्री = बेइज़्ज़ती।
बेक़रार—(वि० फ़ा०) घबराया हुआ। व्याकुल। विकल। बेक़रारी = घबराहट। व्याकुलता।
बेकली—(स्त्री हि०) घबराहट। व्याकुलता।
बेकस—(वि० फ़ा०) निःसहाय। निराश्रय। गरीब। दीन। अनाथ। यतीम।
बेक़सूर—(वि० फ़ा०) निरपराध।
बेक़ानूनी—(वि० अ०) नियमविरुद्ध।
बेक़ाबू—(वि० अ०) विवश। लाचार। जो किसी के बस में न हो।
बेकाम—(वि० हि०) निकम्मा।

बेक़ायदा—(वि० अ०) नियम-विरुद्ध ।
बेकार—(वि० फ़ा०) निकम्मा । व्यर्थ । निष्प्रयोजन । बेकारी=निकम्मापन । काम धंधा का न होना ।
बेक़सूर—(वि० अ०) निरपराध ।
बेख़—(स्त्री० फ़ा०) जड़ । मूल ।
बेखटक—(वि० हि०) निस्संकोच ।
बेख़तर—(वि० अ०) निर्भय । निडर ।
बेख़ता—(वि० अ०) बेकसूर । निरपराध ।
बेख़बर—(वि० फ़ा०) अनजान । नावाक़िफ़ । बेहोश । बेसुध ।
बेख़बरी—(स्त्री० फ़ा०) अज्ञानता । बेहोशी ।
बेख़ौफ़—(वि० फ़ा०) निडर । निर्भय ।
बेगम—(स्त्री० तु०) रानी । राजपत्नी । तास का एक पत्ता जिस पर एक स्त्री या रानी का चित्र बना होता है ।
बेग़रज़—(फ़ा०+अ०) जिसे कोई ग़रज़ या परवा न हो । व्यर्थ ।
बेग़रज़ी—(स्त्री० फ़ा० अ०) बिना मतलब का ।
बेगाना—(वि० फ़ा०) पराया । ग़ैर । बेगानगी=(फ़ा०) परायापन ।
बेगार—(स्त्री० फ़ा०) बिना मज़दूरी का जबरदस्ती लिया हुआ काम । बेगारी= (फ़ा०) बेगार में काम करनेवाला आदमी ।
बेगुनाह—(वि० फ़ा०) बेक़सूर । निर्दोष ।
बेचना—(क्रि० हि०) विक्रय करना । फ़रोख्त करना ।
बेचारा—(वि० फ़ा०) ग़रीब । दीन ।
बेचिराग़—(वि० फ़ा+अ०) उजड़ा हुआ ।
बेचैन—(वि० फ़ा०) व्याकुल । विकल । बेचैनी=विकलता । व्याकुलता । घबराहट ।
बेजड़—(वि० हि०) बे बुनियाद । निर्मूल ।

बेज़बान—(वि० फ़ा०) गूँगा। गरीब।

बेजा—(वि० फ़ा०) बेमौक़े। बे-ठिकाने। अनुचित। नामुनासिब। खराब। बुरा।

बेजान—(वि० फ़ा०) मुरदा। कमज़ोर।

बेज़ाब्ता—(वि० फ़ा०+अ०) क़ानून के विरुद्ध।

बेज़ार—(वि० फ़ा०) व्यथित।

बेजोड़—(वि० हि०) जिसमें जोड़ न हो। निरुपम। अद्वितीय।

बेट—(पु० अं०) बाजी। दाँव। शर्त।

बेटा—(पु० हि०) पुत्र। लड़का। बेटी=लड़की।

बेठन—(पु० हि०) बँधना।

बेठिकाने—(वि० हि०) ऊल-जलूल। व्यर्थ। निरर्थक।

बेड—(पु० अं०) नीचे का भाग। तल। बिस्तर। बिछौना।

बेड़ा—(पु० हि०) तिरना। जहाज़ों या नावों का समूह। आड़ा।

बेड़ी—(स्त्री० हि०) लोहे की ज़ञ्जीर जो कैदियों के पहनाई जाती है।

बेडौल—(वि० हि०) भद्दा। बेढंगा।

बेढंगा—(वि० हि०) भद्दा। कुरूप। —पन=भद्दापन।

बेढ़ई—(स्त्री० हि०) कचौड़ी। भरी हुई रोटी या पूरी।

बेढ़ना—(क्रि० हि०) रूँधना। चौपायों का घेरकर हाँक ले जाना।

बेढब—(वि० हि०) बेढंगा। भद्दा।

बेतकल्लुफ—(वि० फ़ा०+अ०) सरल। निर्व्याज। निश्छल। बेतकल्लुफी=सरलता। सादगी।

बेतक़सीर—(वि० फ़ा+अ०) निरपराध। बेगुनाह।

बेतमीज—(वि० फ़ा+अ०) बेशहूर। बेहूदा। उजड्ड।

बेतरह—(क्रि० फ़ा+अ०) बुरी तरह से। अनुचित रूप से। विलक्षण ढंग से।

बेतरीका—(नि० फ़ा०+अ०) बेकायदा । अनुचित ।

बेतहाशा—(क्रि० फ़ा०+अ०) बहुत अधिक तेजी से । बिना सोचे-समझे ।

बेताव—(वि० फ़ा०) दुर्बल । कमजोर । विकल । व्याकुल । बेताबी=कमज़ोरी । दुर्बलता । बेचैनी । घबराहट ।

बेतार—(वि० हिं०) बिना तार का ।

बेतुका—(वि० हि०) बेमेल ।

बेतौर—(क्रि० फ़ा०+अ०) बुरी तरह से । बेतरह ।

बेदखल—(वि० फ़ा०) अधिकार-च्युत । बेदखली=अधिकार में न रहने देना ।

बेदम—(वि० फ़ा०) मृतक । मुरदा । अधमरा । मृतप्राय ।

बेदर्द—(वि० फ़ा०) कठोर हृदय । निर्दय । बेदर्दी=निर्दयता । कठोरता । बेरहमी ।

बेदाग़—(वि० फ़ा०) निर्दोष । शुद्ध । बिना धब्बे का ।

बेदाना—(पु० हिं०) काबुली अनार ।

बेधड़क—(क्रि० फ़ा०+हिं०) निःसंकोच । निडर होकर । बेखौफ । बेरुकावट । निडर ।

बेनज़ीर—(वि० फ़ा०+अ०) अनुपम ।

बेनट—(स्त्री० अं०) संगीन ।

बेनसीब—(नि० हिं०+अ०) अभागा । बदक़िस्मत ।

बेना—(पु० हिं०) बाँस का बना हुआ पंखा ।

बेनागा—(क्रि० फ़ा०+हिं०) लगातार । नित्य । बिना नागा डाले ।

बेनुली—(स्त्री० देश०) जाँते या चक्की में वह छोटी सी लकड़ी जो किल्ले के ऊपर रखी जाती है ।

बेपर्द—(वि० फ़ा०) नङ्गा । नग्न । बेपरदगी=परदे का अभाव ।

बेपरवा,बेपरवाह—(वि० फ़ा०) बेफ़िक्र । मन-मौजी । उदार ।

बेपेंदी—(वि० हिं०) जिसमें पेंदा न हो ।

बेफायदा—(वि० फ़ा०) व्यर्थ।
बेफिकरा—(वि० हि०) फ़ा०) निश्चिन्त।
बेफिक्र—(वि० फ़ा०) बेपरवा। बेफिक्री = निश्चिन्तता।
बेबस—(अ०) लाचार। परवश।
बेबसी—(स्त्री० हि०) लाचारी। मजबूरी।
बेबाक़—(वि० फ़ा०) चुकाया हुआ।
बेबुनियाद—(वि० फ़ा०) निर्मूल।
बेभाव—(क्रि० फ़ा०) बेहद। बेहिसाब।
बेमज़ा—(वि० फ़ा०) जिसमें कोई आनन्द न हो।
बेमन—(क्रि० फ़ा०) बिना मन लगाये।
बेमरम्मत—(वि० फ़ा०) बिना सुधरा। टूटा फूटा।
बेमालूम—(क्रि० फ़ा०) बिना किसी को पता लगे।
बेमिलावट—(वि० हि०) बेमेल। शुद्ध। ख़ालिस।
बेमुनासिब—(वि० फ़ा०) अनुचित।
बेमुरव्वत—(वि० फ़ा०) शील-संकोच-रहित। बेमुरव्वती = दुःशीलता।
बेमौक़ा—(वि० फ़ा०) अवसर का अभाव।
बेमौसिम—(वि० फ़ा०) उपयुक्त मौसिम या ऋतु न होने पर भी होनेवाला।
बेरस—(वि०) रस हीन। बुरे स्वादवाला।
बेरहम—(वि० फ़ा०) निठुर। निर्दय। बेरहमी = निर्दयता। निष्ठुरता।
बेरा—(पु० अं०) साहब लोगों का वह चपरासी जिसका काम चिट्ठी-पत्री या समाचार आदि पहुँचाना और ले आना आदि होता है।
बेरी—(स्त्री० हि०) एक लता। एक कँटीला वृक्ष।
बेरुख—(वि० फ़ा०) बेमुरव्वत। नाराज़। क्रुद्ध।

बेरुखी—(स्त्री० फ़ा०) बेमुरव्वती।
बेरोक—(वि० फ़ा०+हि०) बेखटके। निर्विघ्न।
बेरोज़गार—(वि० फ़ा०) बिना काम-धंधे का।
बेरौनक़—(वि० फ़ा०) उदास।
बेर्रा—(पु० देश०) मिले हुए जौ और चने का आटा।
बेल—(पु० हि०) श्रीफल। बिल्व। एक कटीला वृक्ष। (पु० अं०) गाँठ। ज़मानत।
बेलचा—(पु० फ़ा०) एक प्रकार की छोटी कुदाल। एक प्रकार की लंबी खुरपी।
बेलज़्ज़त—(वि० फ़ा०) स्वादहीन। सुखरहित।
बेलदार—(पु० फ़ा०) फावड़ा चलाने या ज़मीन खोदने का काम करनेवाला मज़दूर। बेलदारी=बेलदार का काम।
बेलन—(पु० हि०) रोलर। कोल्हू का जाठ। कोई गोल और लंबा लुढ़कनवाला पदार्थ। बेलदार=जिसमें बेलन लगा हो। बेलना=काठ का बना हुआ छोटा गोल डंडा जो प्रायः रोटी, पूरी, कचौरी को चकले पर रखकर बेलने के काम में आता है। (क्रि० स०) रोटी पूरी, कचौरी, आदि को चकले पर रखकर बेलने की सहायता से बड़ा और पतला करना। चौपट करना।
बेलपत्र—(पु० हि०) बेल के वृक्ष की पत्तियाँ।
बेलबूटेदार—(वि० हि०) जिसमें बेल-बूटे बने हों। बेल-बूटों वाला।
बेला—(पु० हि०) चमेली की जाति का एक फूल। मोगरा। मल्लिका। समय। वक्त। एक बाजा।
बेलाग—(वि० फ़ा०) बिलकुल अलग। साफ खरा।
बेलाडोना=(पु० अं०) मकोय का सत्त।
बेलौस—(वि० हि०+फ़ा०) सच्चा। खरा। बेमुरव्वत।

बेवक़ूफ़—(वि० फ़ा०) मूर्ख। नासमझ। बेवक़ूफ़ी = मूर्खता। नादानी। नासमझी।

बेवक़्त—(क्रि० फ़ा०) कुसमय में।

बेवतन—(वि० फ़ा०) बिना घर द्वार का।

बेवफ़ा—(वि० फ़ा०) बेमुरौव्वत। अकृतज्ञ।

बेवा—(स्त्री० फ़ा०) विधवा। राँड।

बेशऊर—(वि० फ़ा०) मूर्ख। नासमझ। बेशऊरी = मूर्खता। नासझी।

बेशक—(क्रि० वि० फ़ा०) निःसंदेह। अवश्य।

बेशक़ीमत, बेशक़ीमती—(वि० फ़ा०) बहुमूल्य।

बेशरम—(वि० फ़ा०) निर्लज्ज। बेहया। बेशरमी = निर्लज्जता। बेहयाई।

बेशी—(स्त्री० फ़ा०) अधिकता। ज़्यादती।

बेसन—(पु० देश०) चने की दाल का आटा।

बेसनी—(वि० हि०) बेसन का बना हुआ।

बेसबब—(क्रि० वि० फ़ा०) अकारण।

बेसबरा—(वि० फ़ा०) अधीर। बेसबरी = असंतोष। अधैर्य।

बेसमझ—(वि० फ़ा०) मूर्ख। नासमझ। बेसमझी = नासमझी। मूर्खता।

बेसरोसामान—(वि० फ़ा०) दरिद्र। कंगाल। जिसके पास कुछ सामग्री न हो।

बेसिलसिले—(क्रि० हि०) अव्यवस्थित रूप से।

बेसुध—(वि० हि०) अचेत। बेहोश। बेख़बर।

बेसुर—(वि० हि०) बेमेल स्वरवाला।

बेसुरा—(वि० हिं०) जो नियमित स्वर में न हो। बेमौका।

बेस्वाद—(वि० हि०) स्वादरहित। बदजायक़ा।

बेहंगम—(वि० हि०) बेढंगा। बेढब।

बेहतर—(वि० फ़ा०) बढ़कर अच्छा। (अव्य०) प्रार्थना वा आदेश के उत्तर में स्वीकृति-सूचक शब्द। बेहतरी=अच्छापन। भलाई।

बेहद—(वि० फ़ा०) असीम। अपार। बहुत अधिक।

बेहन—(पु० हि०) अनाज आदि का बीज जो खेत में बोया जाता है। बीआ।

बेहना—(पु० देश०) धुनिया।

बेहया—(वि० फ़ा०) निर्लज्ज। बेशर्म। बेहयाई=निर्लज्जता। बेशर्मी।

बेहला—(पु० हि०) सारंगी के आकार का अँगरेज़ी बाजा।

बेहाल—(वि० फ़ा०) व्याकुल। बेचैन।

बेहिसाव—(क्रि० फ़ा०) बहुत अधिक। बेहद।

बेहुरमत—(वि० फ़ा०) बेइज़्ज़त।

बेहूदगी—(वि०फ़ा०) असभ्यता।

बेहूदा—(वि० फ़ा०) बदतमीज। अशिष्ट। —पन=अशिष्टता। असभ्यता।

बेहैफ़—(वि० फ़ा०) बेफ़िक्र। चिंता-रहित।

बेहोश—(वि० फ़ा०) मूर्च्छित। बेसुध। बेहोशी=मूर्च्छा। अचेतनता।

बैंक—(पु० अं०) रुपये के लेन-देन की बड़ी कोठी।

बैंकर—(पु० अं०) महाजन। साहूकार।

बैंगन—(पु० हि०) एक फल तरकारी।

बैंगनी—(वि० हि०) बैंगन के रंग का। बैंगनी।

बैजनी—(वि० हि०) बैंगनी।

बैंड—(पु० अं०) अँग्रेज़ी बाजा।

बै—(स्त्री० अ०) बेचना। बिक्री।

बैज़ा—(पु० अ०) अंडा। अंडकोश।

बैट—(पु० अं०) डंडा।

बैटरी—(स्त्री० अं०) चीनी वा शीशे आदि का पात्र जिसमें रासायनिक पदार्थों के योग से रासायनिक प्रक्रिया द्वारा बिजली पैदा करके काम में लाई जाती है। तोपख़ाना।

वैठक—(स्त्री० हि०) बैठने का स्थान। चौपाल। अथाई। एक प्रकार की कसरत। वैठका=चौपाल या दालान। बैठकी=किसी स्थान पर बैठने का महसूल।

वैठा-ठाला—(पु० हि०) निकम्मा। वेकार।

वैठना—(क्रि० हि०) आसन जमाना। किसी को पति बना लेना। खर्च होना।

वैठनी—(स्त्री० हि०) करघे में वह स्थान जहाँ जुलाहे कपड़ा बुनते समय बैठते हैं।

वैठाना—(क्रि० हि०) स्थित करना। किसी स्त्री को पत्नी की तरह घर में रख लेना।

वैना—(पु० हि०) वह मिठाई आदि जो विवाहादि उत्सवों के उपलक्ष में इष्ट मित्रों के यहाँ भेजी जाती है।

वैरंग—(वि० अं०) वह चिट्ठी या पारसल जिसका महसूल पानेवाले से वसूल किया जाय।

वैर—(पु० सं०) शत्रुता। दुश्मनी। विरोध। द्वेष।

वैरन—(पु० अं०) एक अँगरेज़ी उपाधि।

वैरा—(पु० अं०) सेवक। चाकर।

वैरागी—(पु० हि०) वैष्णव मत के साधुओं का एक भेद।

वैरी—(वि० सं०) शत्रु। विरोधी।

वैरोमीटर—(पु० अं०) मौसिम की सरदी-गर्म्मी नापने का एक यंत्र।

वैल—(पु० हि०) एक चौपाया। मूर्ख मनुष्य।

वैलर—(पु० अं०) पीपे के आकार का लोहे का बड़ा देग जो भाप से चलनेवाली कलों में होता है।

वैलून—(पु० अं०) गुब्बारा।

वैसाखी—(स्त्री० हि०) लँगड़े के टेकने की लाठी।

वोझ—(पु० हि०) भार। वज़न। मुश्किल काम। कठिन बात। बोझा=भार। वज़न।

वोट—(स्त्री० अं०) नाव। नौका। स्टीमर। जहाज़।

बोटी—(स्त्री० हि०) मांस का छोटा टुकड़ा।

बोड़ा—(पु० देश०) एक फली जिसकी तरकारी बनती है।

बोतल—(स्त्री० अं०) काँच का एक लंबी गरदन का गहरा बरतन।

बोता—(पु० अ०) ऊँट का बच्चा।

बोदर—(पु० देश०) ताल या जलाशय के किनारे सिंचाई का पानी चढ़ाने के लिये बना हुआ स्थान जिसके कुछ नीचे दो आदमी इधर-उधर खड़े होकर टोकरे आदि उलीचकर पानी ऊपर गिराते रहते हैं।

बोदा—(वि० हि०) मूर्ख। गावदी। सुस्त। (अ०) बोता। —पन=मूर्खता। नासमझी।

बोध—(पु० सं०) ज्ञान। जानकारी। संतोष। बोधक=ज्ञान करानेवाला। जतानेवाला। —गम्य=समझ में आने योग्य।

बोनस—(पु० अं०) पुरस्कार। वह अतिरिक्त लाभ जो किसी कंपनी के हिस्सेदारों को दिया जाय।

बोना—(क्रि० हि०) बीज को जमने के लिये जुते खेत या भुरभुरी की हुई ज़मीन में छितराना। बिखराना।

बोरसी—(स्त्री० हि०) अँगीठी।

बोरा—(पु० हि०) टाट का बना थैला। बोरिया=छोटा थैला। (फ़ा०) चटाई। बिस्तर। बोरी=छोटा बोरा।

बोर्ड—(पु० अं०) किसी स्थायी कार्य्य के लिये बनी हुई समिति। माल के मामलों के फ़ैसले या प्रबंध के लिये बनी हुई समिति या कमेटी। काग़ज़ की मोटी दफ़्ती। बोर्डर=वह विद्यार्थी जो बोर्डिंग हाउस में रहता हो। बोर्डिङ्ग हाउस=छात्रावास।

बोल—(पु० हि०) वचन। वाणी। ताना। व्यंग। बोलती=बोलने की शक्ति।

बोलना=मुँह मे शब्द निकालना। आने के लिये कहना या कहलाना। बोला-चाली=बात-चीत। बोलावा =न्योता। बोली=आवाज। वाणी। वचन। बात। नीलाम करनेवाले और लेने-वाले का ज़ोर से दाम कहना। भाषा। हँसी-दिल्लगी। ताना। ठठोली।

बोहनी—(स्त्री० हि०) किसी सौदे की पहली बिक्री। किसी दिन की पहली बिक्री।

बोहारी—(स्त्री० हि०) झाड़ू।

बौखलाना—(क्रि० हि०) बहक जाना। सनक जाना।

बौछाड़—(स्त्री० हि०) बूँदों की झड़ी। लगातार बात पर बात।

बौड़म—(पु० हि०) बेवक़ूफ़। पागल।

बौद्ध—(वि० सं०) बुद्ध का अनुयायी। —धर्म=गौतम बुद्ध का सिखाया मत।

बौर—(पु० हि०) आम की मञ्जरी। —ना=आम का फूलना।

ब्यवहर—(पु० हि०) उधार। कर्ज़।

ब्यवहार—(पु० हि०) रुपए का लेन-देन। लेने-देने का संबंध। इष्ट-मित्र का संबंध। ब्यवहारी = कार्यकर्त्ता। मामला करने वाला। व्यापारी।

ब्याज—(पु० हि०) वृद्धि। सूद।

ब्याना—(क्रि० हि०) जनना। पैदा करना।

ब्यापना—(क्रि० हि०) किसी स्थान में भर जाना। असर करना।

ब्यालू—(पु० हि०) रात का खाना।

ब्याह—(पु० हि०) विवाह। शादी।

ब्योंचना—(क्रि० हि०) मुर-कना। मोच खा जाना।

ब्योंत—(पु० हि०) ढंग। उपाय। तरीका।

ब्योरा—(पु० हि०) विवरण। तफ़सील।

ब्योहर—(पु० हि०) लेन-देन का व्यापार।

ब्रह्म—(पु० हि०) ईश्वर। जगत का कारण। —कर्म्म = ब्राह्मण का कर्म। —चर्य्य = वीर्य को रक्षित रखने का प्रतिबंध। चार आश्रमों में पहला आश्रम। ब्रह्मचारी = ब्रह्मचर्य्य का व्रत धारण करनेवाला। ब्रह्मचारिणी = ब्रह्मचर्य्य व्रत धारण करनेवाली स्त्री। —ज्ञान = ब्रह्म का बोध। अद्वैत सिद्धांत का बोध। —ज्ञानी = अद्वैतवादी। —द्रोही = ब्राह्मणों से बैर रखनेवाला। —पुत्र = ब्रह्मा का पुत्र। —रन्ध्र = मूर्द्धा का छेद। ब्रह्मांड-द्वार। —वेत्ता = ब्रह्मज्ञानी। —हत्या = ब्राह्मण को मार डालना। ब्रह्मांड = चैादहों भुवनों का समूह। कपाल। खोपड़ी।

ब्रह्मा—(पु० सं०) सृष्टिकर्ता। विधाता।

ब्राह्मण—(पु० सं०) चार वर्णों में सबसे श्रेष्ठ वर्ण। ब्राह्मणी = ब्राह्मण जाति की स्त्री।

ब्राह्ममुहूर्त्त—(पु० सं०) सूर्य्योदय से पहले दो घड़ी तक का समय।

ब्राह्मसमाज—(पु० सं०) बंग देश में प्रवर्त्तित एक नया संप्रदाय जिसमें एकमात्र ब्रह्म ही की उपासना की जाती है।

ब्राह्मी—(स्त्री० सं०) भारतवर्ष की पुरानी लिपि। औषध के काम में आनेवाली एक बूटी।

ब्रिगेड—(पु० अं०) सेना का एक समूह। ब्रिगेडियर = एक सैनिक कर्मचारी जो एक ब्रिगेड भर का संचालक होता है।

ब्रिटिश—(वि० अं०) उस द्वीप से संबंध रखनेवाला जिसमें इंगलैंड प्रदेश है। इंगलिस्तान का। अँगरेज़ी।

ब्रिज—(पु० अं०) पुल। सेतु।
ब्रिटेन—(पु० अं०) इंगलैंड और वेल्स।
ब्रीवियर—(पु० अं०) एक प्रकार का छोटा टाइप।
ब्रुश—(पु० अं०) बालों का बना हुआ कूँचा जिससे टोपी वा जूते इत्यादि साफ किये जाते हैं।
ब्रोकर—(पु० अं०) दलाल।
ब्लाक—(पु० अं०) ठप्पा। भूमि का कोई चौकोर टुकड़ा या वर्ग।
ब्लाटिंग पेपर—(अ०) सोख़्ता। स्याही-सोख काग़ज़।
ब्ल्यू—(अं०) नीला। —ब्लैक =नीली मिश्रित काली स्याही।
ब्लैंकट—(अं०) कम्बल।
ब्लैक—(अं०) काला। —बोर्ड =काला तख्ता।

भ

भ—हिन्दी-वर्णमाला का चौबीसवाँ और पवर्ग का चौथा वर्ण।
भंग—(पु० सं०) पराजय। बाधा। भाँग। भंगड़=बहुत भाँग पीनेवाला। भँगेड़ी।
भंगी—(पु० हि०) मल-मूत्र उठानेवाला। भँगेड़ी।
भँड़भाँड़—(पु० हि०) एक कँटीला पौधा।
भँडारया—(पु० हि०) एक जाति का नाम। ढोंगी। पाखंडी। धूर्त्त। भड्डर के वंशज।
भंडार—(पु० हि०) कोष। खज़ाना। अन्नादि रखने का स्थान। पाकशाला। भंडारा=साधुओं का भोज। भंडारी=खजानची। कोषाध्यक्ष।
भँडौआ—(पु० हि०) भाँड़ों के गाने के गीत। अश्लील बात।

भँवर—(पु० हिं०) पानी का चक्कर ।

भँवरी—(स्त्री० हिं०) बालों का घुमाव । फेरी । गश्त । परिक्रमा ।

भक्त—(वि० सं०) अनुयायी । सेवा करनेवाला । भक्ति करनेवाला । उपासक । भक्ति = पूजा । श्रद्धा ।

भक्षण—(पु० सं०) खाना । भक्षक = खानेवाला । भक्ष्य = खाने योग्य । आहार ।

भगंदर—(पु० सं०) एक रोग का नाम ।

भगत—(वि० हिं०) वैष्णव वा वह साधु जो तिलक लगाता और मांस आदि न खाता हो ।

भगदर (ड़)—(स्त्री० हिं०) घबड़ाकर भागना ।

भगवद्भक्त—(पु० सं०) भगवान का भक्त ।

भगवान्, भगवान—(वि० हिं०) ऐश्वर्ययुक्त । ईश्वर । पूज्य और आदरणीय व्यक्ति ।

भगोड़, भगेलू—(वि० हिं०) भागा हुआ । कायर ।

भग्न—(त्रि० सं०) टूटा हुआ ।

भजन—(पु० सं०) स्मरण । जप । हरि-कीर्तन सम्बन्धी गीत । भजना = स्मरण करना । जपना । भजनानंदी = भजन गाकर सदा प्रसन्न रहनेवाला ।

भटकना—(क्रि० हिं०) इधर-उधर घूमना ।

भट्ठी—(स्त्री० हिं०) ईंटों का बड़ा चूल्हा । वह स्थान जहाँ देशी शराब बनती है ।

भड़क—(स्त्री० अनु०) चमकीलापन । दिखाऊ चमक-दमक । सहम । —दार = चमकीला । रोबदार । भड़कना = तेज़ी से जल उठना । चौंकना । झिझकना । उत्तेजित होना । भड़कीला = चमकीला ।

भड़भड़िया—(वि० हिं०) गप्पी ।

भड़भूँजा—(पु० हिं०) भाड़ में नाज भूनने वाला ।

भड़ी—(स्त्री० हिं०) झूठा बढ़ावा ।

भड़ुआ—(पु० हि०) वेश्याओं का दलाल। वेश्याओं के साथ तबला या सारंगी बजानेवाला।

भड्डर—(पु० हि०) एक जाति। वर्षा-विज्ञान का एक प्राचीन कवि।

भतीजा—(पु० हि०) भाई का पुत्र।

भत्ता—(पु० हि०) दैनिक व्यय जो किसी कर्मचारी को यात्रा के समय दिया जाता है। अलाउंस।

भद्दा—(वि० हि०) बेढंगा। कुरूप। —पन=बेढंगापन।

भद्र—(वि० सं०) सभ्य। सुशिक्षित।

भद्रा—(स्त्री० सं०) फलित ज्योतिष के अनुसार एक योग। बाधा।

भनभनाहट—(स्त्री० हि०) गुञ्जार।

भभक—(स्त्री० हि०) उबलना। उबाल।

भय—(पु० सं०) डर। खौफ। भयंकर=डरावना। भयभीत=डरा हुआ। भयातुर=डर से घबराया हुआ। भयानक=भयंकर। भयावह=डरावना।

भरण—(पु० सं०) पालन-पोषण।

भरता—(पु० देश०) चोखा।

भरती—(स्त्री० हि०) भरना। प्रवेश होना।

भरपाई—(क्रि० हि०) पूरी वसूली की रसीद।

भरपूर—(वि० हि०) भली-भाँति।

भरम—(पु० हि०) संशय। संदेह। भेद। रहस्य।

भरसक—(क्रि० हि०) यथा-शक्ति। जहाँ तक हो सके।

भरापूरा—(वि० हि०) संपन्न।

भरी—(स्त्री० हि०) एक तौल जो एक रुपये के बराबर होती है।

भरोसा—(पु० हि०) आसरा। सहारा। आशा। दृढ़ विश्वास। यक़ीन।

भर्रा—(पु० अनु०) झाँसा। पट्टी। चकमा।

भर्त्ता—(पु० सं०) पति। ख़ाविंद।

भलमनसाहत—(स्त्री० हि०) शराफ़त। भलमनसी=सज्जनता।

भला—(वि० हि०) श्रेष्ठ। अच्छा। खैर। भलाई। —पन=उपकार। नेकी।

भवदीय—(सर्व० सं०) आपका। तुम्हारा।

भवन—(पु० सं०) मकान।

भविष्य—(सं०) होनेवाला। आगे। भविष्यद्वक्ता=होनेवाली बात को पहले ही कहनेवाला। ज्योतिषी। भविष्यद्वाणी=भविष्य में होनेवाली वह बात जो पहले ही से कह दी गई हो।

भव्य—(वि० सं०) शानदार।

भस्म—(पु० हि०) राख। चिता की राख। जला हुआ। औषधियों की राख।

भंडाफोड़—(हि०) रहस्योद्घाटन। गड़बड़ी।

भाँग—(स्त्री० हि०) भंग। विजया।

भाँड़—(पु० हि०) विदूषक। मसख़रा।

भाँड़ा—(पु० हि०) बरतन। पात्र। बड़ा बरतन।

भांडागार—(पु० सं०) कोश। खजाना। भंडार।

भांडार—(पु० सं०) भंडार। खजाना। कोश। गोदाम।

भाँति—(स्त्री० हि०) तरह। किस्म। प्रकार।

भाँपना—(क्रि० हि०) पहचानना। देखना।

भाँवर—(स्त्री० हि०) विवाह के समय की परिक्रमा।

भाई—(पु० हि०) भ्राता। सहोदर। बराबरवालों के लिये एक प्रकार का संबोधन। —चारा=भाई के समान होने का भाव। बिरादराना बर्ताव। —बंद=भाई और मित्र बन्धु आदि। —बिरादरी=जाति या समाज के लोग।

भाग—(पु० सं०) हिस्सा। अंश। तरफ। ओर।

भाग्य—(पु० सं०) तक़दीर।

भाजन—(पु० सं०) बरतन। आधार।

भाजी—(स्त्री० हि०) तरकारी, साग आदि।

भाट—(पु० हि०) चारण। वंदी-जन। एक जाति का नाम।

भाटा—(पु० हि०) समुद्र के चढ़ाव का उतरना।

भाटिया—(पु० हि०) एक जाति जो गुजरात में रहती है।

भाड़—(पु० हि०) भड़भूँजों की भट्ठी।

भाड़ा—(पु० हि०) किराया।

भात—(पु० हि०) पकाया हुआ चावल। विवाह की एक रसम।

भादों—(पु० हि०) सावन के बाद और क्वार के पहले का महीना।

भाद्रपद—(पु० सं०) भादों।

भानु—(पु० सं०) सूर्य्य।

भाभी—(स्त्री० हि०) भौजाई। बड़े भाई की स्त्री।

भारत—(पु० सं०) आर्यावर्त्त। हिंदुस्तान। —वर्ष=आर्यावर्त। भारतीय=हिंदुस्तानी।

भारी—(वि० हि०) बोझिल। बड़ा। विशाल। बहुत। अधिक।—पन=भारी होना।

भार्या—(स्त्री० सं०) पत्नी। स्त्री।

भाला—(पु०हि०) बरछा।—बरदार=बरछा चलानेवाला।

भालू—(पु० हि०) एक जंगली जानवर। रीछ।

भाव—(पु० सं०) मतलब। अभिप्राय। मुख की आकृति या चेष्टा। भावना=ध्यान। विचार। इच्छा। वासना। भावार्थ=अभिप्राय। मतलब। भावी=भवितव्यता। आगे होनेवाली बात। तक़दीर। भावुक=सज्जन। भावना करनेवाला। अच्छी बातें सोचनेवाला।

भाषा—(स्त्री० सं०) बोली। ज़बान। वाणी। भाषान्तर=अनुवाद। तर्जुमा। भाष्य=टीका। भाष्यकार=सूत्रों की व्याख्या करनेवाला।

भास्कर—(पु० सं०) सूर्य्य। पत्थर पर चित्र और बेल-बूटे आदि बनाने की कला।

भिंडी—(स्त्री० हि०) एक फली जिसकी तरकारी बनती है।

भिक्षा—(स्त्री० सं०) याचना। माँगना। भीख। भिक्षाटन=भीख माँगने की फेरी। भिक्षुक=भीख माँगनेवाला।

भिखमंगा—(पु० हि०) भिखारी। भिक्षुक।

भिखारी—(पु० हि०) भिक्षुक। भिखमंगा। भीख माँगनेवाली स्त्री।

भिड़—(स्त्री० हि०) बर्रै। ततैया।

भिड़ना—(क्रि० हि०) टकराना। लड़ना। झगड़ना। सटना।

भिनकना—(क्रि० अनु०) भिन-भिन शब्द करना।

भिन्न—(वि० सं०) अलग। जुदा। दूसरा। भिन्नता=अंतर।

भी—(अव्य हि०) अवश्य। ज़रूर। अधिक। तक।

भीख—(स्त्री० हि०) भिक्षा। भिक्षा में दी हुई चीज़।

भीगना—(क्रि० हि०) तर होना।

भींटा—(पु० देश०) ऊँची या टीलेदार ज़मीन।

भीड़—(स्त्री० हि०) जन-समूह। आदमियों का जमाव। —भड़क्का=बहुत आदमियों का समूह। —भांड़=मनुष्यों का जमाव। भीड़।

भीतर—(क्रि० वि०) अंदर। हृदय। जनानख़ाना। भीतरी=अंदर का। गुप्त।

भीरु—(सं०) डरपोक। —ता=डरपोकपन। कायरता।

भील—(पु० हि०) एक प्रसिद्ध जंगली जाति।

भीषण—(वि० सं०) भयानक।

भुआ—(पु० हि०) सेमर आदि की रुई जो फल के भीतर भरी रहती है।

भुकड़ी—(स्त्री०) सफेद रंग की एक वनस्पति, जो अचार आदि पर जम जाती है।

भुक्खड़—(वि० हि०) भूखा । दरिद्र । कंगाल ।

भुगतना—(क्रि० हि०) सहना । झेलना । भोगना ।

भुगतान—(पु० हि०) निपटारा । फैसला । मूल्य या देन चुकाना । भुगताना = पूरा करना । संपादन करना ।

भुज—(पु० सं०) बाहु । बाँह । हाथ । —दंड=बाहुदंड । —पाश=गलबाँहीं । गले में हाथ डालना । भुजा=बाँह ।

भुजाली—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की टेढ़ी छुरी ।

भुट्टा—(पु० हि०) मक्के की हरी बाल ।

भुनगा—(पु० अनु०) पतिंगा ।

भुनना—(क्रि० हि०) भूना जाना । पकना । रुपये आदि के बदले में अठन्नी चौअन्नी या पैसों आदि का मिलना ।

भुनभुनाना—(क्रि० अनु०) बड़-बड़ाना ।

भुनाना—(क्रि० हि०) दूसरे को भूनने के लिये प्रेरणा करना । बड़े सिक्के को छोटे सिक्कों से बदलना ।

भुरकुस—(पु० हि०) चूर्ण ।

भुरता—(पु० हि०) कुचला हुआ पदार्थ ।

भुलाना—(क्रि० हि०) विस्मृत करना । भ्रम में पड़ना । भटकना ।

भुलावा—(पु० हि०) धोखा । छल ।

भुस—(पु० हि०) भूसा ।

भूँकना—(क्रि० हि०) कुत्ते की बोली । व्यर्थ बकना ।

भूकंप—(पु० हि०) भूचाल । भूडोल ।

भूख—(स्त्री० हि०) खाने की इच्छा । क्षुधा । आवश्यकता । भूखा=जिसे भूख लगी हो । क्षुधित । इच्छुक । दरिद्र ।

भूगर्भ—(पु० सं०) पृथ्वी का भीतरी भाग । —शास्त्र=वह शास्त्र जिसके द्वारा पृथ्वी संबंधी बातों का ज्ञान होता है ।

भूगोल—(पु० सं०) पृथ्वी । वह

शास्त्र जिसके द्वारा पृथ्वी के ऊपरी स्वरूप और उसके प्राकृतिक विभागों का ज्ञान होता है।

भूत—(पु० सं०) जीव। प्राणी। बीता हुआ समय। गुज़रा हुआ ज़माना। मृत शरीर। शव। प्रेत। जिन। गत। (स्त्री०) भूतिनी।

भूतल—(पु० सं०) पृथ्वी का ऊपरी तल। संसार।

भूधर—(पु० सं०) पहाड़।

भूनना—(क्रि० हि०) अग्नि में डालकर या तवे पर रखकर या गरम बालू में डालकर पकाना। तलना।

भूप—(पु० सं०) राजा।

भूमंडल—(पु० सं०) पृथ्वी।

भूमि—(स्त्री० सं०) पृथ्वी। ज़मीन। स्थान। जड़। देश। प्रांत। क्षेत्र।

भूमिका—(स्त्री० सं०) रचना। किसी ग्रंथ के आरंभ की वह सूचना जिससे उस ग्रंथ के संबंध की आवश्यक और ज्ञातव्य बातों का पता चले। मुख-बन्ध।

भूमिहार—(पु०सं०) एक जाति।

भूरा—(पु० हि०) मटमैला रंग।

भूरि—(पु० सं०) अधिक।

भूल—(स्त्री० हि०) ग़लती। चूक। क़सूर। अशुद्धि। —ना=याद न रखना। गलती करना। खो देना। भुलक्कड़=भूलनेवाला। भूल-भुलैयाँ=घुमावदार इमारत। बहुत घुमाव-फिराव की बात या घटना।

भूषण—(पु० सं०) गहना। भूषित=सजाया हुआ।

भूसा—(पु० हि०) भुस। (स्त्री०) भूसी=अन्न या दाने के ऊपर का छिलका।

भृकुटी—(स्त्री० सं०) भौंह।

भृत्य—(पु० सं०) सेवक। नौकर।

भेंट—(स्त्री० हि०) मिलना। मुलाक़ात। उपहार। नज़राना।

भेंटना—(क्रि० हि०) मुलाक़ात

करना। मिलना। छाती से लगाना। आलिङ्गन करना।

भेजना—(क्रि० हि०) रवाना करना। पठाना।

भेजा—(पु० हि०) खोपड़ी के भीतर का गूदा। चंदा। बेहरी।

भेड़—(स्त्री० हि०) बकरी की जाति का एक चौपाया। गाडर। बहुत सीधा या मूर्ख मनुष्य। भेड़ा=भेड़ जाति का नर भेड़ा। भेड़ियाधसान=अंध-विश्वास। बिना सोचे-बिचारे काम करना। भेड़िया=एक जङ्गली जानवर। बड़ा सियार।

भेद—(पु० सं०) रहस्य। मर्म। तात्पर्य। फ़र्क। अंतर। क़िस्म। जाति। —बुद्धि=फूट। भेदिया=भेद लेने वाला। जासूस। गुप्त रहस्य जानने वाला।

भेरी—(स्त्री० सं०) बड़ा ढोल या नगाड़ा। दुंदभी।

भेली—(स्त्री हि०) गुड़ की गोल पिंडी। गुड़।

भेस—(पु० हि०) वेष। शकल-सूरत।

भैंस—(स्त्री० हि०) दूध देने वाला एक चौपाया। (पु०) भैंसा।

भैया—(पु० हि०) भाई। बराबर वालों या छोटों के लिये संबोधन शब्द। —दोज=कार्तिक शुक्ल द्वितीया। भाईदूज।

भैरवी—(स्त्री० सं०) एक रागिनी। —चक्र=तांत्रिकों या वाममार्गियों का वह समूह जो कुछ विशिष्ट तिथियों, नक्षत्रों और समयों में देवी की पूजा करने के लिये एकत्र होता है। मद्यपों और अनाचारियों का समूह।

भोंकना—(क्रि० हि०) धँसाना। घुसेड़ना।

भोंडा—(वि० हि०) भद्दा। बदसूरत। कुरूप। —पन=भद्दापन। बेहूदगी।

भोंदू—(वि० हि०) बेवक़ूफ़। मूर्ख। सीधा। भोला।

भोंपू—(पु० अनु०) तुरही की तरह का एक प्रकार का बाजा।

भोग—(पु० सं०) सुख या दुःख आदि को अनुभव करना या सहना। सुख। स्त्री-संभोग। भोगना=भुगतना। सहना। —विलास=आमोद-प्रमोद। सुख-चैन। भोगी=भोगने वाला। सुखी। इन्द्रियों का सुख चाहने वाला। भुगतने वाला। भोग्य=भोगने योग्य। काम में लाने योग्य।

भोज—(पु० हि०) दावत। जेवनार।

भोजन—(पु० सं०) खाना। भक्षण करना। खाने को सामग्री। —भट्ट=पेटू। —शाला=रसोईघर। पाकशाला। भोजनाच्छादन=खाना-कपड़ा। अन्न-वस्त्र। भोजनालय=पाकशाला। रसोईघर। भोज्य=खाने योग्य। पदार्थ

भोजपत्र—(पु० सं०) एक वृक्ष।

भोला—(वि० हि०) सीधा सादा। —पन=सरलता। सादगी। नादानी। मूर्खता। —भाला=सीधा। सरल चित्त का।

भौं—(स्त्री० हि०) आँख के ऊपर के बालों की श्रेणी। भौंह।

भौंरा—(पु० हि०) काले रंग का उड़नेवाला एक पतंगा। एक खिलौना।

भौंरी—(स्त्री० हि०) पशुओं आदि के शरीर में बालों के घुमाव से बना हुआ चक्र। तेज बहते हुए जल में पड़ने-वाला चक्कर।

भौरी—(हि०) बाटी। उपले पर सेंकी हुई मोटी रोटी।

भौंह—(स्त्री० हि०) भौं।

भौचक—(वि० हि०) स्तंभित। चकपकाया हुआ।

भौजाई—(स्त्री० हि०) भाभी। भाई की भार्या।

भौतिक—(पु० सं०) पंचभूत

संबंधी। —विद्या=भूतों-प्रेतों को बुलाने और दूर करने की विद्या।

भौमवार—(पु० सं०) मंगलवार।

भ्रम—(पु० सं०) मिथ्या ज्ञान। धोखा। संदेह। शक। बेहोशी। —मूलक=जो भ्रम के कारण उत्पन्न हुआ हो। संदिग्ध। भ्रमण=घूमना। भ्रामक=भ्रम उत्पन्न करनेवाला। भ्रमात्मक=जिसके कारण भ्रम उत्पन्न होता हो।

भ्रमर—(पु० सं०) भौंरा।

भ्रष्ट—(वि० सं०) पतित। बुरे चाल चलनवाला। दुराचारी। भ्रष्टा=कुलटा। छिनाल।

भ्रांति—(स्त्री० सं०) धोखा। संदेह। पागलपन। भूलचूक।

भ्राता—(पु० सं०) सगा भाई। सहोदर।

भ्रू—(स्त्री० सं०) आँखों के ऊपर के बाल। भौं। —भंग=त्यौरी चढ़ाना। क्रोध आदि प्रगट करने के लिये भौंह चढ़ाना। —संचालन=भौं मटकाना। —विलास=स्त्रियों का हावभाव।

भ्रूण—(पु० सं०) स्त्री का गर्भ। —हत्या=गर्भ के बालक की हत्या।

म

म—हिंदी-वर्णमाला का पच्चीसवाँ व्यंजन और पवर्ग का अन्तिम वर्ण।

मंगन—(पु० हि०) भिक्षुक। मँगता=भिखमंगा। मँगनी=उधार। विवाह के पहले की रस्म। वररक्षा।

मंगल—(पु० सं०) कल्याण। एक दिन। —प्रद=कल्याणकारी। —वार=सोमवार

के बाद बुधवार के पहले का वार। भौमवार। मांगलिक=शुभ।

मँगाना—(क्रि० हि०) माँगने काम दूसरे से कराना।

मंच, मंचक—(पु० सं०) खाट। खटिया। मँचिया। ऊँचा बना हुआ बैठका।

मंजन—(पु० हि०) दाँत साफ़ करने का चूर्ण। (अं०) टूथ पाउडर।

मंजरी—(स्त्री० सं०) कोंपल। बौर।

मंज़िल—(स्त्री० अ०) पड़ाव। मकान का खंड। मरातिब।

मंजुल—(वि० सं०) सुन्दर।

मंज़ूर—(वि० अ०) स्वीकृत। मंजूरी=स्वीकृति।

मंजूषा—(स्त्री० सं०) छोटा पिटारा या डिब्बा। पिटारी।

मंडन—(पु० सं०) सजाना। प्रमाण आदि कोई बात सिद्ध करना। मंडित=शोभित।

मंडप—(पु० सं०) किसी उत्सव या समारोह के लिये बाँस-फूस आदि से छाकर बनाया हुआ स्थान। देवमन्दिर के ऊपर का गुम्बद। चँदोवा। शामियाना।

मंडल—(पु० सं०) चक्कर। गोलाई। भूमिखंड। प्रदेश। समाज। समूह। ग्रह के घूमने की कक्षा। मंडलाकार=गोल। मंडलाना=किसी के चारों ओर घूमना। मंडली = गोल। समूह। समाज। समुदाय।

मँड़वा—(पु० हि०) मंडप।

मंडी—(स्त्री० हि०) थोक बिक्री की जगह। बड़ा हाट।

मँडुआ—(पु० देश०) एक अन्न।

मंडूर—(पु० सं०) लोहे की मैल।

मंतव्य—(वि० सं०) मानने योग्य। माननीय। विचार। मत।

मंत्र—(पु० सं०) सलाह। परामर्श। गायत्री आदि वैदिक वाक्य। जप के लिये निर्दिष्ट शब्द या वाक्य। मंत्रणा=परामर्श। सलाह। —विद्या=

तंत्रविद्या। मंत्रशास्त्र। तंत्र। मंत्रित्व=मंत्री का कार्य। वज़ारत। मंत्री=सलाह देने वाला। सचिव।
मंथन—(पु० सं०) मथना। बिलोना।
मंद—(वि० सं०) धीमा। सुस्त। शिथिल। आलसी। मूर्ख। —भाग्य = दुर्भाग्य। —भागी=अभागा। मंदी= सस्ती।
मंदार—(पु० सं०) आक। मदार।
मंदिर—(पु० सं०) घर। देवालय।
मंद्र—(पु० सं०) गम्भीर ध्वनि। धीमा।
मंशा—(स्त्री० अ०) इच्छा। इरादा।
मंसब—(पु० अ०) पद। पदवी।
मंसूख—(वि० अ०) रद।
मकई—(स्त्री० हि०) एक अन्न।
मकड़ा—(पु० हि०) बड़ी मकड़ी। मकड़ी=एक कीड़ा।
मकतब—(पु० अ०) पाठशाला।
मक़दूर—(पु० अ०) सामर्थ्य।
मक़नातीस—(पु० अ०) चुम्बक पत्थर।
मक़फ़ूल—(वि० अ०) रेहन किया हुआ।
मक़बरा—(पु० अ०) समाधि। मज़ार।
मक़बूज़ा—(वि० अ०) अधिकृत।
मकरंद—(पु० सं०) फूलों का रस।
मकरा—(पु० हि०) मड़ुवा नामक अन्न। एक कीड़ा।
मकरूह—(वि० फ़ा०) नापाक। घृणित।
मक़सद—(पु० अ०) मनोरथ। मतलब।
मक़सूद—(वि० अ०) उद्दिष्ट। अभिप्रेत।
मकान—(पु० फ़ा०) घर।
मकुना—(पु० हि०) बिना दाँत का नर हाथी। बिना मूछों का पुरुष।
मकुनी—(स्त्री० देश०) मटर के आटे की रोटी।

मक़ूला—(पु॰ अ॰) कहावत।
मकोड़ा—(पु॰ हि॰) कोई छोटा कीड़ा।
मकोय—(स्त्री॰ हि॰) एक फल। रस-भरी।
मक्कर—(पु॰ अ॰) छल। धोखा। नख़रा। मक्कार=फ़रेबी। छली। मक्कारी=धोखेबाज़ी।
मक्का—(पु॰ अ॰) अरब का एक प्रसिद्ध नगर।
मक्खन—(पु॰ हि॰) नवनीत। नैनूँ।
मक्खी—(स्त्री॰ हि॰) एक कीड़ा। मक्षिका। बंदूक के अगले भाग की नोक पर उभरा हुआ अंश जिससे निशाना ठीक किया जाता है।
मक्खीचूस—(पु॰ हि॰) बड़ा कंजूस।
मख़ज़न—(पु॰ अ॰) ख़ज़ाना।
मख़तूल—(पु॰ हि॰) काला रेशम।
मख़दूम—(पु॰ अ॰) मालिक। पूज्य।
मख़मल—(स्त्री॰ अ॰) एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा। मख़मली=मख़मल की तरह का।
मख़लूक़—(पु॰ अ॰) सृष्टि।
मख़सूस—(वि॰ अ॰) विशेष।
मग़ज़—(पु॰ अ॰) दिमाग़। मींगी। गूदा। —पच्ची=सिर खपाना। दिमाग़ लड़ाना।
मग़ज़ी—(स्त्री॰ देश॰) गोट।
मगद—(पु॰ हि॰) एक मिठाई।
मगध—(पु॰ सं॰) दक्खिनी विहार का प्राचीन नाम।
मगन—(वि॰ हि॰) डूबा हुआ। प्रसन्न। तन्मय।
मगर—(पु॰ हि॰) घड़ियाल। (फ़ा॰) लेकिन। परन्तु। —मच्छ=बड़ी मछली।
मग़रिब—(पु॰ अ॰) पश्चिम।
मग़रूर—(वि॰ अ॰) घमंडी। मग़रूरी=घमंड।
मग़लूब—(पु॰ फ़ा॰) पराजित।
मग़्ज़—(पु॰ अ॰) दिमाग़। —रोशन=सुँघनी।

मग्न—(वि॰ सं॰) डूबा हुआ। तन्मय।

मचकना—(क्रि॰ अनु॰) इस प्रकार दबाना जिसमें मच-मच शब्द हो।

मचका—(पु॰ हि॰) झोंका। झूले की पेंग।

मचना—(क्रि॰ अनु॰) आरंभ होना। छा जाना। फैलना।

मचल—(स्त्री॰ हि॰) अड़। रूठ। मचलना=हठ करना।

मचलाना—(क्रि॰ अनु॰) क़ै मालूम होना।

मचान—(स्त्री॰ हि॰) खेत की रखवाली या शिकार के लिये बनाया हुआ ऊँचा मंच।

मचाना—(क्रि॰ हि॰) आरंभ करना।

मच्छड़—(पु॰ हि॰) एक कीड़ा।

मच्छीमार—(पु॰ हि॰) धीवर। मल्लाह।

मछली—(स्त्री॰ हि॰) मीन। मत्स्य।

मछुवा—(पु॰ हि॰) मछली के शिकार की नाव।

मछुआ, मछुवा—(पु॰ हि॰) मछली मारने वाला। धीवर।

मज़कूर—(वि॰ फ़ा॰) ज़िक्र किया हुआ। कथित। उक्त। —ए-बाला=पूर्वोक्त।

मज़कूरात—(पु॰ फ़ा॰) आराज़ी का वह लगान जो गाँव के ख़र्च में आता है।

मज़कूरी—(पु॰ फ़ा॰) बिना वेतन का चपरासी। वह ज़मीन जो सर्वसाधारण के लिये छोड़ दी गई हो।

मज़दूर—(पु॰ फ़ा॰) मजूर। कुली। मज़दूरी=उजरत। पारिश्रमिक। कुली का काम।

मजनूँ—(पु॰ अ॰) पागल प्रेमी। आशिक।

मज़बूत—(वि॰ अ॰) दृढ़। पुष्ट। मज़बूती=दृढ़ता। साहस।

मजबूर—(वि॰ अ॰) विवश। लाचार। मजबूरन्=लाचारी से। मजबूरी=असमर्थता।

मजमा—(पु॰ अ॰) भीड़भाड़। जमघट।

मजमुआ—(वि० अ०) इकट्ठा किया हुआ। संगृहीत।
मज़मून—(पु० अ०) विषय। लेख।
मजरिया—(वि० फ़ा०) जो जारी हो। प्रवर्त्तित।
मज़रूआ—(वि० फ़ा०) जोता और बोया हुआ।
मजरूह—(वि० अ०) घायल। ज़ख़्मी।
मजल—(स्त्री० फ़ा०) मंज़िल। पड़ाव।
मजलिस—(स्त्री० अ०) सभा। महफ़िल। नाच-रंग का स्थान। मजलिसी=निमंत्रित व्यक्ति। जो मजलिस में रहने योग्य हो। सबको प्रसन्न करनेवाला।
मज़लूम—(वि० अ०) अत्याचार-पीड़ित। सताया हुआ।
मज़हब—(पु० अ०) धार्मिक संप्रदाय। पंथ। मत। मज़हबी=किसी धार्मिक मत या संप्रदाय से संबंध रखनेवाला। मेहतर सिख।
मज़ा—(पु० फ़ा०) स्वाद। लज़्ज़त। आनंद। सुख। दिल्लगी।
मज़ाक़—(पु० अ०) दिल्लगी। मज़ाक़न्=हँसी दिल्लगी के तौर पर। मज़ाक़िया=मज़ाक़ से।
मजाज़—(पु० फा०) गर्व। स्वभाव। तबीयत।
मजाज़—(पु० अ०) अधिकार। हक़। इख़्तियार।
मजाज़ी—(वि० अ०) बनावटी। कल्पित।
मज़ार—(पु० अ०) समाधि। मक़बरा। क़ब्र।
मजाल—(स्त्री० अ०) सामर्थ्य।
मजिस्ट्रेट—(पु० अं०) फौजदारी अदालत का अफ़सर। मजिस्ट्रेटी=मजिस्ट्रेट का कार्य या पद।
मजीठ—(स्त्री० हि०) एक लता।
मजीरा—(पु० हि०) ताल। टुनकी। जोड़ी।
मजूर—(पु० फ़ा०) मज़दूर।

कुली । मजूरी = मजदूर का काम ।

मज़ेदार—(वि० फ़ा०) स्वादिष्ट । बढ़िया । मज़ेदारी = स्वाद । आनंद ।

मज्जन—(पु० सं०) स्नान । नहाना ।

मज्जा—(स्त्री० सं०) हड्डी के भीतर का गूदा जो बहुत कोमल और चिकना होता है ।

मझधार—(स्त्री० हि०) बीच· धारा ।

मझला—(वि० हि०) मध्य का । बीच का ।

मझाना—(क्रि० हि०) प्रविष्ट करना । बीच में धँसाना ।

मझोला—(वि० हि०) बीच का । मध्यम आकार का ।

मटकना—(क्रि० हि०) नखरा करना । मटकाना = नखरे के साथ अंगों का संचालन करना ।

मटका—(पु० हि०) मिट्टी का बड़ा घड़ा । मटकी = छोटा मटका । कमोरी ।

मटमँगरा—(पु० हि०) विवाह के पहले की एक रीति ।

मटमैला—(वि० हि०) मिट्टी के रंग का ।

मटर—(पु० हि०) एक अन्न ।

मटरगश्त—(स्त्री० हि०) सैर-सपाटा ।

मटरबोर—(पु० हि०) मटर के बराबर घुँघरू जो पाज़ेब आदि में लगते हैं ।

मटियामेट—(पु० हि०) तहस-नहस ।

मटियार—(पु० हि०) वह भूमि या खेत जिसमें चिकनी मिट्टी अधिक हो ।

मट्ठा—(पु० हि०) मथा हुआ दही । छाछ । मही ।

मठ—(पु० सं०) निवास स्थान । रहने की जगह । मंदिर । देवालय । —धारी = वह साधु या महंत जिसके अधि-कार में कोई मठ हो । मठा-

धीश=मठ का मालिक। महंत।

मठरी—(स्त्री० देश०) एक प्रकार की मिठाई।

मड़ई—(वि० हि०) कुटिया।

मड़राना—(क्रि० हि०) मंडप बाँधकर उड़ना। चक्कर देते हुए उड़ना। किसी के चारों ओर घूमना।

मड़ाड़—(पु० देश०) छोटा कच्चा तालाब या गड्ढा।

मडुआ—(पु० देश०) बाजरे की जाति का एक प्रकार का कदन्न।

मड़ैया—(स्त्री० हि०) छोटा मंडप। झोपड़ी।

मढ़—(पु० हि०) रहने की जगह। अड़ियल।

मढ़ना—(क्रि० हि०) बाजे के मुँह पर चमड़ा लगाना। थोपना। मढ़वाना=मढ़ने का काम दूसरे से कराना। मढ़ाई=मढ़ने की मज़दूरी। मढ़ने का काम। मढ़ाना=मढ़ने का काम दूसरे से कराना।

मढ़ी—(स्त्री० हि०) छोटा मठ। कुटी। झोंपड़ी।

मणि—(स्त्री० सं०) बहुमूल्य रत्न। जवाहिर। सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति। —माला=मणियों की माला।

मत—(पु० सं०) सम्मति। मज़हब। मतलब। (फ़ा०) निषेध वाचक शब्द। न। नहीं।

मतलब—(पु० अ०) तात्पर्य। स्वार्थ। अभिप्राय। आशय। अर्थ। वास्ता। मतलबी=स्वार्थी।

मतवाला—(वि० हि०) मस्त। नशे में चूर। पागल।

मतानुयायी—(पु० सं०) किसी के मत को माननेवाला। मतावलम्बी=किसी एक मत पर अमल करनेवाला।

मति—(स्त्री० सं०) बुद्धि। समझ।

मतीरा—(पु० मारवाड़ी) तरबूज।

मत्त—(वि० सं०) मस्त। मतवाला। पागल।

मत्सर—(पु० सं०) डाह। जलन।

मथना—(क्रि॰ हि॰) बिलोना। मथित=मथा हुआ।

मथानी—(स्त्री॰ हि॰) रई। बिलोनी। महनी।

मद—(पु॰ सं॰) हर्ष। मद्य। गर्व। अहंकार। (फ़ा॰) कार्य्य वा कार्यालय का विभाग। सीगा। सरिश्ता। खाता।

मदकची—(वि॰ हि॰) जो मदक पीता हो।

मदख़ूला—(स्त्री॰ अ॰) वह स्त्री जिसे कोई बिना विवाह किए ही रख ले वा घर में डाल ले। रखनी।

मदद—(स्त्री॰ अ॰) सहायता। —खर्च=पेशगी। —गार=सहायक।

मदरसा—(पु॰ अ॰) पाठशाला।

मदांध—(वि॰ सं॰) मदोन्मत्त।

मदाख़िलत—(स्त्री॰ अ॰) बाँध। रोक। रुकावट। अधिकार। —बेजा=(स्त्री॰ अ॰ फ़ा॰) अनधिकार प्रवेश। अनुचित हस्तक्षेप।

मधु—(पु॰ सं॰) शहद। —पर्क=दही, घी, जल, शहद और चीनी का मिश्रण। —प्रमेह=एक प्रकार का प्रमेह रोग। —मक्खी=शहद की मक्खी।

मधुर—(वि॰ सं॰) मीठा। —ता=मिठास।

मध्य—(पु॰ सं॰) बीच। —देश=भारतवर्ष के बीच का प्रदेश। मध्यम=बीच का। मध्यमा=पाँच उँगलियों में से बीच की उँगली। मध्य की। —वर्त्ती=जो मध्य में हो। बीच का। मध्यस्थ=पंच। मध्याह्न=दिन का मध्य भाग। दोपहर के बाद का समय।

मन—(पु॰ हि॰) अंतःकरण: चित्त। इच्छा। इरादा।

मनक़ूला—(वि॰ अ॰) अस्थिर। चल।

मनकूहा—(वि॰ अ॰) जिसके साथ निकाह हुआ हो। विवाहिता।

मनगढ़ंत—(स्त्री॰ हि॰) कपोल-कल्पित।

मनचला—(वि० हि०) हिम्मत-वाला । रसिक ।

मनचाहा—(वि० हि०) इच्छित ।

मनन—(पु० सं०) विचार । सोचना । —शील = विचार-शील ।

मनमाना—(वि० हि०) जिसे मन चाहे ।

मनमुटाव—(स्त्री० हि०) वैमनस्य ।

मनमोदक—(पु० हि०) असंभव कल्पना करना ।

मनवाँ—(पु० देश०) नरमा कपास ।

मनवाना—(क्रि० हि०) मानने के लिये प्रेरणा करना ।

मंशा—(स्त्री० अ०) इच्छा । मतलब ।

मनसब—(पु० अ०) पद । अधि-कार । —दार (फ़ा०)= ओहदेदार ।

मनशा—(स्त्री० फ़ा०) इच्छा । इरादा । (सं०) मनसा ।

मनसूबा—(पु० अ०) आयोजन । विचार ।

मनस्क—(पु० सं०) मन लगा हुआ ।

मनस्ताप—(पु० सं०) आंतरिक दुःख । पछतावा ।

मनस्वी—(वि० सं०) आत्मा-भिमानी । मौजी । मनस्विनी = तेजस्विनी स्त्री ।

मनहूस—(वि० अ०) अशुभ । बुरा । अप्रिय-दर्शन । सुस्त । आलसी ।

मना—(वि० अ०) निषिद्ध । वर्जित ।

मनाना—(क्रि० हि०) स्वीकार कराना । राज़ी करना । मनु-हार करना । प्रार्थना करना ।

मनी—(स्त्री० फ़ा०) वीर्य्य । (अं०) धन । —आर्डर = रुपये की हुंडी जो डाक द्वारा भेजी जाती है ।

मनीषा—(वि० सं०) पंडित । ज्ञानी । बुद्धिमान् । अक़्लमंद ।

मनुष्य—(पु० सं०) आदमी । नर । —ता = शील । सभ्यता । शिष्टता । तमीज़ । —त्व = आदमीयत ।

मनेजर—(पु॰ अं॰) प्रबंधकर्त्ता ।
मनोकामना—(स्त्री॰ सं॰) इच्छा । अभिलाषा ।
मनोगत—(वि॰ सं॰) जो मन में हो । दिली ।
मनोज्ञ—(वि॰ सं॰) मनोहर । सुंदर ।
मनोनीत—(वि॰ सं॰) पसंद । चुना हुआ ।
मनोयोग—(पु॰ सं॰) मन को एकाग्र करके किसी एक पदार्थ पर लगाना ।
मनोरंजन—(पु॰ सं॰) दिल-बहलाव ।
मनोरथ—(पु॰ सं॰) अभिलाषा । इच्छा ।
मनोवांछित—(वि॰ सं॰) इच्छित । मन माँगा ।
मनोविकार—(पु॰ सं॰) चित्त का विकार ।
मनोविज्ञान—(पु॰ सं॰) चित्त की वृत्तियों की मीमांसा करनेवाला शास्त्र ।
मनोवृत्ति—(स्त्री॰ सं॰) चित्त की वृत्ति ।
मनोवेग—(पु॰ सं॰) मन का विकार ।
मनोहर—(वि॰ सं॰) मन को हरनेवाला । सुंदर । —ता = सुंदरता । मनोहारी = मनोहर । सुंदर ।
मन्नत—(स्त्री॰ हि॰) मानता । मनौती ।
ममता—(स्त्री॰ सं॰) अपनापन । प्रेम । वह स्नेह, जो माता का पुत्र के साथ होता है । मोह ।
ममोरा—(पु॰ अ॰) हलदी की जाति के एक पौधे की जड़ ।
मयस्सर—(वि॰ अ॰) प्राप्त ।
मयूर—(पु॰ सं॰) मोर ।
मरकत—(पु॰ सं॰) पन्ना ।
मरकना—(क्रि॰ अनु॰) दबाव के नीचे पड़कर टूटना । मर-मर शब्द करना ।
मरकहा—(वि॰ हि॰) सींग से मारनेवाला [पशु] ।
मरग़ोल, मरग़ोला—(पु॰ अ॰) गाने में ली जानेवाली गिटकिरी । स्वर-कंपन (संगीत) ।

मरघट—(पु० सं०) श्मशान घाट। मसान।

मरज़—(पु० अ०) रोग। बीमारी। ख़राब आदत। कुटेव।

मरजिया—(वि० हि०) मरकर जीनेवाला। समुद्र में डूबकर उसके भीतर से मोती आदि निकालनेवाला। जिवकिया।

मरज़ी—(स्त्री० अ०) इच्छा। कामना। चाह। आज्ञा। ख़ुशी। प्रसन्नता। आज्ञा। स्वीकृति।

मरण—(पु० सं०) मृत्यु। मौत।

मरतबा—(पु० अ०) पद। पदवी। बार। दफ़ा।

मरदना—(क्रि० हि०) मसलना। मलना। ध्वंस करना। चूर्ण करना। माँड़ना। गूँधना।

मरदानगी—(स्त्री० फ़ा०) वीरता। शूरता। साहस।

मरदाना—(वि० फ़ा०) पुरुष संबंधी। पुरुषों का-सा।

मरदूद—(वि० अ०) तिरस्कृत। नीच।

मरना—(क्रि० हि०) मृत्यु को प्राप्त होना। बहुत दुःख सहना। मुरझाना। सूखना। डाह करना। हारना।

मरमर—(पु० हि०) एक प्रकार का दानेदार चिकना पत्थर।

मरमराना—(क्रि० अनु०) मरमर शब्द करना।

मरम्मत—(स्त्री० अ०) दुरुस्ती।

मरसा—(पु० हि०) एक प्रकार का साग।

मरसिया—(पु० अ०) शोक-सूचक कविता। (उर्दू) सियापा। मरण-शोक।

मरहटा—(पु० हि०) महाराष्ट्र देश का रहनेवाला। मरहठा।

मरहम—(पु० अ०) औषधियों का वह गाढ़ा और चिकना लेप जो घाव भरने के लिये लगाया जाता है।

मरहला—(पु० अ०) मंज़िल। पड़ाव। झोंपड़ी। दर्जा। मरातिब।

मरहून—(वि० अ०) जो रेहन

किया गया हो। गिरों रक्खा गया हो।

मरहूम—(वि० अ०) स्वर्गीय। मृत।

मरातिब—(पु० अ०) दरजा। पद। उत्तरोत्तर आनेवाली अवस्थाएँ। पृष्ठ। तह। मकान का खंड। तल्ला।

मराल—(पु० सं०) हंस।

मरिच—(पु० सं०) मिरिच।

मरी—(स्त्री० हि०) एक रोग। एक प्रकार का भूत।

मरीज़—(वि० अ०) रोगी। बीमार।

मरीना—(पु०) एक प्रकार का ऊनी कपड़ा।

मरुआ—(पु० हि०) एक पौधे का नाम।

मरुस्थल—(पु० सं०) बालू का मैदान। रेगिस्तान।

मरोड़—(पु० हि०) ऐंठन। पीड़ा। व्यथा। पेट ऐंठना। —ना ऐंठना। बल डालना। ऐंठकर नष्ट करना वा मार डालना। दुःख देना पीड़ा देना। मसलना। मरोड़ा=ऐंठन। उमेठ। पेट की वह पीड़ा जिसमें ऐंठन होती है।

मर्ज़ी—(स्त्री० अ०) इच्छा। चाह। आज्ञा। स्वीकृति।

मर्तबा—(पु० अ०) पद। पदवी। बार। दफ़ा।

मर्तबान—(पु० हि०) रोगनी बर्तन जिसमें अचार, मुरब्बा, घी आदि रखा जाता है। अमृतबान।

मर्त्यलोक—(पु० सं०) पृथ्वी। मनुष्य-लोक।

मर्द—(पु० फ़ा०) मनुष्य। पुरुष। साहसी पुरुष। वीर पुरुष। जवान। पति।

मर्दाना—(वि० फ़ा०) पुरुष संबंधी। मनुष्योचित। वीरोचित। वीर। साहसी पुरुष का-सा।

मर्दुम—(पु० फ़ा०) मनुष्य। —शुमारी=मनुष्य-गणना। आबादी। मर्दुमी=मरदानगी। वीरता। पुंस्त्व।

मर्द्दन—(पु० सं०) कुचलना । रौंदना । मलना । घस्सा । घोंटना । पीसना । नाशक । संहारकर्त्ता । मर्द्दित=मला या मसला हुआ । टुकडे-टुकड़े किया हुआ । नष्ट किया हुआ ।

मर्म—(पु० सं०) स्वरूप । रहस्य । भेद । संधि-स्थान । —ज्ञ= भेद की बात जाननेवाला । —पीड़ा=मन को पहुँचने-वाला क्लेश । आंतरिक दुःख । —भेदी=आंतरिक कष्ट देनेवाला ।

मर्यादा—(स्त्री० सं०) सीमा । हद । नियम । सदाचार । मान । गौरव ।

मल—(पु० सं०) मैल । कीट । दोष । विष्ठा । —द्वार= शरीर की वे इंद्रियाँ जिनसे मल निकलते हैं । पाखाने का स्थान । गुदा । —रोधक =जो मल को रोके । क़ब्ज़ि-यत करनेवाला ।

मलनी—(क्रि० हि०) मींजना । मसलना । घिसना । मालिश करना । ऐंठना । मरोड़ना । हाथ से बार-बार दबाना या रगड़ना ।

मलमल—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का पतला कपड़ा ।

मलमास—(पु० सं०) वह अमांत मास जिसमें संक्रांति पड़ती हो ।

मलहम—(पु० अ०) मरहम । घाव आदि पर लगाने का औषधियों का गाढ़ा चिकना लेप ।

मलाई—(स्त्री० देश०) दूध की साढ़ी । सार । तत्त्व । रस ।

मलामत—(स्त्री० अ०) लानत । फटकार । गंदगी । मलामती =दुतकारने या फटकारने योग्य । घृणित । जघन्य ।

मलाल—(पु० अ०) दुःख । रंज । उदासी ।

मलिक—(पु० अ०) राजा । अधीश्वर। मुसल्मानों की जाति का नाम । मलिका= रानी । अधीश्वरी ।

मलिन—(वि० सं०) मैला। गँदला। दूषित। खराब। बदरंग। फीका। उदासीन। —ता=मैलापन।

मलीदा—(पु० फ़ा०) चूरमा। एक प्रकार का ऊनी वस्त्र।

मलेरिया—(पु० अं०) एक प्रकार का ज्वर।

मल्ल—(पु० सं०) पहलवान। —युद्ध=कुश्ती। बाहुयुद्ध। —विद्या=कुश्ती की विद्या।

मल्लाह—(पु० अ०) धीवर। माझी। मल्लाही का काम या पद।

मवक्किल—(पु० अ०) अपनी ओर से वकील या प्रतिनिधि नियत करनेवाला पुरुष। असामी।

मवर्रिख़ा—(वि० अ०) लिखित।

मवाजिब—(पु० अ०) नियमित मात्रा में नियमित समय पर मिलनेवाला पदार्थ।

मवाज़ी—(वि० अ०) अनुमान किया हुआ।

मवाद—(पु० अ०) पीब।

मवास—(पु० सं०) रक्षा का स्थान। शरण। किला।

मवेशी—(पु० अ०) पशु। ढोर।

मशक़्क़त—(स्त्री० अ०) मेहनत। परिश्रम।

मशगूल—(वि० अ०) काम में लगा हुआ। लीन।

मशरू—(पु० अ०) एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

मशविरा—(पु० अ०) सलाह। परामर्श।

मशहूर—(वि० अ०) प्रख्यात। प्रसिद्ध।

मसान—(पु० हि०) मरघट।

मशाल—(पु० अ०) जलनेवाली एक प्रकार की मोटी बत्ती। —ची=मशाल दिखलानेवाला।

मशीख़त—(स्त्री० अ०) शेखी। घमंड।

मशीन—(स्त्री० अं०) यंत्र। कल।

मशीर—(पु० अ०) सलाह देने वाला। मंत्री।

मश्क—(पु० अ०) अभ्यास। मश्शाक=अभ्यस्त।

मसक—(पु० फ़ा०) मशक।

मसकना—(क्रि० स० अनु०) किसी चीज़ को इस प्रकार दबाना कि वह बीच में से फट जाय या उसमें दरार पड़ जाय।

मसका—(पु० फ़ा०) मक्खन। नैनूँ। ताज़ा निकला हुआ घी। दही का पानी।

मसकीन—(वि० अ०) ग़रीब। दीन। साधु। संत। दरिद्र। कङ्गाल। भोला। सुशील।

मसख़रा—(पु० अ०) हँसोड़। विदूषक। नक्क़ाल। —पन = दिल्लगी। हँसी। मज़ाक। मसख़री = दिल्लगी। हँसी।

मसजिद—(स्त्री० फ़ा०) मुसलमानों का नमाज़ पढ़ने का स्थान।

मसनद—(स्त्री० अ०) बड़ा तकिया। अमीरों के बैठने की गद्दी। —नशीन = मसनद पर बैठने वाला। अमीर।

मसरफ़—(पु० अ०) काम में आना। उपयोग।

मसरूक़ा—(वि० अ०) चुराया हुआ।

मसरूफ़—(वि० अ०) काम करता हुआ।

मसल—(स्त्री० अ०) कहावत।

मसलन्—(वि० अ०) उदाहरण के रूप में। यथा।

मसलना—(क्रि० स० हि०) मलना। आटा गूँधना।

मसलहत—(स्त्री० अ०) गुप्त युक्ति।

मसला—(पु० अ०) कहावत। लोकोक्ति।

मसविदा—(पु० अ०) खर्रा। मसौदा। युक्ति। उपाय। तरकीब।

मसहरी—(स्त्री० हि०) पलंग के ऊपर और चारोंओर लटकाया जानेवाला वह जालीदार कपड़ा जिसका उपयोग मच्छड़ों आदि से बचने के लिये होता है।

मसान—(पु० हि०) मरघट। श्मशान।

मसाला—(पु० फ़ा०) साधन। मिर्च, धनिया आदि जो तरकारी में पड़ते हैं। —दार = जिसमें किसी प्रकार का मसाला लगा या मिला हो।

मसि—(स्त्री० सं०) लिखने की स्याही। रोशनाई।

मसीह—(पु० अ०) ईसाइयों के धर्मगुरु हजरत ईसा का एक नाम।

मसूड़ा—(पु० हि०) मुँह के अंदर दाँतों की पंक्ति के नीचे या ऊपर का मांस जिस पर दाँत जमे होते हैं।

मसूर—(पु० सं०) एक अन्न। मसुरी।

मसूरी—(स्त्री० सं०) माता। चेचक। मसूर।

मसोसना—(क्रि० हि०) कुढ़ना।

मसौदा—(पु० अ०) मसविदा। खर्रा। उपाय। तरकीब। —बाज़ = अच्छी युक्ति सोचनेवाला। चालाक।

मस्त—(वि० फ़ा०) मनचला। मदोन्मत्त। सदा प्रसन्न और निश्चिन्त रहनेवाला। यौवन-मद से भरा हुआ। मदपूर्ण। मग्न। आनन्दित। घमंडी। मस्ताना = मस्तों का सा। मस्त। मत्त। मस्ती = मतवालापन। भोग की प्रबल कामना।

मस्तक—(पु० सं०) सिर।

मस्तिष्क—(पु० सं०) मेंज़ा। मग़ज़। दिमाग़।

मस्तूल—(पु० पुर्त०) नावों पर गाड़ा जानेवाला वह बड़ा लट्ठा या शहतीर जिसमें पाल बाँधते हैं।

महँगा—(वि० हि०) अधिक मूल्य पर बिकनेवाला। महँगी = महँगापन। महँगे होने की अवस्था। कहत।

महंत—(पु० हि०) साधुओं का मुखिया। (वि०) बड़ा। श्रेष्ठ। प्रधान।

महक—(स्त्री० हि०) गंध। बास। बू। —दार = (वि० हि०) महकनेवाला। गंध देनेवाला। —ना = गंध देना। बास देना।

महकमा—(पु० अ०) सीग़ा। सरिश्ता।

महज़—(वि० अ०) शुद्ध। ख़ालिस। केवल। सिर्फ़।

महत्—(वि० सं०) महान्। बड़ा।

महता—(पु० गु०) सरदार। गाँव का मुखिया। लेखक। मुंशी।

महताब—(स्त्री० फ़ा०) चाँदनी। एक प्रकार की आतिशबाज़ी। चाँद।

महत्तर—(वि० सं०) अधिक बड़ा। शूद्र।

महत्व—(पु० सं०) बड़प्पन। उत्तमता।

महदूद—(वि० अ०) घेरा हुआ। सीमा-बद्ध।

महफ़िल—(स्त्री० अ०) मजलिस। सभा। नाच-गाना होने का स्थान।

महफ़ूज़—(वि० अ०) सुरक्षित। रक्षा किया हुआ।

महबूब—(पु० अ०) जिससे प्रेम किया जाय। महबूबा=प्रेमिका। माशूका।

महरबान—(पु० अ०) कृपालु। दयालु। महरबानी=कृपा।

महरम—(पु० अ०) भेद का जाननेवाला। (स्त्री०) अंगिया की कटोरी। अँगिया।

महरा—(पु० हि०) कहार।

महरूम—(वि० अ०) वंचित।

महर्षि—(पु० सं०) बहुत बड़ा और श्रेष्ठ ऋषि।

महल—(पु० अ०) प्रासाद। रनिवास। अंतःपुर। बड़ा कमरा।

महल्ला—(पु० अ०) शहर का कोई विभाग जिसमें बहुत-से मकान हों।

महसिल—(पु० अ०) उगाहने वाला। तहसील वसूल करने वाला।

महसूल—(पु० अ०) कर। किराया। लगान।

महा—(वि० सं०) अत्यंत। बहुत अधिक। बहुत बड़ा। —काय=बड़े शरीरवाला।

—काल=यमराज। मृत्यु। —काव्य=काव्य का बड़ा ग्रंथ। —जन=कोठीवाल। बनिया। भलामानुस। —जनी=रुपये के लेन-देन का व्यवसाय। एक प्रकार की लिपि। —द्वीप=पृथ्वी का वह बड़ा भाग जो चारोंओर प्राकृतिक सीमाओं से घिरा हुआ हो। महान्=बहुत बड़ा। विशाल। —प्रभु=एक आदर-सूचक पदवी। राजा। संन्यासी। —प्रसाद=ईश्वर या देवताओं का प्रसाद। जगन्नाथजी का चढ़ा हुआ भात। अखाद्य पदार्थ। —प्रस्थान=शरीर त्यागने की कामना से हिमालय की ओर जाना। मरण। देहांत। —ब्राह्मण=वह ब्राह्मण जो मृतक-कृत्य का दान लेता हो। निकृष्ट ब्राह्मण। —भाग=भाग्यवान्। क़िस्मतवर। —भारत=कोई बड़ा युद्ध या लड़ाई-झगड़ा। कोई बहुत बड़ा ग्रंथ। कौरव और पांडवों का प्रसिद्ध युद्ध जिसका वर्णन उक्त महाकाव्य में है। —भूत=पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पंच-तत्व। भूत। प्रेत। महा-मात्य=राजा का प्रधान या सबसे बड़ा अमात्य। महा मंत्री। —माया=प्रकृति। बुद्ध की माता का नाम। मायावी। —मारी=वबा। मरी। —यज्ञ=हिंदू-धर्म के अनुसार नित्य किये जानेवाले कर्म। —यात्रा=मृत्यु। मौत। —राज=बहुत बड़ा राजा। ब्राह्मण, गुरु और किसी के लिये संबोधन। एक उपाधि। —राजाधिराज=बहुत बड़ा राजा। एक प्रकार की पदवी। —राज्ञी=महा-रानी। सम्राज्ञी। —राणा=मेवाड़, चित्तौर और उदयपुर के राजाओं की उपाधि। —वीर=हनुमानजी। बहुत बड़ा वीर। महात्मा=महानु-

भाव बहुत बड़ा साधु, संन्यासी या विरक्त।

महारत—(स्त्री० फ़ा०) अभ्यास। मश्क।

महाल—(पु० अ०) मुहल्ला। भाग। हिस्सा।

महावत—(पु० हि०) फीलवान। हाथी हाँकनेवाला।

महावर—(पु० हि०) एक प्रकार का लाल रंग।

महावरा—(अ०) आदत। बोल-चाल के निश्चित वाक्य या शब्द। महावरेदार=जिसमें महावरा हो।

महिला—(स्त्री० सं०) स्त्री।

महीन—(वि० हि०) पतला। कोमल।

महीना—(पु० हि०) काल का एक परिमाण जो तीस दिन का होता है। मासिक वेतन। स्त्रियों का मासिक धर्म।

महुअर—(स्त्री० हि०) वह भेड़ जिसका ऊन कालापन लिए लाल रंग का होता है। वह रोटी जो महुआ मिलाकर पकाई गई हो। एक बाजा।

महुआ—(पु० हि०) एक वृक्ष।

महोगनी—(पु० अ०) एक पेड़।

महोत्सव—(पु० सं०) बड़ा उत्सव।

महोदय—(पु० सं०) एक आदर-सूचक शब्द। महाशय। महोदया=स्त्रियों के लिये आदर-सूचक शब्द।

महौषध—(पु० सं०) कारगर दवा।

मांगलिक—(वि० सं०) शुभ।

माँजना—(क्रि० हि०) ज़ोर से मलकर मैल छुड़ाना। माँझा देना। अभ्यास करना।

माँझा—(पु० हि०) नदी में का टापू। वृक्ष का तना।

माँझी—(पु० हि०) केवट। मल्लाह। बलवान्।

माँड़—(पु० हि०) पकाये हुये चावलों में से निकला हुआ लसदार पानी।

माँड़ना—(क्रि० हि०) मलना। सानना। गूँधना। मचाना।

माँड़ा—(पु० हि०) आँख का एक रोग।

माँड़ी—(स्त्री० हि०) भात का पसावन। माँड़। कपड़े या सूत के ऊपर चढ़ाया जानेवाला कलफ़।

माँद—(वि० हि०) गुफा। जंगली जानवरों का बिल।

माँदगी—(स्त्री० फ़ा०) बीमारी। रोग। थकावट।

माँदा—(वि० फ़ा०) थका हुआ। रोगी। बीमार।

मांस—(पु० सं०) गोश्त। —ख़ोर=मांस खाने वाला। मांसाहारी। —पिंड=शरीर। देह। —भक्षी=मांस खाने वाला। —भोजी=मांस खाने वाला। मांसल=मांस से भरा हुआ। मोटा ताज़ा। बलवान्। मांसाहारी=मांस खानेवाला।

मा—(स्त्री० सं०) माता।

माक़ूल—(वि० अ०) उचित। ठीक। योग्य। पूरा। बढ़िया। जो निरुत्तर हो गया हो।

माख़ालिया—(फ़ा०) पागलपन। सनक।

मागधी—(स्त्री० सं०) मगध देश की प्राचीन भाषा।

माघ—(पु० सं०) हिन्दुओं का एक महीना।

माजरा—(अ०) घटना। वारदात।

माजिद—(अ०) गुरुजन। बुजुर्ग।

माजून—(स्त्री० अ०) वह बरफ़ी या अवलेह जिसमें भाँग मिली हो।

माजूफल—(पु० फ़ा०) माजू नामक झाड़ी का गोंद।

माटा—(पु० हि०) लाल च्यूँटा।

माणिक्य—(पु० सं०) लाल रंग का एक रत्न।

मात—(स्त्री० अ०) पराजय। हार।

मातदिल—(वि० अ०) न बहुत ठंढा न बहुत गरम।

मातबर—(वि० अ०) विश्वास करने योग्य। मातबरी=विश्वास।

मातम—(पु० अ०) शोक। —पुर्सी=मृतक के सम्बन्धियों को सान्त्वना देना। मातमी=शोक-सूचक।

मातहत—(पु० अ०) अधीनस्थ कर्मचारी। मातहती=अधीनता।

माता—(स्त्री० हि०) मा। कोई पूज्य वा आदरणीय स्त्री। शीतला।

मातृपूजा—(स्त्री० हि०) विवाह की एक रीति।

मातृभाषा—(स्त्री० सं०) वह भाषा जो बालक माता की गोद में रहते हुए सीखता है।

मात्र—(अव्य० सं०) केवल। सिर्फ़।

मात्रा—(स्त्री० सं०) परिमाण। एक बार खाने योग्य औषध। मात्रिक=मात्रा सम्बन्धी।

मात्सर्य—(पु० सं०) ईर्ष्या। डाह।

माथुर—(पु० सं०) मथुरा का निवासी। ब्राह्मणों की एक जाति। कायस्थों की एक जाति। वैश्यों की एक जाति।

मादक—(वि० सं०) जिससे नशा हो। नशीला। —ता=नशीलापन।

मादर—(स्त्री० फ़ा०) माँ। —ज़ाद=बिलकुल नंगा।

मादा—(स्त्री० फ़ा०) स्त्री जाति का प्राणी।

माद्दा—(पु० अ०) वह मूल तत्त्व जिससे कोई पदार्थ बना हो। शब्द का मूल। योग्यता। पीब।

माधुरी—(स्त्री० सं०) मिठास। माधुर्य=मधुरता। काव्य का एक गुण।

माध्यम—(वि० सं०) कार्यसिद्धि का उपाय या साधन। (अं०) मीडियम।

मान—(पु० सं०) परिमाण। मिक़दार। पैमाना। अहङ्कार। इज़्ज़त।

मानना—(क्रि० हि०) स्वीकार करना। अनुकूल होना। दृढ़ समझना। मन्नत करना।

माननीय=पूजनीय। आदरणीय।

मानव—(पु० सं०) आदमी। —शास्त्र=वह शास्त्र जिसमें मानव-जाति की उत्पत्ति और विकास आदि का विवेचन होता है। मानवी=स्त्री। नारी। मानव सम्बन्धी।

मानस—(पु०सं०) मन। मनुष्य। —शास्त्र = मनोविज्ञान। मानसिक=मन सम्बन्धी।

मानसरोवर—(पु० हि०) हिमालय की एक प्रसिद्ध बड़ी झील।

माना—(फ़ा०) शायद। उदाहरण। होनेवाला।

मानिक—(पु० हि०) एक मणि का नाम।

मानिनी—(वि० सं०) गर्ववती। रुष्टा।

मानी—(वि० हि०) घमंडी। (अ०) अर्थ। मतलब। तत्त्व। रहस्य। कारण।

मानुषी—(स्त्री० सं०) स्त्री। औरत। मनुष्य सम्बन्धी। मनुष्य का।

माने—(पु० अ०) अर्थ। मतलब।

मानों—(अव्य० हि०) जैसे। गोया।

मान्य—(वि० सं०) आदर के योग्य।

माप—(स्त्री० हि०) नाप। परिमाण। मापना=नापना।

माफ़—(वि० अ०) क्षमा।

माफ़क़त—(स्त्री० अ०) अनुकूलता। मेल। मैत्री।

माफ़िक़—(वि० अ०) अनुकूल। अनुसार।

माफ़ी—(स्त्री० अ०) क्षमा। वह भूमि जो किसी को बिना लगान के दी गई हो।

मामलत—(स्त्री० अ०) मामिला। विवादास्पद विषय।

मामला—(पु० अ०) काम। पारस्परिक व्यवहार। झगड़ा। मुकदमा। प्रधान विषय।

मामा—(पु० अनु०) माता का भाई।

मामी—(स्त्री० फ़ा०) मामा की स्त्री ।

मामूँ—(स्त्री० अनु०) माता का भाई । मामा ।

मामूल—(पु० अ०) टेव । लत । रीति । रवाज ।

मामूली—(वि० अ०) नियमित । नियत । साधारण ।

मायका—(पु० हि०) पीहर । नैहर ।

मायल—(वि० फ़ा०) झुका हुआ । मिला हुआ ।

माया—(स्त्री सं०) धन । अविद्या । भ्रम । छल । कपट । जादू । —मोह = छल । प्रलोभन । — वादी = ईश्वर के सिवा प्रत्येक वस्तु को अनित्य माननेवाला । —वी = धोखेबाज़ । फ़रेबी ।

मायूस—(वि० फ़ा०) निराश । नाउम्मेद ।

मार—(स्त्री० हि०) चोट । निशाना । मार-पीट । युद्ध । काली मिट्टी की ज़मीन । (फ़ा०)साँप । अत्याचारी । —काट = युद्ध । लड़ाई । —ना = बध करना । सताना । फेंकना । छिपाना । पीटना । नष्ट । करना । चलाना । मारक = मार डालने वाला । किसी के प्रभाव आदि को नष्ट करनेवाला ।

मारका—(पु० अं०) मार्क । चिह्न । निशान । (पु० अ०) युद्ध । लड़ाई । बहुत बड़ी या महत्वपूर्ण घटना ।

मारखोर—(पु० फ़ा०) एक प्रकार की बकरी वा भेड़ ।

मारफ़त—(अव्य० अ०) द्वारा । ज़रिये से ।

मारू—(पु० हि०) एक राग ।

मारे—(अव्य० हि०) वजह से । कारण से ।

मार्क—(पु० अं०) छाप । मार्का = छाप ।

मार्केट—(पु० अं०) बाज़ार । हाट ।

मार्ग—(पु० सं०) रास्ता ।

मार्च—(पु० अं०) अंगरेज़ी का

तीसरा मास। गमन। गति। सेना का कूच।

मार्जन—(पु० सं०) सफ़ाई। मार्जनीय=मार्जन करने योग्य।

माल—(पु० फ़ा०) असबाब। सामान। —खाना=भंडार। —गाड़ी=रेल में वह गाड़ी जिसमें केवल माल आता-जाता है। —गुज़ार=माल-गुज़ारी देनेवाला। —गुज़ारी =ज़मीन का कर। लगान। —गोदाम=वह स्थान जहाँ माल रक्खा जाता है। —मताअ=असबाब और रुपया। —दार=धनी। बहुत धनी। भरा हुआ। लबालब।

मालटा—(स्त्री० अं०) एक प्रकार की नारंगी।

मालती—(स्त्री० सं०) एक प्रकार की लता का नाम।

मालवीय—(वि० सं०) मालवे का। मालवे का रहनेवाला।

माला—(स्त्री० सं०) पंक्ति। अवली। फूलों का हार। झुंड। —माल=(अ०)

मालिक—(पु० अ०) ईश्वर। पति। शौहर। मालिकाना= मिलकियत। स्वामित्व। मालिक की तरह। मालिकी= मालिक का स्वत्व।

मालिनी—(स्त्री० सं०) मालिन।

मालिन्य—(पु० सं०) मैला-पन। अँधेरा।

मालियत—(स्त्री० अ०) क़ीमत। धन। क़ीमती चीज़।

माली—(पु० हि०) बाग को सींचने और पौधों को ठीक स्थान पर लगानेवाला पुरुष। माल के संबंध का। धन संबंधी।

मालीदा—(पु० फ़ा०) मलीदा। चूरमा। एक प्रकार का ऊनी कपड़ा।

मालूम—(वि० अ०) जाना हुआ। ज्ञात।

माश—(अ०) खड़ी मूँग।

माशा—(पु० हि०) एक प्रकार का बाट वा मान।

माशूक़—(पु० अ०) प्रेम-पात्र। माशूक़ा=प्रेमिका।

मास—(पु० सं०) महीना। मासिक=महीने का।

मासिवा—(अ०) अतिरिक्त। अलावा। सिवा।

मास्टर—(पु० अं०) स्वामी। गुरु। शिक्षक। किसी विषय में परम प्रवीण। मास्टरी=मास्टर का काम। पढ़ाने का काम।

माह—(पु० हिं०) माघ। (फ़ा०) मास। महीना।—वार=प्रतिमास। मासिक। महीने का वेतन।—वारी =हर महीने का। मासिक। माहियाना=माहवार। मासिक वेतन।

माहताव—(पु० फ़ा) चंद्रमा। एक प्रकार की आतिशबाज़ी।

माहात्म्य—(पु० सं०) महिमा। गौरव। आदर। मान।

माहियत—(स्त्री० अ०) भेद। प्रकृति। विवरण।

माहिर—(वि० अ०) ज्ञाता। जानकार।

माही—(फ़ा०) मछली।—गीर= मछली पकड़नेवाला। मछुवा।

माही मरातिब—(पु० फ़ा०) राजाओं के आगे हाथी पर चलनेवाले सात झंडे।

माहुर—(पु० हिं०) विष। ज़हर।

माहूँ—(स्त्री० देश०) एक छोटा कीड़ा।

मिंड़ाई—(स्त्री० हिं०) मींजना। मींडने की मज़दूरी।

मिक़रअ़—(स्त्री० फ़ा०) मलद्वार। गदा।

मिक़दार—(स्त्री० फ़ा०) मात्रा। परिमाण।

मिक़नातीस—(पु० फ़ा०) चुंबक पत्थर।

मिचना—(क्रि० हिं०) आँखों का बंद होना।

मिचलाना—(क्रि० हिं०) उबकाई आना।

मिजराव—(स्त्री० अ०) सितार बजाने का छल्ला।

मिज़ाज—(पु० अ०) तासीर।

स्वभाव। प्रकृति। तबीयत। दिल। घमंड। —आली=एक वाक्यांश जिसका व्यवहार किसी का शारीरिक कुशल-मंगल पूछने के समय होता है। —दार=घमंडी। —पुरसी=तबीयत का हाल पूछना। —शरीफ़=आप अच्छे तो हैं। मिज़ाज-आली। मिज़ाजी=घमंडी।

मिटना—(क्रि० हि०) नष्ट हो जाना। न रह जाना। रद्द होना। मिटाना=नष्ट करना। न रहने देना। खराब करना।

मिट्टी—(स्त्री० हि०) भूमि। धूल। भस्म। लाश।

मिट्ठी—(स्त्री० हि०) चुम्बन। चूमा।

मिट्ठू—(पु० हि०) मीठा बोलने-वाला। तोता।

मिठबोला—(पु० हि०) मन में कपट रखकर ऊपर से मीठी बातें करनेवाला।

मिठाई—(स्त्री० हि०) मिठास। कोई मीठी खाने की चीज़। मिठास=मीठापन।

मिडिल—(वि० अं०) मध्य। बीच। शिक्षाक्रम में एक कक्षा। मिडिलची=मिडिल पास। —स्कूल=वह स्कूल जिसमें मिडिल तक पढ़ाई होती हो।

मित—(वि० सं०) जो सीमा के अंदर हो। परिमित। थोड़ा। कम। —भाषी=थोड़ा बोलनेवाला। —व्यय=कम खर्च करना। किफ़ायत। —व्ययता=कम खर्च करने का भाव। —व्ययी=किफायत करनेवाला। मिता-हारी=आहार का संयमी।

मिति—(स्त्री० सं०) मान। परिमाण। सीमा। हद। काल की अवधि। मिती=देशी महीने की तिथि या तारीख। दिन। दिवस।

मित्र—(पु० सं०) सखा। दोस्त। —ता=दोस्ती।

मिथुन—(पु० सं०) मर्द और

औरत का जोड़ा। संयोग। समागम। एक राशि का नाम। ज्योतिष में एक लग्न।

मिथ्या—(वि० सं०) असत्य। झूठ। मिथ्याचार=कपटपूर्ण आचरण। मिथ्याभियोग= किसी पर झूठ-मूठ अभियोग लगाना। —वादी=झूठा। असत्यवादी। मिथ्याहार= प्रकृति के विरुद्ध भोजन करना।

मिनमिनाना—(क्रि० अनु०) मिन् मिन् शब्द करना। नाक से बोलना। बहुत सुस्ती से काम करना।

मिनवाल—(पु० अ०) करघे का बेलन।

मिनहा—(फ़ा०) मुजरा किया हुआ।

मिन्जानिब—(क्रि० अ०) ओर से। तरफ़ से।

मिन्जुमला—(फ़ा०) सब में से। कुल में से।

मिन्नत—(स्त्री० अ०) प्रार्थना। निवेदन। दीनता।

मिमियाना—(क्रि० अनु०) भेड़ या बकरी का बोलना।

मियाँ—(पु० फ़ा०) स्वामी। मालिक। पति। महाशय। शिक्षक। पहाड़ी राजपूतों की एक उपाधि। मुसलमान। —मिट्ठू = मीठी बोली बोलने वाला। मधुर-भाषी। तोता। मूर्ख। बेवकूफ़।

मियान—(स्त्री० फ़ा०) तलवार, कटार आदि का फल रखने का खाना। शरीर। (पु० फ़ा०) बीच का हिस्सा। —तह= वह साधारण कपड़ा जो किसी अच्छे कपड़े के नीचे उसकी रक्षा आदि के लिये दिया जाता है। मियाना =मध्यम आकार का। एक प्रकार की पालकी। मियानी =पायजामे में वह कपड़ा जो दोनों पायँचों के बीच में पड़ता है।

मिरगी—(स्त्री० हि०) एक मानसिक रोग। अपस्मार रोग।

मिरज़ई—(स्त्री० फ़ा०) एक प्रकार का पहनने का कपड़ा।

मिरज़ा—(पु० फ़ा०) मीर या अमीर का लड़का। राज-

कुमार । मुग़लों को एक उपाधि । कामला—मिज़ाज =नाज़ुक दिमाग़ का ।

मिरदंगी—(पु० हि०) वह जो मृदंग बजाता हो ।

मिर्च—(स्त्री० हि०) मरिच ।

मिलन—(पु० सं०) मिलाप । भेंट । मिलावट । —सार= सबसे हेलमेल रखनेवाला । —सारी=सबसे हेलमेल रखना । सद्व्यवहार । मिलना=सम्मिलित होना । बीच में का अंतर मिटना । सटना । भेंटना । मुलाक़ात होना । लाभ होना । बजने से पहले बाजों का सुर या आवाज़ ठीक होना । मिलनी=विवाह की एक रस्म । मिलन । मिलाई=मिलाने की क्रिया या भाव । मिलाने की मज- दूरी । विवाह की मिलनी नामक रस्म । मिलनी । मिलान=तुलना । ठीक होने की जाँच । मिलाना=मिश्रण करना । एक करना । सटाना । भेंट या परिचय कराना । सुलह या संधि कराना । साँटना । बजाने से पहले बाजों का सुर या आवाज़ ठीक करना । मिलाप=मिलने की क्रिया या भाव । मित्रता । मुला- क़ात । संभोग । मिलाई ।

मिलाव—(पु० हि०) मिलावट । मिलाप । —ट=खोट । मिलौनी=मिलाई । मिला- वट । मिलाने के बदले में मिला हुआ धन ।

मिल्क—(पु० अ०) जमींदारी । जागीर । मिल्कियत=जमीं- दारी । जागीर । जायदाद । जिस पर मालिकों का सा हक़ हो । मिल्की=जमींदार । जागीरदार ।

मिल्लत—(स्त्री० हि०) मेल- जोल । घनिष्ठता । मिलन- सारी ।

मिशन—(पु० अं०) विशिष्ट कार्य के लिये भेजे हुए आदमी । ईसाइयों की संस्था । राज- नीतिक उद्देश्य से भेजा हुआ

दूत-मंडल । —री=वह ईसाई पादरी जो किसी मिशन का सदस्य होता है। पादरी।

मिश्र—(वि० सं०) मिला या मिलाया हुआ। मिश्रित। ब्राह्मणों के एक वर्ग की पदवी। मिश्रण=मेल। मिलावट। जोड़ना। मिश्रित=एक में मिलाया हुआ। मिश्री=जमाई हुई दानेदार चीनी।

मिष्ट—(पु० सं०) मीठा रस। मीठा। —भाषी = मीठा बोलनेवाला। मिष्टान्न= मिठाई।

मिस—(पु० हि०) बहाना। हीला। नक़ल। (फ़ा०) (अं०) कुँआरी लड़की। कुमारी।

मिसरा—(फ़ा०) उर्दू या फ़ारसी की कविता का एक चरण। पद। —तरह=समस्या।

मिसरी—(स्त्री० मिस्र देश से) मिस्र देश का निवासी या भाषा। जमाई हुई दानेदार चीनी।

मिसरोटी—(अ०) मिस्से आटे की बनी हुई रोटी। कंडे आदि पर सेंककर बनाई हुई बाटी। अँगाकड़ी।

मिसिल—(स्त्री० अ०) फ़ाइल।

मिसाल—(अ०) उपमा। उदाहरण। नज़ीर। कहावत।

मिस्कला—(पु० अ०) सिकली करनेवालों का एक औज़ार।

मिस्कीन—(अ०) दीन। बेचारा दरिद्र। गरीब। कंगाल। सीधा-सादा। मिस्कीन सूरत =जो देखने में सीधा-सादा या दीन, पर वास्तव में दुष्ट हो। मिस्कीनी=दीनता। ग़रीबी। सुशीलता।

मिस्कोट—(अं०) भोजन। एक साथ बैठकर खाने पीने वालों का समूह। गुप्त परामर्श।

मिस्टर—(अं०) महाशय। महोदय।

मिस्तरी—(पु० अं० मास्टर) चतुर शिल्पकार। —खाना=

जहाँ लोहार, बढ़ई काम करते हैं।

मिस्र—(पु० अ०) एक प्रसिद्ध देश।

मिस्ल—(वि० अ०) समान। तुल्य।

मिस्सी—(अ०) एक प्रकार का मंजन।

मींगी—(स्त्री० हि०) बीज के अंदर का गूदा। गिरी।

मींड़—(स्त्री० हि०) संगीत में एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते समय मध्य का अंश इस सुंदरता से कहना जिसमें दोनों स्वरों के बीच का संबन्ध स्पष्ट हो जाय।

मीआद—(स्त्री० अ०) अवधि। क़ैद की अवधि।

मीआदी—(वि० हि०) जिसके लिये कोई समय या अवधि नियत हो। जो कारागार में रह चुका हो। —हुंडी=वह हुंडी जिसका रुपया तुरंत न देना पड़े। —बुख़ार=वह बुख़ार जो निर्धारित समय के पहले न उतरे।

मीचना—(क्रि० हि०) बन्द करना। मूँदना।

मीज़ान—(स्त्री० अ०) जोड़।

मीटिंग—(स्त्री० अं०) अधिवेशन। सभा।

मीठा—(वि० हि०) चीनी या शहद आदि के स्वादवाला। मधुर। ज़ायक़ेदार। हलका। प्रिय। रुचिकर। गुड़। मिठाई।

मीठीछुरी—(स्त्री० हि०) विश्वासघातक। कपटी। कुटिल।

मीठीमार—(स्त्री० हि०) भीतरी मार।

मीना—(स्त्री० सं) राजपूताने की एक प्रसिद्ध योद्धा जाति। रंग बिरंगा शीशा। कीमिया। सोने, चाँदी आदि पर किया जानेवाला रंग बिरंग का काम। शराब रखने की सुराही। —कार=वह जो चाँदी, सोने आदि पर रंगीन काम बनाता हो। मीना करने

वाला। —कारी=सोने या चाँदी पर होनेवाला रंगीन काम। किसी काम में निकाली या की हुई बहुत बड़ी बारीकी।

मीनार—(फ़ा०) स्तंभ। लाट। मसजिदों आदि के कोनों पर बहुत ऊँची उठी हुई गोल इमारत जो खंभे के रूप में होती है।

मीमांसक—(पु० सं०) मीमांसा करनेवाला। मींमासा=तत्त्व का विचार, निर्णय या विवेचन। मीमांसित=जिसकी मीमांसा की जा चुकी हो।

मीर—(पु० फ़ा०) सरदार। प्रधान। धार्म्मिक आचार्य। सैयद जाति की एक उपाधि। तास में सबसे बड़ा पत्ता। —अर्ज़=वह कर्म्मचारी जो बादशाहों की सेवा में लोगों के निवेदनपत्र आदि उपस्थित करे। —आतिश=वह कर्मचारी जिसकी अधीनता में तोपख़ाना हो। मीरज़ा=अमीर या सरदार का लड़का। मुगल शाहज़ादों की एक उपाधि। मीरज़ाई=मीरजा का पद या उपाधि। अमीरी। अमीरों या शाहज़ादों का सा ऊँचा दिमाग़ होना। अभिमान। मिरज़ई। —फ़र्श=वे भारी पत्थर जो बड़े बड़े फ़र्शों या चाँदनियों आदि के कोनों पर इसलिये रखे जाते हैं जिसमें वे हवा से उड़ न जायँ। —बख्शी=मुसलमानी राजत्व काल का एक प्रधान कर्म्मचारी। —बहर=मुसलमानी राजत्वकाल में जल-सेना का प्रधान अधिकारी। —बार=प्राचीन मुसलमानी राजत्वकाल का एक प्रधान कर्मचारी। —मंज़िल=वह कर्मचारी जो बादशाहों या लश्कर आदि के पहुँचने से पहले मंज़िल पर पहुँचकर प्रबंध करे। —मजलिस = सभापति। —महल्ला=किसी महल्ले का प्रधान या सरदार। —मुंशी

=प्रधान मुंशी। —शिकार = शिकार का प्रबंध करनेवाला प्रधान कर्मचारी। —सामान =पाकशाला का प्रधान प्रबंधक। —हाज=हाजियों का सरदार।

मीरास—(स्त्री० अ०) बपौती। मीरासी = एक प्रकार के मुसलमान।

मुँगरा—(पु० हि०) पीटने-ठोंकने का एक औज़ार।

मुँगौरी—(स्त्री० हि०) मूँग की बनी हुई बरी।

मुंडन—(पु० सं०) सिर को उस्तरे से मूँडने की क्रिया। एक संस्कार।

मुँड़ना—(क्रि० हि०) मूँड़ा जाना। सिर के बालों की सफ़ाई होना। लुटना। ठगा जाना। हानि उठाना। मुँड़ाई = मूँड़ने की मज़दूरी।

मुंडा—(पु० हि०) वह जिसके सिर के बाल न हों या मुँड़े हुए हों। वह जो सिर मुँड़ा-कर किसी साधू या जोगी का शिष्य हो गया हो। वह पशु जिसके सींग न हों। एक प्रकार का जूता। मुँडी=वह स्त्री जिसका सिर मुंड़ा हो। विधवा। एक प्रकार की जूती।

मुंडित—(वि० अ०) मुँड़ा हुआ।

मुँड़ेर—(स्त्री० हि०) मुँडेरा। मकान की चोटी।

मुंतक़िल—(वि० अ०) एक स्थान से दूसरे स्थान पर गया हुआ।

मुंतज़िम—(पु० अ०) वह जो इंतज़ाम करता हो।

मुंतज़िर—(पु० अ०) इंतज़ार या प्रतीक्षा करने वाला।

मुँदरी—(स्त्री० हि०) छल्ला। अँगूठी।

मुंशी—(पु० फ़ा०) लेखक। मुहर्रिर। मुंशियाना=मुंशियों की तरह का। —खाना= दफ़्तर। —गिरी=मुंशी का काम या पद।

मुंसरिम—(पु० अ०) दफ़्तर का प्रधान कर्मचारी।

मुंसलिक़—(पु० अ०) साथ में बाँधा या नत्थी किया हुआ।

मुंसिफ़—इन्साफ़ करने वाला। मुंसिफ़ी=न्याय करने का काम। मुंसिफ़ का काम या पद। मुंसिफ़ की अदालत।

मुँह—(पु० हि०) बोलने और भोजन करने का अंग। मुख-विवर।—काला=बेइज्ज़ती। बदनामी। एक प्रकार की गाली। —चोर=वह जो दूसरों के सामने जाने से मुँह छिपाता हो। —छुट=मुँह-फट। —ज़ोर=बकवादी। उद्दंड। —दिखलाई=नई बधू का मुँह देखने की रस्म। वह धन जो मुंह देखने पर बधू को दिया जाय। —फट=बदज़बान। —बंद=जिसका मुँह खुला न हो। कुँआरी। —माँगा=अपनी इच्छा के अनुसार। मुँहासा=मुँह पर की फुन्सियाँ जो युवावस्था में निकलती हैं।

मुअज़्ज़न—(पु० अ०) मसजिद में अज़ान देने वाला।

मुअत्तल—(वि० अ०) जो काम से कुछ दिनों के लिये अलग किया जाय। मुअत्तली=काम से कुछ दिनके लिये अलग कर दिया जाना।

मुअम्मा—(पु० अ०) रहस्य। भेद। पहेली। घुमाव-फिराव की बात।

मुअल्लिम—(पु० अ०) शिक्षक।

मुआफ़—(वि० अ०) क्षमा। मुआफ़ी=क्षमा।

मुआफ़क़त—(फ़ा०) दोस्ती। अनुकूलता।

मुआफ़िक़—(अ०) अनुकूल। समान। ठीक-ठीक। इच्छानुसार।

मुआमला—(अ०) व्यापार। काम। व्यवहार। विवादास्पद विषय।

मुआइना—(अ०) देख-भाल करना। निरीक्षण।

मुआलिज—(अ०) इलाज करने वाला। चिकित्सक। मुआ-

लिजा=इलाज। चिकित्सा।

मुआवज़ा—(अ०) बदला। वह धन जो हानि के बदले में मिले। वह रक़म जो ज़मींदार को ज़मीन के बदले में मिले।

मुआहदा—(अ०) दृढ़ निश्चय। क़रार।

मुक़त्ता—(वि० अ०) ठीक तरह से बनाया हुआ। सभ्य। शिष्ट।

मुक़द्मा—(पु० अ०) अभियोग। दावा। नालिश। मुक़दमेबाज़=वह जो प्रायः मुक़दमे लड़ा करता हो। मुक़दमेबाज़ी = मुक़दमा लड़ने का काम।

मुक़द्दम—(अ०) पुराना। सर्वश्रेष्ठ। ज़रूरी। आवश्यक। मुखिया। नेता।

मुक़द्दर—(पु० अ०) भाग्य। तक़दीर।

मुक़द्दस—(वि० अ०) पवित्र। पाक।

मुकम्मल—(वि० अ०) पूरा किया हुआ।

मुकरना—(क्रि० हि०) इनकार करना। नटना।

मुकर्रर—(अव्य० अ०) दोबारा। फिर से निश्चित। मुक़र्रर =(अ०) नियुक्त। निस्संदेह। मुक़र्ररी=नियुक्ति।

मुक़व्वी—(वि० अ०) बलवर्द्धक।

मुक़ाबला—(पु० अ०) आमना-सामना। मुठभेड़। बराबरी। तुलना। मिलान। विरोध। लड़ाई।

मुक़ाबिल—(क्रि० अ०) सम्मुख। सामने।

मुक़ाम—ठहरने का स्थान। पड़ाव। घर। सरोद का कोई परदा।

मुक़िर—(वि० अ०) प्रतिज्ञा करने वाला। किसी दस्तावेज़ या अरज़ीदावे का लिखने वाला।

मुकुट—(पु० सं०) ताज।

मुकुलित—कुछ खिली हुई कली। कुछ कुछ खुला। झपकता हुआ नेत्र।

मुक्का—(पु० हि०) बँधी मुट्ठी।

मुक्की=घूँसा। मुक्केबाज़ी=घूँसेबाज़ी।

मुक्त—(वि० सं०) छुटकारा पाया हुआ। फेंका हुआ।—कंठ=खुले गले से।

मुख—(पु० सं०) मुँह। प्रधान। मुखड़ा=मुख। चेहरा।

ख़्तार—(पु० अ०) प्रतिनिधि। एक प्रकार के कानूनी सलाहकार।—आम=वह प्रतिनिधि जिसे सब प्रकार के काम करने, मुक़दमे आदि लड़ने का अधिकार दिया गया हो।—कार=वह जो किसी काम की देख-रेख के लिये नियुक्त किया गया हो।—कारी=मुख़्तार का काम या पद। मुख़्तारी।—ख़ास=वह जो किसी विशिष्ट कार्य या मुकदमे के लिये प्रतिनिधि बनाया गया हो।—नामा=वह अधिकार-पत्र जिसके द्वारा कोई व्यक्ति किसी की ओर से अदालती कार्रवाई करने के लिये मुख़्तार बनाया जाय।—नामा आम=वह अधिकार-पत्र जिसके द्वारा कोई मुख़्तार आम नियुक्त किया जाय।—नामा ख़ास=वह अधिकार-पत्र जिसके द्वारा कोई मुख़्तार ख़ास नियुक्त किया जाय।

मुख़न्नस—(वि० अ०) नपुंसक।

मुख़फ़्फ़फ़—(वि० अ०) जो घटाकर कम किया गया हो। संक्षिप्त।

मुख़बिर—(पु० अ०) भेदिया। जासूस। मुख़बिरी=भेद देना।

मुख़मसा—(पु० अ०) झगड़ा। बखेड़ा।

मुख़म्मस—(वि० अ०) जिसमें पाँच कोने या अंग आदि हों। पाँच चरणों की उर्दू की कविता।

मुखर—(वि० सं०) बकवादी।

मुख़लिसी—(स्त्री० अ०) छुटकारा। रिहाई।

मुखाग्र—(पु० सं०) कंठस्थ।

मुख़ातिब—(वि० अ०) जिससे बात की जाय।
मुखापेक्षी—(पु० हि०) दूसरों के सहारे रहनेवाला।
मुख़ालिफ़—(वि० अ०) विरोधी। शत्रु। प्रतिद्वंदी। मुख़ालिफ़त=विरोध। दुश्मनी।
मुखिया—(पु० हि०) नेता। प्रधान। अगुआ।
मुख़्तलिफ़—(वि० अ०) अलग। भिन्न। अनेक प्रकार का।
मुख़्तसर—(वि० अ०) संक्षिप्त। छोटा। थोड़ा।
मुख़्तार—(पु० अ०) प्रतिनिधि।
मुख्य—(वि० सं०) प्रधान। श्रेष्ठ। —ता=प्रधानता। —तया=विशेष करके।
मुगदर—(पु० हि०) एक प्रकार की लकड़ी जिसका उपयोग व्यायाम के लिये किया जाता है।
मुग़ल—(पु० फ़ा०) तुर्कों का एक श्रेष्ठ वर्ग।
मुग़ालता—(पु० अ०) धोखा। छल।
मुग्ध—(वि० सं०) मोहित। मुग्धा=साहित्य में एक नायिका।
मुचलका—(पु० तु०) प्रतिज्ञा-पत्र।
मुज़क्कर—(वि० अ०) पुल्लिंग।
मुजरा—(पु० अ०) वह रकम जो किसी रक़म में से काट ली गई हो। अभिवादन। वेश्या का वह गाना जो बैठकर हो और जिसमें उसका नाच न हो।
मुजर्रद—(वि० अ०) अकेला। संसार-त्यागी।
मुजर्रब—(वि० अ०) आज़माया हुआ। परीक्षित।
मुजरिम—(पु० अ०) अभियुक्त।
मुजल्लद—(वि० अ०) जिल्द-दार।
मुजस्सिम—स-शरीर। प्रत्यक्ष।
मुजावर—वह मुसलमान जो किसी दरगाह आदि की सेवा करता हो और चढ़ावा आदि लेता हो।
मुज़िर—(वि० अ०) हानिकारक।

मुटाई—(स्त्री० हि०) मोटापन। पुष्टि। घमंड। मुटाना=मोटा हो जाना। अहंकारी हो जाना। मुटासा=बेपरवा। घमंडी।

मुटिया—(पु० हि०) बोझ ढोनेवाला। मज़दूर।

मुट्ठा—(पु० हि०) चंगुल भर वस्तु। पुलिंदा। मुट्ठी=बँधी हुई हथेली।

मुठभेड़—(स्त्री० हि०) टक्कर। भिड़ंत। भेंट। सामना।

मुठिया—(स्त्री० हि०) दस्ता। बेंट।

मुड़ना—(क्रि० हि०) घुमाव लेना। झुकना। घूम जाना। लौटना।

मुड़वाना—(क्रि० हि०) उस्तरे से बाल या रोएँ दूर कराना। मुड़ने या घूमने में प्रवृत्त करना।

मुड़ाना—(क्रि० हि०) सिर के सब बाल बनवाना। ठगा जाना।

मुड़िया—(पु० हि०) सिर मुँड़ा हुआ।

मुतअल्लिक़—(वि० अ०) संबंधी। विषय में।

मुतदायरा—(वि० अ०) मुक़दमा जो दायर किया गया हो।

मुतफ़न्नी—(वि० अ०) चालाक। धोखेबाज़।

मुतफ़र्रिक़—(अ०) अलग-अलग। विविध।

मुतबन्ना—(अ०) दत्तक या गोद लिया हुआ पुत्र।

मुतमौवल—(अ०) धनवान्। अमीर।

मुतरज्जिम—(फ़ा०) अनुवादक।

मुतलक़—(अ०) ज़रा भी। तनिक भी।

मुतवफ़ा—(फ़ा०) मृत। स्वर्गीय।

मुतवल्ली—(फा०) अभिभावक।

मुतवातिर—(फ़ा०) लगातार। निरंतर।

मुतसद्दी—(फ़ा०) लेखक। मुंशी। पेशकार। ज़िम्मेदार। प्रबंध-कर्त्ता। हिसाब रखने वाला। मुनीम।

मुतहम्मिल—(अ०) सहिष्णु। सहनशील।

मुताबिक़—(अ०) अनुसार। बमूजिब। अनुकूल।

मुतालबा—(फ़ा० पु० अ०) बाक़ी रुपया।

मुताह—(अ०) मुसलमानों में एक प्रकार का अस्थायी विवाह। मुताही = वह स्त्री जिसके साथ मुताह किया गया हो। रखेली स्त्री।

मुत्तफ़िक़—(वि० अ०) सहमत।

मुत्तसिल—(अ०) समीप। नज़दीक। लगातार।

मुदर्रिस—(पु० अ०) शिक्षक। अध्यापक।

मुदाम—(क्रि० फ़ा०) सदा। हमेशा। लगातार। मुदामी = जो सदा होता रहे।

मुदित—(वि० सं०) प्रसन्न। खुश।

मुद्गर—(पु० सं०) मोगरा।

मुद्आ—(पु० अ०) अभिप्राय। मतलब।

मुद्दई—(अ०) दावा करनेवाला।

मुद्दत—(अ०) अवधि। बहुत दिन। अरसा। मुद्दती = वह जिसके साथ कोई मुद्दत लगी हो।

मुद्दाअलेह—(पु० अ०) प्रतिवादी॥

मुद्रा—(स्त्री० सं०) मोहर। छाप। रुपया, अशरफ़ी आदि। सिक्का। अँगूठी। छल्ला। हाथ, पाँव, आँख, मुँह आदि की कोई स्थिति। अंगों की कोई स्थिति। मुख की चेष्टा। गोरखपंथी साधुओं के पहनने का एक कर्ण-भूषण। हठयोग में विशेष अंग-विन्यास। मुद्रण = छपाई। मुद्रणालय = छापाखाना। प्रेस। मुद्रांकित = मोहर किया हुआ। मुद्रिका = अँगूठी। सिक्का। मुद्रित = छपा हुआ।

मुनक्का—(पु० फ़ा०) बड़ी किशमिश।

मुनब्बतकारी—(स्त्री० अ०) पत्थरों पर उभरे हुए बेल-बूटों का काम।

मुनादी—(स्त्री० अ०) ढिंढोरा। डुग्गी।

मुनाफ़ा—(फ़ा०) लाभ। नफ़ा। फ़ायदा।

मुनासिब—(फ़ा०) उचित।

मुनि—(पु० सं०) मननशील। महात्मा। तपस्वी। त्यागी।

मुनीम—(पु० अ०) नायब। सहायक। साहूकारों का हिसाब-किताब लिखनेवाला।

मुन्ना—(पु० देश०) छोटों के लिये प्रेमसूचक शब्द। प्रिय। प्यारा।

मुफ़लिस—(वि० अ०) ग़रीब। निर्धन। मुफ़लिसी=ग़रीबी।

मुफ़सिद—(फ़ा०) फ़सादी।

मुफ़स्सल—(फ़ा०) ब्योरेवार। विस्तृत।

मुफ़ीद—(वि० अ०) फ़ायदेमंद। लाभकारी।

मुफ़्—(वि० अ०) बिना दाम का। मुफ़्ती=धर्म-शास्त्री। मुफ़्त का।

मुबतिला—(वि० अ०) फँसा हुआ। ग्रस्त।

मुबादिला—(पु० अ०) बदला। एवज़।

मुबारक—(पु० अ०) जिसके कारण बरकत हो। शुभ। अच्छा। बधाई। —बाद=बधाई। —बादी=बधाई।

मुबालिग़ा—(फ़ा०) बहुत बढ़ाकर कही हुई बात। अत्युक्ति।

मुबाहिसा—(अ०) बहस।

मुमकिन—(फ़ा०) सम्भव।

मुमतहिन—(अ०) परीक्षक।

मुमुक्षु—(वि० सं०) मुक्ति पाने का इच्छुक।

मुरग़ा—(पु० फ़ा०) एक प्रसिद्ध पक्षी। —बी=मुरग़े की जाति का एक जल-पक्षी।

मुरचंग—(फ़ा०) मुँह से बजाने का एक प्रकार का बाजा। मुँहचंग।

मुरझाना—(क्रि० हि०) कुम्हलाना। उदास होना।

मुरतहिन—(अ०) रेहनदार।

मुरदा—(फ़ा०) मरा हुआ प्राणी।

मुरदार—(वि० फ़ा०) अपनी

मौत से मरा हुआ। मृत। बेजान।

मुरदासंख—(पु० फ़ा०) एक प्रकार की औषध।

मुरब्बा—(पु० अ०) चीनी या मिश्री आदि की चाशनी में रक्षित किया हुआ फलों या मेवों आदि का पाक। वर्ग। मुरब्बी=पालन करनेवाला। रक्षक। सहायक।

मुरमुराना—(क्रि० अनु०) चूर-चूर हो जाना। कड़ी या खरी चीज़ का टूटने पर शब्द करना।

मुरली—(स्त्री० सं०) वंशी।

मुरस्सा—(वि० अ०) जड़ाऊ। जटित। —कार=गहनों में नग या मणि जड़नेवाला। जड़िया। —कारी=गहनों में नग आदि जड़ने का काम।

मुराद—(स्त्री० अ०) इच्छा। कामना। मुरादी = अभि-लाषी।

मुराफ़ा—(फ़ा०) अपील।

मुरीद—(पु० अ०) शिष्य। चेला। अनुगामी। अनुयायी।

मुरौवत—(स्त्री० अ०) शील। लिहाज़। भलमनसी।

मुर्ग़—(पु० अ०) एक प्रकार का प्रसिद्ध पक्षी। —ख़ाना= मुरग़ों के रहने के लिये बनाया हुआ स्थान।

मुर्ग़ाबी—(स्त्री० फ़ा०) मुरग़े की जाति का एक पक्षी।

मुर्तकिब—(वि० अ०) अपराधी। मुजरिम।

मुर्दनी—(स्त्री० फ़ा०) मुख पर प्रकट होने वाले मृत्यु के चिह्न।

मुर्रा—(पु० हि०) मरोड़। पेट का दर्द। मुर्री=दो डोरों के सिरों को आपस में जोड़ने की एक क्रिया। ऐंठन। बल। बत्ती। मुर्रीदार=ऐंठनदार।

मुर्शिद—(पु० अ०) मार्गदर्शक। गुरु। श्रेष्ठ। बड़ा।

मुलज़िम—(वि० अ०) अभियुक्त।

मुलतानी—(वि० हि०) मुलतान का। मुलतान संबंधी।

(स्त्री०) एक रागिनी । एक प्रकार की मिट्टी ।

मुलम्मा—(वि० अ०) गिलट । कलई । ऊपरी तड़क-भड़क । —साज़ = मुलम्मा करनेवाला । मुलमची ।

मुलाक़ात—(स्त्री० अ०) भेंट । मिलन । हेल-मेल । प्रसंग । मुलाक़ाती = परिचित ।

मुलाज़िम—(पु० अ०) नौकर । दास । —त = सेवा । नौकरी ।

मुलायम—(अ०) नरम । नाज़ुक । मुलायमत = सुकुमारता । कोमलता । मुलामियत = नर्मी । कोमलता ।

मुलाहज़ा—(अ०) निरीक्षण । देख-भाल । संकोच । रिआयत ।

मुलेठी—(स्त्री० हि०) जेठी मधु ।

मुल्क—(पु० अ०) देश । प्रांत । संसार । —गीरी = मुल्क जीतना । मुल्की = देशी ।

मुल्तवी—(अ०) स्थगित ।

मुल्ला—(पु० अ०) मौलवी ।

मुवक्किल—(पु० अ०) वकील करने वाला ।

मुशज्जर—(पु० अ०) एक प्रकार का छपा हुआ कपड़ा ।

मुशफ़िक—(वि० अ०) कृपालु । मित्र । दयावान ।

मुश्क—(पु० अ०) कस्तूरी । गंध । —नाफ़ा = कस्तूरी का नाफ़ा जिसके अंदर कस्तूरी रहती है । मुश्की = कस्तूरी के रंग का । जिसमें कस्तूरी पड़ी हो ।

मुश्किल—(वि० अ०) कठिन । (स्त्री०) कठिनता । संकट ।

मुश्त—(पु० अ०) मुट्ठी ।

मुश्तहिर—(अ०) जो प्रसिद्ध किया गया हो ।

मुश्ताक़—(अं०) चाहनेवाला ।

मुष्टि—(स्त्री० सं०) मुट्ठी । घूँसा ।

मुसकराना—(क्रि० हि०) मंदहास । मुसकराहट = मुसकराने की क्रिया । मुसकान = मंदहास ।

मुसद्दिक़ा—(वि० अ०) जाँचा हुआ ।

मुसन्ना—(पु० अ०) किसी असल काग़ज़ की नक़ल । रसीद आदि का आधा भाग ।

मुसन्निफ़—(अ०) ग्रंथकर्त्ता । रचयिता ।

मुसम्मा—(वि० अ०) नामक । —त=औरत । स्त्री ।

मुसलधार—(क्रि० वि० हि०) बहुत अधिक वेग से ।

मुसलमान—(पु० फा०) इस्लाम-धर्म के मानने वाला । मुसलमानी=मुसलमानों की एक रसम ।

मुसल्लम—(वि० फ़ा०) पूरा । अखंड ।

मुसल्ला—(अ०) नमाज़ पढ़ने की चटाई या दरी ।

मुसव्विर—(पु० अ०) चित्रकार । मुसव्विरी = चित्रकारी । नक्काशी ।

मुसहर—(पु० हि०) एक जंगली जाति ।

मुसहिल—(अ०) रेचक । जुलाब ।

मुसाफिर—(पु० अ०) यात्री । पथिक । —खाना=रेल के यात्रियों के ठहरने का बना हुआ स्थान । धर्म्मशाला । सराय । —त=मुसाफ़िरी । प्रवास । मुसाफ़िरी= यात्रा । प्रवास ।

मुसाहब—(पु० अ०) पार्श्ववर्त्ती । सहवासी । धनवान् या राजा आदि का मन बहलानेवाला । —त=मुसाहब का पद या काम । मुसाहबी=मुसाहब का पद या काम ।

मुसीबत—(अ०) तकलीफ़ । कष्ट । संकट ।

मुस्टंड—(वि० हि०) हृष्ट-पुष्ट ।

मुस्तक़िल—(वि० अ०) स्थिर । मज़बूत । स्थायी ।

मुस्तग़ीस—(पु० अ०) फरियादी । मुद्दई । दावेदार ।

मुस्तनद—(वि० अ०) प्रामाणिक ।

मुस्तशना—(फ़ा०) छाँटा हुआ । भिन्न । जो अपवाद स्वरूप हो । बरी किया हुआ ।

मुस्तहक़—(अ०) हक़दार । योग्य ।

मुस्तैद—(अ०) जो किसी कार्य्य के लिये तत्पर हो । चालाक ।

चुस्त । मुस्तैदी=तत्परता । उत्साह । फुरती ।

मुस्तौफ़ी—(अ०) आय-व्यय-परीक्षक ।

मुहकमा—(पु० अ०) सरिश्ता । विभाग ।

मुहतमिम—(फ़ा०) प्रबंधक । व्यवस्थापक।

मुहतरका—(पु० अ०) वह कर जो व्यापार आदि पर लगाया जाय ।

मुहताज—(वि० अ०) ग़रीब । दरिद्र । आश्रित । चाहनेवाला ।

मुहब्बत—(स्त्री० अ०) प्रेम । चाह । मित्रता । इश्क़ । लगन । लौ ।

मुहम्मद—(पु०अ०) मुसलमानी धर्म्म के प्रवर्त्तक। मुहम्मदी=मुसलमान ।

मुहर—(स्त्री० फ़ा०) ठप्पा । छाप । अशरफी ।

मुहरा—(पु० हि०) सामने का भाग । सिरा । शतरंज की गोटी । घोड़े का एक साज ।

मुहर्रम—(पु० अ०) अरबी वर्ष का पहला महीना । मुहर्रमी=मुहर्रम संबंधी । शोक-व्यंजक । मनहूस ।

मुहर्रिर—(पु० अ०) लेखक। मुंशी । मुहर्रिरी=मुंशीगिरी।

मुहलत—(स्त्री० अ०) फुरसत। छुट्टी । अवधि ।

मुहल्ला—(पु० फ़ा०) शहर का कोई हिस्सा जिसमें बहुत से मकान हों ।

मुहसिन—(वि० अ०) एहसान करनेवाला ।

मुहसिल—(वि० अ०) उगाहनेवाला । प्यादा ।

मुहाफ़िज़—(वि० अ०) रखवाला । संरक्षक । —ख़ाना=कचहरी में वह स्थान जहाँ सब प्रकार की मिसलें आदि रहती हैं । —दफ़्तर=कचहरी का वह अधिकारी जिसके निरीक्षण में मुहाफ़िज़-खाना रहता है ।

मुहाल—(वि० अ०) असंभव । कठिन । मोहल्ला।

मुहाल्ला—(अ०) पीतल का वह बंद या चूड़ी जो हाथी के दाँत में शोभा के लिये चढ़ाई जाती है।

मुहावरा—(पु० अ०) अभ्यास। आदत। (अं०) ईडियम।

मुहासिब—(पु० अ०) हिसाब जाननेवाला। गणितज्ञ। हिसाब लेनेवाला। मुहासिबा =हिसाब। लेखा। पूछताछ।

मुहासिरा—(पु० अ०) घेरा।

मुहासिल—(अ०) आमदनी। लाभ। मुनाफ़ा।

मुहिब्ब—(पु० अ०) दोस्त। मित्र।

मुहिम—(पु० अ०) युद्ध। लड़ाई। आक्रमण।

मुहूर्त्त—(पु० सं०) ज्योतिष के अनुसार काल का एक मान। समय।

मूँग—(स्त्री० पु० हि०) एक अन्न जिसकी दाल बनती है। —फली=एक प्रकार का पौधा और उसकी फली। मूँगिया =मूँग का सा। हरे रंग का।

मूँगा—(हि०) एक प्रकार का रत्न।

मूँछ—(स्त्री० हि०) ऊपरी ओंठ के ऊपर के बाल जो केवल पुरुषों के उगते हैं।

मूँज—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का तृण।

मूँड़ना—(क्रि० हि०) हजामत करना। ठगना। चेला बनाना।

मूँदना—(क्रि० हि०) ढाँकना। बंद करना।

मूक—(वि० सं०) गूँगा।

मूज़ी—(पु० अ०) दुष्ट। दुर्जन।

मूढ़—(वि० सं०) मूर्ख। जिसे आगा-पीछा न सूझता हो। —ता=मूर्खता। अज्ञान।

मूत—(पु० हि०) पेशाब। —ना =पेशाब करना।

मूत्र—(पु० सं०) पेशाब। —विज्ञान = मूत्र-परीक्षा पर आयुर्वेद का एक ग्रंथ। मूत्राघात=पेशाब बंद होने का रोग। मूत्राशय=नाभि के नीचे का वह स्थान जिसमें मूत्र संचित रहता है।

मूर्ख—(वि० सं०) बेवक़ूफ़। —ता=नासमझी। मूर्खत्व=बेवक़ूफ़ी।

मूर्च्छना—(स्त्री० सं०) संगीत में एक ग्राम से दूसरे ग्राम तक जाने में सातों स्वरों का आरोह-अवरोह।

मूर्छा—(स्त्री० सं०) अचेत होना। बेहोशी। मूर्च्छित=बेहोश। बेसुध।

मूर्त्ति—(स्त्री० सं०) आकृति। शकल। प्रतिमा। चित्र। तसवीर। —कार=मूर्त्ति बनानेवाला। —पूजक=मूर्त्ति पूजनेवाला। —पूजा=मूर्त्ति में ईश्वर या देवता की भावना करके उसकी पूजा करना। —मान्=स-शरीर। साक्षात्। प्रत्यक्ष। —विद्या=प्रतिमा गढ़ने की कला।

मूल—(पु० सं०) जड़। कंद। आरंभ। उत्पत्ति का हेतु। असल। पूँजी। नींव। बुनियाद। (वि०) मुख्य। खास। मूलच्छेद=जड़ से नाश। पूर्ण नाश। —द्वार=प्रधान द्वार। सदर फाटक। —धन=पूँजी। —स्थान=पूर्वजों का स्थान। प्रधान स्थान। मूलाधार=योग के अनुसार शरीर के भीतर के छः चक्रों में से एक चक्र का नाम।

मूली—(स्त्री० हि०) एक पौधा।

मूल्य—(पु० सं०) दाम। क़ीमत। —वान्=क़ीमती।

मूसदानी—(क्रि० हि०) चूहा फँसाने का पिंजड़ा।

मूसना—(क्रि० हि०) चुराकर उठा ले जाना।

मूसरचन्द—(पु० हि०) अपढ़। गँवार। हट्टा-कट्टा, पर निकम्मा।

मूसल—(पु० हि०) धान कूटने का एक औज़ार। —धार=बहुत अधिक वेग से। मूसला=वह जड़ जो मोटी और सीधी कुछ दूर तक ज़मीन में चली गई हो।

मृग—(पु० सं०) हिरन। —चर्म=हिरन का चमड़ा। —जल

=मृगतृष्णा की लहरें।—तृषा, मृगतृष्णा = मृगमरीचिका। —राज=सिंह। —लोचनो=हरिण के समान नेत्रवाली। मृगी=हरिणी।
मृगया—(पु० सं०) शिकार। आखेट।
मृणाल—(स्त्री० सं०) कमल का डंठल।
मृत—(वि० सं०) मरा हुआ। मृतक=मुर्दा। मृतक कर्म = प्रेत कर्म। —वत्सा=(स्त्री०) जिसकी संतति मर-मर जाती हो।—संजीवनी=एक बूटी। ज्वर को एक औषध।
मृत्तिका—(स्त्री० सं०) मिट्टी।
मृत्युंजय—(पु० सं०) वह जिसने मृत्यु को जीत लिया हो। एक मंत्र।
मृत्यु—(स्त्री० सं०) मरण। मौत। यमराज। —नाशक=पारा।
मृदंग—(पु०सं०) एक बाजा।
मृदु—(वि० सं०) कोमल। नरम। नाज़ुक। धीमा। मंद।—ता =कोमलता। धीमापन।—ल = कोमल। कृपालु। नाज़ुक।
मृन्मय—(वि० सं०) मिट्टी का बना हुआ।
मृषा—(अव्य० सं०) झूठमूठ। व्यर्थ।
में—(अव्य० हि०) आधार-सूचक शब्द। बकरी के बोलने का शब्द।
मेंगनी—(हि०)लेंड़ी।
मेंबर—(अं०) सभासद। सदस्य।
मेक़दार—(पु० अ०) परिमाण। मात्रा।
मेख—(स्त्री० फ़ा०) खूँटा।
मेखला—(सं०) करधनी। घेरा। मंडल। कमरबंद या पेटी।
मेगज़ीन—(पु० अं०) बारूदखाना। सामयिक पत्र विशेषतः मासिक पत्र जिसमें लेख छपते हैं।
मेघ—(पु० सं०) बादल। एक राग। —गर्जन=बादल की गरज। —नाद=मेघ का गर्जन। रावण का पुत्र।

—माला = बादलों की घटा। —पुष्प = वर्षा का जल। मेघाच्छन्न = बादलों से ढका हुआ। मेघाच्छादित = बादलों से ढका हुआ।

मेचक—(पु० सं०) अँधेरा। काला।

मेज़—(स्त्री० फ़ा०) टेबुल। —पोश = मेज़ पर बिछाने का कपड़ा। —बान = मेहमान-दार।

मेजर—(अं०) फ़ौज का एक अफ़सर।

मेट—(पु० अं०) मजदूरों का अफ़सर।

मेटना—(क्रि० हि०) मिटाना। दूर करना। नष्ट करना।

मेड़—(पु० हि०) छोटा बाँध। दो खेतों के बीच में सीमा के रूप में बना हुआ रास्ता। —बंदी = हदबंदी। मेड़रा = किसी गोल वस्तु का उभरा हुआ किनारा। मंडलाकार वस्तु का ढाँचा। मेंड़रा।

मेडल—(पु० अं०) तमग़ा। पदक।

मेढक—(पु० हि०) एक जल-स्थल-चारी जंतु। दर्दुर।

मेढ़ा—(पु० हि०) सींगवाला एक चौपाया।

मेथी—(स्त्री० सं०) एक शाक। मेथौरी = मेथी का साग मिलाकर बनाई हुई उर्द की पीठी की बरी।

मेद—(पु० हि०) चरबी।

मेदा—(अ०) पेट। पाकाशय।

मेदिनी—(सं०) पृथ्वी। धरती।

मेधा—(स्त्री० सं०) धारणावाली बुद्धि। —वी = मेधा शक्ति वाला। बुद्धिमान्। विद्वान्।

मेम—(स्त्री० अ०) युरोप या अमेरिका की स्त्री। ताश का एक पत्ता।

मेमना—(अनु०) भेड़ का बच्चा।

मेमार—(पु० अ०) इमारत बनानेवाला।

मेमोरियल—(अं०) वह प्रार्थना-पत्र जो किसी बड़े अधिकारी के पास विचारार्थ भेजा जाय।

स्मारक-चिह्न। यादगार।

मेरा—(सर्व० हि०) "मैं" के संबंधकारक का रूप। अपना। मेरी (स्त्री०)।

मेरु—(पु० सं०) एक पर्वत। —दंड=पीठ के बीच की हड्डी। रीढ़। पृथ्वी के दोनों ध्रुवों के बीच गई हुई सीधी कल्पित रेखा। —यंत्र=चरखा। बीजगणित में एक प्रकार का चक्र।

मेरे—(सर्व० हि०) 'मेरा' का बहुवचन।

मेल—(पु० सं०) संयोग मिलाप। एकता। सुलह। दोस्ती। मित्रता। अनुकूलता। संगति। समता। बराबरी। मिलावट। मेला=बहुत से लोगों का जमावड़ा। मेला-ठेला=जमावड़ा। मेली=मुलाक़ाती। साथी। हेल-मेल रखनेवाला।

मेल्टिंग केट्ल—(पु० अं०) सरेस गलाने की देगचा।

मेवा—(पु० फ़ा०) फल। सुखाए हुए बढ़िया फल। —फ़रोश=फल या मेवे बेचनेवाला।

मेष—(पु० सं०) एक राशि।

मेहँदी—(स्त्री० हि०) एक झाड़ी।

मेह—(पु० फ़ा०) बादल। वर्षा।

मेहतर—(हि०) भंगी।

मेहनत—(फ़ा०) श्रम। प्रयास। मेहनताना=किसी काम की मज़दूरी। मेहनती=परिश्रमी।

मेहमान—(अ०) पाहुना। अतिथि। दारी=आतिथ्य। पहुनाई। —मेहमानी=आतिथ्य। पहुनाई।

मेहर—(फ़ा०) कृपा। दया। —बान=कृपालु। दयालु। —बानी=दया। कृपा।

मेहरा—(हि०) स्त्रियों की सी चेष्टावाला। स्त्रियों में बहुत रहनेवाला। खत्रियों की एक जाति।

मेहराब—(फ़ा०) दरवाज़े के ऊपर का। गोल किया हुआ हिस्सा। —दार=ऊपर की ओर गोल कटा हुआ।

मैं—(सर्व० हि०) स्वयं। खुद।

मैत्री—(स्त्री० सं०) मित्रता। दोस्ती।

मैथिल—(वि० सं०) मिथिला देश का निवासी।

मैथुन—(पु० सं०) संभोग। रति-क्रीड़ा।

मैदा—(पु० फ़ा०) बहुत महीन आटा।

मैदान—दूर तक फैली हुई सपाट-भूमि। युद्ध-क्षेत्र।

मैनफल—(पु० हि०) एक वृक्ष।

मैनसिल—(हि०) एक धातु।

मैना—(हि०) काले रंग का एक पक्षी।

मैल—(वि० हि०) मैला। दोष। विकार। —खोरा=मैल को छिपा लेनेवाला (रंग)। साबुन। मैला=मलिन। अस्वच्छ। दूषित। गंदा। विष्ठा। कूड़ा-कर्कट। मैला-कुचैला=जो बहुत मैले कपड़े आदि पहने हुए हो। गंदा। मैलापन=मलिनता। गंदा-पन।

मोक्ष—(पु० सं०) छुटकारा। मुक्ति। नजात।

मोच—(स्त्री० हि०) किसी अंग के जोड़ की नस का अपने स्थान से चोट आदि के कारण इधर-उधर खिसक जाना।

मोचरस—(हि०) सेमल वृक्ष की गोंद।

मोची—(हि०) चमड़े का काम बनानेवाला।

मोज़ा—(पु० फ़ा०) जुर्राब। पायताबा।

मोट—(स्त्री० हि०) गठरी। मोटरी।

मोटर—(अं०) एक गाड़ी जो यंत्र की सहायता से चलती है।

मोटरी—(हि०) गठरी।

मोटा—(वि० हि०) स्थूल शरीर-वाला। दरदरा। मोटाई=स्थूलता। शरारत। मोटापन=मोटाई। स्थूलता। मोटापा=मोटापन। मोटाई।

मोटिया—(हि०) मोटा और

खुरखुरा देशी कपड़ा। गाढ़ा। कुलो।
मोठ—(स्त्री० हि०) एक अन्न।
मोड़—(स्त्री० हि०) घुमाव। —ना=फेरना। लौटाना।
मोतदिल—(वि० अ०) जो न बहुत गरम और न बहुत सर्द हो।
मोती—(हि०) एक प्रसिद्ध रत्न। —चूर=छोटी बूँदियों का लड्डू। —ज्वर=चेचक निकलने के पहले आनेवाला ज्वर। मोतिया=एक फूल। —बिंद=आँख का एक रोग।
मोतवर—(अ०) विश्वास-पात्र।
मोथा—(पु० हि०) एक घास।
मोदक—(पु० सं०) लड्डू।
मोदी—(हि०) परचूनिया। —खाना=भंडार। गोदाम।
मोधू—(वि० हि०) मूर्ख।
मोम—(पु० फ़ा०) मधुमक्खी के छत्ते का उपकरण। —जामा=वह कपड़ा जिस पर मोम का रोग़न चढ़ाया गया हो। —बत्ती=मोम की जलनेवाला बत्ती। मोमी=मोम का बना हुआ।
मोमिन—(फ़ा०) धर्मनिष्ठ मुसलमान। जोलाहों की एक जाति।
मोमियाई—(हि०) नकली शिलाजीत। काले रंग की एक दवा।
मोयन—(हि०) माँड़े हुए आटे में घी या चिकना देना।
मोर—(पु० हि०) एक सुन्दर बड़ा पक्षी। —नी=मोर पक्षी की मादा। —पखी=वह नाव जिसका सिरा मोर की तरह बना और रँगा हुआ हो। (वि०) मोर के पखे के रंग का। गहरा चमकीला नीला।
मोरचा—(फ़ा०) ज़ंग। दर्पण पर जमी हुई मैल। वह स्थान जहाँ खड़े होकर शत्रु-सेना से लड़ाई की जाती है।
मोराना—(हि०) घुमाना।
मोरी—(हि०) पनाली।
मोल—(पु० हि०) क़ीमत। दाम।
मोह—(पु० सं०) अज्ञान। भ्रम।

प्यार। मुहब्बत। —क= लुभानेवाला। —निशा= अज्ञानांधकार। मोहिनी= वश में करना। मुग्धता। जादू। मोहित=मुग्ध। आशिक़।

मोहताज—(फ़ा०) निर्धन। ग़रीब। मोहताजी=ग़रीबी।

मोहन—(पु० सं०) मोहनेवाला। —भोग=हलुआ। —माला =सोने के गुरियों या दानों की बनी हुई माला।

मोहब्बत—(स्त्री० फ़ा०) प्रेम। स्नेह।

मोहर—(स्त्री० फ़ा०) ठप्पा। अशरफ़ी।

मोहरा—(पु० हि०) किसी बरतन का मुँह या खुलाभाग। सेना की गति। शतरंज का कोई गोटी।

मोहर्रिर—(पु० अ०) लेखक। मुंशी।

मोहलत—(स्त्री० अ०) फ़ुरसत। अवकाश। अवधि।

मोहल्ला—(पु० हि०) शहर का कोई हिस्सा।

मौक़ा—(पु० अ०) घटनास्थल। जगह। अवसर।

मौक़ूफ़—(वि० अ०) बरख़ास्त। निर्भर। मौक़ूफ़ी=बरख़ास्तगी।

मौक्तिक—(पु० सं०) मोती।

मौखिक—(त्रि० सं०) ज़बानी।

मौज—(स्त्री० अ०) लहर। मौजी=मनमाना काम करनेवाला।

मौज़ा—(पु० अ०) गाँव।

मौजूद—(पु० फ़ा०) उपस्थित। हाज़िर। मौजूदगी=उपस्थिति। मौजूदा=प्रस्तुत। वर्त्तमान काल का।

मौत—(स्त्री० अ०) मृत्यु।

मौतक़िद—(अ०) विश्वास करनेवाला।

मौताद—(स्त्री० अ०) मात्रा।

मौन—(पु० सं०) चुप रहना। चुप। —व्रत=चुप रहने का व्रत।

मौर—(पु० हि०) मुकुट। विवाह

के समय वर के सिर का आभूषण। मंजरी। मौर।

मौरूसी—(वि० अ०) पैतृक।

मौर्य्य—(पु० सं०) क्षत्रियों के एक वंश का नाम।

मौलवी—(पु० अ०) अरबी भाषा का पण्डित। मुसलमान धर्म्म का आचार्य।

मौलासरी—(स्त्री० हि०) एक पेड़।

मौसा—(पु० हि०) माता की बहन का पति। मौसी=माता की बहन। मौसिया=माता की बहन का पति। मौसेरा=मौसी की।

मौसिम—(पु० अ०) ऋतु। मौसिमी=काल के अनुकूल।

म्याँव—(स्त्री० अनु०) बिल्ली की बोली।

म्यान—(पु० फ़ा०) तलवार, कटार आदि का घर।

म्युनिसिपैलिटी—(स्त्री० अं०) किसी नगर के स्वास्थ्य, स्वच्छता आदि का प्रबंध करने-वाली प्रतिनिधि-सभा।

म्यूज़िक—(पु० अं०) बाजा।

म्यूज़िशियन—(पु० अं०) बाजा बजानेवाला।

म्यूज़ियम—(पु० अं०) अजायब घर।

म्लेच्छ—(पु० सं०) वे मनुष्य जो वर्णाश्रम-धर्म्म को न मानते हों।

य

य—हिंदी-वर्णमाला का २६वाँ व्यञ्जन।

यंत्र—(पु० सं०) औज़ार। बाजा। —णा=तकलीफ़। दर्द। पीड़ा। —विद्या=कलों के चलाने और बनाने की विद्या। —शाला=मशीन घर।

यकता—(वि० फ़ा०) अद्वितीय। —ई=एक होने का भाव।

यक-बयक—(क्रि० फ़ा०) एक

बारगी। यकायक। यकबारगी =अचानक।

यकसाँ—(वि० फ़ा०) एक समान। बराबर।

यकायक—(क्रि० फ़ा०) अचानक।

यक़ीन—(पु० अ०) विश्वास। एतबार। —न्=अवश्य। बेशक। ज़रूर।

यकृत—(पु० सं०) पेट में दाहिनी ओर की एक थैली। जिगर।

यक्ष्मा—(पु० हि०) क्षय रोग। तपेदिक़।

यख़नी—(स्त्री० फ़ा०) शोरबा। झोल। उबले हुए मांस का रसा।

यगाना—(वि० फ़ा०) अपना। एक वंश का। अकेला।

यजमान—(पु० सं०) यज्ञ करानेवाला। यजमानी=पुरोहित की वृत्ति।

यज्ञ—(पु० सं०) प्राचीन भारतीय आर्यों का एक प्रसिद्ध वैदिक कृत्य। —शाला=यज्ञ करने का स्थान। यज्ञमंडप।

यज्ञोपवीत—(पु० सं०) जनेऊ। एक संस्कार। उपनयन। व्रतबंध।

यति—(पु० सं०) संन्यासी। विश्राम। विराम। —भंग=काव्य का एक दोष।

यतीम—(फ़ा०) अनाथ। —ख़ाना=अनाथालय।

यत्न—(पु० सं०) उपाय। हिफ़ाज़त।

यत्रतत्र—(क्रि० सं०) जहाँ-तहाँ। जगह-जगह।

यथा—(अव्य० सं०) जैसे। —क्रम=क्रमशः। क्रमानुसार। —तथ्य=ज्यों का त्यों। —मति=समझ के मुताबिक। —योग्य=मुनासिब। उपयुक्त। —रुचि=इच्छानुसार। यथार्थ=ठीक। उचित। जैसे का तैसा। —वत्=जैसा का तैसा। अच्छी तरह। —विध=विधिपूर्वक। —शक्ति=सामर्थ्य के अनुसार। —संभव=जितना हो सके। —साध्य

=जहाँ तक हो सके। यथाशक्ति। यथेच्छ=मनमाना। यथेच्छित=इच्छानुसार। यथेष्ट=काफ़ी। पूरा। यथोक्त=कहे हुए के अनुसार। यथोचित=मुनासिब। ठीक। याथातथ्य=यथाथता।

यदि—(अव्य० सं०) अगर। जो।

यद्यपि—(अव्य० सं०) अगरचे। हरचंद।

यम—एक देवता। —ज=एक साथ उत्पन्न होनेवाली दो संतानें। —पुरी=यमलोक। यमपुर। यमालय=यम का घर।

यमक—(सं०) एक प्रकार का शब्दालंकार। एक वृत्त का नाम।

यमुना—(स्त्री० सं०) उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी।

यवन—(पु० सं०) यूनानी। यूनान देश का निवासी। मुसलमान। यवनी=यवन जाति का स्त्री।

यश—(पु० सं०) कीर्ति। नेकनामी। बड़ाई। —स्विनी=कीर्तिमती। —स्वी=कीर्त्तिमान्।

यह—(सर्व० हि०) पास की वस्तु का निर्देश करनेवाला एक सर्वनाम। यही=यह ही।

यहाँ—(वि० हि०) इस जगह पर। यहीं=यहाँ ही।

यहूदी—(पु० हि०) एक जाति।

या—(अ० फ़ा०) अथवा। वा।

याक़ूत—(पु० अ०) लाल रंग का बहुमूल्य पत्थर। लाल।

याक़ूब—(अ०) मुसलमानों के एक पैग़म्बर।

याचक—(पु० सं०) भिखारी। माँगनेवाला।

यातायात—(पु० सं०) गमनागमन। आना-जाना।

यात्रा—(स्त्री० सं०) सफ़र। प्रस्थान। यात्री=मुसाफ़िर।

याद—(स्त्री० फ़ा०) स्मरणशक्ति। स्मृति। —गार=स्मारक। —दाश्त=स्मृति।

यान—(पु० सं०) गाड़ी, रथ आदि सवारी। विमान।

यानी, याने—(अव्य० अ०) अर्थात्। मतलब यह कि।

यापन—(पु० सं०) बिताना।

यार—(पु० फ़ा०) मित्र। दोस्त। उपपति। जार। यारना=मित्रता। स्त्री और पुरुष का अनुचित सम्बन्ध। (वि०) मित्रता का। यारी=मित्रता। स्त्री और पुरुष का अनुचित सम्बन्ध। —बाश=रसिक।

याल—(स्त्री० तु०) घोड़े की गर्दन के ऊपर के लम्बे बाल।

युक्ति—(स्त्री सं०) उपाय। ढंग। कौशल। तर्क।

युग—(पु० सं०) समय। काल। युगांतर=दूसरा युग। ज़माने का बदलना।

युत—(वि० सं०) सहित। मिला हुआ।

युद्ध—(पु० सं०) लड़ाई।

युरेशियन—(पु० अं०) वह जिस के माता पिता में से कोई एक यूरोप का और दूसरा एशिया का हो।

युरोप—(पु० अं०) एक महाद्वीप।

युवती—(वि० सं०) जवान स्त्री।

युवराज—(पु० सं०) राजा का वह राजकुमार जो उसके राज्य का उत्तराधिकारी हो।

युवा—(वि० हि०) जवान।

यूनाइटेड—(वि० अं०) मिला हुआ। संयुक्त। —स्टेट्स=अमेरिका। —किंगडम=बृटिश साम्राज्य।

यूनान—(पु० ग्रीक आयोनिया) एक देश। यूनानी=यूनान का। (स्त्री०) यूनान देश की भाषा। यूनान देश का निवासी। हकीमी।

यूनिवर्सिटी—(स्त्री० अं०) विश्वविद्यालय।

यूनियन—(पु० अं०) संघ। सभा। समाज। —जैक=ग्रेट-ब्रिटेन और आयर्लैण्ड के संयुक्त राज्यों की राष्ट्रीय पताका। यूनियन फ़्लैग।

यों—(अव्य० हि०) इस भाँति।

यौंहीं—(अव्य० हि०) ऐसे ही। व्यर्थ ही।

योग—पु० सं०) संयोग। चित्त की वृत्तियों को चञ्चल होने से रोकना। छः दर्शनों में से एक। —फल=दो या अधिक संख्याओं को जोड़ने से प्राप्त संख्या। —रूढ़=दो शब्दों के योग से बना हुआ वह शब्द जो अपना सामान्य अर्थ छोड़कर कोई विशेष अर्थ बतावे। योगाभ्यास=योग का साधन। योगिराज=योगियों में श्रेष्ठ। योगी=आत्मज्ञानी। योगीश्वर=योगियों में श्रेष्ठ।

योग्य—(वि० सं०) क़ाबिल। लायक़। श्रेष्ठ। उचित। —ता=लायकी। बड़ाई। बुद्धिमानी। सामर्थ्य। गुण।

योजन—(पु० सं०) दूरी की एक नाप।

योजना—(सं०) नियुक्ति। प्रयोग। मेल। रचना। घटना। स्थिति। व्यवस्था।

योज्य—(वि० सं०) संख्यायें जो जोड़ी जायँ।

योद्धा—(पु० हि०) सिपाही। लड़ाका।

योनि—(स्त्री० सं०) आकर। खानि। उत्पत्ति-स्थान। स्त्रियों की जननेन्द्रिय। प्राणियों के विभाग।

योम—(अ०) रोज़। दिन।

यौवन—(पु० सं०) जवानी।

र

र—हिंदी-वर्णमाला का सत्ताईसवाँ व्यञ्जन।

रंक—(वि० सं०) ग़रीब। कंगाल।

रंग—(पु० सं०) नाचना। गाना। युद्ध। वर्ण। वह चीज़ जिसके द्वारा कोई चीज़ रंगी जाय। शरीर का ऊपरी वर्ण। शोभा। प्रभाव। —त=रंग का

भाव। हालत। दशा। —भूमि = अभिनय का स्थान। क्रीड़ास्थल। रणभूमि। —शाला = नाटकघर। —मंच = नाटक का स्टेज। रंगान = रँगा हुआ। —रेज़ = कपड़े रगनेवाला। रंगीनी = रसिकता। सजावट। रंगीला = आनंदी। रसिक। सुन्दर। प्रेमी। रँगना = किसी वस्तु पर रंग चढ़ाना। किसी को अपने अनुकूल करना। किसी पर आसक्त होना। —बिरंग = कई रंगों का। तरह-तरह के। —बिरंगा = अनेक रंगों का। —भवन = रंगमहल। —महल = भोगविलास करने का स्थान। —मार = ताश का खेल। —साज़ = रंग बनानेवाला। —साज़ी = रंग बनाने का काम। रँगाई = रगने की मज़दूरी।

रंगरूट—(पु० अं० रिक्रूट) सेना या पुलिस आदि में नया भर्ती होने वाला सिपाही।

रंज—(पु० फ़ा०) दुःख। खेद। शोक। रंजिश = मनमुटाव। रंजीदगी = मनमुटाव। रंजीदा = नाराज़।

रंजक—(स्त्री० हि०) वह थोड़ी सी बारूद जो बत्ती लगाने के वास्ते बंदूक की प्याली पर रखी जाती है। कोई तीखा चटपटा चूर्ण।

रंजित—(त्रि० सं०) रँगा हुआ। प्रसन्न। अनुरक्त।

रँडापा—(पु० हि०) वैधव्य। विधवा की दशा।

रंडी—(स्त्री० हि०) वेश्या। —बाज़ = वेश्यागामी। —बाज़ी = वेश्यागमन।

रंडुआ, रँडुवा—(पु० हि०) वह पुरुष जिसकी स्त्री मर गई हो। विधुर।

रंदा—(पु० फ़ा०) बढ़ई का एक औज़ार।

रंध्र—(पु० सं०) छेद। सूराख़।

रँभाना—(क्रि० हिं०) गाय का बोलना।

रअय्यत—(स्त्री० अ०) प्रजा। रिआया। किसान।

रई—(स्त्री० हिं०) दही मथने की लकड़ी। दरदरा आटा। सूजी। चूर्णमात्र।

रईस—(पु० फ़ा०) अमीर। धनी।

रक़्वा—(पु० अ०) क्षेत्रफल।

रक़म—(स्त्री० अ०) संपत्ति। ज़ेवर। लगान की दर। तरह। रक़मी=वह किसान जिसके साथ कोई ख़ास रिआयत की जाय।

रकाब—(स्त्री० फ़ा०) घोड़ों की ज़ीन का पावदान। रकाबा=बड़ी थाली। परात। रकाबी=तश्तरी।

रक़ीक़—(वि० अ०) पानी की तरह पतला।

रक़ीब—(पु० अ०) प्रेमिका का दूसरा प्रेमी।

रक्त—(पु० सं०) लहू। अनुरक्त। लाल। —चंदन=लाल रंग का चंदन। —पात=लहू का गिरना या बहना। खून-खराबी। —पित्त=एक रोग। नकसीर। —स्राव=खून जाना या गिरना। रक्तातिसार=एक प्रकार का अतिसार। रक्ताशय=वे कोठे जिनमें रक्त रहता है। रक्तिम=ललाई लिए हुये।

रक्षा—(सं०) बचाना। पालना। रक्षक=बचानेवाला। पहरेदार। पालन करनेवाला। रक्षण=रक्षा करना। पालन-पोषण। रक्षणीय=रक्षा करने योग्य। —बंधन=हिंदुओं का एक त्यौहार जो श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को होता है। सलोनो। रक्षित=जिसकी रक्षा की गई हो। पाला-पोसा हुआ। (स्त्री०) रक्षिता।

रक्से ताऊस—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का नाच।

रखना—(क्रि० हिं०) टिकाना। धरना। रक्षा करना। बचाना। निर्वाह या पालन करना।

संग्रह करना। सौंपना। रेहन करना। अपने हाथ में करना। अपनी अधीनता में लेना। नियुक्त करना। पकड़ या रोक लेना। धारण करना। किसी पर आरोप करना। कर्ज़दार होना। मन में अनुभव या धारणा करना। ठहराना। रखवाना=रखने की क्रिया दूसरे से कराना। रखवाला=रक्षा करनेवाला। पहरेदार। रखवाली = रक्षा करना। रखेली=रखनी। उपपत्नी।

रग—(स्त्री० फ़ा०) नस।

रगड़—(हि०) घर्षण। झगड़ा। धुन। —ना=घिसना। पीसना। अभ्यास आदि के लिये बार-बार कोई काम करना। किसी काम को जल्दी-जल्दी और बहुत परिश्रमपूर्वक करना। परेशान करना। रगड़वाना=रगड़ने का काम दूसरे से कराना। रगड़ा= बहुत अधिक उद्योग। वह झगड़ा जो बराबर होता रहे।

रग़बत—(स्त्री० अ०) चाह। इच्छा। रुचि।

रगरेशा—(पु० फ़ा०) पत्तियों की नसें। शरीर के अंदर का प्रत्येक अंग। किसी विषय की भीतरी और सूक्ष्म बातें।

रगेदना—(क्रि० हि०) भगाना। खदेड़ना।

रग्गा—(पु० देश०) एक प्रकार का अन्न। रगी।

रचना—(स्त्री० सं०) बनावट। निर्माण। बनाई हुई वस्तु। कार्य्य। बनाना। निश्चित करना। ग्रंथ आदि लिखना। पैदा करना। आयोजन करना। कल्पना करना। सजाना। रंग चढ़ना। रचयिता= रचने या बनाने वाला। रचित=बनाया हुआ। रचा हुआ।

रज—(पु० सं०) धूल। गर्द।

रजत—(सं०) चाँदी।

रजनी—(सं०) रात।

रजस्वला—(सं०) ऋतुमती। रजवती।

रज़ा—(अ०) इच्छा । छुट्टी । आज्ञा । —मंद=सहमत । रज़ामंदी=राज़ी या सहमत होना ।

रजिस्टर—(अं०) अँगरेज़ी ढंग की बही या किताब । रजिस्टरी=किसी लिखित प्रतिज्ञा-पत्र को क़ानून के अनुसार सरकारी रजिस्टरों में दर्ज कराने का काम । चिट्ठी, पारसल आदि डाक से भेजने के समय डाकखाने के रजिस्टर में उसे दर्ज कराने का काम ।

रज़ील—(वि० अ०) नीच ।

रजोगुण—(पु० सं०) प्रकृति का वह स्वभाव जिससे जीवधारियों में भोग-विलास तथा दिखावे की रुचि उत्पन्न होती है । राजस ।

रजोदर्शन—(पु० सं०) स्त्रियों का मासिक धर्म्म । रजस्वला होना ।

रटन—(स्त्री० हि०) कहना । बोलना । रटना=किसी शब्द को बार-बार कहना । ज़बानी याद करने के लिये बार-बार उच्चारण करना । रटंत=रटना ।

रण—(पु० सं०) युद्ध । —क्षेत्र =लड़ाई का मैदान । —भूम=लड़ाई का मैदान । —सिंघा=तुरही । नरसिंघा । —स्थल=रणभूमि ।

रतनजोत—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की मणि । एक पौधा ।

रतनारी—(पु० हि०) लाल ।

रतालू—(पु० हि०) एक कंद ।

रति—(स्त्री० सं०) संभोग । मैथुन । प्रेम । अनुराग । —क्रिया=मैथुन । संभोग ।

रतौंधी—(स्त्री० हि०) आँख का रोग ।

रत्ती—(स्त्री० हि०) घुँघची का दाना । गुंजा ।

रत्न—(पु० सं०) मणि । जवाहर । सर्वश्रेष्ठ । —परीक्षक =जौहरी । रत्नाकर=समुद्र ।

रथ—(पु० सं०) प्राचीन काल की एक प्रकार की सवारी । गाड़ी । —कार=रथ बनानेवाला । बढ़ई । एक जाति ।

—यात्रा=हिंदुओं का एक पर्व। —वान्=रथ हाँकनेवाला सारथी। रथी=रथ पर चढ़कर लड़नेवाला। रथ पर चढ़ा हुआ। वह ढाँचा जिसपर मुरदों को रखकर अंत्येष्टि क्रिया के लिये ले जाते हैं। टिकठी।

रदबदल—(क्रि० फ़ा०) परिवर्त्तन। अदल-बदल।

रदीफ़—(स्त्री० अ०) अक्षरक्रम। —वार=अक्षर-क्रम से।

रद्द—(वि० अ०) जो काट या छाँट दिया गया हो। जो तोड़ या बदल दिया गया हो।

रद्दा—(फ़ा०) दीवार की पूरी लंबाई में एक बार रखी हुई एक ईंट की जोड़ाई। नीचे ऊपर रखी हुई वस्तुओं की एक तह या खंड।

रद्दी—(फ़ा०) निकम्मा। बेकार। —रद्द ख़ाना=वह स्थान जहाँ ख़राब और निकम्मी चीज़ें रखी वा फेंकी जायँ।

रनवास—(पु० हि०) रानियों के रहने का महल। ज़नानख़ाना।

रपटना—(क्रि० हि०) फिसलना। झपटना। किसी काम को शीघ्रता से करना।

रफ़ा—(वि० अ०) मिटाया हुआ। शान्त। —दफ़ा=निबटाया हुआ। शान्त।

रफ़ीदा—(पु० अ०) वह गद्दी जिसके ऊपर ज़ीन कसा जाता है। कावुक। गोल पगड़ी।

रफ़ू—(पु० अ०) फटे हुए कपड़े के छेद को तागे से भरकर उसे बराबर करना। —गर=रफ़ू बनाने वाला। —गरी=रफ़ू करने का काम। —चक्कर=ग़ायब। चंपत।

रफ़्नी—(स्त्री० फ़ा०) जाना। निर्यात।

रफ़्तार—(स्त्री० फ़ा०) चाल। गति।

रफ़्तारफ़्ता—(क्रि० फ़ा०) धीरे धीरे। क्रम क्रम से।

रब—(पु० अ०) ईश्वर।

रबड़—(अं०) एक लचीला पदार्थ।

रबड़ी—(हि०) औटाकर गाढ़ा

और लच्छेदार किया हुआ दूध।

रबाब—(पु० अ०) सारंगी की तरह का एक बाजा। रबाबिया=रबाब बजानेवाला।

रबी—(स्त्री० अ०) बसंतऋतु। वह फ़सल जो बसंत ऋतु में काटी जाती है।

रब्त—(पु० अ०) अभ्यास। मश्क़। —ज़ब्त=सम्बन्ध।

रमण—(पु० सं०) विलास। क्रीड़ा। मैथुन। घूमना। रमणी=नारी। स्त्री। रमणीक=सुन्दर। रमणीय=सुन्दर। रमणीयता=सुन्दरता।

रमज़ान—(अ०) मुसलमानों का नवाँ महीना जिसमें वे रोज़े रखते हैं।

रमना—(क्रि० हि०) मन लगने के कारण कहीं रहना। भोग-बिलास या रतिक्रीड़ा करना। आनन्द करना। चल देना। बिहार करना। विचरना। पार्क।

रमल—(पु० अ०) एक प्रकार का फलित ज्योतिष। रम्माल=पासा फेंककर फलित कहनेवाला।

रमूज़—(स्त्री० अ०) कटाक्ष। सैन। इशारा। पहेली। भेद। रहस्य।

रम्य—(वि० सं०) सुन्दर। मनोरम। रमणीय।

रम्हाना—(क्रि० हि०) रँभाना। गाय का बोलना।

रय्यत—(स्त्री० अ०) प्रजा।

रव—(पु० सं०) गुंजार। शब्द।

रवन्ना—(पु० फ़ा०) वह नौकर जो स्त्रियों के कामकाज करने या सौदा लाने को ड्योढ़ी पर रहता है। वह काग़ज़ जिस पर रवाना किये हुए माल का ब्योरा होता है। राहदारी का परवाना।

रवाँ—(वि० फ़ा०) बहता हुआ। जारी।

रवा—(पु० हि०) कण। रेज़ा।

सूजी। बारूद का दाना। घुँघरुओं में शब्द करने के लिये डालने के छर्रे। (फ़ा०) उचित। ठीक। प्रचलित। —दार=संबन्ध रखनेवाला। शुभचिन्तक। जिसमें कण हों। दानेदार।

रवाज—(फ़ा०) रस्म। प्रथा।

रवाना—(फ़ा०) जो कहीं से चल पड़ा हो। भेजा हुआ। रवानी =बहाव। प्रवाह। रवानगी =बिदाई। रुख़सती।

रवायत—(स्त्री० अ०) कहानी। कहावत।

रवि—(पु० सं०) सूर्य। —वार=एतवार। आदित्य-वार।

रविश—(फ़ा०) गति। चाल। तरीक़ा। ढंग।

रवैया—(पु० फ़ा०) चाल-चलन। तरीक़ा। ढंग।

रश्क—(पु० फ़ा०) ईर्ष्या। डाह।

रश्मि—(पु० सं०) किरण।

रस—(पु० सं०) खाने की चीज़ का स्वाद। किसी पदार्थ का तत्व या सार। साहित्य में नौ प्रकार की चित्तवृत्ति या अनु-भव। सुख का अनुभव। आ-नन्द। प्रेम। पानी। शोरवा। —गुल्ला=एक प्रकार की छेने की मिठाई। —दार= रसवाला। स्वादिष्ट। रसा-दार=शोरबेदार।

रसना—(स्त्री० सं०) जीभ। टपकना।

रसाई—(फ़ा०) पहुँच।

रसातल—(पु० सं०) पृथ्वी के बहुत नीचे का लोक। पाताल।

रसायन—(पु० सं०) वह दवा जिसके खाने से आदमी बुड्ढा या बीमार न हो। धातुविद्या। —शास्त्र=वह शास्त्र जिसमें पदार्थों का विवेचन हो।

रसाल—(पु० सं०) आम। रसीला। स्वादिष्ट।

रसिक—(पु० सं०) रस लेने-वाला। काव्य-मर्मज्ञ। आनंदी। मर्मज्ञ। प्रेमी। भावुक।

—ता = परिहास। हँसी-ठट्ठा। चुहल।

रसिया—(पु० हि०) रसिक। एक प्रकार का गाना।

रसीद—(स्त्री० फ़ा०) प्राप्ति। पहुँच। प्राप्ति का प्रमाणपत्र।

रसीला—(वि० हि०) रसयुक्त। स्वादिष्ट।

रसूम—(पु० अ०) रस्म का बहुवचन। नियम। क़ानून। नेग। वह धन जो भेंट के रूप में दिया जाय। —अदालत = कोर्टफीस। स्टाम्प।

रसूल—(पु० अ०) पैगंबर।

रसोईं, रसोई—(स्त्री० हि०) बना हुआ भोजन। पाकशाला। —घर = खाना बनाने की जगह। चौका। —दारी = रसोईं करने का काम। —बरदार = भोजन ले जाने वाला। रसोइया = रसोईं बनानेवाला।

रसौत—(स्त्री० हि०) एक औषध।

रसौली—(स्त्री० देश०) एक रोग।

रस्म—(हि० अ०) रिवाज। प्रथा।

रस्सा—(पु० हि०) बहुत मोटी रस्सी। जमीन की एक नाप। रस्सी = डोरी।

रहँट—(पु० हि०) कूएँ से पानी निकालने का एक यंत्र। रहँटा = सूत कातने का चर्खा।

रहठा—(पु०) अरहर के पौधे के सूखे डंठल।

रहन—(स्त्री० हि०) रहने का ढंग। —सहन = चाल ढाल। तौर-तरीक़ा।

रहना—(क्रि० हि०) ठहरना। बसना। थमना। रुकना। उपस्थित होना। कुछ न करना। नौकरी करना।

रहम—(पु० अ०) दया। करुणा। —त = कृपा। दया। रहमान = बड़ा दयालु। परमात्मा का एक नाम।

रहरेठा—(पु० हि०) अरहर के सूखे डठल।

रहस्य—(पु० सं०) गुप्त भेद

भेद की बात। गोपनीय। जो एकांत में हुआ हो।

रहा-सहा—(वि० हि०) बचा-खुचा।

रहित—(वि० सं०) बिना। बग़ैर।

रहीम—(वि० अ०) कृपालु। दयालु।

राँगा—(पु० हि०) एक धातु।

राँड़—(स्त्री० हि०) विधवा। बेवा।

राँधना—(पु० हि०) पकाना।

राँपी—(स्त्री० देश०) मोचियों का एक औज़ार। सेंध लगाने के लिये चोरों का औज़ार।

राँभना—(क्रि० हि०) गाय का बोलना या चिल्लाना।

राई—(स्त्री० हि०) बहुत छोटी सरसों। बहुत थोड़ी मात्रा या परिमाण।

राइफल—(स्त्री० अं०) बड़ी बंदूक।

राका—(स्त्री० सं०) पूर्णिमा की रात। पूर्णमासी।

राक्षस—(पु० सं०) दैत्य। असुर। कोई दुष्ट प्राणी।

राख—(स्त्री० हि०) भस्म। ख़ाक।

राग—(पु० सं०) सांसारिक सुखों की चाह। प्रेम। गीत। गान। रागिनी=संगीत में किसी राग की पत्नी या स्त्री।

राघव—(पु० सं०) रघु के वंश में उत्पन्न व्यक्ति। श्रीरामचन्द्र।

राज—(पु० हि०) शासन। राज्य। हुकूमत। देश। राजा। राजगीर। थवई। —कन्या=राजा की पुत्री। —कर=ख़िराज। —कीय=राज्य संबंधी। —कुमार=राजा का पुत्र। —गद्दी=राजसिंहासन। राज्याभिषेक। राज्याधिकार। —गीर=मकान बनानेवाला कारीगर। —गीरी=राजगीर का पद या कार्य्य। —गृह=राजा का महल। —पत्नी=राजा की स्त्री। रानी। —पथ=राजमार्ग। बड़ी सड़क।

—पद्धति=राजपथ। राजनीति। —पुत्र=राजकुमार। —पुत्री=राजकन्या।—पुरुष =राज्य का कोई अफसर या कार्यकर्त्ता। —पूत=राजकुमार। राजपूताने में रहनेवाले क्षत्रियों के कुछ विशिष्ट वंश। —पूताना=राजस्थान नामक प्रदेश। —बाड़ी=राजा की वाटिका। राजमहल। —भक्त =राजा का भक्त। —भक्ति =राजा या राज्य के प्रति भक्ति या प्रेम। —भवन= राजा का महल। —भोग= एक प्रकार का महीन धान। —महल=राजा का महल। राजेश्वर=राजाओं का राजा। राजेश्वरी = महारानी। —वंश=राजा का कुल। राजकुल। —विद्या=राजनीति। —विद्रोह=बग़ावत।—विद्रोही=बाग़ी। —श्री= राजा का ऐश्वर्य। राजा की शोभा। —स=रजोगुण से उत्पन्न। —सत्ता=राजशक्ति। —सभा=राजा का दरबार। राजाओं की सभा। —समाज =राजमंडली। राजा लोग। —सिंहासन = राजगद्दी। —सी=राजाओं की सी शानवाला। जिसमें रजोगुण की प्रधानता हो। —सूय= एक यज्ञ का नाम। —स्थली =एक प्राचीन जनपद का नाम। —स्थान=राजपूताना। —स्व=भूमि आदि का वह कर जो राजा को दिया जाय। —हंस=एक प्रकार का हंस। राजेंद्र= राजाओं का राजा। बादशाह। राजा=किसी देश या जत्थे का प्रधान शासक। राजाधिराज=राजाओं का राजा। शाहंशाह।

राज़—(फ़ा०) भेद। रहस्य।

राज़ी—(वि० अ०) अनुकूल। सम्मत। नीरोग। खुश। सुखी। रज़ामंदी। —नामा =संधि-पत्र।

राज्ञी—(स्त्री० सं०) रानी।

राज्य—(पु० सं०) शासन। बादशाहत। —च्युत=जो राजसिंहासन से उतार या हटा दिया गया हो। राज्यभ्रष्ट। —भंग=राज्य का नाश। —व्यवस्था =राज्यनियम। क़ानून। राज्याभिषेक=राजसिंहासन पर बैठने के समय राजा का अभिषेक। राजगद्दी पर बैठने की रीति।

राणा—(पु० हि०) राजा।

रात—(स्त्री० हि०) निशा।

रानी—(स्त्री० हि०) राजा की स्त्री। मालकिन। स्त्रियों के लिये आदर-सूचक शब्द।

राम—(पु० सं०) महाराज दशरथ के पुत्र। ईश्वर। —चंद्र= अयोध्या के राजा दशरथ के बड़े पुत्र का नाम। —नवमी =चैत्र सुदी नवमी जिस दिन रामजी का जन्म हुआ था। —नामी=वह चादर, दुपट्टा या धोती जिस पर "राम राम" छपा रहता है। —बाँस=एक प्रकार का मोटा बाँस। —रज=एक प्रकार की पीली मिट्टी। —राज्य = रामचंद्रजी का शासन। अत्यंत सुखदायक शासन। —लीला=राम के चरित्रों का अभिनय। —शिला =गयाकी एक पहाड़ी।

रामानंद—(पु० सं०) एक प्रसिद्ध वैष्णव आचार्य।

रामानुज—(पु० सं०) वैष्णव मत के एक प्रसिद्ध आचार्य।

रामायण—(पु० सं०) वह ग्रंथ जिसमें रामचरित वर्णित हो। रामायणी=रामायण संबंधी।

राय—(पु० हि०) राजा। छोटा राजा या सरदार। सम्मान की एक उपाधि। भाट। सम्मति। सलाह। —बहादुर= एक प्रकार की उपाधि। —साहब=एक प्रकार की पदवी।

रायता—(सं०) दही या मट्ठे में उबाला हुआ साग।

रायल—(अं०) राजकीय। शाही।

छापने की कलों तथा काग़ज़ की एक नाप ।

रायल्टी—(अं०) किसी पुस्तक के लेखक को प्रकाशक की ओर से नियमपूर्वक मिलनेवाला पारिश्रमिक ।

राल—(स्त्री० सं०) एक प्रकार का पेड़ ।

राव—(पु० हि०) राजा । सरदार । दरबारी । भाट । कच्छ और राजपूताने के कुछ राजाओं की एक पदवी । एक प्रकार का पेड़ । —बहादुर एक प्रकार की उपाधि । —साहब=एक प्रकार की पदवी ।

रावटी—(हि०) छोलदारी । किसी चीज़ का बना हुआ छोटा घर ।

रावण—(वि० सं०) लंका का प्रसिद्ध राजा ।

राश—(फ़ा०) राशि । अनाज का ढेर ।

राशि—(स्त्री० सं०) ढेर । पुंज । किसी का उत्तराधिकार । क्रांतिवृत्त में पड़नेवाले विशिष्ट तारा-समूह जिनकी संख्या बारह है । —चक्र=राशियों का मंडल ।

राशी—(अ०) रिशवत खानेवाला । घूसखोर ।

राष्ट्र—(पु० सं०) राज्य । देश । प्रजा । —पति=किसी राष्ट्र का स्वामी । आधुनिक प्रजातंत्र शासन प्रणाली में सर्वप्रधान शासक । —विप्लव=विद्रोह । बलवा । राष्ट्रीय=राष्ट्र संबंधी । राष्ट्र का ।

रास—(पु० सं०) एक प्रकार का नाच । एक प्रकार का चलता गाना । —मंडल=श्रीकृष्ण के रासक्रीड़ा करने का स्थान । रासक्रीड़ा करनेवालों का समूह । रासधारियों का अभिनय । रासधारियों का समाज । —लीला=वह नृत्य या क्रीड़ा जो शरत-पूर्णिमा को श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ किया था । रासधारियों का कृष्णलीला

संबंधी अभिनय। (अ०) घोड़े की लगाम।

रास्त—(वि० फ़ा०) सीधा। सरल। सही। ठीक। उचित। अनुकूल। —गो=सच बोलनेवाला। —बाज़ी=सचाई। ईमानदारी।

रास्ता—(फ़ा०) राह। पथ।

राह—(स्त्री० फ़ा०) मार्ग। रास्ता। —खर्च=रास्ते में होनेवाला खर्च। —गीर=मुसाफ़िर। पथिक। —ज़न=डाकू। लुटेरा। —ज़नी=डकैती। लूट। —दारी=राह पर चलने का महसूल। —रीति=राह-रस्म। व्यवहार। परिचय। राही=मुसाफ़िर। यात्री।

राहत—(फ़ा०) आराम। सुख।

रिंग—(स्त्री० अं०) अँगूठी। छल्ला। चूड़ी। घेरा।

रिंद—(पु० फ़ा०) धार्मिक बंधनों को न माननेवाला पुरुष। मनमौजी आदमी। मतवाला।

रिआयत—(स्त्री० अ०) कोमल और दयापूर्ण व्यवहार। नरमी। कमी। न्यूनता। ध्यान। विचार।

रिआया—(अ०) प्रजा।

रिकवँछ—(स्त्री० देश०) एक भोज्य पदार्थ।

रिकूशा—(स्त्री० अं०) एक गाड़ी, जिसे आदमी खींचता है।

रिक्त—(वि० सं०) खाली। शून्य।

रिज़क—(पु० अ०) रोज़ी। जीविका।

रिज़र्व—(वि० अं०) सुरक्षित।

रिज़ालत—(अ०) नालायक़ी। कमीनापन।

रिजेंट—(पु० अं०) राजा की नाबालिग़ी में राजकाज चलाने के लिये अंग्रेज़ सरकार की तरफ़ से नियुक्त प्रतिनिधि।

रिझाना—(क्रि० हि०) किसी को अपने ऊपर खुश करना। मोहित करना। रिझाव=प्रेम।

रिपु—(पु० सं०) शत्रु। —ता=दुश्मनी।

रिपोर्ट—(स्त्री० अं०) किसी घटना का सविस्तर वर्णन। सूचना। विवरण। बातों का ब्योरा। —र=रिपोर्ट करनेवाला। संवाददाता।

रियासत—(स्त्री० अ०) राज्य। अमलदारी। अमीरी। वैभव।

रिवाज—(पु० अ०) रस्म। प्रथा।

रिश्ता—(पु० फ़ा०) नाता। संबंध। रिश्तेदार=संबंधी। नातेदार। रिश्तेदारी=नाता। संबंध। रिश्तेमंद=संबंधी। नातेदार।

रिश्वत—(स्त्री० अ०) घूस। लाँच। —ख़ोर=रिश्वत लेनेवाला।—ख़ोरी=रिश्वत खाना।

रिस—(स्त्री०हि०) क्रोध। गुस्सा।

रिसालदार—(पु० फ़ा०) घुड़सवार सेना का अफ़सर।

रिसाला—(पु० फ़ा०) घुड़सवारों की सेना। (अ०) छोटी किताब। मासिक-पत्र।

रिहननामा—(पु० फ़ा०) गिरवीं रखे जाने की शर्तों का लेख।

रिहर्सल—(पु० अं०) नाटक के अभिनय का अभ्यास। वह अभ्यास जो किसी कार्य को ठीक समय पर करने से पहले किया जाय।

रिहल—(स्त्री० अ०) काठ की बनी हुई कैंचीनुमा चौकी।

रिहा—(वि० फ़ा०) मुक्त। छूटा हुआ। —ई=छुटकारा। मुक्ति।

रींधना—(क्रि० हि०) राँधना। पकाना।

रीझना—(क्रि० हि०) प्रसन्न होना। मोहित होना।

रीठा—(पु० हि०) एक बड़ा जंगली वृक्ष और उसका फल।

रीढ़—(स्त्री० हि०) पीठ के बीचो-बीच खड़ी हड्डी। मेरुदंड।

रीति—(स्त्री० सं०) प्रकार। तरह। रस्म। रिवाज। क़ायदा। साहित्य में किसी विषय का वर्णन।

रीम—(स्त्री० अं०) काग़ज़ की

वह गड्डी जिसमें बीस दस्ते होते हैं।

रुंड—(पु० सं०) विना सिर का धड़। विना हाथ पैर का शरीर।

रुंधना—(क्रि० हि०) घेरा जाना।

रुआव—(पु० अ०) धाक। रोब। भय। डर।

रुक्न—(अ०) स्तम्भ। बल। शान।

रुकना—(क्रि० हि०) आगे न बढ़ सकना। अटकना। काम आगे न होना। सिलसिला आगे न चलना।

रुकाव—(पु० हि०) रुकावट। रोक।

रुक्का—(पु० अ०) छोटा पत्र या चिट्ठा। वह लेख जो हुंडी या कर्ज़ लेनेवाले रुपया लेते समय लिखकर महाजन को देते हैं।

रुख़—(पु० फ़ा०) गाल। मुख। चेहरा। चेहरे का भाव। आकृति। मन की इच्छा जो मुख की आकृति से प्रकट हो। मेहरबानी की नज़र। सामने का भाग। शतरंज का एक मोहरा। तरफ़। ओर। सामने। बाज़ार का भाव। —सार=गाल। कपोल।

रुख़सत—(फ़ा०) आज्ञा। विदाई। काम से छुट्टी। अवकाश। (वि०) जो कहीं से चल पड़ा हो। रुख़सती =विदाई।

रुखाई—(फ़ा० हि०) रुखापन। शुष्कता। खुश्की। व्यवहार की कठोरता।

रुखानी—(स्त्री० हि०) बढ़इयों का एक औज़ार।

रुग्न—(वि० सं०) बीमार।

रुचि—(पु० सं०) प्रवृत्ति। तबीयत। प्रेम। भूख। स्वाद। (वि०) शोभा के अनुकूल। —कर =अच्छा लगनेवाला। —कारक=रुचि उत्पन्न करनेवाला। बढ़िया स्वादवाला। —कारी=अच्छे स्वादवाला। मनोहर। —र=सुंदर। अच्छा।

रुतबा—(पु० अ०) पद । ओहदा । इज़्ज़त । प्रतिष्ठा ।

रुदन—(पु० हि०) रोना । विलाप करना ।

रुद्र—(पु० सं०) भयानक । डरावना । रुद्राक्ष=एक वृक्ष जिसके के फल की माला बनती है ।

रुधिर—(पु० सं०) लहू । ख़ून ।

रुपया—(पु० हि०) चाँदी का सिक्का ।

रुपहला—(वि० हि०) चाँदी का सा ।

रुबाई—(स्त्री० अ०) उर्दू या फ़ारसी की एक प्रकार की कविता । एक प्रकार का गाना ।

रुमाली—(स्त्री० फ़ा०) एक प्रकार का लँगोट । मुगदर हिलाने का एक हाथ ।

रुलाई—(स्त्री० हि०) रोने की प्रवृत्ति । रुलाना=दूसरे को रोने में प्रवृत्त करना । इधर-उधर फिराना । नष्ट करना ।

रुसवा—(वि० फ़ा०) बदनाम । निंदित । —ई=अपमान और दुर्गति ।

रुसूख़—(अ०) मेल-जोल ।

रूँधना—(क्रि० हि०) कँटीले झाड़ आदि से घेरना । रोकना । आने जाने का मार्ग बंद करना ।

रू—(पु० फ़ा०) मुँह । सामना । —पोश=गुप्त । फरार । —पोशी=छिपना । —बरू =सामने । —बकार=मुक़दमे की पेशी । आज्ञापत्र ।

रूई—(स्त्री० हि०)कपास के डोंडे या कोश के अंदर का घूआ । रूईदार=जिसमें रूई भरी गई हो ।

रूक्ष—(वि० सं०) रूखा ।

रूखा—(पु० हि०) सीठा । नीरस । उदासीन । कठोर । विरक्त । —पन=नीरसता । खुश्की । कठोरता । उदासीनता । स्वादहीनता ।

रूठना—(क्रि० हि०) नाराज़ होना । रूसना ।

रूढ़ि—(स्त्री० सं०) परम्परा से चली आती हुई। प्रथा।

रूदाद—(स्त्री० फ़ा०) समाचार। हाल। दशा। विवरण। अदालत की कार्रवाई। मुकदमे का रंग-ढंग।

रूप—(पु० सं०) शकल। सूरत। आकार। स्वभाव। सुंदरता। वेष। दशा। समान। भेद। चिह्न। चाँदी। ख़ूबसूरत। —क=मूर्त्ति। सादृश्य। दृश्यकाव्य। संगीत में एक ताल। —गर्विता=वह स्त्री जिसे रूप का अभिमान हो —वंत=ख़ूबसूरत। सुंदर। —वती=सुंदरी। रूपी=तुल्य। सदृश। —रेखा=आकार-प्रकार।

रूम—(पु० फ़ा०) टर्की या तुर्की देश का नाम।

रूमाल—(पु० फ़ा०) कपड़े का वह चौकोर टुकड़ा जो हाथ, मुँह पोंछने के काम आता है। चौकोना शाल।

रूल—(पु० अं०) क़ायदा। लकीर खींचने का डंडा। लकीर। शासन। —र=लकीर खींचने का डंडा। पैमाना। शासक। रूलिंग=लकीर खींचना। रूलिंग चीफ़=बृटिश गवर्नमेंट के मातहत पर अपने राज्य में स्वतंत्र शासक राजा महाराजा।

रूस—(पु० फ़ा०) एक देश का नाम। रूसी=रूस देश का रहनेवाला। रूस की भाषा।

रूसा—(पु० हि०) एक पौधा। अड़ूसा।

रूसी—(स्त्री० हि०) सिर के बालों में जमी हुई मैल।

रूह—(स्त्री० अ०) आत्मा। सार।

रेंकना—(क्रि० अनु०) गदहे का बोलना। बुरे ढंग से गाना।

रेंगना—(क्रि० हि०) कीड़ों आदि का चलना। धीरे धीरे चलना।

रेंट—(पु० देश०) नाक का मल।

रेंड़—(पु० हि०) एक पौधा। —ना=पौधे में डंठल

निकलना। रेंड़ो=अंडी या रेंड़ का बीज।

रेख़ता—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का गाना। उर्दू का पुराना नाम।

रेख—(स्त्री० हि०) मोछों के स्थान पर बारीक बालों की लकीर। —भिनना=मोछें निकलना।

रेखा—(स्त्री० सं०) लकीर। किसी वस्तु का सूचक चिह्न। गणना। शुमार। आकार। सूरत। हथेली, तलवे आदि में पड़ी हुई लकीरें। —गणित=गणित का वह विभाग जिसमें रेखाओं द्वारा कुछ सिद्धांत निर्द्धारित किए जाते हैं। रेखाङ्कित = चित्रित। —चित्र=स्केच। वह चित्र जिसमें रंग न भरा गया हो। रेखांश=यामोत्तर वृत्त की एक-एक डिग्री या अंश।

रेग—(स्त्री० फ़ा०) बालू। रेगिस्तान=बालू का मैदान। मरुदेश।

रेचक—(वि० सं०) दस्तावर। प्राणायाम की तीसरी क्रिया।

रेज़ा—(पु० फ़ा०) किसी वस्तु का बहुत छोटा टुकड़ा। सुनारों का एक औज़ार। नग। अदद।

रेज़िश—(स्त्री० फ़ा०) ज़ुकाम।

रेज़ीडेंट—(पु० अं०) देशी राज्यों में अँगरेज़ी राज्य का प्रतिनिधि।

रेज़ीमेंट—(स्त्री० अं०) सेना का एक भाग।

रेट—(पु० अं०) भाव। निर्ख़। चाल। गति।

रेडियम—(पु० अं०) एक धातु।

रेणु—(स्त्री० सं०) धूल। बालू। कणिका।

रेत—(स्त्री० हि०) बालू। रेतीला =बालूवाला। बालुकामय।

रेतना—(क्रि० हि०) रेती नाम के औज़ार से रगड़ना। रेती =रेतने का औज़ार।

रेल—(स्त्री० अं०) लोहे की पटरी जिस पर रेलगाड़ी के पहिये चलते हैं। —गाड़ी =भाप के ज़ोर से चलनेवाली

गाड़ी । (हि०) बहाव । धारा । भरमार । आधिक्य । —ना=ढकेलना । धक्का देना । अधिक भोजन करना । अधिक होना । —पेल=भीड़ । भरमार । अधिकता । —वे=रेल-गाड़ी की सड़क । रेल का मुहकमा । रेला=तबले पर महीन और सुंदर बोलों को बजाने की रीति । बहाव । धारा । धक्कम-धक्का । अधिकता । रेलिंग=रेल की पटरियों पर छत का भार रखना ।

रेवड़ी—(स्त्री० देश०) पगी हुई चीनी या गुड़ की टिकिया, जिस पर सफेद तिल चिपकाया रहता है ।

रेवाँ—(पु० हि०) एक कीड़ा ।

रेशा—(पु० हि०) तंतु या महीन सूत ।

रेशम—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का महीन चमकीला रेशा । रेशमी=रेशम का बना हुआ ।

रेह—(स्त्री०) खार मिली हुई मिट्टी ।

रेहन—(फ़ा०) बंधक । गिरवी । —दार=वह जिसके पास कोई जायदाद रेहन रखी हो । —नामा=वह काग़ज़ जिस पर रेहन की शर्तें लिखी हों ।

रैंगलर—(पु० अं०) इंगलैंड में प्रचलित सर्वोच्च गणित परीक्षा में उत्तीर्ण व्यक्ति ।

रैदास—(पु०) प्रसिद्ध भक्त जो चमार था । चमार । रैदासी=एक प्रकार का मोटा धान । रैदास भक्त के संप्रदाय का ।

रैयत—(स्त्री० अ०) प्रजा । रिआया ।

रोंगटा—(पु० हि०) मनुष्य के सिर को छोड़कर और सारे शरीर के बाल ।

रोआब—(पु० अ०) प्रभाव । आतंक ।

रोक—(स्त्री० हि०) गति में बाधा । अटकाव । काम में बाधा । रोकनेवाली वस्तु ।

—टोक=बाधा। प्रतिबंध। मनाही। निषेध।

रोकड़—(स्त्री० हि०) नक़द रुपया। जमा। धन। पूँजी। —वही=वह बही या किताब जिसमें नक़द रुपये का लेन-देन लिखा रहता है। —बिक्री=नक़द दाम पर की हुई बिक्री। रोकड़िया=रोकड़ रखनेवाला। मुनीम। ख़ज़ांची।

रोकना—(क्रि हि०) चलने या बढ़ने न देना।

रोग—(पु० सं०) बीमारी। मर्ज़। —ग्रस्त=रोग से पीड़ित। रोगी=बीमार।

रोगन—(अ०)तेल। चिकनाई। पतला लेप। पालिश। —दार =पालिशदार। चमकीला। रोगनी=रोगन किया हुआ। रोग़नदार।

रोचक—(वि० सं०) रुचिकारक। अच्छा लगनेवाला। —ता= मनोहरता।

रोज़—(पु० फ़ा०) दिन। नित्य। —गार=व्यापार। व्यवसाय। कारबार। —गारी= व्यापारी। सौदागर। —नामचा=दिनचर्य्या की पुस्तक। खाता। —मर्रा= प्रति दिन। नित्य। नित्य के व्यवहार। रोज़ा=उपवास। व्रत। वह व्रत जो मुसलमान रमज़ान के महीने में करते हैं। रोज़ी=नित्य का खाना। जीविका। रोज़गार। रोज़ी-दार=वह जिसको रोज़ाना ख़र्च के लिये कुछ मिलता है। रोज़ीना=रोज़ का। नित्य का।

रोट—(पु० हि०) गेहूँ के आटे की बहुत मोटी रोटी। रोटी =चपोती। फुलका। भोजन।

रोड़ा—(पु० हि०) ईंट या पत्थर का बड़ा ढेला। बड़ा कंकड़।

रोदन—(पु० सं०) विलाप करना। रोना।

रोदा—(फ़ा० हि०) कमान की डोरी। चिल्ला। सितार के

परदे बाँधने की बारीक ताँत।

रोना—(क्रि॰ हि॰) रुदन करना। रंज मानना। पछताना। चिड़चिड़ा।

रोपना—(क्रि॰ हि॰) लगाना। स्थापित करना। बोना। हाथ से थापना।

रोब—(पु॰ अ॰) प्रभाव। आतंक। —दार=प्रभाव-शाली।

रोम—(पु॰ हि॰) देह के बाल। रोयाँ। —लता=रोमावलि। रोमांच=आनंद से रोयों का उभर आना। पुलक। भय से रोंगटे खड़े होना। रोमांचित=पुलकित। भय से जिसके रोंगटे खड़े हो गये हों। रोयाँ=रोम। लोम।

रोमन—(अं॰) प्राचीन यूनान के रोम देश में प्रचलित। —कैथलिक=ईसाइयों का प्राचीन संप्रदाय।

रोलर—(पु॰ अं॰) बेलन। —फ्रेम=बेलन की कमानी। —मोल्ड=सरेस का बेलन ढालने का साँचा।

रोली—(स्त्री॰ हि॰) चूने हल्दी से बनी हुई लाल बुकनी।

रोवाँसा—(वि॰ हि॰) जो रो देना चाहता हो।

रोशन—(वि॰ फ़ा॰) जलता हुआ। प्रकाशित। मशहूर। प्रसिद्ध। प्रकट। ज़ाहिर। —चौकी=फूँककर बजाने का एक बाजा। नफ़ीरी। —दान=प्रकाश आने का छिद्र। मोखा। रोशनाई=स्याही। रोशनी=उजाला। दीपक। ज्ञान का प्रकाश।

रोष—(पु॰ सं॰) क्रोध। गुस्सा। चिढ़। द्वेष। जोश।

रौ—(स्त्री॰ हि॰) रंग-ढंग। रवैया। प्रवाह। झुकाव।

रौंदना—(क्रि॰ हि॰) पैरों से कुचलना। ख़ूब पीटना।

रौ—(स्त्री॰ फ़ा॰) गति। चाल। वेग। झोंक। पानी का बहाव। किसी बात की धुन। चाल। ढंग।

रौग़न—(पु० अ०) तेल। लाख आदि का बना हुआ पक्का रंग। रौग़नी=तेल का। रौग़न फेरा हुआ।

रौज़ा—(पु० अ०) बाग़। बागीचा। समाधि।

रौद्र—(वि० सं०) भयंकर। डरावना।

रौनक़—(स्त्री० अ०) चमक दमक। कांति। विकास। शोभा।

रौरव—(वि० सं०) एक नरक।

रौला—(पु० हि०) हल्ला। शोर। हलचल।

ल

ल—हिंदी-वर्णमाला का अट्ठाईसवाँ वर्ण। जिसका उच्चारण-स्थान दाँत है।

लंकलाट—(पु० अं० लांग क्लाथ) एक प्रकार का मोटा बढ़िया कपड़ा।

लंका—(स्त्री० सं०) भारत के दक्षिण का एक टापू।

लंग—(फ़ा०) लँगड़ा।

लँगड़ा—(वि० फ़ा०) जिसका एक पैर बेकाम या टूटा हो। जिसका एक पाया टूटा हो। एक प्रकार का आम। —ना=लंगड़े होकर चलना। लंगड़ी=कुश्ती का एक दाव।

लंगर—(पु० फ़ा०) लोहे का एक प्रकार का काँटा जिसका उपयोग जहाजों और बड़ी नावों को खड़ा करने में होता है। —खाना (पंजाबी) = वह स्थान जहाँ से दरिद्रों को बना बनाया भोजन बाँटा जाता है। —गाह=किनारे पर का वह स्थान जहाँ लंगर डालकर जहाज़ ठहराये जाते हैं।

लंगूर—(पु० हि०) बन्दर। पूँछ। एक प्रकार का बड़ा बन्दर।

लँगोट, लँगोटा—(पु० हि०) कमर पर बाँधने का एक प्रकार का बना हुआ वस्त्र। लँगोटी=कोपीन। कछनी।

लंघन—(पु० सं०) उपवास। अनाहार। लंघनीय=लाँघने के योग्य।

लंठ—(वि० हिं०) मूर्ख। उजड्ड।

लँडूरा—(वि० देश०) बिना पूँछ का।

लंप—(पु० अं०) दीपक। चिराग़।

लंपट—(पु० सं०) व्यभिचारी। कामी। —ता = दुराचार। कुकर्म।

लंबा—(वि० हि०) विशाल। बड़ा। ऊँचा। विस्तृत। लम्बाई=लम्बा होने का भाव। लंबी=लंबा का स्त्री-लिंग। लंबोदर=पेटू।

लकड़बग्घा—(पु० हि०) एक जंगली जन्तु।

लकड़हारा—(पु० हि०) जंगल से लकड़ी तोड़कर बेंचनेवाला।

लकड़ी—(स्त्री० हि०) काठ। काष्ठ। ईंधन। लाठी।

लक़दक़—(वि० फ़ा०) मैदान जिसमें पेड़ आदि न हों। साफ़-सुथरा।

लक़ब—(पु० अ०) उपाधि। पदवी।

लक़लक़—(पु० अ०) लंबी गर्दन का जल-पक्षी। ढेंक। (वि०) बहुत दुबला पतला।

लक़वा—(पु० अ०) एक वात रोग।

लकीर—(स्त्री० हि०) रेखा। खत। धारी। पंक्ति। सतर।

लक्कड़—(पु० हि०) काठ का बड़ा कुंदा।

लक्क़ा—(पु० अ०) एक प्रकार का कबूतर।

लक्ष—(वि० सं०) एक लाख। सौ हज़ार।

लक्षण—निशान। आसार। चाल-ढाल। लक्षणा=शब्द की वह शक्ति जिससे उसका अभिप्राय सूचित होता है। लक्षित=बतलाया हुआ।

देखा हुआ। जिसपर कोई चिह्न बना हो। वह अर्थ जो शब्द की लक्षणा शक्ति द्वारा ज्ञात होता है।

लक्ष्मी—(स्त्री० सं०) विष्णु की पत्नी। धन की अधिष्ठात्री देवी। धन-सम्पत्ति। दौलत। शोभा।

लक्ष्य—(पु० सं०) निशाना। वह जिसपर आक्षेप किया जाय। उद्देश्य। —भेद=एक प्रकार का निशाना।

लख़लख़ा—(पु० फ़ा०) मूर्च्छा दूर करने का सुगंधित द्रव्य।

लगन—(स्त्री० हि०) लौ। प्रेम। संबंध।

लगना—(क्रि० हि०) सटना। जुड़ना। मिलना। चिपकाया जाना। शामिल होना। मालूम होना। सम्बन्ध या रिश्ते में कुछ होना। चोट पहुँचना। पोता जाना। शुरू होना। चलना। सड़ना। असर होना। पीछे-पीछे चलना। चिमटना।

लगभग—(क्रि० हि०) प्रायः। क़रीब-क़रीब।

लगवाना—(क्रि० हि०) लगाने का काम दूसरे से कराना।

लगातार—(क्रि० हि०) निरंतर। सिलसिलेवार।

लगान—(पु० हि०) लगने या लगाने की क्रिया या भाव। लाग। भूमि पर लगने वाला कर। राजस्व।

लगाना—(क्रि० हि०) सटाना। मिलाना। जोड़ना। चिपकाना या गड़ाना। शामिल करना। उगाना। ख़र्च करना। पोतना। चोट पहुँचाना। काम में लाना। अभियोग लगाना। धारण करना। चुगली खाना। गाड़ना। पास ले जाना। छुआना। बन्द करना। दाँव पर रखना।

लगाम—(स्त्री० फ़ा०) रास। बाग।

लगालगी—(स्त्री० हि०) लगन। प्रेम। सम्बन्ध। मेल-जोल।

लगाव—(पु० हि०) सम्बन्ध। वास्ता। —ट=सम्बन्ध। प्रेम

लग्गा—(पु० हि०) लम्बा बाँस। वृक्षों से फल आदि तोड़ने का लम्बा बाँस। कार्य आरंभ करना। लग्गी=लम्बा बाँस। लग्घड़=बा . । एक प्रकार का चीता।

लग्न—(पु० सं०) मुहूर्त्त। विवाह का समय। विवाह। शादी। विवाह के दिन। (वि०) लगा हुआ। लौ। प्रेम। सम्बन्ध।

लघु—(वि० सं०) छोटा। थोड़ा। हलका। नीच। —ता=छोटापन।

लचक—(स्त्री० हि०) झुकाव।

लच्छा—(पु० अनु०) तारों या डोरों आदि का समूह। एक मिठाई। एक प्रकार का गहना। लच्छेदार=लच्छों वाला। दिलचस्प (बात)।

लज़ीज़—(वि० अ०) स्वादिष्ट। लज़्ज़तदार।

लज़्ज़त—(स्त्री० अ०) स्वाद। ज़ायका। —दार=स्वादिष्ट।

लज्जा—(स्त्री० सं०) लाज। शर्म। इज़्ज़त। —वंत=शर्मीला। लजालू का पौधा। —वती=लज्जाशील। शर्मीली। लजालू का पौधा। —शील=जिसमें लज्जा हो। लजीला। —हीन=बेहया। लज्जित=शर्माया हुआ। लजाना=शर्मिंदा होना। लाज=शर्म।

लट—(स्त्री० हि०) केशपाश। अलक। परस्पर चिमटे हुए बाल।

लटक—(स्त्री० हि०) झुकाव। लुभावनी चाल। अंगभंगी। लटकन=लटकने वाली चीज़। लटकना=झूलना। टँगना। लचकना। फाँसी चढ़ना। लटका=गति। चाल। हाव-भाव। बातचीत करने में स्वर का बनावटी ढंग। टोटका। एक प्रकार का चलता गाना।

लटकाना = टाँगना। इन्तज़ार कराना। देर कराना।

लटोरा—(पु० हि०) एक प्रकार का छोटा पेड़।

लट्टू—(पु० हि०) एक खिलौना।

लट्ठ—(पु० हि०) बड़ी लाठी। —बाज़ = लाठी बाँधने वाला। —बाज़ी = लाठी की लड़ाई या मारपीट। —मार = अप्रिय और कठोर। कड़वा। लट्ठा = शहतीर। कड़ो। लकड़ी का खंभा। एक प्रकार का मोटा कपड़ा। ज़मीन नापने का पैमाना। लट्ठाबन्दी = ज़मीन की साधारण नाप। लठैत = लट्ठबाज़।

लड़का—(पु० हि०) बालक। पुत्र। —बाला = संतान। औलाद। परिवार। लड़की = बालिका। कन्या। पुत्री। लड़कपन = बाल्यावस्था। चंचलता।

लड़खड़ाना—(क्रि० हि०) डगमगाना। डिगना।

लड़ना—(क्रि० हि०) युद्ध करना। भिड़ना। कुश्ती करना। झगड़ा करना। बहस करना। टकराना। मेल मिल जाना। किसी स्थान पर पड़ना। लड़ाई = भिड़ंत। युद्ध। कुश्ती। बहस। टक्कर। विरोध। दुश्मनी। लड़ाकू = लड़ाई में काम आनेवाला। लड़ाना = लड़ने का काम दूसरे से कराना। कलह के लिये उद्यत करना। भिड़ाना। लक्ष्य पर पहुँचाना। परस्पर उलझाना। दुलार करना।

लड्डू—(पु० हि०) एक मिठाई। मोदक।

लत—(स्त्री० हि०) बुरी आदत।

लता—(स्त्री० सं०) वल्ली। बेल। —कुंज = लताओं से छाया हुआ स्थान। —गृह = लताओं से मंडप की तरह छाया हुआ स्थान। —भवन = लताओं का कुंज। —मंडप = छाई हुई लताओं से बना हुआ मंडप या घर। लतर =

बेल, बल्ली लतरा। लतरी=एक प्रकार की घास और अन्न।

लतीफ़—(वि० अ०) दिलचस्प। बढ़िया। मनोहर। लतीफ़ा=चुटकुला। हँसी की बात। अनूठी बात।

लत्ता—(पु० हि०) चीथड़ा। कपड़े का टुकड़ा।

लत्ती—(स्त्री० हि०) पशुओं का पाद-प्रहार। लात मारने की क्रिया। कपड़े की लंबी धज्जी। पतंग का पुछिल्ला।

लथपथ—(वि० अनु०) भीगा हुआ। सराबोर। पानी या कीचड़ आदि में सना हुआ।

लथाड़—(स्त्री० अनु०) चपेट। मार। डाँट-डपट।

लथेड़ना—(क्रि० अनु०) कीचड़ आदि से लपेटना। हराना। थकाना। भला-बुरा कहना।

लदना—(क्रि० हि०) बोझ ऊपर लेना। पूर्ण होना। बोझ भरा जाना। लदाना=लदाने का काम दूसरे से कराना। लदा-फँदा=बोझ से भरा या लदा हुआ। लदाव=बोझ। लद्दू=बोझ ढोनेवाला।

लपक—(स्त्री० अनु०) ज्वाला। चमक। वेग। फुरती। —ना=तुरंत दौड़ पड़ना। झपटना।

लपट—(स्त्री० हि०) ज्वाला। आग की लौ। आँच। —ना=चिमटना। सटना। घिर जाना। लगा रहना।

लपलपाना—(क्रि० अनु०) झलकना। फटकारना। चमचमाना। लपलपाहट=चमक।

लपसी—(स्त्री० हि०) थोड़े घी का हलुवा। गीली गाढ़ी वस्तु। लपटा।

लपेट—(स्त्री० हि०) फेरा। तह की मोड़। घेरा। उलझन। बंधन। —ना=बाँधना। पकड़ में कर लेना। झंझट में फँसाना। लेपन करना।

लफंगा—(वि० फ़ा०) लंपट। आवारा। कुमार्गी।

लफ़्ज़—(पु० अ०) शब्द। बोल।

बात । लफ़्ज़ी = शाब्दिक ।
लफ़्फ़ाज़ = बातूनी । लफ़्फ़ाज़ी
= डींग मारना ।
लब—(पु० फ़ा०) ओंठ । ओष्ठ ।
लबड़धोंधों—(स्त्री० हि०) झूठ-
मूठ का हल्ला । बदइंतज़ामी ।
अन्याय । बेईमानी की चाल ।
लबादा—(पु० फ़ा०) रुईदार
चोग़ा । अबा । चोग़ा ।
लबालब—(क्रि० फ़ा०) छलकता
हुआ ।
लब्ध—(वि० सं०) पाया हुआ ।
प्राप्त । कमाया हुआ । भाग
करने से आया हुआ फल ।
—प्रतिष्ठ = सम्मानित । जिसने
प्रतिष्ठा पाई हो । लब्धि
= प्राप्ति । लाभ । हिसाब का
जवाब ।
लमहः—(अ०) क्षण ।
लय—(पु० सं०) प्रवेश । विलीन
होना । ध्यान में डूबना ।
लगन । प्रेम । प्रलय । मिल
जाना । नाच, गाने और
बाजे का मेल । विश्राम ।
मूर्च्छा । गाने का स्वर । गीत
गाने का ढंग या तर्ज़ ।
लरज़ा—(पु० फ़ा०) कँपकँपी ।
भूकंप । जूड़ी ।
ललकार—(स्त्री० हि०) हाँक ।
लड़ने का बढ़ावा । —ना
= हाँक लगाना । लड़ने के
लिये बढ़ावा देना । चैलेंज ।
ललचाना—(क्रि० हि०)
लुभाना ।
ललना—(स्त्री० सं०) स्त्री ।
ललाट—(पु० सं०) मस्तक ।
माथा । भाग्य का लेख ।
—पटल = मस्तक का तल ।
ललाम—(पु० सं०) सुन्दर । लाल
रंग का
ललित—(वि० सं०) सुंदर ।
प्यारा । —कला = वे कलायें
या विद्यायें जिनके व्यक्त
करने में किसी प्रकार के
सौन्दर्य की अपेक्षा हो ।
लल्लो चप्पो—(स्त्री० हि०)
चिकनी चुपड़ी बात ।
लव—(पु० सं०) बहुत थोड़ी
मात्रा । लगन । प्रेम ।

—लीन=तन्मय। मग्न।
—लेश=ज़रा-सा।
लवण—(पु० सं०) नमक।
लवाज़मा—(पु० अ०) साथ में रहनेवाली भीड़ या असबाब। लवाज़मत=सामग्री। उपकरण।
लशकर—(पु० फ़ा०) सेना। फ़ौज। दल। छावनी। लशकरी=सेना सम्बन्धी। सिपाही।
लस—(पु० सं०) चिपचिपाहट। लासा। आकर्षण। —दार=जिसमें लस हो। —ना=चिपकाना। —लसा=लसदार। चिपचिपा। लसी=लस। आकर्षण। फ़ायदे का डौल। दूध और पानी मिला शरबत।
लसोड़ा—(पु० हि०) एक प्रकार का छोटा पेड़।
लस्टम पस्टम—(पु० देश०) किसी न किसी तरह से।
लहँगा—(पु० हि०) स्त्रियों का एक घेरदार पहनावा।
लहकना—(क्रि० हि०) झोंके खाना। लहराना। हवा का बहना। दहकना। लपकना। उत्कंठित होना।
लहजा—(पु० अ०) स्वर। लय।
लहज़ा—(अ०) पल। क्षण।
लहना बही—(पु० हि०) वह बही जिसमें ऋण लेने वालों के नाम और रक़में लिखी जाती हैं।
लहमा—(पु० अ०) पल। क्षण।
लहर—(स्त्री० हि०) बड़ा हिलोरा। मौज। जोश। झोंका। आनंद की उमंग। आवाज़ की गूँज। वक्रगति। हवा का झोंका। —दार=जो बल खाता गया हो। लहरा=लहर। तरंग। बाजों की एक गति। लहराना=लहरें खाना। हिलोरें मारना। झोंका खाते हुये चलना। लपकना। दहकना। शोभित होना। लहरिया=लहरदार। एक प्रकार का कपड़ा। —दार=जिसमें

लहरिया बना हो। लहरी=लहर। हिलोर। मौज। आनन्द। लहर-बहर=मौज।

लहलहा—(वि० हिं०) लहलहाता हुआ। हरा-भरा। प्रफुल्ल। हृष्ट-पुष्ट। —ना=हरा-भरा होना। खुशी से भरना।

लहसुन—(पु० हिं०) एक पौधा और उसकी गाँठ। लहसुनियाँ=एक बहुमूल्य रत्न या पत्थर।

लहालोट—(वि० हिं०) हँसी से लोटता हुआ। उल्लास-मग्न।

लहू—(पु० हिं०) खून। लोहू।

लाँग—(स्त्री० हिं०) काछ।

लाँगप्राइमर—(पु० अं०) एक प्रकार का टाइप।

लाँघना—(क्रि० हिं०) नाँघना। डाँकना। किसी वस्तु को उछलकर पार करना।

लाँच—(स्त्री० देश०) रिशवत। घूस।

लांछन—(पु० सं०) दाग़। कलंक।

लॉ—(पु० अं०) राजनियम या क़ानून। व्यवहारशास्त्र।

लाइट—(अं०) प्रकाश। हलका। —हाउस=प्रकाशस्तंभ।

लाइन—(स्त्री० अं०) क़तार। पेशा। लकीर। लैन। रेल की सड़क।

लाक्षणिक—(वि० सं०) जिससे लक्षण प्रकट हो।

लाइन क्लियर—(पु० अं०) रेलवे में संकेत।

लाइफ़—(स्त्री० अं०) जीवन। जीवन-चरित्र।

लाइफ़ बॉय—(पु० अं०) एक प्रकार का यंत्र।

लाइफ़ बोट—(स्त्री० अं०) एक प्रकार की नाव।

लाइब्रेरी—(स्त्री० अं०) पुस्तकालय।

लाक्षा—(स्त्री सं०) लाख। लाह। —गृह=लाख का घर।

लाइसेन्स—(पु० अं०) आज्ञापत्र। अधिकारपत्र।

लॉकअप—(पु० अं०) हवालात।

लाकलाम—(अ०) निस्सन्देह ।

लाकेट—(पु० अं०) लटकन ।

लागडाँट—(स्त्री० हि०) प्रतियोगिता ।

लागत—(स्त्री० हि०) वह खर्च जो किसी चीज़ की तैयारी या बनाने में लगे ।

लागू—(वि० हि०) चरितार्थ होनेवाला । (अं०) फिट ।

लाचार—(वि० फ़ा०) मजबूर । विवश होकर । लाचारी=विवशता । मजबूरी ।

लाज—(स्त्री० हि०) लज्जा । शर्म । खील ।

लाजवाब—(अ०) बेजोड़ । अनुपम । चुप । खामोश ।

लाजवर्द—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का प्रसिद्ध क़ीमती पत्थर । रावटी । विलायती नील ।

लाज़िम—(वि० अ०) उचित । मुनासिब । लाज़िमी=ज़रूरी ।

लाट—(पु० अं० लार्ड) गवर्नर । किसी प्रांत या देश का सबसे बड़ा शासक । (स्त्री०) मोटा और ऊँचा खंभा ।

लाठी—(स्त्री० हि०) डंडा । लकड़ी ।

लाड़—(पु० हि०) प्यार । दुलार । लाड़ला=प्यारा । दुलारा ।

लॉटरी—(स्त्री० अं०) धन एकत्र करने का एक प्रकार का जुआ । चिट्ठी ।

लात—(स्त्री० हि०) पैर । पाँव । पदाघात । पाद-प्रहार । लतियाना=पैर से मारना ।

लादना—(क्रि० हि०) एक पर एक चीज़ें रखना । ढोने या ले जाने के लिये वस्तुओं का भरना ।

ला-दावा—(वि० अ०) जिसका कोई दावा न रह गया हो ।

लादी—(स्त्री० हि०) कपड़ों की वह गठरी जिसे धोबी गदहे पर लादता है ।

लान—(पु० अं० लॉन) हरी घास का बड़ा मैदान । —टेनिस=गेंद का एक खेल ।

लानत—(स्त्री० फ़ा०) धिक्कार । फटकार ।

लाना—(क्रि० हि०) सामने रखना । ले आना ।

लापता—(वि० अ०) खोया हुआ गुप्त ।

लापरवा—(वि० अ०) बेफ़िक्र । —ही = बेफ़िक्री ।

लाभ—(पु० सं०) प्राप्ति । फ़ायदा । भलाई । —कारक = फ़ायदेमंद । —कारी = फ़ायदा करनेवाला । —दायक = फ़ायदेमंद । गुणकारी ।

लामा—(पु० हि०) तिब्बत या मंगोलिया के बौद्धों का धर्माचार्य्य ।

लायक़—(वि० अ०) उचित । मुनासिब । सुयोग्य । समर्थ ।

लॉयल—(वि० अं०) राजभक्त । —टी = राजभक्ति ।

लार—(स्त्री० हि०) लसदार थूक ।

लारी—(स्त्री० अं०) सवारी ढोने की बड़ी मोटरगाड़ी ।

लार्ड—(पु० अं०) ईश्वर । स्वामी । ज़मींदार । इंगलैंड के बड़े-बड़े ज़मींदारों और रईसों की उपाधि । —सभा = ब्रिटिश पार्लामेंट की वह सभा जिसमें बड़े-बड़े ताल्लुक़ेदारों और अमीरों के प्रतिनिधि होते हैं ।

लाल—(पु० हि०) प्यारा बच्चा । बेटा । लाला = एक प्रकार का संबोधन । महाशय ।

लालच—(स्त्री० फ़ा०) लोभ । लोलुपता । लालची = लोभी ।

लालटेन—(स्त्री० अं० लैन्टर्न) कंडील ।

लालबेग—(पु० हि०) एक प्रकार का परदार कीड़ा । लालबेगी = भंगी ।

लालसा—(स्त्री० सं०) बहुत अधिक चाह या इच्छा ।

लालायित—(वि० सं०) ललचाया हुआ ।

लालित्य—(पु० सं०) सौंदर्य । मनोहरता ।

लालिमा—(स्त्री० सं०) लाली । सुर्ख़ी ।

लाली—(स्त्री० हि०) सुर्ख़ी ।

लाले—(पु० हि०) मुसीबत ।

लावण्य(पु० सं०) अत्यंत सुंदरता।

लावनी—(स्त्री० देश०) गाने का एक छंद।

लावल्द—(वि० फ़ा०) निःसंतान। लावल्दी = निःसंतान होने की अवस्था।

लावा—(पु० हि०) भूना हुआ धान। खील। लाई। राख, पत्थर और धातु आदि मिला हुआ वह द्रव पदार्थ जो ज्वालामुखी पर्वतों के मुख से विस्फोट होने पर निकलता है।

लाश—(स्त्री० फ़ा०) मुरदा। शव। लाशा = मुर्दा। कमज़ोर।

लासा—(पु० हि०) चेप। लुआब।

लासानी—(फ़ा०) अनुपम। बेजोड़।

लाहौल—(पु० अ०) एक अरबी वाक्य का पहला शब्द।

लिंग—(पु० सं०) चिह्न। निशान। पुरुष की गुप्त इंद्रिय। व्याकरण में वह भेद जिससे पुरुष और स्त्री का पता लगता है।

लिंफ़—(पु० अं०) शीतला का चेप जो टीका लगाने के काम में आता है।

लिए—(हि०) वास्ते।

लिक्खाड़—(पु० हि०) भारी लेखक।

लिक्विडेटर—(पु० अं०) वह अफ़सर जो किसी कंपनी आदि की ओर से मुक़द्दमा लड़ने या और कोई आवश्यक कार्य के लिये नियुक्त किया जाता है।

लिक्विडेशन—(पु० अं०) सम्मिलित पूँजी से चलनेवाली कंपनी आदि को बंद कर उसकी बची हुई रकम को हिस्सेदारों में बाँट देना।

लिखना—(क्रि० हि०) अंकित करना। अक्षर अंकित करना। चित्र बनाना।

लिखाई—(स्त्री० हि०) लेख। लिपि। लिखने का कार्य्य।

लिखावट । लिखने की मज़दूरी ।

लिखाना—(क्रि० हि०) अंकित कराना । लिखने का काम दूसरे से कराना ।

लिखापढ़ी—(स्त्री० हि०) पत्र-व्यवहार ।

लिखावट—(स्त्री० हि०) लेख । लिपि । लिखने का ढंग । लेख-प्रणाली ।

लिखित—(वि० सं०) लिखा हुआ । लेख । प्रमाण-पत्र ।

लिटरेचर—(पु० अं०) साहित्य । लिटरेरी=साहित्यिक ।

लिटाना—(क्रि० हि०) लेटने की क्रिया कराना ।

लिपटना—(क्रि० हि०) चिमटना । चिपकना । आलिंगन करना । किसी काम में जी-जान से लग जाना । लिपटाना=चिमटाना । आलिंगन करना ।

लिपाई—(स्त्री० हि०) लेपना । पोताई । लीपने की मज़दूरी ।

लिपाना—(क्रि० हि०) पुताना । मिट्टी, गोबर आदि का लेप कराना ।

लिपि—(स्त्री० सं०) लिखावट । अक्षर लिखने की प्रणाली । लेख । —कार=लेखक ।

लिप्त—(वि० सं०) लीन । अनुरक्त ।

लिफ़ाफ़ा—(पु० अ०) चिट्ठी आदि भेजने की काग़ज़ की थैली । सजावट की पोशाक ।

लिबरल—(पु० अं०) उदार । उदार नीतिवाला । इंगलैंड का एक राजनीतिक दल । भारत का एक राजनीतिक दल ।

लियाक़त—(स्त्री० अ०) योग्यता ।

लिवाना—(क्रि० हि०) लाने का काम दूसरे से कराना ।

लिसोड़ा—(पु० हि०) एक पेड़ ।

लिस्ट—(स्त्री० अं०) फ़िहरिस्त । तालिका ।

लिहाज़—(पु० अ०) कृपा-दृष्टि । मुलाहज़ा । पक्षपात । अदब का ख़याल । लज्जा । शर्म ।

लिहाड़ा—(वि० देश०) नीच ।

गिरा हुआ। ख़राब। निकम्मा।

लिहाफ़—(पु० अ०) रज़ाई।

लीक—(स्त्री० हि०) लकीर। रेखा। लोक-नियम। प्रथा।

लीग—(स्त्री० अं०) संघ। सभा। समाज। —रिमेंब्रैंसर=वह अफ़सर जो सरकार के कानूनी कागज-पत्र रखता है।

लीगल—(अं०) क़ानूनी।

लीचड़—(वि० देश०) सुस्त। जिसका लेन-देन ठीक न हो।

लीडर—(पु० अं०) नेता। मुखिया। —आफ़ दी हाउस=पार्लमेंट या व्यवस्थापिका सभा का मुखिया।

लीडिंग आर्टिकल—(पु० अं०) सम्पादकीय अग्रलेख।

लीथो—(पु० अं०) पत्थर का छापा। —ग्राफ=पत्थर का छापा जिस पर हाथ से लिखकर या चित्र खींचकर छापा जाता है। —ग्राफर=लीथो का काम करने वाला। —ग्राफी=लीथो की छपाई में पत्थर पर हाथ से अक्षर लिखने और खींचने की कला।

लीद—(स्त्री० देश०) घोड़े आदि का मल।

लीन—(वि० सं०) तन्मय। तत्पर। अनुरक्त।

लीनो टाइप मशीन—(स्त्री० अं०) एक प्रकार की कल जिस में टाइप या अक्षर कम्पोज होने के समय ढलता जाता है।

लीपना—(क्रि० हि०) पोतना। गीली मिट्टी या गोबर दीवाल या ज़मीन पर फेरना।

लीफ़लेट—(पु० अं०) पुस्तिका। पर्चा।

लीला—(स्त्री० सं०) क्रीड़ा। प्रेम-विनोद। विचित्र काम। चरित्र। —मय=क्रीड़ा के भाव से भरा हुआ।

लीव—(स्त्री० अं०) छुट्टी। अवकाश।

लीवर—(पु० अं०) यकृत। जिगर।

लीज़—(पु० अं०) पट्टा।

लुँगाड़ा—(पु० देश०) शोहदा। लफंगा।
लुंगी—(स्त्री० हि०) तहमत।
लुंडमुंड—(वि० हि०) जिसके सिर, हाथ, पैर आदि कटे हों। लँगड़ा-लूला।
लुआव—(पु० अ०) लसदार गूदा। —दार=लसदार।
लुकना—(क्रि० हि०) छिपना।
लुक़मा—(पु० अ०) कौर। ग्रास।
लुकाट—(पु० हि०) एक फल।
लुकाना—(क्रि० हि०) छिपाना। छिपना।
लुगाई—(स्त्री० हि०) स्त्री। औरत।
लुचुई—(स्त्री० हि०) मैदे की पतली और मुलायम पूरी।
लुच्चा—(वि० फ़ा०) दुराचारी। बदमाश। लुच्ची=खोटी या बदमाश औरत।
लुटना—(क्रि० हि०) लूटा जाना। बरबाद होना। लुटाना=दूसरे को लूटने देना। बरबाद करना। बहुतायत से बाँटना।
लुटिया—(स्त्री० हि०) छोटा लोटा।
लुटेरा—(पु० हि०) लूटनेवाला। डाकू।
लुढ़कना—(क्रि० हि०) ढुलकना। लुढ़काना=ढुलकाना।
लुत्फ़—(पु० अ०) कृपा। दया। भलाई। उत्तमता। आनंद। स्वाद। रोचकता।
लुनना—(क्रि० हि०) खेत काटना।
लुनाई—(स्त्री० हि०) सुंदरता।
लुप्त—(वि० सं०) गुप्त। ग़ायब। अदृश्य।
लुब्ध—(वि० सं०) ललचाया हुआ। मोहित।
लुब्बलुबाव—(पु० अ०) गूदा। सारांश।
लुभाना—(क्रि० हि०) मोहित होना। लालच में पड़ना। मोह में पड़ना। मोहित करना। ललचाना। मोह में डालना।

लुरकी—(स्त्री० हि०) कान में पहनने की बाली। मुरकी।

लुहार—(पु० हि०) लोहे का काम करनेवाला।

लू—(स्त्री० हि०) गरमी के दिनों की तपी हुई वायु।

लूक—(स्त्री० हि०) आग की लपट। जलती हुई लकड़ी। लू। टूटा हुआ तारा।

लूकी—(स्त्री० हि०) आग की चिनगारी। लूका।

लूट—(स्त्री० हि०) डकैती। लूटने से मिला हुआ माल। —ना=ज़बरदस्ती छीनना। बरबाद करना। ठगना।

लूला—(वि० हि०) बिना हाथ का। बेकाम।

लेंड़—(पु० हि०) बँधा मल। लेंड़ी=बँधा मल। मेंगनी।

लेंस—(पु० अं०) शीशे का ताल जो प्रकाश की किरनों को एकत्र या केंद्रीभूत करे।

लेई—(स्त्री० हि०) अवलेह। लपसी। घुला हुआ आटा।

लेक्चर—(पु० अं०) व्याख्यान। वक्तृता। —बाज़ी=ख़ूब लेक्चर देने की क्रिया। —र=व्याख्यान देनेवाला।

लेख—(पु० सं०) लिपि। लिखी हुई बात। लिखावट। लेखा। लेख्य=लिखने योग्य। हिसाब के लायक। —क=लिखनेवाला। लेखन=लिखने का कार्य। लिखने को कला या विद्या। चित्र बनाना। लेखनी=कलम। लेखप्रणाली=लिखने का ढंग। लेखशैली=लेखप्रणाली। लेखा=गणना। गिनती। हिसाब-किताब। ठीक-ठीक अंदाज़ा। लेखाबही=वह बही जिसमें रोकड़ के लेन-देन का ब्योरा रहता है। लेखिका=लिखनेवाली। ग्रंथ या पुस्तक बनानेवाली।

लेज़म—(स्त्री० फ़ा०) एक प्रकार की कमान।

लेजिस्लेटिव—(वि० अं०) व्यवस्था सम्बन्धी। कानून सम्बन्धी। —एसेम्बली = व्यवस्थापिका

परिषद्। —कौंसिल= व्यवस्थापिका सभा।

लेट—(स्त्री० देश०) गच। (अं०) जिसे देर हुई हो। —फी=वह फीस जो निश्चित समय के बाद डाकखाने में कोई चीज़ दाखिल करने पर देनी पड़ती हो।

लेटना—(क्रि० हि०) पौढ़ना।

लेटरबाक्स—(पु० अं०) चिट्ठी डालने की संदूक।

लेटर्स पेटेंट—(पु० अं०) राजकीय आज्ञापत्र।

लेनदार—(पु० हि०) जिसका कुछ बाकी हो। महाजन।

लेनदेन—(पु० हि०) लेने और देने का व्यवहार। महाजनी।

लेन—(स्त्री० अं०) गली। कूचा।

लेना—(क्रि० हि०) प्राप्त करना। पकड़ना। खरीदना। जीतना। कर्ज़ लेना। काम पूरा करना।

लेप—(पु० सं०) पोतने या चुपड़ने की चीज़। लेई। उबटन। —न=गाढ़ी गीली वस्तु की तह चढ़ाना।

लेफ़्टिनेंट—(पु० अं०) एक सहायक कर्मचारी। सेना का एक अध्यक्ष। —जेनरल= सहायक सैन्याध्यक्ष। —कर्नल =सेना का एक अफ़सर।

लेबुल—(पु० अं०) नाम। पत्रक।

लेबरर—(पु० अं०) श्रमजीवी। मजूर।

लेबोरेटरी—(स्त्री० अं०) प्रयोगशाला।

लेमनेड—(पु० अं०) नीबू का शरबत।

लेश—(वि० सं०) चिन्ह। थोड़ा अल्प।

लेवी—(स्त्री० अं०) एक प्रकार का दरबार।

लेस—(पु० हि०) गोटा। बेल।

लेसना—(क्रि० हि०) जलाना। चुगलीखाना।

लैंडो—(स्त्री० अं०) एक प्रकार की घोड़ा-गाड़ी।

लैंप—(पु० अं०) दीपक। चिराग।

लैंसर—(पु० अं०) रिसाले के

सवारों के तीन भेदों में से एक।
लैन—(स्त्री० अं० लाइन) सीधी लकीर। सीमा की लकीर। कतार। पंक्ति। पैदल सिपाहियों की सेना। बारक।
लैवेंडर—(पु० अं०) एक सुगंधित तरल पदार्थ।
लैसंस—(पु० अं० लाइसेंस) सनद। अधिकार-पत्र।
लैस—(वि० अं० लेस) वर्दी और हथियारों से सजा हुआ। तैयार।
लोंदा—(पु० हि०) किसी गीले पदार्थ का वह अंश जो डले की तरह बँधा हो।
लोअर—(अं०) नीचे का। —कोर्ट=नीचे की अदालत।
लोई—(स्त्री० हि०) गुँधे हुए आटे का उतना अंश जिससे एक रोटी बन सके। एक प्रकार का कम्बल।
लोक—(पु० सं०) संसार। स्थान। लोग। जन। समाज। यश। —संग्रह=संसार के लोगों को प्रसन्न करना। सब की भलाई चाहने वाला। लोकांतरित=जो इस लोक से दूसरे लोक में चला गया हो। मरा हुआ। स्वर्गीय। लोकाचार=लोक-व्यवहार। लोकोक्ति=कहावत। मसल। लोकोत्तर=अलौकिक। लौकिक=सांसारिक। लोक-सम्बन्धी।
लोकना—(क्रि० हि०) ऊपर से गिरी हुई चीज़ को गिरने से पहले हाथों से पकड़ लेना। रास्ते में से ही ले लेना।
लोकल—(वि० अं०) प्रांतिक। प्रादेशिक। स्थानीय। —बोर्ड =एक प्रकार की समिति।
लोग—(पु० हि०) मनुष्य। जन।
लोच—(पु० हि०) लचक। कोमलता।
लोचन—(पु० सं०) आँख।
लोट—(स्त्री० हि०) लोटने की क्रिया या भाव। लुढ़कना। —ना = सीधे और उलटे

लेटते हुए किसी ओर को जाना। लेटना। —पोट= चकित होना।

लोटा—(पु० हि०) धातु का एक बरतन। लोटिया= छोटा लोटा।

लोढ़ा—(पु०हि०) बट्टा। लोढ़िया =छोटा लोढ़ा।

लोथड़ा—(पु० हि०) मांस-पिंड।

लोन—(पु० अं०) कर्ज़।

लोना—(पु० हि०) नमकीन मिट्टी। लोनिया=एक जाति। लोनी=एक साग जो नमकीन होता है।

लोप—(पु० सं०) नाश। क्षय। विच्छेद। अभाव। छिपना।

लोबान—(पु० अ०) एक वृक्ष का सुगंधित गोंद।

लोबिया—(फ़ा०) शाक की एक फली।

लोभ—(पु० सं०) लालच। लोभाना=मोहित करना। मुग्ध होना। लोभित= लुभाया हुआ। मुग्ध। लोभी =लालची।

लोम—(पु० सं०) रोम। रोवाँ। बाल। —हर्षण=रोमांच। ऐसा भीषण प्रसंग जिससे रोएँ खड़े हो जायँ।

लोमड़ी—(स्त्री० हि०) कुत्ते या गीदड़ की जाति का एक जंतु।

लोरी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का गीत।

लोलक—(पु० सं०) लटकन।

लोहा—(पु० हि०) एक धातु। हथियार। —र=एक जाति जो लोहे का काम करती है। लोहिया=लोहे की चीज़ों का व्यापार करनेवाला।

लोहू—(पु० हि०) खून। रक्त।

लौंग—(पु० हि०) एक झाड़ की कली।

लौंडा—(पु०) छोकरा। बालक। खूबसूरत लड़का।—पन= लड़कपन। छिछोरापन। लौंडी=दासी। मज़दूरनी।

लौंडेबाज़—(वि० हि०) बालकों के साथ प्रकृति-विरुद्ध आचरण करनेवाला।

लौ—(स्त्री० हि०) ज्वाला। दीपशिखा।

लौकी—(स्त्री० हि०) कद्दू। घीआ।

लौटना—(क्रि० हि०) वापस आना। उलटना।

लौट-पौट—(स्त्री० हि०) दोरुखी छपाई। उलटने-पुलटने की क्रिया।

लौट-फेर—(पु० हि०) हेर-फेर। भारी परिवर्तन।

लौटाना—(क्रि० हि०) फेरना। वापस करना। वापस लाना।

व

व—हिन्दी-वर्णमाला का उन्तीसवाँ व्यंजन वर्ण।

वंग—(पु० सं०) बंगाल।

वंचक—(वि० सं०) ठग। धूर्त। खल।

वंचना—(स्त्री० सं०) धोखा। ठगना।

वंचित—(क्रि० सं०) जो ठगा गया हो। अलग किया हुआ। विमुख। अलग। रहित।

वंदना—(स्त्री० सं०) स्तुति। प्रणाम। वंदनीय=वंदना करने योग्य। —वंदित= पूज्य। आदरणीय।

वंदीगृह—(पु० सं०) कैदखाना।

वंश—(पु० सं०) कुल। घराना। —धर=संतान। वंशावली =किसी वंश में उत्पन्न पुरुषों की सूची।

वंशी—(स्त्री० सं०) बाँसुरी। मुरली।

वकालत—(स्त्री० अ०) दूसरे के पक्ष का मंडन। मुक़द्दमे में किसी फ़रीक़ की तरफ़ से बहस करने का पेशा।—नामा

=वह अधिकार-पत्र जिसके द्वारा कोई किसी वकील को अपनी तरफ़ से मुक़दमे में बहस करने के लिये मुक़र्रर करता है। वकील=राजदूत। प्रतिनिधि। दूसरे का पक्ष मंडन करने वाला। क़ानून के अनुसार वह आदमी जिसने वकालत की परीक्षा पास की हो।

वक़्त—(पु० अ०) समय। काल। मौक़ा। अवसर। अवकाश। फ़ुरसत। मृत्युकाल।

वक़्तन् फ़ौक़्तन्—(क्रि० वि० अ०) कभी-कभी। यथा समय।

वक्तव्य—(वि० सं०) कहने योग्य। कथन। वक्ता=बोलने वाला। भाषण-पटु।

वक्तृता—(स्त्री० सं०) व्याख्यान। भाषण।

वक्तृत्व—(पु० सं०) वक्तृता। व्याख्यान। कथन।

वक्फ़—(पु० अ०) किसी धर्म के काम में लगी हुई जायदाद। धर्म्मार्थ दान। —नामा=दान-पत्र।

वक्फ़ा—(स्त्री० अ०) छुट्टी।

वक्र—(वि० सं०) टेढ़ा। तिरछा। कुटिल। —गति=टेढ़ी चाल। —गामी=टेढ़ी चाल चलने वाला। शठ। कुटिल। —वक्रोक्ति=एक प्रकार का काव्यालंकार। बढ़िया उक्ति। व्यंग्य।

वक्षःस्थल—(पु० सं०) छाती।

वग़ैरह—(अव्य० फ़ा०) इत्यादि। आदि।

वचन—(पु० सं०) कथन।

वज़न—(पु० अ०) भार। बोझ। तौल। गौरव। मर्यादा। वज़नी=भारी।

वजह—(स्त्री० अ०) कारण। वजूहात=कारण का बहु-वचन।

वज़ा—(स्त्री० अ०) बनावट। रचना। सजधज। रूप। —दार=दर्शनीय। —दारी=फ़ैशन। मान-मर्यादा आदि का भली-भाँति निर्वाह।

वज़ारत—(स्त्री॰ फ़ा॰) मंत्री का कार्य ।

वज़ीफ़ा—(पु॰ अ॰) वृत्ति । —दार=वज़ीफ़ा पानेवाला ।

वज़ीर—(पु॰ अ॰) मंत्री । दीवान । शतरंज की एक गोटी । वज़ीरी=वज़ीर का काम या पद ।

वज़ू—(पु॰ अ॰) नमाज़ पढ़ने के लिये हाथ, पाँव आदि धोना ।

वज्र—(पु॰ सं॰) एक शस्त्र । बिजली । —लेप=एक मसाला जो कभी नहीं छूटता ।

वट—(पु॰ सं॰) बरगद का पेड़ ।

वणिक्—(पु॰ सं॰) रोज़गार करनेवाला । बनिया । —वृत्ति=व्यापार ।

वतन—(पु॰ अ॰) वासस्थान । जन्मभूमि ।

वत्स—(पु॰ सं॰) गाय का बच्चा । बालक । —ल=बच्चे के प्रेम से भरा हुआ । अत्यंत स्नेहवान् या कृपालु । वात्सल्य=बच्चों के प्रति स्नेह ।

वत्सर—(सं॰) वर्ष । साल ।

वदन—(पु॰ सं॰) मुँह ।

वदान्य—(वि॰ सं॰) उदार ।

वध—(पु॰ सं॰) हत्या ।

वधू—(स्त्री॰ सं॰) नव विवाहिता स्त्री । दुलहिन । पत्नी । पुत्र की बहू । पतोहू ।

वन—(पु॰ सं॰) जंगल । वाटिका । —चर=वन में रहनेवाला । जंगली मनुष्य । —माली=वनमाला धारण करनेवाला । श्रीकृष्ण । —वास=जंगल में रहना । —वासी=वन में रहनेवाला । वनस्पति=वृक्षमात्र । पेड़ । पौधा । —शास्त्र=वनस्पति-विज्ञान । वनौषध=जंगली जड़ी बूटी । वन्य=जंगली ।

वफ़ा—(स्त्री॰ अ॰) वादा पूरा करना । सुशीलता । —दार=अपने काम को ईमानदारी से करनेवाला । सच्चा ।

वफ़ात—(स्त्री॰ अ॰) मृत्यु ।

वबा—(स्त्री॰ अ॰) महामारी। मरी।

वबाल—(अ॰) बोझ। आफत। ईश्वरीय कोप। पाप का फल।

वय—(स्त्री॰ सं॰) अवस्था। —स्क=उमर का। अवस्था-वाला। सयाना।

वरंच—(अव्य॰ सं॰) बल्कि। परंतु। लेकिन।

वर—(पु॰ सं॰) किसी देवता या बड़े से प्राप्त किया हुआ फल या सिद्धि। पति। श्रेष्ठ। उत्तम। किसी देवता या बड़े का प्रसन्न होकर कोई अभि-लषित वस्तु या सिद्धि देना। —यात्रा=दूल्हे का बाजे-गाजे के साथ दुलहिन के घर विवाह के लिये जाना। बरात।

वरक़—(अ॰) पत्र। पुस्तकों का पन्ना। पन्ना। सोने, चाँदी आदि के पतले पत्तर जो मिठाइयों पर लगाने और औषध के काम में आते हैं।

वरदी—(स्त्री॰ फ़ा॰) वह पोशाक जो किसी विशेष विभाग के कर्मचारियों के लिये नियत हो।

वरन्—(फ़ा) ऐसा नहीं। बल्कि।

वरज़िश—(स्त्री॰ फ़ा॰) कस-रत। व्यायाम।

वरिष्ठ—(वि॰ सं॰) श्रेष्ठ। पूज-नीय।

वर्क—(पु॰ अं॰) काम। वर्कर =काम करनेवाला।

वर्किंग कमिटी—(स्त्री॰ अं॰) कार्यकारिणी समिति।

वर्ग—(पु॰ सं॰) जाति। श्रेणी। परिच्छेद। विभाग। —फल =वह गुणनफल जो दो समान राशियों के घात से प्राप्त हो। —मूल=किसी वर्गांक का वह अंक जिसे यदि उसीसे गुणन करें, तो गुणन वही वर्गांक हो।

वर्ग़लाना—(फ़ा) उकसाना। बहकाना।

वर्जना—(सं॰) मना करना। वर्जनीय=निषेध के योग्य। मना। वर्जित=छोड़ा हुआ। निषिद्ध।

वर्ण—(पु० सं०) रंग। जन-समुदाय के चार विभाग। —संकर=व्यभिचार से उत्पन्न मनुष्य।

वर्णन—(पु० सं०) चित्रण। बयान। —शैली=कहने का ढंग। वर्णनीय=बयान करने योग्य। वर्णित=कहा हुआ। बयान किया हुआ।

वर्त्तमान—(वि० सं०) मौजूद। विद्यमान। साक्षात्। आधुनिक। हाल का। व्याकरण में क्रिया के तीन कालों में से एक।

वर्द्धक—(वि० सं०) बढ़ानेवाला। वर्द्धमान = बढ़ता हुआ। वर्द्धित=बढ़ा हुआ।

वर्मा—(पु० हि०) क्षत्रियों आदि की उपाधि।

वर्ष—(पु० सं०) साल। संवत्सर। —गाँठ=वह कृत्य जो किसी पुरुष के जन्म-दिन पर किया जाता है। —फल=फलित ज्योतिष में जातक के अनुसार एक कुंडली।

वर्षा—(स्त्री० सं०) वृष्टि। बरसात।

वलि—(पु० सं०) किसी देवी या देवता को पशु मारकर चढ़ाना। देना।

वल्कल—(पु० सं०) वृक्ष की छाल का वस्त्र जिसे मुनि और तपस्वी पहना करते थे।

वल्द—(पु० अ०) औरस बेटा। पुत्र। वल्दियत=पिता के नाम का परिचय।

वल्ली—(स्त्री० सं०) लता।

वश—(पु०सं०) काबू। अधिकार। कब्ज़ा। —वर्ती=जो दूसरे के वश में रहे। वशीकरण=वश में लाने की क्रिया। अधीन करना। वशीभूत=वश में आया हुआ। अधीन। वश्यता=अधीनता।

वसंत—(पु० सं०) बहार का मौसिम। वसंतोत्सव जो प्राचीन काल में वसंत पञ्चमी के दूसरे दिन होता था।

वसीक़ा—(पु० अ०) वक्फ़ का इकरारनामा।

वसीयत—(स्त्री० अ०) अपनी संपत्ति के संबंध में की हुई वह व्यवस्था, जो मरने के समय कोई मनुष्य लिख जाता है। (अं०) विल। —नामा =विल।

वसीला—(पु० अ०) संबंध। आश्रय। ज़रिया।

वसूल—(वि० अ०) प्राप्त। वसूली प्राप्ति। —याबी=प्राप्ति।

वस्त्र—(पु० सं०) कपड़ा।

वस्फ़—(पु० अ०) गुण। विशेषता।

वस्ल—(पु० अ०) मिलन। संयोग। मिलाप।

वह—(सर्व० सं०) कर्तृकारक। प्रथम पुरुष सर्वनाम।

वहम—(फ़ा०)झूठा ख्याल। भ्रम। व्यर्थ की शंका। वहमी=झूठे ख़्याल में पड़ा रहनेवाला। वहम करनेवाला।

वहशत—(स्त्री०अ०) असभ्यता। उजड्डपन। पागलपन। अधीरता। विकलता। उदासी। डरावनापन। वहशी=जंगली। जो पालतू न हो। असभ्य। भड़कने वाला।

वहाँ—(अव्य० हिं०) उस जगह।

वहिरंग—(पु० सं०) बाहरी भाग।

वहिष्कृत—(वि० सं०) निकाला हुआ। त्यागा हुआ।

वहीं—(अव्य० हिं०) उसी जगह।

वही—(सर्व० हिं०) पूर्वोक्त व्यक्ति।

वांछनीय—(वि० सं०) चाहने योग्य। जिसकी इच्छा हो। वांछा=इच्छा। चाह। वांछित =चाहा हुआ।

वा—(अव्य० सं०) या। अथवा।

वाइज़—(फ़ा०) उपदेशक।

वाइन—(अं०) शराब। मद्य।

वाइकौंट—(पु० अं०) इंगलैंड के सामंतों को दी जानेवाली एक उपाधि।

वाइस चान्सलर—(पु० अं०) विश्वविद्यालय का वह ऊँचा अधिकारी जो चान्सलर के सहायतार्थ हो।

वाइस चेयरमैन—(पु० अं०) उपाध्यक्ष। उपसभापति।

वाइस प्रेसीडेंट—(पु० अं०) उपसभापति।

वाइसराय—(पु० अं०) हिन्दुस्तान में सम्राट् का प्रतिनिधि। बड़ा लाट।

वाक़अ—(अ०) घटना।

वाउचर—(पु० अं०) हिसाब के ब्योरे का काग़ज़।

वाक़ई—(वि० अ०) ठीक। यथार्थ। वास्तव में।

वाक़या—(पु० अ०) घटना। समाचार।

वाक़ा—(पु० अ०) घटनेवाला। स्थित।

वाक़िअः—(अ०) दुर्घटना। समाचार।

वाक़िफ़—(वि० अ०) जानकार। ज्ञाता। अनुभवी। —कार = कार्यज्ञ। वाक़फ़ियत = जानकारी।

वाक्य—(पु० सं०) जुमला। (अं०) सेंटेंस।

वाक्सिद्धि—(स्त्री० सं०) वाणी की सिद्धि।

वाग्जाल—(पु० सं०) बातों का आडम्बर या भरमार।

वाच—(स्त्री० अं०) जेब में रखने की या कलाई पर बाँधने की छोटी घड़ी। —मैन = चौकीदार।

वाचक—(वि० सं०) बतानेवाला। नाम। संज्ञा।

वाचनालय—(पु० सं०) वह कमरा या भवन जहाँ पुस्तकें और समाचार-पत्र आदि पढ़ने को मिलते हों। रीडिंग रूम।

वाचाल—(वि० सं०) बकवादी। —ता = बहुत बोलना। बातचीत में निपुणता।

वाज़—(पु० अ०) उपदेश। शिक्षा धार्मिक व्याख्यान। कथा।

वाज़ेह—(अ०) मालूम। विदित।

वाजिब—(वि० अ०) उचित। ठीक। वाजिबी = उचित। वाजिबुल-अदा = वह धन जिसके देने का समय आगया

हो। देय। (ब्यू अं०)।
वाजिबुल-अर्ज=वह शर्त जो कानूनी बन्दोबस्त के समय जमींदारों और किसानों के बीच गाँव के रिवाज आदि के संबंध में लिखी जाती है।
वाजिबुल वसूल=धन जिसके वसूल करने का वक्त आ गया हो।
वाटर—(पु० अं०) पानी। —प्रूफ़=जिस पर पानी का प्रभाव न पड़े। —वर्क्स=नगर में पानी पहुँचाने का विभाग। पानी पहुँचाने की कल। —शूट=जल-क्रीड़ा। वाटरिंग=छिड़काव।
वाटिका—(स्त्री० सं०) बाग। बगीचा।
वाण—(पु० सं०) तीर।
वाणिज्यदूत—(पु० सं०) वह मनुष्य जो किसी देश के प्रतिनिधि रूप से दूसरे देश में रहता और अपने देशके व्यापारिक स्वार्थों की रक्षा करता हो।

वाणी—(स्त्री० सं०) सरस्वती। वचन। वाक्शक्ति।
वात—(पु० सं०) हवा। —व्याधि = गठिया। वातायन = झरोखा। खिड़की।
वात्सल्य—(पु० सं०) प्रेम। स्नेह। माता-पिता का प्रेम।
वाद—(पु० सं०) तर्क। शास्त्रार्थ। दलील। —विवाद=बहस मुबाहसा।
वादा—(पु० अ०) इक़रार। प्रतिज्ञा।
वादी—(पु० हि०) फ़रियादी। मुद्दई।
वानप्रस्थ—(पु० सं०) मनुष्य-जीवन के चार विभागों या आश्रमों में से तीसरा विभाग या आश्रम।
वापस—(वि० फ़ा०) लौटा हुआ। फिरा हुआ। वापसी =लौटा हुआ या फेरा हुआ।
वामन—(वि० सं०) बौना।
वायु—(स्त्री० सं०) हवा। बात।
वारंट—(पु० अं०) अधिकार-पत्र। —गिरफ़्तारी=किसी

पुरुष को पकड़कर अदालत में हाज़िर करने का अधिकार-पत्र। —तलाशी=वह आज्ञापत्र जिसके अनुसार तलाशी ली जाय। —रिहाई=अदालत का वह आज्ञा-पत्र जिसके अनुसार गिरफ़्तार व्यक्ति छोड़ा जाय।

वार—(पु० अं०) युद्ध। समर। जंग। —लोन=लड़ाई के लिये लिया हुआ क़र्ज़ा। —शिप=जंगी जहाज़।

वारदात—(स्त्री० अ०) दुर्घटना। दंगा-फसाद। हाल।

वारनिंग=(स्त्री० अं०) सूचना। हिदायत।

वारनिश—(स्त्री० अं०) एक तरल पदार्थ जो लकड़ियों आदि पर चमक लाने के लिये लगाया जाता है।

वारपार—(पु० हि०) इस किनारे से उस किनारे तक।

वारफेर—(स्त्री० हि०) निछा-वर। वह रुपया-पैसा जो दूल्हा या दुलहिन के सिर पर से घुमाकर डोमिनियों आदि को दिया जाता है।

वारा न्यारा—(पु० हि०) फ़ैसला। निबटेरा।

वारिस—(पु० अ०) उत्तराधि-कारी।

वार्ड—(पु० अं०) रक्षा। हिफ़ा-ज़त। किसी विशिष्ट कार्य के लिये घेरकर बनाया हुआ स्थान। अस्पताल या जेल आदि के अंदर के अलग-अलग विभाग। —र=रक्षक। जेल आदि के अंदर का पहरेदार।

वार्द्धक्य—(पु० सं०) बढ़ती।

वार्षिक—(वि० सं०) सालाना।

वालंटियर—(पु० अं०) स्वयं-सेवक।

वालिद—(पु० अ०) पिता। वालदा=माता।

वास—(पु० सं०) रहना। निवास। घर। मकान। सुगंध। बू।

वासिल—(वि० अ०) प्राप्त। जो वसूल हुआ हो।

वासी—(पु० हि०) रहनेवाला ।
वास्कट—(स्त्री० अं०) फतूही । वेस्टकोट ।
वास्तव—(वि० सं०) यथार्थ । सत्य । वास्तविक=सत्य । यथार्थ । ठीक ।
वास्ता—(अ०) संबंध । लगाव ।
वाहिद—(अ०) ईश्वर का नाम । एक ।
वाह—(फ़ा०) .खूब ।
वाही—(हि०) सुस्त ।
विंदु—(पु० हि०) बूँद । बिंदी । अनुस्वार । शून्य । कण ।
विकट—(वि० सं०) भयंकर । टेढ़ा । कठिन । दुर्गम । दुस्साध्य ।
विकराल—(वि सं०) भीषण । डरावना ।
विकल—(वि० सं०) व्याकुल ।
विकल्प—(पु० सं०) भ्रम । धोखा । विविध कल्पना ।
विकार—(पु० सं०) ख़राबी । वासना । हानि । उपद्रव ।
विकास—(पु० सं०) प्रसार । फैलाव । खिलना । —वाद एक पाश्चात्य सिद्धांत ।
विक्टोरिया—(स्त्री० अं०) एक प्रकार की घोड़ा गाड़ी ।
विक्रम—(पु० सं०) पराक्रम । ताकत ।
विक्रय—(पु० सं०) बिक्री ।
विक्रेता—(पु० सं०) बेचनेवाला ।
विख्यात—(वि० सं०) प्रसिद्ध ।
विक्षिप्त—(पु० सं०) पागल ।
विगत—(वि० सं०) जो बीत चुका हो ।
विगलित—(वि० सं०) जो गिर गया हो । जो बह गया हो । शिथिल । बिगड़ा हुआ ।
विघ्न—(पु० सं०) बाधा । ख़लल ।
विचरण—(पु० सं०) चलना । घूमना फिरना ।
विचरना—(क्रि० हि०) चलना फिरना ।
विचल—(वि० सं०) अस्थिर । डिगा हुआ । विचलाना=विचलित करना । विचलित=चंचल । अस्थिर ।
विचार—(पु० सं०) वह जो कुछ

मन से सोचा जाय। भावना। ख़याल। —णीय=विचार करने योग्य। —शील=विचारवान्। —शीलता=बुद्धिमत्ता। अक़्लमंदी। विचारक=जज।

विचित्र—(वि० सं०) विलक्षण। सुंदर। अनोखा। —ता=अनोखापन।

विजय—(स्त्री० सं०) जय। जीत। विजयी=जीतनेवाला। विजयादशमी=हिंदुओं का एक प्रसिद्ध त्योहार।

विजातीय—(वि० सं०) जो दूसरी जाति का हो।

विज़ारत—(स्त्री० अ०) मंत्रित्व।

विज़िट—(स्त्री० अं०) भेंट। मुलाक़ात।

विज़िटर्सबुक—(स्त्री० अं०) किसी सार्वजनिक संस्था की वह पुस्तक जिसमें वहाँ आने जानेवाले अपना नाम और कभी-कभी उस संस्था के संबंध में अपनी सम्मति भी लिखते हैं।

विज़िटिंग कार्ड—(पु० अं०) एक प्रकार का छोटा कार्ड जिस पर लोग अपना नाम, पता आदि छपवा लेते हैं और जब किसी से मिलने जाते हैं, तब उसे अपने आगमन की सूचना देने के लिये पहले यह कार्ड उसके पास भेज देते हैं।

विजित—(पु० सं०) जीता हुआ। विजेता=जीतनेवाला।

विज्ञ—(वि० सं०) जानकार। समझदार। विद्वान्। —ता=बुद्धिमत्ता। विद्वत्ता।

विज्ञप्ति—(स्त्री० सं०) इश्तहार। विज्ञापन।

विज्ञान—(पु० सं०) ज्ञान। शास्त्र। —वाद=वह सिद्धांत जिसमें ब्रह्मऔर आत्मा की एकता प्रतिपादित हो।

विज्ञापन—(पु० सं०) सूचना देना। इश्तहार। विज्ञापित=जिसका इश्तहार दिया जा चुका हो। विज्ञापक=वह जो विज्ञापन करता हो।

विटप—(पु० सं०) झाड़ी। पेड़।

वितरण—(पु० सं०) देना। बाँटना।

वितर्क—(पु० सं०) दूसरा तर्क। संदेह। अनुमान।

वित्त—(पु० सं०) धन। संपत्ति।

विदग्ध—(पु० सं०) रसिक पुरुष। विद्वान्। चतुर। (वि०) जला हुआ।

विदलित—(वि० सं०) रौंदा हुआ। फाड़ा हुआ।

विदा—(स्त्री० फ़ा०) प्रस्थान। —ई=रुख़सती। प्रस्थान। रुख़सत होने की अनुमति। वह धन आदि जो विदा होने के समय दिया जाय।

विदीर्ण—(वि० सं०) फड़ा हुआ। टूटा हुआ।

विदुषी—(स्त्री० सं०) विद्वान् स्त्री।

विदूषक—(पु० सं०) मसखरा। भाँड़।

विदेश—(पु० सं०) परदेश।

विद्ध—(वि० सं०) छेद किया हुआ।

विद्या—(स्त्री० सं०) इल्म। विद्यारंभ=वह संस्कार जिसमें विद्या की पढ़ाई आरंभ होती है। विद्यार्थी = पढ़नेवाला। छात्र। शिष्य। विद्यालय= पाठशाला।

विद्युत्—(स्त्री० सं०) बिजली।

विद्रोह—(पु० सं०) बलवा। बग़ावत। विद्रोही=बाग़ी।

विद्वत्ता—(स्त्री० सं०) पांडित्य।

विद्वान्—(पु० सं०) पंडित। सर्वज्ञ।

विद्वेष—(पु० सं०) शत्रुता। विद्वेषी=शत्रु।

विधवा—(स्त्री० सं०)राँड़। बेवा। —पन=रँड़ापा। वैधव्य।

विधाता—(पु० हि०) उत्पन्न करनेवाला। ब्रह्मा।

विधान—(पु० सं०) आयोजन। अनुष्ठान। इन्तज़ाम। प्रबन्ध। विधि। प्रणाली। रचना। ढंग। उपाय। क़ानून।

विधि—(स्त्री० सं०) नियम। क़ायदा। व्यवस्था।

विधुर—(पु० सं०) दुःखी। रँडुआ।
विध्वंस—(पु० सं०) विनाश। बरबादी।
विध्वस्त—(वि० सं०) नष्ट किया हुआ।
विनम्र—(वि० सं०) झुका हुआ। सुशील। विनीत।
विनय—(स्त्री० सं०) नम्रता।
विनाश—(पु० सं०) बरबादी।
विनिमय—(पु० सं०) परिवर्तन। अदल-बदल। (अं०) एक्सचेंज।
विनीत—(वि० सं०) सुशील। नम्र। शिष्ट।
विनोद—(पु० सं०) तमाशा। क्रीड़ा। खेल। आनंद। हर्ष। विनोदी=कुतूहल करनेवाला। चुहलबाज़। आनंदी।
विपत्ति—(स्त्री० सं०) आफ़त। झंझट।
विपद्—(स्त्री० सं०) विपत्ति। संकट।
विपरीत—(वि० सं०) विरुद्ध। ख़िलाफ़। प्रतिकूल।
विपुल—(वि० सं०) बड़ा। अगाध। —ता=बहुतायत। आधिक्य।
विप्र—(पु० सं०) ब्राह्मण।
विप्लव—(पु० सं०) उपद्रव। बलवा।
विफल—(वि० सं०) व्यर्थ। बेफ़ायदा। नाकामयाब। निराश। —ता=असफलता।
विभक्त—(व० हि०) बँटा हुआ। विभाजित। अलग किया हुआ।
विभव—(पु० सं०) धन। संपत्ति। ऐश्वर्य। —शाली=ऐश्वर्यवाला।
विभाग—(पु० सं०) बँटवारा। तकसीम। भाग। हिस्सा।
विभाजक—(पु० सं०) बाँटने-वाला।
विभाजित—(वि० सं०) जो बाँटा गया हो। जिसका विभाग किया गया हो।
विभीषिका—(स्त्री० सं०) भयंकर दृश्य।
विभूषण—(पु० सं०) अलंकार। गहना।

विभेद—(पु० सं०) फ़रक। अंतर।

विमल—(वि० सं०) निर्मल। स्वच्छ। साफ़।

विमाता—(स्त्री० हि०) सौतेली माता।

विमान—(पु० सं०) वायुयान। उड़नखटोला। मरे हुए वृद्ध मनुष्य की अरथी जो सजधज के साथ निकाली जाती है।

विमुख—(वि० सं०) उदासीन। विरुद्ध। ख़िलाफ़।

विमुग्ध—(वि० सं०) मोहित। आसक्त। बेसुध।

विमूढ़—(वि० सं०) चकराया हुआ। भ्रम में पड़ा हुआ। बेसुध। ज्ञान-रहित। बहुत मूर्ख। नादान। नासमझ।

वियोग—(पु० सं०) विरह। जुदाई। वियोगी=विरही। जो प्रियतमा से बिछुड़ा हो। वियोगी पुरुष।

विरद—(पु० हि०) बड़ा नाम। ख्याति। प्रसिद्धि। यश। कीर्ति।

विरह—(पु० सं०) वियोग। जुदाई। विरही=वियोगी। विरहिणी=वियोगिनी स्त्री।

विराजना—(क्रि० हि०) शोभित होना। फबना। होना। रहना। बैठना।

विराट्—(पु० सं०) ब्रह्म का वह स्थूल स्वरूप जिसके अंदर अखिल विश्व है।

विरुदावली—(स्त्री० सं०) यश-वर्णन। प्रशंसा।

विरुद्ध—(वि० सं०) प्रतिकूल। ख़िलाफ़। अप्रसन्न। विपरीत। अनुचित।

विरेचक—(वि० सं०) दस्त लानेवाला। दस्तावर।

विरेचन—(पु० सं०) दस्त लानेवाली दवा। जुलाब।

विरोध—(पु० सं०) शत्रुता। अनबन। विरोधी=शत्रु।

विलंब—(वि० सं०) बहुत काल। देर।

विलक्षण—(वि० सं०) असाधारण। अपूर्व। अद्भुत। अनोखा। अनूठा।

विलाप—(पु० सं०) क्रन्दन। रुदन। रोना।

विलायत—(पु० अ०) पराया देश। दूर का देश। विलायती=विदेशी। परदेशी। विलायती बैंगन=टोमैटो।

विलास—(पु० सं०) सुख-भोग। मनोरंजन। आनंद। हर्ष। हाव-भाव। नाज़-नख़रा। अतिशय सुख-भोग।

विवरण—(पु० सं०) ब्यौरा। तफ़सील।

विवाद—(पु० सं०) वाक् युद्ध। झगड़ा। कलह। मतभेद। विवादास्पद=जिस पर विवाद या झगड़ा हो। विवाद योग्य।

विवाह—(पु० सं०) शादी। ब्याह। विवाहिता=जिस कन्या का पाणिग्रहण हो गया हो। ब्याही हुई।

विविध—(वि० सं०) बहुत प्रकार का। अनेक तरह का।

विवेक—(पु० सं०) भली-बुरी वस्तु का ज्ञान। समझ। विचार। बुद्धि। सत्य ज्ञान।

विवेचन—(सं०) जाँचना। निर्णय। व्याख्या। तर्क-वितर्क। अनुसंधान। विवेचना =व्याख्या।

विशद—(वि० सं०) स्वच्छ। स्पष्ट।

विशारद—(पु० सं०) वह जो किसी विषय का अच्छा पंडित हो। दक्ष।

विशेष—(पु०सं०) भेद। अधिक। ज़्यादा। —ज्ञ=किसी विषय का पारदर्शी। विशेषण= वह जो किसी प्रकार की विशेषता उत्पन्न करता या बतलाता हो। विशेषता= ख़ासपन।

विश्राम—(पु० सं०) आराम। ठहरने का स्थान।

विश्रुत—(वि० सं०) विख्यात। मशहूर।

विश्व—(पु०सं०)समस्त ब्रह्माण्ड। संसार। दुनिया।

विश्वास—(पु० सं०) एतबार।

यक़ीन । —घात=छल । धोखेबाज़ी।—पात्र=विश्वसनीय । क़ाबिल एतबार । विश्वासी=एतबारी।

विष—(पु० सं०) ज़हर।

विषम—(वि० सं०) जो बराबर न हो। असमान। बहुत तेज़। भीषण। संकट।

विषय—(सं०) संबंध। विकार। काम। (अं०) सब्जेक्ट। विषयक=विषय का। संबंधी। विषयी=विलासी। कामी।

विषाद—(पु० सं०) खेद। दुःख।

विसर्जन—(पु० सं०) परित्याग। छोड़ना। विदा होना। चला जाना। समाप्ति। अंत। दान।

विसाल—(पु० अं०) संयोग। प्रेमी और प्रेमिका का मिलाप।

विसूचिका—(स्त्री० सं०) हैज़ा।

विस्तार—(पु० सं०) फैलाव। पेड़ की शाखा।

विस्तृत—(वि० सं०) जो अधिक दूर तक फैला हुआ हो।

विस्मय—(पु० सं०) आश्चर्य। ताज्जुब।

विस्मरण—(पु० सं०) भूल जाना।

विस्मित—(वि० सं०) चकित।

विस्मृत—(स्त्री० सं०) भूल जाना। विस्मरण।

विहार—(पु० सं०) टहलना। घूमना। संभोग। रति-क्रीड़ा करने का स्थान। बौद्ध श्रमणों के रहने का मठ।

विह्वल—(वि० सं०) घबराया हुआ। व्याकुल।

वीटो—(पु० अं०) अस्वीकृति। नामंज़ूरी। रोक।

वीज—(पु० सं०) मूल कारण। वीर्य। अन्न आदि का बीज। अंकुर। फल। मंत्र। —गणित=एक प्रकार का गणित इसके द्वारा अज्ञात राशियों का पता लगाने में बहुत सहायता मिलती है।

वीणा—(स्त्री० सं०) एक बाजा। बीन।

वीर्य्य—(पु० सं०) शरीर के सात

धातुओं में से एक धातु। शुक्र। बीज।

वृत्त—(पु० सं०) पेड़। दरख़्त।

वृत्त—(पु० सं०) चरित्र। चाल-चलन। आचार। समाचार। हाल। मंडल। वह क्षेत्र जिसका घेरा या परिधि गोल हो।

वृत्तांत—(पु० सं०) समाचार। हाल।

वृत्ति—(स्त्री० सं०) जीविका। रोज़ी। वह धन जो किसी दीन, विधवा या छात्र आदि को बराबर, कुछ निश्चत समय पर, उसके सहायतार्थ दिया जाय। व्यवहार। योग के अनुसार चित्त की अवस्था। व्यापार। स्वभाव।

वृद्ध—पु० सं०) बुढ़ापा। बुड्ढा। —ता=वृद्धावस्था।

वृद्धि—(स्त्री० सं०) बढ़ती। ज़्यादती। अधिकता। ब्याज।

वेटेरिनरी—(वि० अं०) बैल, घोड़े आदि पालतू पशुओं की चिकित्सा संबंधी।—अस्पताल =पशु-चिकित्सालय।

वेतन—(पु० सं०) तनख़्वाह। दर माहा।

वेत्ता—(वि० सं०) जाननेवाला। ज्ञाता।

वेद—(पु० सं०) भारतीय आर्यों के सर्वप्रधान और सर्वमान्य धार्मिक ग्रंथ, जिनकी संख्या चार है। वेदांग=वेदों के अंग या शास्त्र जो छः हैं। वेदांत = उपनिषद् और आरण्यक आदि वेद के अंतिम भाग। ब्रह्म-विद्या। अध्यात्म। छः दर्शनों में से प्रधान दर्शन। उत्तर मीमांसा। अद्वैतवाद।

वेदी—(स्त्री० सं०) यज्ञ कार्य्य के लिये साफ करके तैयार की हुई भूमि। वेदिका=वेदी।

वेध—(पु० सं०) बेधना। किसी नोकीली चीज़ से छेदने की क्रिया। यंत्रों आदि को सहायता से ग्रहों, नक्षत्रों और तारों आदि को देखना।

ज्योतिष के ग्रहों का किसी ऐसे स्थान में पहुँचना जहाँ से उनका किसी दूसरे ग्रह में सामना होता हो। —क=वेध करनेवाला। वह जो मणियों आदि को बेधकर अपनी जीविका चलाता हो। वेधशाला=वह स्थान जहाँ नक्षत्रों और तारों आदि को देखने और उनकी दूरी, गति आदि जानने के यंत्र हों।

वेला—(स्त्री० सं०) काल। समय। समुद्र की लहर।

वेश—(पु० सं०) सजावट। पोशाक।

वेश्या—(स्त्री० सं०) रंडी। गणिका।

वेष—(पु० सं०) रूप-रंग।

वेष्टन—(पु० सं०) बेठन।

वेस्ट—(पु० अं०) पश्चिम दिशा। —कोट=एक प्रकार की अँगरेज़ी कुरती।

वैकल्पिक—(वि० सं०) जो किसी एक पक्ष में हो। एकांगी। जिसमें किसी प्रकार का संदेह हो। जो चुना न जा सके।

वैकुंठ—(पु० सं०) स्वर्ग।

वैगनेट—(स्त्री० अं०) एक प्रकार की घोड़ा-गाड़ी।

वैचित्र्य—(पु० सं०) भेद। फर्क। सुंदरता। खूबसूरती।

वैज्ञानिक—(पु० सं०) विज्ञान जाननेवाला। विज्ञान का।

वैतनिक—(पु० सं०) वह जो वेतन लेकर काम करता हो। नौकर। भृत्य।

वैतरणी—(स्त्री० सं०) एक पौराणिक नदी।

वैदिक—(पु० सं०) वेद में कहे हुए कृत्य करनेवाला। वेदों का पंडित। जो वेदों में कहा गया हो। वेद संबंधी।

वैदूर्य—(पु० सं०) धूमिल रंग का एक प्रकार का रत्न।

वैद्य—(पु० सं०) चिकित्सक। भिषक्।

वैद्यक—(पु० सं०) चिकित्सा-शास्त्र। आयुर्वेद।

वैमनस्य—(पु० सं०) द्वेष। दुश्मनी।

वैमानिक—(पु० सं०) वह जो विमान पर चढ़कर आकाश में विहार करता हो। आकाश-चारी।

वैर—(पु०सं०) शत्रुता। दुश्मनी। विरोध।

वैरागी—(पु० सं०) विरक्त। उदासीन वैष्णवों का एक संप्रदाय।

वैराग्य—(पु० सं०) विरक्ति।

वैवाहिक—(वि० सं०) विवाह संबंधी। विवाह का।

वैशाख—(पु० सं०) चैत के बाद का और जेठ के पहले का एक महीना।

वैशेषिक—(पु० सं०) छः दर्शनों में से एक। पदार्थ-विद्या।

वैश्य—(पु० सं०) भारतीय आर्यों के चार वर्णों में से एक। बनिया।

वैश्या—(स्त्री० सं०) वैश्य जाति की स्त्री।

वैश्वजनीन—(वि० सं०) समस्त संसार के लोगों का।

वैषम्य—(पु० सं०) विषमता।

वैष्णव—(पु० सं०) विष्णु की उपासना करनेवाला। हिंदुओं का एक प्रसिद्ध धार्मिक संप्रदाय।

वोट—(पु० अं०) मत। राय। वोटर=वोट या सम्मति देने-वाला। वोटर लिस्ट=वोट देनेवालों की सूची।

व्यंग्य—(पु० सं०) गूढ़ और छिपा हुआ अर्थ। ताना। बोली। चुटकी।

व्यंजन—(पु० सं०) चिह्न। भोजन। वर्णमाला में का वह वर्ण जो बिना स्वर की सहायता से न बोला जा सकता हो।

व्यंजना—(स्त्री० सं०) शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा साधारण अर्थ को छोड़कर कोई विशेष अर्थ प्रकट होता हो।

व्यक्त—(वि० सं०) प्रकट। ज़ाहिर। स्पष्ट।

व्यक्ति—(स्त्री० सं०) आदमी।
व्यग्र—(वि० सं०) व्याकुल। काम में फँसा हुआ।
व्यतिक्रम—(पु० सं०) उलट-फेर। बाधा। विघ्न।
व्यतिरेक—(पु० सं०) अभाव। भेद। अंतर। अतिक्रम।
व्यतीत—(वि० सं०) बीता हुआ। गत।
व्यथा—(स्त्री० सं०) पीड़ा। वेदना। दुःख। क्लेश। व्यथित=दुःखित। रंजीदा।
व्यभिचार—(पु० सं०) बद-चलनी। छिनाला। व्यभिचारी =बदचलन। परस्त्रीगामी।
व्यय—(पु० सं०) ख़र्च। सरफ़ा। खपत।
व्यर्थ—(वि० सं०) निरर्थक-फ़ज़ूल। यों ही।
व्यवच्छिन्न—(वि० सं०) अलग। जुदा। विभक्त।
व्यवच्छेद—(पु० सं०) पृथक्ता। अलगाव। विभाग। हिस्सा।
व्यवसाय—(पु० सं०) जीविका। उद्योग। कोशिश। काम-धंधा। उद्यम। व्यवसायी= रोज़गार करनेवाला।
व्यवस्था—(स्त्री सं०) प्रबन्ध। इंतज़ाम। व्यवस्थापक= प्रबन्धकर्त्ता। व्यवस्थापत्र = विधान सम्बन्धी पत्र। व्यवस्थित=कायदे का। नियमित।
व्यवहार—(पु० सं०) कार्य्य। बरताव। व्यापार। लेन-देन। व्यवहारिक=व्यवहार-योग्य। काम-काज सम्बन्धी। उपयोगी।
व्यवहृत—(वि० सं०) जो काम में लाया गया हो।
व्यसन—(पु० सं०) विपत्ति। आफ़त। दुःख। विषयों के प्रति आसक्ति। आदत। व्यसनी=शौकीन। वेश्या-गामी।
व्यस्त—(वि० सं०) काम में लगा हुआ या फँसा हुआ।
व्याकरण—(पु० सं०) भाषा का शुद्ध प्रयोग और नियम आदि बतलानेवाला शास्त्र।

व्याकुल—(पु० सं०) बहुत घबराया हुआ। व्याकुलता= घबराहट। कातरता।

व्याख्या—(स्त्री० सं०) टीका। व्याख्यान।

व्याख्याता—(पु० सं०) व्याख्या करनेवाला। वह जो व्याख्यान देता हो। भाषण करनेवाला।

व्याख्यान—(पु० सं०) भाषण। वक्तृता। —शाला = वह स्थान जहाँ किसी प्रकार का व्याख्यान आदि होता हो।

व्याघात—(पु० सं०) विघ्न। बाधा।

व्याघ्र—(पु० सं०) बाघ या शेर नामक प्रसिद्ध हिंसक जंतु।

व्याज—(पु० सं०) कपट। छल। धोखा। —निंदा = वह निंदा जो छल या कपट से की जाय। —स्तुति = वह स्तुति जो किसी बहाने से की जाय और ऊपर से देखने में स्तुति न जान पड़े। व्याजोक्ति=कपट भरी बात। एक प्रकार का अलंकार।

व्याध—(पु० सं०) शिकारी।

व्याधि—(स्त्री० सं०) रोग। बीमारी। आफ़त। झंझट।

व्यान—(पु० सं०) शरीर में रहने वाली पाँच वायुओं में से एक।

व्यापक—(वि० सं०) सर्वत्र। फैला हुआ।

व्यापार—(पु० सं०) कार्य। रोज़गार। व्यवसाय। व्यापारी =रोज़गारी। व्यवसायी।

व्याप्य—(वि० सं०) व्याप्त करने के योग्य। व्यापनीय।

व्यायाम—(पु० सं०) कसरत। मेहनत।

व्यालू—(पु० हि०) रात के समय का भोजन।

व्यावहारिक—(पु०सं०) व्यवहार संबंधी। व्यवहार शास्त्र संबंधी।

व्यासंग—(पु० सं०) बहुत अधिक आसक्ति या मनोयोग।

व्युत्पत्ति—(स्त्री० सं०) किसी

चीज़ का मूल उद्गम या उत्पत्ति स्थान।

व्यूह—(पु० सं०) समूह। मोर्चा।

व्रजभाषा—(स्त्री० सं०) मथुरा, आगरा, इटावा और इनके आसपास के प्रदेशों में बोली जानेवाली एक भाषा।

व्रत—(पु० सं०) नियमपूर्वक उपवास। व्रती=व्रत का आचरण कनेवाला।

श

श—हिंदी-वर्णमाला में तीसवाँ व्यंजन।

शंक—(पु० सं०) भय। डर। शंका=डर। खौफ़। शक। संदेह। आशंका। शंकित=डरा हुआ। भयभीत।

शंकर—(वि० सं०) शिव।

शंकराचार्य्य—(पु० सं०) अद्वैत मत के प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध आचार्य।

शंख—(पु० सं०) एक प्रकार का बड़ा घोंघा जो समुद्र में पाया जाता है।

शअ़बान—(पु० अ०) अरबी का आठवाँ महीना।

शऊर—(पु० अ०) ढंग। बुद्धि। अक्ल। —दार=समझदार।

शक—(पु० सं०) एक प्राचीन जाति। राजा शालिवाहन का चलाया हुआ संवत्। तातार देश। संदेह। आशंका। भय। डर। शक्की=जिसे हर बात में संदेह हो।

शकर—(स्त्री० सं०) शर्करा। कच्ची चीनी। शक्कर। —कंद=एक कंद। —पारा=एक प्रकार का फल जो नीबू से कुछ बड़ा होता है। एक प्रकार का प्रसिद्ध पकवान। रूईदार कपड़े पर की एक प्रकार की सिलाई। —बादाम=

खूबानी या ज़र्दआलू नामक फल।

शकल—(स्त्री० अ०) बनावट। चेहरा। रूप। सूरत। शकील (फ़ा०) = अच्छी शक्लवाला। खूबसूरत। सुंदर।

शकुन—(पु० सं०) लक्षण। शुभ मुहूर्त्त या उसमें होनेवाला कार्य्य।

शक्कर—(स्त्री० हि०) चीनी। कच्ची चीनी। खाँड़।

शक्ति—(स्त्री० सं०) बल। पराक्रम। ताकत। वश। अधिकार। राज्य के वे साधन जिनसे शत्रुओं पर विजय प्राप्त की जाती है। किसी देवता का पराक्रम या बल। —हीन = निर्बल। नामर्द।

शख़्स—(पु० अ०) व्यक्ति। मनुष्य। आदमी। शख्सियत = व्यक्तित्व। शख्सी = मनुष्य का। शख्स का।

शग़ल—(पु० अ०) व्यापार। काम-धंधा। मनोविनोद।

शग़ाल—(फ़ा०) गीदड़।

शजर—(पु० अ०) वृक्ष। पेड़। शजरा = वंशावली। पुश्तनामा। पटवारी का तैयार किया हुआ खेतों का नक़्शा।

शठ—वि० सं०) धूर्त्त। चालाक। पाजी। बदमाश।

शत—(पु० सं०) सौ। —क = सौ का समूह। शताब्दी। —घ्नी = तोप। शताब्दी = सौ वर्षों का समय। किसी संवत् में सैकड़े के अनुसार एक से सौ वर्ष तक का समय। शतावधान = वह मनुष्य जो एक साथ बहुत सी बातें सुनकर उनको क्रमशः याद रखता हो और बहुत से काम एक साथ कर सकता हो।

शतरंज—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का प्रसिद्ध खेल। —बाज़ = शतरंज का खिलाड़ी। शातिर। —बाज़ी = शतरंज खेलने का व्यसन। शतरंज खेलने का काम। शतरंजी = वह दरी जो कई प्रकार के रंग-बिरंगे सूतों से बनी हो।

शतरंज खेलने की बिसात। वह जो शतरंज का अच्छा खिलाड़ी हो।

शत्रु—(पु० सं०) दुश्मन। —ता=दुश्मनी। वैर भाव।

शदीद—(वि० अ०) बहुत ज़्यादह। भारी। सख़्त।

शनि—(पु० सं०) सौर। जगत के नौ ग्रहों में से सातवाँ ग्रह। —वार=वह वार जो रविवार से पहले और शुक्रवार के बाद पड़ता है।

शपथ—(स्त्री० सं०) क़सम। सौगंध।

शफ़क़—(स्त्री० अ०) प्रातःकाल या सायंकाल के समय आकाश में दिखाई पड़नेवाली ललाई।

शफ़क़त—(स्त्री अ०) कृपा। दया। मेहरबानी। प्यार। प्रेम।

शफ़तालू—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का बड़ा आड़ू, जिसे सतालू भी कहते हैं।

शफ़ा—(स्त्री० अ०) तंदुरुस्ती। नीरोगता। —ख़ाना= चिकित्सालय। अस्पताल।

शब—(स्त्री० फ़ा०) रात। —नम =ओस। बढ़िया कपड़ा। —नमी=मसहरी। छपरखट। —बरात=मुसलमानों के आठवें मास की चौदहवीं अथवा पंद्रहवीं रात। शबोरोज़=रात दिन। हर समय।

शबाब—(पु० अ०) यौवनकाल। जवानी। बहुत अधिक सौंदर्य।

शबाहत—(स्त्री० अ०) समानता। सूरत। शक्ल।

शबीह—(स्त्री० अ०) वह चित्र जो किसी व्यक्ति की सूरत-शक्ल के ठीक अनुरूप बना हो। समानता। अनुरूपता।

शब्द—(पु० सं०) ध्वनि। आवाज़। लफ़्ज़। —वेधी= वह मनुष्य जो आँखों से बिना देखे हुये केवल शब्द से दिशा का ज्ञान करके किसी व्यक्ति या वस्तु को बाण से मारता हो। —शास्त्र=व्याकरण। शब्दाडंबर=शब्द-

जाल। शब्दालंकार=साहित्य में वह अलंकार जिसमें केवल शब्दों या वर्णों से भाषा में लालित्य उत्पन्न किया जाय।

शमा—(स्त्री० अ०) मोम। मोमबत्ती। —दान—वह आधार जिसमें मोम की बत्ती लगाकर जलाते हैं।

शयन—(पु० सं०) सोना। बिछौना। मैथुन। संभोग। शयनागार=सोने का स्थान। शयनगृह। शय्या=बिस्तर। बिछौना। पलँग। खाट। शय्यादान=मृत्यु के अनंतर मृतक के संबंधियों का महापात्र को चारपाई, बिछावन आदि दान देना। सज्जादान।

शर—(पु० सं०) बाण। तीर।

शरअ़—(स्त्री० अ०) कुरान में दी हुई आज्ञा। मुसलमानों का धर्म्मशास्त्र।

शरई—(वि० अ०) मुसलमानी धर्म्म के अनुसार। (पु०) शरअ़ पर चलनेवाला मनुष्य।

शरण—(स्त्री० सं०) रक्षा। आड़। आश्रय। आश्रय का स्थान। घर। अधीन। मातहत। शरणागत=शरण में आया हुआ व्यक्ति।

शरत्—(स्त्री० सं०)। एक ऋतु जो आश्विन और कार्त्तिक मास में मानी जाती है। शरद् पूर्णिमा=कुआर मास की पूर्णमासी। शरद्पूनो।

शरफ़—(अ०) योग्यता।

शरबत—(पु० अ०) पीने की मीठी वस्तु। रस। चीनी आदि में पका हुआ किसी ओषधि का अर्क जो दवा के काम में आता है। पानी में घोली हुई शक्कर या खाँड़। सगाई की रस्म। शरबती=एक प्रकार का हल्का पीला रंग। एक प्रकार का नगीना। एक प्रकार का नीबू। एक प्रकार का बढ़िया कपड़ा। एक प्रकार का फालसा। रसीला। रसदार। शरबती नीबू=चकोतरा। गलगल। जंबीरी नीबू। मीठा नीबू।

शरम—(स्त्री॰ फ़ा॰) लज्जा। हया। लिहाज़। संकोच। इज़्ज़त। प्रतिष्ठा। —सार= जिसे शरम हो। लज्जावाला। लज्जित। शरमिंदा। —सारी = लज्जा। शर-मिंदगी। मुँह देखे की लज्जा करने वाला। शरमाऊ=जिसे बहुत लज्जा मालूम होती हो। शरमीला। शरमाना= लज्जित होना। लाज करना। शरमा-शरमी = लज्जा के कारण। शरमिंदा होकर। शरमिंदगी=लाज। झेंप। नदामत। शरमिंदा=लज्जित शरमीला=लज्जालु।

शरह—(स्त्री॰ अ॰) टीका। व्याख्या। दर। भाव। शरह लगान=लगान की दर। ज़मीन की पड़ती।

शरायत—(अ॰) शर्तें।

शराकत—(स्त्री॰ फ़ा॰) साझा। हिस्सेदारी।

शराफ़त—(स्त्री॰ अ॰) भल-मनसी। सज्जनता।

शराब—(स्त्री॰ अ॰) मदिरा। सुरा। मद्य। हकीमों की परिभाषा में शरबत। —ख़ाना =वह स्थान जहाँ शराब मिलती हो। —ख़ोरी= मदिरा-पान। —ख़्वार= शराबी। शराबी=शराब पीनेवाला। मद्यप।

शराबोर—(वि॰ फ़ा॰) तर-बतर। बिलकुल भींगा हुआ।

शरार—(अ॰) चिनगारियाँ। शरारा=चिनगारी।

शरारत—(स्त्री॰ अ॰) पाजीपन। दुष्टता।

शरीक—(वि॰ अ॰) शामिल। मिला हुआ। साथी। हिस्से-दार।

शरीफ़—(पु॰ अ॰) कुलीन मनुष्य। भलाआदमी। मक्के के प्रधान अधिकारी की पदवी। कलकत्ते, बम्बई आदि में सरकार की ओर से नियुक्त किये हुए एक प्रकार के अवैतनिक अधिकारी जिनके

सुपुर्द शांति-रक्षा तथा इसी प्रकार के काम रहते हैं।

शरीफा—(पु० हि०) सीताफल।

शरीर—(पु० सं०) देह। बदन। तन। (वि० अ०) पाजी। दुष्ट।

शर्करा—(स्त्री० सं०) शक्कर। चीनी। बालू का कण। —प्रमेह=एक प्रकार का प्रमेह।

शर्ट—(स्त्री० अं०) कमीज़।

शर्त्त—(स्त्री अ०) बाज़ी। दाँव।

शर्तिया—(क्रि० अ०) शर्त्त बदकर। बहुत ही निश्चय या दृढ़तापूर्वक।

शर्मसार—(फ़ा०) लज्जित।

शर्म्मा—(पु० वि०) ब्राह्मणों की उपाधि।

शलजम—(पु० फ़ा०) गाजर की भाँति का एक कंद।

शलाका—(स्त्री० सं०) सलाई। वह सलाई जिससे घाव की गहराई आदि नापी जाती है। सुरमा लगाने की सलाई।

शव—(पु० सं०) लाश। मुर्दा।

शशमाही—(वि० फ़ा०) छःमाही। अर्द्ध वार्षिक।

शशिमंडल—(पु० सं०) चंद्रमा का घेरा या मंडल।

शस्त्र—(पु० सं०) हथियार। औज़ार। —क्रिया=फोड़ों आदि की चीर-फाड़। नशतर लगाने की क्रिया। —विद्या=हथियार चलाने की विद्या। शस्त्रागार=शस्त्रों के रखने का स्थान। शस्त्रालय।

शस्य—(पु० सं०) घास। खेती। फसल। अन्न।

शहंशाह—(पु० फ़ा०) बादशाहों का बादशाह। महाराजाधिराज। शहंशाही=शाही। राजसी। शाहंशाह का पद। लेने देने में खरापन।

शह—(पु० फ़ा०) बादशाह। गुप्त रूप से किसी के भड़काने या उभारने की क्रिया या भाव। शहज़ादा=राजकुमार। युवराज। —ज़ोर=बलवान। ताक़तवर। —तीर=लकड़ी का चीरा हुआ बहुत

बड़ा और लम्बा लट्ठा। —बाला=वर का छोटा भाई जो विवाह के समय दूल्हे के साथ पालकी पर अथवा उसके पीछे घोड़े पर बैठकर जाता है। —मात=शतरंज के खेल में एक प्रकार की मात।

शहतूत—(पु० फ़ा०) तूत नाम का पेड़ और उसका फल।

शहद—(पु० अ०) मधु।

शहना—(पु० अ०) खेत की चौकसी करने वाला। कोतवाल।

शहनाई—(स्त्री० फा०) एक प्रकार का बाजा। नफ़ीरी।

शहर—(पु० फ़ा०) नगर। —पनाह=प्राचीर। नगरकोटा।

शहवत—(स्त्री० अ०) कामातुरता। भोग-विलास। मैथुन।

शहादत—(स्त्री० अ०) गवाही। सबूत। प्रमाण। धर्म्म के लिये लड़ाई आदि में मारा जाना।

शहाव—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का गहरा लाल रंग। शहाबी =गहरा लाल।

शहीद—(पु० अ०) धर्म पर बलिदान होने वाला व्यक्ति।

शांत—(वि० सं०) ठहरा हुआ। रुका हुआ। मिटा हुआ। स्थिर। मरा हुआ। धीर। सौम्य। गंभीर। मौन। चुप। शिथिल। थका हुआ। बुझा हुआ। विघ्न-बाधा-रहित। जिसकी घबराहट दूर हो गई हो। जिस पर असर न पड़ा हो। काव्य के नौ रसों में से एक एक रस। विरक्त पुरुष। शांति=स्थिरता। नीरवता। चैन। रोग आदि का दूर होना। मृत्यु। गम्भीरता। विराग। शांतिकर=शांति करने वाला। शांतिदाता =शांति देने वाला। शांतिदायक=शांति देने वाला।

शांतिदायी=शांति देनेवाला। शांतिमय=शांति से पूर्ण।

शाइस्ता—(फ़ा॰) सभ्य। तहज़ीब वाला। नम्र। शिक्षित। शाइस्तगी=सभ्यता। शिष्टता। मनुष्यत्व।

शाक—(पु॰ सं॰) तरकारी। साग। शाकाहार=अनाज अथवा फल-फूल पत्ते आदि का भोजन। शाकाहारी=केवल अनाज या साग-भाजी खाने वाला। शाकद्वीप=पुराणानुसार। ईरान और तुर्किस्तान के बीच का प्रदेश। शाकद्वीपीय=शाकद्वीप का रहने वाला। ब्राह्मणों का एक भेद।

शाकिर—(वि॰ अ॰) कृतज्ञ।

शाकी—(वि॰ सं॰) शिकायत करनेवाला। नालिश करने वाला। चुग़ली करने वाला।

शाख़—(स्त्री॰ फ़ा॰) टहनी। डाली। खंड। नदी आदि की बड़ी धारा में से निकली हुई छोटी धारा। —दार =जिसमें बहुत सी शाखाएँ हों। टहनीदार। सींगवाला।

शाखा—(स्त्री॰ सं॰) टहनी। डाल। अंग। किसी शास्त्र या विद्या के अंतर्गत उसका कोई भेद।

शागिर्द—(पु॰ फ़ा॰) शिष्य। चेला। —पेशा=मातहत। अहलकार। कर्मचारी। खिदमतगार। बड़ी कोठी के पास नौकरों के लिये अलग बने हुये घर। शागिर्दी=शिष्यता।

शाद—(वि॰ फ़ा॰) खुश। प्रसन्न। भरा पूरा। —मान=प्रसन्न। खुश। —मानी=प्रसन्नता। खुशी। शादाब=हरा-भरा। तरो ताज़ा। शादियाना=खुशी का बाजा। बधाई। शादी=खुशी। विवाह।

शान—(स्त्री॰ अ॰) सजावट। तड़क-भड़क। ठसक। विशालता। चमत्कार। करामात। शक्ति। ऐश्वर्य। इज्ज़त। —दार =भड़कीला। ठाट-बाट का।

भव्य। विशाल। वैभवपूर्ण। ठसक वाला। शौकत= ठाट-बाट। सजावट।

शाना—(पु० फ़ा०) कंधा।

शाप—(पु० सं०) कोसना। बददुआ। —ग्रस्त=जिसे शाप दिया गया हो। शापित।

शाबाश—(अव्य० फ़ा०) खुश रहो। धन्य हो। वाह वाह। शाबाशी=वाह-वाही। साधु-वाद।

शाम—(स्त्री० फ़ा०) साँझ। संध्या।

शामत—(स्त्री० अ०) दुर्भाग्य। बदक़िस्मती। आफ़त। विपत्ति। दुर्दशा। —ज़दा =अभागा। बदनसीब। शामती=जिसकी दुर्दशा होने को हो। जिसकी शामत आई हो।

शामियाना—(पु० फ़ा०) बड़ा तंबू।

शामिल—(वि० अ०) मिला हुआ। सम्मिलित। —हाल =साथी। शरीक। शामिलात = हिस्सेदारी। साझा। सम्मिलित।

शायक़—(वि० अ०) शौकीन। इच्छुक। आकांक्षी।

शायद—(अव्य० फ़ा०) कदाचित। संभव है।

शायर—(पु० अ०) कवि। शायरी=काव्य। कविता।

शाया—(वि० अ०) प्रकट। ज़ाहिर। प्रकाशित। छपा हुआ।

शारीरिक—(वि० सं०) शरीर संबंधी। जिस्मानी।

शाल—(स्त्री० फ़ा०) एक प्रकार की ऊनी या रेशमी चादर। दुशाला।

शालिहोत्र—(पु० सं०) घोड़ों और पशुओं आदि की चिकित्सा का शास्त्र। शालिहोत्री = विशेषतः घोड़ों की चिकित्सा करने वाला।

शालीन—(वि० सं०) विनीत। नम्र। जिसे लज्जा आती हो।

—ता=लज्जा। नम्रता। अधीनता।

शाश्वत—(वि० सं०) जो सदा स्थायी रहे। नित्य।

शासक—(पु० सं०) हाकिम।

शासन—(पु० सं०) आज्ञा। हुक्म। किसी को अपने अधिकार या वश में रखना। किसी के कार्य्यों आदि का नियंत्रण करना। हुकूमत। शासित=शासन किया हुआ। प्रजा।

शास्त्र—(पु० सं०) वे धार्मिक ग्रंथ जो लोगों के हित और अनुशासन के लिये बनाए गए हैं। —कार=शास्त्र बनानेवाला। —ज्ञ=शास्त्रों का जानकार। शास्त्रवेत्ता। —दर्शी=वह जिसे शास्त्रों का अच्छा ज्ञान हो। —वक्ता =वह जो लोगों को शास्त्रों का उपदेश देता हो।—विद् शास्त्रों का जाननेवाला। शास्त्री=शास्त्र का जाननेवाला। शास्त्रीय=शास्त्र संबंधी। शास्त्र का। शास्त्रोक्त=शास्त्रों में कहा हुआ।

शाह—(पु० फ़ा०) बहुत बड़ा राजा या महाराजा। बादशाह। मुसलमान फ़क़ीरों की उपाधि। —ज़ादा=बादशाह का लड़का। महाराजकुमार। —ज़ादी=बादशाह की कन्या। राजकुमारी। —दरा=वह आबादी जो किसी महल या किले के नीचे बसी हो। —बाज़= सफ़ेद रंग का एक प्रकार का शिकारी पक्षी। —राह= बड़ी सड़क। राजमार्ग। शाहाना=बादशाहों के योग्य। राजसी। जामा। शाही= राजसी। शाहों या बादशाहों का। शाहंशाह=बादशाहों का बादशाह। महाराजाधिराज। शाहंशाही = शाहंशाह का कार्य्य। व्यवहार का खरापन।

शाहिद—(पु० अ०) साक्षी। गवाह। सुन्दर। खूबसूरत।

शिगरफ़—(पु० फ़ा०) ईंगुर। हिंगुल।

शिकंजा—(पु० फ़ा०) दबाने, कसने या निचोड़ने का यंत्र पेंच कसने का यंत्र या औज़ार। वह तागा जिससे जुलाहे घुमावदार बंद बनाते और पनिक बाँधते हैं। प्राचीन काल का अपराधियों को कठोर दंड देने के लिये एक यंत्र जिसमें उनकी टाँगें कस दी जाती थीं। कल। पेंच।

शिकन—(स्त्री० फ़ा०) सिलुवट। बल। सिकुड़न—।

शिकम—(पु० फ़ा०) पेट। उदर।

शिकमी काश्तकार—(पु० फ़ा०) वह काश्तकार जिसे जोतने के लिये खेत दूसरे काश्तकार से मिला हो।

शिकरा—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का बाज पक्षी।

शिकवा—(पु० अ०) शिकायत। उलहना।

शिकस्त—(स्त्री० फ़ा०) हार। पराजय। विफलता।

शिकस्ता—(वि० फ़ा०) टूटा हुआ। भग्न। उर्दू या फ़ारसी की घसीट लिखावट।

शिकायत—(स्त्री० अ०) बुराई करना। चुग़ली। उलहना। बीमारी।

शिकार—(पु० फ़ा०) आखेट। मृगया। अहेर। वह जानवर जो मारा गया हो। —गाह =शिकार खेलने का स्थान। —बंद=वह तस्मा जो घोड़े की दुम के पास चारजामे के पीछे शिकार लटकाने या आवश्यक सामान बाँधने के लिये लगाया जाता है। शिकारी=शिकार करनेवाला।

शिक्षा—(स्त्री० सं०) किसी विद्या को सीखने या सिखाने की क्रिया। तालीम। उपदेश। शासन। दंड। शिक्षक =शिक्षा देनेवाला। गुरु। शिक्षण= पढ़ाने का काम। शिक्षा। शिक्षालय= पाठ-

शाला। विद्यालय। विभाग =सरिश्ता तालीम। शिक्षित =विद्वान्। पढ़ा-लिखा।

शिखर—(पु० सं०) सबसे ऊपर का भाग। चोटी। पहाड़ की चोटी। कँगूरा। कलश। मंडप। गुंबद।

शिखरिणी—(स्त्री० सं०) दही और चीनी का रस। शिखरन।

शिखा—(स्त्री० सं०) चोटी। कलगी। ज्वाला। दीपक की लौ। शिखर। —बंधन= चोटी बाँधना।

शिगाफ़—(पु० फ़ा) चीरा। नश्तर। दरार। दर्ज। कलम के बीच का चिराव। छेद।

शिगूफ़ा—(पु० फ़ा०) बिना खिला हुआ फूल। कली। किसी अनोखी बात का होना।

शिजरा—(अ०) वंश। वंशावली।

शिताब—(क्रि० फ़ा०) जल्द। शीघ्र। शिताबी=शीघ्रता। जल्दी। तेज़ी।

शिथिल—(वि० सं०) ढीला। सुस्त। धीमा। थका हुआ। —ता=ढीलापन। थकावट। मुस्तैदी का न होना। आलस्य। नियम-पालन की कड़ाई का न होना।

शिद्दत—(स्त्री० अ०) तेज़ी। ज़ोर। अधिकता।

शिनाख़्त—(स्त्री० फ़ा०) पहचान। परख। तमीज़।

शिमाल—(स्त्री० अ०) उत्तर दिशा।

शिया—(पु० अ०) मददगार। मुसलमानों के दो प्रधान और परस्पर विरोधी संप्रदायों में से एक।

शिर—(पु० हि०) सिर। मस्तक। माथा। सिरा। चोटी। शिखर।

शिरकत—(स्त्री० अ०) साझा। हिस्सा।

शिरा—(स्त्री० सं०) रक्त की छोटी नाड़ी।

शिराकत—(स्त्री० अ०) साझा। हिस्सेदारी। कार्य्य में योग।

—नामा = वह काग़ज़ जिस पर साझे की शर्तें लिखी हों।

शिरीष—(पु० सं०) सिरस का पेड़।

शिरोधार्य्य—(वि० सं०) सादर अंगीकार करने योग्य।

शिरोमणि—(पु० सं०) सिर पर का रत्न। श्रेष्ठ व्यक्ति। माला में सुमेरु।

शिला—(स्त्री० सं०) पत्थर। चट्टान। —जीत = काले रंग की एक प्रसिद्ध औषधि जिसे कुछ लोग मोमियाई भी कहते हैं। —लेख = पत्थर पर लिखा या खोदा हुआ कोई प्राचीन लेख। —स्तम्भ = पत्थर का खंभा, जिसपर कुछ खुदा हो।

शिलिंग—(पु० अं०) इङ्गलैण्ड में चलने वाला चाँदी का एक सिक्का।

शिल्प—(पु० सं०) दस्तकारी। हुनर। कारीगरी। —कला = कारीगरी। दस्तकारी। —कार = शिल्पी। कारीगर। दस्तकार। राज। मेमार। —जीवी = कारीगर। दस्तकार।

शिव—(पु० सं०) हिन्दुओं के एक प्रसिद्ध देवता। महादेव। कल्याण करने वाला। —रात्रि = फाल्गुन बदी चतुर्दशी। शिवालय = शिव जी का मन्दिर। शिवाला = शिवजी का मन्दिर।

शिविका—(स्त्री० सं०) पालकी या डोली।

शिविर—(पु० सं०) डेरा। खेमा। पड़ाव। छावनी। क़िला।

शिशिर—(पु० सं०) एक ऋतु जो माघ और फाल्गुन मास में होती है। शीतकाल।

शिशु—(पु० सं०) छोटा बच्चा। —ता = बचपन।

शिशुमार चक्र—(पु० सं०) सब ग्रहों सहित सूर्य। सौर जगत्।

शिष्ट—(वि० पु०) सुशील। सभ्य। सज्जन। भला।

श्रेष्ठ । आचार व्यवहार में निपुण । आज्ञाकारी । —ता=सभ्यता । श्रेष्ठता । शिष्टाचार=सभ्य पुरुषों के योग्य आचरण । सभ्य व्यवहार । आवभगत ।

शिष्य—(पु० सं०) विद्यार्थी । शागिर्द । चेला ।

शीघ्र—(क्रि० सं०) तुरंत । जल्द । —कारी=जल्दी से काम करने वाला । शीघ्र प्रभाव उत्पन्न करने वाला । —गामी=शीघ्र चलनेवाला . —पतन=स्तंभन शक्ति का अभाव ।

शीत—(वि० सं०) ठंढा । सर्दी । ओस । —कटिबंध=पृथ्वी के उत्तर और दक्षिण के भूमिखंड के वे कल्पित विभाग जहाँ जाड़ा बहुत अधिक पड़ता है । —काल=हेमंत ऋतु । जाड़े का मौसम । शीतल=ठंढा । सर्द । शीतलचीनी=कबाबचीनी । शीतला=चेचक । विस्फोटक रोग ।

शीर—(पु० फ़ा०) दूध । क्षीर । —ख़िश्त=हकीमी में एक रेचक औषधि । —ख़ोरा दूध पीता बच्चा । अनजान बालक । —माल=एक प्रकार की ख़मीरी रोटी ।

शीरा—(पु० फ़ा०) चीनी मिला हुआ पानी । शर्बत । चाशनी ।

शीराज़ा—(पु० फ़ा०) वह बुना हुआ रंगीन या सफ़ेद फीता जो किताबों की सिलाई की छोर पर शोभा और मज़बूती के लिये लगाया जाता है । प्रबंध । इन्तज़ाम । सिलसिला ।

शीरीं—(वि० फ़ा०) मीठा । प्रिय । प्यारा । मधुर ।

शीरीनी—(स्त्री० फ़ा०) मिठाई ।

शीर्ण—(वि० सं०) टूटा-फूटा हुआ । फटा-पुराना । दुबला-पतला ।

शीर्ष—(पु० सं०) सिर । कपाल । माथा । सबसे ऊपर का

भाग। सिरा। —क=वह शब्द या वाक्य जो विषय के परिचय के लिये किसी लेख या प्रवन्ध के ऊपर लिखा जाय।

शील—(पु० सं०) चाल व्यवहार। आचरण। चरित्र। स्वभाव। आदत। अच्छा चाल-चलन। उत्तम स्वभाव। कोमल हृदय। संकोच का स्वभाव। मुरौवत। तत्पर। स्वभावयुक्त।

शीशम—(पु० फ़ा०) एक पेड़।

शीशमहल—(पु० फ़ा०) काच का मकान।

शीशा—(पु० फ़ा०) काच। दर्पण। आइना।

शीशी—(स्त्री० फ़ा०) काच की लम्बी कुप्पी।

शुक—(पु० सं०) तोता। सुग्गा।

शुक्र—(वि० सं०) वीर्य। एक बहुत चमकीला ग्रह। शनिवार से पहले पड़नेवाला दिन। (अ०) धन्यवाद। कृतज्ञता प्रकाश। —गुज़ार =एहसान मानने वाला। कृतज्ञ। —गुज़ारी=एहसानमंदी। शुक्रप्रमेह=धातु क्षीणता। शुक्रवार=सप्ताह का छठा दिन जो बृहस्पतिवार के वाद पड़ता है। शुक्रिया= धन्यवाद। कृतज्ञता-प्रकाश।

शुक्ल—(वि० सं०) सफ़ेद। श्वेत। ब्राह्मणों की एक पदवी।

शुचि—(पु० सं०) पवित्र। साफ़। निर्दोष।

शुजा—(वि० अ०) बहादुर। शूरवीर। शुजाअत=बहादुरी। वीरता।

शुतुर—(फ़ा०) ऊँट। —मुर्ग़= एक बहुत बड़ा पक्षी जो ऊँट की तरह होता है।

शुदनी—(स्त्री० फ़ा०) होनहार।

शुद्ध—(वि० सं०) पवित्र। साफ़। ठीक। सही। निर्दोष। खालिस। —ता=पवित्रता। शुद्धि=सफाई। वैदिक धर्म के अनुसार वह कृत्य या संस्कार जो किसी अशुद्ध या अशुच व्यक्ति के शुद्ध होने के समय

होता है। शुद्धि-पत्र=वह पत्र जिससे सूचित हो कि कहाँ क्या अशुद्धि है।

शुबहा—(पु० अ०) सन्देह। शक। धोखा। भ्रम।

शुभ—(वि० सं०) अच्छा। भला। (पु०) कल्याण। मंगल। —चिंतक=शुभ या भला चाहनेवाला। हितैषी। —दर्शन=सुन्दर। खूबसूरत।

शुभ्र—(पु० सं०) सफ़ेद।

शुरू—(पु० अ०) आरंभ। प्रारंभ।

शुल्क—(पु० सं०) महसूल। चंदा। दहेज। फ़ीस।

शुश्रूषा—(स्त्री० सं०) सेवा। टहल। कथन।

शुष्क—(वि० सं०) सूखा। खुश्क। नीरस। रसहीन। जिसमें मन न लगता हो। व्यर्थ। निरर्थक। निर्मोही।

शूद्र—(पु० सं०) हिन्दुओं के चार वर्णों में से चौथा और अंतिम वर्ण।

शून्य—(पु० सं०) ख़ाली स्थान। बिन्दु। बिन्दी। अभाव। खाली। निराकार। रहित।

शूर—(पु० सं०) वीर। बहादुर। योद्धा। सिपाही।

शूल—(पु० सं०) एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। सूली। नुकीला काँटा। पेट का दर्द। टीस। नुकीला।

शृङ्खला—(स्त्री० सं०) क्रम। सिलसिला। ज़ंजीर। कतार। —बद्ध=सिलसिलेवार।

शृंग—(पु० सं०) शिखर। कँगूरा।

शृंगार—(पु० सं०) साहित्य के अनुसार नौ रसों में से एक रस। सजावट। शोभा।

शृगाल—(पु० सं०) सियार। डरपोक। दुष्ट।

शेख़—(पु० अ०) पैग़ंबर मुहम्मद के वंशजों की उपाधि। मुसलमानों के चार वर्गों में सब से पहला वर्ग। पीर। बड़ा बूढ़ा। —चिल्ली=एक कल्पित मूर्ख व्यक्ति जिसके संबंध में बहुत सी विलक्षण और हँसाने

वाली कहानियाँ कही जाती हैं। बैठे-बैठे बड़े-बड़े मंसूबे बाँधनेवाला। मूर्ख। मसख़रा।

शेख़ी—(स्त्री० फ़ा०) अहंकार। घमंड। ऐंठ। अकड़। अभिमान भरी बात। —बाज़ = अभिमानी। डींग मारनेवाला व्यक्ति।

शेयर—(पु० अं०) हिस्सा। भाग। किसी कारबार में लगी हुई पूँजी का अलग हिस्सा जो उसमें शामिल होनेवाला हरएक आदमी लगावे। —होल्डर = हिस्सेदार।

शेर—(पु० फ़ा०) बाघ। नाहर। अत्यंत वीर और साहसी पुरुष। (अ०) फ़ारसी, उर्दू आदि की कविता के दो चरण। —दहाँ = (वि० फा०) जिसका मुँह शेर का सा हो। —बच्चा = शेर का बच्चा। वीर पुत्र। बहादुर आदमी। एक प्रकार की छोटी बंदूक। —बानी = अँग्रेज़ी ढँग की काट का एक प्रकार का अंगा।

शेष—(पु० सं०) बाक़ी। अंत। परिणाम। बचा हुआ। ख़तम। समाप्त। और। अतिरिक्त। शेषांश = आख़िरी भाग।

शैतान—(पु० अ०) घोर अत्याचारी। बहुत शरारती आदमी। शैतानी = दुष्टता। शरारत।

शैली—(स्त्री० सं०) चाल। ढंग। परिपाटी। तरीक़ा। रीति। लिखने का ढंग।

शैशव—(वि० सं०) बचपन। लड़कपन।

शोक—(पु० सं०) रंज। ग़म। शोकातुर = शोक से व्याकुल। शोकार्त्त = शोक से विकल।

शोख़—(वि० फ़ा०) ढीठ। धृष्ट। शरीर। चंचल। चटकीला।

शोख़ी—(स्त्री० फ़ा०) ढिठाई। चंचलता। तेज़ी। चटकीलापन।

शोचनीय—(वि० सं०) शोक करने योग्य। जिससे दुःख

उत्पन्न हो। बहुत हीन या बुरा।

शोध—(पु० सं०) जाँच। परीक्षा। खोज। तलाश।

शोभा—(स्त्री० सं०) कांति। चमक। सुन्दरता। सजीलापन। शोभायमान=सोहता हुआ। सुन्दर। शोभित=सुन्दर। सजीला। सजा हुआ।

शोर—(पु० फ़ा०) हल्ला। कोलाहल। धूम। प्रसिद्ध। शोरिश=हलचल। खलबली। बलवा। दंगा।

शोरबा—(पु० फ़ा०) झोल। जूस। पके हुए मांस का पानी।

शोला—(पु० फ़ा०) आग की लपट।

शोषक—(पु० सं०) सोखनेवाला। सुखानेवाला। क्षीण करनेवाला।

शोहदा—(पु० अ० + सं०) व्यभिचारी। लंपट। बदमाश। बहुत बनाव सिंगार करनेवाला। —पन=गुण्डापन। लुच्चापन। छैलापन।

शोहरत—(स्त्री० अ०) नामवरी। प्रसिद्धि। धूम। खूब फैली हुई ख़बर।

शोहरा—(पु० अ०) प्रसिद्धि। ख्याति। धूम से फैली हुई ख़बर।

शौक़—(पु० अ०) प्रबल लालसा। हौसिला। व्यसन। चसका। झुकाव। शौक़ीन=शौक़ करनेवाला। सदा बना ठना रहनेवाला। शौक़ीनी=सजावट। बनावट।

शौकत—(स्त्री० अ०) ठाठ-बाट। शान।

शौक़िया—(क्रि० अ०) शौक के कारण। (वि०) शौक से भरा हुआ।

शौच—(पु० सं०) पवित्रता। शुद्धता।

शौर्य्य—(पु० सं०) वीरता। पराक्रम।

श्मशान—(पु० सं०) मसान। मरघट।

श्याम—(पु० सं०) काला और नीला मिला हुआ रंग। —ता=कालापन। मलिनता। उदासी।

श्यामा—(स्त्री० सं०) एक पक्षी। सोलह वर्ष की तरुणी। काले रंग की गाय। श्याम रंगवाली। तपाये हुये सोने के समान वर्णवाली।

श्रद्धा—(स्त्री० सं०) बड़े के प्रति मन में होनेवाला आदर और पूज्य भाव। भक्ति। विश्वास। श्रद्धालु=श्रद्धा रखनेवाला। श्रद्धास्पद=पूजनीय। श्रद्धेय। श्रद्धेय=श्रद्धा करने के योग्य।

श्रम—(पु० सं०) परिश्रम। मेहनत। —कण=पसीने की बूँदें, जो परिश्रम करने पर शरीर से निकलती हैं। —जीवी=मेहनत करके पेट पालनेवाला। —विभाग=परिश्रम या काम का विभाग। —सहिष्णु=मेहनती। परिश्रमी। —साध्य=बिना परिश्रम न सध सके। श्रमित=थका हुआ। श्रमी=मेहनती। परिश्रमी। श्रमजीवी।

श्रमण—(पु० सं०) बौद्ध सन्न्यासी। यति। मुनि।

श्रवण—(पु० सं) कान।

श्रांत—(वि० सं०) परिश्रम से थका हुआ।

श्राद्ध—(पु० सं०) श्रद्धा से किया जानेवाला काम। वह कृत्य जो शास्त्र के विधान के अनुसार पितरों के उद्देश्य से किया जाता है। पितृ-पक्ष।

श्रावक—(पु० सं०) जैन धर्म्म को माननेवाला सन्यासी।

श्रावण—(पु० सं०) सावन। श्रावणी=सावन मास की पूर्णमासी।

श्री—(स्त्री० सं०) लक्ष्मी। शोभा। चमक। आदर-सूचक शब्द जो नाम के आदि में रखा जाता है। (पु०) योग्य। सुंदर। श्रेष्ठ। शुभ। —मंत=श्रीमान्। धनी। —मत्=धनवान्। सुंदर। श्रीमती=स्त्रियों के लिये

आदर-सूचक शब्द। —मान् =आदर-सूचक शब्द जो नाम के आदि में रखा जाता है। श्रीयुत। धनवान्। सुंदर। —युक्त=जिसमें श्री या शोभा हो। एक आदर-सूचक विशेषण। —युत=जिसमें श्री या शोभा हो।

श्रुत—(वि० सं०) सुना हुआ।

श्रुति—(स्त्री० सं०) कान। सुनी हुई बात। वेद। —कटु =जो कान को प्रिय न लगे। —मधुर=जो कान को प्रिय लगे।

श्रेणी—(स्त्री० सं०) पंक्ति। कतार। सिलसिला। दल। सेना। —बद्ध=कतार बाँधे हुए।

श्रेय—(वि० सं०) अधिक अच्छा। बेहतर। कल्याणकारी। यश देनेवाला। भलाई। —स्कर =कल्याण करनेवाला शुभ-दायक।

श्रेष्ठ—(वि० सं०) सर्वोत्तम। बहुत अच्छा। पूज्य। बड़ा।

श्लाघा—(स्त्री० सं०) प्रशंसा। तारीफ़। स्तुति। बड़ाई। खुशामद। इच्छा। चाह। श्लाघनीय = तारीफ़ के लायक। उत्तम।

श्लील—(वि० सं०) जो भद्दा न हो। मंगल-दायक। शुभ।

श्लेष्मा—(पु० सं०) कफ। बलगम।

श्लोक—(पु० सं०) संस्कृत का एक व्यवहृत छंद। संस्कृत का कोई पद्य। कीर्ति।

श्वपच—(पु० सं०) कुत्ते का मांस पकाकर खानेवाला। चांडाल। डोम।

श्वसुर—(पु० सं०) पति या पत्नी का पिता। ससुर।

श्वान—(पु० सं०) कुत्ता। —निद्रा=हलकी नींद। झपकी।

श्वास—(पु० सं०) साँस। दम। दमा। —कास=दमा और खाँसी। दमा। श्वासा= साँस। दम। प्राण। श्वासो-

च्छ्वास=वेग से साँस खींचना और निकालना।

श्वेत—(वि० सं०) सफेद।

श्वेतांबर=सफेद वस्त्र धारण करनेवाला। जैनों के दो प्रधान संप्रदायों में से एक।

ष

ष—हिंदी-वर्णमाला के व्यंजन वर्णों में इकतीसवाँ वर्ण या अक्षर। इसका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है।

षट्कर्म्म—(पु० सं०) ब्राह्मणों के छः कर्म—पढ़ना, पढ़ाना, यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान लेना, दान देना।

षट्पदी—(वि० स्त्री०) भौंरी। एक छंद। छप्पय।

षट्राग—(पु० सं०) संगीत के छः राग। बखेड़ा। झंझट।

षड्यंत्र—(पु० सं०) भीतरी चाल। कपट का जाल।

षोड़श—(वि० स०) सोलहवाँ। सोलह।

षोड़श कला—(स्त्री० सं०) चंद्रमा के सोलह अंश।

षोड़शी—(वि० स्त्री० सं०) सोलह वर्ष की नवयौवना स्त्री।

षोड़श संस्कार—(पु० सं०) वैदिक रीति के अनुसार गर्भाधान से लेकर मृतक कर्म तक के सोलह संस्कार जो द्विजातियों के लिये कहे गए हैं।

स—हिंदी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यंजन।

सँइतना—(क्रि॰ हि॰) लीपना। चौका लगाना। पोतना।

संकट—(पु॰ वि॰) विपत्ति। मुसीबत। दुःख। तकलीफ। भीड़।

संकर—(पु॰ सं॰) वह जिसकी उत्पत्ति भिन्न वर्ण या जाति के पिता और माता से हुई हो। दोगला।

सँकरा—(वि॰ हि॰) पतला और तंग।

संकरीकरण—(पु॰ सं॰) दो पदार्थों को एक में मिलाने की क्रिया।

संकलन—(पु॰ सं॰) संग्रह करना। जमा करना। संकलित =चुना हुआ। संगृहीत।

संकल्प—(पु॰ सं॰) विचार। इरादा। दृढ़ निश्चय।

संकीर्ण—(वि॰ सं॰) तंग। सँकरा।

संकीर्त्तन—(पु॰ सं॰) भली-भाँति किसी की कीर्ति का वर्णन करना। भजन। वंदना।

संकुचित—(वि॰ सं॰) लज्जित। सिमटा हुआ। तंग। संकीर्ण। अनुदार। क्षुद्र।

संकुल—(वि॰ सं॰) परिपूर्ण। समूह। भीड़। संकुलित= भरा हुआ। एकत्र। घना।

संकेत—(पु॰ सं॰) इशारा। इंगित। निशान। चिह्न।

संकोच—(पु॰ सं॰) खिँचाव। तनाव। शर्म। भय। आगा-पीछा। कमी।

संक्रांति—(स्त्री॰ सं॰) सूर्य्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करने का समय।

संक्रामक—(वि॰ सं॰) छूत वाला।

संक्षिप्त—(वि॰ सं॰) खुलासा। थोड़ा। अल्प। मुख़्तसर।

संक्षेप—(पु॰ सं॰) थोड़े में कोई बात कहना।

संखिया—(पु० हि०) एक ज़हर।

संख्या—(स्त्री० सं०) गिनती। अदद। संख्यक=संख्या वाला। तादादी।

संग—(पु० सं०) मिलन। संसर्ग। सहवास। साथ। सहित। संगिनी=सहचरी। पत्नी। (फ़ा०) पत्थर। —असवद=(पु० फ़ा० अ०) काले रंग का एक बहुत प्रसिद्ध पत्थर जो काबे की एक दीवार में लगा हुआ है। —जराहत=एक प्रकार का पत्थर। —मरमर=सफ़ेद चिकना पत्थर। —मूसा=काला चिकना पत्थर। —यशब=एक कीमती पत्थर। —रेजा=पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े। कंकड़। —सुलेमानी=रंगीन नग। —तराश=पत्थर काटने वाला मज़दूर। —दिल=कठोर हृदयवाला। बेरहम। संगी=साथी। एक प्रकार का कपड़ा।

संगदिली—(स्त्री० फ़ा०) निर्दयता।

संगति—(स्त्री० सं०) मेल। मिलाप। साथ। आगे-पीछे कहे जानेवाले वाक्यों आदि का मिलान।

संगम—(पु० सं०) मिलाप। दो नदियों के मिलने का स्थान।

संगीत—(पु० सं०) नृत्य गीत और वाद्य का समाहार। —शास्त्र=वह शास्त्र जिसमें गाने, बजाने, नाचने और हाव-भाव आदि दिखलाने की कला का विवेचन हो।

संगीन—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का अस्त्र। (वि०) पत्थर का बना हुआ। टिकाऊ। विकट। पेचीदा।

संगृहीत—(वि० सं०) संग्रह किया हुआ। संकलित। संगृहीता=एकत्र करनेवाला। जमा करनेवाला।

संग्रह—(पु० सं०) संकलन। जमा करना।

संग्रहणी—(स्त्री० सं०) एक रोग।

संग्राम—(पु० सं०) युद्ध। लड़ाई। —भूमि=लड़ाई का मैदान। युद्ध-क्षेत्र।

संघ—(पु० सं०) समूह। दल। समिति। सभा। प्राचीन भारत का एक प्रकार का प्रजातंत्र राज्य। साधुओं के रहने का मठ।

संघटन—(पु० सं०) रचना। बनावट।

संघर्ष—(पु० सं०) रगड़। घिस्सा। प्रतियोगिता। स्पर्धा।

संघात—(पु० सं०) वध।

संघाराम—(पु० सं०) बौद्ध भिक्षुओं तथा श्रमणों आदि के रहने का मठ। विहार।

संचय—(पु० सं०) समूह। जमा करना। संचयी=संचय करनेवाला। कंजूस।

संचार—(पु० सं०) गमन। चलना। फैलना।

संचालक—(पु० सं०) मैनेजर। प्रबंधक। चलानेवाला।

संचित—(वि० सं०) संचय किया हुआ। एकत्र किया हुआ।

संजाफ—(स्त्री० फ़ा०) झालर। किनारा। गोट। मगजी। संजाफी=झालरदार। किनारेदार।

संजीदा—(वि० फ़ा०) गंभीर। शांत। समझदार। बुद्धिमान्। संजीदगी=गंभीरता।

संजीवनी विद्या—(स्त्री० सं०) एक प्रकार की कल्पित विद्या।

संज्ञा—(स्त्री० सं०) चेतना। होश। नाम। —हीन=बेहोश। संज्ञक=नामवाला।

संड मुसंड—(वि० हि०) मोटा-ताज़ा। बहुत मोटा।

संड़सा—(पु० हि०) लोहे का एक औजार जो दो छड़ों से बनता है। जँबूरा।

संडास—(पु०) कुएँ की तरह का गहरा पाखाना। शौच-कूप।

संतत—(अव्य० सं०) सदा। निरंतर।

संतति—(स्त्री० सं०) संतान। औलाद।

संतप्त—(वि० सं०) बहुत अधिक जला हुआ। दुःखी। पीड़ित।

संतरा—(पु० पुर्त्त०) एक प्रकार का बड़ा और मीठा नीबू। बड़ी नारंगी।

संतरी—(पु० अं०) किसी स्थान पर पहरा देनेवाला सिपाही। पहरेदार। द्वारपाल।

संतान—(पु० सं०) संतति। औलाद।

संताप—(पु० सं०) जलन। आँच। कष्ट। मनोव्यथा।

संतुष्ट—(वि० सं०) तृप्त।

संतोष—(पु० सं०) सब्र। शांति। तृप्ति। इतमीनान। प्रसन्नता। सुख। आनंद। संतोषी=सब्र करनेवाला। संतुष्ट रहनेवाला।

संदर्भ—(पु० सं०) रचना। निबंध। लेख।

संदल—(पु० फ़ा०) चंदन। संदली=(वि० फ़ा०) हलका पीला (रंग)। चंदन का।

संदिग्ध—(वि० सं०) संदेहपूर्ण। मशकूक।

संदूक—(पु० अ०) पेटी। बकस। —चा=छोटा संदूक। —ड़ी =छोटा संदूक।

संदेश—(पु० सं०) समाचार। ख़बर। एक बँगला मिठाई।

संदेशा—(पु० सं०) समाचार।

सँदेसा—(पु० हि०) ख़बर। हाल।

संदेह—(पु० सं०) संशय। शंका। शक।

संधि—(स्त्री० सं०) सुलह। मित्रता। जोड़। गाँठ। —भंग=हाथ या पैर आदि के किसी जोड़ का टूटना। सुलहनामे के विरुद्ध आचरण। —पत्र=सुलह-नामा।

संध्या—(स्त्री० सं०) शाम। सायंकाल। हिन्दुओं की प्रातःकाल, मध्याह्न और संध्या की उपासना।

संन्यास—(पु० सं०) हिन्दुओं

के चार आश्रमों में से अंतिम आश्रम। संन्यासी=वह जो संन्यास आश्रम में हो। विरक्त।

संपत्ति—(स्त्री० सं०) ऐश्वर्य। वैभव। धन। दौलत।

संपद्—(स्त्री० सं०) ऐश्वर्य। वैभव।

संपदा—(स्त्री० सं०) धन। दौलत। ऐश्वर्य। वैभव।

संपन्न—(वि० सं०) पूर्ण। सहित। युक्त। खुशहाल। धनी। दौलतमंद।

संपर्क—(पु० सं०) लगाव। संसर्ग। स्पर्श। सटना।

संपात—(पु० सं०) वह स्थान जहाँ एक रेखा दूसरी पर पड़े या मिले।

संपादक—(पु० सं०) कोई काम पूरा करनेवाला। किसी समाचारपत्र या पुस्तक को क्रम आदि लगाकर निकालनेवाला। एडिटर। संपादकीय=संपादक संबंधी। संपादक का। एडीटोरियल। संपादन=किसी काम को पूरा करना। प्रस्तुत करना। ठीक करना। तैयार करना। किसी पुस्तक या संवादपत्र आदि को क्रम, पाठ आदि लगाकर प्रकाशित करना। संपादित=पूर्ण किया हुआ। प्रस्तुत। क्रम, पाठ आदि लगाकर ठीक किया हुआ।

संपुट—(पु० सं०) ठीकरा। दोना। डिब्बा। अँजली। कोश। कपड़े और गीली मिट्टी से लपेटा हुआ वह बरतन जिसके भीतर कोई रस या औषधि फूँकते हैं।

संपूर्ण—(वि० सं०) सब। बिलकुल। पूरा। समाप्त। ख़तम। —तः=पूरी तरह से। पूर्ण रूप से। —तया=पूरी तरह से। भली भाँति। —ता=पूरापन। समाप्ति।

सँपेरा—(पु० हि०) मदारी।

सँपोला—(पु० हि०) साँप का बच्चा।

संप्रति—(अ० सं०) इस समय अभी।

संप्रदाय—(पु० सं०) फिरका। मार्ग। रीति। संप्रदायी=मतावलंबी।

संबंध—(पु० सं०) लगाव। वास्ता। नाता। रिश्ता। गहरी मित्रता। संयोग। मेल। विवाह। सगाई। व्याकरण में एक कारक। संबंधी=संबंध रखनेवाला। सिलसिले या प्रसंग का। रिश्तेदार। समधी।

संबद्ध—(वि० सं०) बँधा हुआ। जुड़ा हुआ। मिला हुआ। बंद।

संबोधन—(पु० सं०) पुकारना। व्याकरण में एक कारक।

सँभलना—(क्रि० हि०) थामा जा सकना। आधार पर ठहरे रहना। होशियार होना। सावधान होना। गिरने-पड़ने से रुकना। बुरी दशा को फिर सुधार लेना। कार्य्य का भार उठाया जाना।

संभव—(पु० सं०) होना। मुमकिन होना। उपयुक्तता। मुनासिबत। —तः=हो सकता है। मुमकिन है। संभवनीय=मुमकिन।

सँभाल—(स्त्री० हि०) रक्षा। देख-रेख। प्रबंध। ख़बरदारी। तन-बदन की सुध। होश हवास। —ना=रोके रहना। थामना। गिरने से बचाना। रक्षा करना। ख़राबी से बचाना। पालन-पोषण करना। दशा बिगड़ने से बचाना। सहेजना। जोश थामना।

संभावना—(स्त्री० सं०) कल्पना। अनुमान। हो सकना। संभावनीय=मुमकिन। संभावित=उपस्थित। योग्य। क़ाबिल।

संभाषण—(पु० हि०) बातचीत। कथोपकथन।

संभूय समुत्थान—(पु० सं०) साझे का कारबार। कम्पनी।

संभोग—(पु० सं०) सुखपूर्वक व्यवहार। रति-क्रीड़ा। मैथुन।

संभ्रांत—(वि० हि०) तेजस्वी। सम्मानित। प्रतिष्ठित।

संयत—(वि० सं०) बँधा हुआ। जकड़ा हुआ। दबाव में रखा हुआ। रोका हुआ। वशीभूत। क़ायदे का पाबन्द। संयतात्मा=जिसने मन को वश में किया हो।

संयम—(पु० सं०) रोक। मन और इंद्रियों को वश में रखने की क्रिया। परहेज़। संयमी =काबू में रखनेवाला। मन और इद्रियों को वश में रखनेवाला।

संयुक्त—(वि० सं०) जुड़ा हुआ। मिला हुआ। संबद्ध। लगाव रखता हुआ। सहित। साथ। लिए हुए। समन्वित। संयुत।

संयुत—(वि० सं०) सहित। साथ।

संयोग—(पु० सं०) मिलाप। संबंध। सहवास। विवाह-संबंध। इत्तफ़ाक़।

संरक्षण—(पु० सं०) हिफ़ाज़त। देखरेख। निगरानी। संरक्षक=देखरेख और पालन-पोषण करनेवाला। संरक्षित= भलीभाँति रक्षित। अच्छी तरह बचाया हुआ।

संलग्न—(वि० सं०) सटा हुआ। मिला हुआ। भिड़ा हुआ। जुड़ा हुआ।

संवत्—(पु० सं०) वर्ष। संवत्सर। साल। सन्। महाराज विक्रमादित्य के काल से चली हुई वर्ष-गणना।

संवरण—(पु० सं०) रोकना। निग्रह।

संवाद—(पु० सं०) बातचीत। कथोपकथन। ख़बर। समाचार। कथा। —दाता= अख़बार का रिपोर्टर।

सँवारना—(क्रि० हि०) सजाना। ठीक करना। ठीक-ठीक लगाना।

संवेदना—(पु० सं०) सहानुभूति।

संशय—(पु० सं०) संदेह।

शक। दुविधा। संशयात्मा=शक्की।

संशोधन—(पु० सं०) शुद्ध करना। साफ़ करना। दुरुस्त करना। सुधारना। संशोधक=सुधारनेवाला। संशोधित=शुद्ध किया हुआ। सुधारा हुआ।

संसर्ग—(पु० सं०) संबंध। लगाव। मेल। सहवास। घनिष्टता।

संसार—(पु० सं०) जगत। दुनिया। माया जाल। गृहस्थी। —चक्र=दुनिया का चक्कर। संसारी=संसार संबंधी। लौकिक। संसार में रहने वाला। लोक-व्यवहार में कुशल। दुनियादार बार-बार जन्म लेनेवाला। सांसारिक=संसार संबंधी।

संस्करण—(पु० सं०) ठीक करना। सजाना। सुधार करना। पुस्तकों की एक बार की छपाई। आवृत्ति।

संस्कार—(पु० सं०) सुधार। दोष या त्रुटि का निकाला जाना। शुद्धि। दिल पर जमा हुआ असर। पूर्व जन्म की वासना। रीति या रस्म। संस्कारी=संस्कारवाला।

संस्कृत—(वि० सं०) परिमार्जित। परिष्कृत। निखारा हुआ। सुधारा हुआ। पुराने आर्यों की प्राचीन साहित्यिक भाषा। देववाणी।

संस्कृति—(स्त्री० सं०) (अं०) कल्चर।

संस्था—(पु० सं०) समाज। सभा। (अं०) इन्स्टीट्यूशन। विभाग।

संस्थापन—(पु० सं०) खड़ा करना। नया काम खोलना। संस्थापक=स्थापित करने वाला। काम चलाने वाला। संस्थापित=जमाया हुआ। जारी किया हुआ।

संस्पर्श—(पु० सं०) छू जाना।

संस्मरण—(पु० सं०) याद-दाश्त। संस्मरणीय=याद

करने योग्य। संस्मारक=याद दिलानेवाला। यादगार।

संहार—(पु० सं०) नाश। अंत। निपुणता। —क= नाशक।

संहिता—(सं०) वेदों का मंत्रभाग।

सकना—(क्रि० हि०) कोई काम करने में समर्थ होना।

सकपकाना—(क्रि० अ० अनु०) आश्चर्ययुक्त होना। हिचकना। शरमाना। सकपकाहट =संकोच।

सकल—(वि० स०) सब। कुल।

सकारना—(क्रि० हि०) स्वीकार करना। महाजनों का हुंडी की मिती पूरी होने के एक दिन पहले हुंडी देखकर उस पर हस्ताक्षर करना।

सक़ील—(वि० अ०) जो जल्दी हजम न हो।

सकुचना—(क्रि० अ० हि०) लज्जा करना। शरमाना।

सकूनत—(स्त्री० अ०) रहने का स्थान।

सकोरा—(पु० हि०) मिट्टी की कटोरी। कसोरा।

सक़्क़ा—(पु० अ०) भिश्ती।

सखा—(पु० हि०) साथी। संगी। मित्र। दोस्त। सखी= सहेली। संगिनी। सखी= (अ०) दानी। दाता। दानशील।

सख़ावत—(स्त्री० अ०) दानशीलता। उदारता। फ़ैयाज़ी।

सखुन—(पु० फ़ा०) बातचीत। वार्तालाप। कविता। —चीन =चुगलखोर। इधर-उधर बात लगानेवाला।—चीनी= चुगलखोरी। —तकिया= वह शब्द या वाक्यांश जो कुछ लोगों की जबान पर ऐसा चढ़ जाता है कि बातचीत करने में प्रायः मुँह से निकला करता है। तकिया कलाम। सखुनदाँ=काव्य का रसिक। —दानी=बातचीत की समझदारी। काव्य-

रसिकता। —परवर=वह जो अपनी कही हुई बात का सदा पालन करता हो। हठी। जिद्दी। —शनास=वह जो सखुन या काव्य भलीभाँति समझता हो। —साज़=कवि। शायर। अपने मन से झूठी बातें बनाकर कहनेवाला। —साज़ी=झूठी बातें गढ़ने का गुण।

सग—(पु० फा०) कुत्ता। श्वान। —ज़ुबान=वह घोड़ा जिसकी जीभ कुत्ते के समान पतली और लंबी हो।

सगपहती—(स्त्री० हि०) साग मिलाकर बनाई हुई दाल।

सगा—(वि० हि०) एक माता से उत्पन्न। सहोदर। बहुत ही निकट के संबंध का।

सगाई—(स्त्री० हि०) विवाह संबंधी निश्चय। मँगनी।

सघन—(वि० सं०) घना। ठोस।

सच—(वि० हि०) सत्य। ठीक। —मुच=वास्तव में। वस्तुतः। अवश्य। सचाई=सच्चापन। वास्तविकता। यथार्थता। सच्चा=सच बोलनेवाला। यथार्थ। ठीक। असली। विशुद्ध। —पन=सत्यता। सचाई।

सचराचर—(पु० सं०) संसार का स्थावर और जंगम सभी वस्तुएँ।

सचिक्कण—(वि० सं०) बहुत अधिक चिकना।

सचिव—(पु० सं०) मंत्री।

सचेत—(वि० हि०) समझदार। होशियार। सावधान। सचेतन=चेतनायुक्त। चतुर।

सच्चरित, त्र—(वि० सं०) नेक चालचलनवाला। —ता=नेकचलनी।

सच्चिदानंद—(पु० सं०) ईश्वर। परमेश्वर।

सजग—(वि० हि०) सावधान।

सजधज—(स्त्री० हि०) बनाव। सिंगार। सजावट।

सजना—(क्रि० हि०) श्रृङ्गार करना। शोभा देना। भला जान पड़ना।

सजल—(वि० सं०) जिसमें पानी हो। आँसुओं से पूर्ण।

सज़ा—(स्त्री० फ़ा०) दंड। —याफ़्ता=दंडित। —याब =दंडनीय। —वार= दंडनीय।

सजातीय—(वि० सं०) एक जाति या गोत्र का।

सजाना—(क्रि० हि०) वस्तुओं का यथास्थान रखना। तरतीब लगाना। सँवारना। शृङ्गार करना।

सजावट—(स्त्री० हिं०) शोभा। तैयारी।

सजीला—(वि० हि०) सजधज के साथ रहनेवाला। छबीला। सुन्दर। मनोहर।

सजीव—(वि० सं०) जीव युक्त। फुरतीला। ओजस्वी। प्राणी। जीवधारी।

सज्जन—(पु० हि०) भला आदमी। शरीफ़। —ता= भलमंसाहत। सौजन्य।

सज्जादा—(पु० अ०) जानमाज़। आसन। फकीरों या पीरों आदि की गद्दी। —नशीन =मुसलमान पीर या बड़ा फकीर।

सज्जित—(वि० सं०) सजा हुआ। सुशोभित। आवश्यक वस्तुओं से युक्त। तैयार।

सज्जी—(स्त्री० हि०) एक क्षार।

सज्ञान—(पु० सं०) ज्ञानवाला। सयाना। प्रौढ़।

सटकना—(क्रि० अनु०) धीरे से से खिसक जाना। चल देना। कूटना। पीटना।

सटकाना—(क्रि० अनु०) किसी को छड़ी, कोड़े आदि से मारना जिसमें "सट" शब्द हो। चुपके से भगा देना।

सटपटाना—(क्रि० अनु०) दब जाना। स्तब्ध हो जाना। सकुचाना।

सटरपटर—(वि० अनु०) छोटा मोटा। तुच्छ। बहुत साधारण। बिलकुल मामूली।

सट्टा—(पु० देश०) इकरारनामा। व्यापारिक जुआ।

सट्टा बट्टा—(पु० हि०) मेल मिलाप। हेल-मेल।

सठियाना—(क्रि० हि०) साठ बरस का होना। बुड्ढा होना। वृद्धावस्था के कारण बुद्धि तथा विवेक शक्ति का कम हो जाना।

सड़क—(स्त्री० हि०) आने-जाने का चौड़ा रास्ता। राजमार्ग। राजपथ। रास्ता। मार्ग।

सड़न—(स्त्री० हि०) गलना।

सड़ना—(क्रि० हि०) दुर्गन्धित होना। दुर्दशा में पड़ा रहना। बहुत बुरी हालत में रहना।

सड़ाइंद—(स्त्री० हि०) सड़ी हुई चीज़ की गंध।

सड़ासड़—(अव्य० हि०) 'सड़' शब्द के साथ।

सड़ियल—(वि० हि०) सड़ा हुआ। गला हुआ। रद्दी। तुच्छ।

सतत—(अव्य० सं०) निरंतर। हमेशा।

सतर्क—(वि० सं०) दलील के साथ। सावधान। सचेत।

सतसई—(स्त्री० हि०) वह ग्रंथ जिसमें सात सौ पद्य हों। सप्तशती।

सतह—(स्त्री० अ०) बाहर या ऊपर का फैलाव। तल।

सती—(वि० सं०) पतिव्रता स्त्री। पति के शव के साथ चिता में जलनेवाली स्त्री।
—त्व=पातिव्रत।

सत्कर्म—(पु० हि०) अच्छा काम। पुण्य।

सत्कीर्त्ति—(स्त्री० सं०) उत्तम कीर्त्ति। यश।

सत्याग्रह—(पु० सं०) सत्य के लिये आग्रह या हठ।

सत्क्रिया—(स्त्री० सं०) पुण्य। धर्म का काम।

सत्त—(पु० हि०) किसी पदार्थ का सार भाग। रस। तत्त्व। काम की वस्तु।

सत्ता—(स्त्री० सं०) अस्तित्व। अधिकार। हुकूमत। ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें सात बूटियाँ हों।

सत्तू—(पु० हि०) भुने हुए चने

और जौ था और किसी अन्न का आटा जो पानी में घोलकर खाया जाता है।

सत्पुरुष—(पु० सं०) भला-आदमी। सदाचारी पुरुष।

सत्य—(वि० सं०) ठीक। वास्तविक। सही। असल। वास्तविक बात। ठीक बात। धर्म्म की बात। —युग= चार युगों में से पहला युग। —वादी=सत्य कहनेवाला। सच बोलनेवाला। प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला। धर्म पर दृढ़ रहनेवाला।

सत्यानास—(पु० हि०) सर्वनाश। बरबादी।

सत्वर—(अव्य० सं०) शीघ्र। तुरंत।

सत्संग—(पु० सं०) भली संगत। अच्छा साथ।

सदक़ा—(पु० अ०) दान। उतारा। निछावर।

सदबर्ग—(पु० फ़ा०) हज़ारा गेंदा।

सदमा—(पु० अ०) आघात। धक्का। रंज। दुःख। भारी नुकसान।

सदर—(वि० अ०) ख़ास। प्रधान। वह स्थान जहाँ कोई बड़ी कचहरी हो या बड़ा हाकिम रहता हो। —आला=छोटा जज। —दरवाज़ा=खास दरवाज़ा। फाटक। —नशीन=किसी सभा का सभापति। —बाज़ार =बड़ा बाजार। छावनी का बाजार। —बोर्ड=माल की सब से बड़ी अदालत।

सदरी—(स्त्री० अ०) बिना आस्तीन की कुरती। सीनाबंद।

सदस्य—(पु० सं०) सभासद। मेंबर।

सदहा—(वि० फ़ा०) सैकड़ों।

सदा—(अव्य० सं०) नित्य। हमेशा। निरंतर। लगातार। (अ०) गूँज। प्रतिध्वनि। आवाज़। शब्द। पुकार।

सदाचरण—(पु० सं०) अच्छा चाल-चलन।

सदाचार—(पु० सं०) अच्छा आचरण। चालचलन। सदाचारी=अच्छे चाल-चलन का आदमी। धर्मात्मा।

सदावर्त—(पु० हि०) नित्य भूखों और दीनों को भोजन बाँटने का काम। खैरात।

सदा बहार—(वि० हि०) जो सदा फूले।

सदाशय—(वि० सं०) जिसका भाव उदार और श्रेष्ठ हो। भलामानस।

सदी—(स्त्री० अ०) शताब्दी। सैकड़ा।

सदुपदेश—(पु० सं०) अच्छी सलाह।

सदृश—(वि० सं०) समान। अनुरूप। तुल्य। बराबर।

सदोष—(वि० सं०) जिसमें ऐब हो। अपराधी।

सद्गति—(स्त्री० सं०) अच्छी अवस्था। मरण के उपरांत उत्तम लोक की प्राप्ति।

सद्गुण—(पु० सं०) अच्छा गुण।

सद्गुणी—(पु० हि०) अच्छे गुणवाला।

सद्गुरु—(पु० सं०) अच्छा गुरु। धर्म-शिक्षक।

सद्ग्रंथ—(पु० हि०) अच्छा ग्रंथ।

सद्भाव—(पु० सं०) अच्छे भाव। मेल-जोल। मैत्री।

सद्वृत्ति—(स्त्री० सं०) उत्तम व्यवहार। सच्चरित्रता।

सधना—(क्रि० हि०) पूरा होना। काम होना। मतलब निकलना।

सन्—(पु० अ०) वर्ष। साल। संवत्।

सन—(पु० हि०) एक पौधा जिसकी छाल के रेशे से मजबूत रस्सियाँ आदि बनती हैं। वेग से निकल जाने का शब्द। सन्नाटे में आया हुआ। मौन।

सनई—(स्त्री० हि०) एक पौधा।

सनकना—(क्रि० हि०) पागल हो जाना। वेग से हवा में जाना या फेंका जाना।

सनद्—(स्त्री० अ०) प्रमाणपत्र। सर्टिफिकेट। —याफ़्ता=जिसे किसी बात की सनद मिली हो। किसी परीक्षा में उत्तीर्ण।

सनम—(पु० अ०) प्रियतम। प्यारा।

सनसनाहट—(पु० हि०) हवा बहने का शब्द। हवा में किसी वस्तु के वेग से निकलने का शब्द। खौलते हुए पानी का शब्द। सनसनी।

सनसनी—(स्त्री० अनु०) अत्यंत भय, आश्चर्य आदि के कारण उत्पन्न स्तब्धता। घबराहट। सन्नाटा। नीरवता।

सनहकी—(स्त्री० अ०) मिट्टी का एक बरतन जो बहुधा मुसलमान काम में लाते हैं।

सनातन—(पु० सं०) अत्यंत प्राचीन। बहुत पुराना। अनादिकाल का जो बहुत दिनों से चला आता हो। परंपरागत। नित्य। सदा रहनेवाला। शाश्वत। —धर्म=प्राचीन धर्म। परंपरागत धर्म। साधारण जनता के बीच प्रचलित हिन्दू धर्म। सनातनी=सनातन धर्म का अनुयायी।

सन्न—(पु० हि०) संज्ञा-शून्य। एक दम चुप। डर से चुप।

सन्नद्ध—(वि० सं०) तैयार। आमादा। लगा हुआ। जुड़ा हुआ।

सन्नाटा—(पु० हि०) नीरवता। निस्तब्धता। निर्जनता। निरालापन। चुप्पी। वायु के बहने का शब्द।

सन्निकट—(अव्य० सं०) समीप।

सन्निधि—(स्त्री० सं०) समीपता। निकटता।

सन्निपात—(पु० सं०) त्रिदोष। सरसाम। एक बीमारी।

सन्निविष्ट—(वि० सं०) जमा हुआ। रखा हुआ। स्थापित। लगा हुआ। प्रविष्ट।

सन्निवेश—(पु० सं०) बैठना। रखना। लगाना। भीतर आना। एकत्र होना। समूह।

सन्निहित—(वि॰ सं॰) समीपस्थ रखा हुआ। तैयार।
सन्यास—(पु॰ सं॰) छोड़ना। त्याग। वैराग्य। चतुर्थ आश्रम। सन्यासी=त्यागी।
सपत्नी—(स्त्री॰ सं॰) सौत।
सपना—(पु॰ हि॰) वह दृश्य जो निद्रा की दशा में दिखाई पड़े। ख़्वाब।
सपरदाई—(पु॰ हि॰) गानेवाली तवायफ़ के साथ तबला, सारंगी आदि बजानेवाला। साजिन्दा।
सपरना—(क्रि॰ हि॰) समाप्त होना। हो सकना।
सपाट—(वि॰ हि॰) बराबर। समतल। चिकना।
सपाटा—(पु॰ हि॰) झोंका। तेज़ी। दौड़। झपट।
सपूत—(पु॰ हि॰) अच्छा पुत्र।
सपोला—(पु॰ हि॰) साँप का छोटा बच्चा।
सप्तपदी—(स्त्री॰ सं॰) भाँवर। विवाह की एक रस्म।
सप्तम—(वि॰ सं॰) सातवाँ। सप्तमी=सातवीं।
सप्तर्षि—(पु॰ सं॰) उत्तर दिशा में स्थापित सात तारों का समूह।
सप्तस्वर—(पु॰ सं॰) संगीत के सात स्वर—स, ऋ, ग, म, प, ध, नि।
सप्ताह—(पु॰ सं॰) हफ़्ता।
सप्लाई—(स्त्री॰ अं॰) पहुँचाना। सप्लायर=वह जो किसी को चीज़ें पहुँचाने का काम करता है। सप्लीमेंट=अतिरिक्त पत्र। क्रोड़पत्र। किसी वस्तु का अतिरिक्त अंश।
सप्रमाण—(वि॰ सं॰) प्रमाण सहित। सबूत के साथ।
सफ़—(स्त्री॰ अ॰) पंक्ति। कतार।
सफ़र—(पु॰ अ॰) यात्रा। प्रस्थान। —मैना=सेना के वे सिपाही जो सुरंग लगाने तथा खाईं आदि खोदने को आगे चलते हैं।
सफ़रा—(पु॰ अ॰) पित्त। भूसा

आदि ढोने के लिये बड़ा बोरा।

सफरी—(वि० अ०) सफर में काम आनेवाला।

सफल—(वि० सं०) फल से युक्त। जो व्यर्थ न जाय। सार्थक। कामयाब। —ता= सिद्धि। पूर्णता।

सफ़हा—(पु० अ०) वरक़। पृष्ठ।

सफ़ा—(वि० अ०) साफ़। स्वच्छ। पवित्र। पाक। चिकना। बराबर।

सफ़ाई—(स्त्री० अ०) स्वच्छता। कर्ज़ या हिसाब का चुकता होना।

सफ़ाचट—(वि० हि०) बिलकुल साफ़।

सफ़ीना—(पु० अ०) इत्तला-नामा। समन।

सफ़ीर—(स्त्री०) चिड़ियों की आवाज़। वह सीटी जो पक्षियों को बुलाने के लिये दी जाती है।

सफ़ील—(स्त्री० अ०) शहर-पनाह।

सफ़ूफ़—(पु० अ०) चूर्ण। बुकनी। फंकी।

सफ़ेद—(वि० फ़ा०) उजला। —पोश=भलामानस। शिष्ट।

सफ़ेदा—(पु० फ़ा०) जस्ते का चूर्ण या भस्म जो दवा तथा लोहे लकड़ी आदि पर रँगाई के काम में आता है। आम का एक भेद जो लखनऊ के आसपास होता है। खरबूज़े का एक भेद। पंजाब और काश्मीर में होनेवाला एक बहुत ऊँचा पेड़।

सफ़ेदी—(स्त्री० फ़ा०) श्वेतता। दीवार आदि पर सफ़ेद रंग या चूने की पोताई। चूनाकारी। ऊषा।

सब—(वि० हि०) कुल। समस्त। पूरा। सारा। (अ०) छोटा। गौण। अप्रधान। —जज= छोटा जज। —डिविज़नल आफ़िसर=एक तहसील का अफ़सर। —मरीन=संहारक छोटा बोट। गोताख़ोर।

सबक़—(पु० फ़ा०) पाठ । शिक्षा । नसीहत ।

सबक़त—(स्त्री० अ०) विशेषता प्राप्त करना ।

सबब—(पु० अ०) कारण । वजह ।

सबल—(वि० सं०) ताकतवर । बलवान् ।

सबसिडियरी जेल—(अं०) हवालात ।

सबा—(स्त्री० अ०) वह हवा जो प्रातःकाल के समय चलती है ।

सबार्डिनेट जज—(पु० अं०) छोटा जज ।

सबील—(स्त्री० अ०) रास्ता । मार्ग । उपाय । तरकीब ।

सबू—(पु० फ़ा०) मिट्टी का घड़ा । मटका । गगरी ।

सब्ज़—(वि० फ़ा०) कच्चा और ताज़ा (फल-फूल आदि) । हरा । उत्तम । —क़दम = जिसके कहीं पहुँचते ही कोई अशुभ घटना हो । जिसके चरण अशुभ हों ।

सब्ज़ा—(पु० फ़ा०) हरियाली । भाँग । पन्ना नामक रत्न । घोड़े का एक रंग ।

सब्ज़ी—(स्त्री० फ़ा०) हरियाली । हरी तरकारी । भाँग ।

सब्जेक्ट—(पु० अं०) प्रजा । रैयत । विषय । —कमिटी= विषय निर्वाचिनी समिति ।

सब्र—(पु० अ०) संतोष । धैर्य्य ।

सभा—(स्त्री० सं०) मजलिस । —गृह = मजलिस की जगह । —पति = सभा का मुखिया । मीर मजलिस ।

सभ्य—(पु० सं०) सभासद । सदस्य । मेम्बर । भला आदमी । —ता = मेम्बरी । शराफ़त ।

सम—(वि० सं०) बराबर । तुल्य । चौरस । जिसे दो से भाग देने पर शेष कुछ न बचे । —वयस्क = बराबर आयु वाले । —कोण = ६० अंश का कोण । —ता = बराबरी । =दर्शी = सब को एक सा देखनेवाला । —तल = हमवार ।

समक्ष—(अव्य० सं०) आँखों के सामने। सामने।

समग्र—(वि० सं०) समस्त। कुल। पूरा।

समन्वित—(वि० सं०) मिला हुआ। संयुक्त।

समर्थ—(वि० सं०) जिसमें कोई काम करने की सामर्थ्य हो। उपयुक्त। योग्य।

समर्थन—(सं०) ताईद करना। समर्थक = समर्थन करनेवाला। समर्थित = समर्थन किया हुआ।

समर्पण—(पु० सं०) प्रतिष्ठा पूर्वक देना। भेंट करना।

समस्त—(वि० सं०) सब। कुल।

समस्या—(स्त्री० सं०) तरह। कठिन अवसर या प्रसंग। —पूर्त्ति = किसी छंद के एक टुकड़े को लेकर पूरा छंद या श्लोक बनाना।

समाँ—(पु० हि०) समय। वक्त।

समागम—(पु० सं०) मिलना। भेंट। स्त्री के साथ संभोग करना। मैथुन।

समाचार—(पु० सं०) संवाद। खबर। —पत्र = ख़बर का कागज़। अखबार।

समाज—(पु० सं०) समूह। दल। सभा।

समाधान—(पु० सं०) सन्देह दूर करना।

समाधि—(स्त्री० सं०) किसी मृत व्यक्ति की अस्थियाँ या शव जमीन में गाड़ना। वह स्थान जहाँ इस प्रकार शव या अस्थियाँ आदि गाड़ी गई हों।

समान—(वि० सं०) सम। बराबर। —ता = बराबरी। समानार्थ = वे शब्द आदि जिनका अर्थ एक ही हो।

समाप्त—(वि० सं०) ख़तम। पूरा। समाप्ति = अंत।

समारंभ—(पु० सं०) समारोह। धूमधाम।

समारोह—(पु० सं०) आडंबर।

समालोचना—(स्त्री० सं०) किसी पदार्थ के दोषों और गुणों को अच्छी तरह देखना।

आलोचना। समालोचक=समालोचना करनेवाला।

समाविष्ट—(वि० सं०) समाया हुआ।

समावेश—(पु० सं०) एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ के अंतर्गत होना।

समास—(पु० सं०) व्याकरण में दो या अधिक शब्दों का संयोग।

समिति—(स्त्री० सं०) सभा।

समीक्षा—(स्त्री० सं०) समालोचना।

समीप—(वि० सं०) पास। नज़दीक। —वर्त्ती=पास का। नज़दीक का। —स्थ=जो समीप में हो। पास का।

समीर—(पु० सं०) वायु। हवा।

समुचित—(वि० सं०) उचित। ठीक। जैसा चाहिए, वैसा। उपयुक्त।

समुच्चय—(पु० सं०) एकत्रता।

समुत्थान—(पु० सं०) उठना। आरम्भ।

समुदाय—(पु० सं०) समूह। झुंड। गरोह।

समुद्र—(पु० सं०) सागर। —फेन=समुद्र के पानी का फेन या झाग।

समुन्नत—(वि० सं०) जिसकी यथेष्ट उन्नति हुई हो।

समुल्लास—(पु० सं०) आनन्द। खुशी। ग्रंथ का प्रकरण या परिच्छेद।

समूह—(पु० सं०) ढेर। राशि। समुदाय। झुंड।

समृद्धि—(स्त्री० सं०) ऐश्वर्य। प्रभाव।

समेटना—(क्रि० हि०) बिखरी हुई चीज़ों को इकट्ठा करना। बटोरना।

समेत—(अव्य० सं०) सहित। साथ।

सम्मत—(पु० सं०) राय। सलाह। अनुमति। सम्मति=सलाह। राय। आदेश। अभिप्राय।

सम्मान—(पु० सं०) इज़्ज़त।

गौरव। प्रतिष्ठा। सम्मानित=प्रतिष्ठित। इज़्ज़तदार।

सम्मिलन—(पु० सं०) मिलाप। मेल। सम्मिलित=मिला हुआ। मिश्रित। युक्त।

सम्मुख—(अव्य० सं०) सामने। आगे।

सम्मेलन—(पु० सं०) सभा। समाज। जमावड़ा। जमघट। मेल। सङ्गम।

सम्यक्—(क्रि० वि०) सब प्रकार से। अच्छी तरह। भली भाँति।

सम्राज्ञी—(स्त्री० सं०) सम्राट् की पत्नी। साम्राज्य की अधीश्वरी।

सम्राट्—(पु० हि०) महाराजाधिराज। शहंशाह।

सर—(पु० फ़ा०) सिर। सिरा। चोटी। (अं०) एक बड़ी उपाधि जो अँगरेज़ सरकार देती है।

सरअंजाम—(पु० फ़ा०) सामान। सामग्री। असबाब।

सरकंडा—(पु० हि०) सरपत की जाति का एक पौधा।

सरकना—(क्रि० हि०) टलना। काम चलना। निर्वाह होना।

सरकश—(वि० फ़ा०) उद्दंड। उद्धत। शरारती। सरकशी= =उद्दंडता। शरारत।

सरकार—(स्त्री० फ़ा०) प्रधान। मालिक। राज्य। शासनसत्ता। गवर्नमेंट। सरकारी=राजकीय।

सरख़त—(पु० फ़ा०) वह कागज या दस्तावेज़ जिस पर मकान आदि किराए पर दिए जाने की शर्तें होती हैं।

सरग़ना—(पु० फ़ा०) सरदार। अगुवा।

सरगम—(पु० हि०) संगीत में सात स्वरों के चढ़ाव उतार का क्रम। स्वरग्राम।

सरगर्म—(वि० फ़ा०) जोशीला। आवेशपूर्ण। उमंग से भरा हुआ। उत्साही। सरगर्मी= जोश। आवेश। उमंग। उत्साह।

सरज़ोर—(वि० फ़ा०) ज़बरदस्त । उद्दंड । सरकश । सरज़ोरी = ज़बरदस्ती ।

सरणी—(स्त्री० सं०) मार्ग । रास्ता । पगडंडी । लकीर । ढर्रा ।

सरदा—(पु० फ़ा०) एक प्रकार का ख़रबूज़ा जो क़ाबुल से आता है ।

सरदार—(पु० फ़ा०) किसी मंडली का नायक । श्रेष्ठ व्यक्ति । किसी प्रदेश का शासक । अमीर ।

सरदारी—(स्त्री० फ़ा०) सरदार का पद ।

सरना—(क्रि० हि०) निभना ।

सरनाम—(वि० फ़ा०) प्रसिद्ध । मशहूर । विख्यात ।

सरनामा—(पु० फ़ा०) शीर्षक । पत्र का आरम्भ या सम्बोधन । पत्र आदि पर लिखा जाने वाला पता ।

सरपंच—(पु० फ़ा०—हि०) पंचों में बड़ा व्यक्ति । पंचायत का सभापति ।

सरपट—(क्रि० हि०) घोड़े की बहुत तेज़ दौड़ ।

सरपत—(पु० हि०) एक घास ।

सरपरस्त—(पु० फ़ा०) अभिभावक । संरक्षक । सरपरस्ती =संरक्षा । अभिभावकता ।

सरपेच—(पु० फ़ा०) पगड़ी के ऊपर लगाने का एक जड़ाऊ गहना ।

सरपोश—(पु० फ़ा०) थाल या तश्तरी ढकने का कपड़ा ।

सरफ़राज़—(वि० फ़ा०) महत्वप्राप्त । धन्य । कृतार्थ ।

सरबराह—(पु० फ़ा०) इंतज़ाम करनेवाला । कारिंदा । —कार=किसी कार्य का प्रबंध करनेवाला । कारिंदा । सरबराही=प्रबंध । इंतज़ाम । माल असबाब की निगरानी ।

सरल—(वि० सं०) सीधा । भोला भाला । निष्कपट । सहज । आसान । —ता= सीधापन । निष्कपटता । सुगमता । आसानी । सादगी । भोलापन ।

सरविस—(स्त्री० अं०) नौकरी। ख़िदमत। सेवा।

सरसब्ज़—(वि० फ़ा०) हरा भरा।

सर सर—(पु० अनु०) ज़मीन पर रेंगने का शब्द। वायु के चलने से उत्पन्न ध्वनि। सरसराहट=साँप आदि के रेंगने से उत्पन्न ध्वनि।

सरसरी—(वि० फ़ा०) जल्दी में। काम चलाने भर को। मोटे तौर पर।

सरसों—(स्त्री० हि०) एक पौधा। एक तेलहन।

सरस्वती—(स्त्री० सं०) विद्या या वाणी की देवी। भारती। शारदा।

सरहद—(स्त्री० फ़ा०) सीमा। सरहदी=सरहद सम्बन्धी। सीमा सम्बन्धी।

सरहरी—(स्त्री० हि०) मूँज या सरपत की जाति का एक पौधा।

सराफ़—(पु० अ०) सोने चाँदी का व्यापारी। सरफ़ा=सराफी का काम। सराफों का बाज़ार। कोठी। बंक। सराफी = सराफका काम। महाजनी।

सराबोर—(वि० हि०) बिलकुल भीगा हुआ। तरबतर।

सराय—(स्त्री० फ़ा०) यात्रियों के ठहरने का स्थान। मुसाफिरखाना।

सरावगी—(पु० हि०) जैन धर्म माननेवाला। जैन। श्रावक।

सरासर—(अव्य० फ़ा०) एक सिरे से दूसरे सिरे तक। बिलकुल। पूर्णतया।

सराहना—(क्रि० हि०) तारीफ़ करना। प्रशंसा करना। प्रशंसा। तारीफ़। सराहनीय = प्रशंसा के योग्य। अच्छा। बढ़िया।

सरिश्ता—(पु० फ़ा०) अदालत। कचहरी। महकमा। दफ़्तर। सरिश्तेदार = अदालतों में देशी भाषाओं में मुकदमों की मिसलें रखनेवाला कर्म-

चारी। सरिश्तेदारी = सरिश्ते-दार का काम या पद।

सरेदस्त—(क्रि॰ फ़ा॰) इस समय। अभी। फ़िलहाल। इस समय के लिये।

सरेबाज़ार—(फ़ा॰) बाज़ार में। जनता के सामने। खुले आम। सब के सामने।

सरेस—(पु॰ फ़ा॰) एक चिप-कने वाला पदार्थ, जो लेई के स्थान पर जिल्द में लगता है और जिससे प्रेस के काम के लिये रोलर बनते हैं।

सरो—(पु॰ फ़ा॰) एक पेड़। वनझाऊ।

सरोकार—(पु॰ फ़ा॰) वास्ता। लगाव। मतलब।

सरोद—(पु॰ फ़ा॰) बीन की तरह का एक बाजा।

सरोसामान—(पु॰ फ़ा॰) सामग्री। असबाब।

सरौता—(पु॰ हि॰) सुपारी काटने का औज़ार।

सर्कस—(पु॰ अं॰) वह स्थान जहाँ जानवरों का खेल दिखाया जाता है। पशुओं और नटों का खेल दिखाने वाली मंडली।

सर्का—(पु॰ अ॰) चोरी।

सर्कार—(स्त्री॰ फ़ा॰) मालिक। प्रधान। राज्य। शासन-सत्ता। गवर्नमेंट। रियासत।

सर्क्युलर—(पु॰ अं॰) गश्ती चिट्ठी। सरकारी आज्ञा-पत्र जो सब दफ़्तरों में घुमाया जाता है।

सर्ग—(पु॰ सं॰) प्रकरण। परिच्छेद।

सर्जेंट—(पु॰ अं॰) हवलदार। जमादार।

सर्ज—(स्त्री॰ अं॰) एक प्रकार का बढ़िया मोटा ऊनी कपड़ा।

सर्जन—(पु॰ अ॰) चीर-फाड़ करनेवाला डाक्टर। जर्राह।

सर्जरी—(अं॰) चीर-फाड़ करके चिकित्सा करने की क्रिया या विद्या।

सर्टिफ़िकेट—(पु॰ अं॰) प्रमाण-पत्र। सनद।

सर्द—(वि॰ फ़ा॰) ठंढा। शीतल।

सुस्त। नामर्द।—मिज़ाज= मुर्दादिल। बेमुरौवत। रूखा।
सर्प—(पु० सं०) साँप।
सर्फ—(पु० अ०) ख़र्च किया हुआ।
सर्फ़ा—(पु० अ०) ख़र्च। व्यय।
सर्राफ़—(पु० अ०) सोने-चाँदी या रुपए-पैसे का व्यापार करनेवाला।
सर्व—(वि० सं०) सारा। कुल। सर्वज्ञ=सब कुछ जाननेवाला। —नाम=व्याकरण में वह शब्द जो संज्ञा के स्थान में प्रयुक्त होता है। —नाश=सत्यानाश। पूरी बरबादी। —व्यापक=सब में रहनेवाला। ईश्वर। —शः= समूचा। पूर्णरूप से। —श्रेष्ठ=सब में बड़ा।—स्व=सब कुछ। सारी सम्पत्ति। सर्वांग=सारा बदन। संपूर्ण शरीर। सर्वाधिकार=पूरा इख़्तियार।
सर्वतोमुख—(वि० सं०) जिसका मुँह चारों ओर हो। जो सब दिशाओं में प्रवृत्त हो। पूर्ण। व्यापक।
सर्वत्र—(अव्य० सं०) सब कहीं। हर जगह।
सर्वथा—(अव्य० सं०) सब प्रकार से। बिल्कुल। सब।
सर्वदा—(अव्य० सं०) हमेशा। सदा।
सर्वे—(पु० अं०) भूमि की नाप। पैमाइश। वह सरकारी विभाग जो भूमि को नापकर उसका नक्शा बनाता है।
सलतनत—(स्त्री० अ०) राज्य। बादशाहत। साम्राज्य।
सलमा—(पु० अ०) सोने या चाँदी का तार जो बेलबूटे बनाने के काम में आता है। बादला।
सलाई—(स्त्री० हि०) धातु की बनी हुई कोई पतली छड़। दियासलाई। सलाने की मज़दूरी।
सलाख—(स्त्री० फ़ा०) शलाका। सलाई।
सलाद—(पु० अं०) गाजर, मूली,

राई, प्याज आदि के पत्तों का अँगरेज़ी ढंग से सिरके आदि में डाला हुआ अचार।

सलाम—(पु० अ०) प्रणाम। बंदगी। सलामी=सलाम करना। सिपाहियाना सलाम। तोपों या बन्दूकों की बाढ़ जो किसी बड़े अधिकारी या माननीय व्यक्ति के आने पर दागी जाती है।

सलामत—(अ०) सब प्रकार की आपत्तियों से बचा हुआ। रक्षित। तंदुरुस्त और ज़िन्दा। क़ायम। बरकरार। कुशल-पूर्वक। खैरियत से। सलामती =तंदुरुस्ती। स्वस्थता। कुशल।

सलाह—(स्त्री० अ०) सम्मति। राय। मशवरा। —कार= राय देनेवाला।

सलीक़ा—(पु० अ०) ढंग। तमीज़। हुनर। तहज़ीब। सभ्यता।

सलीता—(पु० देश०) एक प्रकार का बहुत मोटा कपड़ा।

सलीपर—(पु० अं०) सलपट। जूती। खड़ाऊँ। वह लकड़ी का तख्ता जो रेल की पटरियों के नीचे बिछाया जाता है।

सलीस—(वि० अ०) सहज। आसान। समतल। महावरे-दार और चलती हुई (भाषा)।

सलूक—(पु० अ०) बरताव। व्यवहार। मेल। सद्भाव।

सलोनो—(पु० हि०) हिन्दुओं का एक त्योहार। रक्षाबंधन।

सवा—(स्त्री० हि०) चौथाई सहित।

सवाई—(स्त्री० हि०) ऋण का एक प्रकार। जयपुर के महा-राजाओं की एक उपाधि। एक और चौथाई। सवा।

सवाब—(पु० अ०) पुण्य।

सवार—(पु० फ़ा०) घोड़े पर चढ़ा हुआ। रिसाले का सिपाही। किसी चीज़ पर चढ़ा या बैठा हुआ। सवारी= चढ़ने की क्रिया। सवार होने की वस्तु। वह व्यक्ति जो सवार हो। जलूस।

सवाल—(पु० अ०) पूछना। वह जो कुछ पूछा जाय। दरख़ास्त। माँग। विनती। भिक्षा की याचना। गणित का प्रश्न। —जवाब=बहस। उत्तर प्रत्युत्तर। तक़रार। झगड़ा।

सवेरा—(पु० हि०) प्रातःकाल। सुबह। निश्चित समय के पूर्व का समय।

सवैया—(पु० हि०) तौलने का एक बाट। एक छंद। एक पहाड़ा।

सशंक—(वि० सं०) शंकित। भयभीत।

ससुर—(पु० हि०) पति या पत्नी का पिता। श्वसुर।

सस्ता—(वि० हि०) जो महँगा न हो। घटिया। मामूली। सस्ती=सस्तापन। वह समय जब कि सब चीज़ें सस्ते दाम पर मिला करती हों।

सस्त्रीक—(वि० सं०) स्त्री सहित।

सहकार—(पु० सं०) मिलकर काम करना। सहयोग। सह-कारिता=सहायता। मदद। साथ। मिलकर काम करना। सहकारी=साथ करनेवाला। साथी। सहायक। मददगार।

सहगमन—(पु० सं०) सती होने की क्रिया। सहगामिनी=वह स्त्री जो पति के शव के साथ सती हो जाय। स्त्री। साथिन।

सहचर—(पु० सं०) साथ चलने वाला। नौकर। मित्र। दोस्त। सहचरी=पत्नी। भार्य्या। सखी। सहेली।

सहज—(वि० सं०) साधारण। आसान। सुगम।

सहन—(पु० सं०) बरदाश्त करना। क्षमा। (फ़ा०) आँगन। चौक। —शील=बरदाश्त करनेवाला। संतोषी। सब्र करनेवाला। सहना=बरदाश्त करना। झेलना। फल भोगना। बोझ बरदाश्त करना।

सहनक—(पु० अ०) रकाबी।

सहपाठी—(पु० हि०) वह जो

साथ में पढ़ा हो। क्लास-फेलो।

सहम—(फ़ा०) भय।

सहमत—(वि० सं०) एक मत का।

सहमना—(क्रि० फ़ा०) भयभीत होना। डरना।

सहयोग—(पु० सं०) साथ मिलकर काम करना। मदद। सहायता। राजनीति में सरकार के साथ मिलकर काम करने, और उसके पद आदि ग्रहण करने का सिद्धांत। सहयोगी=साथ काम करने वाला। साथी। सरकार के साथ मिलकर काम करनेवाला व्यक्ति।

सहर—(पु० अ०) प्रातःकाल। सवेरा। जादू। टोना।

सहरा—(पु० अ०) जंगल। वन।

सहरी—(स्त्री० हि०) सफरी। मछली।

सहल—(वि० अ०) सरल। सहज। आसान।

सहलाना—(क्रि० हि०) धीरे-धीरे किसी वस्तु पर हाथ फेरना।

सहवास—(पु० सं०) मैथुन। साथ।

सहसा—(अव्य० सं०) एकाएक। अचानक।

सहस्र—(पु० सं०) दस सौ की संख्या।

सहानुभूति—(स्त्री० सं०) हमदर्दी।

सहायक—(वि० सं०) मददगार।

सहायता—(स्त्री० सं०) मदद।

सहारा—(पु० हि०) आसरा। भरोसा। इतमीनान।

सहिजन—(पु० हि०) वृक्ष।

सहिष्णु—(सं०) सहनशील। —ता=सहनशीलता।

सही—(वि० फ़ा०) ठीक। यथार्थ। शुद्ध। हस्ताक्षर। दस्तखत। सही सलामत=स्वस्थ। तन्दुरुस्त। ठीक-ठीक।

सहूलियत—(स्त्री० फ़ा०) आसानी। सुगमता।

सहृदय—(वि० सं०) दयालु। रसिक। सज्जन। अच्छे स्वभाववाला। प्रसन्नचित्त। खुशदिल। —ता=सौजन्य। रसिकता। दयालुता।

सहेजना—(क्रि० हि०) भली भाँति जाँचना। सँभालना। अच्छी तरह कह-सुनकर सुपुर्द करना।

सहेली—(स्त्री० हि०) संगिनी। अनुचरी। दासी।

सहोदर—(पु० सं०) एक माता के पुत्र। सगा।

सांगोपांग—(अव्य० सं०) संपूर्ण। समस्त। अंगों और उपांगों सहित।

साँचा—(पु० हि०) ठप्पा। मोल्ड (अं०) छापा। जुलाहों की वे दो लकड़ियाँ जिनके बीच में कूँच के साल को दबाकर कसते हैं।

साँटी—(स्त्री० हि०) पतली छोटी छड़ी। बाँस की कमची।

साँड़—(पु० हि०) वह बैल या घोड़ा जिसे लोग केवल जोड़ा खिलाने के लिये पालते हैं। वह बैल जिसे मृतक की स्मृति में हिन्दू लोग दागकर छोड़ देते हैं। मज़बूत। बदचलन।

साँड़नी—(स्त्री० हि०) ऊँटनी, जिसकी चाल बहुत तेज़ होती है।

साँड़िया—(पु० हि०) तेज चलनेवाला ऊँट। साँड़नी पर सवारी करनेवाला।

सांत्वना—(पु० सं०) आश्वासन।

सांध्य—(वि० सं०) संध्या संबंधी। संध्या का।

साँप—(पु० हि०) एक कीड़ा। सर्प। नाग। विषधर। बहुत दुष्ट आदमी। साँपिन=साँप की मादा।

सांप्रत—(अव्य० सं०) इसी समय। अभी। तत्काल।

सांप्रदायिक—(वि० सं०) किसी संप्रदाय से संबंध रखनेवाला। संप्रदाय का।

साँभर—(पु० हि०) राजपूताने की एक झील और उसके

पानी से बना हुआ नमक। मृगों की एक जाति।
साँवला—(वि० हि०) श्यामवर्ण का। —पन=श्यामता।
साँवाँ—(पु० हि०) एक अन्न।
साँस—(स्त्री० हि०) श्वास। दम। अवकाश। गुंजाइश। दरार। दम फूलने का रोग। दमा।
साँसत—(स्त्री० हि०) दम घुटने का सा कष्ट। झंझट। बखेड़ा। —घर=कालकोठरी। बहुत तंग और छोटा मकान जिसमें हवा या रोशनी न आती हो।
सा—(अव्य० हि०) समान। तुल्य। बराबर।
साइक्लोपीडिया—(स्त्री० अं०) विश्वकोष।
साइत—(स्त्री० अ०) पल। लहमा। मुहूर्त्त। शुभलग्न।
साइन—(अं०) हस्ताक्षर।
साइनबोर्ड—(पु० अं०) वह तख्ता या टीन आदि का टुकड़ा जिस पर किसी व्यक्ति, दूकान या व्यवसाय आदि का नाम और पता आदि या कोई सूचना बड़े-बड़े अक्षरों में लिखी हो।
साइन्स—(स्त्री० अं०) विज्ञान।
साइर—(पु० अ०) ऊपरी आमदनी।
साई—(स्त्री० हि०) पेशगी। बयाना। वह कीड़ा जो जानवरों के घावों में पड़ जाता है।
साईस—(पु० हि०) वह आदमी जो घोड़े की ख़बरदारी और सेवा करता है। साईसी=साईस का काम।
साका—(पु० हि०) संवत्। कीर्त्ति का स्मारक।
साकार—(वि० सं०) जिसका कोई आकार हो। साक्षात्। स्थूल। ब्रह्म का मूर्त्तिमान रूप।
साकिन—(वि० अ०) निवासी। रहनेवाला।
साक़ी—(पु० अ०) शराब पिलानेवाला। माशूक़।
साकेत—(पु० सं०) अयोध्या नगरी। अवधपुरी।

साक्षात्—(अव्य० सं०) सामने। सम्मुख। भेंट। मुलाकात। —कार=भेंट।

साक्षी—(पु० हि०) गवाह। गवाही। शहादत।

साख—(पु० हि०) धाक। विश्वास। बाज़ार में व्यापारी का विश्वास।

साखी—(पु० हि०) साक्षी। गवाही। संतों के पद या दोहे।

साखू—(पु० हि०) शाल वृक्ष।

साग—(पु० हि०) शाक। भाजी। तरकारी। पकाई हुई भाजी।

सागर—(पु० सं०) समुद्र। बड़ा तालाब। झील। संन्यासियों का एक भेद।

सागू—(पु० हि०) ताड़ की जाति का एक पेड़। सागूदाना=सागू नामक वृक्ष के तने का गूदा जो कूटकर दानों के रूप में सुखा लिया जाता है। साबूदाना।

साज़—(पु० फ़ा०) सजावट का काम। सजावट का सामान। बाजा। लड़ाई के हथियार। बढ़इयों का एक प्रकार का रंदा। —बाज=तैयारी। मेलजोल। —सामान=सामग्री। असबाब। ठाटबाट।

साज़िंदा—(पु० फ़ा०) साज या बाजा बजानेवाला। सपरदाई। समाजी।

साज़िश—(स्त्री० फ़ा०) किसी को हानि पहुँचाने में सलाह या मदद देना। षड्यन्त्र।

साझा—(पु० हि०) शराकत। हिस्सेदारी। हिस्सा। भाग। साझी=साझेदार। हिस्सेदार। साझेदार=हिस्सेदार। साझेदारी=शराकत।

साटी—(स्त्री० देश०) कमची। साँटी।

साठ—(वि० हि०) पचास और दस।

साठी—(पु० हि०) एक प्रकार का धान।

साड़ी—(स्त्री० हि०) स्त्रियों के पहनने की धोती। सारी।

साढ़साती—(स्त्री० हि०) फलित ज्योतिष के अनुसार। शनि ग्रह की साढ़े सात वर्ष, साढ़ेसात मास या साढ़ेसात दिन आदि की दशा, जिसका फल बहुत बुरा होता है। साढ़ेसाती।

साढ़ी—(स्त्री० हि०) मलाई।

साढ़ू—(पु० हि०) साली का पति। पत्नी की बहन का पति।

सात—(वि० हि०) छः से एक अधिक।

सात्विक—(वि० सं०) सतोगुणी।

साथ—(पु० हि०) मेल-मिलाप। सहित। से। प्रति। साथी=संगी। दोस्त। मित्र।

सादा—(वि० फ़ा०) बिना बनावट का। साधारण। बिना मिलावट का। ख़ालिस। बिना रंग का। सफ़ेद। सीधा।

सादगी—(स्त्री० फ़ा०) सादापन। सीधापन। —पन=सादगी। सरलता।

सादृश्य—(पु० सं०) समानता। बराबरी। तुलना।

साधक—(पु० सं०) साधना करनेवाला। योगी। तपस्वी।

साधन—(पु० सं०) विधान। सामग्री। सामान। उपाय। युक्ति। सहायता। कारण। सबब। तपस्या।

साधना—(स्त्री० सं०) सिद्धि। उपासना। तपस्या पूरा करना। निशाना लगाना। नापना। ठहराना। इकट्ठा करना।

साधारण—(वि० सं०) मामूली। आम। —तः=मामूली तौर पर। आमतौर पर। बहुधा। प्रायः।

साधु—(पु० सं०) धार्मिक पुरुष। महात्मा। सज्जन। भला आदमी। मुनि। प्रशंनीय। योग्य। —ता=साधुओं का आचरण। सज्जनता। भलाई। सीधापन। —साधु=धन्य-धन्य। वाह-वाह।

साध्य—(वि० सं०) पूरा हो सकने के योग्य। सहज। आसान। जिसे साबित करना हो।

साध्वी—(वि० सं०) पतिव्रता। शुद्ध चरित्रवाली स्त्री।

सानंद—(वि० सं०) आनंद-पूर्वक।

सान—(पु० हि०) वह पत्थर की चक्की जिस पर अस्त्रादि तेज किए जाते हैं। शाण।

सानी—(स्त्री० हि०) वह चारा जो पानी में सानकर पशुओं को खिलाया जाता है। (अ०) बराबरी का। मुक़ाबले का।

साफ़—(वि० अ०) स्वच्छ। निर्मल। शुद्ध। ख़ालिस। जो देखने में स्पष्ट हो। उज्ज्वल। निष्कपट। जो स्पष्ट सुनाई पड़े या समझ में आवे। सदा। कोरा। बे-ऐब। हिसाब साफ़ होना। बिलकुल।

साफा—(पु० हि०) सिर पर बाँधने की पगड़ी। मुड़ासा।

साफी—(स्त्री० हि०) रूमाल। दस्ती। वह कपड़ा जो गाँजा पीनेवाले चिलम के नीचे लपेटते हैं। भाँग छानने का कपड़ा। रंदा।

साबिक़—(वि० अ०) पहले का। पूर्व का।

साबिक़ा—(पु० अ०) जान पह-चान। मुलाक़ात। संबंध। व्यवहार।

साबित—(वि० फ़ा०) प्रमाणित। सिद्ध। पूरा। दुरुस्त। ठीक।

साबुन—(पु० अ०) रासायनिक क्रिया से बनाया हुआ एक प्रसिद्ध पदार्थ जिससे शरीर और कपड़े साफ़ किये जाते हैं। (अं०) सोप।

सामंजस्य—(पु० स०) औचित्य। उपयुक्तता। अनुकूलता।

सामंत—(पु० सं०) वीर। योद्धा।

साम—(पु० हि०) मधुर भाषण। राजनीति के चार अंगों या उपायों में से एक।

सामग्री—(स्त्री० सं०) सामान। ज़रूरी। चीज़। साधन।

सामना—(पु० हि०) भेंट। मुलाक़ात। आगे की ओर का हिस्सा। आगा। मुक़ाबला। समत्तता।

सामने—(क्रि० हि०) सम्मुख। आगे। मौजूदगी में। मुक़ाबले में। विरुद्ध।

सामरिक—(वि० सं०) युद्ध का।

सामर्थ्य—(पु० सं०) बल। शक्ति।

सामाजिक—(वि० सं०) समाज का। सभा का। सभा से संबंध रखनेवाला।

सामान—(पु० फा०) सामग्री। माल। असबाब। औज़ार। बन्दोबस्त। इन्तज़ाम।

सामान्य—(वि० सं०) साधारण। मामूली। —तः= साधारण रीति से।

सामुद्रिक—(वि० सं०) समुद्र का। हस्तरेखा-विज्ञान।

साम्यवाद—(पु० सं०) एक सिद्धान्त जिसके अनुसार सब में समान रूप से संपत्ति का बँटवारा होता है।

साम्राज्य—(पु० सं०) सार्वभौम राज्य। सलतनत।

सायंकाल—(पु० सं०) संध्या। शाम। सायंकालीन=संध्या के समय का। शाम का।

सायंटिफक—(अं०) विज्ञान संबंधी।

सायंस—(स्त्री० अं०) विज्ञान।

सायत—(स्त्री० अ०) शुभ-मुहूर्त। अच्छा समय।

सायबान—(पु० फ़ा०) बरामदा।

सायर—(पु० अ०) वह भूमि जिसकी आय पर कर नहीं लगता। फुटकर।

सायल—(पु० अ०) सवाल करने वाला। प्रार्थी।

साया—(पु० फ़ा०) छाया। छाँह। परछाईं। प्रभाव। (अं०) यूरोपियन स्त्रियों का घाँघरे की तरह का एक पहनावा।

सारंगी—(स्त्री० हि०) एक बाजा।

सार—(पु० सं०) तत्त्व। निष्कर्ष। रस। गूदा। नतीजा। बल। (हि०) पालन। रक्षा। —गर्भित=जिसमें तत्त्व भरा हो। सार-युक्त।

सारजंट—(पु० अं०) पुलिस के सिपाही का जमादार।

सारथी—(पु० सं०) रथादि का चलानेवाला। सूत।

सारस—(पु० सं०) एक पक्षी।

सार्टिफ़िकेट—(पु० अं०) प्रमाण-पत्र। सनद।

सार्थक—(वि० सं०) अर्थ-सहित। सफल। सिद्ध।

सार्वजनिक—(वि० सं०) सब लोगों से संबंध रखनेवाला।

सार्वभौम—(पु० सं०) समस्त भूमि संबंधी। संपूर्ण भूमि का। चक्रवर्त्ती।

साल अमोनिया—(पु० अं०) नौसादर।

सालन—(पु० हि०) मसालेदार तरकारी।

सालना—(क्रि० हि०) दुःख देना। खटकना। कसकना। चुभना। गड़ना। खाट के पाये में छेद करके उसमें पाटी बैठाना।

सालसा—(पु० अं०) खून साफ करने का एक अँगरेज़ी काढ़ा।

साला—(पु० हि०) पत्नी का भाई।

सालाना—(वि० फ़ा०) वार्षिक।

सावधान—(वि० सं०) सचेत। होशियार।

सावन—(पु० हि०) श्रावण का महीना।

साष्टांग—(वि० सं०) आठों अंग सहित।

साहब—(पु० अ०) स्वामी। मालिक। महाशय। एक सम्मान-सूचक शब्द। गोरी जाति का कोई व्यक्ति। फिरंगी। —ज़ादा=भले आदमी का लड़का। पुत्र। —सलामत=बंदगी। सलाम साहबी=साहब का। साहब संबंधी। प्रभुता। बड़ाई।

साहस—(पु० सं०) हिम्मत। साहसिक=साहस करने-वाला। पराक्रमी। निर्भय। साहसी=हिम्मती। दिलेर।

साहित्य—(पु० सं०) विचार या ज्ञान। गद्य और पद्य ग्रन्थों का समूह। (अं०) लिटरेचर।

साही—(स्त्री० हि०) एक जंतु।

साहु—(पु० हि०) सज्जन। भलामानस। महाजन। धनी। साहूकार=बड़ा महा-जन या व्यापारी। धनाढ्य।

सिंकोना—(पु० अं०) कुनैन का पेड़।

सिंगारदान—(पु० हि०) छोटा संदूक जिसमें शीशा, कंघी आदि श्रृङ्गार की सामग्री रखी जाती है।

सिंघाड़ा—(पु० हि०) पानी में पैदा होनेवाला एक फल। सोनारों का एक औज़ार। एक प्रकार को आतिशबाज़ी।

सिंचाई—(स्त्री० हि०) पानी छिड़कने का काम। सींचने का काम। सींचने की मज़दूरी।

सिंदूर—(पु० सं०) ईंगुर। जिसे सौभाग्यवती हिंदू स्त्रियाँ अपनी माँग में भरती हैं। सिंदूरिया=सिंदूर के रंग का। खूब लाल।

सिंधु—(पु० सं०) एक प्रसिद्ध नद जो पंजाब के पश्चिम भाग में है। समुद्र।

सिंह—(पु० सं०) शेर-बबर। केसरी। ज्योतिष में एक राशि। —नाद=सिंह की गरज। युद्ध में वीरों की ललकार। सिंहावलोकन=आगे बढ़ने के पहले पिछली बातों का संक्षेप में कथन। सिंहासन=राजा या देवता के बैठने की चौकी।

सिआर—(पु० हि०) श्रृगाल। गीदड़।

सिकंज़बीन—(स्त्री० फ़ा०) सिरके या नीबू के रस में पका हुआ शरबत।

सिकड़ी—(स्त्री० हि०) किवाड़ की कुंडी। साँकल। सोने का एक गहना। करधनी।

सिकली—(स्त्री० अ०) धारदार हथियारों पर सान चढ़ाने की क्रिया। —गर=सान धरनेवाला। चमक देनेवाला।

सिकुड़न—(स्त्री० हि०) शिकन। सिलवट।

सिकुड़ना—(क्रि० हि०) सुकड़ना। बटुरना। तंग होना। बल पड़ना। शिकन पड़ना।

सिकोड़ना—(क्रि० हि०) संकुचित करना। समेटना। तंग करना।

सिक्का—(पु० अ०) मुहर। मुद्रा ठप्पा। प्रभाव।

सिखरन—(स्त्री० हि०) दही मिला हुआ चीनी का शरबत।

सिखाना—(क्रि० हि०) शिक्षा देना। बतलाना। पढ़ाना। धमकाना। दंड देना।

सिखावन—(पु० हि०) सीख। शिक्षा। उपदेश।

सिज़दा—(पु० अ०) प्रणाम। दंडवत। सिर झुकाना।

सिझाना—(क्रि० हि०) आँच पर गलाना। पकाना।

सिटकिनी—(स्त्री० अनु०) चटकनी। चटखनी।

सिटपिटाना—(क्रि० अनु०) दब जाना। मंद पड़ जाना। सकुचाना।

सिड़—(स्त्री० हि०) पागलपन। सनक। धुन। सिड़ी=सनकी। मनमौजी।

सितम—(पु० फ़ा०) ग़ज़ब। आफ़त। ज़ुल्म। अत्याचार। —गर=ज़ालिम। अन्यायी।

सितार—(पु० फ़ा०) एक बाजा। सितारिया=सितार बजानेवाला। सितारी = छोटा सितार। छोटा तंबूरा।

सितारा—(पु० फ़ा०) तारा। नक्षत्र। भाग्य। नसीब। सितारेहिंद=एक उपाधि।

सिद्ध—(वि० सं०) जो पूरा हो गया हो। कामयाब। करामाती। प्रमाणित। साबित। ज्ञानी। महात्मा।

सिद्धांत—(पु० सं०) उसूल। मत। पक्की राय। नतीजा। तत्त्व की बात।

सिद्धि—(स्त्री० सं०) काम का पूरा होना। सफलता।

सिधारना—(क्रि० हि०) जाना। गमन करना। मरना।

सिन—(पु० अ०) उम्र। अवस्था। (अं०) पाप।

सिनेट—(पु० अं०) शासन का समस्त अधिकार रखनेवाली सभा। विश्व-विद्यालय का प्रबन्ध करनेवाली सभा।

सिपर—(स्त्री० फ़ा०) ढाल।

सिपहगरी—(स्त्री० फ़ा०) सिपाही का काम।

सिपास—(स्त्री० फ़ा०) धन्य-वाद। शुक्रिया। प्रशंसा।

सिपाह—(स्त्री० फ़ा०) फौज। सेना। —गिरी=सिपाही का काम या पेशा। सिपाहियाना=सिपाहियों का सा। सिपाही=सैनिक। फौजी आदमी। कांस्टेबल। चपरासी।

सिप्पा—(पु० देश०) युक्ति। तदबीर। डौल। धाक।

सिफ़त—(स्त्री० अ०) विशेषता। गुण। स्वभाव।

सिफ़र—(पु० अ०) शून्य। बिन्दी।

सिफ़ला—(वि० अ०) नीच। कमीना। —पन=छिछोरापन। पाजीपन।

सिफ़ारिश—(स्त्री० फ़ा०) किसी के पक्ष में कुछ कहना-सुनना। नौकरी दिलाने के लिये किसी की प्रशंसा। सिफ़ारिशी=सिफ़ारिशवाला। जिसकी सिफ़ारिश की गई हो। सिफ़ारिशी टट्टू=वह जो केवल सिफ़ारिश या ख़ुशामद से किसी पद पर पहुँचा हो।

सिमटना—(क्रि० हि०) सुकड़ना। संकुचित होना। शिकन पड़ना। बटोरा जाना। इकट्ठा होना। व्यवस्थित होना। पूरा होना। सहमना। सिटपिटा जाना।

सिमेंट—(पु० अं०) एक प्रकार का लसदार गारा।

सियापा—(पु० फ़ा०) मरे हुए मनुष्य के शोक में बहुत सी स्त्रियों के इकट्ठा होकर रोने की रीति।

सियार—(पु० हि०) गीदड़।

सियासत—(स्त्री० अ०) देश का शासन=प्रबंध तथा व्यवस्था।

सियाहगोश—(पु० फ़ा०) काले कानवाला। बनबिलाव।

सियाहा—(पु० फ़ा०) आय-व्यय की बही। रोज़नामचा। —नवीस = सियाहा का लिखनेवाला।

सिर—(पु० हि०) कपाल। खोपड़ी। ऊपर का छोर। सिरा। चोटी।

सिरका—(पु० फ़ा०) धूप में पकाकर खट्टा किया हुआ ईख, अंगूर, जामुन आदि का रस। —कश = अरक़ खींचने का एक यंत्र।

सिरकी—(स्त्री० हि०) सरकंडे या सरई की तीलियों की बनी हुई टट्टी।

सिरखपी—(स्त्री० हि०) हैरानी।

सिरजना—(क्रि० हि०) बनाना। सिरजनहार = रचनेवाला। बनानेवाला। परमेश्वर।

सिरताज—(पु० हि०) मुकुट। शिरोमणि।

सिर-ता-पा—(फ़ा०) सिर से पाँव तक। आदि से अंत तक। संपूर्ण।

सिरनामा—(पु० फ़ा०) लिफाफे पर लिखा जानेवाला पता। शीर्षक। हेडिंग।

सिरपेच—(पु० फ़ा०) पगड़ी। पगड़ी पर बाँधने का एक आभूषण।

सिरपोश—(पु० फ़ा०) टोप। कुलहा। बंदूक के ऊपर का कपड़ा।

सिरफेंटा—(पु० हि०) साफ़ा। पगड़ी। मुरेठा।

सिरवा—(पु० हि०) वह कपड़ा जिससे अनाज ओसाने के समय हवा करते हैं।

सिरस—(पु० हि०) एक पेड़।

सिरहाना—(पु० हि०) चरपाई में सिर की ओर का भाग। खाट का सिरा।

सिरा—(पु० हि०) छोर। ऊपर का भाग। आख़िरी हिस्सा। नोक। अनी। अगला हिस्सा।

सिरावन—(पु० हि०) पाटा। हेंगा।

सिरिश्ता—(पु० फ़ा०) विभाग। मुहकमा। सिरिश्तेदार = अदालत का वह कर्मचारी जो मुक़दमें के काग़ज़-पत्र रखता है। सिरिश्तेदारी = सिरिश्तेदार का काम या पद।

सिरोपाव—(पु० हि०) सिर से पैर तक का पहनावा। ख़िलअत।

सिल—(स्त्री० हि०) पत्थर की चौकोर पटिया जिस पर मसाला आदि पीसते हैं। काठ की पटरी। (पु० अ०) तपेदिक़। क्षयरोग।

सिलखड़ी—(स्त्री० हि०) एक चिकना मुलायम पत्थर। खरिया मिट्टी।

सिलपट—(वि० हि०) साफ़। घिसा हुआ। मिटा हुआ। चौपट।

सिलवट—(स्त्री० देश०) बल। शिकन। सिकुड़न।

सिलसिला—(पु० अ०) क्रम। परंपरा। जंज़ीर। शृंखला। व्यवस्था। तरतीब। कुल-परंपरा। शानुक्रम। (वि० हि०) रपटन वाला। चिकना। —बंदी = तरतीब। क़तारबंदी। पंक्ति बँधाई। सिलसिलेवार = क्रमशः।

सिलह—(पु० अ०) हथियार। शस्त्र। —खाना = अस्त्रागार।

सिलाई—(स्त्री० हि०) सीने का काम। सीने का ढंग। सीने की मज़दूरी। टाँका। सीवन।

सिलाजीत—(पु० हि०) एक दवा।

सिलावट—(पु० हि०) संगतराश।

सिलाह—(पु० अ०) जिरह बख़्तर। कवच। हथियार।

अस्त्र-शस्त्र । —बंद= सशस्त्र । हथियारबंद । —साज=हथियार बनानेवाला।

सिलौटी—(स्त्री० हि०) भाँग, मसाला आदि पीसने की छोटी सिल।

सिल्ला—(पु० हि०) खेत या खलियान में गिरा हुआ अनाज का दाना।

सिल्ली—(स्त्री० हि०) हथियार की धार चोखी करने का पत्थर। सान। आरे से चीरकर पेड़ी से निकाला हुआ तख़्ता। पटरी। पत्थर की छोटी पतली पटिया।

सिवईं—(स्त्री० हि०) आटे के सूत जो दूध में पकाकर खाए जाते हैं। सिवैयाँ।

सिवाय—(क्रि० वि० अ०) अतिरिक्त। अलावा। छोड़कर।

सिवार—(स्त्री० हि०) पानी में फैलनेवाला एक तृण।

सिविल—(वि० अं०) नगर संबंधी। नागरिक। माली। सभ्य। मिलनसार। —सर्जन =सरकारी बड़ा डाक्टर।—सर्विस =अंगरेज़ी सरकार की एक विशेष परीक्षा।—सूट= दीवानी मुक़दमा। —कोर्ट= दीवानी अदालत। सिविलियन=सिविल सर्विस परीक्षा पास किया हुआ मनुष्य। —लॉ=दिवानी क़ानून। देश के शासन और प्रबंधविभाग का कर्मचारी। सिविलिज़ेशन =सभ्यता। सिविलाइज़्ड =सभ्य। शाइस्ता।

सिसकना—(क्रि० अनु०) बहुत हिचकियाँ भरना।

सी—(वि० स्त्री० हि०) समान। सरदी लगने पर मुँह से निकला हुआ शब्द।

सीक्रेट—(अं०) गुप्तभेद। रहस्य।

सीख़—(स्त्री० फ़ा०) लोहे की छड़। —चा=लोहे की सीख जिस पर मांस लपेटकर भूनते हैं।

सीखना—(क्रि० हि०) ज्ञान-

कारी प्राप्त करना। काम करने का ढंग जानना।

सीटी—(स्त्री० हि०) मुँह से निकाला हुआ बारीक स्वर। एक प्रकार का बाजा। पिपहरी।

सीठना—(पु० हि०) विवाह की गाली।

सीठा—(वि० हि०) नीरस। फीका। बेज़ायक़ा।

सीठी—(स्त्री० हि०) सार-हीन पदार्थ।

सीड़—(स्त्री० हि०) तरी। नमी।

सीढ़ी—(स्त्री० हि०) ज़ीना।

सीतलपाटी—(स्त्री० हि०) बढ़िया चिकनी चटाई। एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

सीता—(स्त्री० सं०) जानकी। श्रीरामचन्द्र की पत्नी।

सीत्कार—(पु० सं०) सिसकारी।

सीधा—(वि० हि०) सरल। भला। अनुकूल। आसान। सहल। दहिना। —पन= भोलापन। सीधे=बिना कहीं मुड़े या रुके। शिष्ट व्यवहार से। नरमी से। शांति के साथ। शिष्टता के साथ।

सीन—(पु० अं०) दृश्य। थियेटर के रंगमंच का कोई परदा। सीनरी=प्राकृतिक दृश्य।

सीना—(क्रि० हि०) टाँकों से मिलाना या जोड़ना। टाँका मारना। (पु० फ़ा०) छाती। वक्षस्थल। —तोड़=कुश्ती का एक पेंच।

सीप—(पु० हि०) सुतुही। सीप नामक समुद्री जलजंतु।

सीमा—(स्त्री० सं०) हद। मर्य्यादा। सीमांत=सरहद। गाँव की सीमा। —बद्ध= रेखा से घिरा हुआ। हद के भीतर किया हुआ। सीमित= मर्यादित। हद बँधा हुआ। सीमोल्लंघन=हद पार करना। मर्यादा के विरुद्ध कार्य करना।

सीमाब—(पु० फ़ा०) पारा।

सीर—(स्त्री० हि०) वह ज़मीन जिसे भू-स्वामी या ज़मींदार

स्वयं जोतता आ रहा हो। साझा। मेल।

सीसमहल—(पु० फ़ा०) शीशे से जड़ा हुआ मकान।

सीसा—(पु० हि०) एक धातु।

सीसी—(स्त्री० अनु०) सिसकारी। शीत के कष्ट के कारण निकला हुआ शब्द।

सुँघनी—(स्त्री० हि०) हुलास। नस्य। सूँघने की तंबाकू। —सुँघाना=सूँघने की क्रिया कराना।

सुंदर—(वि० सं०) खूबसूरत। मनोहर। अच्छा। भला। बढ़िया। श्रेष्ठ। —ता=खूबसूरती। सुंदरी=रूपवती स्त्री।

सुकर्म—(पु० सं०) अच्छा काम।

सुकाल—(पु० सं०) उत्तम समय।

सुकुमार—(वि० सं०) कोमल। नाज़ुक। —ता=कोमलता। नज़ाकत। सुकुमारी=कोमलांगी।

सुकुल—(पु० सं०) श्रेष्ठ वंश। ब्राह्मणों की एक पदवी।

सुकृत—(पु० सं०) पुण्य। धर्मशील। सुकृति=पुण्य। सुकृती=धार्मिक। पुण्यवान्। भाग्यवान्। सुकृत्य=उत्तम कार्य।

सुख—(पु० सं०) आराम। आनंद। —कर=सुख देने वाला। सुखद। —द=सुख देनेवाला। —दा=सुख देने वाली। —दायक=सुख देने-वाला। —दायी=सुख देने-वाला। —पूर्वक=सुख से। आनंद से। —प्रद=सुख देनेवाला। सुखांत=जिसका परिणाम सुखकर हो। सुखी =आनंदित। खुश।

सुखवन—(पु० हि०) वह अन्न जो सूखने के लिये धूप में डाला जाता है। सूखने वाली चीज़।

सुखाना—(क्रि० हि०) गीलापन दूर करना।

सुख्याति—(स्त्री० सं०) प्रसिद्धि। कीर्ति। यश।

सुगंध—(स्त्री० सं०) अच्छी

महक । सुवास । खुशबू । सुगंधि = खुशबू । सुगंधित = खुशबूदार ।

सुगति—(स्त्री० सं०) मोक्ष ।

सुगम—(वि० सं०) सरल । आसान । सहज ।

सुघड़—(वि० हि०) सुंदर । सुडौल । —पन = सुंदरता । कुशलता ।

सुघर—(वि० हि०) सुंदर । कुशल ।

सुचाल—(स्त्री० हि०) अच्छी चाल । सदाचार ।

सुजन—(पु० सं०) शरीफ़ । सज्जन । भला आदमी । —ता = भलमनसाहत ।

सुज़नी—(स्त्री० फ़ा०) एक प्रकार की बड़ी चादर । कथरी ।

सुजाति—(स्त्री० सं०) उत्तम जाति । अच्छे कुल का ।

सुडौल—(वि० हि०) सुंदर आकार का ।

सुतरां—(अव्य० सं०) अतः । इसलिये । निदान । और भी । लाचार ।

सुतली—(स्त्री० हि०) डोरी । रस्सी ।

सुतार—(पु० हि०) बढ़ई । कारीगर ।

सुतारी—(स्त्री० हि०) मोचियों का सूआ जिससे वे जूता सीते हैं ।

सुतुही—(स्त्री० हि०) सीपी ।

सुथनी—(स्त्री० देश०) स्त्रियों के पहनने का ढीला पायजामा । रतालू ।

सुथरा—(वि० हि०) स्वच्छ । साफ़ । —पन = स्वच्छता । सफ़ाई ।

सुदर्शन—(पु० सं०) सुंदर । मनोरम ।

सुध—(स्त्री० हि०) स्मरण । याद । चेतना । होश । ख़बर । पता ।

सुधरना—(क्रि० हि०) बिगड़े हुए का बनना । संशोधन होना ।

सुधर्म—(पु॰ सं॰) उत्तम धर्म। पुण्य कर्त्तव्य।

सुधा—(स्त्री॰ सं॰) अमृत। —निधि=चंद्रमा।—कर= चन्द्रमा।

सुधार—(पु॰ हि॰) सुधरने की क्रिया। संशोधन।—क= संशोधक। दोषों या त्रुटियों का सुधार करने वाला। —ना=दोष या बुराई दूर करना। सँवारना।

सुनना—(क्रि॰ हि॰) श्रवण करना। किसी के कथन पर ध्यान देना। भली, बुरी या उलटी सीधी बातें श्रवण करना।

सुनबहरी—(स्त्री॰ हि॰) एक प्रकार का रोग।

सुनवाई—(स्त्री॰ हि॰) मुक़दमे आदि का पेश होकर सुना जाना। किसी शिकायत या फ़रियाद आदि का सुना जाना।

सुनसान—(वि॰ हि॰) ख़ाली। निर्जन। सन्नाटा।

सुनहला—(वि॰ हि॰) सोने के रंग का। सोने का सा।

सुनाम—(पु॰ सं॰) यश। कीर्ति।

सुनार—(पु॰ हि॰) सोने, चाँदी के गहने आदि बनाने वाली जाति।

सुन्न—(वि॰ हि॰) निर्जीव। सुनसान। निर्जन। नीरव।

सुन्नत—(स्त्री॰ अ॰) मुसलमानों की एक रस्म।

सुन्नी—(पु॰ अ॰) मुसलमानों का एक भेद।

सुपक्व—(वि॰ सं॰) अच्छी तरह पका हुआ।

सुपर रायल—(पु॰ अं॰) काग़ज़ की एक नाप।

सुपरवाइज़र—(पु॰ अं॰) जाँच करनेवाला। सुपरवीज़न= सँभाल।

सुपरिंटेंडेंट—(पु॰अं॰) निगरानी करनेवाला। प्रधान निरीक्षक।

सुपात्र—(पु॰ सं॰) योग्य। उपयुक्त हो। अच्छा पात्र।

सुपारी—(स्त्री० हि०) छालिया। कसैली।

सुपास—(पु० देश०) सुख। आराम।

सुपीरियर—(अं०) बढ़कर। श्रेष्ठतर।

सुपूत—(वि० हि०) अच्छा पुत्र। सुपुत्र।

सुप्रतिष्ठा—(स्त्री सं०) आदर। प्रसिद्धि। सुनाम। सुप्रतिष्ठित = उत्तम रूप से प्रतिष्ठित।

सुप्रभात—(पु० सं०) मंगल-सूचक प्रभात।

सुप्रीम कोर्ट—(पु० अं०) प्रधान या उच्च न्यायालय। सब से बड़ी कचहरी।

सुवड़ा—(पु० देश०) ताँबा मिली हुई चाँदी।

सुवहान अल्ला—(अव्य० अ०) अरबो का एक पद।

सुबुक—(वि० फ़ा०) हलका। कम वोझ का। सुंदर।

सुवुक रंदा—(पु० फ़ा०) लोहे का एक औज़ार।

सुबुद्धि—(स्त्री०सं०) उत्तम बुद्धि।

सुबोध—(वि० सं०) अच्छी बुद्धिवाला। जो कोई बात सहज में समझ सके।

सुभट—(पु० सं०) महान् योद्धा। अच्छा सैनिक।

सुभाषित—(वि०) अच्छी तरह कहा हुआ।

सुभीता—(पु० देश०) सुगमता। आसानी। सुअवसर। आराम। चैन।

सुभूषित—(वि० सं०) भली भाँति। अलंकृत।

सुम—(पु० फा०) टाप। खुर।

सुमति—(पु० सं०) सुबुद्धि।

सुमार्ग—(पु० सं०) अच्छा रास्ता। सन्मार्ग।

सुमुखी—(स्त्री० सं०) सुंदर मुखवाली स्त्री।

सुयश—(पु० सं०) अच्छा यश। सुकीर्ति।

सुयोग—(पु० सं०) संयोग। सुअवसर। अच्छा मौक़ा।

सुरंग—(वि० सं०) सुन्दर रंग का। ज़मीन के अंदर का रास्ता। मिले या दीवार

आदि के नीचे ज़मीन के अंदर खोदकर बनाया हुआ वह तंग रास्ता जिसमें बारूद भर कर उसमें आग लगाकर क़िले या दीवार आदि को उड़ाते हैं।

सुर—(पु० सं०) देवता।

सुरकना—(क्रि० स० अनु०) किसी तरल पदार्थ को धीरे-धीरे खींचते हुए पीना।

सुरख़ाब—(पु० फ़ा०) चकवा।

सुरती—(स्त्री० हि०) खाने का तंबाकू। खैनी।

सुरबहार—(पु० हि०) सितार की तरह का एक प्रकार का बाजा।

सुरभि—(पु० सं०) सुगंधि। खुशबू। सुरभित=सुगंधित। सुवासित।

सुरमई—(वि० फ़ा०) सुरमे के रंग का। हलका नीला।

सुरमा—(पु० फ़ा०) अंजन। —दानी=सुरमा रखने का पात्र।

सुरा—(स्त्री० सं०) मदिरा। शराब।

सुराग़—(पु० अ०) टोह। पता।

सुरागाय—(स्त्री० हि०) एक प्रकार की गाय।

सुराज्य—(पु० सं०) अच्छा राज्य।

सुराही—(स्त्री० अ०) जल रखने का एक प्रकार का बरतन। —दार=सुराही के आकार का।

सुरीला—(वि० हि०) मीठे स्वर-वाला।

सुरुचि—(स्त्री०सं०) उत्तम रुचि। सुस्वाद। —कर=स्वादिष्ट।

सुरूप—(वि० सं०) ख़ूबसूरत। शक्ल। आकार।

सुर्ख़—(वि० फ़ा०) लाल। —रू = तेजस्वी। प्रतिष्ठित। यशस्वी। —रूई=यश। मान। प्रतिष्ठा। सुर्ख़ी= लाली। लेख आदि का शीर्षक। ईंट का बारीक पिसा हुआ चूर्ण जो चूने में मिला-कर काम में लाया जाता है। सुर्ख़ीदार सुरमई=एक प्रकार का बैंजनी रंग।

सुलक्षण—(वि० सं०) अच्छे लक्षणों वाला। भाग्यवान। शुभ लक्षण।

सुलझना—(क्रि० हि०) उलझन का खुलना। सुलझाना= उलझन या गुत्थी खोलना। सुलझाव=सुलझन।

सुलतान—(पु० फ़ा०) बादशाह।

सुलतानी—(स्त्री० फ़ा०) बादशाही।

सुलफा—(पु० फ़ा०) सूखा तमाकू। कंकड़। चरस। सुलफेबाज=गाँजा या चरस पीनेवाला।

सुलभ—(वि० सं०) सहज में मिलनेवाला। सहज। आसान। मामूली।

सुललित—(वि० सं०) अत्यंत सुन्दर।

सुलह—(स्त्री० फ़ा०) मेल। मिलाप। संधि। —नामा= संधि-पत्र।

सुलाना—(क्रि० हि०) शयन कराना। लिटाना।

सुलेखक—(पु० सं०) अच्छा लेख या निबंध लिखनेवाला। उत्तम ग्रन्थकार।

सुलोचन—(वि० सं०) सुन्दर आँखोंवाला।

सुवक्ता—(वि० सं०) उत्तम व्याख्यान देनेवाला।

सुवचन—(वि० सं०) मिष्टभाषी।

सुवर्ण—(पु० सं०) सोना। सुन्दर वर्ण या रंग का।

सुवास—(पु० सं०) सुगंध। खुशबू।

सुविचार—(पु० सं०) उत्तम विचार।

सुवेश—(वि० सं०) सुन्दर। रूपवान।

सुव्यवस्थित—(वि० सं०) सुप्रबन्ध=युक्त।

सुशिक्षित—(वि० सं०) अच्छी तरह शिक्षा पाया हुआ।

सुशीतल—(वि० सं०) बहुत ठंढा।

सुशील—(वि० सं०) उत्तम स्वभाववाला। सच्चरित्र। विनीत। नम्र। सरल।

सीधा । सुशीला=अच्छे शील वाली। स्त्री।

सुशोभित—(वि० सं०) अत्यंत शोभायमान।

सुषमा—(स्त्री० सं०) परम शोभा। अत्यंत सुंदरता।

सुषुप्ति—(स्त्री० सं०) गहरी नींद।

सुसंगति—(स्त्री० हि०) अच्छी सोहबत। सत्संग।

सुसज्जित—(वि० सं०) भली भाँति सजा या सजाया हुआ। शोभायमान।

सुसताना—(क्रि० फ़ा०) विश्राम करना।

सुसाध्य—(वि० सं०) जो सहज में किया जा सके।

सुस्त—(वि० फ़ा०) कमज़ोर। उदास। आलसी। धीमी चालवाला। सुस्ती=आलस्य। शिथिलता।

सुस्थ—(वि० सं०) भला चंगा। नीरोग।

सुस्थिति—(स्त्री० सं०) अच्छी अवस्था। कुशल-क्षेम।

सुस्थिर—(वि० सं०) अत्यंत स्थिर या दृढ़। अविचल।

सुहाग—(पु० हि०) सौभाग्य। सधवापन। सुहागिन=सधवा स्त्री। सौभाग्यवती।

सुहागा—(पु० हि०) एक प्रकार का क्षार।

सुहारी—(स्त्री० हि०) सादी पूरी नाम का पकवान।

सुहाल—(पु० हि०) एक प्रकार का नमकीन पकवान।

सुहावना—(वि० हि०) सुन्दर। मनोहर।

सूँघना—(क्रि० हि०) महक लेना। वास लेना।

सूँड़—(स्त्री० हि०) हाथी की नाक। शुण्ड।

सूँड़ी—(स्त्री० हि०) एक प्रकार का सफ़ेद कीड़ा।

सूँस—(स्त्री० हि०) एक प्रसिद्ध बड़ा जल-जन्तु।

सूअर—(पु० हि०) एक प्रसिद्ध वन-जंतु। शूकर। एक प्रकार की गाली।

सूई—(स्त्री० हि०) सीने का

औज़ार। पिन। महीन तार का काँटा।

सूक्त—(पु० सं०) वैदिक स्तुति या प्रार्थना।

सूक्ति—(स्त्री० सं०) सुंदर पद या वाक्य आदि। बढ़िया कथन।

सूक्ष्म—(वि० सं०) बहुत बारीक या महीन। —ता=बारीकी। —दर्शक यंत्र=खुर्दबीन।

सूखना—(क्रि० हि०) गीलापन न रहना। जल का बिल्कुल न रहना या बहुत कम हो जाना। उदास होना। नष्ट होना। डरना। दुबला होना।

सूखा—(वि० हि०) जलहीन। रस-हीन। उदास। कठोर। पानी न बरसाना। एक प्रकार की खाँसी। खाना अंग न लगने से होनेवाला दुबलापन।

सूचना—(स्त्री० सं०) विज्ञापन। इश्तहार। बतलाना। सूचक=सूचना देनेवाला। बतानेवाला। सूचनापत्र=विज्ञापन। इश्तहार।

सूची—(स्त्री० हि०) कपड़ा सीने की सूई। तालिका। फ़ेहरिस्त। —कर्म=सिलाई या सूई का काम। —पत्र=तालिका। फ़ेहरिस्त।

सूजन—(स्त्री० हि०) शोथ।

सूजना—(क्रि० फ़ा०) शोथ होना।

सूजा (पु० हि०) मोटी सूई।

सूज़ाक—(पु० फ़ा०) एक रोग। मूत्रकृच्छ्र।

सूजी—(स्त्री० हि०) गेहूँ का दरदरा आटा।

सूझ—(स्त्री० हि०) दृष्टि। नज़र। अनूठी कल्पना। —ना=दिखाई देना। —बूझ=समझ। अक़्ल।

सूट—(पु० अं०) पहनने के सब कपड़े। —केस=कपड़े रखने का एक प्रकार का चिपटा बक्स। अनुकूल पड़ना।

सूत—(पु० सं० सूत्र) तंतु। सूता। धागा। नापने का एक मान। रथ हाँकनेवाला।

सूतक—(पु० सं०) जनना। शौच मरणाशौच।

सूत्र—(पु० सं०) सूत। सार-गर्भित वचन। कारण। पता। एक वृक्ष। —धार = नाट्यशाला का प्रधान नट। —पात = प्रारंभ। शुरू।

सूथन—(स्त्री० देश०) पाय-जामा। सूथनी = स्त्रियों के पहनने का पायजामा। एक प्रकार का कंद।

सूद—(पु० फ़ा०) ब्याज। वृद्धि।

सूना—(वि० हि०) निर्जन। सुनसान। एकान्त। —पन = एकांत।

सूप—(पु० सं०) अनाज फटकने का पात्र।

सूप झरना—(पु० हि०) सूप की तरह का सरई का एक बर-तन।

सूफ़ी—(पु० अ०) मुसलमानों में एक वेदान्ती सम्प्रदाय।

सूबा—(पु० फ़ा०) प्रांत। प्रदेश। सूबेदार = किसी सूबे या प्रांत का बड़ा अफ़सर या शासक। एक छोटा फ़ौजी ओहदा। सूबेदार मेजर = फ़ौज का एक छोटा अफ़सर। सूबेदारी = सूबेदार का काम या पद।

सूम—(वि० अ०) कंजूस। कृपण।

सूरज—(पु० हि०) सूर्य। —मुखी = एक फूल।

सूरत—(स्त्री० फ़ा०) रूप। ज़ेब। शोभा। उपाय। तदबीर। युक्ति। दशा। हालत।

सूरन—(पु० हि०) ज़मीकंद।

सूराख़—(पु० फ़ा०) छेद। छिद्र।

सूर्य्य—(पु० सं०) सूरज। आफ़-ताब। —मंडल = सूर्य्य का घेरा। सूर्य्यावर्त्त = आधा-सीसी। सिर का रोग। सूर्य्यास्त = सायंकाल। सूर्यो-पासक = सूर्य्य की उपासना करनेवाला। पारसी।

सूल—(पु० हि०) बरछा। भाला। काँटा। कसक। दर्द। सूली = प्राण-दंड देने की एक प्राचीन प्रथा। फाँसी।

सृष्टि—(स्त्री० सं०) रचना। प्रकृति। —कर्त्ता=संसार की रचना करनेवाला। ईश्वर। —विज्ञान=वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें सृष्टि की रचना आदि पर विचार किया गया हो।

सेंक—(स्त्री० हि०) गरम करना। भूनना। सेंकना=भूनना। गरमी पहुँचाना।

सेंट—(पु० अं०) सुगंधित पदार्थ। संत।

सेंटीमेंटल—(अं०) भावुक। हृदय-वेधक।

सेंटर—(पु० अं०) केंद्र। मध्य-विन्दु। मुख्य स्थान। सेंट्रल=(अं०) केन्द्रीय। मध्य का।

सेंटीमीटर—(अं०) एक नाप।

सेंत—(स्त्री० हि०) मुफ़्त। सेंतमेंत=बिना दाम दिये। मुफ़्त में। वृथा।

सेंदुर—(पु० हि०) ईंगुर की बुकनी। सेंदुरिया=सिंदूर के रंग का। खूब लाल।

सेंध—(स्त्री० हि०) चोरी करने के लिये दीवार में किया हुआ बड़ा छेद। सुरंग।

सेंधा—(पु० हि०) लाहौरी नमक।

सेंवई—(स्त्री० हि०) मैदे के सूत का खीर।

सेंहुड़—(पु० हि०) थूहर।

से—(प्रत्य० हि०) करण और अपादान कारक का चिह्न। समान। सदृश।

सेकंड—(पु० अं०) एक मिनट का साठवाँ हिस्सा। (वि०) दूसरा। —क्लास= दूसरा दर्जा।

सेक्रेटरी—(पु० अं०) मंत्री। मुंशी। सेक्रेटरियट=शासक या गवर्नर का दफ़्तर।

सेक्शन—(पु० अं०) विभाग।

सेज—(स्त्री० हि०) शय्या। बिछौना।

सेट—(पु० अं०) एक ही प्रकार की कई चीज़ों का समूह।

सेटना—(क्रि० हि०) समझना। मानना।

सेठ—(पु० हि०) बड़ा साहूकार।

बड़ा व्यापारी। धनी मनुष्य। खत्रियों की एक जाति।

सेतु—(पु० सं०) पुल। सीमा।

सेतुवा—(पु० हि०) भुने हुये जौ चने का आटा।

सेना—(स्त्री० सं०) फौज। पलटन। सेनानी=सेनापति। फौज का अफ़सर। —पति=फौज का अफ़सर।

सेनेट—(स्त्री० अं०) कानून बनानेवाली सभा। विश्व-विद्यालय की प्रबन्धकारिणी सभा। सेनेटर=क़ानून बनाने वाला।

सेब—(पु० फ़ा०) एक फल।

सेम—(स्त्री० हि०) एक तरकारी।

सेमल—(पु० हि०) एक पेड़।

सेमिटिक—(पु० अं०) मनुष्यों का वर्ग-विभाग।

सेमीकोलन—(पु० अं०) एक विराम चिह्न ;।

सेर—(पु० हि०) एक तौल। मन का चालीसवाँ भाग। (वि० फ़ा०) तृप्त।

सेवक—(पु० सं०) सेवा करने वाला। नौकर। भृत्य।

सेवती—(स्त्री० सं०) सफेद गुलाब। चैती गुलाब।

सेवा—(स्त्री सं०) ख़िदमत। टहल। नौकरी। उपासना। —टहल=खिदमत।

सेवार—(स्त्री० हि०) पानी में फैलनेवाली एक घास। मिट्टी की तहें जो किसी नदी के आसपास जमी हों।

सेविंग बैंक—(पु० अं०) वह बैंक जो छोटी-छोटी रकमें ब्याज पर ले।

सेविका—(स्त्री० सं०) दासी।

सेवी—(वि० हि०) सेवा करने वाला।

सेशन—(पु० अं०) लगातार कुछ दिन चलनेवाली बैठक। दौरा अदालत। —कोर्ट=दौरा अदालत। —जज=दौरा जज।

सेहत—(स्त्री० अ०) रोग से छुटकारा। —खाना=पेशाब आदि करने और नहाने धोने

के लिये जहाज पर बनी हुई एक छोटी सी कोठरी।

सेहरा—(पु० हिं०) विवाह का मुकुट। मौर।

सेहुआँ—(पु०) एक प्रकार का चर्म रोग।

सैंतना—(क्रि० हिं०) लीपना।

सैंपुल—(पु० अं०) नमूना।

सैकड़ा—(पु० हिं०) सौ का समूह।

सैकड़े—(क्रि० वि० हिं०) प्रति सौ के हिसाब से। प्रतिशत।

सैकड़ों—(वि० हिं०) कई सौ। बहु संख्यक। गिनती में बहुत।

सैक़ल—(पु० अ०) हथियारों को साफ करने और उनपर सान चढ़ाने का काम। —गर= सान धरनेवाला। सिकलीगर।

सैनिक—(पु० सं०) सेना या फौज का आदमी। सिपाही। संतरी। प्रहरी। (वि०) सेना संबंधी। सेना का।

सैन्य—(पु० सं०) सैनिक।

सैफ़—(स्त्री० अ०) तलवार।

सैयद—(पु० अ०) मुहम्मद साहब के नाती हुसैन के वंश का आदमी। मुसलमानों की एक जाति।

सैर—(स्त्री० फ़ा०) मन बहलाने के लिये घूमना फिरना। —गाह=सैर करने की जगह।

सैला—(पु० हिं०) लकड़ी जो बैल की गर्दन में जुवे को फँसाये रखती है।

सैलानी—(वि० फ़ा०) मनमाना घूमनेवाला। आनंदी। मन-मौजी।

सैलाब—(पु० फ़ा०) बाढ़।

सोंचर नमक—(पु० हिं०) एक प्रकार का नमक।

सोंटा—(पु० हिं०) मोटी छड़ी। लाठी। भंग घोंटने का मोटा डंडा।

सोंठ—(स्त्री० हिं०) सुखाया हुआ अदरक।

सोआ—(पु० हिं०) एक साग।

सोक—(पु० देश०) चारपाई के

बुनावट का वह छेद जिसमें से रस्सी या निवार निकालकर कसते हैं।

सोखना—(क्रि० हि०) शोषण करना। सुखा डालना। पीना।

सोख़्ता—(पु० फ़ा०) स्याही-सोख।

सोच—(पु० हि०) चिंता। फ़िक्र। पछतावा। —ना=विचार करना। ग़ौर करना। चिंता करना। दुःख करना। —विचार=समझ-बूझ। ग़ौर।

सोज़न—(पु० फ़ा०) सूई। काँटा।

सोज़िश—(स्त्री० फ़ा०) सूजन। शोथ।

सोडा—(पु० अं०) एक प्रकार का क्षार पदार्थ। —वाटर=सोडे से बनाया हुआ पाचक पानी।

सोता—(पु० हि०) झरना। चश्मा।

सोनजूही—(स्त्री० हि०) पीली जूही।

सोना—(पु० हि०) एक बहुमूल्य धातु। स्वर्ण। शरीर के किसी अंग का सुन्न होना। बहुत मँहगी चीज़। अत्यंत सुंदर वस्तु। नींद लेना। —मक्खी=एक खनिज पदार्थ।

सोप—(पु० अं०) साबुन।

सोफियाना—(वि० अ०) सूफ़ियों का सा जो देखने में सादा पर बहुत अच्छा लगे।

सोमवार—(पु० सं०) चंद्रवार।

सोरठा—(पु० हि०) एक छंद, जो सौराष्ट्र (सोरठ) देश में अधिक प्रचलित है।

सोलह—(पु० हि०) दस और छः की संख्या। —सिंगार=पूरा सिंगार।

सोशल—(वि० अं०) समाज संबंधी। सामाजिक। सोशलिज़्म=साम्यवाद। सोशलिस्ट=साम्यवादी।

सोशन—(पु० फ़ा०) फ़ारस का एक पौधा।

सोसाइटी, सोसायटी—(स्त्री० अं०) समाज। गोष्ठी।

सोहगैला—(पु० हिं०) सिंदूर रखने की डिबिया। सिंदूरा।

सोहनहलवा—(पु० हिं०) एक मिठाई।

सोहबत—(स्त्री० अ०) संग। साथ। संगत। संभोग।

सोहर—(पु० हिं०) एक प्रकार का गीत जिसे घर में बच्चा पैदा होने पर स्त्रियाँ गाती हैं। सोहला।

सौंदर्य—(पु० सं०) सुंदरता। खूबसूरती।

सौंपना—(क्रि० स० हिं०) समर्पण करना। ज़िम्मे करना। सहेजना।

सौंफ—(स्त्री० हिं०) एक पौधा।

सौ—(हिं०) नब्बे और दस।

सौगंद, सौगंध—(स्त्री० हिं०) शपथ। क़सम।

सौग़ात—(स्त्री० तु०) भेंट। उपहार।

सौजन्य—(पु० सं०) भलमनसाहत।

सौत—(स्त्री० हिं०) किसी स्त्री के पति को दूसरी स्त्री या प्रेमिका। सवत।

सौतेला—(वि० हिं०) सौत से उत्पन्न।

सौदा—(पु० अ०) वह चीज़ जो खरीदी या बेची जाती हो। लेन-देन। व्यापार। पागलपन। —ई=पागल। —गर =व्यापारी। —गरी= तिजारत। रोज़गार।

सौभाग्य—(पु०सं०) खुशनसीबी। सुहाग। ऐश्वर्य। —वती= सधवा। सुहागिन। अच्छे भाग्यवाली। —वान्=सुखी और संपन्न। खुशहाल।

सौम्य—(वि० सं०) शांत। नम्र। सुंदर।

सौरभ—(पु० सं०) सुगंध। खुशबू।

सौर मास—(पु० सं०) उतना काल जितने तक सूर्य किसी एक राशि में रहे।

सौर वर्ष—(पु० सं०) उतना काल जितना सूर्य को बारह

राशियों पर घूम आने में लगता है।

स्कालर—(पु० अं०) वह जो स्कूल में पढ़ता हो। छात्र। विद्यार्थी। उच्च कोटि का विद्वान्।—शिप=छात्रवृत्ति। वज़ीफ़ा।

स्कीम—(स्त्री० अं०) योजना।

स्कूल—(पु० अं०) मदरसा। विद्यालय।—मास्टर=स्कूल में पढ़ानेवाला। शिक्षक। स्कूली=स्कूल का।

स्क्रू—(पु० अं०) पेंच।—ड्राइवर =पेंच खोलनेवाला।

स्खलित—(वि०सं०) गिरा हुआ। वीर्य का गिरना।

स्टांप—(पु० अं०) एक प्रकार का सरकारी काग़ज़। डाक का टिकट। मोहर। छाप।

स्टाइल—(स्त्री० अं०) ढंग। तरीका। शैली। पद्धति। लेखन-शैली।

स्टाक—(पु० अं०) बिक्री या बेचने का माल। सरकारी कर्ज़ की हुंडी। रसद। सामान। भंडार। गुदाम।—एक्सचेंज =(पु० अं०) वह मकान या स्थान जहाँ स्टाक या शेयर खरीदे और बेचे जाते हों। स्टाक का काम करनेवालों या दलालों की संघटित सभा।—ब्रोकर=वह दलाल जो दूसरों के लिये स्टाक या शेयरों की खरीद, बिक्री का काम करता हो।

स्टिचिंग मशीन—(स्त्री० अं०) लोहे के तारों से किताब सीने की कल।

स्टीम—(पु० अं०) भाप।—एंजिन=वह एंजिन जो भाप के ज़ोर से चलता हो। स्टीमर =भाप या स्टीम के जोर से चलनेवाला जहाज़।

स्टूल—(पु० अं०) तिपाई।

स्टेज—(पु० अं०) रंगमंच।—मैनेजर=रंगमंच का प्रबंधक।

स्टेट—(पु० अं०) रियासत। स्टेट्समैन = राजकाज में निपुण आदमी।

स्टेटमेंट—(अं०) बयान।

स्टेशन—(पु० अं०) रेलगाड़ियों के ठहरने और उन पर मुसाफिरों के उतरने-चढ़ने के लिये बनी हुई जगह।

स्तंभ—(पु० सं०) खंभा। थूनी।

स्तन—(पु० सं०) स्त्रियों या मादा पशुओं की छाती जिसमें दूध रहता है। —पान=स्तन का दूध पीना।

स्तब्ध—(वि० सं०) निश्चेष्ट। सुस्त। हठी।

स्तर—(पु० सं०) तह। परत।

स्तव—(पु० सं०) स्तुति। स्तोत्र। ईश-प्रार्थना।

स्तवक—(पु० सं०) फूलों का गुच्छा। गुलदस्ता। अध्याय। परिच्छेद।

स्तुति—(स्त्री० सं०) गुणकीर्तन। प्रशंसा। —पाठक=स्तुतिपाठ या प्रशंसा करनेवाला। भाट। चारण।

स्तूप—(पु० सं०) मिट्टी आदि का ढेर। मिट्टी, ईंट, पत्थर आदि का बना हुआ ऊँचा धूह या टीला जिसके नीचे भगवान बुद्ध या किसी बौद्ध महात्मा की अस्थि दाँत, केश या इसी प्रकार के अन्य स्मृति-चिह्न सुरक्षित हों।

स्तोत्र=(पु० सं०) स्तव। स्तुति।

स्त्री—(स्त्री० सं०) नारी। औरत। पत्नी। मादा। —गमन=संभोग। मैथुन। स्त्रीत्व=स्त्रीपन। स्त्रीधन=वह धन जिस पर स्त्रियों का विशेष रूप से पूरा अधिकार हो। —धर्म=स्त्री का रजस्वला होना। रजोदर्शन।

स्थगित—(वि० सं०) मुलतवी।

स्थपति—(पु० सं०) बढ़ई।

स्थल—(पु० सं०) जगह। ज़मीन। स्थली=स्थान।

स्थान—(पु० सं०) जगह। ओहदा। स्थानांतरित=जो एक जगह से दूसरी जगह पर भेजा या पहुँचाया गया हो। स्थानिक=उस स्थान का जिसके विषय में कोई उल्लेख

हो। स्थानीय=मुक़ामी। (अं०) लोकल।
स्थापक—(वि० सं०) क़ायम करनेवाला। प्रतिष्ठाता।
स्थापत्य—(पु० सं०) भवन-निर्माण। राजगीरी।
स्थापन—(पु० सं०) खड़ा करना। नया काम जारी करना। स्थापना=प्रतिष्ठित या स्थित करना। बैठना। स्थापित=जिसकी स्थापना की गई हो। रचित। व्यवस्थित। ठहरा हुआ।
स्थायी—(वि० सं०) ठहरनेवाला। टिकाऊ। स्थित। —भाव=साहित्य में तीन प्रकार के भावों में से एक।
स्थावर—(वि० सं०) अचल। स्थिर। स्थायी।
स्थित—(वि० सं०) क़ायम। अवलंबित। वर्तमान। मौजूद। स्थिति=ठहराव। निवास। दशा। हालत। अस्तित्व। मौक़ा।
स्थिर—(वि० सं०) निश्चल। शांत। दृढ़। अटल। —ता=ठहराव। निश्चलता। मज़बूती। धीरता। धैर्य।
स्थूल—(वि० सं०) मोटा। —ता=मोटापन।
स्नातक—(पु० सं०) वह जिसने ब्रह्मचर्य व्रत की समाप्ति पर स्नान करके गृहस्थ-आश्रम में प्रवेश किया हो।
स्नान—(पु० सं०) नहाना। —शाला=नहाने का कमरा या कोठरी। ग़ुसलखाना।
स्नायविक—(वि० सं०) स्नायु संबंधी। स्नायु का।
स्नायु—(स्त्री० सं०) शरीर के अंदर की वायुवाहिनी नसें।
स्निग्ध—(वि० सं०) चिकना। —ता=चिकनापन।
स्नेह—(पु० सं०) प्रेम। प्यार। तेल। कोमलता। —पात्र=प्रेमपात्र। —पान=वैद्यक के अनुसार एक प्रकार की क्रिया। स्नेही=प्रेमी। मित्र।
स्पंज—(पु० अं०) मुरदा बादल।
स्पंदन—(पु० सं०) फड़कना।

स्पर्द्धा—(स्त्री० सं०) होड़। बराबरी।

स्पर्श—(पु० सं०) छूना। स्पर्शी=छूनेवाला।

स्पष्ट—(वि० सं०) साफ़। स्वच्छ। —कथन=साफ़ साफ़ कहना। —तया=स्पष्ट रूप से साफ़, साफ़। —ता=सफाई। —वक्ता=साफ़-साफ़ बोलनेवाला। —वादी=स्पष्टवक्ता। स्पष्टीकरण=स्पष्ट करने की क्रिया।

स्पिरिट—(स्त्री० अं०) आत्मा। रूह। जीवन-शक्ति। एक प्रकार का मादक द्रव पदार्थ। शराब।

स्पीच—(स्त्री० अं०) व्याख्यान। लेक्चर। वक्तृता।

स्पृहा—(स्त्री० सं०) इच्छा। कामना।

स्पेशल—(वि० अं०) ख़ास। —ट्रेन=वह रेलगाड़ी जो किसी विशिष्ट कार्य्य, उद्देश्य या व्यक्ति के लिये चले।

स्प्रिंग—(स्त्री० अं०) कमानी। —दार=कमानीदार।

स्प्रिचुअलिज़्म—(पु० अं०) भूत-विद्या। आत्मविद्या।

स्लिट—(पु० अं०) पट्टी। पटरी।

स्फटिक—(पु० सं०) एक प्रकार का पत्थर। बिल्लौर।

स्फुट—(वि० सं०) फुटकर। अलग-अलग।

स्फूर्त्ति—(स्त्री० सं०) फड़कना। उत्तेजना। फुरती। तेज़ी। उमंग।

स्फोट—(पु० सं०) फूटना।

स्मरण—(पु० सं०) याद आना। —पत्र=किसी का स्मरण दिलाने के लिये लिखा हुआ पत्र। —शक्ति=याद रखने की शक्ति। स्मरणीय=याद रखने लायक़। स्मारक=यादगार।

स्मित—(पु० सं०) मंद हास्य। धीमी हँसी।

स्मृति—(स्त्री० सं०) याद। हिंदुओं के धर्म-शास्त्र।

स्यंदन—(पु० सं०) रथ।

स्यापा—(पु० फ़ा०) मरे हुए मनुष्य के लिये शोक मनाने की रीति।

स्याहा—(पु० फ़ा०) रोज़-नामचा। बही-खाता।

स्याही—(स्त्री० फ़ा०) रोशनाई। कालिख।

स्रोत—(पु० हि०) झरना। धारा।

स्लीपर—(पु० अं०) एक प्रकार की जूती। चट्टी। लकड़ी का लंबा टुकड़ा जो प्रायः रेल की पटरियों के नीचे बिछा रहता है।

स्लेज—(स्त्री० अं०) एक बिना पहिए की गाड़ी जो बरफ़ पर घसिटती हुई चलती है।

स्लेट—(स्त्री० अं०) लिखने के लिये पत्थर की पतली पटरी।

स्लो—(वि० अं०) सुस्त।

स्वगत—(पु० सं०) नाटक में पात्र का आप ही आप बोलना।

स्वच्छंद—(वि० सं०) स्वाधीन। स्वतंत्र। मनमाना काम करने वाला। —ता=स्वतंत्रता। आज़ादी।

स्वच्छ—(वि० सं०) निर्मल। साफ़। स्पष्ट। पवित्र। निष्कपट। —ता=सफ़ाई।

स्वजाति—(स्त्री० सं०) अपनी जाति।

स्वतंत्र—(वि० सं०) स्वाधीन। आज़ाद। अलग। —ता=स्वाधीनता। आज़ादी।

स्वतः—(अव्य० सं०) अपने आप। आप ही।

स्वत्व—(पु० सं०) अधिकार। हक़।

स्वदेश—(पु० सं०) मातृभूमि। वतन। स्वदेशी=अपने देश का। अपने देश में उत्पन्न या बना हुआ।

स्वधर्म—(पु० सं०) अपना धर्म। अपना कर्त्तव्य। कर्म।

स्वप्न—(पु० सं०) निद्रावस्था में कुछ घटना आदि दिखाई देना। सपना। मन में उठने-वाली ऊँची कल्पना या विचार। ख्वाब। —दोष=

निद्रावस्था में वीर्यपात होना।
स्वभाव—(पु० सं०) तासीर। मिजाज। प्रकृति। आदत। बात। —तः=सहज ही।
स्वस्थ—(वि० सं०) नीरोग। तंदुरुस्त।
स्वाँग—(पु० हि०) भेस। रूप। मज़ाक का खेल या तमाशा। धोखा देने को बनाया हुआ कोई रूप।
स्वागत—(पु० सं०) अगवानी। अभ्यर्थना। —कारिणी-सभा=किसी सभा में आनेवालों के लिये प्रबन्ध करनेवाली समिति। (अ०) रिसेप्शन कमिटी।
स्वातंत्र्य—(पु० सं०) स्वाधीनता। आज़ादी।
स्वाद—(पु० सं०) ज़ायक़ा। आनन्द।
स्वास्थ्य—(पु० सं०) नीरोगता। तंदुरुस्ती।
स्वीकार—(पु० सं०) अंगीकार। क़बूल। मंज़ूर। स्वीकृत=स्वीकार किया हुआ। क़बूल किया हुआ। स्वीकृति=मंज़ूरी। सम्मति। रज़ामंदी।
स्वेच्छा—(स्त्री० सं०) अपनी इच्छा। अपनी मर्ज़ी। स्वेच्छाचारिता=निरंकुशता। स्वेच्छाचारी=मनमाना काम करनेवाला। निरंकुश।
स्वामी—(पु० सं०) मालिक। प्रभु। घर का प्रधान पुरुष। पति। शौहर। राजा। साधु-संन्यासियों की उपाधि। स्वामिनी = मालकिन। गृहिणी।
स्वार्थ—(पु० सं०) अपना मतलब। —त्याग=किसी भले काम के लिये अपने हित या लाभ का विचार छोड़ना। —परता=ख़ुदग़रज़ी। —परायण=स्वार्थी। ख़ुदग़रज़। —साधक=अपना मतलब साधनेवाला। ख़ुदग़रज़।
स्वादु—(पु० सं०) ज़ायक़ेदार।
स्वाधीन—(वि० सं०) आज़ाद।

स्वतंत्र। मनमाना काम करनेवाला।
—ता=आज़ादी।
स्वाध्याय—(पु० सं०) वेदाध्ययन। अध्ययन।
स्वाभाविक—(वि० सं०) प्राकृतिक। क़ुदरती।
स्वामित्व—(पु० सं०) प्रभुता।
स्वराज्य—(पु० सं०) अपना राज्य।
स्वराष्ट्र—(पु० सं०) अपना राष्ट्र या राज्य।
स्वरूप—(पु० सं०) आकार। शक्ल। (अव्य०) तौर पर। रूप में।
स्वर्ग—(पु० सं०) वैकुंठ। —गामी=मरा हुआ। मृत। स्वर्गीय। —वासी=स्वर्ग में रहनेवाला। जो मर गया हो। मृत। स्वर्गीय=स्वर्ग का। जो मर गया हो। मरहूम।
स्वयं—(अव्य० सं०) ख़ुद। आप। आप से आप। ख़ुद बख़ुद। —वर=कन्या के स्वयं वर चुन लेने की प्राचीन प्रथा। —सेवक=स्काउट।
स्वर—(पु० सं०) कंठ से निकलनेवाला शब्द। वेदपाठ में होनेवाले शब्दों का उतार-चढ़ाव। —भंग=आवाज़ का बैठना।
स्वर्ण—(पु० सं०) सोना। सुवर्ण।
स्वल्प—(वि० सं०) बहुत थोड़ा। बहुत कम।
स्ववश—(वि० सं०) जो अपने वश में हो। जितेंद्रिय।
स्वस्ति—(अव्य० सं०) कल्याण हो। मंगल हो। (स्त्री०) कल्याण। मंगल। सुख। —क=प्राचीनकाल का एक प्रकार का यंत्र। एक प्राचीन मंगल-चिह्न। —वाचन=एक प्रकार का धार्मिक कृत्य।
स्वेच्छासेवक—(पु० सं०) स्वयंसेवक।
स्वेद—(पु० सं०) पसीना।

ह—हिन्दी-वर्णमाला का तेतीसवाँ व्यंजन।

हंगामा—(पु० फ़ा०) उपद्रव। हलचल। शोरगुल।

हंटर—(पु० अं०) लंबा चाबुक। कोड़ा।

हंडा—(पु० हिं०) पीतल या ताँबे का बड़ा बरतन।

हँड़िया—(स्त्री० हिं०) मिट्टी का बड़ा लोटा। हाँडी।

हंस—(पु० सं०) एक जलपक्षी। शुद्ध आत्मा।

हँसना—(क्रि० अ० हिं०) खिलखिलाना। हँसाना=दूसरे को हँसाने में प्रवृत्त करना। हँसी =हास। मज़ाक। दिल्लगी। विनोद। अनादर-सूचक हास। उपहास। बदनामी।

हँसमुख—(वि० हिं०) प्रसन्न-बदन। हास्यप्रिय।

हँसली—(स्त्री० हिं०) छाती के ऊपर की धनुषाकार हड्डी। स्त्रियों का एक गहना।

हँसिया—(पु० हिं०) एक औज़ार।

हक़—(वि० अ०) वाजिब। उचित। स्वत्व। अधिकार। इख़्तियार।—परस्त=ईश्वर-भक्त। सत्य-प्रेमी।—दार=स्वत्व या अधिकार रखनेवाला।—नाहक = ज़बरदस्ती। व्यर्थ। फ़ज़ूल।—मालिकाना =किसी चीज़ या जायदाद के मालिक का हक़।—मौरूसी =वह हक़ जो बाप-दादों से चला आता हो।—शफ़ा= किसी ज़मीन को ख़रीदने का औरों से अधिक हक़ या स्वत्व। हक़ीयत=अधिकार। स्वत्व। हक़ूक़—हक़ का बहु-वचन।

हक़ीक़त—(स्त्री० अ०) सचाई। असलियत। ठीक बात। तथ्य। असल हाल।

हक़ीक़ी—(वि० अ०) खास अपना। सगा। ईश्वरोन्मुख।

हकीम—(पु० अ०) आचार्य।

वैद्य। चिकित्सक। हकीमी=यूनानी आयुर्वेद। हकीम का पेशा या काम।

हक़ीर—(वि० अ०) तुच्छ।

हक्का-बक्का—(वि० अनु०) भौचक। घबराया हुआ।

हज—(पु० अ०) मक्के की तीर्थ-यात्रा।

हज़म—(पु० अ०) पाचन।

हज़रत—(पु० अ०) महात्मा। महापुरुष। महाशय। नटखट या खोटा आदमी।—सलामत—बादशाहों या नवाबों के लिये संबोधन का शब्द। बादशाह।

हज्जाम—(पु० अ०) हजामत बनानेवाला। नाई। हजामत=बाल बनाने का काम। बाल बनाने की मज़दूरी।

हज़ार—(वि० फ़ा०) सहस्त्र। बहुत से। अनेक। दस सौ की संख्या। हज़ारहा=हज़ारों। सहस्त्रों। बहुत से। हज़ारा=फूल जिसमें हज़ार या बहुत अधिक पंखड़ियाँ हों। सहस्त्र-दल। फ़ौवारा। एक प्रकार की आतिशबाज़ी। हज़ारी=एक हज़ार सिपाहियों का सरदार। हज़ारों=सहस्त्रों। बहुत से। अनेक।

हजो—(स्त्री० अ०) निंदा। बुराई।

हटना—(क्रि० अ० हि०) खिसकना। टलना। पीछे सरकना। हटाना=खिसकाना। सरकाना। दूर करना।

हट्टा-कट्टा—(वि० हि०)हृष्ट-पुष्ट। मज़बूत।

हठ—(पु० सं०) टेक। ज़िद। दुराग्रह। दृढ़ प्रतिज्ञा।—धर्मी=दुराग्रह। कट्टरपन।—योग=योग की एक प्रकार की क्रिया जिसमें आसनों का विधान है। हठात्=ज़बरदस्ती से। बलात्। ज़रूर। हठी=ज़िद्दी। टेकी। हठीला=हठी। ज़िद्दी। बात का पक्का।

हड़—(स्त्री० हि०) एक पेड़ और उसका फल।

हड़ताल—(स्त्री०हि०) किसी बात

से असंतोष प्रगट करने के लिये दूकानदारों का दूकान बन्द कर देना या काम करने वालों का काम बन्द कर देना।

हड़प—(वि० अनु०) निगला हुआ। ग़ायब किया हुआ। उड़ाया हुआ। —ना=खा जाना। गायब करना। उड़ा लेना।

हड़फूटन—(स्त्री० हि०) हड्डियों की पीड़ा।

हड़बड़—(स्त्री० अनु०) जल्द-बाज़ी। हड़बड़ाना=जल्दी करना। आतुर होना। हड़बड़िया=जल्दबाज़। उता-वला। हड़बड़ी=जल्दी। घबड़ाहट।

हड्डा—(पु० हि०) भिड़। बर्रें। ततैया।

हड्डी—(स्त्री० हि०) अस्थि।

हतक—(स्त्री० अ०) बेइज़्ज़ती। अप्रतिष्ठा। —इज़्ज़ती=मान-हानि। बेइज़्ज़ती।

हताश—(वि० सं०) निराश। नाउम्मीद।

हताहत—(वि० सं०) मारे गए और घायल।

हतोत्साह—(वि० सं०) ना-उम्मीद।

हत्था—(पु० हि०) दस्ता। मूठ।

हत्थे—(क्रि० हि०) हाथ में।

हत्या—(स्त्री० सं०) वध। खून। झंझट। हत्यारा=हत्या करने वाला। हत्यारी=हत्या करने-वाली। हत्या का पाप।

हथउधार—(पु० हि०) वह क़र्ज़ जो थोड़े दिनों को बिना लिखा-पढ़ी के लिया जाय।

हथकंडा—(पु० हि०) हाथ की सफ़ाई। हस्त-कौशल। गुप्त चाल।

हथकड़ी—(स्त्री० हि०) डोरी से बँधा हुआ लोहे का कड़ा जो क़ैदी के हाथ में पहना दिया जाता है।

हथछुट—(वि० हि०) जिसको मार बैठने की आदत हो।

हथवाँस—(पु० हि०) नाव चलाने के सामान।

हथिनी—(स्त्री० हि०) हाथी की मादा।

हथियाना—(क्रि० हि०) अधिकार में करना। ले लेना। उड़ा लेना। हाथ में पकड़ना।

हथियार—(पु० हि०) औज़ार। अस्त्र-शस्त्र। —बंद=सशस्त्र।

हथेली—(स्त्री० हि०)हाथकीगद्दी। करतल। चरखे का मुठिया।

हथौटी—(स्त्री० हि०) हस्त-कौशल।

हथौड़ा—(पु० हि०) मारतौल। कील ठोंकने, खूँटे गाड़ने आदि का औज़ार। हथौड़ी=छोटा हथौड़ा।

हद—(स्त्री० अ०) सीमा। मर्यादा। —समाअत=वह मुकर्रर वक्त जिसके भीतर अदालत में दावा करना चाहिये। —सियासत=किसी न्यायालय के अधिकार की सीमा।

हदीस—(स्त्री० अ०) मुसलमानों का धर्म-ग्रन्थ।

हनफ़ी—(पु० अ०) मुसलमानों में सुन्नियों का एक संप्रदाय।

हनोज़—(अव्य० फ़ा०) अभी। अभी तक।

हफ़्त—(फ़ा०) सात।

हफ़्ता—(पु० फ़ा०) सप्ताह।

हफ़्ती—(स्त्री० फ़ा०) एक प्रकार की जूती।

हबशी—(पु० फ़ा०) हबश देश का निवासी।

हबाब—(अ०) पानी का बुलबुला।

हब्बा—(अ०) दाना। गोली। रत्ती का वज़न।

हब्बा डब्बा—(पु० हि०) बच्चों की एक बीमारी।

हबीब—(अ०) माशूक़। दोस्त। प्रेमी।

हब्बुल् आस—(पु० अ०) एक प्रकार की मेहँदी।

हब्स—(पु० अ०) कैद। कारावास। —बेजा=अनुचित रीति से बंदी करना।

हम—(सर्व० हि०) "मैं" का बहुवचन। (अव्य० फ़ा०) साथ। संग। समान। तुल्य।

—ज़बान=एक ही भाषा के बोलनेवाले। —पेशा=सम व्यवसायी। —बिस्तर=एक बिस्तरे पर सोना। —असर=वे जिन पर एक ही प्रकार का प्रभाव पड़ा हो। —जिंस=एक ही वर्ग या जाति के प्राणी। —जोली=साथी। संगी। —दम=साथी। मित्र। —दर्द=दुःख का साथी। —दर्दी=सहानुभूति। —निवाला=एक साथ बैठकर भोजन करनेवाले। —हुवानः=तरबूज़। —राह=संग में। हमराही=साथी। —वतन=एक ही प्रदेश के रहनेवाले। देश भाई। —सबक़=सहपाठी। —सर=जोड़ का आदमी। —सरी=बराबरी। —साज़=मित्र। दोस्त। —साया=पड़ोसी।

हमल—(पु० अ०) गर्भ।

हमला—(पु० अ०) चढ़ाई। धावा। आक्रमण। प्रहार।

हमशीरः—(फ़ा०) सगी बहन। (सं०) समक्षीरा।

हमवार—(वि० फ़ा०) समतल।

हमारा—(सर्व० हि०) 'हम' का संबंधकारक रूप।

हमाल—(पु० अ०) बोझ उठानेवाला। कुली।

हमें—(सर्व० हि०) हमको।

हमेल—(स्त्री० अ०) एक गहना।

हमेशा—(अव्य० फ़ा०) सदा। सर्वदा।

हम्माम—(पु० अ०) स्नानागार।

हया—(स्त्री० अ०) लज्जा। शर्म। लाज। —दार=शर्मदार। लज्जाशील। —दारी=लज्जाशीलता।

हयात—(स्त्री० अ०) ज़िंदगी। जीवन।

हर—(वि० सं०) ले लेनेवाला। मारनेवाला। लेजानेवाला। भाजक (गणित)। प्रत्येक। —सू=हर तरफ़।

हरकत—(स्त्री० अ०) गति। चाल। बुरी चाल। नटखटी।

हरकारा—(फ़ा०) ख़बर लानेवाला।

हरगाह—(फ़ा०) जब कभी।

हरगिज़—(अव्य० फ़ा०) कदापि। कभी।

हरचंद—(अव्य० फ़ा०) कितना ही। बहुत बार। यद्यपि। अगरचे।

हरज—(पु० अ०) बाधा। अड़चन। हानि। नुक़सान।

हरजा—(पु० अ०) अड़चन। बाधा। नुक़सान। हरजाना = नुक़सान पूरा करना। हानि के बदले में दिया जानेवाला धन।

हरजाई—(पु० फ़ा०) हर जगह घूमनेवाला। आवारा। (स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री। कुलटा।

हरताल—(स्त्री० हि०) एक खनिज पदार्थ।

हरफ़—(पु० अ०) अक्षर। वर्ण।

हरम—(पु० अ०) ज़नानखाना। —सरा = अन्तःपुर। रनवास।

हरमज़दगी—(स्त्री० फ़ा०) शरारत। नटखटी।

हरा—(वि० हि०) सब्ज़। ताज़ा। कच्चा। घास या पत्ती का सा रंग। हरित वर्ण।

हराना—(क्रि० हि०) परास्त करना। पराजित करना। थकाना।

हराम—(वि० अ०) निषिद्ध। बुरा। अनुचित। वर्जित। बेईमानी। व्यभिचार। —ख़ोर = पाप की कमाई खानेवाला। मुफ़्तखोर। आलसी। —ज़ादा = दोगला। वर्णसंकर। बदमाश। दुष्ट। हरामी = पाजी।

हरारत—(स्त्री० अ०) गर्मी। ताप। हलका ज्वर।

हरास—(पु० फ़ा०) डर। आशंका। खटका।

हरिण—(पु० सं०) मृग। हिरन। हरिणी = मादा हिरन। हरिन = मृग। हरिण। हरिनी = मादा। हिरन।

हरियाली—(स्त्री० हि०) हरा। हरापन।

हरी—(वि॰ हिं॰) सब्ज़ ।
हरीकेन—(पु॰ अं॰) एक प्रकार की लालटेन ।
हरीफ़—(पु॰ अ॰) दुश्मन । शत्रु । विरोधी । प्रतिद्वंद्वी ।
हरोस—(स्त्री॰ हिं॰) हल का एक भाग ।
हरूफ़—(पु॰ अ॰) अक्षर ।
हर्ज—(पु॰ अ॰) बाधा । अड़चन । हानि । नुक़सान ।
हर्द—(अ॰) हलदी ।
हर्बा—(अ॰) लड़ाई का हथियार ।
हर्रा—(पु॰ हिं॰) बड़ी जाति की हड़ ।
हर्सा—(पु॰ हिं॰) हल का लंबा लट्ठा ।
हल्—(पु॰ सं॰) शुद्ध व्यंजन जिसमें स्वर न मिला हो ।
हल—(पु॰ सं॰) एक औज़ार जिससे जमीन जोती जाती है । हिसाब लगाना । किसी कठिन बात का निर्णय । —वाहा=हल जोतने वाला ।
हलकंप—(पु॰ हिं॰) हलचल । आंदोलन । हड़कंप । चारों ओर फैली हुई घबराहट ।
हलक़—(पु॰ अ॰) गले की नली । कंठ ।
हलकना—(क्रि॰ हिं॰) हिलोरें लेना । लहराना । हिलना ।
हलका—(वि॰ हिं॰) जो तौल में भारी न हो । पतला । कम । तुच्छ । निश्चित । घटिया । पानी की हिलोर । लहर ।
हलक़ा—(पु॰ अ॰) मंडल । गोलाई । दल । झुंड । कई गाँवों या कसबों का समूह जो किसी काम के लिये नियत हो ।
हलचल—(स्त्री॰ हिं॰) खलबली । धूम । उपद्रव ।
हलदी—(स्त्री॰हिं॰) एक पौधा ।
हलफ़—(पु॰ अ॰) क़सम । सौगंध । —नामा=शपथ-पत्र ।
हलवा—(पु॰ अ॰) एक प्रकार का मीठा भोजन । मोहनभोग । गीली और मुलायम चीज़ ।

हलवाई=मिठाई बनाने और बेचनेवाला। हलवाइन=हलवाई की स्त्री।

हलाक़—(वि० अ०) मारा हुआ। बध किया हुआ। नष्ट होना। हलाक़त=हत्या। बध। मृत्यु। हलाकू=हलाक करनेवाला।

हलाल—(वि० अ०) जायज़। (पु०) वह जानवर जिसके खाने का निषेध न हो। —ख़ोर=हलाल की कमाई खानेवाला। मेहतर। भंगी। —ख़ोरी=हलालख़ोर की स्त्री। पाखाना उठाने या कूड़ा करकट उठानेवाली स्त्री। हलालखोर का काम। हलालखोर का भाव या धर्म।

हलाहल—(पु० सं०) महाविष।

हलीम—(वि० अ०) सीधा। शांत। एक प्रकार का खाना जो मुहर्रम में बनता है।

हल्ला—(पु० अनु०) शोरगुल। चिल्लाहट।

हवन—(पु० सं०) होम।

हवलदार—(पु० अ०+फ़ा०) फ़ौज़ का एक अफ़सर।

हवस—(स्त्री० अ०) कामना। चाह। तृष्णा।

हवा—(स्त्री० अ०) वायु। पवन। प्रसिद्धि। साख। —दार=जिसमें हवा आती, जाती हो।

हवाल—(पु०अ०) हाल। दशा। परिणाम। समाचार। संवाद।

हवाला—(पु० अ०) प्रमाण का उल्लेख। उदाहरण। मिसाल। ज़िम्मेदारी। सुपुर्दगी।

हवालात—(पु० अ०) नज़रबंदी। हाजत। क़ैद।

हवास—(पु० अ०) इंद्रियाँ। चेतना।

हवि—(पु० हि०) हवन की वस्तु।

हवेली—(स्त्री० अ०) पक्का बड़ा मकान।

हशमत—(स्त्री० अ०) गौरव। बड़ाई। वैभव। ऐश्वर्य।

हसद—(पु० अ०) ईर्ष्या। डाह।

हसब—(अव्य० अ०) अनुसार। मुताबिक़।

हसरत—(स्त्री० अ०) रंज। अफ़सोस। शोक।

हसीन—(वि० अ०) सुंदर। खूबसूरत।

हस्त—(स०) हाथ।—कौशल= हाथ की सफ़ाई। —क्षेप= किसी काम में हाथ डालना। दख़ल देना। —गत=प्राप्त। हासिल। हाथ में आया हुआ। —रेखा=हथेली में पड़ी हुई रेखायें।—लिखित=हाथ का लिखा हुआ। —लिपि= हाथ की लिखावट। लेख। हस्ताक्षर=दस्तख़त। हस्ते= हाथ से। मारफ़त।

हाँ—(अव्य० हि०) स्वीकृति-सूचक शब्द। सम्मति-सूचक शब्द।

हाँक—(स्त्री० हि०) किसी को बुलाने के लिये ज़ोर की पुकार। ललकार।

हाँकना—(क्रि० हि०) बढ़-बढ़कर बोलना। जानवरों को चलाना। गाड़ी चलाना। चौपायों को किसी स्थान से हटाना। पंखा हिलाना।

हाँड़ी—(पु० हि०) मिट्टी का मझोला बरतन। हँड़िया।

हाँफना—(क्रि० अनु०) तीव्र श्वास लेना।

हाँ, हाँ—(अव्य० हि०) रोकने का शब्द। स्वीकृति-सूचक शब्द।

हा—(अव्य० सं०) शोक, भय, आश्चर्य या आह्लाद- सूचक शब्द।

हाइड्रोसील—(पु० अं०) अंड-वृद्धि। फोते का बढ़ना।

हाइफ़न—(पु० अं०) एक चिह्न।

हाई—(अं०) ऊँचा। बड़ा। —कोर्ट=सबसे बड़ा न्याया-लय। —स्कूल=अंगरेज़ी की बड़ी पाठशाला।

हाइड्रोफोबिया—(पु० अं०) शरीर के भीतर एक प्रकार को व्याधि। जलातंक रोग।

हाउस—(पु० अं०) घर। मकान। बड़ी दूकान। सभा। मंडली। —आफ कामन्स=

इंगलैंड की कामन्स सभा। —आफ़ लार्ड्स = इंगलैंड की लार्ड सभा। —बोट = पानी पर रहने के लिये लकड़ी का तैरता हुआ मकान। —टैक्स = मकान का वार्षिक कर।

हाकिम—(पु० अ०) हुकूमत करनेवाला। शासक। हाकिमी = हुकूमत। शासन।

हॉकी—(पु० अं०) एक खेल।

हाजत—(स्त्री० अ०) ज़रूरत। आवश्यकता।

हाज़मा—(पु० अ०) पाचन-क्रिया। पाचन-शक्ति।

हाज़िम—(वि० अ०) भोजन पचानेवाला। पाचक।

हाज़िर—(वि० अ०) मौजूद। विद्यमान। प्रस्तुत। तैयार —जवाब = उत्तर देने में निपुण। —जवाबी = चट-पट उत्तर देने की निपुणता। —बाश = सामने मौजूद रहने-वाला। बराबर सेवा में रहने-वाला। —बाशी = खुशामद।

हाजी—(पु० अ०) वह जो हज कर आया हो।

हाता—(पु० अ०) घेरा हुआ स्थान। बाड़ा। प्रांत। हद।

हातिम—(पु० अ०) चतुर। कुशल। उस्ताद। अत्यंत उदार मनुष्य।

हाथ—(पु० हि०) कर। हस्त। बाहु से लेकर पंजे तक का अंग।

हाथा—(पु० हि०) दस्ता। एक औज़ार। —पाई = मुठभेड़। ऐसी लड़ाई जिसमें हाथ-पैर चलाए जायँ।

हाथी—(पु० हि०) एक जंतु। गज। —खाना = फ़ीलखाना। —पाँव = एक रोग। —वान = फ़ीलवान। महावत।

हादसा—(पु० अ०) बुरी घटना। दुर्घटना।

हादी—(अ०) हिदायत करने-वाला। मार्ग-दर्शक।

हानि—(स्त्री० सं०) नाश। क्षय। नुक़सान। घाटा। टोटा।

अनिष्ट । —कर=हानि करने वाला । अनिष्ट करनेवाला ।
हाफ़िज़—(पु० अ०) वह धार्मिक मुसलमान जिसे कुरान कंठ हो । हाफ़िज़ा=स्मरण-शक्ति ।
हामी—(स्त्री० हि०) स्वीकृति । स्वीकार ।
हाय—(प्रत्य० हि०) आह । शोक । कष्ट और पीड़ा सूचित करनेवाला शब्द । —हाय= शोक दुःख या शारीरिक कष्ट-सूचक शब्द ।
हार—(स्त्री० हि०) पराजय । शिकस्त । सोने चाँदी या मोतियों आदि की माला ।—ना=पराजित होना । शिकस्त खाना । मुक़दमा न जीतना । थक जाना । असमर्थ होना । खोना । गँवाना । वचन देना ।
हार्दिक—(वि० सं०) हृदय संबंधी । हृदय से निकला हुआ । सच्चा ।
हाल—(पु० अ०) दशा । परिस्थिति । समाचार । अभी । शीघ्र । (अं०) बहुत बड़ा कमरा ।
हालत—(स्त्री० अ०) दशा । आर्थिक दशा ।
हालाँकि—(अव्य० फ़ा०) यद्यपि । गो कि ।
हालिक—(अ०) नष्ट करनेवाला ।
हाला—(अव्य० अ०) जल्दी । शीघ्र ।
हाल्ट—(पु० अं०) दल या सेना का चलते हुए ठहर जाना । ठहराव ।
हाव—(पु० सं०) संयोग समय में नायिका की स्वाभाविक चेष्टायें । —भाव=नाज़ नख़रा ।
हाशिया—(पु० अ०) कोट । गोट । मगजी । हाशिए या किनारे पर का लेख । नोट ।
हासिद—(वि० अ०) ईर्ष्यालु ।
हासिल—(वि० अ०) प्राप्त । पैदावार । गणित की क्रिया का फल । जमा । लगान । वसूली ।
हास्य—(पु० सं०) हँसी । नौ

रसों में एक। दिल्लगी। मज़ाक। हास्यास्पद = उपहास के योग्य। हास्योत्पादक-हँसी उत्पन्न करने वाला। उपहास के योग्य।

हाहाकार—(पु० सं०) कुहराम।

हिंडोला—(पु० हि०) पालना। झूला।

हिंद—(पु० फ़ा०) हिंदोस्तान। भारतवर्ष।

हिंदवाना—(पु० फ़ा०) तरबूज़।

हिंदवी—(स्त्री० फ़ा०) हिंद या हिंदोस्तान की भाषा। पुरानी हिंदी-भाषा।

हिंदी—(वि० फ़ा०) हिंदुस्तान का। भारतीय। हिंदुस्तान की भाषा।

हिंदुस्तान—(पु० फ़ा०) भारतवर्ष। भारतवर्ष का उत्तरीय मध्य भाग। युक्तप्रान्त। हिंदुस्तानी = हिंदुस्तान का। हिंदुस्तान संबंधी। भारत वासी। हिंदुस्तान की भाषा।

हिंदुस्थान—(पु० हि०) हिंदुस्तान। भारतवर्ष।

हिंदू—(पु० फ़ा०) भारतीय आर्य्य-धर्म का अनुयायी।

हिंसक—(पु० सं०) हत्यारा। घातक।

हिंसा—(स्त्री० सं०) जीवों को मारना या सताना। हानि पहुँचाना। —कर्म = मारने या सताने का काम। हिंसात्मक = जिसमें हिंसा हो।

हिंस्र—(वि० सं०) हिंसा करने-वाला। ख़ूँख़ार।

हिआव—(पु० हि०) साहस। हिम्मत। दिलासा।

हिक्मत—(स्त्री० अ०) विद्या। कला-कौशल। उपाय। चाल। पालिसी। हकीमी। वैद्यक। हिकमती = उपाय सोचने-वाला। चतुर। चालाक।

हिकायत—(स्त्री० अ०) कथा। कहानी।

हिक्का—(स्त्री० सं०) हिचकी। शब्द जो रुक-रुककर आवे।

हिचकी—(स्त्री० अनु०) पेट की वायु का कंठ में धक्का देते

हुए निकलना । रह-रहकर सिसकने का शब्द ।

हिजरत—(अ०) देश-त्याग । छोड़ना ।

हिजरी—(पु० अ०) मुसलमानी सन् या संवत् ।

हिज़ एक्सेलेंसी—(पु० अं०) वायसराय की प्रतिष्ठा-सूचक उपाधि । हिज़ मैजेस्टी=बादशाह की एक उपाधि । हिज़ रायल हाइनेस=युवराजों तथा राजपरिवारों के व्यक्तियों के नाम के आगे लगने वाली गौरव-सूचक उपाधि । हिज़ हाइनेस=राजा महाराजों के नाम के आगे लगनेवाली एक उपाधि । हिज़ होलीनेस=पोप तथा ईसाई मत के प्रधान आचार्यों के नाम के आगे लगनेवाली एक उपाधि ।

हिजाब—(पु० अ०) परदा । शर्म ।

हिजो—(अ०) बुराई करना ।

हिज्र—(अ०) जुदाई । बिछोह ।

हिज्जे—(पु० अ०) किसी शब्द में आये हुए अक्षरों को मात्रा सहित कहना ।

हित—(वि० सं०) उपकारी । फ़ायदेमंद । अनुकूल । मुवाफ़िक । ख़ैरख़्वाह । लाभ । फ़ायदा । मंगल । कल्याण । भलाई । अनुकूलता । तंदुरुस्ती को फ़ायदा । प्रेम । अनुराग । —कर, कारी, कारक, कर्त्ता=भलाई करनेवाला । फ़ायदेमंद । उपयोगी । स्वास्थ्यकर ।—चिंतक=भला चाहनेवाला । ख़ैरख़ाह । हिताहित=भलाई बुराई । लाभ हानि । उपकार और अपकार । हितू=ख़ैरख़ाह । दोस्त । संबंधी । रिश्तेदार । सुहृद । स्नेही । हितेच्छु=भला चाहनेवाला । ख़ैरख़ाह । हितैषी=भला चाहनेवाला । मित्र । हितोपदेश = भलाई का उपदेश । नेक सलाह ।

हिदायत—(स्त्री० अ०) रास्ता दिखाना । आदेश ।

हिनहिनाना—(क्रि० अनु०) घोड़े

का बोलना । हींसना । हिन-हिनाहट = घोड़े की बोली ।

हिना—(स्त्री० अ०) मेंहदी ।

हिपोक्रिट—(पु० अं०) कपटी । पाखंडी । हिपोक्रिसी = छल ।

हिफ़ाज़त—(स्त्री० अ०) रक्षा । बचाव । देखरेख ।

हिब्बा—(पु० अ०) दाना । दो जौ की एक तौल । दान । हिब्बानामा = दानपत्र ।

हिम—(पु० सं०) पाला । बर्फ़ ।

हिमाक़त—(स्त्री० अ०) बेवकूफ़ी । मूर्खता ।

हिमामदस्ता—(पु० फ़ा०) खरल और बट्टा ।

हिमायत—(स्त्री० अ०) पक्षपात । समर्थन । मंडन । हिमायती = तरफ़दारी ।

हिमालय—(पु० सं०) भारतवर्ष का संसार के सब पहाड़ों से ऊँचा पहाड़ ।

हिम्मत—(स्त्री० अ०) साहस । बहादुरी । पराक्रम । हिम्मती = साहसी । दृढ़ । बहादुर ।

हियाव—(पु० हि०) साहस ।

हिरन—(पु० हि०) हरिन । मृग ।

हिरफ़त—(स्त्री० अ०) पेशा । व्यापार । दस्तकारी । हुनर । कला-कौशल । —बाज़ = चालबाज़ । धूर्त्त ।

हिरमज़ी—(स्त्री० अ०) लाल रंग की एक प्रकार की मिट्टी ।

हिराना—(क्रि० हि०) खो जाना । ग़ायब होना । अभाव होना । न रह जाना । मिटना । भूल जाना ।

हिरास—(स्त्री० फ़ा०) भय । खेद । नाउम्मेदी ।

हिरासत—(स्त्री० अ०) पहरा । चौकी । क़ैद । नज़रबंदी ।

हिरासाँ—(वि० फ़ा०) निराश । नाउम्मेद । हिम्मत हारा हुआ ।

हिर्स—(स्त्री० अ०) लालच । लोभ ।

हिलकोर, हिलकोरा—(पु० हि०) हिलोर । लहर । तरंग ।

हिलना—(क्रि० हि०) डोलना । हरकत करना ।

हिलाना—(क्रि० हि०) चलायमान करना ।

हिलाल—(अ०) दूज का चाँद ।

हिस—(पु० अ०) होश। चेतना।

हिसाब—(पु० अ०) गिनती। गणित। लेखा। भाव। दर। नियम। मेल। —किताब= आमदनी, खर्च आदि का ब्यौरा। ढंग। क़ायदा। —बही=वह पुस्तक जिसमें आयव्यय या लेन देन का ब्यौरा लिखा जाता हो।

हिसार—(अ०) क़िला। गढ़ी।

हिस्सा—(पु० अ०) भाग। अंश। खंड। टुकड़ा। साझा। शिरकत। —दार=साझेदार। रोज़गार में शरीक।

हिस्टीरिया—(पु० अं०) मूर्च्छा रोग।

हींग—(स्त्री० हि०) एक पौधा और उसका जमाया हुआ दूध या गोंद।

हींसना—(क्रि० हि०) घोड़े का बोलना। हिनहिनाना। गदहे का बोलना। रेंकना।

ही—(अव्य० हि०) निश्चय, अनन्यता, अल्पता, परिमिति तथा स्वीकृति सूचक एक अव्यय।

हीक—(स्त्री० हि०) हिचकी। हलकी अरुचिकर गंध।

हीन—(वि० सं०) छोड़ा हुआ। वंचित। नीचे दर्जे का। घटिया। ओछा। ख़राब। तुच्छ। कम।

हीन-हयात—(पु० अ०) जीवन भर।

हीर—(पु० हि०) सार। सत। शक्ति। मल।

हीरा—(पु० हि०) एक रत्न। बहुत ही अच्छा आदमी।

हीरा कसीस—(पु० हि०) लोहे का वह विकार जो गंधक के रासायनिक योग से होता है।

हीला—(पु० अं०) बहाना। मिस।

हुँकारी—(स्त्री० अनु०) स्वीकृति-सूचक शब्द।

हुंडावन—(स्त्री० हि०) हुंडी की दर। हुंडी की दस्तूरी।

हुंडी—(स्त्री० सं०) लोटपत्र। चेक। उधार रुपया देने की एक रीति। —बही=वह किताब या बही जिसमें सब तरह की हुंडियों की नक़ल रहती है।

हुक—(पु० अं०) कँटिया। अँकुसी। नाव में वह लकड़ी जिसमें डाँड़े को ठहरा या फँसाकर चलाते हैं।

हुकना—(क्रि० देश०) वार या निशाना चूकना।

हुकूमत—(स्त्री० अ०) शासन। अधिकार।

हुक़ा—(पु० अ०) गड़गड़ा। फ़रशी। —पानी=आने-जाने और खाने-पीने आदि का सामाजिक व्यवहार।

हुक्काम—(पु० अ०) हाकिम लोग। बड़े अफ़सर।

हुक्म—(पु० अ०) आज्ञा। आदेश। इजाज़त। शासन। अधिकार। ताश का एक रंग। —नामा = आज्ञा-पत्र। —बरदार=आज्ञाकारी। सेवक। —बरदारी=आज्ञा-पालन। सेवा। हुक्मी=अचूक। अव्यर्थ। ज़रूरी। लाज़िमी।

हुचकी—(स्त्री० हि०) हिचकी।

हुजरा—(पु० अ०) कोठरी।

हुजूम—(पु० अ०) भीड़। जमावड़ा।

हुज़ूर—(पु० अ०) समक्षता। बहुत बड़े लोगों के संबोधन का शब्द।

हुज्जत—(स्त्री० अ०) व्यर्थ का तर्क। फ़ज़ूल की दलील। झगड़ा। तकरार। हुज्जती=झगड़ालू।

हुड़दंगा—(हि०) उपद्रव। उत्पात।

हुदहुद—(पु० अ०) एक प्रकार की चिड़िया।

हुनर—(पु० फ़ा०) कला। कारीगरी। गुण। कौशल। चतुराई। —मंद=कला-कुशल।

निपुण। —मंदी=निपुणता।

हुब्ब—(अ०) ख़ुशी। प्रेम। प्यार। हुब्बेवतन=देश-प्रेम।

हुमा—(स्त्री० फ़ा०) एक कल्पित पत्ती।

हुरमत—(स्त्री० अ०) इज़्ज़त। मान। मर्य्यादा।

हुलिया—(पु० अ०) शकल। रूप रंग। किसी मनुष्य के रूप रंग का ब्योरा।

हुल्लड़—(पु० अनु०) शोरगुल। कोलाहल। उपद्रव। ऊधम। हलचल। दंगा।

हुश्—(अव्य० अनु०) एक निषेधवाचक शब्द।

हुस्न—(पु० अ०) सौंदर्य्य। सुन्दरता। ख़ूबी। उत्कर्ष। —परस्त=सौंदर्योपासक। सुन्दर रूप का प्रेमी। —परस्ती =सौंदर्योपासना।

हूँ—(अव्य० अनु०) स्वीकार-सूचक शब्द।

हूक—(स्त्री० हि०) हृदय की पीड़ा।

हूण—(पु० देश०) एक प्राचीन मंगोल जाति।

हूबहू—(वि० अ०) ज्यों का त्यों। ठीक वैसा ही।

हूर—(अ०) परी। स्याह आँख और काले बालवाली स्त्री।

हूल—(स्त्री० हि०) भाले, छुरे आदि भोंकने की क्रिया। लासा लगाकर चिड़िया फँसाने का बाँस। —ना= गड़ाना।

हूश—(वि० हि०) असभ्य। जंगली। अशिष्ट। बेहूदा।

हृत्कंप—(पु० सं०) हृदय की कँपकँपी। हृदय की धड़कन। अत्यंत भय। दहशत।

हृत्पिंड—(पु० सं०) हृदय का कोश या थैली।

हृदय—(पु० सं०) दिल। छाती। वक्षस्थल। मन। अंतःकरण। हृदयंगम=मन में आया हुआ। समझ में आया हुआ। —विदारक=अत्यंत शोक या करुणा उत्पन्न करनेवाला। —वेधी=अत्यंत शोक उत्पन्न

करनेवाला। बहुत बुरा लगनेवाला। —स्पर्शी= हृदय पर प्रभाव डालनेवाला। जिससे मन में दया हो। —हारी=मन मोहनेवाला।

हृष्ट—(वि० सं०) अत्यंत प्रसन्न। आनंदयुक्त। —पुष्ट=मोटा-ताज़ा। तैयार। तगड़ा।

हेंहें—(पु० अनु०) धीरे से हँसने का शब्द। दीनता-सूचक शब्द।

हेंगा—(पु० हि०) पाटा। पटेला।

हे—(अव्य० सं०) संबोधन का शब्द।

हेकड़—(वि० हि०) हृष्ट-पुष्ट। मज़बूत। ज़बर्दस्त। बली। उजड्ड। हेकड़ी=अक्खड़पन। ज़बरदस्ती।

हेच—(वि० फ़ा०) तुच्छ। नाचीज़। निःसार।

हेड—(अं०) सिर। प्रधान। —आफ़िस=प्रधान कार्यालय। —कार्टर = सदर मुकाम। —मास्टर=प्रधानाध्यापक। हेडेक=सिर-दर्द। हेडिंग=शीर्षक।

हेतु—(पु० सं०) अभिप्राय। उद्देश्य। कारण। वजह।

हेमंत—(पु० सं०) जाड़े का मौसम। शीतकाल।

हेर-फेर—(पु० हि०) घुमाव। चक्कर। चाल। अदल-बदल। अदला-बदला। हेराफेरी= हाथ की सफ़ाई। चालाकी। अदल-बदल।

हेल मेल—(पु० हि०) मित्रता। घनिष्ठता। सुहबत। परिचय।

हेल्थ—(पु० अं०) स्वास्थ्य। तंदुरुस्ती। हेल्दी=तंदुरुस्त।

हैं—(अव्य०) एक आश्चर्य, निषेध या असम्मति सूचक शब्द। "है" का बहुवचन।

हैंगिंग लैंप—(पु० अं०) छत में लटकाने का लैंप।

हैंड—(अ०) हाथ। —बैग= चमड़े का एक छोटा बक्स जिसे सफ़र में हाथ में रखते हैं। हैंडी=हलका, जो हाथ में आसानी से उठाया जा सके।

—बिल = विज्ञापन।—राइ-टिंग = हस्ताक्षर। हैंडिल = मुठिया। दस्ता।
हैज़ा—(पु० अ०) विशूचिका।
हैफ़—(अव्य० अ०) अफ़सोस। हाय। हा।
हैबत—(स्त्री० अ०) भय। त्रास। दहशत। —नाक = भयानक। डरावना।
हैरत—(स्त्री० अ०) आश्चर्य। अचरज।
हैरान—(वि० अ०) चकित। दंग। परेशान। व्यग्र।
हैवान—(पु० अ०) पशु। जानवर। गँवार या बेवक़ूफ़ आदमी। उजड्ड आदमी।
हैवानी—(वि० अ०) पशु का। पशु के करने योग्य।
हैसियत—(स्त्री० अ०) योग्यता। सामर्थ्य। आर्थिक दशा। श्रेणी। प्रतिष्ठा। धन। जायदाद।
है है—(अव्य०) हाय। अफ़सोस।
होंठ—(पु० हि०) ओष्ठ।
हो—(क्रि०) सत्तार्थक क्रिया।
होटल—(पु० अं०) वह स्थान जहाँ मूल्य लेकर लोगों के भोजन और ठहरने का प्रबंध रहता है। निवास।
होड़—(स्त्री० हि०) शर्त। बाज़ी।
होनहार—(वि० हि०) जो होने-वाला है। भावी। अच्छे लक्षणों वाला।
होना—(क्रि० अ०) अस्तित्व रखना। उपस्थित या मौजूद रहना। सूरत या हालत बदलना। किया जाना। बनना। बीतना। होनी = हो सकनेवाली बात।
होम—(पु० सं०) यज्ञ। (अं०) घर। —डिपार्टमेंट = स्वराष्ट्र विभाग। —मिनिस्टर = स्वराष्ट्र मंत्री। —मेम्बर = स्वराष्ट्र सचिव। —सेक्रेटरी = स्वराष्ट्र सचिव।
होमियोपैथी—(स्त्री० अं०) रोग निवारण की एक पद्धति। होमियोपैथिक = होमियोपैथी नामक चिकित्सा पद्धति के अनुसार।

होरसा—(पु० हि०) चंदन घिसने का पत्थर का चौका।

होरा—(स्त्री० सं०) आग में भूनी हुई हरे चने या मटर की फलियाँ। चने का हरा दाना।

होलिका—(स्त्री० सं०) होली का त्यौहार।

होल—(अं०) कुल। सब।

होलडाल—(अं०) बिस्तरबंद।

होलसेल—(अं०) थोक खरीद या बिक्री।

होली—(स्त्री० हि०) हिंदुओं का एक बड़ा त्यौहार। एक प्रकार का गीत।

होल्डर—(पु० अं०) अँगरेज़ी क़लम।

होश—(पु० फ़ा०) चेतना। चेत। बुद्धि। समझना। —मंद=समझदार। बुद्धिमान्। होशियार=चतुर। समझदार। निपुण। कुशल। सचेत। खबरदार। सयाना। चालाक। धूर्त्त। होशियारी=समझदारी। सावधानी।

होस्टेल—(पु० अं०) छात्रावास।

हौआ—(पु० अनु०) हाऊ। लड़कों को डराने के लिये एक कल्पित भयानक वस्तु का नाम।

हौज़—(पु० अ०) पानी जमा रखने का चहबच्चा। कुंड। नाँद।

हौद—(पु० अ०) कुण्ड। नाँद।

हौदा—(पु० फ़ा०) हाथी की पीठ पर कसा जानेवाला आसन।

हौल—(पु० अ०) डर। भय। दिल—दिल की धड़कन। डरा हुआ। व्याकुल। भया-—नाक=डरावना। भयानक।

हौली—(स्त्री० हि०) वह स्थान जहाँ शराब उतरती और बिकती है।

हौवा—(स्त्री० अ०) पैग़ांबरी मतों के अनुसार सबसे पहली स्त्री। हौआ।

हौस—(स्त्री० अ०) चाह। लालसा। उत्साह।

हौसला—(पु० अ०) उत्कंठा। लालसा। उत्साह। उमंग। —मंद = लालसा रखनेवाला। उमंगवाला। साहसी।

ह्रस्व—(वि० सं०) छोटा। एक मात्रा का स्वर।

ह्रास—(पु० सं०) कमी। अवनति। घटती।

ह्विप—(पु० अं०) दल-दूत। चाबुक।

ह्विस्की—(स्त्री० अं०) एक प्रकार की अँगरेज़ी शराब।

ह्वेल—(पु० अं०) एक बहुत बड़ा समुद्री जंतु।

परिशिष्ट १

देहात के कुछ शब्द, जिनके पर्यायवाची शब्द हिन्दी या हिन्दुस्तानी में प्रचलित नहीं हैं, पर हिन्दी भाषा में जिनकी आवश्यकता है, इस कोष में पहले आचुके हैं। कुछ यहाँ दिये जाते हैं।

अँकड़ौर=कंकड़ी।

अँकरा, अँकरी=गेहूँ के खेत में होनेवाली एक घास।

अँकवार=खेत में काटा हुआ मय डंठल के उतना अनाज जो एक बार दोनों बाहुओं के बीच उठाया जा सके।

अँकुसी=हुक।

अँखुआ=अंकुर।

अँगऊँ=देवता को चढ़ाने के लिये जो धन या अन्न अलग निकालकर रख दिया जाता है, वह अँगऊँ कहलाता है।

अँगेरी=ऊख का ऊपरी हिस्सा।

अँधियारी=जानवरों की आँख पर बाँधने की पट्टी।

अगवड़=पेशगी।

अगवार=मकान के आगे का हिस्सा। खेत काटनेवाले मजूरों का एक हक़।

अगवारी=हल के फाल में लगा हुआ लकड़ी का टुकड़ा।

अगाड़ी=घोड़े के गले की रस्सी।

अगिया=चावल के खेत में उगने वाली एक घास।

अढ़िया=कठौता।

अरदावा=चना और जौ मिलाकर दला हुआ जो घोड़ों को दिया जाता है।

अहकना=तरसना।

अहारना=लकड़ी चीरना।

आँखा=अंकुर।

आँखि=गन्ने में वह स्थान जहाँ से अंकुर फूटता है।

आँठा=ठोस जमे हुए दही का टुकड़ा।
इँदारा=पक्का कुँआ।
इनरी=नई ब्याई हुई गाय या भैंस का उबाला हुआ दूध, जो जम जाता है।
उखारना=जड़ सहित उखाड़ लेना।
उचास=वह ज़मीन जो आस-पास की सतह से ऊँची हो।
उसना=चावल, जिसकी भूसी पानी में उबालकर निकाली गई हो।
एक्का, इक्की=दो पहियों की गाड़ी जिसे एक घोड़ा या एक बैल खींचता है।
ऐपन=हलदी, दही आदि पदार्थों का मिश्रण, धार्मिक संस्कारों में जिससे तिलक किया जाता है।
ओटना=रुई से बिनौले निकालना।
ओटा=चबूतरा।
ओनचन=चारपाई कड़ी करने की रस्सी।
ओरदावन=चारपाई कड़ी करने की रस्सी।
ओलती=ओरी।
ओसौनी=डंठल से अन्न अलग करते समय ओसाने की मजूरी।
कइन=बाँस की पतली टहनी।
ककरेजा=बैंगनी।
कड़ाह=जिसमें ईख का रस पकाते हैं।
कचारना, कछारना=पटक-पटक कर धोना। पैर से कपड़ा धोना।
कछाँड़=स्त्रियाँ पुरुषों की तरह धोती चढ़ा लेती हैं, उसे कछाँड़ कहते हैं।
कजरौटा=काजल रखने का लोहे का पात्र।
कटनी=खेत काटने की फ़सल।
कठरा=जौहरी या सोनार की दूकान की धूल धोने का कठौता।
कठोलो=काठ की थाली।
कत्ता=बाँस काटने का औज़ार।
कनकुत्ती=अन्दाज़।

कनियाँ=गोद। कंधा।

कन्हेला, कन्हेली=वह गठरी, जो कंधे से बाँधकर पीठ पर लटका ली जाती है।

कम्पा=वह चीज़ जिस पर लासा लगाकर बहेलिये चिड़ियाँ फँसाते हैं।

करछालना=कूदना।

करछुल=बटलोई में से दाल निकालने का बड़ा चम्मच।

करसी=उपले का चूरा।

कराहिया=वह ब्राह्मण जिसकी बनाई हुई पूरी बहुत से ब्राह्मण खाते हैं।

करा=कड़ा।

करेर=मज़बूत।

करोत=आरा।

करोना=खुरचना।

करोनी=दूध गरम करने पर बर्तन की पेंदी में जो दूध का जला हुआ भाग चिपका रहता है उसे करोनी कहते हैं।

काज=बटन का घर।

कामो=सुनार का एक औज़ार जिसमें सोना-चाँदी गलाकर ढाला जाता है।

किर्रा=मशीन का दाँत।

कुँड़मुन्दन=बोआई खतम हो जाने पर की एक रस्म।

कुचरा, कूँचा=झाड़ू।

कुढ़ा=हल का वह हिस्सा जो हलवाहे के हाथ में रहता है।

कुदार=मिट्टी खोदने का एक औज़ार।

कुमहौंटी=वह मिट्टी जिसे कुम्हार काम में लाता है।

कूँची=झाड़ू।

कूत=अन्दाज़।

कूतना=कीमत लगाना।

कूरा, कूरी=राशि। (Heap)

कूला=क्यारी।

केतारा=गन्ना।

कोंचना=चोंकना। (Prick)

कोठिला, कोठिली=मिट्टी का घर जिसमें अनाज रखते हैं।

कोठी=बखार।

कोंढ़ा=कुञ्जी। हुक।

कौंढ़ी=फल का बतिया।

कोंछ=आँचल। गोद।

कोरई=बाँस के टुकड़े, जो छप्पर में लगते हैं।
कोल्हुआर=वह घर जहाँ ईख पेरी और गुड़ पकाया जाता है।
कौवाना=सोते समय बड़बड़ाना।
खड़बीहड़=खुरदरा। ऊँचा-नीचा।
खपरी=घड़ा या हाँड़ी का पेंदा, जिसमें चना-चबेना भूनते हैं।
खपटा=टूटा हुआ खपड़ा।
खपीच=बाँस का छोटा चिरा हुआ टुकड़ा।
खर=सरपत, जिससे छप्पर छाया जाता है।
खरिका=दाँत साफ करने का तिनका।
खरिहक, खरिहग=फ़सल के अन्त में हलवाहों को जो नाज दिया जाता है।
खलँगा=बैठका।
खाँची, खँचिया=अरहर के डंठल का बना हुआ जालीदार टोकरा, जिसमें घास और भूसा ढोते हैं।
खींचना=कपड़े धोना।
खुरपी=घास छीलने का हथियार।
खुरपियाना=खुरपी से खेत में से घास निकालना।
खूँथ=कटे हुए पेड़ के तने का हिस्सा, जो जड़ से लगा हो।
खूनना=कूटना। कुचलना।
खेड़ा=गाँव के पास की ज़मीन।
खेवा=नाव से नदी को पार करना।
खैनी=तम्बाकू।
खोइया=रस निकाल लेने पर ईख का बचा हुआ डंठल।
खोंच=किसी नोकदार चीज़ की चोट।
खोंचा=लंबा पतला बाँस, जिसकी नोक पर कोई लसदार चीज़ लगाकर बहेलिये चिड़ियाँ फँसाते हैं।
खोंप=कोना। पिछवाड़ा।
खोभार=वह घर जिसमें सूअर रहते हैं।
खौरा=कुत्ते, भेंड़ आदि का रोग, जिसमें बाल झड़ जाते हैं।
गँठिया=बोरा।

गँडुरी=घास की गोल रस्सी, जिसपर घड़ा रक्खा जाता है।
गँड़ास=गँड़ासी। पशुओं के लिये चारा काटने का औज़ार।
गजवाँक=अंकुश।
गद्दर=आधा पका।
गरू=भारी (गुरु)
गहेंड़=भेड़ों का झुण्ड जिसमें सौ से अधिक भेड़ें हों।
गाटा=जमीन का टुकड़ा।
गाड़=गड्ढा, जिसमें किसान लोग अनाज रखते हैं।
गाड़ा=खाद आदि ढोने की छोटी गाड़ी।
गाढ़=संकट।
गाढ़ा=ठोस। मोटा।
गाभा=अंकुर।
गींजना=सानना।
गुइयाँ=सखी। सहेली।
गुड़म्बा=उबाले हुये आम और गुड़ के योग से बना हुआ। शीरा, जो खाया जाता है।
गुँथना=पिरोना।
गुनरी, गुँदरी=चटाई।
गुनियाँ=कोना ठीक करने का औज़ार।
गुरगी=छोटी लड़की।
गुराँव=खलियान।
गुहरी=उपली।
गेंड़ा=बीज के लिये काटा हुआ गन्ने का टुकड़ा।
गेंड़ी=ईख का लगभग १ इंच लम्बा टुकड़ा।
गेंडुआ, गेंडूली=घास-फूस की बनी हुई गोल अँगूठी जिसे स्त्रियाँ सिर पर पानी से भरे हुए घड़े के नीचे रखती हैं।
गोइंठा=कण्डा।
गोजी=लाठी।
गोनरी=घास की चटाई।
गोरसो=दूध रखने का बरतन।
गोला=घर, जिसमें गल्ला जमा रहता है।
गोलौर=गुड़ पकाने का घर।
घँघोरना=द्रव पदार्थ को हाथ से मिलाकर खराब कर देना।
घड़िया, घरिया=जिसमें सुनार सोना-चाँदी गलाता है।

घटिहा=ठग। धोखा देनेवाला।
घरनई, घन्नई=घड़ों की नाव।
घुघुरी, घुँगनी=उबाला हुआ नाज।
घैला=छोटा घड़ा।
घोघी=कम्बल या दूसरे ओढ़ने का एक सिरा एक खास क़िस्म से मोड़कर सिर पर डाल लिया जाता है जिससे बरसात और धूप से बचाव होता है, उसे घोघी कहते हैं।
चकरा=जिस पर गरम गुड़ फैलाया जाता है।
चकवड़=बरसात का एक पौदा, जिसकी पत्तियाँ देखकर देहात के लोग सूर्यास्त और सूर्योदय का पता लगाते हैं।
चगड़=धूर्त।
चटक=तेज रंग।
चटकना=गरजना। पतली दरारें पड़ जाना। थप्पड़।
चफइल=फैला हुआ।
चमकी=छोटा चाबुक।
चमौटी=मोटे चमड़े का टुकड़ा जिस पर नाई छुरे की धार ठीक करता है।
चरखी=कुएँ से पानी निकालने का यंत्र।
चरन, चरनो=बैलों के खाने की जगह।
चरफर=फुर्त। तेज़।
चरुआ, चरुई=मिट्टी का छोटा घड़ा।
चहबच्चा=छोटा पक्का कुंड।
चहेटना=खदेड़ना।
चहला=कीचड़।
चहँटा=कीचड़।
चाईं=उठाईगीर।
चाईंचूईं=सिर का एक रोग जो प्रायः लड़कों को होता है।
चातर=वह जाल जो चिड़ियाँ फँसाने के लिये रात में लगाया जाता है।
चापर=बरबाद। नष्ट। चौपट।
चिञा=इमली का बीज।
चिकनिया=छैला।
चिकवा=भेंड़-बकरी का मांस बेंचनेवाला।

चिचियाना = चिल्लाना।

चिचोरना = दाँत से फाड़-फाड़कर चबाना।

चिनगा = जला हुआ गुड़।

चिनगी = चिनगारी।

चिपरी = उपली।

चीखुर = गिलहरी।

चुकौता = अन्त।

चुक्कड़, चुक्कर = कुल्हड़।

चुक्का = कुल्हड़।

चुन्धला = धुँधली दृष्टिवाला।

चुरना = पकना। यह शब्द दाल, भात, तरकारी के लिये ही प्रयुक्त होता है।

चुभकी = डुबकी।

चुर्की = शिखा।

चेखुर = मकई की जड़।

चेरुई = छोटी गगरी।

चौश्रा = चौपाया।

चौमस = वह खेत जो जाड़े की फ़सल के लिये चार महीने बरसात में जोतकर तैयार किया जाता है।

छुरिन्दा = अकेला (छड़ी लिये हुए)।

छाँटना = हाथ या पैर पर पटक-पटककर कपड़ा धोना।

छालिया = सुपारी।

छिटुआ = वह बीज जो खेत में बखेर दिया जाता है।

छितना, छितनी = टूटे हुए टोकरे।

छेरी = बकरी।

छोंढ़ = कूँड़े से बड़ा घड़ा।

छोत = गाय या भैंस जितना एक बार में हगती हैं, उतना एक छोत कहलाता है।

जन्त्री = सुनार का औज़ार जिससे वह तार खींचता है।

जमूरा = दाँत उखाड़ने का औज़ार।

जाँगर = बल। ज़ोर।

जाउरि = खीर।

जियुगर = मज़बूत।

जुश्राठ = जुश्रा जो बैल की गर्दन में पड़ा रहता है।

जेंगर = मटर या आलू का डंठल।

जेंवर = रस्सी।

जोता, जोती = रस्सी।

जोंधरी = मक्का।

जोड़ी=दो बैल या दो घोड़ों से खींची जानेवाली गाड़ी।
झँझरी=जालीदार खिड़की।
झबरा=बैल, जिसके कान पर बड़े-बड़े बाल हों।
झलास, झलासी=झाड़-झंखाड़।
झाँकड़, झाँखर=सूखी झाड़ी।
झाँपा=बड़ा पिटारा।
झाँस=दुष्ट। घटिया।
झारी=लोटा। कसकुट का बना लोटा।
झींक=मुठी भर अन्न, जो जाँत में डाला जाता है।
झूल=बैल या हाथी का ओढ़ना।
झोरा=थैला।
झोली=अरहर के तने का बना हुआ टोकरा या टोकरी।
टँगाड़ी=लकड़ी काटने का औज़ार।
टकौरी=छोटी तराजू।
टहकना=गलना। (यह शब्द घी और तेल के लिये ही प्रयुक्त होता है)।
टाँगी, टँगारी=कुल्हाड़ा।
टिकठी=मुर्दे को ले जाने की अर्थी।
टिकरी=छोटी रोटी।
टिकोर, टीकुर=साफ़ जगह जहाँ घास-फूस या गड्ढे न हों।
ठाँठ होना=गाय जब दूध देना बन्द कर देती है।
ठाढ़ा=जबरदस्त।
ठिलिया=मिट्टी का छोटा घड़ा।
ठिहा=लकड़ी, जिस पर लोहार और बढ़ई काम करते हैं।
ठेंग, ठेंगा=लाठी।
ठोकवा=महुवे की रोटी।
ठोपारो=गन्ने का रस जो दुबारा छानने के बाद बचता है।
डगरिन=चमारिन, जो नाल काटती है।
डबरा=छोटा गढ़ा। आसपास।
डभकोरना=पानी को उथल-पुथल करके भरना।
डाँकना=उल्लंघन करना।
डाँग=छोटा डंडा।
डाँठ=जौ, गेहूँ का डंठल। गरमी की फसल का डंठल।
डाँड़ी=तराजू की लकड़ी, जिसके

सहारे तराजू के दोनों पलड़े लटकते हैं ।

डाभी=अन्न का अंकुर ।

डासना=बिछाना ।

डीह=उजड़े हुये गाँव की पुरानी जगह ।

डेहरी=नाज रखने का कोठिला ।

डोकनी=काठ की छोटी थाली ।

डोकी=छोटी डलिया ।

डोभना=सीना । तागे डालना ।

ढकुआ=जाठ के सिरे पर लगी हुई काठ की टोपी ।

ढकोलना=जल्दी-जल्दी पानी पीना ।

ढवइल=गँदला ।

ढरका=बाँस की चोंगी, जिससे पशुओं को दवा पिलाई जाती है ।

ढरकी=शटल ।

ढाँसी=जानवरों की खाँसी ।

ढाटा=सिर के चारों ओर कान के ऊपर से रूमाल बाँधना ।

ढाठा=लकड़ी का टुकड़ा, जो बैल के मुँह से लगा दिया जाता है, जिससे वह खा नहीं सकता ।

ढाठा=पगड़ी का वह सिरा जो एक कान की तरफ से आकर दाढ़ी को ढकता हुआ दूसरे कान की तरफ खोंस लिया जाता है ।

ढील=जूँ ।

ढूह, ढूहा=छोटा टीला ।

ढेंड़ी=कली ।

ढेंपी=फल का मुँह, जो टहनी से जुड़ा रहता है ।

ढोंका=छोटा टुकड़ा ।

तक=तराजू ।

तनिक=ज़रा सा ।

तस्सुर=एक अंगुल की चौड़ाई ।

तागना=डोरा डालना । सीना ।

तिड़ी बिड़ी=तितर-बितर ।

तिलक=विवाह के पहले होने-वाली एक रस्म ।

तिल्ली=सरसों और तिल का डंठल ।

तेहा=तेज़ । मिजाज़ ।

तोड़ा=कमी । अभाव ।

दँवरी=माँड़ने के लिये 'पैर' पर घूमनेवाले बैलों का समूह।
दहेंड़ी=दही जमाने की हाँड़ी।
दाब=लकड़ी काटने का औज़ार।
दीअट=दिया रखने का स्टैंड।
दीउलो=छोटा दिया।
दौंना=डंठल में से अन्न अलग करने की फसल।
दौरा, दौरी=बाँस की बनी टोकरी।
दौंरी=डंठल से अन्न अलग करने के लिये उसे ज़मीन पर फैला कर उस पर बैल घुमाना।
धनकटी=धान कटने का मौसम।
धनखर, धनहर=वह खेत जिसमें धान बोया जाता है।
धागा=तागा।
धामा=बड़ा दौरा।
नदवा=जिसमें उबाला हुआ रस रखा जाता है।
नरिया=गोल खपड़ा।
नहरनी=नाखून काटने का औज़ार।
नाटा=छोटे क़द का बैल।
नाड़ा=इज़ारबन्द।
निहंग=नंगा। असावधान।
निखारना=मैल छुड़ा देना।
नियारिया=राख में से सोना-चाँदी अलग करनेवालों की जाति।
निसुहा=काठ, जिस पर अनाज का डंठल रखकर गँड़ासे से काटते हैं।
निहाई=जिस पर रखकर लोहार लोहे को पीटता है।
निहोरा=कृपा।
नेग=हक।
नेरना=नाखून से किसी फल या रेशेदार पौधे का छिलका निकालना।
नोनियाँ, लोनियाँ=मिट्टी से नमक निकालनेवालों की एक जाति।
पगडंडी=केवल पैदल चलने का रास्ता।
पङ्गत=भोजन के लिये बैठनेवालों की पंक्ति।
पगहा=पशुओं के बाँधने की रस्सी।

पगिया=पगड़ी।
पछोरना=सूप से फटकना।
पटरा=लकड़ी का तख़्ता।
पड़छती=मिट्टी की दीवार पर का छप्पर।
पटपर=बरसात के बाद धूप से सूखी हुई मुलायम ज़मीन।
पतकी=बहुत छोटी हँड़िया।
पतोला=दाल पकाने का मिट्टी का एक छोटा बरतन।
पनौटी=पनडब्बा।
परई=मिट्टी का बड़ा सिंकोरा जो ढकने के काम आता है।
परछना=दूल्हा-दुलहिन के सिर पर मूसल, बट्टा तथा आरती घुमाना।
परेता=जिसमें तागा लपेटा जाता है।
पलान=काठी।
पलानना=घोड़ा या बैल लादना।
पलिहर=वह खेत जो जाड़े की फसल के लिये चार महीने बरसात में जोतकर तैयार किया जाता है।
पलैथन, परथन=सूखा आटा, जो रोटी बनाते वक़्त काम आता है।
पल्ला=फ़ासला। दूर। किनारा। एक किवाड़ा या धोती।
पहटा=खेत काटने की नाप।
पहसुल=तरकारी काटने का औज़ार।
पाचड़=हरिस को हल में कसने-वाली लकड़ी।
पाटा=तख्ता।
पाटो=खाट की लम्बाई की तरफ़ की लकड़ी या बाँस। माँग की दोनों तरफ़ का भाग।
पारी=बारी।
पिअरी=पीली धोती।
पिहाना=डेहरी का ढक्कन।
पुरखिन=गृहस्थी चलाने में होशियार स्त्री।
पुरवट=चमड़े के बड़े थैले में बैलों के द्वारा कुएँ से पानी निकालना।
पेटपोंछुआ=अन्तिम सन्तान।
पेटारी=मूँज का बना हुआ संदूक।

पेन्हाना=गाय जब दूध देने को तैयार होती है।
पैक=हरकारा।
पैड़ो=सीढ़ी।
पैना=चाबुक।
पैर=डंठल से अन्न अलग करने के लिये ज़मीन पर फैलाई हुई उतनी फसल जिसका अन्न एक बार में डंठल से अलग किया जाय।
पैरा=धान का डंठल। पयाल।
पौना=लोहे का जालीदार बड़ा चम्मच जिससे गन्ने के रस का मैल छाँटते या कढ़ाई में से पूरियाँ निकालते हैं।
फरियाना=निथरना। अलग करना।
फरी=ढाल।
फर्च=साफ़।
फाँड़=कमरबन्द।
फाँका=मूठी भर।
फाँदा=जाल।
फार=हल का फल।
फींचना=कपड़े धोना।
फुनगी=टहनी का सिरा, जहाँ नये और कोमल पत्ते होते हैं।
फिरिहिरी=पत्तों का बना हुआ एक खिलौना।
फेंटा=पगड़ो।
फँच=बाँस का बारीक टुकड़ा।
बँसवार=बाँसों की बाड़ी।
बखरा=काठी।
बखार=गल्ला रखने का घर।
बझना=फँसना।
बटखरा=बाट।
बटियारी=वह जाल जो चिड़ियाँ फँसाने के लिये दिन में लगाया जाता है।
बटुवा=थैली।
बतिया=छोटा फल।
बतौरी=रसोली।
बधना=मुसलमानो लोटा।
बया=बाज़ार में तौलने का पेशा करनेवाला व्यक्ति।
बयाई=बया की उजरत।
बरच्छा=विवाह के लिये वर रोकना।
बरारी=रस्सी।
बराव=परहेज।

बरैठा=भीट, जिस पर पान लगाया जाता है।
बल्लम=भाला।
बलुअट=बालू मिली हुई मिट्टी।
बहेलिया=चिड़ियों का शिकार करनेवालों की एक जाति।
बाँक=गँड़ासे की तरह का लोहे का एक हथियार।
बाँगर=ऊँची ज़मीन।
बहिंगा, बहिंगी=बाँस का एक टुकड़ा जिसके दोनों सिरों पर रस्सी लटकाये रहते हैं, जिसमें भारी चीज़ें बाँधकर ढोते हैं।
बिदाह=एक फुट ऊँचा हो जाने पर धान के खेत में हेंगा चलाना।
बिदोरना=मुँह बनाना।
बिलहरा=पान रखने के लिये चटाई का बना हुआ डब्बा।
बिसरना=भूल जाना।
बिसार=बीज।
बिसुकना=दूध देना बन्द करना।
बिहड़=ऊबड़-खाबड़ ज़मीन।
बींड़, बिड़िया=गाड़ी का तीसरा बैल जो सबसे आगे रहता है।
बीता=बालिश्त।
बीहन=धान के पौधे, जो खेत में लगाने के लिये पहले ही लगा लिये जाते हैं।
बूकना=सिल पर पीसना।
बेआना=पेशगी रुपया।
बेझरा=मिले हुए दो अन्न।
बेंट=हत्था। हैंडिल।
बेठन=कोई चीज़ लपेटने का कपड़ा।
बेढ़ना=पशुओं को किसी घेरे में कैद करना।
बेढ़नी=रोटी, जिसके भीतर पिसी हुई मटर भरी रहती है।
बेर्रा=जौ और मटर मिला हुआ।
बेलहरा=पनडब्बा।
बेलाना=चकले पर बेलन से रोटी बनाना।
बेवहर=उधार।
बेवहरिया=ब्याज पर रुपया देनेवाला।
बै=सूत को अधिक बल देना।

बोअनी=बोने की फसल।
बोंग=भारी वज़नी लट्ठ।
भकुआ=मूर्ख।
भरभाँड़=एक काँटेदार पौधा।
भरुका=मिट्टी का बरतन, जो पानी पीने के काम आता है।
भाथी=चमड़े का थैला, जिससे लोहार भट्टी में हवा देता है।
भींट=टीला।
भुजिया=उबाले हुए धान का चावल।
भुसौल=भूसा रखने का घर।
भूआ=बाल के ऊपर सफेद रंग की रुई।
मड़ई=झोंपड़ी, जिसमें चबूतरा न हो।
मड़ार=पुराना कुआँ, जो खराब हो गया हो।
मँगनी=विवाह के लिये किसी लड़के की याचना।
मचिया=खाट की तरह की बुनी हुई एक बहुत छोटी चौकीनुमा खटिया जो सिर्फ बैठने के काम आती है।
मरतवान=मिट्टी का घड़ा, लाख का पालिश किया हुआ।
माँझा=पतंग की डोर में लगाया जानेवाला मसाला।
माट=बड़ा घड़ा।
मारतौल=छोटा लंबा हथौड़ा।
मींजना=हाथ से मसलना।
मुँगरा, मुँगरी=जिससे धोबी कपड़े पीटता है। लकड़ी का टुकड़ा जो डंठल से अन्न अलग करने तथा ज़मीन को चौरस करने में काम आता है।
मुँगरी=मिट्टी पीटने की लकड़ी।
मुरहा=निःशील।
मुरेठा=पगड़ी।
मुसरा=कुएँ में पानी देनेवाला मोटा सोता।
मूका=घूँसा।
मूठ, मुठिया=हल का ऊपरी सिरा जो हलवाहे की मुट्ठी में रहता है।
मूठ पूजा=बोआई खतम हो जाने पर की एक रस्म।
मेखारी=नालबन्द का झोला।

मेंड़=खेत की हद।
मेटा, मेटी=घी, तेल या अचार रखने के लिये मिट्टी का बरतन।
मोखा=ताक या दीवार में एक छोटा छेद, जिससे हवा और रोशनी कमरे में आती है।
मोचना=चिमटी।
मोटरा=बोझा। बंडल।
मोट=चमड़े का थैला, जिसमें कुएँ का पानी ऊपर निकालते हैं।
मोढ़ा=बाँस की तीलियाँ या सरकंडे का बना स्टूल।
मोहरी=जानवर का मुँह बाँधने की रस्सी, जिससे वह खेत चर न सके।
मोहार=द्वार।
मौनी=मूँज की बनी हुई छोटी डलिया।
रखेली=वह स्त्री, जो बिना विवाह के किसी पुरुष के साथ रहती है।
रखौनी=खेत रखाने की मजूरी।
रगी=वर्षा के बाद जब धूप निकल आती है, उसे रगी कहते हैं।
रनबन=अरण्य। वन।
रन्दा=लकड़ी साफ़ करने का औज़ार।
रमझल्ला=झगड़ा।
रम्बा=लकड़ी में छेद करने का औज़ार।
रहसना=प्रसन्न होना।
रहाइस=रहना।
रहेठा=अरहर का डंठल।
राउत=सरदार। महतो।
राड़ी=एक घास।
राँधना=पकाना।
राब=गुड़ का शीरा जिससे चीनी बनती है।
रास=ढेरी।
रिगिर=हठ।
रोकड़िया=खजाञ्ची।
रोगदानी=खेल में बेईमानी।
रोरहा=जिस मिट्टी में रोड़े बहुत हों।
लकठा=मकई का डंठल।
लग्गा लगाना=शुरू करना।

लढ़ा = गाड़ी।
लढ़िया = गाड़ा।
लतरो = पुरानी जूती।
लतेर, लथेर = डंठल।
लपोड़िया = खुशामदी।
लहना = उधार।
लाठा = ज़मीन नापने का बाँस।
लिट्टी = रोटी, जो बिना तवे के सेंकी ज़ाय।
लीबड़ = कीचड़।
लुगरी = फटी हुई पुरानी धोती।
लुञ्जा = हाथ या पैर से लँगड़ा।
लूगा = कपड़ा।
लेरुआ = तत्काल पैदा हुआ बछड़ा।
लेंहड़ = भेड़ों का वह झुंड जिसमें बीस या उससे अधिक भेड़ें हों।
लेहना, लेहनी = कटे हुए अनाज का एक खास वज़न।
लोढ़निहार = रुई चुननेवाला।
लोचर = दो वर्ष की उमर की भैंस।
लोथ = लाश।
लोहबंदा = लाठी, जिसके निचले किनारे पर लोहा लगा हो।
लौनी = खेत काटने की फ़सल।
संकेत = सँकड़ा।
सकारे = बड़े सवेरे।
सकिलना = पूरा पड़ना।
सटका = जानवर हाँकने की छड़ी।
सतवाँसा = जो सात मास में पैदा हो।
सनकारना = इशारा करना।
सन्ती = बदले में।
सपेरा = साँप पकड़नेवाला।
सँपेला = साँप का बच्चा।
सरहज = साले की स्त्री।
सवाचना = सावधान करना। गिनना। परीक्षा करना।
साटना = एक साथ करना।
साटा = अदला-बदला।
साँटा = पतली छड़ी जिससे जानवर हाँके जाते हैं।
सानना = मिलाना।
साम = मूसल के मुँह पर लगी हुई लोहे की अँगूठी।
सालू = लाल रंग का कपड़ा।
सिकन्दरी गज = छब्बीस इंच का गज।
सिकहर = छत से लटकाया जाने-

वाला एक जाल, जिसमें दूध, दही, घी आदि रक्खे जाते हैं।

सिकहुली=मूँज की बनी हुई टोकरी।

सिजिल=ठीक। पसंद-योग्य।

सिन्दुरदान=विवाह के समय को एक रस्म।

सिरावन=हेंगा। पटेला।

सिराना=काम पूरा होना।

सिर्री=पागल। सिड़ी।

सिल्ली=पत्थर, जिस पर नाई छुरा तेज़ करता है।

सिहरना=ठंढक से काँपना।

सुआसिन=विवाहिता कन्या जो पिता के घर रहे।

सुटुकना=पतली छड़ी या चाबुक से मारना।

सुँदरी=रेंड़ के पत्ते खानेवाला एक कीड़ा।

सुरती=तम्बाकू।

सूआ=तोता। शुक।

सेंत=मुफ़्त।

सैका=ईख का रस कड़ाह में डालने का पात्र। काठ का बड़ा चम्मच, जिससे गुड़ चलाते हैं।

सैंतना=रसोईघर लीपना।

सैल=हल के जुए की एक लकड़ी।

सैला=लकड़ी, जो जुए को बैल की गर्दन में फँसाये रखती है।

सोक=खाट बुनते वक्त़ किनारों पर छोड़ी हुई खाली जगह।

सोंटा=छोटा डंडा।

सौजा=शिकार।

सौनना=मिलाना। सानना।

सौर=ज़च्चाखाना।

हथौना=ताड़ी रखने का बड़ा घड़ा।

हँकारना=पुकारना। बुलाना।

हरकना=रोकना।

हराई=जोतने की एक नाप।

हरिस=लंबी लकड़ी या बाँस जिससे हल खींचा जाता है।

हर्सि=हल में लगी हुई बड़ी लकड़ी, जिसमें बैल जुतते हैं।

हलकना=छलकना।

हलकोरना=हाथ से पानी हिलाना।

हलकोरा=लहर।
हलोरना=इकट्ठा करना। अच्छा-अच्छा चुनना।
हँसिया=खेत काटने का एक औज़ार।
हँसुआ=खेत काटने का औज़ार।
हाड़=बैर। दुश्मनी।
हाथा=पानी उलीचने का काठ का एक औज़ार।
हामी भरना=स्वीकार करना।
हुडुक=धोबियों का एक बाजा।
हुँडार=भेड़िया।
हुमकना=जोर करके आगे को उठना।
हुमसाना=ज़ोर लगाकर किसी भारी चीज़ को उठाना।
हूँड़=बदला।
हूरा=सिरा।
हूलना=चौंकना। धँसाना।
हेंगा=पटेला। सिरावन।
हेठ=नीचा।
हेठी=अपमान।
होरसा=गोल पत्थर, जिस पर चन्दन घिसा जाता है।
होरहा=हरा चना, जो आग में भूनकर खाया जाता है।
हौद, हौदी=नाद, जिसमें बैल सानी खाते हैं।
हौली=शराब की दूकान।

परिशिष्ट २

अँगरेज़ी के शब्द जो इस कोष में आने से छूट गये हैं, पर जो पढ़े-लिखे लोगों में प्रचलित हैं।

आयल क्लाथ=मोमी कपड़ा।
आर्डरली=अर्दली।
इन्सल्ट=अपमान करना।
इमीटेशन=नकल।
इम्पायर=साम्राज्य।
इम्पीरियल=साम्राज्य संबंधी।
इम्पीरियलिज़्म=साम्राज्यवाद।
ईयरिंग=कान में पहनने का एक प्रकार का सोने का गहना।
एक्सप्रेस=प्रकट करना। —ट्रेन=तेज़ रेलगाड़ी।
एक्सप्लेन=व्याख्या करना।
एक्सप्लेनेशन=व्याख्या।
कटपीस=कपड़े के थान से बचे हुए टुकड़े।
कनेक्शन=संबंध।
कन्ट्री=मुल्क। देहात।—मेड=स्वदेशी।
कन्डीशन=हालत। दशा। शर्त्त।
कन्वरसेशन=बातचीत।
कन्सल्ट=मशविरा। राय लेना।
कन्सेशन=रिआयत।
कन्सिडरेशन=विचार। निर्णय।
कम्पल्सरी=अनिवार्य।
कम्पाउंड=घेरा।
कम्पाउंडर=दवा बनानेवाला।
कम्प्लेन=शिकायत।
कम्प्लीट=पूरा करना।
कम्पिटीशन=प्रतियोगिता।
काटेज=झोपड़ी।
कान्डक्ट=चालचलन।
कामा=विराम चिह्न।
कारोनेशन=राज्यतिलक। राज्याभिषेक।
कार्निवाल=खेलों का समूह।
क्रिटिक=समालोचक। जाँचनेवाला।

क्रिटिकल=गुण-दोष-परीक्षा संबंधी। ठीक। नाज़ुक।
क्रिटिसाइज़=आलोचना।
क्रिटिसिज़्म=छिद्रान्वेषण। समालोचना।
क्रिश्चियन=ईसाई।
क्रिश्चियानिटी=ईसाइयत।
क्रिसमस=ईसाइयों का एक त्यौहार।
क्लियरेंस=अदा करना। पटा देना।
केक=एक अँगरेज़ी मिठाई।
कैनिस्टर=कनस्तर।
कैस्टर आयल=रेंड़ी का तेल।
कोलतार=तारकोल। अलकतरा।
गनबोट=अग्निबोट।
गार्टर=पेटी।
गेट=फाटक। —कीपर=द्वारपाल।
जजमेन्ट=राय। फ़ैसला।
जम्पर=स्त्रियों के पहनने का अँग्रेज़ी ढंग का कुरता।
जिमनास्टिक=एक अँग्रेज़ी कसरत।
जेन्टिलमैन=शरीफ़ आदमी।
जून=अंगरेज़ी साल का छठा महीना।
टर्न=बारी। नम्बर।
टर्म=नियम।
टिफ़िन=तीसरे पहर का भोजन। —कैरियर=बरतन, जिसमें खाना भरकर दूसरी जगह ले जाया जाता है।
ट्विल=एक प्रकार का कपड़ा।
टेम्पर=मिज़ाज। टेम्परामेन्ट=मिज़ाज का।
टीम=टोली।
टोबैको=तम्बाकू।
डबल मार्च=तेज़ चाल।
डम्बेल=मुगदर।
ड्राइव=हाँकना। चलाना।
डिज़ीज़=रोग।
डिफ़ीट=हार।
डिफ़ेक्ट=ऐब। दोष।
डिस्कवरी=खोज। अन्वेषण।
डिस्टर्ब=घबड़ाना। अस्तव्यस्त।
डिस्ट्रीब्यूशन=वितरण। बाँटना।
डिसीशन=फ़ैसला।

डिस्पैच = भेजना । —र = डाक भेजनेवाला ।
डिस्टेंस = फ़ासला । दूरी ।
डुप्लीकेट = दोहरा ।
डेथ = मृत्यु ।
डेमरेज = हानि ।
थर्ड = तीसरा । —क्लास = रद्दी । —डिवीज़न = तीसरी श्रेणी ।
नॉलेज = ज्ञान । अनुभूति ।
नेकलेस = हार ।
नोट = लिखना । काग़ज़ी रुपया । —बुक = याददाश्त की पुस्तक ।
नोटिस = सूचना ।
पंक्चर = छेद ।
परमिशन = आज्ञा ।
परेड = सिपाहियों के क़वायद करने की जगह ।
पावर = शक्ति । बल ।
पेन्ट = रँगना । तस्वीर उतारना ।
पैलेस = महल ।
पोज़ीशन = जगह । हालत । हैसियत । दर्जा ।
प्लाट = मैदान । जमीन का टुकड़ा ।
प्ले = खेलना । —यर = खिलाड़ी ।
प्लेज = रेहन । बंधक । जमानत ।
प्लेज़र = आराम ।
प्राइज़ = पुरस्कार ।
प्राइस = मूल्य ।
प्रापर्टी = जायदाद ।
प्रीवियस = पहले का ।
फारचून = क़िस्मत । भाग्य ।
फिनायल = दुर्गन्ध मिटानेवाली एक दवा ।
फैमिली = कुटुम्ब । परिवार ।
फैशन = रवाज । शौक ।
फैशनेबल = शौकीन ।
फोर्स = ज़ोर । बल । सेना । दबाना । विवश करना । बेगार ।
बक्लस = बकसुआ ।
विदाउट = बिना ।
विअरर = वाहक ।
ब्रीचेज़ = समझौता तोड़ना ।
बुक = किताब । —कीपिंग = बही-खाता लिखने की विद्या । —बाइंडर = जिल्दसाज़ । —स्टाल = किताबों की दूकान । —लेट = पुस्तिका ।
वेंच = लम्बा स्टूल ।

वैरिस्टर = क़ानून का ज्ञाता।
ब्रेक = रोकना। तोड़ना।
ब्यूटी = सुन्दरता। —फुल = सुन्दर। खूबसूरत।
ब्लू ब्लैक = नीली स्याही।
मटन = भेड़ का भुना हुआ गोश्त।
मनीवैग = रुपये-पैसे रखने की चमड़े की थैली।
मफलर = गलेबंद।
मशीनगन = मशीन से चलने-वाली बंदूक।
मरचेंट = व्यापारी।
मानीटर = मुखिया।
मिक्श्चर = मिश्रण।
मिनट = घंटे का साठवाँ भाग।
मिस = कुमारी। छूट जाना।
मिसेज़ = श्रीमती।
मिस्टर = महाशय।
मिस्ट्रेस = अध्यापिका।
मीटिंग = सभा।
मेन्टल = दिमाग़ी।
मेम्बर = सदस्य।
मेस = समूह।
रिटायर्ड = अलग हो जाना। एकान्त-सेवी।
रिफार्म = सुधारना। दुरुस्ती।
रिफ़्यूज़ = इन्कार करना।
रीफ़्लेक्ट = अक्स डालना। दोष लगाना।
रीफ़्लेक्शन = परछाईं।
रेफ़री = निर्णयकर्त्ता।
लेटर-पेपर = चिट्ठी लिखने का कागज़।
लैंगवेज़ = भाषा।
बर्थ डे = जन्म-दिवस। सालगिरह।
बिज़िनेस = व्यापार। धंधा।
वेट = बाट जोहना।
सबमिट = पेश करना।
सस्पेन्ड = मुअत्तल।
सिगनेचर = हस्ताक्षर।
सिचुयेशन = दशा। अवस्था। परिस्थिति।
सिस्टम = क़ायदा। नियम।
सीज़न = मौसम।
सीनियर = उच्च।
स्ट्राइक = हड़ताल।
हनीमून = नववधू के साथ विहार करना।
हारमनी = एक ताल। एक लय। मेल।

हार्न=मोटर का भोंपू।
हार्म=नुक़सान। घाटा।
हार्स=घोड़ा।

हिस्ट्री=इतिहास।
हेडिंग=शीर्षक। विषय।
हैट=अँगरेजी टोप।

मुद्रक—श्यामसुन्दर श्रीवास्तव, कायस्थ पाठशाला प्रेस, इलाहाबाद